...भारत के ...

...६८ है॥ विराट्पर्व के अ० ६८ है॥ ...
...के अ० ११० है॥ कर्णपर्व के अ० ...
...है॥ स्त्रीपर्व के अ० २९ है॥ शान्ति...
...मेधपर्व के अ० १०३ है आश्रमवासपर्व के अ० ...

श्री आदिपर्व १ अध्याय ... है सो सर्व अध्याय है ...

मौसलपर्व के अ० ८ है
प्रस्थानपर्व के अ० ३
स्वर्गारोहण पर्व के
अ० ५ है॥

दोकालकी
संध्याकाम...

आदिपर्व १ सभापर्व २ वनपर्व ३
... ४ उद्योगपर्व ५ भीष्मपर्व ६
द्रोणपर्व ७ कर्णपर्व ८ शल्यपर्व
९ सौप्तिकपर्व १० स्त्रीपर्व ११
शान्तिपर्व १२ अनुशासनपर्व १३ है
अश्वमेधपर्व १४ है आश्रमपर्व
१५ है मौसलपर्व १६ है प्रस्थानपर्व
१७ है ... १८ है॥

मा मा
प्रा प
२

ननेनन्नूपरमीयंनमा[illegible]पंचपो॥ हेयघनानां ॥ प्र[illegible]वध्नमविप्रलंभकवधोः संप्रताहीतिवेन ॥ [illegible]

मा[illegible]मना हिमुनदक्षभवान एवं नेत्रे वक्षमाहे [illegible] हितनान ॥ [illegible]

इयुने ॥ [illegible]वेमनेन हामीयवाम[illegible] पीपहम्नीतिनन्नाल[illegible]प्रमाण[illegible]नवष्टक: कनेया: [illegible]

मा ॥ [illegible]मानाहीं नंननामालोमषुवेकनाह्यीनान ॥ [illegible] अनिनेइति ॥ [illegible]

मयो ॥ आ[illegible]मेकउदकं ॥ [illegible]नीतिमववि[illegible]कनाव ॥ [illegible] ॥

कि[illegible]

मस्[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ ॥ [illegible]मेकउदकनाम[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible]

[illegible] ॥ [illegible]

[illegible]

२

[illegible] मज्ञोकाये विनंष्टा [illegible] लितलोमहर्षं [illegible] ॥

[illegible] विना [illegible] लोमहर्षं [illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible]

3

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

4

[illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible] ॥ [illegible] ॥

इति पात्रे हृद्द्र इत्यर्थः ॥ १९ ॥ यो ह्यात मेवाह ॥ कृत इति विहृत [illegible] ॥ [illegible]
वत् अर्थतः अहं वचनं संपन्नः [illegible] ॥ [illegible] ॥
[illegible] चिनानां च संबंधी [illegible]

[illegible] पूर्वकं मुनिभिः [illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥
[illegible]
[illegible] ॥
[illegible] ॥ [illegible]

सौतिरुवाच ॥ आद्यं पुरुषमीशानं पुरुहूतं पुरुष्टुतं ॥ ऋतमेकाक्षरं ब्रह्म व्यक्ताव्यक्तं सनातनम् ॥ २२ ॥

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ॥

चन्द्रे विनतमाह ॥ स चोनि ॥ [illegible]
देववल्लीनिष्ठां चिन्तारूपमिमन्यथ ॥ [illegible]
ने रूनानाक्लिष्टिचनेतिनित वाचना [illegible]
सर्वे निबन्धरगाचल प्रतिभासमान [illegible]
स सामान: ॥ प्रत्येविद्याहारिद्रा मना: ॥ [illegible]
कृष्णपादिस [illegible]
नानेन प्राक्ति: [illegible]
[illegible] ॥ स सा [illegible]
हिनारिनानोह [illegible]

[illegible] ॥

[illegible] ॥ २ ॥

[illegible]

नालिकं [illegible] ॥३॥ [illegible]

[illegible]

म.भा.
आ.प.

यथायथन्नुलेलवाव्याहित्य प्राह ॥ वनीयेनर्थ्यो नस्थानीसुपक्वमुग्रान: प्रानान्नंननेवं दतिघ्रोद्यान जा
दृ निश्चिन्निह्रोत्रे ॥ हिता नीरोमहिता कीनेथेन: ॥ स्तौ उकोनिनेनन ह्लाके निरामिनि ॥ प्राहिन्येवा प्रलेयत्र शिष
नग्रविघानीनिश्च निमपन्नी अथ इ रितेमर्थं प्रानजोदृयान ॥ यथा निम्यघेप्रहनाय अन्याघानास्याथाहार्थं
दृयनिनाम्योवननिष्किति ॥ उरिनान्न हिनहोमयो: ॥ प्रकरणे: ननिहनियेपलनमे वनदन ॥ ननननत्रनिरार्थं
नान्यर्थमलितंभग्रमाणिमाप्न्नापने: ॥ नहिविनभननेणिचमनंनवानदं नानुर्धवं ड्डुं ई दिवाहगा
घानाहितदूगान: ॥ आ ये जननिरार्थं वाग्नन नि ननिघं पश्यामहवलानृन ग्रं ड ॥ गृह्णनपिनिवि
येषामनः आमननात् ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

हि०

२

श्री २

[illegible]

तिरबननिदर

[illegible]

[illegible]

स॰ आ॰
आ॰ पं॰
१९

श्रावश्च इतिनिकु वग: कां नस्किन: ॥१८॥ वैकालिकानामपिकवीनामेनतदालानेगुणमात् ॥ इदमिति
तानत्वान्नभायनंनजवी शुएं हिंनानिभिहेवर्णिकेषेहदर्शनेनदिहंइतिहासहरूपेणाजिषुलोकेषुनानि
नउनममणमायमजनेषु प्रतिष्ठितं तानकरकेनेमर्थ: ॥२०॥ समयेः संकतेः समयाः शपथाचाक
लाभिहंतनसेविहरमरः ॥ स्थिमानधेः वैदिकलौकिकैः संस्कृतप्राकृतैर्वान्तया समस्तनभेषनादेन
लाहिषुहनाशिपदप्रयोगोवेदनिवेदप्रसिद्धः [illegible] ॥ नयानानगरहरवाहेणार्थचरान्दिएकवाद्यादिग
र्षाम्नेहप्रसिद्धार्थं [illegible] ॥ कृदोक्ततैः त्रिषुवाहिदोतानीनैरिहरुना दिमिहैतेः ॥२१॥ निषुमेदनि ॥ यस
तानां वीनंतनमउपाहानंपदं निमिमांतनानपेते [illegible] प्रसिद्धः [illegible] नहरदंउनसांतर

॥ ॥

श्रावचः कवयः केचिनं प्रपाचवतनेपदे ॥ [illegible] भवि ॥२६॥
इदंनत्रिषुलोकेषु मसहनतानेप्रतिष्ठितं ॥ [illegible] ॥ [illegible]
नेश्रमेः शद्वैः समयेहिमान्ते ॥ [illegible] ॥ [illegible]
लोकेर्थनलसमाहेतो ॥ इदंउसमदं [illegible] ॥ [illegible] ॥ ॥

येप्रमलनशमानंसवयमकहनमवाम [illegible]
नामान ॥ इदंसमभूमिनाकंजला [illegible] ॥ [illegible]
कायंतइहितेमनि ॥ [illegible] ॥ [illegible]
श्रोणाविम्नविदेयशाकि [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
समममायनशनिमायायाश्रावण [illegible] ॥ [illegible]
यावयानिः ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
हितंयदशीनमसलमहिते [illegible] ॥ ॥

२०

१९

[illegible]

२२

21

२२

सलिलगर्भप्रकाशनात्॥ मरीचिकः॥ सर्वलोकोपकारार्थं मूर्तीचित्र [illegible] दीप्तिकरीचित्रिप्रकाशश्च ली
निधानात्॥ मरीचिभिः सहस्रधामभिः कीर्तिनुलिना॥ [illegible] प्रकाशितात्॥ [illegible] नस्य तेषु सूत्रनः सा
हत्वा कस्मान्नो क्वैनो यास्ते लस्माकः [illegible] स्वनः॥ गनोह [illegible] कं ः सरस्वती॥ [illegible] व
वलोकोपकारार्थं मानोनिप्रसलोत्तीतिमाशक्रवस्तुनिलो [illegible] दूसि [illegible]॥ स
फलीकरोति रविनिरसतो याल्तः [illegible]॥ सर्वानिबो [illegible] नादोबति [illegible] नि॥
पुरेति श्रुणकस्यैवनेदिवः श्रुणाद्वाः पूर्णाम्हाः विनवलोकाकारकः [illegible] फलानो
मश्रेः वरोजवमोमहाश्रतः मसुतकामिनगर्भधारकस्य [illegible]॥ [illegible] यादृशवेने॥ स
श्रीमहात्मा धीप्यायकस्तात्॥ ऊर्जवाचोयसस्कसत्समस्या महात [illegible]॥ [illegible] नलयत्तमहा
तेनाद्दैवानस्यानयनिरश्मिभिः ननयोविसाकः नमस्तदलन [illegible] प्रभी [illegible] गोः सम्य
जयोनिनयः श्रुतः सहस्त्रयोनिसाहनोग्रहनवसनानकासरकाश [illegible] नाल॥ नेवसंसल
कृपानसीएनहरपानवनानहरपावनालहः नखनोनिवासमस्यां [illegible] निसुहे [illegible] वपाहृदृस्यपिनउ
हृद्वैः लड्निपायान्नपमुने॥ अयहृपाश्रानसस्वर्ग्य प्राश्मिवकुमवर्ग [illegible] नेमोपंचकस्वंपर्श्वमा
फलानवचोमयर्वपमुभवरनाभिधानमस्त॥ सूर्येश्वोमयवेवारे [illegible] उनयं॥ नयाहि॥ मा
हिमात्मनः मनोहिस्वाकविमाहितोशाः सूर्येवपाः॥ नयाहिमात्मनः॥ मनोहिस्तमनः पुरूरवामा
हिनाहेहिरः॥ सोमवंशाउनि॥ मनः एभिस्मोकेनांदिस्यसति भिलनस्सलवकंनर्कापिन॥ उक्तंच॥ मादि
नमूलमविलेवैलोकंपदनेदन॥ भवपसाजगनस्यैवमहेवाहरमानवश्चभिमाहिनिवेममवहाने॥ २२

म॰ भा॰
आ॰ प॰
२३

13

[illegible]

[illegible]

[illegible]

२२

म॰ भा॰
आ॰ प॰
२५

वर्णानहूवीभेदंपिशितिकं सं॰ प्रथांतेनेसमानकामहूपकममाडारंतानांभेमननभेदमाह ॥ मन्वादीनि ॥ म
नभिः नारायणंनमस्कृत्येति ॥ ॐनमोभगवतेवासुदेवायेतिवानमः ॥ निर्गुणंच ॥ शिवः शंभोरैवस्वानम
हांतेभनलाद्येनिनने आलीकं आलीकचरितंनदरिशपरिचरोचरः स्वच्छरितारिका ॥ २७ ॥ वद

मन्वादिभिर्भातेके विद्यालीक [illegible] यामो ॥ न [illegible] चरायनो विप्राः समया पीयते ॥ ५४ ॥ विवि
धंमहितिनहानेसोपर्यनिमनो विप्राः ॥ आत्मा [illegible] कृत्याके विद्धं आत्मारंत्रिते पदे ॥ ५५ ॥ नपसा
ब्रह्मचर्येण प्रस्थवेदेसमानानं ॥ ३ निहूकमिमच [illegible] ॥ ५६ ॥ यदा यद्रानौ
विहूनद्राविद्धिपिन तन ॥ नह्राद्ये [illegible] ॥ ५७ ॥ ऊर्ध्वम आपपानी
हृषिधानिमन्वचिंतयन ॥ नष्ट [illegible] सर्वमगावा
नह्मालोकगुरुः स्वयं ॥ प्रोमर्हिनः [illegible] ॥ ५९ ॥ [illegible] विश्विनो भूमा
मोनलिः प्रापनः ह्रितः ॥ [illegible] ॥ [illegible] योमहीनेन
ह्मिंनय प्रमासने ॥ परिहप्या [illegible] ॥ [illegible] ॥

॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥

॥ [illegible] ॥

श्रीनारहित्विधं ज्ञानंदीपयेति ॥ ६२ ॥ [illegible] विप्रस्यनेन वेदार्थो च सं [illegible] ॥
निरंतिनं ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ नदाप्रान [illegible] ॥ [illegible] ॥ ६८
अमापास समीप्यवहरपीव [illegible] ॥ ६९ ॥ यम

२८
२६

भूतस्थानानीति ॥ [illegible]

त्रिविधं बहुशाखं धर्मं [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] ॥ [illegible]

धर्मेति ॥ [illegible]

[illegible] निवर्तते ॥ [illegible]

भूतस्थानानि सर्वाणि [illegible] त्रिविधं [illegible] ॥ [illegible] ॥ ४८ ॥

[illegible] ॥ ४९ ॥

[illegible] ॥ ५० ॥ [illegible]

[illegible] ॥ ५१ ॥

[illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ ४९ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ इदमेव यथोक्तं [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ २० ॥ समासः संक्षेपः व्यासः विस्तरः ॥ २२ ॥

[illegible]

९ ॥ १६ ॥ १६ ॥ उक्तोऽयं उपदेशः ॥ [illegible]
[illegible] पापश्रुणते ॥ इतिनामानि [illegible]

प्रनतानोऽथ [illegible] मेधिना ॥ नियत [illegible] पद्धति विन: २० ॥
उवाच समदले [illegible] मोधिने ॥ कृते नमये [illegible] ॥ [illegible] ॥ सहाये दव
[illegible] ॥ [illegible] निविशं चैव चैव स्वानां [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
ना [illegible] निमिते वपन ॥ [illegible] च तिवि [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] स्या पि
[illegible] विनि श्रुय: ॥ विवि [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ते च पु
[illegible] न: ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ना रा णां प्रमाणा
चतुर्गो: सह ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] च [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] चेच की
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] शास्त्रे
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] रिने ॥ पारं
[illegible] ॥ १० ॥

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥
[illegible]
[illegible] ॥ २१ ॥ १० ॥

स॰ मा॰
श्रा॰ पं॰
३२

मायनन्तत्रभंतेसो कत्रयमाह॥मानंति॥मानः सम्बवम्मा नागोयस्मी कस्ताति योगानन्तनका
मनः लोवेसंतिकादिसु॥कम्मेणायनगाहूदीनन्तनयामासे॥२४॥२५॥नेसुयनगाहूहिसुजानेसुयुस
वीसादिहणम्ममाइभेनेसु॥यहवेसुयासमागिसु॥सुववीसादीनाणमायिनाणागामानिस्तगाते

मानलियोगाहुमेनामांगोयस्मवधीमनः॥लेवेविविवजीवेसुकमदेपायनः पुरा॥वीवसी
नितकोयमानतनयामासवीतिवान॥२४॥कुमायपनगाहूवपांडुविडयमेवव॥नगामनपसे
यीमानुनेरवा श्रमेयनि॥२५॥नेसुनमोयहदेसुगानेसुयसमोगानि॥यववीडुनंलोकेमानधे
किमनाहुनसि॥२६॥ननमेननेनहहः सननजाहीतासुमहूहाम्रः॥पुगामासमिनायमासीनेवेणं
पायनमंतिवे॥२७॥समस्पवे: सहसीनेश्रवधामासमामाणं॥कंमीनोसुयनसवोयमानः पुनः
पुन॥२८॥विस्लाकहवेमायामानांयामीयमेयवीनानां॥ननः पुगांमनिकुमयः सम्बाहिमायनो॥यवी
न॥२९॥वाहदेवस्यमाहूनांमोपोकवानेनाच्छमनाना॥डुवेनेमांमेनाकु[illegible] कुवानमागावान्यहि॥३०॥
वन विवानिमाहुसीवकेमायनमेहिनं[illegible] [illegible]॥नमोयाई
यानंमयः सवेवेयकनवानहि॥ [illegible] वहेपावनः पा
वेयनमयायएसुकं॥नवोमेयोन[illegible]॥[illegible]
कायन्यांमसहिना॥विमाकनमनमहदेवलोकेयनि [illegible]॥[illegible]
चनहेवं॥वकेयानमहदेवनना [illegible]

यु॥३१॥३२॥यायामयवमेनान्यावतंस्यान [illegible]
दुरमायानेयगाहाणंडुसेपयनाहीना॥३३॥ [illegible]
णानन्तहु याये देव यमितिवाह [illegible]॥३४॥

२

पांडुर्जिनेमाह ॥ २ ॥ तत्रापश्रवायनिपतानन्तरं गर्भस्थितिः स्यादेवावायनियतं मैथुनकाले मारा[illegible]तेन स्वा
देनोः कर्ध्वं तृप्तिकरं श्राप देह प्रलीनं निशुनिवंधकं नमपि[illegible]वायकालेन निशा मौनिशा[illegible] ॥ न
च वायपरिवर्वेसमान मपि[illegible]यांनां पांडुवा नांज[illegible]निजान कर्मा संस्कारः प्रसन्निपराथः नन्द्वा
चारिविक्रमस्य शीलरत्नाद्योऽभद्रितिशोध ॥ ११ ॥ न चैतन्द्रयविहृत्मिमाह ॥ मादोनिनि ॥ चशालोहे-
नो ॥ तस्यानन्तर्योपनिर्यदंप्रनियमः ॥ कुलमो[illegible]परिवायनार्थे हि विह ॥ तस्मान्न[illegible]नीयदेने

पांडुर्जिनावहूनदेशान्तुवा निक्रम तेन च ॥ स्वाप्ये स्वसा[illegible]लोऽनवस्यन्नानिसि स ह ॥ १ ॥ स्वा
मवायनियतान्तःकृत्याश्रावसन्नापदे ॥ तन्नाश्रयनिपापेनांनशावाहविक्रमः ॥ २ ॥ मादोवा-
स्तु[illegible]निश्चयमौपनिवद्द्यनि ॥ धर्म[illegible]स्मृ[illegible]स्थितिना ॥ ३ ॥ नापुवेश
हसंनुद्रसामस्थांपारिहिताः ॥ मे[illegible]वृ ॥ ४ ॥ [illegible]विधियन्नदा
नीनां पानं शशुन्कानिवर्ध ॥ शि[illegible]स्व[illegible] ॥ ५ ॥ [illegible]वाद्यमानता
क्षेमशिव्याश्रम सहस्राव ॥ पांडवा[illegible]निहि[illegible] ॥ ६ ॥ [illegible]हिनान्नद्य
पांडवानन्दैरत्ना[illegible] ॥ [illegible]वर्णः वांशवेनेन्द्र[illegible] ॥ ७ ॥

[illegible] ॥ [illegible]हते स्त्रिणो पि

ग्वन्नविचित्रवीर्य[illegible]नलसंदेह[illegible]ना
लिशानां श्राव[illegible]निशुनिलीस्थ[illegible]
नेन[illegible]पति[illegible]
में रा[illegible]नि ॥ ३ ॥ [illegible] ॥ [illegible]
नहानि श्रानीना [illegible] ॥ ४ ॥ [illegible] ॥ [illegible]

म॰ मा
आ॰ वं
२६

ह्नानन्दतिः शुभ्र [illegible] विक्रिया [illegible] विनयोथवानन्दनशीलता ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ४९ ॥ [illegible] ॥ कर्मप्रयोग
[illegible] ॥ ५० ॥ [illegible] ॥ ५१ ॥ [illegible]
एकैकस्य [illegible] ॥ [illegible] ॥ ५२ ॥ [illegible]
भिः ॥ ५३ ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ ५४ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ ५५ ॥ [illegible]
लोके [illegible] ॥ [illegible] ॥ ५६ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ ५७ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible] ॥ ५९ ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ३९ ॥

28

२६

ननस्येन इ निविज्ञपेत्वयाश्रन्स्यारविलाव ॥ [illegible] ॥ [illegible] किंपदेलिविप
नः चिरेपूणपद्यपः [illegible] निशा स्इनि [illegible] ॥ [illegible]
न [illegible] विलेन लेस नयेदीप्त पजिने [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
लिमात्नेत्र स च [illegible] नन्दान ॥ ॥ [illegible]
निपश्यापीलि पावैकने [illegible] विवाचा [illegible]

[illegible] चिन्तन [illegible] निचापारे ॥ [illegible] ॥ ॥ [illegible] सर्वथा
दिपाणां [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] निनाद्यन ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] निच ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] नमयच ॥ २ ॥

[illegible] ॥ [illegible]
नसर्वथा सर्वैः ॥ ॥ [illegible] ॥ ॥ [illegible]
नः [illegible] ॥ ॥ [illegible] ॥ ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ २ ॥
नदेच [illegible] ॥ [illegible]

नत्रहेन: अ नवानसीति अ नवानं ॥ ० पीतीव हिमानपाठनोधेन व गं व पारक: मे पो वी ॐ स्यो हक
पुन्त: अनघ व आत्मानं पांडवानां समन: न च क्षीये नैव प्रीतिमानस्मि ॥ ४१ ॥ अ व चल: कार्यं त्पानं ॥ मां ये ॥
नहीननान ॥ व च श्रीमाचनन स्तु निमहे ॥ प्रवेननपनाव हि ॥ ४३ ॥ हमपानमारो हृग्नो दूर्पीनेन च ॥ ४४ अम
हिल: अ पंनन: नि ह न्मा हे पम् हि नि पोम: ॥ हनि पं पो भ ना पी हे स्यं न व पि चिं ॥ हे प्रा नं व पी कनं

अ न नान श्रि मे पा वी व हि मा न्मा नं स मन: ॥ न वि व हे स म म नि नै न व प्री पे क ल व पे ॥ ४५ ॥ न मे वि
पो ष: व वे व ले व पां ड सा ने व पा ॥ हं न म र मा न हं नि वु ना स न्य प न ग पु तो: ॥ ४६ ॥ प्रहं न व वे:
कां प त्पा नु न श्री मा स ह नि न न ॥ मं पे नं ना न म मु: नि दु र्पी प ल न ग वे नि नं ॥ ४७ ॥ रा ज न ह प नि
पं ह ह्मा ष नं व स्म म हे ज मः ॥ न मा न हु स नं का प स मा ते हु ग [illegible] ॥ ४८ ॥ अ म र्थ ता: स्व पं
ने न म पु न: पां ड वा ना ते ॥ नि ह ना ह स मं [illegible] ॥ ४९ ॥ गां पा र न न
म हि न श्च म पू न म मे न पा न ॥ न व प प प मा नां न म [illegible] ॥ ५० ॥ अ ना ह स म वा
वा नि श्रु हि पु का नि न न म: ॥ न नो ना त्य हि मां सो ने [illegible] ॥ ५१ ॥

पा नं न ने पु श्रो र्थः ॥ ५२ ॥ मं पा पु न न: इ ह नि: [illegible]
न पा श न श्र ति रो प कं ज न स्र वं म लो क ह ष ए हि न [illegible]
मो न्मा नं स्न वं नी नि प न न पा श्रु ति [illegible]
णो ह ना ग न ना वि क प्र नं प न न प श्रु न [illegible]

म. भा.
आद
२२

प्रसह्योढां देवैर्नैव नन्नमेरात्रिना ॥ ४ ॥ यदाश्रौषं द्रौपदीं रङ्गमध्ये [illegible] ॥ पाण्डवानां [illegible] तदा ॥ ५ ॥ यदाश्रौषं [illegible] ॥ [illegible] ॥ ६ ॥ [illegible] तदा ॥ ८ ॥ [illegible]

यदाश्रौषं दिग्जये पाण्डुपुत्रैर्वशीकृतान् भूमिपालान् प्रसह्य ॥ महाक्रतुं राजसूयं कृतं च तदा ॥ ७ ॥
यदाश्रौषं द्रौपदीमश्रुकण्ठीं सभां नीतां दुःखितामेकवस्त्रां ॥ रजस्वलां नाथवतीमनाथवत्तदा ॥ ८ ॥
यदाश्रौषं वाससां तत्र राशिं समाक्षिपत्कितवो मन्दबुद्धिः ॥ दुःशासनो गतवान्नैव चान्तं तदा ॥ ९ ॥
यदाश्रौषं विविधास्तत्र चेष्टा धर्मात्मनां प्रस्थितानां वनाय ॥ ज्येष्ठप्रीत्या क्लिश्यतां पाण्डवानां ॥ १० ॥
यदाश्रौषं स्नातकानां सहस्रैरन्वागतं धर्मराजं वनस्थं ॥ भिक्षाभुजां ब्राह्मणानां महात्मनां तदा ॥ ११ ॥
यदाश्रौषमर्जुनं देवदेवं किरातरूपं त्र्यम्बकं तोष्य युद्धे ॥ अवाप तत्पाशुपतं महास्त्रं तदा ॥ १२ ॥
यदाश्रौषं त्रिदिवस्थं धनंजयं शक्रात्साक्षाद्दिव्यमस्त्रं यथावत् ॥ अधीयानं शंसितं सत्यसन्धं तदा ॥ १३ ॥
यदाश्रौषं कालकेयास्ततस्ते पौलोमानो वरदर्पाच्च दृप्ताः ॥ जिताः पार्थेनाहवे दुर्जयेन तदा ॥ १४ ॥
यदाश्रौषमसुराणां वधार्थे किरीटिनं यान्तममित्रकर्शनं ॥ [illegible] तदा ॥ १५ ॥

[illegible] ॥ यदाश्रौषं [illegible] ॥ [illegible]
१५ ॥ यदाश्रौषमर्जुनेनाभि [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ २५ ॥ २६ ॥

२५

स॰ भा
आ॰ पं
२२

२१

बडपावेसहयेण ॥ ५ ॥ तूर्यांकेनी ॥ ७ ॥ नेपापांडवानां ॥ ४ ॥ [illegible] कवडो पियरानेनयावह ॥ इम्याह
यदाकरणइति ॥ १ ॥ गंडेस्मानीनिगंडीवकमम्याः गंडः स्यात्सिवक्लिनीनिमेदिनी ॥ तेनसहवानिगच्छ

यदा श्रेणिकं [illegible] ॥ [illegible] ॥ १०॥
यदा श्रेणिकं [illegible] ॥ [illegible] ॥ ११॥
यदा श्रेणिकं [illegible] ॥ [illegible] ॥ १२॥
यदा कर्णे भीष्म [illegible] ॥ [illegible] ॥ १३॥
यदा श्रेणिकं [illegible] ॥ [illegible] ॥ १४॥
यदा श्रेणिकं [illegible] ॥ [illegible] ॥ १५॥
यदा श्रेणिकं [illegible] ॥ [illegible] ॥ १६॥
यदा श्रेणिकं [illegible] ॥ [illegible] ॥ १७॥
यदा श्रेणिकं [illegible] ॥ [illegible] ॥ १८॥
यदा श्रेणिकं [illegible] ॥ [illegible] ॥ १९॥

[illegible] ॥ [illegible] ॥ २१ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ २२ ॥ [illegible] ॥ २३ ॥ [illegible] ॥ २४ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ २५ ॥ नदेवाहभीष्म ॥ २६ ॥ [illegible] ॥ २७ ॥

२२

म॰ भा॰
आ॰ प॰
२१

[illegible] ॥ ४७ ॥ [illegible] ॥ ४८ ॥ [illegible]

यदाश्रौषं [illegible] तदा ॥ ४९ ॥
यदाश्रौषं [illegible] तदा ॥ ५० ॥
यदाश्रौषं [illegible] तदा ॥ ५१ ॥
यदाश्रौषं [illegible] तदा ॥ ५२ ॥
यदाश्रौषं [illegible] तदा ॥ ५३ ॥
यदाश्रौषं [illegible] तदा ॥ ५४ ॥
यदाश्रौषं [illegible] तदा ॥ ५५ ॥
यदाश्रौषं [illegible] तदा ॥ ५६ ॥
यदाश्रौषं [illegible] तदा ॥ ५७ ॥
यदाश्रौषं [illegible] तदा ॥ ५८ ॥
यदाश्रौषं [illegible] तदा ॥ ५९ ॥
यदाश्रौषं [illegible] तदा ॥ ६० ॥

[illegible] ॥ ४९ ॥ [illegible] ॥ ५० ॥ [illegible] ॥ ५१ ॥ [illegible] ॥ ५२ ॥ [illegible] ॥ ५३ ॥ [illegible] ॥ ५४ ॥ [illegible] ॥ ६० ॥

२२

गी॰ भा॰
ध्या॰ ५
२४

तमः शोककारणमज्ञानावरणं कार्यं मोहः॥ कार्याकार्यविवेकविनिवृत्तिः॥ ज्ञानेनैव संसारविशेषविज्ञानं नोप
लभे॥ विकल्पतिशेषे केनाकुलीभवति॥ १५॥ ज्ञानेन तु तदज्ञानं येषां नाशितमात्मनः॥ १६॥ तद्बुद्धय

तमस्तानीव विशीर्यन्ते मोहज्ञानि यानीव यं॥ संज्ञानोपलब्धे तन्मनो दिहृत्लानीव मे॥ १६॥ श्रीभगवानुवाच
इमन्तदात्मनः आत्मा विलयाव हृदः विहितः॥ महितेन तु तदज्ञानं नाशितमव्ययेन॥ १॥ मनसैव
वेगतेज्ञात्मा पुनः विलब्धिमाविः॥ ज्ञानं प्रतिलभ्यते तिष्ठत्येनाविनयाक्षरे॥ १॥ श्रीभगवानुवाच॥
तत्त्वयावाहिनी नविलज्ञानमहीपतिः॥ विष्णुरतत्त्वज्ञानानां तु मनः पुनः पुनः॥ १॥ तत्त्वज्ञा
निविष्टधीमान्मत्तस्थैर्यवाद्यमन्नवीन॥ संजयउवाच॥ [illegible] महाराज [illegible]
न॥ १॥ श्रुत्वा [illegible] नारद [illegible]॥ [illegible] वा॥ ज्ञाना
न॥ १२॥ द्वैपायनप्रसादतेनानारद [illegible]॥ [illegible]॥ १४॥ प्रति
नहिस्यात्सर्वविदप्रः [illegible]॥ [illegible]॥ १॥ [illegible]
लोके यशः प्राप्यतः [illegible]॥ [illegible]॥ ११॥ [illegible]
व्वकालीवनेमहत [illegible]॥ [illegible]॥ १॥ [illegible]
मांधमहाबलं॥ [illegible]॥ [illegible]॥ वेम
थ॥ [illegible]॥ [illegible]॥ [illegible]
पृथ्वांकितामपि [illegible]॥ ९॥ [illegible]
ज्ञात्वान्वंशेषं यथकौलितं॥ २८॥

वलाभिः संजयः॥ ४५॥ विशेषवचनवतिक्रमो विहिन्मन्बौ [illegible]॥ [illegible]॥ ४॥ चतुर्विप्रा॥

२४

न

निग्रहः पांडवेषु ॥ अनुग्रहः स्वपक्षेषु नीतं कृतो ॥ तेनैव विशिनोष्टि ॥ स्वपक्षपाती रक्षणे यानि हनिष्यंति
नवसंघे श्रुत्वा ते निधार्य ॥ अन्यैः कृतानि न श्रुयते ॥ अनन्य याविज कामगिरा मिश्रितानादि प्रवक्तुं तां नायका
नाव रक्षमा विलाक्षित भावः ॥ ४ ॥ वृद्धिः कर्मान का ग्रासी निम्नाधेन प्राकृत प्रकर्मणो इति कातावरव
कृतेपि ना तं प्रत्याना ये न कोकः कर्तव्य स्मारह ॥ भवितव्य मितिः ॥ ४ ॥ मार्गं एव पर पमेव भोक्तुं प्रकृतं
कर्तव्य माश्रमर्मिति एव दूषां परद्ग्ति ॥ ननु प्राकृत मनव प्राचामीति वेद स्मारह ॥ कालेन ॥ यद्यानस्वप

निग्रहानय है चापि विशिनोष्टि नेन यापि पः ॥ कालं नमे वानर ज्ञिः कर्थानेषु रवरक्षणे ॥ ५ ॥ भवितन
वंनयान वनानन क्षो विन सर्व ज्ञि ॥ देवं प्रकाशि [illegible] केनचि निश्चय शक्ति ॥ ६ ॥ विपार्श्व विह्नि तेम
गीन कश्चित् नि वर्तते ॥ कालस्य [illegible] ॥ ७ ॥ [illegible] तिमूना निका
लः संहरते प्रजाः ॥ संहर्ता प्रजानां कालः कालः प्रापयते पुनः ॥ ८ ॥

स्वपक्षाणुरक्षः ॥ कालेन करिष्यते नलया पर
वेणु मदन मह कृष्ण ह्मसोपी सर्वशीः ॥ भाषामाशी वृत्तं लाभयान सर्वे [illegible] ॥ ९ ॥ कालः निमेषादि
[illegible] नः मृत्नानित्य याचना दीलिक्ष्य ते नितिं हृति [illegible] दि पाक मान्य वि
निश्चितेयान सन्तान प्रज्ञानेनिः पो कं क [illegible] लेना किंचित्
विनयं बोधते न च न स्वैरा पन्म्या [illegible] यमप्रति वनपि
नि ॥ मन्त्रस्य मतं न माम्यस्य हर्मितिश्रुतेः ॥ कालस्य [illegible] प्रमाणत इति ज्ञत्वा

स॰ का॰
ग्रा॰ पं॰
२६

24

[illegible]
२६

स. भा.
आ. पं.
२९

ग्रहयोः कार्मीनां शास्त्रकर्त्रो विषये उपनिषदं उपनीयेऽस्मान् आत्मानं ब्रह्म शास्त्रं ब्रह्मपयतः निर्दिष्टं वि
शेषतान् तत्सादुपनिषदं वेदितिः ॥ यथोक्त विषादेन नाकुंचो पुण्य उपनिषदं वेदितिव चनात् ब्रह्मानि
ष्ठेन सादुपनिषत् वर्णन ॥ यथोक्त विषादेन ना कुञ्चो उपनिषदं वेदि ॥ प
कन विषाप्रतिपादकं ग्रंथमस्तुतयो ग्रामुकयो वीतिकस्मान्नीयं उपनिषद्बुद्धा वाच्यं ब्रह्मवीत ॥ प
ग्रामहत्त्वपाठं चनपुण्यप्रतिपादनं पुण्यमेनत्वापाठं कामयो लौकिक प्रसिद्धयो वेदवदुपयाक्रि
येवपादि येनिमायेन ज्ञानार्थं तत्वास्तरं संस्कृतवि विविदिषंति यज्ञेन दानेन तपसाविषारोचन्नपर
त्वितनाम्नायमतारुपविषायामेवेति योग्यं पाप्रानः सांप्रदायिकनामाह ॥ विद्वद्भिरिति ॥ कथ्यते पुरा
हि सिद्धमेव कीर्तेनेन नकरं वर्णोदिवद्धिन वक्तव्याकथने कविसत्तमैः पूर्वपूर्वकस्यैवेत्यर्थः ॥ वि

अत्रोपनिषदं पुण्यां कृष्णद्वैपायनोऽब्रवीत् ॥ विद्वद्भिः कथ्यते लोके पुराणे कविसत्तमैः ॥ ५४ ॥
भारताध्ययनात्पुण्यादपि पादमधीयतः ॥ श्रद्दधानस्य पूयन्ते सर्वपापान्यशेषतः ॥ ५५ ॥

मिः ॥ एवं च भारतादिषु शास्त्रेषु प्रेतानामादिपारतन्त्र्ये कारिविचन नेतव्यमित्यत्रैव तदर्थानां नि
त्यनात्र पुण्यपानामकर्तव्य कलमाचार इति तत्त्वज्ञानं स्थलं मनसे [illegible] स्यायूनयेत्वहत्त्व भाष्य
महाभारतधर्माचार्यानिमित्त पुण्यज्ञानादिप्रयोजनम् [illegible] विधिना यो
गः संगच्छते ॥ अन्यथानिमानित्यमेवाप्रमाणिवोधे दुर्वारः [illegible] ॥ ५४ ॥
भावनेति निमिष्वहाय [illegible] ॥ [illegible] स
पुराणानीत्यस्मात् इतिमिति तिनः ॥ [illegible] ॥ [illegible] कन्नाः
यतेन पूयन्ते ॥ अपूर्वस्योक [illegible] ॥
यद्यपि तनत्वं स्वस्मान्नाम ॥ [illegible] ॥ ५ ॥

२९

[illegible] तिरस्कालो [illegible]

कालो हि नि ॥ [illegible] कालो हि [illegible] [illegible] ॥ २० ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] किं [illegible]

[illegible] विचिन्त्य [illegible]

न

[illegible] कालः संक्षिपते सर्वाः प्रजाः विसृजते पुनः

कालो हि कुरुते भावान् सर्वलोके शुभाशुभान् ॥ कालः [illegible] ॥ कालः सर्वेषु भूतेषु चरत्यविधृतः समः ॥ २ ॥ [illegible] कालः सुप्तेषु जागर्ति कालो हि दुरतिक्रमः ॥ कालः [illegible] ॥ अनागता ये च भावा ये च वर्तन्ति साम्प्रतम् ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥

ईदृशाद्विपक्षाद्व्यावृत्ता हि लक्षणोक्तिरविवेचनीयं [illegible] सत्त्वं कार्यं कारणं च [illegible] भयात्मकं विशेषणं
[illegible] ॥ २ ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ ३ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ ३ ॥
[illegible] ॥ [illegible]

[illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]

26

एवं च श्रेयस्कास्यमपि फलं न प्राप्नुवन्ति [illegible] ॥ [illegible] विषयमाह ॥ देवानिति ॥ देवा
न्तानित्यकर्मानाइति चित्तशुद्ध्यापेक्षा [illegible] श्रद्धयायामनुरू
पं फलं दत्तं तेन ॥ [illegible] विषयमाह ॥ [illegible] ॥ [illegible] श्रियः ॥ देवा
[illegible] ॥ नतदेवोन्यनि
[illegible] निकर्माणि कर्त
व्यानि नित्यं [illegible] ॥ [illegible]
विभक्ति [illegible] ॥ [illegible]

देवान्देवयजो यान्ति मद्भक्ता [illegible] ॥ [illegible] महेयमाः ॥२॥
ममाव्ययमनुत्तमम् [illegible] ॥ [illegible] ॥ नाहं प्रका
शः सर्वस्य [illegible] ॥ [illegible] ॥८॥
[illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible]

महत्वेपघन [illegible] धिके ॥ ४४ ॥ नन्वज्ञानर्थे [illegible]
[illegible]
[illegible] नपइति ॥ नप: [illegible] कल्कः [illegible] कल्क ॥
कल्को [illegible] ॥ [illegible] भाव: ॥ नपो निर्मल [illegible] र्थः विधि
[illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible]

महत्वेच [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ४५ ॥ नपोन [illegible] वेद विधिने
कल्कः ॥ [illegible] कल्कः ॥ ४६ ॥ इति श्री म [illegible]
[illegible] द्वापर्व [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

नपन किंचिन [illegible] नक [illegible] [illegible]

[illegible] देव [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] नाम [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible] ॥ [illegible]

[illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

भा॰ आ॰
अ॰ २
२५

...द्वेताः ॥ [illegible] ॥ ४५ ॥ समंतेहृदानां पंचकं समंतपंचकं [illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ समंतपंचके [illegible]

अन्तरे चैव संप्राप्ते कलिद्वापरयोरभूत् ॥ समंतपंचके युद्धं कुरुपांडवसेनयोः ॥ १३ ॥ तस्मिन्परमधर्मिष्ठे
देशे भूदोषवर्जिते ॥ अष्टादश समाजग्मुरक्षौहिण्यो युयुत्सया ॥ समेत्य तं द्विजास्ताश्च तत्रैव
निधनं गताः ॥ एतन्नामाभिनिर्वृत्तं तस्य देशस्य वै द्विजाः ॥ १४ ॥ पुण्यश्च रमणीयश्च स देशो वः प्रकी-
र्तितः ॥ तदेतत्कथितं सर्वं मया ब्राह्मणसत्तमाः ॥ यथा देशः स विख्यातस्त्रिषु लोकेषु सुव्रताः ॥
ऋषय ऊचुः ॥ अक्षौहिण्य इति प्रोक्तं यत्त्वया सूतनंदन ॥ एतदिच्छामहे श्रोतुं सर्वमेव यथातथं ॥
अक्षौहिण्याः परीमाणं नराश्वरथदंतिनां ॥ यथावच्चैव नो ब्रूहि सर्वं हि विदितं तव ॥ सौतिरुवाच
॥ एको रथो गजश्चैको नराः पंच पदातयः ॥ त्रयश्च तुरगास्तज्ज्ञैः पत्तिरित्यभिधीयते ॥ पत्तिं
तु त्रिगुणामेतामाहुः सेनामुखं बुधाः ॥ त्रीणि सेनामुखान्येको गुल्म इत्यभिधीयते ॥ त्रयो गु-
ल्मा गणो नाम वाहिनी तु गणास्त्रयः ॥ स्मृतास्तिस्रस्तु वाहिन्यः पृतनेति विचक्षणैः ॥ चमूस्तु
पृतनास्तिस्रस्तिस्रस्तु चम्वस्त्वनीकिनी ॥ अनीकिनीं दशगुणां प्राहुरक्षौहिणीं बुधाः ॥ अक्षौहिण्याः प्रसं-
ख्यानं रथानां द्विजसत्तमाः ॥ संख्या गणिततत्त्वज्ञैः सहस्राण्येकविंशतिः ॥ शतान्युपरि चैवाष्टौ
तथा भूयश्च सप्ततिः ॥ गजानां च परीमाणमेतदेव विनिर्दिशेत् ॥ ज्ञेयं शतसहस्रं तु सहस्राणि
नवैव तु ॥ नराणामपि पंचाशच्छतानि त्रीणि चानघाः ॥ पंचषष्टिसहस्राणि तथाश्वानां शतानि
च ॥ दशोत्तराणि षट् प्राहुर्यथावदिह संख्यया ॥ एतामक्षौहिणीं प्राहुः संख्यातत्त्वविदो जनाः ॥

समंतेनानां [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ अक्षौहिण्यः [illegible]
हृद्ये ॥ [illegible] ॥ पंचषष्टी [illegible] ॥ [illegible] ॥ २६ ॥

२५

स॰ भा
श्रा॰ प॰
३॰

२२

सोहितिमितोकाष्ठिमितैरैः प्रतिपन्नैस्तारागीकृतैर्वैराग्यमिवश्यामापरैर्वैराग्यस्थानांतरीयकं फलं कैव
लं एव मेनद्भुवतारकावीतिभावः ॥ ५४ ॥ सानेति ॥ यानमाननमेवस्वनः कुरूकार्थं इतिपानैर्वस्यवर्ववे
हितंतन्तमातास्थलनावेदकनानप्रसूनतानेन सर्वंशहसानंस्कारहरावमंगयश्योकेसहपारैः
सर्वैरेवहितविज्ञानंसंस्कारतेनगायते ॥ पदानिवानानिविज्ञानानादनानेनवपार्यतमेतिप्रयानार्थः अस्या

विविज्ञार्थपदस्यासोननमनेकस्य सयानिनं ॥ प्रतिपन्नैर्नैरैः प्रास्तैर्वैराग्यमिवसोहितिभिः ॥ ५४ ॥ स्या॰
मेव विहितमोक्षप्रियेत्रिवहितोवनं ॥ इतिहासः प्रयनार्थः सेहः सर्वांगमेषथ ॥ ५५ ॥ सनास्मि
सेदमात्मानेकथाप्रविनविज्ञाने ॥ प्रा॰ ॥ [illegible] ॥ नदेनङ्गाजेना
सकविभिन्नस्तनीयाते ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ इतिहासोननमेषु भिन्नपिता
व्रहितनमा ॥ स्वसंजननयोः कन्यालोकवैशुद्धबवाक् ॥ ॥ [illegible] मिवन्नस्वविविन्नपर
पदेप्राः ॥ सहस्रार्थमान्नकपरेरहासैर्भिन्नस्यव ॥ ॥ [illegible] इतिहासस्वप्रयत्नेः पदेसंय
हः ॥ पदानिक्रमगणीपूर्वहितीयः पदैसेहहः ॥ ५६ ॥

वामित्रयोजनः ॥ ॥ ॥ कविभिः काव्यकर्तृभिः ॥ आत्मे [illegible] प्राणमङ्गनकाव्य
रचनेरदमेवबलमितार्थे ॥ अभिलाषः [illegible] ॥ [illegible] काव्यकृतिः ॥ ५७ ॥
प्रतयाभिपन्नंयसंनस्य ॥ ५८ ॥ पदेतोज्ञय [illegible] नमति
पादयेतिनानिपदांगिप्रकारणानिनेथा [illegible] ॥
सेः ॥ ५९ ॥

१०

समिन्नतः एकीभूताः संधियायै ॥ [illegible] ॥

[illegible]

नेमनः [illegible]

[illegible]

लोके ग्राम्ली [illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible]

[illegible] ॥

२

[illegible]

स॰ भा॰
अ॰ ५
३२

31

कृ॰ रूप्णमोहं दे हि कं आदं पर्व चार्वाक रूपसहरू पिलोगाद सम्यविश्र वोभान नियह: पांनिवर्वं ॥ ७४ ॥
पांनिपवी रह धर्मा पुगं नीति ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ भामपे निपा वंन ये भययर्त पिहलभयेनपर्खे: ॥ ७७ ॥ अनपशमलं थ
मांथ मोपदे शः ॥ तन्मवंद्भमान शाम सलिकं ॥ ७८ ॥ शांकेन संपयांकं नवेपर पेवाव पानप अनेनलिच

आदं पर्वनमोहं ये कृ॰ रूप्णमोहं दे हि कं ॥ चार्वाक नियह: पर्वरव मोक्सरू पिलाः ॥ ७४ ॥ आभि
षेच निकं पर्व यभैयान स्यधीमतः ॥ पविभागे मरू पयंन पर्वां कं न दनेन तं ॥ ७५ ॥ शांति पर्व तेन मो
यग्नरन्नयभैान्न शमलं ॥ आपदर्भेस्य पर्वां कं मोक्षयर्म स्तनः परं ॥ ७६ ॥ शुक प्रश्नाभिगमनं च
प्रश्नानुशासनं ॥ जाजभोवयसूद्ोमः संवादश्ेत्रमारयं ॥ ७७ ॥ ततः पर्वदान हेयमानं शास
निकं परं ॥ स्वर्गारोहणिकं चैव ततो भीष्मस्याथैमततः ॥ ७८ ॥ ततोश्वमेधिकं पर्वसर्वपापप्रणा
शनं ॥ अनुगीता ततः पर्व ऐश्वयर्म पानम् वाचकं ॥ ७९ ॥ पर्व श्रमवासाख्यं पुत्रदर्शनमेव च ॥
नारदागमनं पर्व ततः परं भितिस्मृतं ॥ ८० ॥ मौसलं पर्व चातिपर्वनो चोरं इद्मुदाहृतं ॥ महाप्रस्था
निकं पर्वस्वर्गारोहणं ततः परं ॥ हरिवंश ततः पर्व पुराणं खिलसंहितं ॥ विष्णुपर्व शिशुचर्या
यां विष्णोः कंसवधस्तथा ॥ ८१ ॥

लक्ष्मिनिवेहिकोय लिहिः ॥ पलावहूः नो अभीहनके पान कानि ... लोकले तवोरथाते ॥ पवस
श्मिनिनिहाधेयस्वयशोनरधोशकं लानप्रहणं ॥ पुनर्नेन ... पनान ... नमा ॥ हरिवंशाद
नि ॥ अनपवाश्य लिलस्य उरारग श्मिलिन्विये ... हि रूप्याशोका सावले

भगवद्ध्यानं कोपवाच्यानि ॥ १४ ॥ १५ ॥ विमर्श [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ १६ ॥ [illegible]

पानसंधिल्लनः परं भगवद्र्पानमेव च ॥ [illegible] च ॥ १९ ॥ [illegible]

वामदेवचवे मोपायो नमेव च ॥ [illegible] ॥ सुगमः ॥ येशः के

[illegible] ॥ योगाः [illegible] ॥ [illegible] विचारपवोवक

[illegible] मनः ॥ नि [illegible] संस्मोवपर्वोक

[illegible] ॥ [illegible] मन्नः परं ॥ दि

[illegible] ॥ [illegible] नमेच्याते ॥ १५ ॥ [illegible] वि

[illegible] ॥ [illegible] भगवमीनः

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] नः परं ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] नः परं ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] नः परं ॥ [illegible] ॥

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ १० ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible]

32

सं.भा
स्क.प
३५

शक्तितो हेतुरेवाप्रित्तमेत्र्यपेण नभोऽनलः ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible]

[illegible]

३५

शिष्टानां चैन सत्तम् हि यं मे प्रा[illegible] ॥ [illegible] मन्येथा ॥ [illegible] ॥ यतिनैः सर्व
स्तुतः श्रेयो लक्ष्मीं च विंद निमेष्यतां [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ दिजनी नैविना

[illegible] सिद्धाः ॥ २९ ॥ पार्थ
सन्ये यां चैव भूतानां नैविरिचामांतां [illegible] ॥ म[illegible] छिनेगारनैकर्ले ॥ ३० ॥ वक्तनां
नलां पांडु [illegible] निशां ॥ [illegible] रूपिहिव ॥ ३१ ॥ नेनों पानां
नरूनत्निमौगवीरस्याग्रमहात्मना ॥ [illegible] क्षितिः ॥ ३२ ॥ प्रति चापास
चंद्रमानां भौमपापात्या [illegible] ॥ [illegible] ॥ विचित्रवीर्ये शान्तथा
नैवैरत्नाचि अंगारमा [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ कुरुक्षेत्रे पाण्डुना [illegible] लिंगे
गांगेयप्रति पादनं ॥ [illegible] ॥ [illegible] कौरवेषु न स्पाच
गृहानन्ता ॥ [illegible] ॥ [illegible] पा ॥ विदुर
हितोपदेश [illegible] ॥ [illegible] ॥ ९ गोच
स्य चवालेन [illegible] ॥ [illegible] निका[illegible]
नस्य चाप्येव दहनं [illegible] कौनिनं ॥ पांडवानां च [illegible] दर्शने ॥ २ ॥

कृ[illegible] ॥ केवलान्न[illegible]निपीतं [illegible] संभवपर्व ते ॥ २ ॥ विषवाक्यं त्रिपिर्लेञ्चाया
[illegible] पर्व ते ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ कारणा
नवनिस्तवायवानं ॥ [illegible] ॥
दानवानि [illegible] पर्व ते ॥ २ ॥

34

लोकन्वेद् [illegible] मान [illegible] ॥ [illegible] ॥ नानचेद [illegible] ॥

[illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥

१५॥ स ॥ विज्ञानेनं महात्मा [illegible] मिति [illegible] ॥ [illegible] ॥ विन [illegible] ॥ नत्रैवा [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥
[illegible] ॥ ८ ॥ किन [illegible] ॥ ९ ॥ [illegible] ॥

[illegible] ॥ ९ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ १० ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ११ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ १२ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ १३ ॥ [illegible] ॥ १४ ॥
[illegible] ॥ १५ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ १६ ॥

[illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ १७ ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ १८ ॥ ॥
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥

३९

म॰ भा॰
आ॰ प॰
३०

36

५५॥ देवलाम्यप्रसन्नात्मा देवशाङ्गं [illegible] तिना पायेन ऽलीव देवैर्देना तो नि जयाना र्तनोः [illegible] ॥ सकामका
मिनी [illegible] हृग [illegible] विश्वेन ॥ [illegible] सोवांपी [illegible] प्रवृत्ते नासमीप [illegible] ॥ ५६ ॥ [illegible]
नमनयं ॥ ५७ ॥ स्थिति [illegible] विप्र [illegible] पालनं ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ म

गमनं कामके चापि [illegible] नन्दनः ॥ [illegible] देनो [illegible] सितनं [illegible] ॥ ५८ ॥ म
हादेवेन [illegible] च किं [illegible] ॥ [illegible] लोक [illegible] महात्मनि [illegible] वच ॥ ५९ ॥ महेन्द्र लोक
गमनं [illegible] ॥ [illegible] ॥ ६० ॥ [illegible]
हर्ष [illegible] ॥ [illegible] देवनं ॥ ६१ ॥ [illegible] कुरु
[illegible] ॥ [illegible] स्थिति [illegible] ॥ ६२ ॥ [illegible] देवमहर्षिभिः
लोमश [illegible] ॥ ६३ ॥ [illegible] महात्मना ॥ स्वर्गे
[illegible] ॥ ६४ ॥ [illegible] क्रिया ॥ तीर्थाना च
फलप्राप्तिः [illegible] चापि [illegible] ॥ ६५ ॥ [illegible] ॥ तीर्थयात्रा च [illegible]
दैवपांडवानां महात्मनां ॥ ६६ ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] कीर्तिता ॥ ६७ ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ६८ ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ ६९ ॥
तीर्थयात्राविनो

[illegible] ॥ ७० ॥ [illegible] ॥ ७१ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ ७२ ॥ तीर्थ [illegible]

[illegible]

37

देवनंदेवतानांहिवास[illegible]नोपलः॥ [illegible]
नेपानेननदेनोसोमयीनिलो॥ [illegible]
हलासोमकायशानेउवान्रसप्रथा॥ [illegible]॥ श्रीतिलाकन[illegible]
पविलेवष्टःश्रिविः॥ कपोतविव[illegible]

सोकनमपिवाखानेन्नवनो[illegible]॥ [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
नसेःसह॥ यदेसेवमहावी[illegible]॥ [illegible]॥

यसीननश्रु.लिरिनिमन्वमानेन॥१८॥ सगार्द्रप्राः[illegible]पिनांकहेदे॥ [illegible]ःनवे
[illegible]विना॥ [illegible]नदीनि॥ [illegible]॥ निर्दलाः[illegible]
[illegible]॥ [illegible]॥ सोनंपिका[illegible]
[illegible]॥ [illegible]॥ नलिनो[illegible]॥ [illegible]॥ [illegible]
सोनंपिकंनकरू[illegible]पिकंर्[illegible]निमेदिनी॥ [illegible]

स॰ भा॰
श्रा॰ प॰
३६

[illegible]

38

२१॥ यो के लास सा आ म नि तं स्य म न था भू न ला ण हां आ था नां श्या वि नो पि ना यं ल न इ वि नि भा
वः॥ न नि इ ति प ग थां थी न च इ ग नि वो पि नः इ नि का ना गे सा न स्व ना ने का पि व णि नं॥ २२॥ म
मि नो म भा गं ण का नं स्य ए क वि न नं च ल न न त्व य र क न च दि स्व सं गो वा म दे वा ज्ञे न यो नी वे प्रा यो वै
का न्य म भे द मे व शा नि म ज्ञ यः॥ न नः ज्ञा नं वि ना या नः यो क न रा ण नि म वा न रा ज्ञा न मो ग्या

वि इ यो य च वा या नि वि चि त्र गि य ता नि च॥ [illegible] ॥२३॥
न था स न त्म ना ने न य त्रा [illegible] न न म्॥ [illegible] नि नः यो क ला ल म॥ २४॥
प्र भा ने ग न ल म्म नि नो सं न यो य च वा नि यो॥ [illegible] न स्य च॥ २५॥ य च
क स्मा द या ग न्नः म पि [illegible]॥ [illegible] ॥ २६॥ प्र त्या
[illegible] ॥ २७॥ मो इ
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ २८॥

[illegible]
[illegible]
[illegible]

40

निरन्यसंतनोपिमनोवैदाल्पश्च निका [illegible]

[illegible]

ना ॥ [illegible]

[illegible]

प्रत्यधिहिनेयत ॥ ४५ ॥

नविग्रहः [illegible] ॥ [illegible]

[illegible]

[illegible] ॥ ४५ ॥ [illegible] ॥

॥५८॥ नयाशनो विनाशाय [illegible] ॥ शान्तं हृदं च [illegible] कनवान्तयोपनः ॥५९॥
॥६०॥ [illegible] विनाश [illegible] ॥ [illegible] ॥६१॥
[illegible] ॥६२॥ [illegible] नेनना नीमहे ॥ [illegible]

[illegible] ॥६३॥ [illegible]
[illegible] ॥६४॥ [illegible]
[illegible] ॥६५॥ विनाश [illegible]
[illegible] ॥६६॥ [illegible]
[illegible] ॥६७॥ [illegible]
[illegible] ॥६८॥ [illegible]
[illegible] ॥६९॥ [illegible]
[illegible] ॥७०॥ [illegible]
[illegible] ॥७१॥ [illegible]
[illegible] ॥७२॥ [illegible]
[illegible] ॥७३॥ [illegible]
[illegible] ॥७४॥ [illegible]
[illegible] ॥७५॥ [illegible]
[illegible] ॥७६॥

[illegible] विनाश [illegible] ॥ [illegible] ॥७७॥ ॥

[illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥७२॥

स॰ भा॰
आ॰ प॰
४२

42

१ ॥ ७ ॥ जिनकाचिनः ॥ तपस्याधिन ॥ १ ॥ २ ॥ सोमिकेणीके आसोने [illegible] संबंदे इत्यर्थः ॥ १५ ॥

भीमसेन मघाघत्रदैवना मित्रचोदितः ॥ प्रपंडवाये निहमाहै [illegible] ॥ १ ॥ सेवमि
न्यावबीजकः [illegible] ॥ [illegible] ॥ २ ॥ [illegible]
द्वशिनंबीसप [illegible] ॥ [illegible] ॥ ३ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] जिनकाचिनः ॥ ४ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ ५ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ ६ ॥ सोमिकेणीक
[illegible] ॥ [illegible] ॥ ७ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ ८ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ ९ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ १० ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ११ ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ १२ ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ १३ ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ १४ ॥

[illegible] ॥ ५ ॥ १० ॥ [illegible] ॥ २३ ॥ २३ ॥ [illegible] ॥ २३ ॥

४३

८४ ॥ ८८ ॥ देवानंदकवचं ॥ ८९ ॥ ९० ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible]

[illegible] ॥ ९८ ॥ ९९ ॥

[illegible] ॥ १०० ॥ १०१ ॥ १०२ ॥ [illegible] ॥ १०३ ॥

[illegible] ॥ १०४ ॥ १०५ ॥ [illegible] ॥ १०६ ॥ १०७ ॥

ग्र० ७
४४

43

[illegible] निरूपिताः ॥ ३ ॥ कालदेनप्रदर्शित-
[illegible] ॥ [illegible] ॥ सर्वत्र ॥
कालो [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ३ ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ४ ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ ५ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ ६ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ ७ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ ८ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ ९ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ १० ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ११ ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥
[illegible] ॥ १२ ॥ [illegible]

[illegible] ॥ १३ ॥ [illegible] ॥
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ १४ ॥
[illegible] ॥ [illegible]

४४

ग्रथो श्रीवयमासोनि विलन्नेनिवनत्विग ॥ [illegible] नि श्रिकेन्गोवोश्रीपानेनपूवन ॥ हिनवा
देवोहिमी सनालेमेयरां श्रुयिति हिंग ॥ एवं [illegible] मे: ॥ समाप्ति ॥ वेष्ट्रनमिनवेषु हेसर्गे
ष्णादेश्वनवंशेन ॥ श्लेषेनिर्मले [illegible] ॥ [illegible] ॥ श्रीधोसोमहादियोगेवायन्स
लेकामश्रहितेन ॥ नदापु: [illegible] ॥ [illegible] श्रिं वे राट मेकाइ[illegible]

यत्रानामगुणाः सर्वेथ [illegible] ॥ [illegible] घानमन ॥ २३ ॥ नो
यकर्मोक्षिचागश्रेणनामरक [illegible] ॥ [illegible] यानमन ॥ २४ ॥ स
नवेनदिश्रोक्तं [illegible] ॥ [illegible] कार्यं ॥ २५ ॥ श्रागीते
सज्जनमनोवैस्क्यां श्रुत्वनर्थकं ॥ [illegible] नामि ॥ २६ ॥ समग्रा
कर्णानेचापिपिंचसमानिकेचुगं ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ स्तुन:पारंपा
लिपवेदार्थनेवद्विवेदनं ॥ [illegible] ॥ [illegible] न्यान्स्य
ज्ञानेवेपिमानलानं ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] मिवेदिनवा
[illegible] ॥ २८ ॥

पंचभिर्भीषणमहामिर्द्धिसामसेकेन समर्थितं ॥ चतुर्भिश्चभिः परांसोमसहस्रमियानि च ॥ पंचभि
[illegible] शान्तादि: [illegible] ॥ नित्ये दंष्ट्र: [illegible] ॥ २४ ॥ पूजा [illegible] एवनस्पोयसनेनभी
[illegible] ॥ २९ ॥

स॰ मा॰
आ॰ यं॰
५५

सा या मा ऽ ३ हला दी नि विला या स्य र्थ पर्वतः ॥ धान ना पू ३ व न्य का ळो कं मो हं समस्य येन ॥ ४३ ॥ हं नय
स्य हला नि गात न्य न वर्ते ते ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ पंच श्लोक स्या ना नि वे न्य न यं च श्लो का स्य श्लो क पानं चे नि मम
सः पंचा धि कं प्रान नि स्य र्थः ॥ ते ना ३ ए का ट्या पा नी ह श्लो क सं प्रो ते या ना व मा प व ३ ह्ल के ३ प

[illegible]

[illegible]

44

॥ ५५

स॰भा॰
ग्रा॰प॰
४५

45

[illegible]

प्राप्तो निर्योद्धुं ॥ ॥ ...वेशमं [illegible] ॥ [illegible]

...त्वानां नामम... याः [illegible]

...यामनेदेहस्य... ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible] ॥ [illegible] ॥

हिरण्यबाहुं... [illegible] ॥ ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ ॥

म॰भा॰
अ॰ ७
४२

लोकसंविजयसूत्रः ॥ अध्यात्मादिमूलादिदेवानां समयविद्यादिरचनाः ॥ ८८ ॥ विषये देशे ग्रंथ
ग्रन्थार्थः ॥ गुणगोत्रप्रकाशरूपामिदं तात्त्वादिविजयविधाः ॥ जनगुणाद्यैजनसोदृढोक्तिजाः ॥ ८९ ॥ क्रियं
लौकिकोऽवैदिकगुणसंग्रहणः ज्ञानं च फलं लक्षणानाविधवाक्रियाः दानध्यानादयः ग्र॰

इति शास्त्रोत्तमादृष्टाज्ञार्थनैकविधकृत ॥ पंचभावस्वभूतैर्भोलोकसंविजयस्तुत ॥ ९० ॥
अध्यात्मज्ञानमपि विषयेषु रागांबंधने दृढ ॥ ज्ञानविज्ञानविषये ज्ञानं वचनविधाः ॥ ९१ ॥
क्रियागुणानां सर्वेषामिदं [illegible] ॥ इति [illegible] क्रियाः ॥
प्रज्ञाशक्तिमनन्तास्यानेकरूपाभिविनिश्चयने ॥ [illegible] ॥ ९२ ॥
इदं कविवरैः सर्वैराख्यानमनुपलब्धानं ॥ [illegible] ॥ ९३ ॥ अध्या
त्मसूत्रकवचैनसमर्थां विहितार्थानि ॥ [illegible] ॥ ९४ ॥ यर्थे
मतिर्भवतां वः मननेक्षितानां महाकथववाहलौकिकानन्दवर्ग्य ॥ अर्थान् [illegible] गो
इति [illegible] ॥ ९५ ॥

[illegible] ॥ ९६ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ९७ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ९८ ॥ [illegible] ॥ ९९ ॥ [illegible]

46

स॰ भा॰
आ॰ पं॰
४८

पाठसंस्थान
[illegible] ॥ ध्रुगाति
[illegible]
[illegible]
[illegible] ध्रुगाति [illegible]
[illegible]

47

[illegible]

[illegible]

[illegible]

४८

श्रोतव्यः श्रोतव्यश्च निर्दिष्टमनोनि ॥ [illegible] ॥ [illegible] सप्रमेयं ॥ अथ वा

ज्ञानानि त्वर्थः ॥ श्रुतं श्रुतं च [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] निर्दि

ष्टेऽस्मिन् ज्ञाननिरूपणे ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] नियमः

नोक्तं तत्र ज्ञानानि [illegible] [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

॥ ॥

[illegible] निःश्रेयस [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ महाभारत [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ महाभारत [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] वेद [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible] ॥ [illegible]

स॰ भा॰
श्रा॰ पं॰
५५

48

[illegible] निमज्जति [illegible] ॥ १७ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ १८ ॥ [illegible] ॥ १९ ॥ [illegible]
[illegible]

[illegible] ॥ २० ॥ [illegible]
[illegible] ॥ २१ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ २२ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ २३ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ २४ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ २५ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ २६ ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ २९ ॥
[illegible] ॥ ३० ॥ [illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]

५५

जनमेजय [illegible] ॥ [illegible]
जनमेजयः ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible] उवाच ॥ जनमेजयः [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] उवाच जनमेजय [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] उवाच ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] जनमेजय [illegible] ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ जनमेजय [illegible] ॥ [illegible]
[illegible]

[illegible] उवाच [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible] ॥ [illegible] ॥ ४४ ॥ [illegible] ॥ ४५ ॥

[illegible] उवाच ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] उवाच ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] उवाच ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ [illegible] ॥

49

[illegible]

५२

52

कृतिनिशितान्तं नाकृचः परवीन ॥ [illegible] ॥ सदेस [illegible]
सीदेकमेवादि नीयं ग्रसेनिश्व ने ॥ [illegible] ॥ सदेव [illegible]
श्व ने ॥ विश्वमा दिवि सपर्यं वा [illegible] ॥ [illegible] नि श्व ने [illegible]
त्वा नेन वापा [illegible] ॥ तप सा म [illegible]
श्वानि ॥ विश्व [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
वत्तपदिस्रे [illegible] ॥ [illegible] नि श्व ने [illegible]
दहन [illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible] ॥
[illegible]
॥ ८ ॥

दिवो [illegible] ॥ [illegible] ॥
नानि विश्वा ॥ [illegible] नि श्व
ने ॥ विश्वा [illegible] प्रधानस
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
नि [illegible] ॥ ९ ॥

एवं मच्चक्रस्य ... कालस्वैकालस्वैकालो ... निर्वेद ... [illegible]

[illegible]

म. भा.
आ. प.
५४

53

त्यं विधंतमस्य श्रमतय्यमपवसंघानग्रवर्मकेनामनलतमेनलोलीयातू ॥ नाविनि ॥ नौप्रसिद्धौ नाम
मास्त्रिनौ वाग्रवामहेहजषेः हनमाग्रवांपधक्षरस ॥ सोमवकुरसंवरं ॥ माकाशीप्रमाहृनंस्पमत्कमि
यनवीनरं ॥ नमयनंनग्रूयनरनिम्ककार्थजातंनिम्यथः प्रविपुणयाराषः नद्दिमहेरमनवस्यते ॥ नौ
नामसौप्रमनौनिरममकेमनानधीमनमककर्मफलसौग्रंहकौ ॥ नहित्वनिवपौनिरीर्वं ॥ ममेनेविनाईवाः
वागापुमिमानिनोः आरूयः नस्रयदेनेधावामाशिविप्रयागानुक्तनारीनाग्रपदेषामयेनहतेनवनेनसम ॥
धीमवेनि ॥ स्वतेइनि ॥ लोसूनोग्रस्यघः केरंहेवान्मानकः ग्रामानानिहम्मग [illegible] ज्ञानेहनसत्पादिनिस्स्वनेनेवेनन
प्रवर्तकम्नेषाकस्वदेवेननः संवानुः प्रवर्तनरनिमाकः नेदेनानासो [illegible] निवननानरनिघ्रपान ॥ नव
मर्याहि ॥ नौवेशाधोरमेद्रग्रवमानप्रपवण्यावांभवांविसिकामोनामधेयमि [illegible] नवव्रणावाहेनवसमा
सानिहंग्रजांविग्रश्चनौनिमाइयाहानमोसमानौनामग्रमाविनिमयरहसेनमानवदमार्थपोः पूर्वपमाईयाः नस्पश

नौनामस्मावश्मिनौवांमहेहंमहजंचयाविमस्पः ७६८.२४ ॥ नौनामस्मावमस्नाहनमाहपाहनेदेवानमा
पदेनमहनेवेः ॥ महौगमेलमेनाश्रुवानौनामाहिनेनम्यप्रदेनमहले ॥ मधौमानौमानरममलिगमेलानवश्री
(२ नौमचश्मौनौवहेगः ॥ २२ ॥

सोमहुनेनुनीवेशामेदयलिपाहुवेनचयमपिनं ॥ २ ॥ एवंवमावपा
मुमाप्यकेषाचिनमेनेमहानपूनवेनयोनामपानलश्चेनमनोलिनहयमनस्पचहः माशंधनेन ॥ मूखेने
नि ॥ मुवानौमानापिनवे ॥ यथानम्नहूपु इनिङ्गनेभिवेनावहू [illegible] मलमेनौ ॥ नमः हनहनगमेहू
हमकौवनगुमिरेनौर्वपगानोगुनौश्रिनहपेग्राय [illegible] नमलोहेहः ॥ प्रपदेनमहनेषणापय
नेमानेमनेनेनिप्रपदमपस्मेरिंहुकमेवामाहेरसानागुहमुपद [illegible] मिलिम्हलोः ॥ नेनहवेदेनः ॥ मि
बहनेपश्रम्भीमनः मधानयमुजमिरवदवेननवनिहमधोजानामनलमावोगमीवाल ॥ मानरंच
निलनपानेप्रवर्तनः यथा ॥ नदेनक्तमानरीपानमवाहिनंककारमनवेगानमभवनीनि ॥ यहिनु
वहिंहः मवानारसाश्चननलस्पवर्तकेषेः चेनिमिहं ॥ नावश्मिनौमौयाम्रुपलहिनंग्रमनाकौनिविप
यपेवयाहिनंशौमहियमापप्रकनि [illegible] मिलिव ॥ [illegible] कार्यकमः ॥ नौरहेश्रीवना
यमाः चवहभौमचनः चवदः ग्रुलिगंग्रावनंकिमा [illegible] ॥ २४ ॥ रघम ॥ रम ॥

५४

न॰ भा
अ॰ प
५५

54

गोवेलीवर्दः ॥ २ ॥ [illegible] कार्ये [illegible] नापि [illegible] मित्र [illegible]
[illegible] कार्ये [illegible] नियो [illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ [illegible] कामाह ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] नियो
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] कालेन [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] अध्यायसंख्याभिः [illegible]

[illegible] वेदः [illegible] ॥
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] वर्तमानः [illegible]
[illegible] अध्यायसंख्याभिः ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥

५५

[illegible]

[illegible]

[illegible]

स॰ भा॰
श्रा॰ घं॰
५६

५१ ॥ जिनदेव [illegible] ॥ ५२ ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ [illegible]

[illegible] प्रत्युवाच ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ५५ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ भगवान् [illegible]
[illegible] ॥ ५६ ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] प्रत्युवाच ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ ५७ ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥
[illegible]
[illegible] ॥ ५८ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ५९ ॥
[illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] जिनदेव [illegible]
[illegible] ॥ ६० ॥

५६

SS

९७ ॥ सद्भावेन गदमस्मात् ॥ ९८ ॥ हे भवति निर्वृति हेतानि सिद्धानाम भवात्म्य वा वेति संबंधः ॥ ९९ ॥ ९९ ॥ भवना
उप लक्षनं तपरिचितं हो द्व्यामीति संबंधः ॥ १०० ॥ सुवर्ण [illegible] पाप यानेन सम्यान्वे केश कौशपवपद्मसत्वे

स॰ मा॰
स्या॰ प
५२

साव स्मृ [illegible] वोनं कं प्रस्य स्या या मिवा पो वाव ॥ वा गानं ने भमव स्मा ना पय किं कर वा णी निसना
मवा चैनं कं उ ले प्रवर्थ्यं मे मि दि ने दान मर्हे सी ति ॥ १०१ ॥ सा यो मा ने नन पा सद्भावेन पा वो य मन
नि क्रम णीय श्रो नि म ना कं उ ले प्र [illegible] वेन मे ने कं उ ले न व को ना ग रा जः ॥
[illegible] यन्न प्रस न्नो ने न मर्हे सी ति ॥ १०२ ॥ स प र म न [illegible] चि यं प्र [illegible] च भव ति म नि य न्ना म
व न सं या न सल व के ना ग रा जो प धि नि मि ति ॥ १०३ ॥ [illegible] सा मे [illegible] पो च स क
पा मा ग छ त ॥ स्प्राह चैनं [illegible] सी ति ॥ १०४ ॥ न म नं कं [illegible] व भ ग वं कि रे णा प्र च
सा सा य ते ॥ भ व [illegible] ति ॥ १०५ ॥ [illegible] ने कः [illegible]
च [illegible] ने ति ॥ स न [illegible]
प प न्ने ना नु नै नं भो ज [illegible] ॥ १०६ ॥ [illegible] नि म ना
ने पो [illegible] च ॥ य स्मा [illegible] ति ॥ १०७ ॥ [illegible] वा च
[illegible] ति ॥ १०८ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] वि मा व म पो

५६

[illegible]

२२ [illegible] ॥ [illegible] यो म व नी ति [illegible]
प रा यं द नः [illegible] ति ॥ [illegible] ॥ ११२ ॥

२१

56

सं॰ श्या॰
भा॰ प॰
५८

ग्लवगवन॥ लानवान॥ २४॥ प्रमादाः देवन्देवादहानि हृष्टानि पनिकानां गरहानि॥ बलभोमयोश्चिन
उभयनोनमन्यतागरहविशेषाः निहिहः पदफाला॥ २॥ सबवलेषानायेकांने॥ सुनिनिशेभनाः॥ रागाम
छिनः॥ नीमूलायवशाहृयायाः॥ हयंनः॥ कोहृफाला॥ लविधानः पवनखेवइतिनामनेयमांनाः॥ श्री॥

नत्रेतविं [illegible] कालेखेनवखोन॥ नचाषा
प्रश्नोत्तेकलस्याः तविषयाग्यवचः फलानलकमन्यगवनुमलहिंतं [illegible] कानि॥ १॥ सुषव
कलनेकि पपमानाभिंदे पपपलवलंप्रपयाम॥ [illegible] प्रविषपचनेनाग
प्रदेउकाष्टमनप्रविपपनहि॥ लमद्यपल॥ लमनेकोनलि [illegible] नेलवलिलेन॥ प्रविषपचनेनाग
लाकपर्यनमनेकविपप्रमादहृष्टेवलभीनिहिंदफालमा [illegible] लमथावन [illegible] ष्यानावकी
हामपश्यन॥ सननवनागानसोपहिनिः शोके॥ ४॥ सपेपाकलनरजानः सर्वाः समिनिशोभनाः
तानावनीमनाः॥ सविषायबलेनिनाः॥ ५॥ [illegible] कृताघकंउला॥ आदित्य
वनाकपहेर्वनेरावलेदूवा॥ ६॥ बहूलिनागादे [illegible] तो॥ नवघ्यानलिशंलो
मिमहनः पवमानके॥ ७॥ [illegible] ॥ [illegible] तियके
हलानवविषुनिः॥ सर्वा [illegible] ॥ [illegible] बामवाम
श्रुतनाः॥ सहमेयवन [illegible] लमस॥ ८॥ [illegible] ॥ [illegible]
नेनायगरमखेषकंउलाशायनवकं॥ ९॥ नवकम [illegible] पकः॥ १०॥
नेनवमनोनदीमिवमनोमन॥ ११॥ नवनाननिवस [illegible]

प्राः सफलाश्च॥ [illegible] ॥ १२॥ [illegible] ॥ १३॥ १४॥ [illegible] कोपलाः
मानितिताननेसनापामहे [illegible] ॥ [illegible]
सावित्रयह्यपनकाचापिकानाश्च [illegible] ॥ २१॥ २२॥ २३॥ २४॥ २५॥
गाः शांति॥ सोहं तेजोपियमेन [illegible]

५८

[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]

कृष्णानन्दपदहृत्पानस्थितान्मुमुक्षुत्पदृक्पानं तेन ननिचिन्वन्ते यस्मात्ते विविधरूपेणानन्दं यस्मात्तु तस्माद्भाज्ञामसि
पापवासनांपापभाज्ञामसि तु तस्य वासनाम्मनाशिकाल प्रमं प्राप्तक मानन्दं तं मयं तस्माद्विनश्येः ॥
नानम्यद्वेषेभेवनानिचन्दं श्रुप्रतिभूतानि नरात्रुक्ताद्दीननिवन्नं यं तेषो ॥ भूतस्थान स्वर्गं स्वर्गीस्था-
त्वरकं निरयस्थास्यभुवनस्थानानिन्येः ॥ श्रुत्वाविनाम्पानिनिविनश्यन्ति ते मेनानक्छ्रुवनीमं
नमस्यत्कृष्णे नेरे ॥ २ ॥ ईश्वरं नमस्यति वनस्पतिश्रुताविदेवेस्त्रहृवनांश्येः ॥ अन्धमेयपौन्कशीनां ॥
नां हृदयं नमन्त्र श्रद्धानांईश्वरविवेकमायावाविनस्यपाम्पानेनेहिंसामर्थ्यः संभवति ॥ ईश्वरएवावि
द्यावपुरुषो वनमापन्नः गुरुशास्त्रायतनग्रहात ॥ तन्नस्यविवेकस्पापन्नो भवतिन्न तत्त्वभवनमेत्स्य ॥

कृष्णान हिंसन्त्यात्रिविवनैर्यतो मोहमानदम्यं तथा भवनानिदैव ॥ २ ॥ वन्नस्य भर्तो
भुवनस्य गोप्ता हृत्तस्यहृत्तानमचेनिहृतं ना ॥ कृष्णैव मानो वाप्नेमहात्मा मध्या
त्वेयोविविनत्तिलोके ॥ ३१ ॥

गोप्ता सर्वभूतानाम् यस्माद्रक्षस्ताद्भवति ॥ अनुएव [illegible] मेद्यैः सर्वपितन्महात्मेः
नवर्तमानः ॥ अविद्यालेशः नश्यत्यनिहृतार्देहयाने [illegible] क्वचिद्विद्यादिहेयापाक
र्षेनाद्रमेश्वपिकृसेयपोतः ॥ श्रीमद्रायवनेदिद्यो [illegible] ॥ [illegible] तदवधकरी
श्रात्मायपामेविनिर्भिन्ने ॥ इतिवक्षनवदेहे [illegible] ॥ [illegible] ॥ महत्मा
मापकः हृष्टविहृतेमेनहिंसार्वेचनार्द ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
नेहत्तृपावविविनक्तिपृथकेरोति ॥ [illegible] ॥ योगीविनितिकानसोनम
इत्यनेत्रणान्वयः ॥ अस्यमाहात्म्यविक [illegible] ॥ ३२ ॥

म॰ प॰
स्था॰ या॰
६०

[illegible]

६०

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

॥५५॥ त्रोनि॥ सूर्यकालेनानानमर्थोयेनेतिभावः॥५६॥ प्रायनानि प्राहोच्यते नसंपन्नः विशिष्टार्थ
त्वा॥५७॥५८॥ विधिरेष प्रत्यवेदे विहितस्य कर्मणः॥ सर्वप्रत्यय कार्यकालक्रियासंवरं प्रपवित्रि॥

सह लिनपुरं प्राप्यानवितारहितप्रमनमः॥ समागताननसानानेऽनं कौतनमेनयं॥६०॥ भगवान च
थिलासंसानिन नमपरालिन॥ [illegible] नेनसेन यापि॥
पूर्वं यथा न्यायं पुरुषम॥ उवाचैनवचः कालेशान्ं [illegible] सम॥६३॥ उनेकं च॥ मनानि
करणीयेन कार्यं पार्थिवसत्तम॥ [illegible] सत्तम॥६४॥ सो नि ह वा च॥
वमनकलविभ्रेणसमानाजनमेनयः॥ [illegible] हितो नम॥६५॥ ज न मे
यश्चोच॥ [illegible] परिपालेन [illegible] किं करणीयमप्य
नाधिकार्यणसमानानं॥६६॥ सो नि ह वा च॥ [illegible] नमः॥ प्रत्यकृतं
वशिष्ठः॥ उवाच [illegible] ॥६७॥ उनेक वाच॥ न
[illegible] ॥६८॥ कार्यकालेहिम
महीर्द्रे येनतुहिंसितः [illegible] ॥६९॥ [illegible]
विधिरेष कर्मणः॥ [illegible] ॥७०॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
गायमः॥ एककार्यं [illegible] ॥७१॥ [illegible] हने॥
[illegible] ॥७२॥ [illegible]
[illegible]

[illegible] ॥५६॥५७॥ [illegible]

म०भा०
आ०प०
६२

हेलोमहर्षेस्तेषु तां पर मंत्र हेति वस्य मत्य आहुयो स्य परं ब्रह्माणं च नो ह्यात्मनि वचो वस्य
मि॥ कीर्त्यमानं वचः पोपो पोपानि विपद्ये कथाः शुश्रूषतां श्रोतुमिच्छतां नः। स्वाकं श्रमस्तं वं पिनीनां क
थानां पोपः संपोपस्मिन् नन॥ ४॥ [illegible] ॥ ५॥ वेदानां यस्तं नो वोद्धुमिति शेषः॥ ५॥ श्रा

नम्बवपद्रुः परमं हो महर्षेस्तेषु तामस्तां नः प्रतिवस्तुस्मि वचः शुश्रूषतां कथां पोपं नः कथा
पोपो॥ ॥ नत्रमगतां स्कुलपतिस्तु शौनके [illegible] ॥ ६॥ पो सौ हित्याः कथा वेदे देवना
सामश्रिताः मनस्तो गतां पर्वकथा वेदे दृष्ट्वेशः॥ ५॥ [illegible] स्मिन् सौ ने विद्वान् कुलपति
हितः॥ [illegible] गहः॥ ॥ [illegible] निय नत
नः सर्वेषामेव नो मान्यः [illegible] ॥ [illegible] परमार्चित॥
ननो वत्स [illegible] नमः॥ ॥ [illegible] नस्मिन् [illegible]
[illegible] नि॥ नेन पृष्टः कथाः [illegible] सर्वं [illegible]
यथाविधि [illegible] सु [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
हि कथा दिव्या [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
महर्षेश्चोत मिच्छामि [illegible] ॥ कथयस्व कथा [illegible] ॥

सौते कर्ष कांडे [illegible] ॥ [illegible] ॥
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥
देहं॥ ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ ॥ ॥ राम

61

६२

स॰ भा॰
आ॰ प॰
६२

कथं पारस्य शुक्रा मध्यम्यन श्याह्॥ साहीति॥ एवं कालं भीम शिनेरर्वपयं नमहा गोन्म विधिना पश्लोऽ
ऽस्मा साचनेनहृता॥ पश्यान विधिवन्मवेधिना साहान॥ ॥ ॥ स्वगतोः कन्या पिनं श्मन्नं काय नी
तिनसे ग्रन्नन कारिगोनथा चस्मृतिः॥ स्नामभिहरेकमांश्चे यां श्चेदा श्राद्धे रिति॥ चरातिचवरतो

कृन मित्र स्वीदेनो विलिही प्रमनां ग्रमं॥ साहि एवं नृ नोल नपसो मानुभवि जिता॥ तां नश
हाये नापश्या दृग वे विधि वन्नस्॥ ॥ नस्पनकि लिखितं निं देहि वल्ले नि मागि वा॥ इरमं नामिष्ये व
ह्रनं चके मनन्नस्॥ ॥ मथाग्नि षा तो पप्पन्वलेनसागरं॥ ॥ नमम वृत्तनतो रवः पावकं॥
र लिंननद॥ ॥ यं ह मेक पमायं प्रमसे एवे करते न वै॥ मासं न मक्षिटे चालं नारा या व कपरवने॥ ॥
मधाहीये हनाल्पं भागा श्वे वा व रणिं ना॥ यं गा हि मा पिता ॥ रोह मवेन्नल का हितो॥ ॥ सेयं यदि
वतोह्मस्मागो भागार हेतना॥ न या सनं नमया ह्राहि हि हो भा मा श्चे मा हिमं॥ ॥ समनमूलनह
हंग्र दृहृ मित्र वनिहति॥ मनस्वे भा गंशुहिमं [illegible] ॥ ॥ निरुवाच॥ एवं वरवल
मांम नलिनता नवेद॥ तां कमा ने भ्र मो [illegible] ॥ ॥ [illegible] मर्वे मूला नाम न
स्त्र हि नि सव॥ माहि [illegible] ॥ ॥ [illegible]
कारिणा॥ [illegible] ॥ ॥ [illegible]
हिमं॥ [illegible] ॥ ॥ [illegible]
नामस्यं॥ [illegible] ॥ ॥

मा रिति॥ ॥ वरारोहा [illegible] ॥ ॥ ॥ ॥ [illegible] विधिना [illegible] किं
[illegible] ॥ [illegible] ॥ ॥
॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

६२

.62

क. ष्ठितमहामिलितोघः ॥४॥ ननःपिनः मकानदनमायानर [illegible] तर्तनीयं ॥५॥ उत्तरालस्नमाप्नुरव

सौतिरुवाच ॥ यदृधीनेपुनासस्मा [illegible] मेहाजाधिन ॥ होयामानुविपादोहोयाधिकहितेन·
षा ॥४॥ यदृधीनेचमित्रामेसस्मानैचननोमया ॥ नसावहुतायोरवै·होद्वै:हार्षिमहकृतो: ॥ एनि
न:परमोवयोभागीवोमगनेदन ॥५॥ समेवधामरदएहंभागीवनेनहामन ॥ निगदाद्धिप्रयाणक्तंपुरा
णाप्रयसंयुतं ॥६॥ सगुमेहर्विभगवान्हताणावेवयुनवा ॥ नकरोमपक्षोनान:पावकादिनिन·
मृतं ॥७॥ सतोःसदृचिन:पुत्रमपवनोनाममागव: ॥ [illegible] धर्मनिनीमयार्मिक: ॥८॥
प्रमनेयमामप्रजोत्पूनावांशहकनेश्रुत ॥ हरोयपविद्यनोनने पुत्रंकानेरपारयाः ॥९॥ प्रमहतायांप
मोमानवहूंवणिनामहः ॥ नपयीचयथामोचप्रनवान्नो [illegible] ॥१०॥ धार्मिकःसत्यवादीचनि
यतोनियनाशन: ॥ शौनक उवाच ॥ [illegible] ॥ चावनत्वंप्रिया
तेननमाचनपत्रून ॥११॥ सौतिरुवाच ॥ [illegible] विश्रुता ॥ नस्यास
मभवत्पुत्रीःसगवीर्यहमहव: ॥१२॥ न [illegible] ॥ समयेसमप्रा
लितांधमिपनायपाहितः ॥१३॥ [illegible] ॥ [illegible]
पुलोमामामत्रागासमह ॥१४॥ [illegible] ॥ [illegible] वि
चेना:सामदायन ॥१५॥ [illegible] ॥ [illegible]
साद्दिनानया ॥ [illegible] ॥ [illegible]
मतिहिता ॥१६॥

योङ्गानवेनसंयुतं ॥५४॥ नियत:शमादिमान ॥ निष्ठानाशन:हितमितमेध्याशननिष्ठः ॥५५॥ [illegible]
घेनकामेन ॥१७॥

स॰ भा
भा॰ प
६५

63

मङ्गार्थाद्रूपं समैव मायां ननु नस्य गोतिरित्येवं रूपेण लोकान् लोकान वेदे ऽन्यर्थः ॥ नवेयं मायेति केन कथितामि ॥
२७ ॥ अ [illegible] य ॥ मद्गः पार्थ ॥ २ ॥ मन्यं यथार्थं ॥ सत्यं पश्यतां नहीनेव मिथ्या रोपयः ॥ ५ ॥ ४ ॥ ५ योगीन योग

मनुलोकं ननो मायां योग च कृपितो मुदः ॥ केनापि त्वमेन स्मै कथिता नं निहीर्षते ॥ न हि लोके
दन कृत्वो मङ्गार्था चाहत्वा मिनी ॥ २ ॥ ननु मायो हिनं यथामु मिथ्या मद्गृधा ॥ विमेति केन पा
पानेक च्यवाप्य निक्रमः ॥ २ ॥ तु लोमो [illegible] च अमिना ममनं लोकेस्त्वमेहं निवेदिता ॥ ननो मा
मनयद्भवः क्रोधं नीत्रयी मिव ॥ २ ॥ मायां नव मन पाणनेन मायामि सेदिता ॥ मत्सी मन्तं ननु
लोमा मन्यु पया नवै ॥ २ ॥ इति श्रृ [illegible] ॥ पापापाप्त्रि मनिक्रदः म
र्वमलोम विष्णापि ॥ २ ॥ ५ ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ कृदेवा कमथा
त्रवीत् ॥ किमिदंमा हसंद्रहा नकनवान सिद्धं प्रति ॥ [illegible] वदनः समं ॥ मुद्दो
यदस्त्वं मत्सं अमिवारोच कोमम ॥ [illegible] ॥ म [illegible]
नः स पूकले हन्यान्न थापयान ॥ य [illegible] ॥ [illegible]
पानेनाव संशय ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥
पित्रेनिवोपनत्न ॥ ५ ॥ योगीन [illegible] ॥ [illegible]
मवेषु च ॥ ५ ॥ वेदो [illegible] ॥ [illegible] ॥ ५ ॥

लेन ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ किया
हमा [illegible] ॥ ६ ॥ ५ ॥

६५

१४॥ सेयमिति॥ यानयापूर्वं हलनाहे पंचतु दीसे वे य [illegible] ॥ २१ ॥ [illegible] ॥ दैयवास्ति क दानयो [illegible]
वसवन॥ नस्य नाचा कर्म [illegible] कर्णो [illegible] नव [illegible] न तनो वि

[illegible] ॥ नयाहनाप्तलोमेघप्रवेदानक्षत्रेदन॥ किंतिसविधिनाहु [illegible] तवन्दहनातया॥ ॥
पित्रान [illegible] वेदनाप्तलोमेघयमानिनी॥ [illegible] नवे [illegible] ॥ २ ॥ [illegible] मांवे
[illegible] विधि [illegible] ॥ [illegible] ॥ २ ॥ [illegible] मि
नान्नं [illegible] ॥ [illegible] दि [illegible] च मे
[illegible] ॥ ५ ॥ सोति [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] नस्नेनसो
भवन॥ [illegible] ॥ [illegible] तयथानपरिमव्यनां॥ ३ ॥
[illegible] ॥ [illegible] नांदद
[illegible] ॥ [illegible] ॥ ४ ॥ [illegible] नयामा
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] तेनि
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] न नया
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ ५ ॥

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] तियोगेन॥ २ ५
[illegible] ॥ ६ ॥

म भा
आ प
६५

64

[illegible]

६५

आप सो मो स्याप यः प्रश्न यो यो हृ स्व ना देव पितृ रूपाः ॥ आपः शुद्ध यं वचसो भवं नो निश्चले द्वं यो इतना ॥
आपएव देवता श्री वरूपे ताप शित देवता यो ॥ ५ ॥ श्रेष्को नित्य कादी नामक्षे नाना कर्मक

आपो देवतागणाः सर्वे आपः पितृ स्वरूपाः ॥ इ यं सुयो गी मास मस्त देवा नां पितॄ णिः सह ॥ ६ ॥ देवताः
पितृ स्वल्प स्यापि तस्य आपि देवताः ॥ एकी भूताय युक्तेन प्रश्न के न चपर्वेव ॥ ७ ॥ देवताः पितर यो वर्ग
ने मो पि प्रहूतं ॥ देवतानां पितृणां च मान्तमेन दृकने ॥ ८ ॥ एक का संवित्वि धिना योगी मासा दिदेव
ताः ॥ मस्तु वि ने वह स्वयं ने भूलाने वहू ने रू वि ॥ ९ ॥ देवताः पितर यो वर्गं लाने चहू ने रू वि ॥ सर्वे मव कथ
ने कं मवि पापि म वि न दं ॥ १० ॥ सो नि दु वा च ॥ पितृ पितृ ना गोचा ति युक्तो न्य मानानः ॥ द्विजा नामपि
हो ते युयता स्म च ति याम च ॥ ११ ॥ निरौ कु व य म दूका ना ः स या स्वा प्र पितृ जिता ॥ वि ना पि ना स्वना स
वालान यास स्तु : पितृना ॥ १२ ॥ यथ यथ पः स पितृ मा दे वा ना नां च न च ॥ १३ ॥ पितृ ना गो क्रिया श्रेय
दृ ना लो का स्यो न स्वाः ॥ विदु ध म व य न क व न स्वा त ला य घा ॥ १४ ॥ ययर्थ य यु देवा यु व हा
ताम्प यां प्यल ॥ यशे प वे दं पं ता क्रि या स य ते मे व च ॥ १५ ॥ नून ये सहभा गा सो श्रि का रतं ने ॥
कृ वं देव म लो भ्रना य ह भा गा श्च म क था ॥ दू न म क स वे भू ते घ स वे भ व ता न मे व नि ॥ १६ ॥ अ ना न न
दुच लो का म श्रि मा हु य ति श्र फ न ॥ ए वा च व च ने श्रु स्वा भू त भ व नु म का रं ॥ १७ ॥ लो का ना मि दू स वे
या ने क ता चा न प व चा ॥ ने या र य ति लो क लो न क्रि या णं च प्र व ने न ॥ १८ ॥ स न स्था ऊ रु लो के या
ना हि ये न क्रि या य या ॥ क स्मा दे व वि म ह ल मो स्वा : स न ना श न ॥ १९ ॥

मे वे न्या ह ॥ देव ता य नि ॥ २० ॥ पन: देव ता इ नि ॥ २१ ॥ श्र मा वा स्यां श्र मा वा स्या यां ॥ ह्व यं ते इ स्यं ने ॥ २२ ॥ सं स्कृ तं
नि रो भा वं ॥ २३ ॥ २४ ॥ क्रि या श्रं श्र या न श्र ग्नि हो त्रा दि लो या न ॥ २५ ॥ २६ ॥ इ न भा व नं स र्वं भू त हि नं व च नं ॥ २७ ॥

स॰भा॰
श्रा॰प॰
६६

९॥ अरहविगनप्राण॥१॥१४॥ इत्यष्टमः नेष्टमहामहिमाम [illegible] ध्यानारूढः ९ विम

मिश्रेरलीय ५२

सारस्थानेनसर्वैतत्तपचानसहस्राभवि॥विवर्णाविगतश्रीकाम्रहामप्राचेनना॥९॥निराने
करीनेषांचेसूनांमन्नमहेंना॥तारनरप्रेवतीयानतःभवत॥२॥प्रतमेवामववाणिभविमर्पवे
वारिना॥म्रयोमनोहरनतावसवनननमश्रम॥३॥इदशानांमिनावैवनेवेवामेनमविन॥विवे
एमानांपतिनांमनलेतमवर्चेस॥२॥ननःसर्वेविनवनःसमनाःक्रमान्विनाः॥वासायेयाम
हानानःकमिकःपांतमेवेल॥३॥मारहानोकेतन्न [illegible] नम॥प्रमतिःसहूपचे
तानस्थानेवनवामिन॥४॥नानेकमंजनानेर्श्रामननामहविकार्षे॥ककेदःकपथाविप्राकफला
नीवहिर्येयो॥५॥इत्यादिवंलियोलोमे॥६॥ [illegible] ॥ [illegible] श्रुनाथेत्तमहृत्मम
हरुश्रुक्रोशागहनेवनेगनामहुःक्षिन॥७॥ [illegible] ॥प्रवबीह
चनेशेचनप्रियांचिन्तप्रमहूयां॥८॥ [illegible] ॥वांधवानांचमवैषा
किंनुदःखमनःपो॥९॥तहिंदनेनपद्मनेनवोवानमपावति॥ [illegible] नममवि
या॥१०॥यमाचजन्मप्रमनियमानमाहंस्रजमन॥प्रमक [illegible] ॥१०॥एवं
लालवणनलस्यमापार्थेडुःविनमस्र॥देवहनलस्यमे [illegible] ॥१२॥देवरनेउवाच॥
श्रमियन्मेहस्तहस्तकोहरेडःवेननस्य॥ [illegible] ॥१३॥गतनापरे
षाकपगागंपर्वामारमोःहना॥नस्यासोके [illegible] ॥१४॥

विविम॥२॥राम

[illegible]

६६

स॰ भा॰
भा॰ प॰
६

66

१॥ सर्वमानस्रावेशानं ॥२१॥ नवमः समोनि ॥२४॥ अहिंसायेन सर्पेसा रूपग माने [illegible] ॥२॥ एकानर्थानिति
अनर्थोहानिः प्रयोजनाभावः अर्थः [illegible] कनैषोक [illegible] भवति ॥ अनर्थो [illegible] एकस्यापरायेन वहै
नाम [illegible] विदः सकृ [illegible] भवति ॥ [illegible] कामय [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥२॥ नापर
[illegible] ॥ [illegible] किंमर्थं [illegible] ॥ [illegible]
लोभे ॥ [illegible] वाच ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥
[illegible] वाच ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥
एकानर्थान् [illegible] ॥ [illegible] ॥
[illegible] वाच ॥ [illegible] ॥
[illegible] वाच [illegible] ॥ [illegible] ॥
वाच ॥ [illegible] ॥ [illegible]
वाच ॥ किमर्थं [illegible] ॥ [illegible] ॥
[illegible] वाच ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] वाच [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥
[illegible] ॥२॥
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ २॥ [illegible] ॥ ४ ॥

[illegible]

[illegible] ॥ २२ ॥

[illegible] ॥ २५ ॥

कथमिति ॥ ४ ॥ नष्टं ग्रहणेन कानां ॥ ५ ॥ [illegible] भारत [illegible] सर्वं मन्त्र [illegible] नापो [illegible]
मच सं मा पू [illegible] द [illegible] [illegible] लोमे निं हि नो पिदा रसं [illegible] पुत्र माना [illegible] कार्यं नन भोगा [illegible] मिमा-

हस्त ह वाच ॥ कथं हि मिन वानस्यां नस्य ज्ञानं नमेजयः ॥ सर्वाणां हि मिना लक्त किमर्थं हि जन
नम ॥ ४ ॥ किमर्थं मो हि ना [illegible] पन्नगा लेन यो मना ॥ [illegible] लोके न न दा व त [illegible] न मि [illegible] मिन
नन: ॥ ५ ॥ स विह वाच ॥ [illegible] मिन [illegible] सर्वं मा ली कच [illegible] न ॥ [illegible] ना कथ यत मिम
[illegible] न यो यन ॥ ६ ॥ सो नि ह वाच ॥ [illegible] नं [illegible] नंत: ॥ [illegible]
[illegible] नगे [illegible] ॥ ७ ॥ [illegible] ॥ [illegible] नं न [illegible] विनया न:
पुन: पुन: ॥ ८ ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ९ ॥ [illegible] ॥ [illegible] वाच ॥ किमर्थं [illegible]
[illegible] नमेजयः ॥ [illegible] ॥ नि [illegible] न
[illegible] ॥ १० ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ११ ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ १२ ॥ [illegible] वाच ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ १३ ॥

लोकमारमत ॥ किमर्थं [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] पृथिवी [illegible] ॥ [illegible] ॥ ५ ॥

[illegible]

म.भा.
आ.प.
६६

॥ ५४ ॥ नद्वारानि निर्भिन्नाय [illegible] कार्यः किं [illegible] निभावः ॥ ५५ ॥ सना
[illegible] विचरितं ॥ ५६

पितर ऊचुः ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ १ ॥
[illegible] ॥ [illegible] ॥ २ ॥ न
[illegible] ॥ ३ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ४ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ ५ ॥ [illegible] ॥ स
[illegible] ॥ [illegible] ॥ ६ ॥ पितर ऊचुः ॥ य
[illegible] ॥ ७ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ ८ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ९ ॥ [illegible] च ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ १० ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ ११ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ १२ ॥

[illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ १७ ॥

68

मा·भा
आ·प
७·

६९

सानन्दाश्च ते ॥ ४४ ॥ ज्ञानं ज्ञानेन [illegible] ॥ ४५ ॥ [illegible] ॥ ४६ ॥ त्रयोदशः ॥ सोऽनेन [illegible]
[illegible] ॥ ४७ ॥ पितृवर्गो [illegible] ज्ञानं प्राप्य पितॄन् ॥ प्राच [illegible] ॥ ४८ ॥

अथ दीर्घेण कालेन [illegible] ते योगनिरताः ॥ [illegible] ॥ ४९ ॥ नभि
[illegible] ॥ [illegible] लोकः समन्ततः ॥ ५० ॥ ज्ञानेन
[illegible] ॥ [illegible] ॥ ५१ ॥ तेषां
[illegible] ॥ देवाः [illegible] ॥ ५२ ॥ [illegible]
[illegible] पितामहान् ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] पितामहैः ॥ ५३ ॥ [illegible] ॥ [illegible] कालेन [illegible]
[illegible] पितॄन् ॥ ५४ ॥ [illegible] ॥ [illegible] किं कथं
[illegible] ॥ ५५ ॥ [illegible] लोके ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
लोकस्य [illegible] ॥ ५६ ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] पितॄन् [illegible] ॥ ५७ ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ५८ ॥ [illegible] ॥ [illegible] लोके [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] पितॄन् [illegible] ॥ ५९ ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ६० ॥

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ ६१ ॥

२॥ निवेषणपदार्थसंग्रहाणपानि [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ एवमात्मनो कारणानि ॥ श्र
मकासंयमत्रनि मिले सर्वोगमा [illegible] ॥ [illegible] तलिमभ्वो कोपणानि

[illegible] दिक [illegible] निः ॥ ५ ॥ एवं
इमिद्वायहिमेभावोकोदाश्यानि विशेषण नः ॥ [illegible] ॥ ६ ॥ नत्र चोत्रस्य
दार्थिः पादेनो [illegible] निश्रोदेपिनाम हः ॥ अनेनविधिना [illegible] ॥ ७ ॥ [illegible] ॥ ननो निवे
नेनेननमेवनानामाणायवे ॥ [illegible] ॥ ८ ॥ [illegible] सचिहनेनगतावे
[illegible] निः म विष्णः संफिनज्ञान ॥ [illegible] ॥ ९ ॥ [illegible] किं [illegible]
प्रःपिनवचः [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
भवितीन ॥ [illegible] ॥ किंता
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ ४२ ॥
[illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ ४८ ॥ राम
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥

२१॥ एवं नंगमा मिधे ॥ अंगं ग्रहं दसपयं ॥ २० ॥ प्रतिपाल्य जिनवान् परीक्षणीय ॥ २० ॥ २१ ॥ विधाय विहित
मिति योजना ॥ २४ ॥ चतुर्द्दश पूर्व एव स्थिता ॥ समाप्यते एकोभूते ॥ २४ ॥ तल्लेनं हेय पान मेसमागम्य हि ।

यो ह मेवं कृ तो मानस्य या लो मणीनया ॥ [illegible] समस्त जनस्या दासीम विद्यति ॥ २ ॥ पंच
वर्ष पुत्रा नाम [illegible] विहस्थ हं से मह ॥ [illegible] नो मान ही सीजाना सो ह विद्यति ॥ ४ ॥ यद्येन सधिमा
नं [illegible] मासि बांड विमेद नान ॥ [illegible] [illegible] ॥ ३ ॥ प्रतिपाल यितव्य स्तेन
[illegible] का लोम्य धीरया ॥ विधि [illegible] च वर्ष [illegible] ॥ ४ ॥ एवं [illegible] विनना
मं न विदना: ॥ [illegible] मत्व ॥ ५ ॥ [illegible] सम दक्स्य
यत ॥ [illegible] ॥ ६ ॥ [illegible] विधान ॥ श्रा
[illegible] ॥ ७ ॥ श्रा [illegible]
[illegible] ॥ ह न उवाच ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ८ ॥ [illegible]
तमं ॥ ९ ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ १० ॥ [illegible]
उवाच ॥ कथं [illegible] ॥ [illegible] ॥ ११ ॥ [illegible]
ह वाच ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ १२ ॥

[illegible]

[illegible]

वौकस ॥ [illegible] ॥ ५

70

१ वणनिरूपं वरसानं ॥ ॥ ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
वणमर्णोन ॥ ॥ ॥ [illegible] नवरंयांनवंनि ॥ [illegible] ॥ [illegible] नरूपानीदेवोनि
सहस्रमिरपरोण ॥ ॥ ॥ [illegible] ॥ नवधोरानज [illegible] नोभवचणोनि

[illegible]

[illegible]

म.भा.
आ.पं.
७२

72

[illegible]

[illegible]

[illegible]

७२

[illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible] ॥ [illegible] ॥

वर्णैव प्रतिष्ठितं ॥ ३ ॥

[illegible] ॥ [illegible] ॥ अध्यायः पंचदशः ॥ नमो [illegible] ॥

न॰ मा
आ॰ ष
७३

72

[illegible]

वासकिमलोन्हिनेवाकारिदेवोपकामयाभ्य निर्गुणे ॥ कालकेदिति चुकलं ॥ कालिंशापानः कालिव्यमं
णामपवनेनमेवसापूमस्योनिवनिवाभिप्यनमकं ॥ १५ ॥ लवणवाममसादवः ॥ भलदाहिकाणि

कामकेरथानानास्यमहमाहिषमनः स्तोः ॥ सपूमाः कालिंशोवानामोयेतायम्ं सावोन ॥ १८ ॥
मेपूमसेवाः संश्यूनामेवसेवाः सविपनः ॥ भवमवभिनमनललोनमूलाकंलापवरहिलान ॥ १९ ॥ नसा
वकिनिहसयान्ययूनाः पूयावहव ॥ मगमवनाणामोनोकवंनानलमवाकिरनं ॥ २० ॥ वभूवा
त्रमहानारोमहामेवम्बनोपमः ॥ पूरपोकिसमानवमंसरवेलानरानेरं ॥ २१ ॥ नतोनानानलव
राविनिशिरणमहाद्विणा ॥ निवर्षमममपानम्ः पूजन पेणलवणांभोभि ॥ २२ ॥ वाकणानिवमू
नानिविविधानिमहीधराः ॥ पानासन्नवनासीनिविनंवैममपानपन ॥ २३ ॥ नसिषथामपमा
णेहेमहू बान: पावक ॥ नपनमतगोपेनाएवेनाप्राक्कहाकुमाः ॥ २४ ॥ नेधांबरपेनष्यासिरहि
भिः प्रवलन्महू: ॥ विधाहिरेवनीनामासमाहणोकेरंशेकिनि ॥ २५ ॥ दसाहकेनरोमनवसिंहाश्चेव
विनिर्गताम ॥ विनानाहनिसवोशिसनानिविविधानिव ॥ २६ ॥ नसमिमसमरोपेः प्रदहनोभि
नसन: ॥ वाणिगामेवतेनेंदः पामपामासमर्वंनः ॥ २७ ॥ ततोनानानिविधाहायमसुधः सानतं
भवि ॥ महाडुमाणिनिर्णायमावहवयोपयोरमा: ॥ २८ ॥

वांशापयानदेहाः ॥ २९ ॥ वारुणानिवहणालोकस्थानिनावांशापयानदेहानि ॥ ३० ॥ पर्वेनाग्रामन
मानानांडुमाणंसंचर्पेजानोग्रिः पर्वनेनामवननवस्थानस्थादीनदाहेमाहत्रिभिः नसिनिनि

११ || ग्रामा इह लवेष्याः लाट्टभल्लाः विंशेकरकाडी निग्रसिद्धः लोमपा दीर्घदंडाम्लएवावेष्याः लोक्षित्रा
दुग्रसिद्धाः विविधानि शास्त्राणि यमदंष्ट्रादीनि लोकप्रसिद्धानि जनमध्यद्वयपादीनि || १२ || प्रसिः || एव
क्तः || प्राक्तिः || इहलवेष्यो लोहदंडः || पृथुबुध्नः || गदाधरः || मध्व पट्टिशः खङ्गविशेषः डमरुना पार

लक्ष्यकं बमनत्राभसेदानवत्याम्लनेनदा || अप्राप्य नं चेदममूर्धांसमानां हित कामया || ५ || न
नो भगवन्नातत्र शिरश्छिन्नमलंकृतं || वक्रगुप्रे नचक्रेण पिबतोः सनमीलस्य || ६ || नर्दे
लक्ष्यणन्यनिमं दानवस्य शिरोमहत् || चक्रच्छिन्नं रवेर्मार्गं लुलनादानिमंदरं || ७ || नकं च
पंचपणलक्ष्यविशुद्धरन्हुवर्णानलो || सपवें जवनं दैत्यां रेसम्याकं पद्मनाभी || ८ || ननो वैरविनिवं
धः क्रनोरहुमवेनवे || प्राप्य नं सूर्यं संसोमाद्गुग्रसमधायिवे वनो || ९ || विहाय भगवांश्चापि दिवी
नूपमनले हरिः || नानाप्रहरणो दिव्यो दैत्यनानास्ममकं दयजन् || १० || ननः प्रहन्ता संग्रामः समीये
लवणां भमः || सहानानमसराणां वमर्देत्तो रनरोमहन्त्र || ११ || प्रासानुविद्धलालीवृशान्
तेन महहमशः || तोमराश्च मलीलाः पाशाः विविधानि च || १२ || ननो [illegible] भिन्नवमंले
हयिवंवङ्क || प्रक्षिप्ताक्षिगदाहस्तानि येन [illegible] नले || १३ || छिन्ना [illegible]
हहतेः || नप्रकांचनचित्राणि निर्वेनरनिशांनव || १४ || [illegible] महाह
गः || प्रहीणा जिवक्रटानि यानरक्तानि शोरेनो || १५ || हाहाकारः [illegible] प्राः || प्र
मानंमहिंदनं नाशवेरादिशे लोहितायनि || १६ || [illegible] हि मिः ||
नि [illegible] || १७ ||

लीलाग्रः पट्टाइनिग्रसिद्धः || १४ || १५ || [illegible] दंडः
एवमग्रेपि लोकप्रसिद्धा [illegible] || १७ ||

म॰ भा॰
स्वा॰ प
७५

लिप्साम्यविन्नाघ्नेप्रसमाः ॥ २४ ॥ सलिलयपाः प्राग्नम्नोदेवाः ॥ ३ ॥ किरीटिनेनमाय ॥ ४५ ॥ नस्याया
सेष्यविष्यानाम्त्रिजं विमलोहारैः देवालवप्पागाविम्रोः प्रापुरे न दिहे विनं ॥ २ ॥ प्रध्याये मनमंघ

ननोमहीलवणाजलं च समागां महाः लताः प्रविविष्यदिनाः सरैः ॥ वियद्गनं च लिनकृता
प्राप्तनप्रभंमहर्षीनं परिकल्पितं निप्राप्याने ॥ ४ ॥ ननः सरै विजयमवाप्यमं द्वः स्वमेव देवाना
मिनः सह जिनः ॥ विनाम्बुदं दिवम पिचैव सर्वे वा स्तलो सनां सलिलपराययागतं ॥ ३ ॥ ननो
मनं सलिलहितमेव च क्रियेसगः पराम्बरमयि मामप्युज्ज्वला दृष्टोचनं निधिमम्बरमाधि
नकिरीटिने वलभिद्याम रैः सह ॥ ४ ॥ [illegible] हिपहे [illegible] मनमम्पुनं [illegible] ॥ २ ॥ सो [illegible] च
एननेकथिंनवैमम्बरं नमथितं नयया ॥ यनमाम्यः [illegible] श्रीमान नलविक्रमः ॥ ५ ॥ नि
पुनन्नेककथिनमवैसम्बनं नमस्थितं नयया [illegible] ग्रहहिमाचिरे ॥ ४ ॥ विन
प्राप्यनदाकदूविननामिदमम्बलीन ॥ उवे [illegible] ॥
नो वाच ॥ स्रोत पवाम्बराजो [illegible] किंदा [illegible] ॥ दु [illegible] नोरविपथ [illegible] वहे ॥ २
क [illegible] वाच ॥ कस्मावालमहे मन्येहयमेनंमुरिविने ॥ [illegible] हासी भावायप्या मि
नी ॥ ४ ॥ सोनिरुवाच ॥ एवं नेममर्यं [illegible] भावाय [illegible] विधु [illegible] नेवसोद्गसाव
इतिमहा ॥ ५ ॥ ननः पुत्रमहं [illegible] ॥ [illegible] नाभूवांजन
प्रमाः ॥ ६ ॥ प्राविचांधं हयंविं [illegible] ॥ [illegible] पापमनां
मान ॥ ७ ॥

नाथमकाप्ताः एनने ॥ ४ ॥ पप्पावहे वि [illegible] ॥ [illegible] सीहाहासीभावाय ॥ सोवादा
सीकर्नं वाहासीमविनंद्गहिमं [illegible] ॥ ३ ॥ [illegible] ॥ [illegible] मोरिनंवन ॥

74

७५

[illegible]

[illegible] ॥ देवा [illegible] ॥ [illegible] मेदिनी ॥२८॥

म॰ भा॰
श्रा॰ धं॰
७९

75

वेलायां शंखे लक्ष्या लवणजलेन प्लाविते न चलं ॥ ४१ ॥ गां पृथिवीं विदंता लभमानेन ॥ द्वितीयो प्रान्त्य
यः येन हेतुना विदोभिते न जलेन प्लाविलयामं ॥ ४२ ॥ अग्रे ततः लांछे शिशिरे निशेषः ॥ मार्यं तलं ॥ पा
नालस्थापितलं प्रयस्ते ॥ अयं पातालादि येषां विनाशे ॥ ४२ ॥ ये यत्नः सेवमानस्य प्रगादिकालस्य

भो यगौ विक्रुतै सौचे रैर्न लवचै ललनः ॥ उत्थैर्निरुपमनाय धुद्धं कृ मे प्रावृड् समाकुलम ॥ ४ ॥ याकुं
सर्वेत्ला नामाल यं वह णाय च ॥ नागानामालयं यं प्य मज्ज मे सहितां पतिम ॥ ५ ॥ अप्रमेयमचिंत्य
च महत्पुण्य जलमद्भुतं ॥ घोरं जलचराणां वैरीद्भुमेरवं निस्वनं ॥ ६ ॥ गंभीरावर्तकलिलं सर्वभूतभ
यंकरं ॥ वेलां दोलानिलचलं दोभोद्वेगसमुच्छ्रितं ॥ ७ ॥ वीचीहस्तैः प्रचलितैर्नृत्यंतमिव सर्वतः ॥
चंद्रवृद्धिक्षयवशादुद्भूतोर्मिसमाकुलं ॥ ८ ॥ पांचजन्यस्य जननं रत्नाकरमनुत्तमं ॥ गां विंदता भ
गवता गोविंदेनामितौजसा ॥ वराहरूपिणा चांतर्विक्षोभितजलाविलं ॥ ९ ॥ ब्रह्मर्षिणा व्रतव
ता वर्षाणां शतमत्रिणा ॥ अनासादितगाधं च पातालतलमव्ययं ॥ १० ॥ अध्यात्मयोगनिद्रां च
पद्मनाभस्य सेवतः ॥ युगादिकालशयनं विष्णोरमिततेजसः ॥ ११ ॥ वज्रपातनसंत्रस्तमैनाक
स्याभयप्रदं ॥ डिंबाहवार्दितानां च शरणं वरुणालयं ॥ १२ ॥ वडवामुखदीप्ताग्नेस्तोयहव्यप्रदं
शिवं ॥ अगाधपारं विस्तीर्णमप्रमेयं सरित्पतिं ॥ १३ ॥

महानदीभिर्बहुभिः स्पर्धयेव सहस्रशः ॥ अभिसार्यमाणमनिशं ददृशाते महार्णवं ॥ १४ ॥ आपूर्यमाणं च सदा नृत्यमानमिवोर्मिभिः ॥ गंभीरं तिमिमकराकुलं तं
गर्जंतं जलनिनदेन भीमनादं ॥ विस्तीर्णं ददृशतुरंबरप्रकाशं तेऽगाधं निधिमुरुमंभसामनंतं ॥ १५ ॥
इत्यास्तीके सौपर्णे विनतादास्ये समुद्रदर्शनं नाम ॥ २१ ॥

७९

सं॰ मा॰
अ॰ पं॰
११

१२ अध्यायः ॥ २ ॥ संत ॥ १ ॥ [illegible] किरण [illegible] ॥ [illegible] कालकालेन [illegible]

[illegible] ॥ ९ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥
[illegible] ॥ ४ ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] किरण [illegible] कालकाल [illegible] ॥ [illegible] ॥
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ काम
[illegible] ॥ [illegible] ॥
[illegible] कामरूपः काम [illegible] ॥ [illegible] ॥
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥
[illegible] ॥ १ ॥ [illegible] ॥

76

निशाम्य हृष्टा ॥ ३ ॥ ५ ॥ कामरूपः [illegible] ॥ [illegible]
॥ ७ ॥ श्रीवीरभद्र उवाच ॥ ८ ॥ विमान [illegible] ॥ [illegible]

१७

स॰ भा॰
स्क॰ पं॰
७८

इन्नमश्चिन्मात्र ॥ चराचरं चेतनाचेतनं स्थावरं जंगमं वा तामलिमिदं नित्याने भान शिवकिरणैः प्र
वृत्ताप्रवृत्ताःमेवरा हिता नवपेणा ॥ यथोक्तं । यथाग्नौ प्रसेषेत्र यावत्तलतेनन हम्मना ॥ सं विसे वेदसे योर्थोवे
हे तेषां प्रसामान्न इति भानमतः सूर्येषु अंतकोटयः प्रकाशप्रवर्तनानि इत्यत्र नग्र हृषात्मकं ॥ २१ ॥
ग्राद्यरविवर्तनेषु कस्मिन्नाहो इति सहस्रांशु तेजो नानाभानं नस्य अंतः तस्कं कालस्यापि कालस्य

तमस्तमः सर्वमिदं चराचरं जगत्मलिमिमौन रविवाचमासते ॥ समस्तविपल्लवमनः प्रभां स्फुरल
तमस्तमः सर्वमिदं प्रकाशप्रव ॥ २० ॥ दिवाकराः पीकयितो प्रथाः देवैस्तालश्च वरहैसि इनाशन प्रभः
मनकः सर्वमिदं प्रकाशप्रव ॥ २० ॥ दिवाकराः पौकपितो पृथा ...
मयंकरः पुलय रवाभिः इति नो विनाशयन्नु गापरिवर्तनं नानहतः ॥ २४ ॥ एतेषां प्राणानन्नपाग
नावयं महेन संवलन समान वर्धनः ॥ तडित्प्रभं विनिमिषं प्रभा गोचरं महाबलं गहत्समपुरुषाये
चरं ॥ २२ ॥ यथावरं स्वरं मनस्य विक्रमं तनोन्मान वैभिरं प्रभाषितं ॥ तमस्तभानपूर्वचक्रेवचे
मान यथाह्निमांशुमयप्रान्तहान्मनः ॥ २४ ॥ भयान्विताननमोहि [illegible] सिनो विभातिलविपश्य
गतिप्रयाति ने ॥ कुचप्रसनन्नमं सिद्धारतः श्रुमोमहामल [illegible] कप्रगाश्वर ॥ २५ ॥ समाकु
यः कुहुनानानां दंपाणां नवमो [illegible] ॥ [illegible] विन समस्वलेनतेदि
शोः स्वरं वि दिव गियच्च मे दिनी ॥ २२ ॥ तु लैलिनः [illegible] सवदिसाग्नि
ग्निमं ॥ नवग्रहतिकयितकुनानसनिमानि [illegible] ॥ २३ ॥

पिकालरूपार्थः ॥ २० ॥ लोकेषु रुं उपेन्द्रस्र [illegible] संयंतः ॥ २८ ॥ यमवरंका
रणं कार्यं च ॥ सूर्य घ्नः तेन मणा [illegible] ॥ २० ॥ [illegible] ॥ विमानिनाः प्रसी
नाः ॥ विपश्यानि हीन माभानहरति ॥ २० ॥ सः [illegible] ॥ सनात्मान
तः स्वनः शाश्वतेन दिशास्वलेनासन राहसा [illegible] ॥ [illegible] ॥ सप्रभविप्र

१८

संनाय पयनसमसनायपयन॥ अउमाव यार्ठं:॥८॥ निरोमु न एव सन्ने वंदहू निउदि नत्तु मसो कहीय
निलोक निणाइ॥ नतइस्सा दिना॥२७॥३॥ इ एयन पएयनं केहाटे रक्कु निगणनाटे योर विहार्थं क

एवं कुनमनि: सयों एहल मम्याम मक्कि रिं॥ नस्सा लोक विना स्या पहनाय पयन भाकर:॥९॥ नतो
देवा नयाणा मयो भुरेनं मह यीय:॥ अयाई ताज शमर्ये सवसा क मयाव ह॥१०॥ इमस्स नेमहा
नाइ हे लोक स्स विनायान:॥ नतो देवा: समिगणा उपनम्य विनामहं॥ अब्रवन्कि मिवेहाय
महदा हमूनं भयं॥११॥ ननाव ह एयने सर्व: हयो य पतिमालिच॥ इदि नेमगव सा नोकु थमन
इवि ष्यति॥१२॥ पितामह उवाच॥ एव लोक ह्मिना श्यायां निकूदंन मसुदन:॥ ह एयनेव हि लेमकान्स
भस्सया ह्मीक रिष्यति॥१४॥ न एय प्रति विधानं चा लिहिनं पूर्वे सेनहि॥ क पयप स्यहनो योमान हलो
नामि विष्कुन:॥१५॥ महाकायो महातेजा: [illegible] ॥ [illegible] नेनस्या स्य
हरिष्यति॥१६॥ लोकानां नाम[illegible] चैवं [illegible] ॥ [illegible] ह [illegible] ॥ नत: पितामह
हाना न: सर्वं चके [illegible] ॥ इति [illegible] ॥१८॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
महात्मन॥१९॥ इत्यादिपर्वणि सौपर्णो॥२०॥ सौति रुवाच॥ [illegible] महाबल:
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
संनमाद [illegible] ॥२१॥ नत: [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥२२॥

[illegible]

म॰ भा॰
श्रा॰ प॰
८०

79

यत्र भोजकः पितृमेधे स्माहु ॥ महाय पशुः नि ॥ २४ ॥ यत्र फलप्रदो पितृमेधे स्माह ॥ त्वं विप्रैः निनदेनाल
ष्मात्रमेधे विधिविहितं निपठे ने स्मादिष्कृते ॥ वेदानां निष्टुः यत्र पाकृ त्वणार्थे ॥ तत्र विद्वा पाद श्रुष्ठ्यै
कल्पः प्रयोगज्ञा नार्थं स्माकरणं ऊहा विनिष्ठ्यैः स्वं दोमाय श्रोण्या स्मा नुचा कामं चंनो निविष्ये

महाय शालामिनि महामिष्ठ मेमनी षिभिर्मं दिनस नाम रुषिभिः ॥ अभिष्टुतः पितृभि
चमोममघैरवषट्कृ नान्यपि चरूँवीषिभूनये ॥ २६ ॥ तं विप्रैः स्तननामिर्द्रोमेफलार्थं वेदं
गोष्ठतलवलोक मीयमेच ॥ तद्धे नोर्धंजनपदा पुण्या हिनेष्ट वेदां गान्यभिगम ध्यनिम वं
यत्नेः ॥ २७ ॥ इत्यादि पर्व लिखितो प्र[illegible] ॥ एवं स्वन लहान्हं कुर्भगवान् दिवाहनः ॥
नो लज्ञो भूनसं ख्याने: सर्वेषां वरमाह लोकम् ॥ १ ॥ नेमेषां [illegible] भूतं विघ्कृद्ध्यलाः ॥ प
रस्परभिवान्यधेगाजेनः स्ननते हिर्वि ॥ २ ॥ सर्वत्रेनमि [illegible] नलोकः हामहाद्भने: ॥ हन्न्हिर
नलेनोयंमजत्रं नमस्थावैः ॥ ३ ॥ स [illegible] मिवाका [illegible] दिर नलेकप्र: ॥ मेघ्रुलनिननिचौ
वैविध्रस्यवनकंथिते ॥ ४ ॥ तेमेषेः स्ननला [illegible] तिः ॥ तथ्य चेहस्के दिरणमंव
एमपयत ॥ ५ ॥ नागानानामुद्र मोहधीलस्थावतिनिवाहते ॥ साप्ते [illegible] मिहलिलेनस
मननः ॥ ६ ॥ रमान्न लमनग्रामेष्वीनलेविमलंनले ॥ नरामभू रमदह्र [illegible] भिरनेकप्र: ॥ ७
रामनीपकमागक्षन्मा यादहृष्ट नं मना: ॥ इत्यादिपर्व लिखितो [illegible] ॥

हिनगायथा हिजा नार्थं निहमं वेदार्थं ज्ञानार्थं ॥ स्पोनिघ्र [illegible] कालज्ञानार्थं मिनिएनान्ये वदेदं
गानि ॥ २० ॥ अध्याय: ॥ २३ ॥ एवं हरपोस्मा वाहने [illegible] नाहम् ॥ ११ ॥ [illegible] कस्यां न: ॥ [illegible]
निनिर्मवनिनमिव ॥ २४ ॥ स्ननना [illegible] तथा [illegible] ॥ १ ॥ नमस्ते [illegible] देवी प:

५॥ [illegible] भवन्तु [illegible] भवन्तु ॥ ६ ॥ [illegible]

[illegible] ॥ ७ ॥ [illegible] ॥ ८ ॥ [illegible]

[illegible]

[illegible] ॥ ९ ॥ [illegible]

[illegible] ॥ १० ॥ [illegible]

[illegible] ॥ ११ ॥ [illegible]

[illegible] ॥ १२ ॥ [illegible]

[illegible] ॥ १३ ॥ [illegible]

[illegible] ॥ १४ ॥ [illegible]

[illegible] ॥ १५ ॥ [illegible]

[illegible] ॥ १६ ॥ [illegible]

[illegible] ॥ १७ ॥ [illegible]

[illegible] ॥ १८ ॥

[illegible]

[illegible] ॥ १९ ॥ [illegible] ॥ २० ॥ [illegible]

[illegible]

म॰ मा
आ॰ प
२२

२४॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥

[illegible] ॥

[illegible] ॥

[illegible] ॥

२२

मा भा
स्था य
८२

१॥ हंमावयतीवय॥४॥ गुरु स्वाम्योननवास्यवत्स्यमाताप्तरीमा॥ ॥ वःगुरुस्वाकंमानस्वाप्ताघेवयाव

ब्रुवाणमेवंगाह इंवानुगाःश्रनयमायन॥ निषादैमनुसमार्थयंनिविद्वनमयामह॥ ॥ गुहउवा
च॥ एनमवपितिनिषादीनेपरिगह्य स्वानुनिःयन॥ नत्वं समावपासानमजीवंसमनेतसा॥ ॥ ते
च॥ एवमुक्तोनिषादानांतैनवीनेवामकुतापन॥ नेदंयितावचनहृडनिहृदेपुनमामसह॥ ॥
निरुवाच॥ ननःसविशोनिष्क्रमेनोनिषादोसहितनस्तत॥ नरेयितावचनहृडनिहृदेपुनमामसह
सहमार्थंगि निष्क्रमेनेनसिनिषेचयविताद॥ तिनयपत्नावाकागुमन्यपानमनोनववः॥ जनो
पगुपमपितिनंयहस्वास्योननवाम्पिनः॥ गुहावागयमसेयाना नेचोवाचमहानंद्वि॥ ॥ कश्यप उ
वाच॥ कश्चिदःकृपालेनितंभोजनेनेवहलेनन॥ कश्चिदमानवघेलोकेनवान्नेविषयेनवह॥ ॥
गरुडउवाच॥ मानामेकृपालानाथस्वनयानामाननयाप्रह॥ नहिष्टेकृपालनानभोजनेनेवहलेसदा
ग्रहहिस्यैःप्रहिनःसोमममाहनमनम॥ मानहीयहिषेहार्थमाहविसेनमयवे॥ ॥ मासाचाव
समाहिष्टानिषादाम्यवयेनिह॥ नवमेरगिरमवनकहितामहमशुः॥ ॥ नस्माकुहंनमपाभ
मनमाहिष्टानिषादाम्यवयेनिह॥ नवमेहहमाहनेसमर्थःस्तामहसमें॥ ॥ हतिपामाविषानार्थमस्व
गवनग्रहिगास्वमे॥ यहकुमानननमाहनेसमर्थःस्तामहसमें॥ ॥ यवकृमीयतेह
मास्योनमेममवान॥ ॥ कश्यप उवाच॥ यदंसयोमहागुणपदेवसो... ॥ नम्मनवंनिवापखयन्य
स्तीमहाकर्षस्वाङ्गमवेः॥ नयोनंमानवेवं ... नानयाननस्याप्तीस्व
मात्तीवनाव्रमो॥ ॥ आसीद्विमावहनेमममह तिः ... कोमहृतनयाः॥ ॥

कृहं॥ ॥ भोजनेनवहलेविषयेममकृपालंनह्रिपुर्णी ...॥ ॥
सोमयमयसव॥ २॥ २०॥ २२॥ २३॥ कृमीयतं॥ ... ॥ ... ॥ २२॥ २८॥

८२

म·भा
स्या·पं
४२

३ हिन्तो शिलं ॥ १०॥ १३॥ नेनप्रंभवनं लेहा स्थंनीनि यो मः ॥ ४॥ १२॥ मोः संवेनि रालं वेत्य स्था स्या न थ्यमा नग न मा नौ ता
नी थं भहा णा थं वे च मे ह स्तं गां श्रा मा घा ल बा न प्रा गे ढुं ॥ ५॥ नो स्ता न क न क श्रा वि न ॥ क न का च ल स्य ह ता

विद्धो म थं ल नो ना गाः स गे व कू रु घा क लं ॥ कू मौं ण्य प्रु पुन पि ना गु हा या भ्ये नि वी घे वा न ॥ ६॥ व इ हि
नो यो न न नि ग न स्त हि ग ता य न ॥ कू मौं हि यो न नो मे यो र श्य यो न न मे उ व न ॥ ७॥ ना त्रु भो यु इ मं प न्नौ
पा ष्य ह वे ये षि णो ॥ उ प श्य श्य स्त क मौं र्ह म्य य ये हि न मा न्म न ॥ ८॥ यो नि वा व ॥ म्य क ना ग हुं इ मो थ मा ग
ल्प म क यो न दा ॥ त्रु धा न ः स हे वे लि स्य भ म व न म गा लं ॥ ९॥ हु ग्रौं क मो हि ज्ञा गा वे य चा म किं वि इ न मे ॥
श्र भ ख म्प य नं वा पि म वि ष्ण नि ल वा उ ज ॥ १०॥ दु धा मा न स्य म श्रा मे दे वे ः सा ह्नं म हा व लं ॥ म चो य नं षि ता
मा नि प वि त्रा णि ह गौ षि वा ॥ ह ष्णा नि व म र्ग णि स र्व वे ह स्य ने व लं ॥ ११॥ म को ग ह र ः पि त्रा ग न ह
इ ह मे नि का न ॥ प्र प श्य त्रि मे ल ज नं ना ना पि हि स मा कु लं ॥ १२॥ न न श्र ना पि न वा क श्री म वे मों न गि व
ग ः ॥ न वि न ग ज मे के न कू मि के न वा हि प न ॥ १३॥ म म थ पा न वा का शं न न न उ वै विं हं ग म ः ॥ सो वं
वं नौ थ मा मा प्र वे व ह वा न पा ग म ग ॥ १४॥ ते पी ना ः स म कं प न न स्य प वा नि ला ह ता ॥ न नो मं मा दि
नि न हा क्षि प्राः क न क श्रा वि न ॥ १५॥ प्र व सं गा न्म ना न्ह ग्य म नो र श्य फ लं इ मा न ॥ श्र न्मा न न लं ह
पां गा उ प च क्र म वे च र ॥ १६॥ कां च नै रा ज नै श्चै व फ लै वै इ र्थ श्रा वि न ः ॥ सां पु रा वृ पी वि ह म न्य ा ज
मा ना न्म हा इ मा न ॥ १७॥ न म वा च लो ग श्रे ष्ठं न व वै हि ता पा हू पं ॥ श्रा नि ग्र हे इ ः पु म ह ना पं नं न म नो
ज व म ॥ १८॥

३२॥ १९॥ रो ह्वे व रो हि ता वट ः ॥ स्त्रा थें न हि न ॥ ह स्य स वा प्र ता दि क नौ ॥ से हि रो हि न के स्य ग्य व ट पा दा पो
पु मा नि नि मे हि नौ ॥ २०॥ २१॥ २२॥ २३॥ ४२

विभागेकविभागाभीनिवृत्तौनियमेवननहु[illegible]॥ ॥ यति वा ॥ ज्ञव क ॥ ॥ यंनदेशुक्विदेशुयनेति
य्रन्योन्यसाक्षिरूपितवहुस्त्रीहृत्न्यनाशृदेनेवे र व्रहीयकं नैः ॥ ॥ क नियान्य य च न्य धंके के को भ्या

सनेद्दनियनंभ्यानामहृकस्यंमहमनिः॥ रिभानंचहीनेयाये वक[illegible]हिनिनयशः॥ ॥ ग्रथा
त्रवीचलेभ्यानामहयनीके विभाचहः॥ विभागंवद्वेभाहाक्नं मिहे[illegible]नियाशा॥ ॥ ननोविभ
काप्तन्योन्यंविहृद्येनेथ्यमोहिना॥ ननः स्याहयान्कहाम्ताम्भनान्छकेपने॥ ॥ विरिनाभे
दयंम्यनान्मिश्रामिवरूपिणाः॥ विरिनाचायंरमिचानेनरेशुपुनेम्यथ॥ भिन्नानामनलोनाशः
हिप्रमेवप्रवनेने॥ ॥ नस्मःद्विभागेभ्यानांनाप्रयह्नेनिभाय॥ ॥ हरूपाशेनिवहानामन्योन्ये
नाभियंविनं॥ ॥ नियेनंनीहृयामनंभेद्रनोपननिहृति॥ यस्मानस्मान्नहयनीकहृनिवस
मचाश्चनि॥ ॥ यमहनंवमहनीकेविभावहमथाप्रवीने॥ नामधन्नेलचरः कच्छपः सभवि
हाभि॥ ॥ एवमन्योन्याणानेनेहयनीकुविभाचह॥ ननकहुपनामभावाश्यंथ्यंमदचेनसो
तेपहृहपानमंगेमनि येम्योनियमनाशुभो॥ परस्पदेहयनेोश्चमाणेचलदूपिनो॥ ॥ नरस्यवि
न्माहकार्येहवेवेरान्नुमाविणे॥ नयोरन्यनरः श्रोमान्समन्येनिमहृमान॥ ॥ यस्मंहेहिनयाहे
नकूभ्यांयनंनकेवेपाय॥ उभौनोनोमहाकायः कन्देविलोभयनसः॥ ॥ येदहवेहिनके
रः पनन्यमाजेञ्जनेहे॥ देनहलापलंगालपाद्वेतेनवीलेवान॥ ॥ नापिनः समरतियरूपा
नेग्रहंचनीयेपामहनेनिवहानंश्रनिपंकिनंममर्योदाभेनमयेन॥ ॥ ॥ मारोनलानाय्यं
माह॥ एवमिनिनेभानामसीयोनिनहनीनिभाव॥ ॥ ॥ मावेहिनकर॥ कंडलीकनस्थुरु

मं.मा
स्या.पं
८४

२४ ॥ बालखिल्याः ॥ नामतः ॥ मरीचिपाः [illegible] मरीचीनेव पीनान्त्यांति ॥ प्रभोव ॥ [illegible] देवमयु [illegible]
नाकं [illegible] विद्या विद्य [illegible] ॥ २६ ॥ [illegible] स्म [illegible] ॥ २७ ॥ [illegible]
[illegible] विकलं वचनं [illegible] यथा [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ २८ ॥ [illegible]
महावीर्यपरं [illegible] साक्षाद् [illegible] ॥ [illegible] पंच देवदानवराक्षसैः ॥ २९ ॥ [illegible]
[illegible] लोकसंलोकनं [illegible] ॥ ३० ॥ नमामन [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ ३१ ॥ कश्यप उवाच ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] मरीचिपाः ॥ ३२ ॥ सौतिरुवाच ॥ ततः [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] बालखिल्या [illegible] ॥ कश्यप उवाच ॥ [illegible]
[illegible] ॥ बालखिल्या [illegible] ॥ ३३ ॥ सौतिरुवाच ॥ एवमुक्ता
[illegible] ॥ चिकीर्षितं [illegible] ॥ ३४ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ ३५ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ ३६ ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ३७ ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ३८ ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ २४ ॥

८३

२३ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ २४ ॥ [illegible] ॥

८८

४१ ॥ अज्झयणं ॥ २१ ॥ समत्तं ॥ २ ॥ अनिदेवदेवे [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] उडोदु ॥ विरइ
यसायलो अप्पानुदु ॥ आदेवकाय [illegible] ॥ ८ ॥ [illegible] ॥

एवामममहूयाणवायानयोजनमायना ॥ एवमाय [illegible] मोगनकद्दयो ॥ ४ ॥
ननोडुमंपननमसदसमेविनमद्दीयरप्पनिपवए: [illegible] ॥ [illegible] समभिपन्नवयपदा
न्वभंजननामविरलयव्वसंचयो ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ समुस्सवाणनपाउसा
गहरेनवलीयसा ॥ अभउननवोपाणावाम अंचेनामयाव [illegible] ॥ [illegible] महूपणवोवासय
मानोविलोकयन ॥ अपाणूलेवनेणपवयहूलतिवस्यानयो [illegible] ॥ अपयोपद्वलेवतेनहमा
सिनिलानवीन ॥ नयोरनोलूवमानसहयोनभिवोवस ॥ [illegible] ॥ दनानसंपननोपुणाविणयचि
किंनणस ॥ नविदेदनवीरः सगदणनकदयणो ॥ [illegible] ॥ सनलिनापसेजणासदभिपन्नवकाधियः
शाविमासेननगाहतेपोतेवान्नवेनया ॥ [illegible] ॥ अनिदेवननमयकमहप्पामहूपयः विसयो
केवहदयानामचकुंमेहावणे ॥ [illegible] ॥ भारसमासाउदीनपघविंहमस ॥ गाहउसलवणञोह
लसाअवगणोजनन ॥ १ ॥ ननःपानेःपधपननदेःणोलावकपयन ॥ एवेसामपनहुणान्वा
हूसाजकवूपः ॥ २ ॥ दूयाणेवालविवमानंनचमाणवमविदन ॥ समनलापवेनसोहेनपमा
दनमंजसा ॥ ददस्कोपितानत्रकपपनपोविस्पिन ॥ ४ ॥ ददद्गोनेपितावापिदिवाहूपंविदेगा
म ॥ नेनेवीधवसोपेनमनोमाहनरेहस ॥ ५ ॥ पोलसूणगवमीकाणवसदेउभिवोयते ॥ अवि

अद्धनाकानान अनभिपोयंकुरमझ्तिवात नदेवाहसवैनि २२

प्रणाणाथानवाल विस्मवमानानप्रमाहत्नश्ववलदेशाणनवपानान ॥ ४२ ॥ प्रमाण सन्तेषामि

सा मा
माा पं
८२

रत्नां सिमऋकयत्नेसामहृत्रिनानिव्यपर्शयन ॥ ४१ ॥ ननना सामसमहिम: सहृदैवै: पालकृन:
तु नानानाम्हार्गेणियशपनिमवाचह्रस्पानिं ॥ ४ ॥ ह्रुउ ॥ व ॥ किमर्थं भगवन्वोणःऽन्यानाः सहृसो
स्थिताः ॥ नवशार्ङ्ग प्रणप्राणामिप्रुपियोन: प्रपर्षयेन ॥ ४ ॥ ह्र हृष्ण तिरुवाच ॥ नवापपापादेवं ह्रम
मात्राम्रशालक्रतो ॥ नयमावालविस्मानांमहृषीणांमह्लान्मनां ॥ ४ ॥ कपणपप्णमन: श्रत्रोवि
ननामाम्रुविचर: ॥ हर्नं सोममभिप्रासोवलवान्काम ह्रपधृक ॥ ४ ॥ समर्थो वलिनां श्रेष्ठो हंतं
सोमंविहृपाम: ॥ सर्वंसंभावयामासमिरसाप्रमपिसापयेन ॥ ४ ॥ सोतिरुवाच ॥ श्रुत्वैतनहृचनं
पाकृ: सोवावासलाहिपा: ॥ मह्नुनीर्थवल: पनीरुनंसोऽप्तकिह्राहृन ॥ ४ ॥ युगप्तास्तेवाप
याप्तिषयथानमहृदेवलान ॥ अनलहिलनमहृहृम्पानिसावह ॥ ४ ॥ नकृत्वाविभुपावा
कंविभिनायनमाशिना ॥ पविवार्धामनंनम्रुवन्तेवेतृ:श्रुनापवान ॥ ४ ॥ पापेनाविविता
णांकंचनानिमनश्चिन: ॥ कवचानिमहार्हाणिवेदुर्यविकृतानिच ॥ ४ ॥ हसाणणविचमात्रै
श्रुभान्नमंनिरहानिच ॥ विवियानिवशशाणिशोनान्दमाण्डे कृ च: ॥ ४ ॥ सितन्तो वणयषाप
णासमप्रमापवोनमा: ॥ नविष्णुलिंगान्यान्यानिरुप्रभाणिवमखेरा ॥ ४ ॥ सवणणिविचाश्चैव
त्रिशूलानिपरश्वधान ॥ शक्तिश्चविविधास्तीहणा:कवचानिनिर्मलान ॥ ४ ॥ ह्रदेहृ पाणपा
हृपगदास्त्रोप्रप्रदर्शनानं ॥ नै:पहैर्मानमद्धिलैर्दिव्याप्रमामेरुिना: ॥ भानमन: हृणणा

निशेष: ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ मानमंनि ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ हृदेहृवणि [illegible] नहृणणि ॥ ५२ ॥ [illegible]

२९

84

११ ॥ हैमविकचाः ॥ हैमवडुज्वलाः ॥ २० ॥ ६४ ॥ सपूमेति ॥ द्विवाग्ध्रिः ॥ ६५ ॥ अमूलरूपं यथा स्यात् [illegible] निपातश्चहि
स्यादेवन् ॥ प्रहरणमायुधं ॥ [illegible] ॥ ६८ ॥ ६ ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ ७९ ॥ सुतेन
सतनः [illegible] ॥ कालेन [illegible] ॥ ७२ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ ७३ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ७४ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ७५ ॥ नेहैमविकचामूषो
[illegible] ॥ कांचनैः [illegible] ॥ ७६ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ ७७ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ ७८ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ ८० ॥ देवानाम् [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ ८१ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥

[illegible] ॥ [illegible] ॥ ८२ ॥ देवानां देवः [illegible] ॥ ८३ ॥ ८४ ॥

म॰भा॰
आ॰प॰
८६

85

जानन्मन्युवशः क्रीनः ॥ मन्युर्देवेन्द्रलोकस्य [illegible] कोपाः ॥१९॥२१॥ यावद्वीर्यं तितवीर्यं ग निश्चय यत्नेति कामवी
र्यः कामगामपि ॥२२॥ हाहत्याः देवस्य मनोरथ ॥२३॥२४॥ कश्चिदिन्द्रमयञ्चल [illegible] कर्मसप्ताहरूपं [illegible] ॥

नान्यश्चान्विसमृद्धा विप्रो वीर्यवान्मन्युः प्रदीपः ॥ आवहत्याद्यमानाः श्रुत्वा बले च पितामहस्य च ॥२५॥ तेष
ते शममाविप्रांस्तस्य [illegible] मन्युना ॥ आपोऽभिमे महत्कर्म न तथा [illegible] मध्यकर्म ॥२६॥ [illegible]
[illegible] विपिवलान [illegible] ॥ [illegible] वचोविप्रायेन कामेन [illegible] ॥२७॥ [illegible] कामगामो देवरा
जभयप्रदः ॥ इन्द्रोऽन्यः सर्वदेवानां भवेदिति यतव्रताः ॥२८॥ इन्द्रश्चन्द्रगुणः शौर्यवीर्ये चैव मनोजवः
तपसो नः फले [illegible] समवर्त्तिति ॥२९॥ तच्छ्रुत्वा [illegible] देवराजः शतक्रतुः ॥ जगाम श
रणं तत्र कश्यपं संशितव्रतं ॥३०॥ तच्छ्रुत्वा देवराजस्य तपः कश्यपः प्रजापतिः ॥ वालखिल्यान्ययाचत
[illegible] ॥३१॥ एवमस्त्विति तं [illegible] वाचं सत्यवादिनः ॥ तान्कश्यप उवाचेदं सान्त
[illegible] प्रजापतिः ॥३२॥ अयमिन्द्रस्त्रिभुवने नियोगाद्ब्रह्मणः कृतः ॥ [illegible] यूयं च तपोधनाः
[illegible] ॥३३॥ न मिथ्या ब्रह्मणो वाक्यं कर्तुमर्हथ सत्तमाः ॥ भवतां हि न मिथ्यायं संकल्पो वै चिकी
र्षितः ॥३४॥ भवत्वेष पतत्रीणामिन्द्रोऽतिबलसत्ववान् ॥ प्रसादः क्रियतामस्य देवराजस्य याचतः ॥३५॥
एवमुक्ताः कश्यपेन वालखिल्यास्तपोधनाः ॥ प्रत्युचुरभिसंपूज्य मुनिश्रेष्ठं प्रजापतिं ॥३६॥ वा
लखिल्या ऊचुः इन्द्रार्थोऽयं समारंभः सर्वेषां नः प्रजापते ॥ अपत्यार्थं समारंभो भवतश्चायमी
प्सितः ॥३७॥

एवमस्त्विति हस्तन ॥३८॥ पतत्रीणां पतिर्भवतु [illegible] ॥ [illegible]

त्वसनवनस्थमिदं दीप्यमानैर्वपुर्भिः प्रकाशितः ॥ ५४ ॥ [illegible] ॥ ५५
श्रद्धाय नः ॥ कार्येति ॥ ५ ॥ यजनतः यजमानस्य ॥ [illegible] ॥ [illegible]

अनपमवलवीर्येनेजसोपलमनकः [illegible] ॥ [illegible]
ललमभिदंवपुः प्रकाशितं [illegible] ॥ ५४ ॥ [illegible]
समाकले ॥ [illegible] ॥ ५५ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ४ ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ४ ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ५ ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ५ ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ६ ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥
[illegible] ॥ ७ ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ ८ ॥
[illegible] ॥ [illegible] ॥ ९ ॥
[illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ ५ ॥ [illegible] ॥ ५५ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ५ ॥ [illegible]

स· मा
मा· प
६१

86

ततः ॥ तस्मिन् देवानीके तथा विधे नानातूर्यापक देने समहीतीसं ग्रामका योऽनेसति ॥ १ ॥ ततः नेयंत्र
पूर्णेनहि ॥ २ ॥ सोमनः ॥ विश्वकर्मा ॥ ३ ॥ विनिहतो स्तनकस्यः कृतः ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ लोकयाम ॥ श्राकली

सोऽतिरुवाच ॥ ततस्तस्मिन् द्विजश्रेष्ठ सुमहतीर्तितथा विधे ॥ महद्भः पश्चिमात् तन्तीसंग्रामोऽवि
वृथा ॥ १ ॥ तेऽस्मानिवलैर्देवशाकं पतनम् ॥ ततः ॥ पारस्यं च सम्प्रस्व प्रहरणं रन्तः ॥ २ ॥
नत्र कालीयमे यान्सा विष्फु र्विसमः ॥ सोमनः सम महावीर्यः सोमस्य परिविन्ता ॥ ३ ॥
कालेन पतनोऽदिगण प्रदत्तान्तं ततो चन्तः ॥ महत्तेमसनलं पुरो कृत्वा विनिहतो युधि ॥ ४ ॥ रजस्यो
द्भूतः सर्वसमन्त दवानेन खेचराः ॥ कृत्वा लोकान्निरालोकांस्तेन दैवान्नवाकिरत ॥ ५ ॥ नेनाव
कीर्यमाणास्ते देवा मोहमुपागमन् ॥ न चैनं ददृशुर्युद्धे रजसा सोमरक्षिताः ॥ ६ ॥ एवं संलोकया
मास गगनं [illegible] दिवालयं ॥ पतनं [illegible] बान्धा विदध्यास्त ॥ ७ ॥ ततो देवः सहस्राक्षः
[illegible] वायुमचोदयत् ॥ विविधे मारुतो [illegible] कर्मा महत् ॥ ८ ॥ स च वायुर्यथा वाद तद्रजस
स्तावली ॥ ततो विनिमिरे जाते देवाः [illegible] ॥ ९ ॥ ततो देवैः सबलवान्महामेघ ॥
वारवै ॥ वध्यमानः स्वरगणैः सर्वैः [illegible] ॥ १० ॥ ततः पत्रमहावीर्यः पश्चिमात् पारवी
रहा ॥ समरे संस्थानि नष्टा देवानाम परिष्यात ॥ [illegible] ॥ ११ ॥
पहिषः पत्रिवैः स्वैर्महाभिश्च सर्वासवाः ॥ [illegible] ॥ १२ ॥
नाना [illegible] वध्यमानाः समन्ततः ॥ [illegible] कंपत ॥ १३ ॥

चक्रम् ॥ १० ॥ अथो वाहू [illegible] ॥ १ ॥ [illegible] ॥ १२ ॥ २६ ॥

८०

२४ ॥ [illegible] काले ॥ २५ ॥ २६ ॥ [illegible] ॥ २७ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ २८ ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ ३ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ ४ ॥
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ ६ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ ७ ॥ उवाच [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ ८ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ ९ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] २९ ॥

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ २४ ॥ अध्यायः ॥ २९ ॥ ॥ २९ ॥ २९

स. भा
आ. प
८८

87

जांबूशविवेषाचक्रमिस्त्रनोर्लोकान्वयः ॥ २ ॥ चक्रांपरवाएवंशनंसमंततः कटुंवमकलवनलुवाम
हूस्वयुतंचक्रवदेशोनवम्भमंमाणोयतस्थविप्रोमशाकोपिमहूस्वयाःछिद्यनेपदिम्भमंनमिनिग्र
ह्लमार्थ ॥ ७ ॥ २ ॥ स्थानःचक्रश्लनाभिनेभ्योःसंभेदकाशानिमंनरोएांभवानः श्रांगंसंदिप्य ॥ स्त्रपाठक

सोतिहकच ॥ जांबूनदमयोमस्नामवींचिनिकयोनलः ॥ अविवेषावलानपदोवाविवेगाइवाः
लोवं ॥ १ ॥ सचक्रंवारएवंशनमयश्रुणदस्नानिके ॥ दशिम्भंनमनिष्ठानीद्वणायारमयस्मयं ॥ २ ॥
नेलनार्कशमंचोरोछेदनंसोमसहिग्रे ॥ चोरहूपनः स्वशंयनेदेवैःसनिमिनं ॥ तसांनांस
हेश्वर्वणशवन्नेनवेचरः ॥ कांननेरोपयनसोहिपंगंवलानेनहि ॥ ४ ॥ अयश्चक्रस्यचैवाच
हीमानलयमयफनी ॥ लिशक्रद्विकैमसवोर्योसीमास्मोहीमसोचनौ ॥ ५ ॥ सवविषोमहाचो
रोनिरंकुशेनरक्षितो ॥ रवाश्रेमेवासनस्यादृवंभगवानमो ॥ ६ ॥ सवासंरत्नयनौसहा
चानिमिष्ठवणो ॥ नयोरेकोपिष्ठुपयेसनहूंमसमाङ्गवेन ॥ ७ ॥ नयोश्चहूस्थिनेसवणो
सहस्रशरणोन ॥ नाभ्यामसहस्रहूरोसोसवेनःसमंनाश्यन ॥ ८ ॥ नश्रोरोमसाक्रम्यचैनंनेषांनरिव
गः श्राछिननरसामयोसामममयावनन ॥ ९ ॥ समनुयाश्रास्तनवैवनंनेयस्कनोवली ॥ उमयप
ननवैमवयत्रसनस्थावीर्येवान् ॥ १० ॥ श्रीनाचास्तंनैः [illegible] स्तन ॥ श्रानाचस्य
विश्रांनश्रावायोर्क्रिश्रमानननः ॥ ११ ॥ छिन्नाचनदाकयोधैः [illegible] ॥ यस्यलानायण

रेखना ॥ १४ ॥ १२ ॥ श्रंगोदेहेश्राछिननवेडयाःक्रनवान ॥ १ ॥ यवमलक्षश्रास्नेयश्रमननंकंमसमायाश्र
उत्पनेनान्वयः ॥ २ ॥ श्रावार्थवारयिनानिरहस्कोनार्थः ॥ २ ॥ सुमे पेरहनंसंगानःसलोस्पेनश्रमन

८८

[illegible] ॥ ३१ ॥ [illegible] देवा[illegible]

[illegible] विशेषेण [illegible] वान् ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ [illegible] सर्वेन [illegible] वचनात्

[illegible] विनान् [illegible] ॥ ३२ ॥ ३ ॥ नवम्याः नवतिः [illegible] धिका [illegible]

[illegible] ॥ ४ ॥ [illegible]

नि [illegible] चाकाशे [illegible] वान् ॥ [illegible] ॥ २ ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ २१ ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ ३२ ॥ [illegible] देन [illegible]

[illegible] ॥ ३२ ॥ [illegible] च निमे

[illegible] केन च [illegible] ॥ [illegible] नेन च [illegible] ॥ [illegible] हिनता

[illegible] ॥ [illegible] नेन च [illegible] ॥ [illegible] यथा [illegible] तः

[illegible] ॥ [illegible] कालेसं [illegible] ॥ [illegible] सर्वान् [illegible] विनान् ॥

[illegible] ॥ [illegible] सर्वनोवरं ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] नदीः [illegible] ॥ ३२ ॥

[illegible] नदी [illegible] ॥ ततः [illegible]

॥ इत्यादिपर्वणि [illegible] ॥ ३ ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible]

[illegible] सोमसमी [illegible]

[illegible] दित्तवान् [illegible] तवान् [illegible]

भ॰ भा॰
श्रा॰ पं॰
८९

...निमित्तेन यत्र मुमोक्षा श्रोतः पृ
कामं इच्छया ॥ वलं पुरो रामाम मध्ये ॥ ग्रतएः बुद्धिमान मर्थो ज्ञानी हार्थो हि ॥ २ ॥ निमित्ते न युगम् मोक्षार्थोः पृ ॥ ५ ॥ किरीटी दृढः ॥ सर्वे
नत्वम् मलवोधिकुनेनमुनि माव ॥ ३ ॥ ४ ॥ सर्वविद्या नाम्न एकोऽक ज्ञानस्य ... वरं ॥ ५ ॥ किरीटी दृढः ॥
लोकहितः सर्वे मोः स्व नेत्र न मनिज्ञाना ॥ ६ ॥ ७ ॥ नकार्यमिति विसृज्ञाः स्वनेविना पिनवा आनस्य

...सावेति
कामं नैन न प्रार्थं निसंन्नः सवलं सलवं ॥ ग्रतएः मं कोनेनं चापि स्वयमेव शानकं नो ॥ ५ ॥ सापर्वेन वनाम
कृत्वा न मवेधु शोव त्याग्य इच्छया ॥ न पामनेत्व वंघुं कं व कद्ममनि मित्तन ॥ ५ ॥ सर्वान्नापि हिनान्वापि लोका
वीम मग्राण नलाभिमा ॥ वहे पदेषु एवं शाकृत्वा म ग्रावाव लेविनं ॥ ६ ॥ सर्वोनिहवाच ॥ इत्युक्त्व वचनं वीरः किरी
नाप्ट्या गुरून गमान ॥ वहे यमपि श्रुत्वा नो विहाद्दं मेम हद्दलं ॥ ५ ॥ सो निहवाच ॥ एवमेव यथात्मानं सर्वं संभाव्यानेन
तो श्रीमनावः ॥ प्राह शोनक देवेन्द्रः सर्वलोकहितः प्रभुः ॥ ६ ॥ एवमेव यथात्मा सर्वं संभाव्याने न सः प्रदीयता ॥ स्वस्मा
हि ॥ सत्यना मित्रानी मे सात्मसंयन मननम ॥ ७ ॥ नकाङ्क्षे विजयं कृष्ण न च राज्यं सुखानि च ॥ साध्यं नो यतेमपा
लेहिप्रवा पेक्षये मोक्षाय ज्ञानिनां ॥ ८ ॥ किं नो राज्येन गोविन्द किं भोगैर्जीवितेन वा ॥ विहितं यमहं स्वयं ॥ न मात्र यतन
नहाम्यामि मम दानं मामंक संविदत्वं ॥ ९ ॥ ये षामर्थे काङ्क्षितं नो राज्यं भोगाः सुखानि च ॥ यमकद्विव
नहर्षोऽहं श्रावाहि ॥ १० ॥ त इमेऽवस्थिता युद्धे प्राणांस्त्यक्त्वा धनानि च ॥ रूपनाचेत
मनन्तरं हानं तेगातम ॥ ११ ॥ आचार्याः पितरः पुत्रास्तथैव च पितामहाः ॥ मातुलाः श्वशुराः पौत्राः श्यालाः संबन्धिनस्तथा
पयिक्नं ममात्रदृष्ट्यानि मित्तनः ॥ १२ ॥ एतान्न हन्तुमिच्छामि घ्नतोऽपि मधुसूदन ॥

स्तनाना ॥ ८ ॥ किंचित्कारणमात्र दोषविमोह मिति भावः ॥ स्यसाद्दानं यानं ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ उपपिकं नेवल
कृत्वा नदाम्य निमित्तन ॥ निमित्तेन इच्छस्य स्वकृत्यके फलेदास्यं ... निमित्तानि शुभ्र कारणा वामान ॥ ३२ ॥
दृष्टाः समर्थः ॥ स्वर्थितां स्वजनं स्वजनं नदेय ... ॥ ३३ ॥

८९

उपरिष्टान्नेत्यर्थः ॥ २४ ॥ २५ ॥ ख्याहुर्वा नित्य ... [illegible] ... निरूर्थ्यः ॥ २८ ॥ २९ ॥ मा कांदे

न मत्वा ... [illegible] ... ॥ ३१ ॥ उवाच चैनं

[illegible] ॥ ३२ ॥ एवं ... [illegible]

[illegible] ॥ ३४ ॥ [illegible]

[illegible] ॥ ३५ ॥ [illegible]

[illegible] ॥ ३६ ॥ [illegible]

[illegible] ॥ ३७ ॥ [illegible]

[illegible] ॥ ३८ ॥ [illegible]

[illegible] ॥ ३९ ॥ [illegible]

[illegible] ॥ ४० ॥ [illegible]

[illegible] ॥ ४१ ॥ [illegible]

[illegible] ॥ ४२ ॥ [illegible] ॥ ४३ ॥ [illegible]

[illegible] ॥ ४४ ॥ [illegible] ॥ ४५ ॥ [illegible]

[illegible] ॥ ४६ ॥ कलकले ॥ २ ॥ [illegible]

[illegible] ॥ ४७ ॥ [illegible] ॥ ४८ ॥ [illegible] ॥ ४९ ॥ ५० ॥ अध्यायः ॥ सांख्य ॥ २ ॥

सभा
स्थान
५०

परमहन्साम मिलुन्नी चोनी वनं वन्नेन ॥ अथ मन्तं प्रेक्ष वो यानभनगा ला केम सला ॥ वि युव्यावत्त
याश्याय मान: सर्वा विषहन्ता: ॥ तपर्णां तमय: प्रीमाहेर णुपरी स्थित: ॥ २ ॥ अथ पाय: सो पर्णां याक्षो

भजेगाम न: पामाचित: तोयो हीनकी नि निनानामनं स्यन ॥ २४ ॥ समांक पां प: स्फण यानाः
स्नपावेन वा हिनया पाम व्येसमहि ॥ सन्ध्याय नि दिव मि यन्स उपणमास ह्यासन: पनगाय
ने: प्रकीर्तिना न: ॥ २५ ॥ ताद्धिप वं णुपा लीके सो पर्णा समाजे ॥ २ ॥ यो न कन्न वा च ॥ भजेगा मानां ष्मा
पस्मा त्राचे व सनेन च ॥ विनता या हृया प्रोक्त का नां हु नने दन ॥ ६ ॥ वा प्रहानेम नाचक कु विन
नयो तथा ॥ नामनो वैवनेप्रोक्ते पद्वि गोवैनते यथा ॥ ५ ॥ पन्नगानां नना मानि न कीर्तयामि ह
नत ॥ या यान्येनापि नामानि श्रोन मिश्चा महेवयं ॥ ४ ॥ सो नि खा च ॥ वहु नाना मध्ये यानि पन्नगाना
न पोयन ॥ न कीर्तये सर्वेषां या या न्यनन ॥ श्रुणु ॥ ५ ॥ शेषः प्रथमतो जातो वासुकिस्तदन
न्तं ॥ ऐरावतस्तक्षक कर्कोटक धनंजयो ॥ ६ ॥ नीलो स्थिर नागा स्तना स्त्राहरण तथा
नाग तथा पिंजरक एलापत्रो स्थ वामन ॥ ७ ॥ नीला नीलो कृष्णा सगौ कल्माष शबलौ तथा
आर्यक स्तिकस्त्रेव नाग: कलश पोतक: ॥ ८ ॥ सुमना भुवोह्र सतु त्यसंगौ दधिमुख पिंडक: ॥ शमु
कोटक स्त्रेव शंखो वालिशि तथा ॥ ९ ॥ निष्ठानको हेम गुहो नहुष पिंगल तथा ॥ बाह्यक
र्णो हस्तिपद तथा मुद्गरपिंडक ॥ १० ॥

८१

सभा सा ॥ २२ ॥ भुजं ॥ भजेगमानां मातृशापो रूनतया कारणं अव स्या मा नृ शापाकारिवं ॥ विन
ताया: सुतेन शापो रुन: ॥ नष्ट कारणं स्वपन्ने सौ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥

५०

स्नातुः शिवाः॥५५॥ इमे ननाहं छ्रिय द्दमेनमञ्जयेन चैनिकारे वश्रयो विनयः॥२॥

नत्वमानेननयोचोरेनेददर्शपितामहः॥ स्मत्रु मांसैव कृत्वा पुंजटाचीरधरं मुनिं॥ नमस्त्रवी
त्यस्य पुनिनत्वमानेपितामहः॥ किमिदं कुरुवे ब्रह्मन्नाह्यालिदेकुरु॥ न्नेदिन्तीवेतनय
मायानामलायमेनच॥ श्रुद्दिकामवनमेत्पेवलोकेदिव्यव्यषिन॥ ब्रोवाच॥ सेरद्यममम
सर्वेद्दिमाननामेहूचेनसः॥ मह्रनेनोनास्ते वस्तनकानननमस्तंना॥ पुण्यसंयतिमननेपरश्च
समित्रवन॥ ननोहंनपश्यामिहिनेनाम्पयेपुमिपुन॥ नसबुंपंनिमननेमतंविननाचने॥ म
स्याकंवापयोध्यानावेननेयोनाविवस॥ नेवहिंविनिमननमचापिवहवना॥ वयग्रहाना
त्यपिनः कश्यपश्चमहात्मनः॥ सोहं [illegible] साधामीदंकेलेवा॥ कथमेतेन्नमव
पिनते: ख्यातस्हसंयमः॥ नमेहंवाहिनं [illegible] नानामिवेवसर्वं [illegible]
त्योनेविवेषिन॥ मानश्या [illegible] नमस्तं॥ [illegible]
गम॥ स्यानूणानवमर्वेषानशोकंक [illegible]॥ [illegible]
मिहिवंनेयश्रीनिमिपस्मानयि॥ [illegible]॥ भूयोभूयश्चने
वुद्दियंमेमवनस्वहियिना॥ [illegible]पितामह॥ [illegible]
नांवुद्दिःपामिनपवितिवेष्यन॥ [illegible] नच॥ नया
निदंवचःकार्यमन्नि[illegible]॥५५॥

१०

१ ५ ० ६ ॥ अध्याय ॥ ६३ ॥ पितृकार्याणि विप्राः शुभ[illegible] ॥ [illegible] तीर्थे [illegible]

कंबलाश्वतरौ चापि नागाः कालीयकस्तथा ॥ हूहून्सुमंदज्जैकौ नागौ [illegible] विज्ञाविनिष्क्रनौ ॥ ४० ॥
नागाः पंचालिनाशैवतच्छाहू[illegible]कौ नागा ॥ [illegible] नागाः [illegible]कस्तथा ॥ ४१ ॥ कर
वीरः शुभदंष्ट्रो विल्वको विल्वपांडुरः ॥ [illegible]कारः [illegible] शिलाः [illegible] इन्द्रकः ॥ ४२ ॥ शुभरा
जिनो लोहितकः शुभपन्नगः श्रीवहस्तथा ॥ [illegible] बहुधा बाहुदीर्घवान ॥ ४३ ॥ विरजा
शुभवाहश्च पालितो दीर्घवान् ॥ [illegible] त्रिशूकः समालः केशा पापान ॥ ४४ ॥ कर्बुरः
कुंजरश्चैव तत्र नागाः प्रभाकर ॥ कुमुदः [illegible] त्रिशिरो हेलिकस्तथा ॥ ४५ ॥ कर्दम स्रमहाभा
गोनागाश्च बहुमल्लकः ॥ कर्कोटककौ नागौ [illegible] ॥ ४६ ॥ [illegible] प्रमथो [illegible] प्रवरस्य
चकेन [illegible] ॥ [illegible] नागाः कीर्तिता द्विजस
तम ॥ बहूनागान्मयेष्वनाकीर्तिता ॥ ४७ ॥ बहुनीशस्य [illegible] च ॥
शुभ[illegible] ॥ ४ ॥ ३ ॥ स्वदेशे [illegible] लोके ॥ शौनक उवाच ॥ [illegible]
नर्गीत[illegible] ॥ [illegible] किमत्र [illegible] उवाच ॥ [illegible]
मानां [illegible] ॥ ३ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
राज [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ ४ ॥ राम
[illegible] ॥ एकांत [illegible] नियत [illegible] जितेंद्रियः ॥ ५ ॥ राम

[illegible] ॥ १ ॥ २ ॥ ५ ॥ ॥ ॥

स०भा
आर्य
६२

ग्रहणं भावः ॥ संग्रहनयस्य हि नैगमनयेन सह अभेदो यदा तु [illegible] निमित्तो [illegible] तु [illegible] च-
पार्यं निरवशेषं [illegible] सर्वं [illegible] [illegible] त्वा-
च्च [illegible] तेन [illegible] ॥ तेन [illegible] मेव [illegible] वचन [illegible] नि-
नः ॥ [illegible] सर्वे [illegible] विचार [illegible]

[illegible] किं रूपं च ॥ अथ [illegible] विशिष्टं [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ४ ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ ५ ॥
नूनं सर्वं विना [illegible] ॥ [illegible] ॥ ६ ॥
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
एव हि [illegible] विचार [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
णां विना एकस्यापि यदि ॥ ६ ॥

इति ॥ ६ ॥ अभिधानमात्रं [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ ५ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ६ ॥ [illegible] मानः कालो [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
॥ ७ ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ६

९१

६२

नि ॥ स्वप्रकाशानन्दो याप्यात्मा श्रीनितरु ॥ २६ ॥ प्रत्यक्तत्त्वं मत्वा भवानि निशोष ॥ २२ ॥ २१ ॥ मूर्त्तं त
मोमो: फ लामि ॥ २७ ॥ सहर्षं मित्र ॥ २३ ॥ २४ ॥ अध्यायः ॥ मानशिनि ॥ पम्पनेव श्री क्रियाने नमोनमो

इमं मम हृदि योऽन्तर्वनेषु पायन्तं समाप्य ग्राम विहाय तत्त्वं ॥ तं प्रोक्षस्य कृतिं तं यथावन्मे
गृहाणि एव यथा चलासमान ॥ ५ ॥ ऋषिरुवाच ॥ तथा द्वे देवी त्र्य देः प्रतिमानि मे हृदि पानि मे न
पानि नेगमणनि: ॥ न याम हृदि या वभिनाभिनिवसं प्रत्यक्ता सर्वांतिप्रज्ञा यते ॥ ६ ॥ ऋषिरुवा
च ॥ अथोम हृदि गाढं भजन्तं नाम नमः पान वैयानिवां प्रकाशकृति ॥ इमं यथावाश्च यत्नानया
द्विमेम हृतिपियं पोमकृतं भविष्यति ॥ ७ ॥ देव्युवाच ॥ तचेनिकृता विचां प्रदेयपमस: प्रभमे
वोभजनाम वरागजनः स्थितः ॥ विषमिदं देवी विभाम हृदि विभाम हृतमे किंविवित हृतमवेन ॥ ८ ॥
ऋषिरुवाच ॥ श्रीदेवी विनाशोऽन्नमयं मेदेवोमहृदि किमयावयसोयदे कृ ॥ ऋतं नमोमो: पारिताम
देयथा हृमेवं वलभिदयावा ॥ ९ ॥ देव्युवाच ॥ अथोम हृमोचकमेवं नागोनन्तः प्रकाशवान् ॥
यायवन्तस्य यामेकृ: यामस्तनाक्रूस्वतोविभः स्वपतिं तव हृतवे प्रमयाचानमवोन्नमः ॥ प्रादात् न
लायतनदावेनतेयं पिनाम हृ ॥ १० ॥ स्वाहिप वलिमावलोके ॥ सोऽपि रुवाच ॥ मानतः सकाशात्
प्रातंश्रुतावेपचतोनम ॥ वा हृकिं चिन्तयामास पत्यधोयं न भवेत्कथं ॥ ११ ॥ ततः सम्वद्यामा
स्यापरभिः सहसर्वशः ॥ देवा वनमस्तनिभिः सर्वेऽपि प्रयमाणे ॥ १२ ॥

नमः ॥ श्रुतन मज्जनकाले मह
यं पवित्रमनन्तवामकिः स्वीकृत्य मानतः ॥ श्रुतंश्रुता ॥ ततः वोग वले ॥ तथा वीतं तन्मा सय्यस
मतं यामास ॥ २८ ॥

म॰भा॰
अ॰प॰
३३

तमसत्तानां स्वप्रज्ञातो ॥ ३३।३४ ॥ लोकानां नैष्ठिकी कार्यनिष्ठी न गोमेव श्रवः ॥ श्रोत्रं यस्य तथा भवता
मूर्के ॥ ३ ॥ ३५ ॥ नैष्ठिति ॥ नमनता ॥ नसंमंतनामेनिश्चो षः ॥ ३६ ॥ किं नवेति ॥ अन्यायदिग्राहशास्त्रेणव शास्त्रीय

तमसत्तानां दृष्ट्वा स्वर्विज्ञमेवं भविष्यति ॥ ३१ ॥ एतेनाभजन्नात्मस्मिन्पात नष्टोऽस्य संहृष्टवृत्तः तना
न्दधानवे सर्वानेवं चासांभविष्यति ॥ ४ ॥ अथ कामसक्तं तमोऽसंस्पर्शनभजेनामाः ह्रेनमस्तुवी
वेत्तमस्वंमोऽस्वविनाशिना ॥ ३२ ॥ अथ रेनश्रुवं सततश्रवनिलो श्रमनामहे ॥ यत्तविज्ञं करिष्यामो
दीयतां मंदिराण्यति ॥ ३३ ॥ तथणनां चानानो सेनः कारिष्यानिग्रहेष्विनं ॥ अथ रेनश्रुवलत्तननेलमकी
रितेनस्थ ॥ तस्मानीयवश्रीमः कनवेवं भवेत्रमः ॥ अथ रेनश्रुवलत्तननायाः वंडिनमानिनः
इतिनयं ॥ तत्स्मानीयवश्रीमः कनवेवं भविष्यति ॥ स्त्रित्रं सूत्नमनर्थानां स्तेनेनस्मिन्नविष्यति ॥ ३५ ॥
दणामसंप्रश्रयाश्रुकनमेवं भविष्यति ॥ स्त्रितं सूलमनर्थानां स्तेनेनस्मिन्नविष्यति ॥ ३६ ॥
एषानो नैष्ठिकी बुद्धिः सर्वेषामीहिताश्रवः ॥ अथ यस्मात्पादेनन्तु तेनसंविधीयतां ॥ ३७ ॥
इत्युक्तासमर्दे तेन वाहस्थिंपत्रतेनम ॥ वासविस्पापिसंविनानवाचमजेनमान ॥ ३८ ॥
तेषावानैष्ठिकी बुद्धिमतां कर्मभंजनाना ॥ इष्टेषामेवमेबुद्धिः परगानानरोचते ॥ ३९ ॥ किंन
वेषां नेनैष्ठिकी बुद्धिर्मना कर्मभंजनाः ॥ अयः प्रमादनमस्तेकपणन्नाम हृष्टमनः ॥ ४० ॥ तानिर्कं
त्रशंवियातब्रह्मवता श्राद्धिनन यत ॥ अयः प्रमादनमस्तेकपणन्नाम हृष्टमनः ॥ ४१ ॥ अथाहीदवि
एयो हांहिंसामनश्रुभजेनामाः ॥ नवेनानातिमेवुद्धिः स्थितिकर्ने वचोऽहि ॥ ४२ ॥ इत्यादिप वैतिश्र
यातसंभवतांयद्विनंभवेत ॥ अतेनाहं मरानवमुग्धाहेवेनरा श्रुतेः ॥ ४३ ॥ इत्यादिप वैतिश्र
हिके सोऽमिहवाच ॥ यथाराननवचः श्रुतानवेषामितिचेनिव ॥ वाहकेश्वचः श्रुतापुनी
श्रुतोऽस्त्रवीद्दिस्म ॥ ४४ ॥

इति भावः ॥ ३४ ॥ मयेति ॥ यातिरत्ना कार्यतिनिमित्तो नयनायेर्होलाकयमौरीहेस्ताममेनार्थः ॥ ३४ ॥
अधाय ॥ स्वर्याणामिति ॥ इति चेतितेदिनिदर्शनाशीतिकरस्वर्नेति ॥ ३५ ॥

92

३३

[illegible] यथा न भवेद् [illegible] ॥ किं नाम [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] निरुक्त [illegible] ॥२१॥ [illegible]
[illegible] ॥१२॥ [illegible] भविष्यन्ति ॥ २४ ॥ [illegible]
[illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥१॥
[illegible] ॥ [illegible] ॥२॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥३॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥४॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥५॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥६॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥७॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] भविष्यन्ति ॥ ८ ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] नमो नमः ॥

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥

म॰ भा॰
स्त्रा॰ पं॰
२५

९३

२५ ॥ स्वधाम गतिं नीमोत्ता निमोचयिष्यामि ॥ २४५ ॥ [illegible] अध्यायः ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible]

[illegible]

नेति भावि नैवेत्यर्थः ॥ नन यावि यः ॥ [illegible] ॥ [illegible] कानाम् योनमवति गंन
वीर्य संपन्न लान ॥ ॥ देवेनेति ॥ इष्टदेवभावे [illegible] विष्णवा [illegible] ॥ ॥ [illegible] हविति
ग्रामन कं याकं लानानाम् मानार्थे संवोधन हयं ॥ देवानां [illegible] ॥ [illegible] विभिन्नि सवेषः ॥ वचयकाहनो

नमय लोनम विनानवयनानयानि यः ॥ ननको [illegible] ॥ २ ॥ देवेनो
वहूनो यन्नन्नो भवेदिह पूरुषः ॥ सर्वं च मचा [illegible] ॥ नहि देवसमाकं
मंयन्न्नामलमा ॥ देवमेवा [illegible] ॥ [illegible] ॥ देवानां [illegible] हलो हाना नी हाना इति
वचलान ॥ मालकसंयमा [illegible] ॥ देवा कनु ॥ कादिलक्षा [illegible]
पुमो ॥ पितामहमन्यया [illegible] तुः लोनां नाम [illegible] ॥ ॥ न [illegible] नि च वचलस्य [illegible] ॥
देवपितामह ॥ [illegible] ॥ [illegible] च ॥ [illegible] हलो हानो
पितामह ॥ [illegible] नाविना ॥ [illegible] ॥
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] विष्णुनि
[illegible] ॥ [illegible] ॥ २ ॥
महान्नषिः ॥ [illegible]

हानी हानानि हि [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]

म॰भा॰
आ॰प॰
६५

94

ह॥ ८॥ ८॥ ४॥ सर्पसत्रकारणोपक्रमाद् ॥ ततस्तत्काहिना ॥ ततो वासुकेरुक्त्वा समानं तं आयरहिताय
आ [illegible] ॥ ५॥ ५२॥ ५॥ सर्वं हृतम्मि
स्याद्गलेक क्षिप्रिकाले आस्तीकनामा माणवकः बोलदाहोरण्येः [illegible]

प्यो न कः बाच ॥ अर्ह नाम यथा पूर्वं सर्वे तत्र जनवानहे ॥ यथा नन्नानो यामलो कण्ठनदिह्या सिवे
हिन ॥ नतु नाव चनेन तथा हन्तः शोवाच पाण्डिन ॥ सो ति रुवा ॥ हरिप्रपत्नागान् सर्वाना स्रकि
सुसमाहितः ॥ तदा सर्पमथ्यन् दानकोह सर्पिनि ॥ ॥ प्रश्रकालसमहनः सर्पनिः सशिन
स्नः ॥ तथ्य मिस्रोपी सास्य दान जामकोदन ॥ ॥ सह हेना लपनि यसकः सायापवालीन
मयः कृतान्या ॥ तदा सर्वा पृथिवी महात्मान चापि सातन्मनसाया कावन ॥ ततो पराक्रमिस्तया
मे कालेक क्षिप्तिदेव ॥ ॥ परीक्षितो सम जनामी कुर्वन्तोर वर्षयान ॥ यथायां शु मिहा वाहदेन
दूरवतो दृष्टि ॥ ॥ तमथ्य सरायात्री लः कुरा सुधिनामह ॥ सनाः लिष्ठवदा हंसन रक्षमहि या
लया ॥ स मांस्र वि विधान्नं सास्य वायदृति वीयनि ॥ ॥ हरहाचि स्त्रां विधा वाणे नानन्तपर्व
ता ॥ एतेनापन दायसमासाग हनेषने ॥ ॥ यत्रे रमाग वातु हेलि पायतस्मांहि वि ॥ सन्वागह
नथाप्तिः पर्वते पूमिनलन ॥ ॥ नहिनेन समा विलुतोनितला द्वाविवेवने ॥ हतेह दपलन रुगसा
गास्वागानिप्रनि ॥ ॥ परीक्षितो नेत्रे पूर्वविहोपरस वाकरगः ॥ हेत्वा पहल लेन सपागाम
हीयति ॥ ॥ पाराप्रिन मियमानं सासमाद्धतिवने ॥ [illegible] तावन्मानां सतेनिः
हेति ॥ २ ॥

ति ॥ परीक्षित ॥ त [illegible] निप्रति ननस्य समाहसंनेष [illegible] राजा [illegible] नदाय वान
ननएव हि सो मापायाम् वोराजा विपा वसान [illegible] नवालियः ॥ ॥ ३ ॥ यथा त
[illegible]

नीलकण्ठी
६५

नरकाणे नरकाह नि मिनं नदन्येषु गा येन कः ॥ ... ॥ ... नरकाह ए ति ॥ ... ॥ नरकाह ना नि ॥ ... ॥

नकरे ये नाशेः ... ॥ ... ॥

नरकाह ति तिया ... ॥ २ ॥

...

॥ २ ॥

॥ १४ ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ १० ॥
[illegible] ॥ ११ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ १२ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ १३ ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ १४ ॥ [illegible] उवाच [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] उवाच ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] उवाच ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ १५ ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ १६ ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ १७ ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ १८
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ १९ ॥
[illegible] उवाच ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥
[illegible] ॥ २० ॥

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ २१ ॥ [illegible] ॥ [illegible]

स मा
आ पं
१९०

[illegible]

96

१९०

को पचे गवलात्कनः ॥ को धाचे श्राप्रवचदः ॥ २१ ॥ [illegible] नाको कि लि धौ

चधानकि लि धौ ॥ २२ ॥ श्रा पौ लि धः [illegible] ॥ २३ ॥ [illegible] ॥ २४ ॥ [illegible] ॥ २५ ॥ [illegible]

श्रा नि भूः [illegible] ॥ [illegible] कनः ॥ २६ ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] कि लि धौ

[illegible] ॥ [illegible] चो दिनः ॥ २७ ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ २८ ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ २९ ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] कनः ॥ ३० ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ ३१ ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ ३२ ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ ३३ ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ ३४ ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ ३५ ॥

[illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ ३६ ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ ३७ ॥ [illegible]

97

म॰भा॰
आ॰पं॰
४६

यशांसि ॥१२॥ दृष्ट्वा दर्शनं कर्म ॥१३॥१४॥ नागेन्द्र ॥१५॥ नैन हि नि दे व सनातन तपिसर्व पाक्षि मनि व सौ

न[illegible]उवाच ॥ यदि ते ऽहं सपी देह तं पाकः किं विचिकित्सितं ॥ ननो वरं सपात्रं ह मि सं जीवय
क पुत्रं ॥ पांसि ब्रवतं ले यशे न तु ष्टो पयन वचः ॥ सत्यो पुनर्भवे नैव सुमानि पदपन लो हि जो तम ॥
कश्यप उवाच ॥ दृष्टा नागेन्द्र त्वं दंष्ट्रये न दष्ट मि मं पश्य ॥ अहमेनं तथा दृष्ट्वा जीवयिष्यामि पन्नगम ॥
सौतिरुवाच ॥ एवमुक्तः स नागेन्द्रः काश्यपेन महात्मना ॥ अदशत् वृक्षमभ्येत्य न्यग्रोधं पन्नगोत्तम
मः ॥ स तु वृक्षस्तदा दंष्ट्र ऌनः पन्नगेन महात्मना ॥ आशीविष विषोपेतः प्रजज्वाल समन्ततः ॥
तं दग्ध्वा स नगं नागः काश्यपं पुनरब्रवीत् ॥ कुरु यत्नं द्विजश्रेष्ठ जीवयैनं वनस्पतिं ॥ सौतिरु
वाच ॥ भस्मीभूतं ततो वृक्षं पन्नगेन्द्रस्य तेन वै ॥ भस्म सर्वं समाहृत्य काश्यपो वाक्यमब्रवीत्
विद्या बलं पन्नगेन्द्र पश्य मेऽद्य वनस्पतौ ॥ अहं संजीवयाम्येनं पश्यतस्ते भुजंगम ॥ ततः स
भगवान्विद्वान्काश्यपो द्विजसत्तमः ॥ भस्मराशीकृतं वृक्षं विद्यया समजीवयत् ॥ अंकुरं
कृतवांस्तत्र ततः पर्णद्वयान्वितं ॥ पलाशिनं शाखिनं च तथा विटपिनं पुनः ॥ तं दृष्ट्वा जी
वितं वृक्षं काश्यपेन महात्मना ॥ उवाच तक्षको ब्रह्मन्नैतदत्यद्भुतं त्वयि ॥ द्विजेन्द्र यद्विषं हन्या
ममवा मद्विधस्य वा ॥ कं त्वमर्थमभिप्रेप्सुर्यासि तत्र तपोधन ॥ यत्तेऽभिलषितं प्राप्तुं फलं तस्मा
त्तु पोत नसात ॥ अहमेव प्रदास्यामि तत्ते यद्यपि दुर्लभं ॥ २२ ॥

भूतेषु तत्र नृपमुद्धतं ततृष्णं न दिनि पादे यथा कालो ॥१०॥२१॥ [illegible] मन्त्रबलः ॥ २२ ॥

98

२१

स॰ भा
स्या॰ पं
१००

२४॥ स्यापः॥ अपः॥ २२॥ नेयां कायां पिकालिंगधिकस्तनानि॥ २८२॥ स्थाइत्तं महित्तं॥ २३॥ विधि
नाद्दैवेनन्नमेवनदेव॥ १०॥ हवकः॥ कन्निनो हवः॥ २२१॥ पदिइत्तं पदिहतः॥ ब्राह्मणावमानन्न

मोति हवाच॥ नेनन्नकसमाहिपालस्यावकर्मनेगमाः॥ ३ पनिस्वस्थायाते द्भोनायः
फलानिच॥ २०॥ नव सर्वे स्पतेहः पनिनग्राहवीठवान्॥ कनानेयांवकायापिगस्पना
मिस्रवाचनान्॥ २१॥ नानेषु नेषु नागेषु नापसहस्रमहप्रिष॥ अमामानाहद्दस्वेवप्रोवाचस
नपधिपः॥ २२॥ महवयनमवंनोवे हाहनीमानिसर्वशः॥ नापसेहूपनीनानिफलानिसहि
नामया॥ २३॥ ननोपनामसविवः फलानामिमहराः॥ २४॥ हवकः कनन्नपनन्नान्
वर्णोयथोनकः॥ सनं गरानपग्रेहः पचिवानिदमहवीन॥ अत्र समयोनि पचिवाविधा
देवनमेमयं॥ मनवानाहवसमनिः कमिमांद्शानामयं॥ २५॥ नवकोनामसभूनावेनथाप
रिहतंमवेन॥ नेवैनमनवनेनमेविताः कालचोहिता॥ २६॥ एवमकामहाते द्रोप्रीवाचांहं
निवपुपहं॥ किमिकंप्राहमनमिमसर्वेनेहवेनन॥ २७॥ अहस्रनेवभोगेनन्नहकेनं
नवेहत॥ नस्मानालाहिनिषकस्यपनद्दानेनिवेहिनं॥ २८॥ वेष्टपिनाचवेगेनविनयचम
हाहवन॥ अदप्राहविवीपालनन्नवकः पवनेगस्यः॥ २९॥ इत्यादिपर्वणि मार्गीके॥ स्कि
उवाच॥ नेनथामंविणोदष्टा भोगेनपरिवेष्टितं॥ विप्रहरेवहनाः सर्वेहहदर्दपानेः वि
नाः॥ ५॥

॥सानुमेवन विपिनाहिनकुले नेनपिवासुगनेवनु पस्मिनेवक
नेवगमनदेवामहपलयं॥ पनवनकस्राद्वान्न॥ ८
॥३॥६॥

२०१

दोषप्रथमवेन॥ २४॥ प्रथमाध्यायः॥ नेनद्वेपि॥ २८॥ राम

वद्धमाणसामिणा वद्धमाणसामि ॥२४॥ निरंपुः राक्षसेनारवसभः ॥२५॥ [illegible] नेके [illegible] धनेनसपा[illegible]
सुग्रिभेवर्धिमयनीरपीतासिनिलिंमानरपिति[illegible]नलाम ॥ [illegible]नेदिटं[illegible]नेयं ॥ [illegible]वेलिर

विग्रयणपाभिमनेवद्वीलोणुधिनकापिवे ॥ वद्धमाणसामिनेनिप्रतिष्ठिः [illegible]यिनाभवेन ॥२६॥
नेनायणः प्रदीप्रनेनिषुलोकेषुविश्रुनेः ॥ निरंपुःनिरव[illegible]नहीनानि[illegible]तेन ॥२७॥ [illegible]
पाराचा ॥ पनार्थीयाम[illegible]नतनन्मंदीह[illegible]न ॥ नवेद्विनि[illegible]पनेयंपरपवे ॥२८॥
नलकारवाचा ॥ पावद्रंनेप्रा[illegible]पसेन[illegible]लोगिकं ॥ पद्मेवप्रदासा[illegible]मिनिवजेसदिजो
नम ॥२९॥ मोतिरवाचा ॥ नदाकरूपवचः [illegible]नाकः[illegible]हिनसनम ॥ [illegible]महानेजा[illegible]
नेप्रनिवृद्धिमान ॥३०॥ दिव्य[illegible]नःस्वनेनसौवा[illegible]नेरपानिनस ॥ ह्रीलोणुधपंतःउवेयमपावंन
नकपपय ॥३१॥ [illegible]लिनमनिवाललदकर[illegible]वदीपिनि ॥ निहोनेकः[illegible]मयेन
महामनि ॥३२॥ नूपामनलदकलयानेनानानामादूते ॥ [illegible]नदकोनगनो
पनि ॥३३॥ [illegible]नदेवाच ॥ [illegible]चिनयामासनदामाया
रोनपापिंव ॥ मयावंवपिनऔमोकउपावोभवेदिनि ॥ ननसाप[illegible]ग्रा[illegible]नेसम
[illegible]नपमान ॥ फललद[illegible]रवरागनोनामोशननदक ॥३४॥ [illegible]रवाच ॥ [illegible]यमपरयाणन
नेकार्थवनपा ॥ फललदभोरकेरवरागतोनाम[illegible]नदक ॥ [illegible]नदवाच ॥ [illegible]यमप
[illegible]नानेकार्थवनपा ॥ फलपुणारकेनानप्रनियाहविनेनप ॥३५॥ [illegible]निश्रनेप ॥ [illegible]
विनेसापनेपक्षिपमरः ॥३६॥ [illegible]पानेचके ॥ रानानंप्रनि[illegible]रिपेपर्थेः ॥३७॥
३८॥ [illegible]मयेनकाहेनसंकेनविपेतेपा ॥ [illegible]तिवा ॥३९॥ [illegible]नेदवो[illegible]

स॰भा॰
ग्रा॰य
२९

२००

२८।।४।। ध्वजाग्रं ज्वरहां दीनहृत्पाः कहणपीडितनाशन ।।२८।। पतितारः पतितपावन ।।८।। कष्टहर्तृत
रंग्यथा स्रापदं स्रापसान सामान ।।२८।।२८।। ननःविपोहितं ।। यमदीर्घं ।। कष्टं स्रपनेनं ।।२८।। प्रवद

चान्दी हंसमहानेनाउग्राग मकु नामभि: ।। नोद्धं ब्रा हवनं कनाउपे गु विचचारस ।।५।। वाग
मनो नियाहाः भूषमन्न हृद्हर्मनि: ।। हृदर्थं पिरन्न गर्तं लंवमा नाननयो मलो ।।५।। यकनंन
वपि हृदे वीरणा लवमाभ्रिनान ।। नंननंच याने णा भुमारदानं विसेषांप ।।४।। नंनरा हं रानकृणा
नीनाज्ञानेस्वाग मिहून: ।। उपहृत्य सनान्नी नान्दीन हृपो यमाघन ।।२।। केमवं नोचलं वंते वीर
णालंवमाभ्रिना: ।। हर्वलंवानि नमले राजेन्न विलवामिना ।।५।। चीरणालस्व के मरुलपरयेक मि
हस्थितं ।। नरय्यपंथ यानेराव्रुरारनेदयानैः श्रितैः ।।५।। हेस्यनेल्पाहृपि मना देनदयचिराहिव
ननहृपनिनारोत्रगर्तेमक्रम योमग्रा ।।५।। नयणमेरः वृमल्पनं हृष्टाय्यमानयोमरान ।। कृ
भूमापरमापरायिपं क्विं कुरवा निवः ।।२।। नपमोस्यचकन्नं नरनीयेनाप्यवाप्नः ।। स्नुहंनवा
विनिलनं मापदहनमा चिरं ।।२।। स्नुहृत्वा पिलमयेणा नवंननपसामुमा ।। भवंन: रुवंपवहं ।। क
ममवं विधीयतां ।।२।। पिनरकुच: ।। नुहेभवनान्नुसवानीयान्नुसानमिहं वोशे ।। नलविप्राग्रनप
माथा वानेनयपोहितं ।।५।। ग्रशिनं सानननयसः क्लल्प्रवहनासंव ।। [illegible] हसा वहसप नामनि
२ पेश्चवैा ।। सनाननहि पणय मप वमाहुपिना मह: ।। लवनमं [illegible] नियानिवे ।।२६।।
ये ननां नाभिजानी मोलो के विराजेन योकुल ।। हृदे मव [illegible] नदभे भानहुः श्विनाभ
प्राचननैव व काहृपण दृश्येवे वयंहितं ।। पणावयानामहे हृरहपः पुंभिनग्रनाः ।।२९।।
[illegible] हिनकल्पसा समर्थं ।।
नापवलक्षणं मयाप्य कानां ।।२९।। साल [illegible]

२१

म.भा
आ.टी
२-२

अपरिज्ञानात् दर्शनाच्चेति किं प्रजया करिष्यामो येषां नोऽयमात्मायं लोक इति श्रुतेः किं मर्त्या वयम येः
अपरिज्ञानात् दर्शनाच्चेति किं प्रजनयाकरिष्यामो येषां नो ऽयमात्मायं लोक इति श्रुतेः ... निष्कामत्वं ... चेतिमा
प्यामहे किं मर्त्या वयं यत्प्राप्स्यामहे ... तस्मात् ... यथा ... कलेन
वः ॥ २ ॥ तं यथा वा नाम ... श्लोकः ... ॥

न योर्वा ... ॥ ... ॥ ... ॥
... ॥ ... ॥ ... ॥
... ॥ ... ॥ ... ॥
... ॥ ... ॥ ... ॥
... ॥ ... ॥ ... ॥
... ॥ ... ॥ ... ॥
... ॥ ... किं ... ॥
... ॥ ... ॥ ... ॥
... ॥ ... ॥ ... ॥
... ॥ ... ॥ ... ॥
... ॥ ... ॥ ... ॥
... ॥ ... ॥ ... ॥

... ॥ ... ॥ ... ॥ २२
... ॥ २२ ॥ ... ॥
मायामात्रमिदं ... ॥ ... ॥ ... ॥ २ ॥

१८॥ नियमान्मानितनचिन्हः मदृस्मामदृत्तमलिः [illegible] नाथवनमपारता

लोकालुप्तलक्षारिदृश्यः संनान्नमदृपाम्ने॥ [illegible] नालेनवलिवे॥ ॥ प्रलि
नेवे यनलेनः सोविनालिप्रधानथा॥ [illegible] लिन॥ ॥ नायकार
विनिप्रोनानेवद्वेदंगणयायगा॥ निप्रनामाम [illegible] नः समदृलगणा॥ ॥ नेनुस्मनपक्षेलोभा
लकप्रमायारिनानवं॥ ननस्वभायापीश्चेवानायप्रेवलिकप्रने॥ ॥ नस्माले नामदेगानेनदृसेना
प्रनाथवनन॥ सवनकवानयारत्नुप्रस्वाकनाथवनन्या॥ ॥ [illegible] चनेननेदीनाप्रयाम॥
ला॥ साप्रहणानुकरुवेनिप्रनामम्यारवेलिच॥ ॥ क सेनेनहिनः [illegible] मेवेकलपोयन
यलप्रशणविनोग्रेसनोरणं [illegible] लिनान॥ ॥ [illegible] नः॥
[illegible] ॥ [illegible] विनाः॥ यने
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ २४॥

[illegible] ॥ २२॥ २३॥ २४॥ [illegible] ॥ २५॥ २६॥ २७॥

म भा
भ्रा ती
२-४

…मनामेति मो दे स्थिन… [illegible] …॥२।२४॥

अ. मनामेति वै मनामभगो वाः विभाषिते॥ [illegible] …॥२॥

१९४

[illegible]

202

[illegible] ॥१०॥

१३८१

[illegible] …॥२२॥ [illegible]

१२

[illegible]

सं॰मा॰
टी॰
१८

प्राउ ह्णु.नः अग्निहोत्रो वह्नि ह्रिन्य प्राउह्णुनाग्निहोत्रः ॥ अग्निहोत्रोग्निर्हविषोरिति मेदिनी ॥ इ

तं यथा मनसा ध्यायन्तः स्वर्गं यान्ति ॥ प्राउः ह्णुनाग्निहोत्रो यं महज्जीर्य साहनम् ॥ २३ ॥ भार्या

सं यथा अवनीते वेदं पाश्चिमयाहिरिति ॥ एवमस्य भगवानुरकाः हतनयः ॥ २४ ॥ सं येनव

प्रस्तुरमालो स्तुरहं वचन मनवीन ॥ अवमानं प्रभुः तं यन यामस्य मनंगमे ॥ २५ ॥ सं येन त्वाक

स्यामिनामिष्यामिष्यमाणं ॥ पद्म कि रत्निनवामाह मपि हृषि मावसो ॥ २६ ॥ सुहृत्तम यथाक

लमिलिमेह दिवर्तने ॥ नवाप्यवमनस्य हवामो तोचेन कस्यवित ॥ २७ ॥ किं तन्देहं संधी लम्यमम

वामहि द्विपस्यवा ॥ एवमनन्तानरकाह मंत्र हृदयं कंपते ॥ २८ ॥ प्रवदी सुगिली नवदा हके सम्बिदे

प्राने ॥ लावमानान्कनवली नवाहं विप्रवोयते ॥ २९ ॥ यमेलोपेन नेविप्रस्यादि येन स्याकं न

उवाचभार्यामियुक्तो नरकाह मिह्नयां ॥ अपिकोपमसाविप्रस्य स्वकमो अंगमा ॥ नमे

वागान्नेयाह गामिष्ये हं मनंगामे ॥ ३० ॥ समयोहि पमेवर्तनधाम सहमिय कम ॥ सबेस्तुविते

मुद्रे स्वयान्तं स्थानं स्पृमे ॥ ३१ ॥ इतो म पिता नेभी स्थानः समन्वानिति ॥ नंचापिमपिनि सर्वेन

पोकं कनेमहि सि ॥ ३२ ॥ नकामा नवधां गौ दृष्ट्वा वानमन्निनहा ॥ नरका हे नरकाह श्चिनाशो ॥

कपायपण ॥ ३३ ॥ वाष्यान्हद्याबावाम्बलेनपरि पुप्पना ॥ कनांनलिंवरापे हृदय गच्छनय

नानन ॥ ३४ ॥ ये धर्मालंमवामोह हृदयेनयवे पनी ॥ नत्काहं मिय मेद परि स्वकमनानासं ॥ ३५

योधर्मसाधनं नानाहं मोक्षं नादि प्रवानान् ॥ २० ॥ २४ ॥ विभावसोः रुहीम ॥ २९ ॥ २८ ॥ २७ ॥ ३० ॥ मियः

अन्योन्यः ॥ ३२ ॥ चिंता भ्रान्त कार्यं विषये पाणी पोतो धर्मे विरोधिनः ॥ ३४ ॥

२०३

१४

ऽः खेचरी संज्ञः खः प्रदक्षमार्थे ॥ बोल न कारको येः [illegible] चव लनयन कक पुने नाभिः मे बोल न कारको या नेः ॥
निमलागकृकलमयच किं न नै भिन त्वेः उपाचरा ॥ मना [illegible] ॥ दन [illegible] ग मनोरिति शिदी नो
कर्यश दूषिवाचापिपनगाहस्यदहि स्रों वन नेपो [illegible] रि पदवन ॥ बोल ग मन [illegible] उरं यो निया क

नष्टे बगलवभंतो वेऽः खेचरी लम्पादर [illegible] ॥ ऽ यायेः बोल न कारको येः शिरकरमारुणुहि नी ॥ २४ ॥
ऋनन्कासेननः लान्नाकदांवि दम्से के सम ॥ [illegible] बेदगमनगाम्यनस्वैम ह्यमेवं ॥ २५ ॥ नन
न यशः सममध बडूर्मीन लननम विश्वम ॥ ग्रनौ ले [illegible] गूनके ये मान नाकुलम्पहि ॥ २६ ॥ ष्णकुपदेश
णा सो मो न तर्हे नन न बोध सः ॥ ननः कलि यथा [illegible] लनकरूकं श्रेय्या ॥ वंगे बसाः शिराः कुना
लवाय पारि लिन ब न ॥ नभिश्रम से निश्रे दूहवितानव लिया लिशि ॥ जकः पदिवे येह संलनः सा
ऽलिनपन्न रा ॥ वासके मेसिनो भीना यमे सो या न वनलि नी ॥ लि न्नु मे स कुल मे भवाद लेह स्थाय
नं नु वा ॥ ऽः खेचरी लोहितय मांसमाकुवेनामाणाय सुधा ॥ के पा वा य में वी न स्पय मे सोपेश्च
वाश्नः ॥ [illegible] ॥ २ ॥ [illegible]
लि ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥
[illegible] ॥ २८ ॥

[illegible] ॥ ३२ ॥ [illegible]
के ॥ २९ ॥ ऽः खेचरी लो [illegible]
१ ॥ [illegible] ॥ ३२ ॥

१०॥ नत्वकारहलनो वाक्यालिङ्गक [illegible] भावलिकाकं वचनीयमवीगान इति चेदः उच्यते [illegible]
भावनगएव वचनार्थमेव [illegible] वंवक्तारो भवंति [illegible] संदेशं वदंति ॥ यथो [illegible] एवैवनंदं वचनमक

उक्तं तं विदितना च भर्नो [illegible] लिनपद्विन ॥ तेन मन्ना गमिष्यामि कदाचिदिष्टायेतस्मा ॥१०॥
[illegible] भेदे भर्ने [illegible] मेवविवेश्विनं ॥ उदाहरणं [illegible] वीरंहदिविरुश्विनं ॥ नत्वकारहल
नो वाक्यालिङ्गक [illegible] भावन ॥ [illegible] नलं गमह किंपन्नागच्छ ॥ नर्त्कारह [illegible] ॥ इ
[illegible] नः [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
नतेनाह [illegible] मिविनश्ववचः ॥ [illegible] ॥ [illegible] तया कार्यः
कार्यं [illegible] ॥ [illegible] समसम ॥ [illegible] नगीता
भर्तानवोपनः ॥ [illegible] नवेदमनसि विश्विनं ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] नेनच्युतः
[illegible] ॥ [illegible] महानेनाम
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ वेदा
[illegible] ॥ १० ॥

[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]

म॰ भा॰
श्रा॰ प॰
९९

205

वान्नं वर्णं च न सो व्यर्तान् ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ स्त्वयि ह्विनाः सद्धार्धा हिनाः व भा र धो घिन वान ॥ ५० ॥ ५१ ॥ पुण
रह न स्पष्ट कुपा चा र्थस्य ॥ ५२ ॥ सो न र पा मि नि पा र द्दूर त्वा त्कैः संयि रजी न न न जा नः ॥ ५३ ॥ राज्य
मो ग्रं थः न स्या र्थैः फ लं न ड क्रा न्त या न्ने प्ता न्नु भा वं ना यां प्रत्य न्नै रे व भा व मा न न्न च क पा वः द त्वः

वान्नं वर्णं त्व य मे ष्टे म त्क्र न्ना प ध्ये र वन ॥ य मै नो य भि वि द्दु ज्ञा य मौ वि ग्र ह वा नि व ॥ ५४ ॥ व
च ष्ट थि वी र्द वी श्री मा न न ल वि क्र मः ॥ २ ॥ है श्ला र ह ल ष्य वै ना स न्म च है ह्नि न कें च न ॥ ५५ ॥ सम
र्त वै घ भ न्ने घ्र प्र जा प नि धी वा म व न ॥ प्रा द त्य ग्नः त नि या वै घ पः स्पृ ष्टा श्वे व स्व क्र मे ह ॥ ५६ ॥
ह्नि ना स्मम न घो प तं स्ने न र त्ना स्व यि ह्नि ना ॥ वि प वा न ष्टा वि क ला न्क्र प त्वां श्च व भा र स ॥ ५७
ह्न र्थैः स र्व भू ता ना मा स्रो न्सो म इ वा प र ॥ न ष्ट घ्र ह ज नः श्री मा न्स न्प वा न्ह द वि क्र मः ॥ ५८ ॥
पा न वै र न शि ष्यो भू न्न प ः प ण र ह न स्य ह ॥ गो वि र स्य प्रि य श्चा सी त्पि ना ले ज न म्मे ज य
लो क स्य चै व स र्व स्य प्रि य स्व सी न्म हा य शाः ॥ प रि क्षि तो च क्र सु तो न र पा म ज्जो ज न न ॥ ५९
प री हि र म व ने न सो म द्र त्या न्म नो व ली ॥ रा ज य र्मा र्थ क श ला ग्रु क्तः स र्व ल क्ष णैः ॥ ६० ॥
नि ने न्द्रि य श्च त्म वा श्च मे घा वी य र्म से वि ता ॥ ष द्व र्ग जि न्म हा बु द्धि र्नी ति शा स्व वि द त्त मः
प्र जा इ मा स्त व पि ना घ ष्टि व र्षा ण्य पा ल य त् ॥ न तो रि ष्टां न क ष प न्नः स र्वे षां दुः ख मा व ह न् ॥ ६१
न न स्व घ्र ह व श्रे ष्ट य र्मे ण प्र नि प द्वि वान ॥ इ दं व ष स ह स्रा णि प्र क त्त र्क ला न न ॥ ६२ ॥ ना
ल य वा मि धि क्र ह्ल स र्व भू ता न पा ल कः ॥ ६३ ॥
॥ ६४ ॥ प्रा न्म वा न्नु [illegible] र्थे [illegible] श्च या र ल
स म र्थैः ष ड्व र्गैः का मा दि भिः न ष्ट ज्ञे ना ष ड्व र्गा जि ना नि षा स्थे का [illegible] ॥ ६५ ॥ ष
ष्टि व र्षा णि ज न्म नः ष ष्टि व र्ष प र्यं त न न्न [illegible] र्षे व व्र ण ण

[illegible] ॥ १ ॥ [illegible]

[illegible] ॥ २ ॥ [illegible]

[illegible] ॥ ३ ॥ [illegible] ॥ ४ ॥ [illegible] ॥ ५ ॥ [illegible] ॥ ६ ॥ [illegible] ॥ ७ ॥ [illegible] ॥ ८ ॥ [illegible] ॥ ९ ॥ [illegible] ॥ १० ॥ [illegible] ॥ ११ ॥ [illegible] ॥ १२ ॥ [illegible] ॥ १३ ॥

[illegible] ॥ १४ ॥ [illegible] ॥ १५ ॥ [illegible]

पिनाममहानंपांडुवानां ॥ ४ ॥ मावदत्धंमावेराकनिणवानव [illegible] ॥ [illegible] ॥ महलेतुः
मेमे ॥ ५ ॥ निसिपाः खदेननागुथकल्याणचंदननोनिपुणीसि [illegible] कलापः न

न न मे न ग इ वा च ॥ नासिन्कलेनानचमवानायोनप्रनानांसि [illegible] निघपु ॥ विरोप
नः प्रेस्पपिनाममहानंनननमहहूनणगणमनं ॥ [illegible] निघ [illegible] पिनाममन्या
विधः ॥ मावदधृपयावनेप्रान्तसिद्धामिनननि ॥ ॥ सो वि दवा च ॥ एवसंचोदिनाणनामे
त्रिणानेनयधिपिं ॥ दपुः संवेपमानननगनःपिपदिनेविपाः ॥ ॥ मे [illegible] चः ॥ सगाना पवि
वीपाल संवेपसमवनामदः ॥ वमवमगयापीनलनवरानपिनामहः ॥ ॥ पया पांडुमेहवा
दुर्योनधीरववेशुधि ॥ श्रममानासमसंचालिपानकायोपपोचलः ॥ ॥ नकदाचिदनगनो
स्तंनिवायधपानि ॥ विदुवानमवनूनिनवनंगाहनेवने ॥ ॥ एवलिनेयनिसिंगाल
वागुयकल्याणवानू ॥ नवाममामरगइनेममानसूपिनानच ॥ ॥ पोरिधानेल्वयमसाग हि
वर्णनगन्निनः ॥ नाधिनः ममहयालेददपंमनिमहनमे ॥ ॥ मनपग्रवृतनेहमनिमोनव
नेधिनं ॥ नवकिं विदुवाचेनगृहोपिममनिलन्स ॥ ॥ ननोगननकृष्ठमानेसंमनिस्याना
वसिंहनं ॥ मोनहननयरंगानेमघोमन्नवयाधान ॥ ॥ नवयोधवनेगनामोनहननपरोम नि
सनेजःयसमाविरोपधींगमापहनेपिना ॥ ॥ मननमघोंयनः कोनामममहिपाधानलान
नस्मपुत्रमनः प्रायहनहसेभानसगनमा ॥ ॥ नचोवाचममेधायोनमधोसाधमाधवा ॥ न
स्नानमयेवचाकृदः संपिदकपेनपायनन ॥ ॥ सध्यायः ॥ ॥
१५७२

णः नहानकलापः संहनोवदेकांचीमृगपानणयोविनिमेदिनो ॥ ॥ रथपोरहः ॥ ॥ इत्यादि

हिपदांतुहवाणां निहृत्ते निहृतनः ॥२०॥ एनं काष्ठिवस्था नंकस्य चपणामं वं श्रुतना ॥२१॥ सेहृतविपः स
स्पवहूहूतं तहूतंतहं विषयस्थ सत्न थाशंहृ निपातेस्य हेतोः ॥२६॥ तस्य दास्या मियानतनां यस्यप्रयाणं

सपवमते नागेन काश्यपो हिपद्मं वरः ॥ लवावितं निवृहतेन नवकाघावदी स्थितं ॥२७॥
नक्षिन्ग्निगने विप्रेक्षु मनाथे स्तनदवकः ॥ नरपंरपनि श्रेष्ठतिनं याभिकेनव ॥२८॥ घासा
दस्यांय नमपितरपवानिसवद्विना ॥ ननसंगुहमखाक्षविनपापामिप्रेविनः ॥२९॥ एनदेष
श्रुतं चापियथावलरपसनम ॥ श्रम्ममिनिविलंमवंकस्थितंनेनिदाहृतं ॥३०॥ श्रुत्वाचेतन
रथेहृ पाञ्चिवस्थपपामवं ॥ अस्यचर्षहृतंकस्यविपन्नपहृतनतं ॥३१॥ सो ति हवाच ॥ एनस्मि
न्नेवकालेनहृपानानननमेजयः ॥ ब्रह्माचमंत्रिणः सर्वानिदंवचनमब्रवीत् ॥३२॥ ननमेजयउवाच
श्रुत्वाननकथितंकेनयहूतंनहूनस्यनो ॥ श्राघुर्धमंतलोकस्यमस्मराणीकृतेनन ॥३३॥ यहूद
नीवयामास्यकाण्यपालेदकेनवै ॥ नूनंमंत्रैर्हतविषोनप्रणश्येनकाश्यपात ॥३४॥ चिंतयां
मासपापात्मामनसापन्नगाधमः ॥ दष्टंयदिमयाविप्रः पार्थिवंजीवयिष्यति ॥३५॥ तक्षकः स
हतविषोलोके यास्यतिहास्यतां ॥ विचिंत्यैवंकृतानेनध्रुवंतष्टिहिजस्यवै ॥३६॥ भविष्यति
ध्रुवापेन तस्यदास्यामियानतं ॥ एवं नश्रानमिच्छामितत् ह्यंतंनिर्जनेवने ॥३७॥ संवादंपन्न
गेन्द्रस्यकाश्यपस्यचक्लश्चवा ॥ श्रुतवानत्रदृष्टवांश्चापिभवतां कथमागतं ॥ श्रुत्वानस्यविधा
स्येहंपन्नगान्तकरं मतिं ॥ मंत्रिण ऊचुः ॥ शृणुराजन्यथास्माकं येनैतत्कथितं पुरा ॥ समागमं
नहिजेन्द्रस्य पन्नगेन्द्रस्य चाध्वनि ॥३९॥
हूतनापन्नगप्रयाने श्रन्मादस्माकेवियार्थनातनकास्मपूर्वा…तंनिचिन्वं ॥४०॥ ॥३८॥ समागते

स॰ भा॰
आ॰ पं॰
१८

107

१८

॥१४॥ दृष्टिपातनियमानि ॥ १५॥१६॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥१७॥
॥१८॥

सचाक्षिमनिषण्णं [illegible] ॥ [illegible] ॥१९॥
[illegible] ॥२०॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥२१॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥२२॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥२३॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥२४॥ [illegible] ॥
[illegible] ॥ [illegible] ॥२५॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥२६॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥२७॥
[illegible] ॥ [illegible] ॥२८॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥२९॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥३०॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥३१॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥३२॥

यदार्हितार्थ र्थे हितन्नो रेनकं नीन एवनमाहरा मिति कर्मनेरुपस्यादस्यार्थमेनेषान पत्तादायेति
मंत्रवर्णं श्रुयतान्यायः प्रदानेषिमामर्थामलिवद्रूपनदानेननिवर्नेपनमलक्कस्यैचापि
रायोपमिताह ॥ मदानिति ॥ इदं हितिहे नो प्रानप्रन्ययः इवंदत्तापिनेनैवन्नयोवलान्मारि

महानतिक्रमोपेपनतत्वकयुक्तपातनः ॥ हिनस्यायोदर्दइवंमानवपंजोवयेहिति ॥ ५५ ॥ उ
नेकस्यापिएकनेमानमनस्यामहन्निपं ॥ भवतावेवमवैशंगाहस्थपचितिपिनः ॥ ५३ ॥
इमादिप वेणिप्रारी के ॥ सोतिहवाच ॥ एवमसकाननः श्रीमानोविमिश्रानमहिनः ॥ प्रा
कयोहमनितांमर्वमत्रायपापिव ॥ ५४ ॥ ब्रह्मन्मानेषांईलोनान्मपाविहिनलदा ॥ पुरोहि
तमस्याहूयस्वनिजोवसपापिपः ॥ ५५ ॥ प्रवरीकृतांमंपन्नः सर्वमपककांवचः ॥ योमहि
मिनवाह्लानतत्वकः मधुपान्मवान ॥ ५६ ॥ प्रतिक्वर्धानयानस्यनइवंलोष्ठवनमे ॥ प्रापितक
मेविहितेमवनापेनपन्नेण ॥ ५७ ॥ नत्वकंमप्रदीप्तेनैप्रहिपेपंमवंपथं ॥ यथानेनपितामा
पपूर्वंमपोविषाग्निना ॥ ५८ ॥ नत्वाहमपिनंपायंप्रमुमिक्षामिपत्नेण ॥ प्रपव्रकुवः ॥ प्रहि
पनमहन्नयन इथेदेवनिर्मितं ॥ सर्वमत्रमिनिप्रातेपुणातापरिपठाने ॥ ५९ ॥ प्राहतानस्य
मत्रस्यनवानोहितनपापिप ॥ ६० ॥ इतियोगाविकाप्राहु इत्याकंचाहिमकृत ॥ ६१ ॥ सौतिरुवाच
एवमकः मतानर्विःमैनेदप्पंहितवर्कं ॥ इतापानमविदीनप्रविशुमिलितमनः ॥ ६२ ॥ न
तोत्रवीतं नवविदप्तोत्रानाब्राह्मणाप्रान्नह ॥ प्राहरित्याप्रिनत्सर्वेहमाराः सप्रियंनमे ॥ ६३ ॥

नइवन्थः ॥ ६४ ॥ प्रपविनिवेरनिर्घाननो ॥ ६५ ॥ प्र यः ॥ एवमनकैः ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ मतंममन
नान्यः ॥ ५ ॥ नमेवनान्यः यन्नानतनजोनामोहि ॥ ६ ॥ प्राहरित्याकरिष्याममप्रियंनमेप्रि

स॰ भा॰
आ॰ पं॰
१९

208

श्री
१९

५०॥ पुरुषादिना विनिपाते हि नो [illegible] ॥
[illegible] ॥ ५१॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥
[illegible] ॥ ५३॥ [illegible]
[illegible] ॥ ५४॥ [illegible]
[illegible] ॥ ५५॥ [illegible]
[illegible] ॥ ५६॥
[illegible] ॥ ५७॥
[illegible] ॥ ५८॥
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ ६०॥ [illegible]
[illegible] ॥ ६१॥ [illegible]
[illegible] ॥ ६२॥ [illegible]
[illegible] ॥ ६३॥
[illegible]

[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ६५॥ [illegible]
[illegible] ॥ ६६॥ ६७॥ [illegible]

स॰ भा॰
क्रा॰ पं॰
१९

॥ ७ ॥ ५ ॥ पतिः सहस्राणि शाहंडः तत्क्षः मानवादं पीनायुनिधेर्मानर्वचनं नानाद्विनत एव ये
नरिन्यर्थाः ॥ २ ॥ अध्यायः ॥ सर्वं सर्वेशनि ॥ रूपितः यतेक भेकताः ॥ ४ ॥ सहस्रा उपद्रष्टाः ॥ ५ ॥ वि

कोऽयं योजननमाश्रा हिंगो [illegible] प्रमाणेन ॥ पतंत्यजसंवेगेन [illegible] ॥ ७ ॥
एवं पातनसहस्राणि [illegible] लिच ॥ अवपातिविन [illegible] नाने ॥ ५ ॥
नरकाय [illegible] ॥ मन्नाः [illegible] महावना ॥ ३ ॥
वचा [illegible] ॥ [illegible] महावना ॥ ४ ॥ अ
[illegible] ॥ [illegible] च ॥ सर्वं सर्वेन
[illegible] ॥ [illegible] ॥ ५ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ ६ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ सर्वं [illegible] विधेयाः केचन [illegible] ॥ [illegible] च ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ ५ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ ७ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ ८ ॥

२०१

यानविद्य विदेयाः श्लोकाः ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ राम

१९

११ ॥ हीवयमाणस्स- सी सा गंगेहिं निववंतः ॥ ६ ॥ संपत्तं जं मणेसु सद्धं सवक [illegible] तिविनि ॥ १५ ॥
१ निववयमाणं सव्वमिन्दे पोइन्द्राहिस्स नो ता न्यायो [illegible] क: पिहाना [illegible] ॥ [illegible] ॥ नाणं महया पवे

नानसे सव्विन तसवा पारक्लो हिनमनम ॥ नेदे पामायपामाप: [illegible] कद्दणन ॥ ८ ॥
सवावहेदविद्धपः सवी बुद्धे पोगना: ॥ [illegible] [illegible] ॥ ९ ॥ पुम नय
नयामपावकनिमि: समनिव्वेतिं ॥ निसेयं वयविगुणवचनापनननमो सिन ॥ १० ॥ पाणं नसीव
वामापः सव्वं समासपेनवा ॥ इदेवा मीननव्व [illegible] मविपानि ॥ ११ ॥ निसिन्नेसु हदमपन
पवविहावके नदा ॥ पवसपायननेन सिन्नि समाणे वुवोवचीन ॥ १२ ॥ स्यपानिव्वेहिमपज्जो
नालिपानिसाह: ॥ [illegible] ॥ १३ ॥ पविन्नेसावकलोच
सवपवेनवविनिना ॥ [illegible] ॥ १४ ॥ पनेचुवानपञ्चासो
वासीपाकानसवहीन ॥ [illegible] ॥ १५ ॥ [illegible]
के ॥ पोनकउवाव ॥ [illegible] ॥ पवे [illegible]
[illegible] ॥ १६ ॥ [illegible]
नवेस ॥ १७ ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ १८ ॥
[illegible] ॥ [illegible] ॥ १९ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ २० ॥
ना: [illegible] ॥ [illegible]

नमपास्पते ॥ २१ ॥ [illegible] ॥ २२ ॥ [illegible] ॥ नननइनि ॥ प
[illegible] ॥ २३ ॥ [illegible] प
[illegible] ॥ २४ ॥ २६ ॥

८२

म॰ भा॰
आ॰ पं॰
२२२

२२०

श्रआप:॥ ननयाहूयेति॥ [illegible]॥ [illegible]

५२

[illegible]॥२३॥

[illegible]॥२४॥

[illegible] पितामह॥२५॥

[illegible]॥२६॥ इत्या-

दिपर्वणि आस्तीके सर्पसत्रे॥ सौतिरुवाच॥ [illegible] जरत्कारुर्भुजंगमा॥ वासुके-

र्नागराजस्य वचनादिदमब्रवीत॥१॥ [illegible]॥ कालःस

[illegible]॥२॥ आस्तीक उवाच॥ किं निमित्तं मम पितर्देनापं [illegible]

[illegible]॥३॥ सौतिरुवाच॥ [illegible]

[illegible] ॥ भगिनी नागराजस्य जरत्कारुर्वि[illegible]॥४॥ जरत्कारुवाच॥

पन्नगानां [illegible] माता कद्रूरिति श्रुता॥ [illegible] यस्मात्तन्निबोध

तत॥५॥ उच्चैःश्रवाः सोऽश्वराजो यन्मिथ्या न कृतो मम॥ विनतार्थाय पणितं दासभावाय

पुत्रकाः॥ जनमेजयस्य वो यज्ञे धक्ष्यत्यनिलसारथिः॥ तत्र पंचत्वमापन्नाः प्रेतलोकं

गमिष्यथ॥६॥ तां च शप्तवतीं देवः साक्षाल्लोकपितामहः॥ एवमस्त्विति [illegible]

प्रोवाचानुममोद च॥७॥ वासुकिश्चापि तच्छ्रुत्वा पितामहवचस्तदा॥ [illegible]

देवां[illegible] पितामह॥८॥ सिद्धार्थाश्च सुराः सर्वे प्राप्यामृतमनुत्तमम्॥ भ्रातरं मे

पुरस्कृत्य पितामहमुपागमन॥१०॥

[illegible]॥ ५॥ १०॥

२२२

म. ग्रा
मा. पं
११२

ब्रह्मादेवः मानदेवो भवेति मानन्यत्वाकरन विधानपरः नरस्य याकरत्यागस्रुक्तोऽदेः मानपा
परूपः ब्रह्मादेः ननसति वास्के श्रीनान्वरवसंपरहीवेनष्टोः ॥ २३ ॥ अ[illegible]यः ॥ सोमसेनि
५२

वा[illegible]कि[illegible]रुवाच ॥ आस्रीकपरिवृणांमिहरुंपमेविदीर्घेले ॥ दिव्यानपतिलानामितब्रह
देवुनिधीदिन ॥ ३ ॥ आसीकरवाच ॥ नवेनापकनधाकार्थः कथविनयत्रगोनम ॥ यदेमा
ग्नः समनपनानापाविधामितिमधं ॥ ४ ॥ स महदेस हातोरेक[illegible]नामिसमनेनसं ॥ नापाति
पाभिमावंनमंधंकाधीः कधवन ॥ ५ ॥ सोनिहवाच ॥ ननः सवाहकेवीरमपनीयमनोन
र ॥ वायायवाग्नमेनोगेषु जगामनविनोस्यं ॥ ६ ॥ ननमेनयथानयवेसर्वेः समदिनगतोः
मोनायभुननोंस्राणमाली कोस्त्रिननम ॥ ७ ॥ सननायप्युखहलोकेप्रतायननमनम
सुनेमदसोवेकुलिस्र्यवहिन्नसमे ॥ ८ ॥ सनवनतिनोहयोः प्रविधाहिनसनम ॥ आ
मितम्भावतंप्रवंसवेणाश्रीचनंनय ॥ ९ ॥ समापयनायननेचरीहिसोनमः पुत्रयेसन्ना
वरिष्ठः ॥ नमावपतानमनेनकीर्तिमनिकरदस्थास्मनसेवचार्षि ॥ १ ॥ वाहिप वेनिरधि
मरे ॥ श्रीकवाच ॥ सोमप्रयनोवहराप्ययनः सनापनेयेनथासोमयाये ॥ नवाप
लोयेनवमारनाग्रपारीहिनवहिनोलप्रियेभ्यः ॥ ४ ॥ पानःपयनः पानसंस्रवडकः न ॥
थापांनरूपंसंस्रं पानेवे ॥ नथायनोयेनवमारनाअपारीहिनवक्तिनोल प्रियेभ्यः ॥ ५ ॥
॥

१११

स्वलिनोलप्रियेभ्यः नरनियजमानादीन्वाधकिंपश्रनीषस्[illegible]ते नाभिसंधायतेभ्यः स
लिकत्पाणमलिमपापाहे ॥ ६ ॥ पाकस्रोनियथापानेपानः [illegible] दखावनोगापितरेन ॥
त्पमेतेपानेपानेकनवेवानयायेनवयशेपुनकवनत्प[illegible] ॥ ७ ॥

११२

११॥ प्रमिययः प्रणयः॥ १२॥ १४॥ १५॥ कालीकरनिपातद्रवलार्थः मलेभ्यः सोल्लीक स्थितिमादः॥ १७

तेनेत्थमादयामासः सदाः सर्वेन्द्र संभवं॥ गतागतमिकिं नामनं प्राप्तोचेन संवेदिति॥ १८॥ देवाः॥ १९॥ कामर्कि नागराजोऽपं इःसितिनो लातिवराना न॥ ... समातन्नभावञ्च भवेत्कथं॥ २०॥ ब्र वाच॥ नारकाः केचकाकं योभायोसमवाक्पत्ति॥ नतत्ततोहिजः प्राणाना स्थिचिप्रानिपत्नागान॥ २१॥ एतच्छूनानवचनं वाक्यंकिः पुनर्मातमः॥ प्रदुःखसामसद्य स्पनवपिदेमहानमने॥ २२॥ प्राणे वा नानागमेवलानेनस्मान्तु मपिनायथा॥ ग्रयसकालः स्वयं मोलयान्तयानन्तर्हेंलि॥ २३॥ भावनंचापिसेनलसानानम्हेतियाचकान॥ नमोचनंकनननस्याग्रदन्तनवयोमने॥ २४॥ पितृदताविमेतार्थेकं यंचा जनमनासे॥ सौ रु च॥ एवमनं लिश्वेस्मकाप्तोतीकोमानंतन्दा॥ प्रतिनौङःखेसनमेवाहकिं जीवयत्तिव॥ २५॥ महेन्द्रनामोत लिप्प्ताभिनामकेपन्नगोनमा॥ नस्यास्था प्राणास्वनननपमेनञ्चैर्मिते॥ २६॥ भवस्यस्म नानागनदिनेविद्यनेमयं॥ प्रपुलिकोन प्रासोमापचकापेणोमवेशाति॥ २७॥ नमे बागनन्ने प्रारमेरे यपिकनोतत्वदा॥ नवेनरूपवंपनादिति निननमेन्नः॥ २८॥ वालिभिनालपुनर्कमि लोकिपि क्षेच मानन्त॥ यथापयनोनल्पेनन्निर्वाणेच्छति मनन्मः॥ २९॥ नत्त्वभावयन्नागोन्तम पिसर्वेमहापमने॥ ननेमयिमनोनान पिण्याभविनमहेति॥ ३०॥

२१॥ मपि प्रथममसाक्नोचविपत्तनीत्येवंरूपः मनः संकल्पः ज्ञानकदाचिन्नमिथ्यानाम्यान॥ २२॥

सं० भा०
आ० पं०
१९३

नयामानि यत्ते ऽग
न चन्द्रनाः नानाभूप निरलिङ्गनीन चनने मामापि अपि यन्ते नाथ पिपानः ॥ नयामानि यत्ते ऽग
नाली नियोगेने न शक्न हिंसा निरलिं कर्तव्ये निवर्त्तने ॥ २७ ॥ १ ॥ निश्चलं तगुं मे नियतो निरहो
नालीनियोगेनेन सहन हिंसानिरतिः कर्णे ऽधिनिवर्त्तने ॥ २८ ॥ रामो भार्गवः ऊँ वो निज्ञा
नः ॥ २४ ॥ बहूनां प्रियां निवासो शिव शवो ग्रोन संबंधिनीनां प्रिया ॥ २८ ॥

प्राकः सा नाहत्व पापि ये श्रेष्ठ ग्राना लोके विभिं जश्रेष्ठ पश्यतां ॥ मनत्वं नः पुरुषे इह लोके
नचनत्रो भूप निरस्त्रियते ॥ २ ॥ वेद्युगनानाम गहिलीपकल्प यथानिमं पाण्डमम प्रभा
वः ॥ आदिमानेनः प्रतिमानते नामीच्छो यथायानशिरस्वनत्वं ॥ ३ ॥ वाल्मीकि वने निम्न
नेवरीयं वसिष्ठ वनेनन्त येश्वकोपः ॥ प्रमत्त मिरूत समंमतं मेघ निष्ठ नारायणं वहिमा
नि ॥ ४ ॥ यमो यथापुर्मे वि नियम यतो लक्ष्मो यथा शर्व गुणो ऽपपन्नः ॥ प्रियानिवासो शिवयथा
वहूनां नियानमूलो मित्र याकन्दनां ॥ ४ ॥ रमो ऽवेना शिवमो वलेन रामो यथा प्राणवि
हविश्च ॥ ऊँ वं ॥ त्रि नाम्नाम शिन सने नाउः प्रेवलीयो शिवमागारश्रेन ॥ ५ ॥ सो नि हवाच ॥
एवेस्ताः सर्वं एव प्रपन्नाराजाम दृष्ट्वा अनिर्नो ऽदृष्ट्वा ऽहं ॥ ते यां दृष्टा भाविनां नीमिनाने
गावावराजाजन मे जयोऽथ ॥ २ ॥ आदि पर्वणि समाप्ते ॥ न नमे जय उवाच ॥ वालो ऽथ चं
नाविनारवावमायते नायं वालः सर्वविरोधमतो मे ॥ इत्याम्यहं वरमसे प्रदातं नमे विश्राः
संविरथं यथा वन ॥ २ ॥

हवी ॥ २६ ॥ ते यां न निमादीनां भाविना निमन शिशंक लिना निकृहि श्रेहिना निवका दिविक्र
नि श्रानीकानि च विषयाणि भारत विविगनानी निपाठे भारते ऽश्वमेधसहस्रं शतजनाना ॥ २ ॥
प्रथमः ॥ वालोपीनि सं विरधमेक मम्यं करूधे ॥ २ ॥

२२२

१९३

५ ॥ देवस्स य धम्मायरियस्स ॥ ३५ ॥ नो पाविज्जा नि ॥ सावगस्स ह्रः कं भिस्स[illegible] वोकस्सचन: [illegible] पुरिस [illegible] तां वेयन
नि एनेसवेस्स नाननानाद्दिस्सथ्थे : ॥ अनणचनेभणोदनेसाचा द्वे [illegible] नसिन [illegible] रुचिद्दोपिद

घम्मस्स यनलो हो मि से घम्मस्स य थ्था य तो रेनि देवस्स राग ह: ॥ नथा य नोसेनचभा रना अपा वि हि
न सोतिनोलप्रिय्येभ्या : ॥ ३ ॥ गायस्स य नः पापा वि दो झुगतो यत्म्न थ्था वेस्स वणस्स रा ह: ॥
नथ्था य नो संन च भा र ना अपा यो रिस्न सालि नो नव प्रि य्ये भ्या : ॥ ४ ॥ न्द गयस्स घत सर नमोदस्सचा
सीघ थ्था य लो दा झाव थ्थ आग ह: ॥ नथ्था य नोसंनचभा र ना अपा रि हिनस्स लिनोनस प्रियेभ्या : ॥ ५
य ह: अ. नो नो हि हि द्द वमसना पु सि हि वि स्साननमो दस्स ण ह: ॥ नथा य नो संनचभा र ना अपा वि
हिनस्स लि नो ल प्रियेभ्या : ६ ॥ न हुग्गयस्स य ह: सगावस्स घनो पुयोल थ्था रे नि दे वस्स चेव ॥ न
थ्था य नो संनच भा र ना अपा री हिन स्स लि नो ल प्रियेभ्या : ७ ॥ भे च नेस द्धेसमा नच वे स: स
मा श्ले द्धच हु णः कं ने य थ्था ॥ नेसा ना नोवि घने ता न म घा द्न घ भ्भो न य ग त स पे न क दा वि त ॥ ८ ॥
अ. नि व स मो ना हि लो के पु चे व दे पा य ने ने नि वि लि थ्वि ने भे ॥ एन स्स मि घण हि हि नि चरेनि
स वे लि तः कं मे ल ले हु ह ला: ॥ ९ ॥ तिभा वस्स स्थि अभा न भे हा ननाहि य ल्ल वे ना हुन भ क ह स व
नो ॥ प्र ह हि ल ग वने पि ल : प्र दी मा ह सं न वे ह हुन भ व हि दे का ॥ १० ॥ ने व ल ह म्मो नि य ने नो व
लो के स मो न्ह पुः का ल वि ना घ ना नो ॥ एन्ना वे ने प्री न म ना : स्स ह ने वे वहु ण मो घ में स ज्जो ए मा

न न प्र य घ स्स ल शो ना ली न थ्थे : ॥ ११ ॥ लो के श्र पा लो व. सा ण ने पु दी ला: व त: कं प्रा ला: ह ला इ म्मवि
पाव: ॥ १२ ॥ प्रोस लो नि वि भा व सा रि नि व हि क म य ने व हि दे का नि नि पाद्दे प्रा पि ल सि नि शे य य : ॥ १३ ॥ नं
वा हु ण इ न्न व नेचा ण ने म्ब वि धा व : ॥ १४ ॥ ५

१॥ विभावसोर्वह्नेः॥२५॥२५॥ अथ क्रमविज्ञानक्रमवान॥२७॥२८॥ इंद्रदपिक्रमहाणामामध्यमयिकंनथपि

नक्षोनसो धेनिहिनः [illegible]

[illegible] ॥ नन मेज [illegible] वाच॥ [illegible]

[illegible] विभावसो॥ [illegible] ति [illegible] वाच॥ [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] ज [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] वाच॥ [illegible]

[illegible] ति [illegible] ॥ [illegible]

[illegible]

[illegible] नि [illegible] वाच॥ [illegible]

[illegible] ॥१॥

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥२६॥१॥ [illegible]

[illegible]

स॰ भा॰
प्रा॰ प॰
११२

224

२० ॥ योजनानां [illegible]

एते नव किंनरा नाना [illegible] ॥ अन्ये च बहवो [illegible] ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] ॥

११५

योग्यामवंति २२

५५

सं॰भा॰
स्कं॰७
२२६

२१ ॥ एतद्दृष्ट्वा पर्णशालां मानसं प्राप्य दृष्टमात्मानं ॥ ४० ॥ २१ ॥ प्रबभाषे नृपाः ॥ २२ ॥ प्रसंगात्संप्रति [illegible]

पुनरागमनं कार्यमिति निश्चित्य वचोऽब्रवीत् ॥ भविष्यामि समर्थोऽहं कालेनैवेष महामुने ॥ २८ ॥ नत्वे
त्युक्त्वा प्रययौ तत्र वाल्मीकेराश्रमं प्रति ॥ [illegible] कार्यमननं मो चपि नाचरामि वै ॥ २९ ॥ स गत्वाथ
मुनेः शीघ्रमाश्रमं तत्र वाल्मीकेः ॥ [illegible] ॥ ३० ॥ मुनिरुवाच ॥ एतन्
[illegible] वाल्मीके वै मुनि [illegible]
[illegible] ॥ ३१ ॥ [illegible] किं ते प्रियं करवाणि [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] किं ते करवाणि [illegible] ॥ ३२ ॥ वाल्मीकिरुवाच ॥ [illegible]
लोके [illegible] ॥ [illegible] किं [illegible] ॥ ३३ ॥
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ३४ ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ३५ ॥ [illegible] ॥ वाल्मीकिः [illegible]
[illegible] ॥ ३६ ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] वाल्मीकिवचनं [illegible] ॥ वाल्मीकस्य वचः श्रुत्वा [illegible]
[illegible] ॥ सूत उवाच ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ ३७ ॥

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ २१ ॥ २८ ॥ [illegible] ॥ २९ ॥ ३० ॥ राम ॥

२२६

स॰ भा॰
आ॰ पं॰
१९२

४॥ कर्मान्तरे स्थितिर्दिष्टा सा व्याख्याता मुनेः श्रेयमाख्यानाद्यः प्रकरणं नवेंद्रप्रायनं कथ्यतः कथयितं प्रख्याति
नवानि॥ वेदाश्च यास्यो मिकस्याभ्यवनाः कथाश्चैव नवाः स्निमावः॥ ४७॥ भाविनः सोपसंहृत्य नष्टात्मा
मनोयत्तस्य सः भाविनां मान स्यापांतांतरेन हितस्यामि कस्मानयिकथ्यन्ति॥ ४४॥ २॥ अध्यायः॥ ग्र॰

यावमत्रः कथा श्रिनायेष्टार्थे प्रयत्नात्तयं॥ ननाः श्रमदे धाने मोने नवं प्रवचनः सोऽति॥
वाचा॥ कर्मान्तरेषु कथयन् हितायैः दाश्रयाः कथाः॥ तामूलकं पथ्यथोवैश्चमाख्यानं यानं महतः॥ १
सोऽनकवाच॥ महाभारतमाख्यानं पांडवानां यशस्करं॥ जनमेजयेन यत्पृष्टः कृष्णद्वैपायन
स्तदा॥ ५॥ आवृत्तमायाविधिविधनदा कर्मान्तरेषु सः॥ तामहं विधिवत्तत्त्वं श्रोतुमिच्छामि वै कथां॥ ४॥
मनः सागरसंभूतां महर्षेर्भाविनात्मनः॥ कथयस्व सतां श्रेष्ठ नहि तृप्यामि सूतज॥ ७॥ सौतिरुवाच
॥ हंतते कथयिष्यामि महदाख्यानमुत्तमं॥ कृष्णद्वैपायनमतं महाभारतमादितः॥ ८॥ तज्जुषस्व
विप्र सर्वमेतत्कथ्यमानं मयाद्विज॥ शंसितं तन्मया हृष्टं कीर्त्यमानोऽहमत्र ते॥ ९॥ सौतिरुवाच॥ ग्रा॰
कथाविंयः॥ सौतिरुवाच॥ गुरुनानस्य पंचनाथहीं विनं जनमेजयं॥ ब्राह्मणानुदेशविविहानलक्ष
कृष्णद्वैपायनं तस्य॥ ५॥ जनमयाममतं कालेपार्थ चापरणप्रान्तः॥ कृष्णेवसुमनाहीयपांडवा
नांयिनामहे॥ ५॥ नानमात्रस्थयः सत्याः संहर्षमभीस्तवन्तः॥ वेदाभ्यासिरतो सागालेऽतिहासा
नाहायनाः॥ २॥

नेति॥ कालो मस्त्वनीरवाख्याः कृष्याहदेवैः पृच्छो श्रुतवाञ्छ्यान्॥ [illegible] ॥ [illegible] यादेवीमां
वंशरूपमनेनमस्वरस्वतीवाउपहोहपापोरवीहयनवर्णितवान्॥ [illegible] ॥ [illegible] तिनिचाहे
हार्थीमयुधिष्ठिरागेऽधिपानवान्॥ ३॥

116

१९२

[illegible]

स० आ०
मा० व
११८

॥१२॥ जिनानामहायक्षस्सनत्स्यायक्ष्मस्यायवालाय॥२॥ विद्युदादिनिर्मोदुपर्कं तं चैनं द्विनं ॥ नत्वनिवेदि
तां गामासमनत्स्वा यिनवान्पासोमामामनागामिनिर्मन्व हिंमानन्स्या प्रवश्यनं मन्यमानः नदृष्टैकायो॥
मनपाशाद्यानेस्मा किंत्रादृत्वश्वाणं वावेदनेवालर्दं नेश्यर्थ्यं वादत्वागणपामानवादसद्गोननिया
यकः मावधिस्थेतिनिये यहिंगस्यप्रनागामिनिनिरपपायनुदेनयोदत्विनस्यप्रवल्लनरत्नानां॥ वेद

कांचने विशुद्धं नमो सदस्यान्यमनः प्रभुः॥ आसनं कल्पयामासयत्राक्रोडदस्यने॥१॥ नत्रोपवि
ष्टवान्देवं जिनं पूजिनं॥ तनयामासपानं दुःपाणसदुखेनकमंगलं॥२॥ पाद्यमाचमनीयं च स
र्ग्गोगाच विधानतः॥ जिनानामहायक्षस्यानदर्शनस्यवेदयन॥३॥ प्रतिमा पूजनं तां पूजां पांडवाङ्कु
नमेजयान्॥ तांचैवसमनन्तायशामः श्रीलोमवल्लदा॥ नयाच पूजयित्वा नप्रणायाम्यजिनानां मद्
उपोपविशुश्रीनानामायपीठपूजनं नामसंयं॥ भगवाननमिनं दस्याकं पालंप्रनिवेदयच॥ सदस्योः पू
जितः सर्वैः सदस्यान्नमपूजयत्॥ ननस्तु सहितः सर्वैः सदस्यैः जननमेजयः॥ इंदप्रस्थादिदृष्टोपप
दस्थसन्तोजनानि॥४॥ जननमेजयउवाच॥ कथं लोकं पांडवाना नाचस्मवान्यत्रवर्षिणा॥ जो षा
चरिनमिद्धामिकथयामानं नयादिन॥५॥ कथं कमगवद्दसेयामकिं कृतं मे गुणं॥ नदपपूदं
कथं पूजनं भूतानकरणं मद्दन॥६॥ जिनामद्रानामर्वें पांडवेनानाविशुद्धेनसा॥ कथं नैतन्ममाच
क्ष्व पांडवर्तन दिनोनम॥७॥

ने वधां मां लदंनेदिंसनि॥८॥ उवाच पविष्टसमो पोउपविष्ट॥९॥ [illegible]
निरिव॥ रद्दवलमाणं॥१०॥ प्रसन्न दर्शिकानप्रसन्नदंद्रभवान्प्रसन्नदर्शनी अस्योम पिदपयनः निवनि
प्र॥११॥ मे दैवयंस्य किं पृणगदेषादिषु कमयोषं॥ [illegible] ॥१२॥ जिनानामहानं मां प्रपि
नामहानां॥१३॥

४४८

117

११८

[illegible]

म॰ भा॰
आ॰ प॰
१५९

कलिंगस्य पदातयः मने कारुस्तो सहितिं द्रंपूरानचान मां संग्रामान्यननो कलिंगस्तेस्य पतोत ॥ २९ ॥ सारुरु
मेकार्हृद्दा विस्या हिनाः ॥ ३० ॥ एमायतः कोदंग मं मायाद्दीर्घं विशेषेद्रकनामावद्रुम वोमिउ दरेयस्य सट्ठ कोर
यः ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ विग्रकारेणु यय कारेणु मोहरोगामापनि वाराणे प्रनि कारेप्रानि मघेन पानेर पापदिलिपन

ततो युधिष्ठिरः स्ववः कलिंगस्य मते स्थितः ॥ पांडवानि विशिरोपापैरानस्ट्टैर्नोरथी उ शनः ॥ ३३ ॥ दत्ताव स्य
विहंपारोभीमाय यानपाहूतः ॥ जयथा मासनहीरः सहनेनस्वकोद्रयः ॥ ३४ ॥ समायाको स्वं संसमं सन
वेपान् कोदंरं ॥ ततो ये पुभीमं गं गायाः प्रविश्य पुरमावतन ॥ ३५ ॥ यदावि पुरुकौं नेयस्तराशं हिघवं पनं
उद्तिष्ठन्तस्हृत्वा भीमसेनो गतान् वधं ॥ ३६ ॥ पापौ विषैः क्रस्नपरैः स सैचैव महं शायत ॥ सर्वे ष
वांगदे प्रेषु नमसमारवपाद्रुहः ॥ ३७ ॥ ते षांन विग्रकारे पुनेधु नेधु महामतिः ॥ कोवरोप्रनिकारेच वि
दुरोऽवहितोभव न ॥ ३८ ॥ स्वर्गोष्वो जीव लोकस्य यथापाकः सहोवह ॥ पांडवानां नयानित्यं विदुरो
विमहोवहः ॥ ३९ ॥ यदा नविविधोपायैः संहृतेविहृनेरथि ॥ नाशाकहि निहंते नाते सभाग्ध्य धीर
हितान् ॥ ततः संमंत्र्य सचिवै वैषद्रः शासनादिभिः ॥ धृतराष्ट्रमनुज्ञाप्य जातु गृहमादिशन्
कुत प्रियैषी तान्ना जापांडवानं विकरुतः ॥ ततो विवासयामास राज्यभोगवुभुक्षया ॥ ४० ॥ ते प्राति
ष्ठन्त सहिता नगरान्नागसाह्वयान् ॥ प्रस्थाने चाभवन्मंत्री क्षत्ता तेषां महात्मनां ॥ ४१ ॥ तेन मुक्ता जतु
गृहान्निशीथे प्राद्रवन्वनं ॥ ततः संप्राप्य कौंतेयाः नगरं वारणावतं ॥ ४२ ॥

नेव ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ संहृतेः गमे विहृते प्रकाशैः देवमायथा ... विनाम ॥ ... दव्यः पांडवान
हामाहिम्पर्थे ॥ तस्मिन् रहितान् ॥ ४५ ॥ ग्रह्य कर्णः ... ग्रामस्थे ॥ ... तेन ... ॥ ४६ ॥

२२८

११५

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

सर्वे संवत्सरं पूर्णं मासं सैकं वने वसन् इति दक्षा संख्याय कालान् पूर्णं पाण्डवा तदा गतमप्यथाते ॥ संवत्सरं पू
र्णं एकं च वनवासमासं पूर्णमेव तेन न एकादशे संवत्सरे पाण्डवा मासाद्भवन्ति ॥ ते पंच सोदराः प्रत्यहे समया

भा॰ आ॰ प॰ २२

तस्माज्जनपदोपेतं समविभक्तं महीपते ॥ वासाय पाण्डवा यस्मिन् वनं प्रविश्य तदा ॥ १३ ॥ तपोले व
चनाज्जग्मुः सह सर्वैः सहस्रशः ॥ नगरं वारणावतं रम्यं सर्वे यात ॥ १४ ॥ तत्र तेन च समन्वार्थैः स
र्वस्मात् तमालवहृदन ॥ वसौ पार्थस्तत्र पाण्डवेन कृते ते सम्यक् सह वीरस्तम ॥ १५ ॥ पंच पर्म प्रवेशनालेख्य तत्र तपय
शालाः ॥ अप्रमत्ता स्थिताः सर्वाः पाण्डवाः ह्रिता न्यहन् ॥ १६ ॥ प्रज्वलद्दीप्तसेन तं दिशं प्राचीं मद्रायधः
उदीचीं मत्स्यनिनो ह्रीरः पालीचीन कृतवल्लभा ॥ १७ ॥ दक्षिणां मत्स्यदेवल विजित्य वीरहा ॥ एवं च कृत्वा सं
सर्वे ते पाण्डवं नगरं दृष्ट्वा ॥ १८ ॥ पंचभिः सर्वसंकाशैः सर्वमेव विनाशनम् ॥ षट् सहस्रं मद्रवतः प्रत्यो
पांडवैः सत्यविक्रमैः ॥ १९ ॥ तत्रोनि मित्रेक स्थित्य पार्थ मेघराजोपस्थितिः ॥ वनं प्रस्थाय पाण्डवास्तत्र तस्मी
त्स विक्रमः ॥ प्राप्तो मोति भ्रियतं मानं समस्तसावितं ॥ अन्यं न दुष्टं धर्मात्मा सुस्थिरास्ते नरोत्तमे ॥ २० ॥
सर्वे संवत्सरं पूर्णं मासं सैकं वने वसन् ॥ तेनोगतं हृषीकेशं प्रेषा रवमां कृष्टाचन ॥ २१ ॥ तच्चावाल
त्र वीमत्स्या भांर्यो रात्री वसोवनं ॥ अन्तर्ज्ञां वासरे देवस्था सभद्रां सहस्रां हितां ॥ २२ ॥ साय चीवमहे देश
श्रीः कृष्णे नेव संगता ॥ समस्तरूपं पुनेत्री मार्या पांडवेनाज्ञेनेन हि ॥ २३ ॥

२२

दपंच दिनहस्य मासावनाद्वादशा हाः भवंति ॥ अन्ये त्वसम्बसम्बेनल्वयवसूक्ष्मवसंख्यातनः ॥ एकपाद
वैयर्थ्यं एकवचनानपयानिचले वने वने ॥ प्राण ... वसन्मासाधि ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥

पुरोचनानल ॥ [illegible] ॥ २० ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ११ ॥ [illegible] ॥ २४ ॥ २५ ॥ नि [illegible]

[illegible] ॥ पुरोचनानल [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ २५ ॥

[illegible] ॥ २६ ॥ २० ॥ [illegible] ॥ ३५ ॥ ३२ ॥

स· स्था
भा· षं
१२१

स्ववृत्यानीयमानोषु इत्यादीन ॥ ५ ॥ ४ ॥ अतिपतनवान ॥ कथंकरोयं पतनवान ॥ निरुद्धवान ॥ २ ॥ प्राकारस्य मित्तिरो

न

नवनर्क [illegible] ॥ [illegible] ॥ ५ ॥ किमर्थं
[illegible] ॥ ३ ॥ कथं [illegible]
[illegible] ॥ ५ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ६ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ७ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ८ ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ९ ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ १० ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ११ ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ १२ ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ १३ ॥ [illegible] ॥ [illegible]
नस्यतां ॥ १४ ॥

120

[illegible] ॥ १ ॥ [illegible] ॥ २ ॥ [illegible] ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥

१२१

नाणीति ॥ खंतिरवदाह ॥ निपेधः अवसाणः ॥ पवमेवेक ... ॥ ७५ ॥ ...
विनिशेषः कपिलदासानानंथम्त ॥ ७० ॥ यत्र लोत्तदाह ॥ ७८ ॥ ... ॥ ७० ॥

श्रुतपंपघवकोनेयः लोतुवेहमाचाहनं ॥ वीभत्त्तामदेवेनमहिनोन ... म ॥ ७५ ॥ नाति
मारोहिपाकेस्पके पावेनमहाभवन ॥ यावमापसहपस्थ विभोः श्रुत्रुवचेपिव ॥ ७५ ॥ पायोणा
श्रिदेवैवापिणेत्तीवंधनरु नममम ॥ ७९ ॥ धीयावत्येवीलोरथं चकपिलदासा ॥ ७७ ॥ मोलुयामास
वोमसासंथयत्रमहमं ॥ मवकारमणंरिसांससेरलसमाचिनं ॥ ७८ ॥ नस्पांउयोयनोम
रोलोभवके सङकनि ॥ ननोदेवेवशिलावेसोवलेनशुधिष्ठिरं ॥ ७९ ॥ वनेप्रस्थापयामास
मवभीगिपेवव ॥ थलानमेकंपाडुवाननाव पेत्रेपाराधं ॥ ८० ॥ नत्रश्रुतदेवोवधिपाचमानाहके
वश ॥ ८१ ॥ नात्सभनमहाणज्ञननोधुरमवनंन ॥ नानलेराचमनसाहहनाडयोयनेनस्थं ॥ ८२ ॥
णस्पविहनमधिष्ठेशनापयीनपांडवा ॥ पवमेननमहाबुनेलेपाकमरिकहक मेणां ॥ भेसेणानवे
नापमणधनमणशन घलोनवरा ॥ ८३ ॥ इस्मादिपवेशिहरुह ... उववविलस ... माणघ ॥ ननमेत्रप ...
वाप ॥ कथिनेवेसमानेननयामवेरिसेलनम ॥ महाभावनमानोलोनेकरुणांचपितेमहन ॥ ८४ ॥
कथाननवचिनाभंकरुणपरानपांथन ॥ विलास ... श्रवणेनानलेकेन हलमतीवमे ॥ सम
वानिलसोणेमापुनरालानमहेति ॥ नहिरकालिपुर्वेवाफलानवविनेमहन ॥ ८५ ॥

५१ ॥ विहतनमुधिष्ठेनशुणपं ॥ ८२ ॥ श्रुपाय ॥ कथिनमिलि ॥ ११५१३ ॥

अनेकजननअनेके भाःघयाः ज्ञानिकाया जननेऽपनिरधिनि नितथासर्वज्ञ निसम्हः सर्वासां

आवयेनमहापुण्यंजनयथर्मःसनातनः ॥ कहृत्यंप्रश्विनेवृषांकोर्जयस्तनंगच्चि ॥ ॥ ॥ तंप्र
मासोनिविपुलेलोकेपुण्यनमोभवेत ॥ यो पीनेमारनेपुण्यंब्राह्मणोनियतव्रत ॥ ॥ ॥ चन
तेवर्षिकामासान्सवेषाप्रेःप्रमुच्यते ॥ विनेदर्शमचवेदानांपारगोभारतंपठन ॥ देवताश्चपि
तृनपुण्यात्र्हाधयलम्बा ॥ ॥ ॥ भगवांस्यामिदेवेषोयद्देवंचकीर्तिने ॥ अनेकजननोयस
कानिकेयथसमभव ॥ सेमात्तानांतानांचेवमान्सयत्प्रकीर्त्यते ॥ सर्वज्ञनिसम्हमोयंत्रान
आयमद्वेषि ॥ यदेआवयेद्विद्वानब्राह्मणानिहपर्वे ॥ अनपाआजिनस्यांत्ररामकृति
ताधने ॥ ॥ ॥ आवयेद्वाह्मणाश्राद्धेयस्तेमपार्मनन ॥ प्रवर्धनस्यनश्राद्धमपवनेमिरनिह
श्राद्धयदेनःक्रियतेहृद्वियेमनसापिवा ॥ तानादतानलोवापिप्रकोर्तितिनरधयन ॥ ॥ ॥ नेक
हामारताख्यानेश्रवेवप्रविलीयते ॥ भारतानांमहृतजन्मसहस्माहात्मयच्यते ॥ निरुक्तमस्य
योवेदसर्वपापैःप्रमुच्यते ॥ ॥ ॥ भारतानांयनस्योमितिहसोमहाद्रुतः ॥ महतोह्येनसोमर्त्य
मोचयेदनकीर्तित ॥ ॥ ॥ त्रिभिर्वर्षैर्लब्धकामःकृष्णद्वैपायनोमुनिः ॥ नित्योत्थितःशुचिःपा
क्तोमहाभारतमादित ॥ ॥ ॥ तपोनियममास्थायकृतमे नमहर्षिणा ॥ तस्माद्वियमसंयुक्तैः
श्रोतव्यंब्राह्मणैरिदं ॥ ४१ ॥

121

१२२

[illegible]

[illegible]

[illegible]

स॰ भा॰
आ॰ टी॰
१२२

राजेनिरंजनकनाङ्गनामहीपतिः एषोपालकः वत्सःउपरिचरः ॥ ५ ॥ तातान्तस्यैवोभूप ॥ ४ ॥ नसंकोचं
नतिनोपकनान ॥ २ ॥ यथावः यक्ष्मयोहितः स्वातःस्वःस्वर्गः ननत्वःप्रनएवरत्वः ॥ ३ ॥ गःव
लोकहीनदेवाः कस्यपत्वा निहलयरिनरजनेनाधिपाकटपुरिसूरवाह्रैरेवनकार्यसि देविनिभावः

वैशंपायन उवाच ॥ राजोपरिचरोनामधर्मनित्योमहीपतिः ॥ बभूवमृगयांगंतुंसदाकिलधृत
व्रतः ॥ १ ॥ सचेदिविषयंरम्यंवसुःपौरवनंदनः ॥ इंद्रोपदेशाज्जग्राहग्रहणीयंमहीपतिः ॥ २ ॥ तमा
श्रमेन्यस्तशस्त्रंनिवसंतं तपोनिधिं ॥ देवाःशक्रपुरोगावैराजानमुपतस्थिरे ॥ ३ ॥ इंद्रत्वमर्होराजा
यंतपसेत्यनुचिंत्यवै ॥ तंसांत्वेनन्टपंसाक्षात्तपसःसन्यवर्तयन् ॥ ४ ॥ देवा ऊचुः ॥ नसंकीर्येतधर्मोयं
पृथिव्यांपृथिवीपते ॥ तयाहित्रिधर्मोविपुलः कृत्स्नंधारयतेजगत् ॥ ५ ॥ इंद्र उवाच ॥ लोकेधर्मंपाल
यत्वंनित्ययुक्तः समाहितः ॥ धर्मयुक्तस्ततोलोकान्पुण्यानाप्स्यसिशाश्वतान् ॥ ६ ॥ दिविष्ठस्यभुवि
ष्ठस्त्वंसखाभूत्वाममप्रियः ॥ रम्यःपृथिव्यांयोदेशस्तमावसनराधिप ॥ ७ ॥ पशव्यश्चैवपुण्यश्च
प्रभूतधनधान्यवान् ॥ स्वारक्ष्यश्चैवसौम्यश्चभोग्यैर्भूमिगुणैर्वृतः ॥ ८ ॥ अत्यर्थवानेषदेशोहिधनर
त्नादिभिर्युतः ॥ वसुपूर्णाचवसुधावसचेदिषुचेदिप ॥ ९ ॥ धर्मशीलाजनपदाःसुसंतोषाश्चसाध
वः ॥ नचमिथ्याप्रलापोत्रस्वैरेष्वपिकुतोन्यथा ॥ १० ॥ नचपित्राविभज्यंतेपुत्रागुरुहितेरताः ॥ युंजते
धुरिनोगाश्चकृशान्संधुक्षयंतिच ॥ ११ ॥ सर्वेवर्णाःस्वधर्मस्थाःसदाचेदिषुमानद ॥ नतेस्त्यविदितं
किंचित्त्रिषुलोकेषुयद्भवेत् ॥ १२ ॥

कृशानसंधुक्षयंतीनानाथादीन् ॥ संधुक्षयंतिपुष्णंतिकृशंति ॥ यस्माद्देवपरार्थे [illegible] वसुर्गुणैर्जनेषुप्रजानांसंधुक्षयं
तीति ॥ अग्रेनतमःस्वर्गतोः नानाभयाधिदिर्दैवंपुरेयेनर्षि [illegible] नहिहन्यतेरोमहृ ॥ १३ ॥ नते
इति ॥ आत्मत्वात्तनन्यसर्वलोकविषयोज्ञानमस्ति ॥ १२ ॥

१२२

[illegible]

स॰मा॰
टी॰
१२४

२४॥४॥ बदर्यां च महापुण्यतां पुतैः॥ २५॥४४॥ कामवकाः वसुश्रुताः॥ २६॥ इंद्रप्रसादे इंद्रदत्ते विमाने॥ २७॥ श्रीरोप वाहिनी शुभ समीपे वहंती श्रीरोत्सीत॥ स्नानमेवावहरोप॥ २८॥ २९॥ नदी गतेत्यवेदयत॥ मिथुनमि

नेषां श्रीविजयश्चेव समराखगानां भविष्यति॥ नवाधमो ने जनपदे मदिन स्नभविष्यति॥ ३०॥ एवं महात्मना तेन मदे देवेन ग्रपितु॥ वसः श्रीनाम राजा नामहाराजो मिमनकन॥ ३१॥ तत्सर्वं कारये तं लिमचण्डक एवं तेन तः॥ भूमिकात्रादिमिर्दानैलखा ह्रणाभवंतिने॥ ३२॥ वारदानमहापदैनस्था पाकैत्सवेन च॥ संघ्रंनो मधवलावहस्तेदी श्रीरोत्सप॥ ३३॥ पालयामास धर्मेण वेदिष्टः पृथिवीमिमां॥ इंद्रश्रीन्याचेदिधलिस्वकारेद्रमहंवस॥ ३४॥ ४॥ श्रवणाप्राय महा वीर्यवंचा शत्रुमित्रो जनः नानाग्रामजेषु वसनात्मन्वारपदेवयत॥ ३५॥ महाराष्ट्रो मागधानां विष्णु नाये हृद्रस्थः॥ एवम श्रद्धः कृषवस्य यमातुर्मेणि वाहनं॥ ३६॥ शावलिस्य श्रस्थे वगजत्स्था पणजित॥ एतेन समता गतेन राजधर्मभूविनेजस॥ त्यदेवाय नामभिः श्वेतेरैः पांश्रुभणिछ॥ वामवः पंचगजानः पृथक्सं धाश्रुपथना॥ ३७॥ वसन सिद्धआसारे आकाशे स्थविके चतं॥ प्रतस्थे महात्मानं गंधर्वाश्चर सोत्सप॥ ३८॥ गजो गणी वरो सेवे नाममन्थाय विष्णुनं॥ श्रीरोप वाहिनीतस्मात दीपमुक्तिमती गिरिः १२४ श्रीरोत्सीवेननागुरुः कामात्कोलाहलः किल॥ गिरिं कोलाहलं हंतुं पदाद्वव्हा नाडयत॥ नि श्रुकामत ननतेन प्रहारविवरेण सा॥ ३९॥ नस्रोत नयामत्त नृपत्निशुक्लं पर्वतः स्वयं॥ नस्मात्रविसोहत्या नामीत नदीगतेत्यवेदयत॥ ४०॥ पः श्रमात मवनत्रं नसमगर्भधृत॥ पुत्रं चेव महाधृके सेनापतिमिर्मिरंदस॥ ४१॥ वकार पत्नी कन्यां तनयां गिरिकां रमः॥ वसोः पत्नी तु गिरिका काम कालं न्यवेदयत॥ स्नातकालमनुप्राप्तां गिरिकां समवेक्ष्य तु॥ ४२॥

एतत्तदनते॥ ४३॥ ४४॥ शृण्वने शृणुयोगेकाले॥ १९॥ राम ॥

१२४

स॰ आ॰
मा॰ ष॰
२२२

॥ ५४ ॥ [illegible] ॥ ५५ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ५६ ॥ [illegible] ॥ ५७ ॥

[illegible] ॥ ५८ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ५९ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ६० ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ६१ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ६२ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ६३ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ६४ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ६५ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ६६ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ६७ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ६८ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ६९ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ७० ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ७१ ॥ [illegible]

[illegible] ॥ ७२ ॥ [illegible] ॥ ७३ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ७४ ॥ [illegible] ॥ ७५ ॥

124

१२५

नदहृन्न मिमन्हिने ॥ २४ ॥ ५४ ॥ मिंदाचलोक नेना शोक मेव वि मि[illegible] दिमण गंधै मिति वाणना कामो
दूंणकेन धृम्नमन्तिनरनिक मेनर धें मुदंसी निघ णंश्री लि[illegible] रसनामेव मनन सामान्न याम हूम

नदहृः पिनरत्नेन मृचुने हिमणमनिति ॥ नेगानसन्न मंश्री ना[illegible]नोनर ॥ २४ ॥ साणिन्ह
णंनि शोफिन मननति कण्डणां पिंचः ॥ चचारन्ना गंधा का गोपिति काने वृ संसारन ॥ ५ ॥ धनीवर
पसणत्रा ममता लिंकुल मिनापणे ॥ यपाके संघ पके स्त्रु ले ने के गनिमनक गेः शुत्राशेः कगिक्रा
नैश्न चक्रनै हिं हणपारनेः ॥ पारन्ने नैमि के ते घ चेदने श्नानै नैनाश्ना ॥ ४ ॥ शनैरनै महाहतैः श
णिः स्वाउ फन्तेणेने ॥ कैकिना कस्नसंनारमत्र सनाहिने ॥ ५५ ॥ वसन कालेनन श्चवने
चैनचणेपणं ॥ मनश्चाभिणदो नानमा नापण पण हि मिकनन्ह ॥ ५६ ॥ श्रपणपनकामसंननम श्चामा
णोमहत्नया ॥ वश्नांनन्नत्र पणना शपनत्नैन सणना भिने ॥ ५७ ॥ श्रपाके स्नचकेस्त्वंन मणणीयम
पशपन ॥ श्रपत्नानन स्ववन्नापाणांमन लोमीनान पधिप ॥ ५८ ॥ मधुगंगै श्रसंश्रक्रू पत्थगंपुमनो
हर ॥ वाशनाशेत्रमाणणत्न पृम्नाणमरमन्न मान ॥ ५० ॥ नश्नौनः श्रवन्न कर चरनोगाहून्नेचने
स्कन्नमाने वृनदेगो हक्ननशेणमन्मिप ॥ ५८ ॥ श्रनिन्नगाह् लिंश्यामेनपने इनामशेन ॥ दृंमि
श्चाणणिस्क्रनेनामेनभवेरिनि ॥ ५९ ॥ कनन्शुनन्पाः पन्ममेनमोचः श्याहिनिप्रभः सवि
मैवंनदागन्नविचार्पच शुनः शुनः ॥ श्रामि वनं चविमणे नमाणजन ननमः ॥ श्रक्रमस्रा
पनंकानं मद्दि श्याः श्रसपोदवे ॥ पश्मिमणश्चन वश्नकमाणानिश्वननाम्नणगे ॥ हूस्नयमार्य
ननमेगनाशपननन नोत्रवीन ॥ मसिमणश्चमिरं सोमिण्श्नकममारदेनय ॥ मिमिकाधाः श्रप
नमंमहानमवरोहिमणचेः ॥ ६१ ॥ प्रमवनंकरपपान ॥ ६२ ॥ मिश्चाणमनवस्त्रनलेनानीकपाये श्रमिमं
श्रशेमनतिलिंगोमेचेः स्वशुक्रानाणनविमानेकदेशमसीपे ॥ ६३ ॥ श्रानेवंकमनकासीनेहाने

म॰ भा॰
आ॰ प॰
२२६

द्वैपायनेव प्रथनं व्यासस्यानेयस्यानद्वैपायनः स्वार्थेन हितः द्वैपायन एव वेदैकव्यसनः इति नामनिर्वे-
क्तिः न्यस्तः इति पादद्वयस्यार्थः गाङ्गेयो याद्रेयः वीर्यमात्रकं ते एते ओकदमात्रमस्य विशुद्धमित्यर्थः ॥ प-
रमात्मा द्वितीयं चाहेदम् ॥ ८४ ॥ ब्रह्मणो वेदस्य ब्रह्मणः वेदा विद्यास्य आत्मा मेदेन विलक्षि-
तत्वात् तेषां तं त्यागति तस्य नामेत्यर्थः ॥ ८५ ॥ महाभारतं पञ्चमानि तिभारतं पञ्चमो वेदः सर्वज्ञ-

यतो द्वीपे स्थितस्तस्मात् ... द्वैपायनः स्मृतः ॥ पाराशर्यो महाभागो विद्वान् ...
मातुः ... गाङ्गेयस्य च ॥ ८४ ॥ ब्रह्मणो ब्राह्मणानां च तथानुग्रहकाम्यया ॥
विव्यास वेदान्यस्मात्स तस्माद्व्यास इति स्मृतः ॥ ८५ ॥ वेदानध्यापयामास महाभारतपञ्चमान् ॥
सुमन्तुं जैमिनिं पैलं शुकं चैव स्वमात्मजम् ॥ ८६ ॥ प्रभुर्वरिष्ठो वरदो वैशम्पायनमेव च ॥ संहिता-
स्तैः पृथक्त्वेन भारतस्य प्रकाशिताः ॥ ८७ ॥ तथा भीष्मः शान्तनवो गङ्गायाममितद्युतिः ॥ व-
सुवीर्यात्समभवन्महावीर्यो महायशाः ॥ ८८ ॥ वेदार्थविच्च भगवानृषिर्विप्रो महायशाः ॥ शू-
ले प्रोतः पुराणर्षिरचौरश्चौरशङ्कया ॥ ८९ ॥

त्रिसप्तमो ... इति ... वदि ... ॥ ८८ ॥ ... लम्भलाः सं-
हिताः ... प्रकाशिताः ... इति ...
निःस्पृहीकृता ... इति भावः ॥ ८९ ॥ ...

२२६

स॰ भा॰
मा॰ पं॰
१२१

अग्न्यंसोह्याभिमतेनमनान्मन्वेषपरित्यमिनंचवारयति॥ आत्मानमभ्यवयमिति॥ विशेषणमंप्रर्षं
नन्माद्वेषष्टकनिंउपास्यानंप्रसवंउपतिष्ठतिमितंप्रथममृषिप्राक्तारं॥ नन्वत्रशदेः मृदुपाष्ट्रनंचैत्रोरि
मिनंकचान्तःकर्नांयुग्रनश्चयमपिदेवपवेत्य्रजंननकथमित्याप्राकृतनन्दह्यानदेवान्प्राविषय-
द्विनिम्न॰नष्ठेमाह॥ पृष्ट्वंपृष्ठेपरीरेषुवसतीनिपृष्ठः अग्रेस्वानेद्वियाणिलेलंपचननथा॥
पपाणिक॰मेंद्वियाणिवेलंपचर्तसाचपाणिक॰मेंद्वियाणिमनाद्विचनस्वंचप्राणादिपंचक
मणैविषयद्विकंचकाम्यकर्मेचलमःपुनरपुराष्ट्रिमंकः आत्मानमेवस्वाविद्यपाप्रुश्र-
पृकाकाकानानवषविष्टइत्यर्थः॥ एवमेवयोगीमोद्वापाद्विप्रतीनाहहिनावादविमोक्षं॥

आत्मानमभ्यवयंदैवपृष्टक्रतिप्रसवंप्रसंवितार्कं॥ पृष्टंवविश्वकर्माणंसनवयोगंप्रकाशताम्॥ १८॥

जैवीरुहिंनदलप्रविपणस्वस्पष्ठामवद्विमाद्विस्पमृपृकंसंगरह्मति॥ विश्वकर्माणमिति॥ वि
श्वकर्माणमिति॥ विश्वंसृष्टिप्रमेजोरूपंसवृष्टनूवाच्यवाष्पाकृपाहिहृपंप्रसवृष्टनूवाच्यंचे
मोवमाद्विहृपंकमेंडृष्ठादिवक्रियाफलमृतंयस्येति विश्वकर्माणमेवं विशेषणौरेवसृष्टं
एवजीवभावंप्रदर्शनतिद्वृम्पापमपिनेरेवप्रत्यापयतिस्व[illegible]मेवयुर्मसानवैरा
गणमृहेनयोगाः प्राप्तिरपूर्तंसनवनः प्रष्टमावप्रामावा[illegible]इप्रणवाप्त
वर्णिसंहृपंनाच्यवाचकयोरभेदान्प्रणवमात्रापिका[illegible]त्रामिहृदि
नाभिमनरुर्षेमूनाविपद्वृहृंजानयोमिनवीयाह्यः प्राणंतंरंतिमोक्षः॥ १९॥ ॥

१२१

श्रा हृयस्तमोघमानीयश्राद्गमेनिपादेश्चयिदिव्य ॥ १ ॥ [illegible] वीस्पमानोवा ॥ २ ॥ ॐ नेमीनस्य ॥
॥ ५ ॥ सुनाविलेनियत नरनिस्पलदेहयोर्ने नामरणयाशनि: [illegible] सेघस्यात: नागात् नोकिंतेनद:
नराभ: नीवस्पासरोपिनुगाक तत्त्वाभावाद्नपाखस्प लि [illegible] ध्यानेपपाजिरेतेनक मेहाय
पिन्नगान तेनेनोवस्पालागलेगवारीनद्वनोनिवनिमिननस्मा [illegible] नोस्पवेनेनिदपीने

श्रुणुमीमार च रान्पेनेनिरवाल: समस्तृया पण: ॥ सपूर्मेमाहृयपरामहृथिविदमनकवान् ॥ १ ॥
रपीकवामयवात्यानिहृतेकपांकनिव ॥ नकिलिंबस्पवेयमेनासमापमहस्पे ॥ २ ॥
नमोसद्गस्पसनिनेकस्पाचे हाननवनप: ॥ गतीयानजान्नामवप: सर्वभूतवपाधन ॥ ३ ॥
नस्पानेकिलिपोधमेस्पद्यानेनुनिपाश ॥ नेनपापे [illegible] यमिष्वद्योनावजापन ॥ ४ ॥
निसलिरपयुपाणपपामीतनवकिलिपो ॥ सेवयोमनिवस्पलनतेसलोगवलुपान ॥ ५ ॥
स्पोंवकेनिकसपांनतेकर्षीमहावल: ॥ सदतेकवंवविष्ठलंकरलोयोनिनानन ॥ ६ ॥
श्रुनग्रहृथेलोकनांविस्पलोकनमहक्त: ॥ च सदेवातदेवचांप्राडभूतेमहायपा: ॥ ७ ॥
श्रुनाविलिनियनेदेव: सकनेजपान:श्रुभ: ॥ पपाकमदांडसपयानेत्रिवगणमक ॥ ८ ॥

मयाकं श्रवाकनेकिंसेवमेकावलंहमाखेनयोर्नेयदोनेस्पमचोपयोगिनिनधावर्नेथनि
श्रुलातिनिनवारन्यारिणविनानानवपोद्धवगुन्कएनेनयाहिस्पलासस्नकारणादेहस्पाव ॥
नेनेनतेपद्धार्थपोपाडक: ॥ श्रन्पयाभगवतिनजनामलमसकेतहाराकवमाविलनियनेनिविपे ॥
घणमनपपवहलस्पदार्थमाह ॥ वहाहस्तमयानेप्रधोयनेमिन्नवेमितिनयस्पानेत्रिगुणमान

स॰भा॰
श्रा॰प
१२८

विपाकादि प्रयोगकषालो ॥ ७ ॥ द्रोणकंगिरि द्रुर्यं पारवलं वानपारलं वेस्कनानदे यो भूनानवेनसः
१॥ वेनाने वेनाश्रि साधो ॥ ८ ॥ ९ ॥ नस्थाइ त्यौ यननमानर्थ मेहं नं त्रेज्ञ दावेव ॥ ९ ॥ १ ॥ प्रक्षेगान्नन

त्रस्व तो न महावी यों मर्व पानविपाकदो ॥ सान्कि: कनवर्मी वनाए यापमनझनो ॥ २ ॥ प्रा
नकाद रिकावेवनजानेहु विपाकदो ॥ भाइानस्य वकेन्न द्रोणा पुक्रमवर्हन ॥ ३ ॥ मदई
कयलपसप्र सानद्रोणो सन्नायन ॥ गोनमानिद्रुनंज नेपा तं मा छुरहन ॥ ४ ॥ प्रयम्या
स्मथ्रुननी कुपश्चे वमहावल: ॥ प्रस्व मा मान नोनने द्रोणो देवमहावल: ॥ ५ ॥ नश्चे वथे
कुप मा पि मादा द्रिसमथ्रुन्ति: ॥ वेनानेकर्मे गिनमेपावका: सजायन ॥ ६ ॥ तो ते द्रोणा विना
पापयनदास्यतीर्थ नान ॥ नवे ववेयां कस्यापि नवे नेनहि नो ॥ ७ ॥ विधाजनमानावपवाविम
नीद्रुपमननं ॥ प्रद्दाद्रिणोनत्न निनवलस्यामवनन: ॥ ८ ॥ नस्य प्रजा पर्मं हे जी नते हे वयको
पनाद गांपायानवत्रो भूवु कनि: हो वलनला ॥ ९ ॥ तुर्यो यनस्य ननन्नीज सानेवे वियार
वे ॥ कमडे पायनानने यनपा द्रुजनेश्या: ॥ १० ॥ वेवे विविच वो छरपां तु श्वे वमहवल: ॥ प
माश्रेकपा लोपो मान्ने पानीयनकस्माथ ॥ विदुर: ष्टुइयानोननने दृपायनादपि ॥ कांदेत
ननिपं वत्रहादेवममा: पृथक ॥ इयो हियो गेला नेष्ट लेघामामासी द्रुपि हि: ॥ यमोदपि
हिरोन नेमादनाश्र दकोदर: ॥ इंद्रास्त्रवनंजय: श्रीमान्सर्वे पा वस्मलांवर: ॥ १२ ॥ नवाने द्रुपसे
पन्नावश्रिमंचयमावपि ॥ नकुल: सहदेवश्च गा गुहश्व प्रपतो रनो ॥ १३ ॥ नया पुत्रपाने
नते पुनरा द्रुस्यामित: ॥ इर्यो यनप्रश्नवयो पुत्रन्ना: कराणहस्ता ॥ १४ ॥

विदुरजन्मोक्ति: ॥ ९ ॥ ११ ॥ १२ ॥ १४ ॥

१२८

127

एतेषु कनमोम्याख्यः प्राप्य इन्द्रलप्राह ॥ अनेन तिमिनिरेशनः [illegible] रिक्तिनवोपि

त्यक्ते ॥ ननननदेव म्याण्यांसदेवधामानेन्यमवपिप्रतिम [illegible] ॥ एवन्तमिति ॥ [illegible]

रेधानाणे ल्लीम्याण्डिकमनेनननतिनिमाव ॥ नन्वेचकारणे [illegible] मेवस्यानेनमाह

देवधेनस्यानेविरूपमिन्यश्चेः ॥ एवंनचेकरवीनद्वाणमवद्यविनिदेवि [illegible] णेनयोप्रमिन्

न्मानवेवद्वाणेनरमाह ॥ [illegible] नवद्यविलोपि [illegible] नीनिसोपिद

[illegible] ॥ एनद्विप्रहभानन [illegible] विभिन्नरिभाव [illegible]

[illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥

128

[illegible]

१९ ॥ प्रत्ययधमनत्रानाञ्च पवनस्य च मूर्तिमान् ॥ ४ ॥ एवं ब्रह्माणि स्पृष्ट्वा ॥ ५० ॥ तद्भूते: कृत्स्नं प्रधानात्मन: प्रधा
नत्वयो ऽप्रात्मा मनोप्रपत्तनस्य ... योगानां ह्रि प्रधानजपिन: सर्वत्तत्त्वं सर्वपाणि नं च भवतो
निष्पत्तिं सर्वतत्त्वनाविद्दिनकिंचिदस्तीत्यर्थ: प्रधानात्मन: कारणात्मनस्तद्भूते: कृत्स्नमिति निर्वे

नमो महीमहीधाय महात्मने यथोदिता ॥ ज्ञानानन्दपूर्णं देवं सर्वभूतपितामहं ॥ ५ ॥ प्राहे
तं तमहात्मानो देवद्विजमहर्षिभि: ॥ द्दृष्ट्वा देवं ब्रह्माणं लोककर्तारमव्ययं ॥ ५ ॥ तं पर्वैरभ्य
भिष्टु देवकर्मत्तनिश्चितै: ॥ विधमानं मरोपने देवं वदे चैनमभिनम्र ॥ ५ ॥ प्रत्यविनायथा मा
य भूमिलेपपदानाश्चिनो ॥ मनिषो लोकपालानां सर्वेषामेव भारत ॥ ५ ॥ तत्प्रधानात्मनस्त
र्वभूतै: कृत्स्नवायमवा ॥ पूर्वमेवाभवद्दूतलाविदितं परमेष्ठिन: ॥ ५ ॥ तत्प्राह द्विजयान: कस्मा
त्सं त्रयेन भारत ॥ मम राहर लोकानामस्त्वेषां मनो गतं ॥ ५ ॥ नाम वाच महात्मनस्म
िं भूमिपति: प्रभु ॥ प्रभव: सर्वभूतानामीश: शंभु: प्रजापति: ॥ ५ ॥ उवाच ॥ यत्रस्थ मभि
संग्रामामृतं का ... वरं ततो ॥ नद्दृष्टमनितो साक्षिर्वानेवहितौ कथं ॥ ५ ॥ तत्का हमह
देवो ब्रह्मा नन्विहस्यच ॥ आदिदेवात्तदा सर्वो न्विवृथा न्भूतकृस्त्रय ॥ ५ ॥ ततस्तामभूमेनि
ध्निं मां भगो: पुत्रककृतव ॥ प्रत्यानेव ... विरोधायेति चादवीन ॥ तत्रैव वृत्तः
मानीयता पर्वी ... ॥ ब्रह्मा च भगवान्प्रतिनिरवचन मर्थ तत ॥ ५ ॥ देवे: देव ...
प्रत्ययं ... मानवेष्वच ॥ अथ प्राक ... स्य: सर्वेषु ... [illegible] ... च प्रा
र्थ: ॥ ५ ॥ नदेवाह ॥ सहस्राणि ॥ ५ ॥ प्रत्यविमनिलमाह ॥ [illegible] ॥ ५ ॥ ५ ॥ वि
रोधाय विरोधमुपलकायस्तमानाप्रायेत्यर्थ: ॥ ५ ॥ नत्वा ... [illegible] ... हि

स० भा०
शा० प०
२३-

१२९

[illegible]

[illegible]

१०॥११॥१२॥१३॥१४॥१५॥ जलवन्तः प्रख्याताः॥१६॥१७॥१८॥१९॥२०॥२१॥२२॥२३॥२४॥२५॥२६॥

ब्रह्मणो मानसाः पुत्रा विदिताः षण्महर्षयः ॥ मरीचिरत्र्यंगिरसौ पुलस्त्यः पुलहः क्रतुः ॥१०॥
मरीचेः कश्यपः पुत्रः कश्यपात्तु इमाः प्रजाः ॥ प्रजज्ञिरे महाभागा दक्षकन्यास्त्रयोदश ॥११॥
अदितिर्दितिर्दनुः कालादनायुः सिंहिका तथा ॥ क्रोधा प्राधा च विश्वा च विनता कपिला मुनिः ॥१२॥
कद्रूश्च मनुजव्याघ्र दक्षकन्यैव भारत ॥ एतासां वीर्यसंपन्नं पुत्रपौत्रमनंतकं ॥१३॥ अदि-
त्यां द्वादशादित्याः संभूता भुवनेश्वराः ॥ ये राजन्नामतस्तांस्ते कीर्तयिष्यामि भारत ॥१४॥
धाता मित्रोऽर्यमा शक्रो वरुणस्त्वंश एव च ॥ भगो विवस्वान्पूषा च सविता दशमस्तथा ॥१५॥
एकादशस्तथा त्वष्टा विष्णुर्द्वादश उच्यते ॥ जघन्यजस्तु सर्वेषामादित्यानां गुणाधिकः ॥१६॥
एक एव दितेः पुत्रो हिरण्यकशिपुः स्मृतः ॥ नाम्ना ख्यातास्तु तस्येमे पंच पुत्रा महात्मनः ॥१७॥
प्रह्रादः पूर्वजस्तेषां संह्रादस्तदनंतरं ॥ अनुह्रादस्तृतीयोऽभूत्तस्माच्च शिबिबाष्कलौ ॥१८॥
प्रह्रादस्य त्रयः पुत्राः ख्याताः सर्वत्र भारत ॥ विरोचनश्च कुंभश्च निकुंभश्चेति भारत ॥१९॥
विरोचनस्य पुत्रोऽभूद्बलिरेकः प्रतापवान् ॥ बलेश्च प्रथितः पुत्रो बाणो नाम महासुरः ॥२०॥
रुद्रस्यानुचरः श्रीमान्महाकालेति यं विदुः ॥ चत्वारिंशद्दनोः पुत्राः ख्याताः सर्वत्र भारत ॥२१॥
तेषां प्रथमजो राजा विप्रचित्तिर्महायशाः ॥ शंबरो नमुचिश्चैव पुलोमा चेति विश्रुतः ॥२२॥
असिलोमा च केशी च दुर्जयश्चैव दानवः ॥ अयःशिरा अश्वशिरा अश्वशंकुश्च वीर्यवान् ॥२३॥
तथा गगनमूर्धा च वेगवान्केतुमांश्च सः ॥ स्वर्भानुरश्वोऽश्वपतिर्वृषपर्वाजकस्तथा ॥२४॥
अश्वग्रीवश्च सूक्ष्मश्च तुहुंडश्च महाबलः ॥ एकपादेकच[illegible]महोदरौ ॥ नि-
चंद्रश्च निकुंभश्च कुपटः कपटस्तथा ॥ शरभः शलभश्चैव सूर्याचंद्रमसौ तथा ॥ एते ख्या-
ता दनोर्वंशे दानवाः परिकीर्तिताः ॥२५॥

कृ न त्वया: कृ न नियमा: ॥ ५२ ॥ पृष्टु वायें चिने त्वया: पृष्टु [illegible]
यश्य म: पृष्टु व तो चिने त्वया इ निपादे च त्व पा हो का रां न: [illegible] ॥ ५४ ॥ अ [illegible]
न्नेध्या ना र त्व न या इ त्व णो य स्य स: ॥ ५३ ॥ या य न्नो घ कं द त्व कृ [illegible]
श्र स्थ ने स वं यो यो: वै सां न भ सिं कृ न त्वया: ॥ ना य या ण म [illegible] ॥ ५५ ॥
त: स च कृ मा स या ति: पो न चा स: शि ने म भ: ॥ प कृ ना भ: स या जि: पृष्टु व त्वा चिने व णा:
यन्ना प लि प नि रें व: स ल ना थो म स्ह व्ल: ॥ [illegible] ॥ ५६ ॥
ने भ व: [illegible] ॥ [illegible] ॥ ५७ ॥
प दं [illegible] ॥ वे शं या य न्ना ॥ [illegible] ॥
न वं म ही [illegible] स: ॥ ६० ॥ [illegible] ॥
ने गा म न न [illegible] ॥ ६१ ॥ [illegible] ॥
[illegible] ॥ ६२ ॥ [illegible] ॥
न क्रि र ज [illegible] ॥ ६३ ॥ दा न वा [illegible] ॥
[illegible] ॥ ६४ ॥ [illegible] ॥ दे व दा न [illegible]
[illegible] ॥ न त्ना [illegible] ॥ ने न मे ज य इ वा च ॥ [illegible]
[illegible] ॥ मा न वा ना च [illegible] ॥ ६७ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ६८ ॥ [illegible] ॥ ६९ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ७० ॥ [illegible]
[illegible] ॥ वा त्वो पि [illegible] ॥ ७१ ॥ [illegible]

५७॥ आग्रहात्वैयत्नंनिधानिनिधादेवादात्तौडवैधोविधांवालत्नंनिधो॥ ५८॥ आ ... पुः॥ त्रसात्माइति

नथाथाकालिविधायानत्नत्रोनेत्वस्यचवर्द्धेषा॥ कलिः पंचदृष्टासेकांनाद्रष्टोवयोऽतथा॥ इत्येतेदे
वतागंधर्वासोनेयाःपमिन्द्रीर्लिना॥ आगत्रभत्नात्मत्मानिकोनेयिथ्याभिमारत॥ त्रत्नवथात्मत्नचं
द्यांत्रसानांत्मार्गात्रिया॥ ५९॥ अत्रत्नात्मामांथासमितिप्राथाध्नायत॥ विंदुरुत्मच्चवह्रीच
दुर्गात्रस्थमहाथपता॥ ६०॥ नहानाचारीत्तिपुत्राःस्वपतोश्चेवहत्नस॥ विष्णावहृतस्यभानुश्चवंचं
द्रोदृश्यामत्नथा॥ ६१॥ इत्येतेदेवागंधर्वाःप्राधायाःपरिकीर्तिता॥ इमंत्नस्यसांवर्षंविदितुंपुप्प
लत्वांत्॥ ६२॥ प्राधात्नत्नमहामायादेवीदेवर्षिनःपुरा॥ अनेंपुधामिश्रकेशीविश्रुतातोनिलो
तमा॥ ६३॥ अरुणान्वहिताथैवत्वंमानहृत्नानोरमा॥ केशिनीवत्नवाहुत्रयतसभामरतानयथा॥ ६४॥
सुप्रियावालिवाहुत्रवितोलोचद्याहाहाहूहू॥ नत्रभश्रेनिवन्यः त्नत्नातांयर्वसत्नमा॥ ६५॥ आप
नत्रात्नत्नामालेभंयर्वासाससत्नथा॥ अपात्नंकथितानामत्नपुत्रागयाधिकीर्तिता॥ ६६॥ इतिसर्वं
भूतानांसंभवःकथितोमया॥ ... मानवस्यपरिख्यातोगंधर्वासरसांतथा॥ ६७॥ भरतानांनामय
तोत्नांतसवंतोतत्नथा॥ गवांचत्रासात्नानांचश्रीमतांपुत्यकर्मणां॥ आयुष्यंश्चैवपुत्यंच
श्वायत्नःश्रुतिहृत्नावहं॥ श्रोतव्यश्चैवमतनंश्राव्यश्चैवानसूयता॥ ६८॥ इमंतुवंशंनियमेन
यःपठेन्महात्मनांब्राह्मणदेवसन्निधौ॥ अपत्यलाभंलभतेसपुष्कलंश्रियं ... यशःप्रेत्यचशो
भनांगतिं॥ ६९॥ इति श्रीमहाभारते आदिपर्वणि संभवपर्वणि ... [illegible] ... अंशावतरणे
कारणंत्नानाःस्यात्पतोष्वोर्तिःपरमनेतमः॥ ७०॥ ... [illegible] ... श्रीं

त्रात्मर्हर्षयःस्थातात्मत्नममसत्निवोधमे॥ नत्वादौख्यातात्मसत्नतिमेवाह॥ एकादशेति॥ ७१॥ ७२

231

[illegible]

स·भा
स्का·प
२३३

न दद्वयोर्गिन्योन द्वयनामयुक्तः विधानतः विधानार्थमभवत् ॥ येनामहोदेवोयमः पितामहस्त
नोऽज्ञाननाशनस्य पितामहस्य पुत्रो दक्षः तदं [illegible] ॥ नष्टसंबंधिनी [illegible]

सर्वानन्दस्य योगिनो लोकपाना विधानतः ॥ येनामहो मनर्देव तस्य पुत्रः प्रजापतिः ॥ नष्टाहो
वसवः पुत्रा [illegible] ॥ २॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ३॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ४॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ५॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ६॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ७॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ८॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ९॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ १०॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ११॥

[illegible] ॥ [illegible] वसवः पुत्रा
[illegible] ॥ १२॥ [illegible] ॥ [illegible]
कन्या [illegible] ॥ १३॥ २२॥ [illegible] ॥ २७ ॥ २०॥ २८॥ २२॥ २१

सामस्यनुसतोऽवर्वाथ
र्वीयेनजायते ९

232

[illegible]
लोकम [illegible]

२३३

योगाचार्योतिकायो महालो हरात्मा मपिच महाद्रिनिकेतः ॥ देवानां महादेवयोगाचार्योयोगवलेन
कायस्थं कुर्वाणानां मम यागाचार्यः भवद्विवर्धः ॥ नथाच वैशपश्चेते समाख्याता ॥ रहस्योनि हिंसु

स्वयंभवानि पुनः सत्यम् भवं पापि पावनि ॥ योगाचार्योम हाबुद्धिर्द्दैमानाममवस्तुतः ॥ महात्मा
चापिमेधावी ब्रह्मचारी पतन्नतः ॥ ४५ ॥ नलिनितिथुके विपिनायोगा देसायभाषेदे ॥ अंतम स्या
दयामाम पुत्रंस्य गतिर्दिनं ॥ ४६ ॥ अवनंदी मनवकं यमी मानंय पशाहितं ॥ यस्तु योगस्तु तोग
मीमाना नमौ लायमारल ॥ ४२ ॥ पामुपीन मनोः कमानमपवत्नीम नी विधाः ॥ दैवेलस्योंस मम
वहूर्ह भिनामहायपा ॥ ४८ ॥ महात्मेनामहावीर्यो नालएव मुयोशन ॥ बूदीकलस्य पुत्रस्त
नमहाप्रिलातो भवल ॥ ४९ ॥ नमहाग्रे लुचनाम प्रापतन्यामहात्मनः ॥ रामलोकंनच योभूद
नयनो मत्योद्युनः ॥ ५० ॥ सर्वेषामेव पुरुषाणां चविर्यानकरोवशी ॥ डोवेमालीस्त्रपानेन म
हृष्णि पयोगामं ॥ ५१ ॥ नेषांपुत्रमहासाविवम्रु भूमेविविलवं ॥ ५२ ॥
सहस्रनामः विः

कोभूतेश्च सस्य मयाया: सोभ्यः वयाय सम्मानि सौ ... ॥ ५३ ॥

१०॥ अथ यातिं ॥ अथ यथेस्तनानां सर्वेषां नानाम्नायः न्यथैकानि ॥ [illegible] ॥ [illegible] लोकानि [illegible] नाव [illegible]
सिकयाप्युक्त प्रदेयान ॥ ०१ ॥ अथ लिंगपार्श्वौ दमचः ॥ एक [illegible] निमाः प्रमापनिवच [illegible]

भूपणानं च सर्वेषां कर्मे शिल्पवनो वरः ॥ यो दिशानि विमान [illegible] ॥ २९ ॥ मन पा
शोपनीवं नियक्षिप्ति लोमहानन्तनः ॥ एवं नियंत्र निरूपितिष्ठक मागम [illegible] ॥ लोनतदिवि [illegible] मिता
अस्य णोनरविग्रहः ॥ निःस्त्रोममध्ये सर्वलोकहतावहः ॥ ३० ॥ यत्स्वरूपः शुक्रः सर्वम
नमनोहरः ॥ ३१ ॥ शनिः कामथ्य देवाश्च नेत्रसालोकयाति ता ॥ ३२ ॥ सर्वो वेः कप्यपः शुक्रः कश्यपस्य
सगणः ॥ ३३ ॥ ज्ञानिवेनपश्चार्द्ध लोकानां प्रभवस्ततः ॥ ३४ ॥ नाशीनसम्बन्धिनं भोधावद्वा रूपधारिणी
स्त्रधनमहाभागासंतानो दिव्यानाचभौ ॥ ३५ ॥ कृष्णो वादिनेः शुक्रा सा कृष्ण नाथिगिरि ॥ नेषामव
सुनोविसृज्य लोकाः प्रति दिना ॥ ३६ ॥ अथ लिंग पानानेन देवालेषामहनन ॥ ३७ ॥ [illegible] यस्य प्रवस्थानि
सदैव क लानाम् ॥ ३८ ॥ [illegible] : साधानां सहतान्तथा ॥ वसनां भागेव विधादि
यो देवानां लच्छेचच ॥ ३९ ॥ देनने [illegible] स्तवान [illegible] ॥ [illegible] निशभगवानादि [illegible] व
गणनेः ॥ ४० ॥ [illegible] नो गणकानि दिसर्वी [illegible] ॥ ४१ ॥ एनेदे [illegible] नासेन
पूर्वेण ॥ ४२ ॥ [illegible] नानिः सर्वपापैः [illegible] ॥ [illegible] निः स्त्रो भगवान् [illegible]
४३ ॥ [illegible] शुक्रः कविर्विश्वः कविहृतो ग्रहः ॥ [illegible] लोकानां [illegible] ॥ ४४ ॥

कास्त्रो ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ [illegible] देवलोकानां [illegible] कार्येनिशुक्रः ॥ ४७ ॥ राम

म॰ भा॰
स्त्रा॰ पं॰
२३५

234

ननु केवलविद्यायथाकर्मवैचित्र्यान्निस्रेयसप्रवृत्तिनत्वात्‌ कर्मिणन्यलेऽपासनाजन्यत्वेवाः निःस्वनापत्तिः
प्रकारान्तरस्यचाभावादित्याशंक्याह ॥ तयोरेवेति ॥ यथाशीघ्रं रोहमाणत्वरेत्रं कर्मकर्मे
मन्यमानकर्मेवाश्रयोऽनश्चेवेवंविधेनिस्वाहस्वयंकलहयाहेनलयानेदेवीनमानान्स्वहस्तनमधीषु
ब्रह्मलक्ष्मीनिवासस्यानन्तोऽपि वृत्तिः स्वामस्वनिनिवासस्याहनिदेवानमनिवस्यभावंतीवस्यमेव
रथेनीलवल्लीः पावसोपलनककनानपद्मसहहदयगहाराप्रमेवस्फुरतीभूमावेयनिवर्तकनान
वैवंश्रुतिनिविषयलेऽस्यरणेनानामलेवहश्रियस्याहितिनिवासोहनिमायानेपिफलस्यमनानंनीक

तयोरेवबलसादेवीलक्ष्मीः पद्मगृहस्तथा ॥ न
प्रोक्तमानमाः पुंसः नारायणोऽभिचारिणः ॥२१॥

रायशोकं ॥ फलदायान्नमेवाश्रयशास्कन्नं ॥ अस्यास्तलाकनापयहनिस्रायश्रियमेवस्यनेहरिः ॥ तथा
चवलननविषयत्रियोवविद्यासुविद्यानस्लिकालकर्मायालिकयाहेनालिनायस्याहितिभावः॥
त्वाः फलमाह ॥ तस्याहेति ॥ तस्याः विद्यायाः पुरुषार्थपुरुषाः फलानिस्रायस्याः मनः संकल्पमात्र
जस्याः पितादयः संकल्पादेवास्यभिनरः स्वयं निष्ठनो लिखते ॥ [illegible] विरः नरमाः सद्यो
मनः संकल्पमेवयनोऽभिमचारिणः अभिहार्ये कायेवाहितः स्याश्चर्यवे तहब्रह्मलक्ष्मीनिवास
कैंभवतीनिस्य नेदेहस्तनानामंवानंतहीयमस्वगहतनः ॥ स्वर्गपुरुषविहालीसर्वैः ॥ तस्मादयमेव

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

हेतुश्चैव [illegible] ॥ [illegible] ॥५०॥

[illegible] ॥ [illegible] ॥५०॥

म॰ भा॰
आ॰ प॰
१३६

135

पिंडफलान्मम[illegible]लालहिंतालीतालीवर्जूरीकानफागकाकोनारिकेलम्रमपिंडफलाद्र

बिमलामपिमदंनेग्रमलामपिमायन॥ तोहिएकालतिरेगवोगंधर्वावाजिनः मनाः॥ समपिं
डफलान्नवाननलापितिमायन॥ [illegible]॥ ग्रमलाघाः[illegible]कलह[illegible]मामनः॥ [illegible]
र्यापुत्रेनीनवीर्यवंतोमहाबलो॥ [illegible]॥ तेयातिजननयामास[illegible]
नरूः[illegible]लपन्नगान॥ [illegible]॥ [illegible]विननाया[illegible]विख्यातो[illegible]॥ [illegible]लानाम
नलापिप॥ [illegible]॥ प्रमवः कीर्तितः[illegible]यामनिमलां[illegible]॥ [illegible]
पालः सर्वेजनाचलमनेगनिमयांच[illegible]॥ [illegible]॥ [illegible]॥
[illegible]॥ देवानां[illegible]नवानांच[illegible]॥ [illegible]
नविग्रो॥ [illegible]॥ सर्वे[illegible]भूतानां[illegible]॥ [illegible]
[illegible]तानां[illegible]॥ [illegible]॥ [illegible]भूताये
[illegible]॥ [illegible]॥ [illegible]निविख्यातो[illegible]
[illegible]॥ [illegible]॥ [illegible]
वधेम॥ [illegible]निविख्यातः[illegible]॥ [illegible]॥ [illegible]
नः॥ [illegible]लोके[illegible]॥ [illegible]॥ [illegible]निविख्यातः[illegible]॥
[illegible]निविख्यातो[illegible]॥ [illegible]॥ [illegible]॥
[illegible]निविख्यातः[illegible]॥ [illegible]॥ [illegible]कीर्तितः॥ [illegible]
भिविख्यातः[illegible]॥ [illegible]॥
[illegible]
[illegible]॥ [illegible]॥ [illegible]॥ [illegible]॥ [illegible]॥ [illegible]॥

महतां॥

१३६

[illegible]

म॰ था
भा॰ १
२६०

236

सगरोजितभद्रः ॥ १ ॥ प्रद्युम्नसेनो नाम चक्री कः सर्वभूवनाधिपः ॥ चंद्रशिरिति निजघोषो लोके नामधिपोपमः
चंद्रचूडमेति विख्यातः कांचोत्सनोन्नताधिपः ॥ ३ ॥ मेघरथमिति विख्यातो गजराजवलपंगवः ॥ ४ ॥ इतः खिदेवेन्द्रा ॥
सागरचिंतभुवनरथपतनम् ॥ सुरनयानिति विख्यातो रविप्रभो रत्नरोगमः ॥ सुविशिष्टपदकविहितनरथनरथ
सनम [illegible]नवाइति विख्यातो विश्वसेनमहासेनाख्यः प्रद्युम्नो नमस्कारः ॥ ५ ॥ इमसेन इति ख्यातः पृथिव्यां
सोमवंशपः ॥ मघवइति विख्यातः श्रीमानमहाप्रभः ॥ ६ ॥ नमिश्च इति विख्यातो नवमः पृथिवीपतिः
सनत्कुमारइति विख्यातनरस्यात्मवरजलनिधय ॥ ७ ॥ कालकौशिक इति ख्यातः पृथिव्यां सोमवंशपः ॥ चंद्रदेवो
नितलेषां कौशिनः प्रचलोपमः ॥ ८ ॥ अनंतसेनो नाम राजर्षिः सर्वभूवनाधिपः ॥ विनायकनलचंद्रप्र
यशायशोजो महायशाः ॥ ९ ॥ नानकि नाम विख्यातः सोमवंशनजाधिपः ॥ दीर्घलिङ्कल कोरव्ययशः
दानवर्षमः ॥ १० ॥ कशिराजः सविख्यातः पृथिव्यां पृथिवीपते ॥ श्रेयांसं सर्वदेवेनविंशकार्केङमः सैन्ये
सुकाख्यइति विख्यातो वंशभवमनजाधिपः ॥ ११ ॥ अनागुप्तस्त्र ग्रामणि च नगरी प्रवरोत्तराः ॥ विक्रमो नाम
नेनहीवहमिषेणन्पः श्रुतः ॥ १२ ॥ द्वितीयो विद्यावलनराधिपमहाप्रभः ॥ जितशत्रुसुप्रसिद्धपइति विख्या
तः सोमवंशपः ॥ १३ ॥ विजीनइति ख्यातो यशस्वी दमयोनमः ॥ पोडुमक्लकाइति वंशभवमनराधिपः ॥ १४ ॥
सुवर्णाभिविख्यातो यशश्चानन्दशर्मः ॥ मणिमानाममगरनर्षिः सर्वभूवनराधिपः ॥ १५ ॥ कृष्णहसेनिय
लसुवंभवा वज्रोसुरः ॥ १६ ॥ रूपाभिविख्यातः सुप्रासीदरूपतिः स्थिरो ॥ १७ ॥ क्रोधवर्धनइति येयशस्वर्मंपौ
कौशिन ॥ १८ ॥ धर्मइति ख्यातः सोमवंशजनर्षभः ॥ १९ ॥ कालेयनामहस्तेन्द्रः तेषामप्रीतनराधिपाः नमि
रामनगाईलगाईलप्तमविक्रमः ॥ २० ॥ सत्यसेनघनलेषामाबीमन्या [illegible] ॥ प्रभानामप्रवलेषां का
लेषानामहाप्रभः ॥ २१ ॥ द्वितीयप्रलनलनलेपाश्रीमानस्मि हयोयमः ॥ [illegible] ॥ [illegible] सर्वभूवनराधिपः ॥
स्तीयपलमहासेनाम महामयोमहाप्रभः ॥ निषादपतिपति [illegible] ॥ २४ ॥ तेषां मम्यानम
यशश्चवनर्षेः प्रतिकीर्तिनः ॥ श्रीतिमानितिविख्यातः स्थितो [illegible] ॥ २५ ॥ देवमर्त्यमवने पाषा
वणीयो महाप्रभः ॥ महसेनाइति विख्यातो वंश [illegible] ॥ २६ ॥ [illegible]

२६०

म॰ भा॰
आ॰ प॰
२३८

237

२२ ॥ अथेति ॥ यद्योऽदितो भास्करे भृत्यादौ स्वाव्यवतिमंगकानान्तमामेत्यते भोक्तुरकार्यकारी

जहिरेवसवप्तं वेगंगमगयंशंतनोः सुताः ॥ वसिष्ठस्य च शापेन नियोगाद्वासवस्य च ॥ २५ ॥
तेषामवरजो भीष्मः कुरूणामभयंकरः ॥ मतिमान्वेदविद्वाग्मी शत्रुपक्षक्षयंकरः ॥ २६ ॥ जामदग्न्ये
नरामेण सर्वास्त्रविदुषां वरः ॥ योऽयुध्यत महातेजा भार्गवेण महात्मना ॥ २७ ॥ यस्तु राजन्कृपो नाम
ब्रह्मर्षिरभवत्क्षितौ ॥ रुद्राणां तं गणाद्विद्धि संभूतमतिपौरुषं ॥ २८ ॥ शकुनिर्नाम यस्त्वासीद्राजा लो
के महारथः ॥ द्वापरं विद्धि तं राजन्संभूतमरिमर्दनं ॥ २९ ॥ सात्यकिः सत्यसंधस्तु योऽसौ वृष्णिकुलो
द्वहः ॥ पक्षात्स जज्ञे मरुतां देवानामरिमर्दनः ॥ ३० ॥ द्रुपदश्चापि राजर्षिस्तत एवाभवद्गणात् ॥ मा
नुषे नृप लोके स्मिन्सर्वशस्त्रभृतां वरः ॥ ३१ ॥ ततश्च कृतवर्माणं विद्धि राजञ्जनाधिपं ॥ जातम
प्रतिकर्माणं क्षत्रियर्षभसत्तमं ॥ ३२ ॥ मरुतां तु गणाद्विद्धि संजातमरिमर्दनं ॥ विराटं नाम रा
जानं परराष्ट्रप्रतापनं ॥ ३३ ॥ अरिष्टायास्तु यः पुत्रो हंस इत्यभिविश्रुतः ॥ स गंधर्वपतिर्जज्ञे कु
रुवंशविवर्धनः ॥ ३४ ॥ धृतराष्ट्र इति ख्यातः कृष्णद्वैपायनात्मजः ॥ ३५ ॥ दीर्घबाहुर्महातेजाः प्रज्ञा
चक्षुर्नराधिपः ॥ मातुर्दोषादृषेः कोपादंध एव व्यजायत ॥ ३६ ॥ अत्रेस्तु सुमहाभागं पुत्रं पुत्रवतां वरं ॥
[illegible] ॥ स पांडुरिति विख्यातः सत्यधर्मरतः शुचिः ॥ ३७ ॥ कुंतीसुतं महाभागं तं त्वं तत्त्ववतां वरं ॥
विदुरं विद्धि तं लोके जातं बुद्धिमतां वरं ॥ ३८ ॥ कलेरंशात्तु संजज्ञे भुवि [illegible] दुर्योधनः दुर्बुद्धिर्दुर्म
[illegible] कुरूणामयशस्करः ॥ ३९ ॥ जगतो यस्तु सर्वस्य विद्विष्ट [illegible] पापतमोमा

नप्रात्पायद्रतेषाहेनसर्वा महती नस्य [illegible] धर्मविद्विष्टहृदी महर्षे ॥ ॥ ४० ॥ [illegible] ॥ ४१ ॥

धर्मेः

२३८

म॰भा॰
आ॰प॰
२३६

238

न यदृश्याय यदृष्टे सौवर्णानमनेन च ॥ यथैव संगीतकं नयनं विधिहि राननु यिषिहि ॥२१॥ भीमसेनेन चा
नष्टे द्वैव राज्ञस्य चार्जुने ॥ अग्निनोप्लनजैवं यौ नृपेण प्रतिषेधितः ॥२२॥ नकुलः सहदेवश्च सर्वे
भूतमनोहरौ ॥ यत्र वरौ इति श्रोतः सोमपुत्रः प्रतापवान् ॥२३॥ लोमिमृत्यु हेतु स्त्री निरंजनस्यतनो
भवत् ॥ यच्छ्रावणं तेयो राज्ञस्य राक्षसो मोक्षवीहिदे ॥ नाहं दृष्टा प्रियं पुत्रं ममसद्भागौ यंस ॥ ममपुः
क्रियतामेघनथाकामनिर्वातिते ॥२४॥ नारकर्थं हि नः कार्यं महता हि तो नौ वपः ॥ न त्वया स्मृत्यं
वर्जानचक्षुष्यास्यति वैचित्रं ॥२५॥ ऐतैहि नैशलभ विनाशयच्छनाशयगः सहं ॥ सोर्जुनेनस्मि विद्योतः
पार्थैः सुतः प्रतापवान् ॥२६॥ न सख्यायं मम विनाश्र्यो चालोम विमहाछु ॥ न च षोडशवर्षाणि स्थास्य
तारैसेन न मा ॥२७॥ अस्यघोश्च वर्ध स्व हे स्वयं मोभविष्यति ॥ यद्वा पृष्टं कर्तुं छन्निक भिवीरनि ॥
हूदने ॥ नरनारायणाभ्यां न समं सर्वमो विनाकृतः ॥ चक्रस्य दूरमास्थाय यो प्रविष्यति वः सताः ॥
विमलोत्स्त्राद्रवान् स्वर्वान्यायविष्यति मे हतः ॥ बालः प्रविष्य चक्रव्यूहं मम मेधं विचरिष्यति ॥२८॥ महा
रथानां वीराणां कदनं च करिष्यति ॥ सर्वेषामेव ज्ञातीनां न भविष्यति ॥२९॥ दिनार्धेन महा
बाहुः प्रेतराजपुरं प्रति ॥ नैलेमहारथौ श्रीरेः समेत्य बहुशो रणे ॥३०॥ दिनक्षये महाबाहुर्मया भूयः स
मेष्यति ॥ एकं वंशकरं पुत्रं वीरं जनयिष्यति ॥३१॥ प्रणष्टं भारतं वंशं स भूयो धारयिष्यति ॥ एव
सोमवचः श्रुत्वा तथास्त्विति दिवौकसः ॥३२॥

२३९

मा॰ भा॰ १५

नित्यदृश्यमानानां तैर्वैव पुण्यदत्वभयानुगा ॥ उत्ससर्ज जले कं तीर्थं कमारं यत्पुरास्थितं ॥ ४०॥ तत्प्रभृ-
ति जले तस्मिन्गत्वा पत्नीमहाशयाः ॥ यात्रायां कल्पयामास पुण्यं तत्पापलघ्नं ॥ ४१॥ चक्रतीर्थं मध्ये
यं चक्रस्य चालयन्नाभ्यो ॥ दृष्ट्वा चक्रं प्रयोनिदिव्यं सर्वा विष्णुनं ॥ ४२॥ सर्वपापानां वल्वान्ना
[illegible] ॥ [illegible] ॥ ४३॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ ४४॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ ४५॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ ४६॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ ४७॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ ४८॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ ४९॥
[illegible] ॥ [illegible] ॥ ५०॥ [illegible]
[illegible] ॥ ५१॥ [illegible] ॥
सनत्कुमारं यत्पुरा [illegible] ॥ ५२॥

२३९

[illegible]

महावंशगाति है

प्रमाणान्तरः परमात्मा विषयो न नियमस्याधिष्ठानत्वानुपपत्तेर्नोनियमश्चाप्यविषमेनेति प्रोक्तः ॥ कृष्णेपुंस्त्वा
रगादृष्टेनेष्वंयमावः ॥ यथा शास्त्रे विषयादिविशेषः स्वलोकादानकारणत्वादेनप्रनियतयेकोऽस्येति विषयस्यापा
कर्तृत्वः स्वप्रिष्य नीनां परविशेषपरित्यागस्य कोऽस्येति तथापि स्वरूपेणान्तर्भूतनालिङ्गवमिहृष्टिनास्यावनत्या
नान्तर्यमलिङ्गिकिं नन्तपुराणत्वात्सदैन प्रतिपन्नावेवनन्यथा सृष्टिस्वनीनां विशेषः कस्यमेदो मियायेत्यावाचत्वा

स्वस्यावनत्यां स्वनादेवान्यर्वेरत्वसां ॥ प्रमकाण्याविपाद्येनकृष्णेछपसी इति ॥ ४५ ॥ इत्यादि ॥ वे
स्य स्यावनत्या ॥ मा स मा ॥ नन मेअ यत्वाच ॥ ननः स्व नमिदं त्वान्नेवदानवारत्वसां ॥ स्वस्यावनत्
त्या समस्य गांयवींस्पर्सांनतथा ॥ ५ ॥ मनमय दृष्टामिकृदृत्यावंवपमादिनः ॥ कस्य मानन्तयाविम
विप्रधिगत्यास्मात्रियो ॥ ४ ॥ वेदे पा त्र नत्वाच ॥ योरवात्यांवपाक योउ वनोनामस्वीर्येचान ॥ इति
स्यां चननंनस्य पोमाभरनरूपनम ॥ ४ ॥ चन भींगांभवकृन्ननं योमें कमेवनेष्वा ॥ समस्त्वावत्या
स्या विरे यान्नसमिनिजयः ॥ ४ ॥ स्वन्नेवस्याबपिकान्तस्वान्मभेत्रीयमर्दन ॥ रत्नाकरस्य मङ्गलास्या
नवीयतजननात्वनान ॥ ४ ॥ नवत्यासंकरस्करोनकृष्णाकरस्कृननः ॥ नपापकृतकस्थिरासी नस्मित्रा
जनिपुणसमनि ॥ ४ ॥ पर्मैरतिसेवमानापमींयांवमिपोहिरे ॥ नदानपनरस्याचुतस्मिन्ननपदेस्थरे ॥ ५ ॥
नासीस्त्रीरमंयनानननत्वपाभयमद्देवि ॥ नासीयापिमयंवापिनस्मिन्ननपदेस्थरे ॥ ५ ॥

नीयः उपेवणीयोवास्वार्थेनान्यथाभावादितिदिक् ॥ ६ ॥ ३ ॥ इति श्रीमन्महाभारतकृष्णप्रसादे ... ॥ ५ ॥
चनपेरवं स्यावन्तस्य श्री गो विंद स निह नु श्री ... ॥ ... ॥
यथा ॥ ४ ॥ ननरनि ॥ ४ ॥ वनरेनायाः वनः समस्तावहिन्नायथा ॥ ४ ॥ चनं ... स्वानेनयापियवं
४ ५ नकृष्णाकरस्कृनं स्वपिकृनमवोः कृष्णापवनानन ॥ स्याकरः ... ॥
नकरोनिष्ठस्थिमारनै यांनमिक्ष्यहासानन ॥ ६ ॥ ५ ॥

म भा
आ प
२४२

२४२

140

महागजर्पशय
दमसप
हुनहै

५८॥ १२॥ पन्नवणसुद्देयणासंठाणपयस्सकं॥ १४॥

एवमन्नेमनुस्सेणं । वद्धखेंमाईविहेकसं॥ नतरिवितरवेसिकक्केलेकवविवहेना॥ ५४॥ णाणा
लस्सरसंघोवैमणाणजन्नाकोलिनः॥ नस्समाणाःविनोनरेनियोमाणाससस्सहं॥ ५५॥ नानि
योरशादेवीनांमहस्साकिनणापिए॥ नमवुंमानवेलोकेचाहिदेवपरिग्रहः॥ ५६॥ स्थियन्नभागः
संजन्देमत्थेणपिवीनले॥ भौमाणकस्सकलेमार्धेकविनणेणणनामनः॥ ५७॥ हेदर्दीनयाणं
नलेसवीमाणादनिरिना॥ तुवदसकलेकन्नावेरिमथाणरनिरिना॥ ५८॥ नानिडसानमरनी
नीलोमस्सनगंधिनी॥ पमायनानोमयोसीसवितिचिनमर्येना॥ सर्वलवणगणंसग्गिवे
हूयमसिमविभा॥ एवानगे१कवेंद्राणंविनयमणयनंगरः॥ ५९॥ सिद्धिर्हेतिम्मये रयोएचानो
मानदेननो॥ कंनीमाहीवनणानेमनिलसवनानना॥ ६०॥ तिदेवाहरणांनेगंपवीसर
सानय॥ संणनानणंणनत्रावलनांचकोनिनं॥ ६१॥ होपहिवांकमहमणणनोए६ंके
सः॥ महमनोपहनांचयेननविनेकले॥ नानणः ए विद्यावेणमयानेपरिकोनिनाः
यनंयणसद्वज्ञीयमाउकविनपावहं॥ ॥ दसंणणवनांश्रोनणणननरपुनाः॥ ६४॥

स भा
आ प
१५२

॥ परावायणं पडुच्च गणसंकंनिवायकं सिद्धं ॥ ९ ॥ १२ ॥ अहोनेलकं पारूढं ॥ ५ ॥ ६ ॥ अथ धारछेनपोरुपणा हम

सिंहनादे अयोधानां प्रोत्कुंडमिलिः सनैः ॥ रथनेमिस्वनैश्चैव सन्नाणाबरूहे हितैः ॥ १ ॥ नाना
युधधरैश्चापि नानावेषधरैस्तथा ॥ २ ॥ विन्नसन्नमिश्रैश्च दोहिनासफोटिन स्वनैः ॥ ३ ॥ आसीत्कि
लकिला शब्दस्तस्मिन्नाहूतिपार्थिवे ॥ प्रासादवर्गाच्चानहथाः पदयाल्पशो भया ॥ ४ ॥ दरश्यलो
लिप्यलक्ष्य हस्त्यमान्मथपाकं ॥ पाक्लेयुममन्निमस्त्रारबाराणबारणं ॥ ५ ॥ दधंपनः सीमहाल
चचक्रूपाणिक्रमेणि ॥ अयं महरहस्यात्त्रोरणोवहसपणक्रमः ॥ ६ ॥ यस्य बाहुबलं प्राप्य नभवन्म
हद्रूपाः ॥ इतिनाचो भुवं नलाः छियः प्रेसमानयावि ॥ ७ ॥ नसूद्रः ऋष्यहः प्रीत्यमहहजललयम
धेनि ॥ नवनजच विप्रदेः लगमानः समंनन ॥ ८ ॥ निर्गयोनरमश्रीयावनेसरानिजोमया ॥ जेदे
वराजगतिमंननवारणएप्रांते ॥ ९ ॥ हिनवयियविद्मद्वानिर्याननवनतमिये ॥ दस्पर्यंनेमा
नाहेआशाभिंश्रनयेनच ॥ १० ॥ हद्रमनजमुचेत्रैःशानवदहलया ॥ नवनेनननः पश्या
दनुज्ञानानदेशान् ॥ ११ ॥ स्पर्दितप्रतिमैनायरछेनवद्धयाविपः ॥ सद्वीमाहूयामामचोदिए
त्रिविंनया ॥ १२ ॥ सगहून्दरश्रोधीमावेदनप्रतिमेवनं ॥ विल्लार्कवाह्निकौशिकतिमयध
संकलं ॥ १३ ॥ विश्वमंपवंनमसोरश्मिमिश्रसमाहूलं ॥ निर्जवनिमेन्दछपचवदूयोजननमायने
स्वगसिद्धैर्हलनोदैरदेश्चापिवनेचरैः ॥ नदनेमवज्ञमात्रंः [illegible] दलवाहलं ॥ १४ ॥ दोरयामा
सद्धानः सूदयलिविधान्स्मानं ॥ वाणाणोचरास्वप्रगाजलन [illegible] नाहू ॥ १५ ॥ यानयामा
सद्दः छंतोनिर्विमेरचमायकेः ॥ दूरस्थान्सासद्धेः को [illegible] ॥ १६ ॥

कोल्हं ॥ १६ ७

241

देवे कर्मणि तु प्राप्ते यथ्ये कार्यो यथा सि कर्म व कर्मणि ॥ २ ॥ न देवाद कालेन [illegible] पश्यन्ती च सम्यग्नी तिथौ देयुन
वनी ॥ ५ ॥ वनं वं दन्ननो दृ दे दे ॥ ६ ॥ सवनकालेन च नं न सलेउ पचने कामन्वेच मागः द्वेष विशेषणं दि
पालनाः पैष्णनो यस्न नमस्य गुरं प्रदेवो हरस्य न्यजो नामः विदेशे [illegible] प्रह्वः पारि देवा

स्वयमेव शिरे वर्णे दैवे कर्मणि नित्यशः ॥ न माश्रमन मर्दं पा स्वमाद्वै वाके नो भपाः ॥ काल
वधीव पतन्नः समानि रसवे नि च ॥ सवेवन्न म सहा च मदी पश्यन्ती नवा ॥ ॥ स्विदे [illegible] नि रा
निशानान्नेने पुनि पले ॥ स चाङ्नमहा वो यों च न्वसंहन नो पु वा ॥ ॥ ३ [illegible] दे दो यो व दे
स्वनकालेन ॥ च न [illegible] गादापुदे सचे प्रहू व लो पु चा ॥ ॥ नाना ए वे स्य ए घे च व भू व पविन
शिनः ॥ वले विस्त समस्या सौ ने ज सा भा स्क. तप म ॥ ॥ ॥ [illegible] ने यो व स मः सहि स्वे व पास
मः ॥ स्यं नः समही पान्तः प्रम [illegible] गा पुवान ॥ ॥ भूयो पर्मे पवे यौ चे मे दिनं नन्ना दृ पान ॥ ५ ॥
दृ स्यादिप वे शि पाकं नलो ॥ न न मे ज्ञा या श्री चा ॥ संभवे भा न स्या दृ वा नि च म हा म ने: ॥ पा कं न
स्यादृ चवि ने च म ह म ने ॥ पाकं नला पाश्रो न्य तिष्ठे न शिक्षा मि न व न: ॥ ॥ ३ यों ने न च वी रे
[illegible] पापा म पाकं नला ॥ नैवे पु ह प [illegible] वनि लो न से ॥ ॥ योन शिक्षा मि न व त्तम
देनति मनो वर ॥ ॥ दै वा पाय ना वीच ॥ स कदा चि न्म हा वा क्रः प्रभ न व ल वा दन ॥ वर्न न गा म
गा दन्ने दृ पना गा पा नैवे दे ॥ व ले न व न र गो नै हि तः पाप व न्ना ना ॥ ॥ [illegible] प्राज्ञि य वै वौ रे
द्वा [illegible] ॥ आसनो म दृ स्य [illegible] ने दे न: ॥ ५ ॥

वदृ पु स मं न [illegible] म ले न प न त्तु हे दे पः [illegible] दे कोः [illegible] ने ॥ ॥ ॥ दि पान [illegible] स ॥ ९ ॥
पाकं नलवर्णेनेः पापः ॥ संभवमि ति ॥ १० ॥ चनं गोन दृस्य [illegible] दन वनाव [illegible] ॥ ॥ ९ ॥

म॰ भा॰
आ॰ प॰
१४२

142

लक्ष्म्या पो मया ॥ ५ ॥ नाथ्यपाकोर्णेः अनाहतो न ॥ ६ ॥ कलमवद्ध्या वार्वनः कलमपाखिनः ॥ ७ ॥ मदे दे
पदै नेय जात्य वधजाड्य नगहन्तातः नन सैर्गद्भ जनवरनगदेवा ॥ ५५ ॥ नैवसपारमपिनन्मिद्रूपा ॥ २५ ॥

प्रवहद्विरिरपैहैदेः मलेवल्लाथैः समाहतं ॥ वनदाङ्गिनिवलंल स्थापातमपाधनं ॥ ५ ॥ नाथ्यपा:पा
द्रपः कश्चिन्नाफलोनापिकं रकौ ॥ तद्रपदैर्यापापाकोर्णेः लिप्तिन्नैकाननेयवन ॥ ७ ॥ विहगैर्ना
दितं पुष्पोत्लेखक नमनीवच ॥ सर्वं नेकलमपैहैदेः मलेवल्लाथैः समाहतं ॥ मनोरमं मदेघास्ति वि
वेषाव नमतनं ॥ ५ ॥ मारतनाक विनामन वस्मातः कलमपाखिनः ॥ पुष्पहर्षितिविवितानवसदृंसं
लेपनः पुनः ॥ ४ ॥ दिवस्पृशोपसंवृद्धाः पविभिन्नं पुरस्तैनः ॥ गिरेतःपारपालवविविच कम
तावतः ॥ ५ ॥ नैषानवप्रवालेपुष्पमापवनानिपु ॥ कवैनिपवात्मधुरात्स्वरदामधुलिहाव ॥ २२ ॥
नव प्रदेशां स्वच हन्ग्क समान्क रं महिलान ॥ ननागरद्गपरिविष्ठान मनसः प्रीतिवर्धनान ॥ सप
पुन्नाम्नानेजावमवमहिनलहा ॥ २८ ॥ पार्श्वपाहिपच्छाविःपारपैःकतमालिनेः ॥ अशोक
नवनेनवमदेद्भयजमत्रिमेः ॥ २९ ॥ भिङ्गचारवालंदैमगंपूर्णं भागसंगतोः ॥ केवि नैवनमन्दपंग
नवानरविन्दैः ॥ ४ ॥ रवःशीतः सगंधीचपुष्परेणुवहोनिलः ॥ पारिक्रामन्वनेहषानपीनी
वरीत्यपा ॥ ५ ॥ स वेपपामसमापुकं दृदपर्शवनन्यथा ॥ नदीं कच्छेकंवकोनमन्छितयजनवत्रिम
प्रतं मार्ग्वननवमपदृपुविहंगमं ॥ आश्रमप्रवरं रम्यं ददर्शचमनोरमं ॥ ३ ॥ नानावृक्षसम
माकोर्णं संप्रज्वलितपावकं ॥ नवघृतानि मंश्रीमानाश्रमं प्रत्ययमं ... ॥ ... ततिभिर्वालखि
लैश्चवृतंमनिगणान्वितं ॥ अग्न्यागारैश्चवहुभिः पुष्पसंस्तर ... ॥ ... सैस्तहंस
विभ्राजितमनीवच ॥ मैतिनीमपितोपजलद्रीयुत्तपां सहवो ... ॥ ... तेनकुसेवःसनवो
द्भपसदेषा ॥ २४ ॥ स महाकवैः महर्षैर्जैनेहोहैरिः पूर्वैः पुण्य ... तिरिदिनीमा

१४२

म० भा०
आ० प०
१४४

243

१५॥ आर्हत्स्वमतसिद्ध्यर्थं तीर्थमतानि तत्र तान्यामन्वानामेव ॥ १६॥ चार्वाकसंस्कारः यथा स्थानकारणेभ्य
नेत्रस्थानेभ्यो नान्त्वादिकं तेऽपि सिद्धान्तादिष्वयलोकोपादि ॥ १७॥ एतत्संस्कारः १ द्रव्यप्रधानक्रमः न्याय
तन्त्रसंख्या सर्वाध्यात्मविज्ञानं तेजानुभवः ॥ १८॥ नानात्वाद्यानां तु एकत्वाकारानां समित्यो यजतो य
दिव्यानां तेषां विधिविधानेषु विधिनाद्यफलं कामानां तेन साहित्ता ॥ एकत्वाकारमेकमाहारः ॥
भिन्नत्वानां लोकानां गगनं विधीनां मेकत्वमत्र वाद्यानामपि संहारः समवायः नत्र विशारदैर्विशेषका
उपन्यासानां लोकफलाकर्मभ्यो निविष्टानां तत्त्वाः मोक्षधर्मे निष्पत्त्यपाहानेन मोक्षस्य विशेष

आर्हत्स्वमतनानामियष्टं विशेषोक्तेः ॥ यत्नात्म सिः तन्नियतेः अणुमेमन्यायमः ॥ १५॥ अग्रधर्मे
दृश्यवतः ह्ययतीयसामगाः ॥ संहितामीयांनि सपरक्रमस्तुत्तानने ॥ १६॥ तत्संस्कारः यत्र तं
पुण्यं स्थापयेत्तिः ॥ नादिनः सर्वथाथी मान्यसु लोकस्वापरा ॥ १७॥ यत्नसंख्यारविविधस्वक्रमश्री
नानित्यत्वदैः ॥ न्यायतनानाम्नविज्ञानसंपन्नैर्वै स्वपाटने ॥ १८॥ नानात्वाकारसमाहारप्रसवायविद्या
दैः ॥ विशेषकार्यविधिस्मरीतयमतव्यापो ॥ १९॥ स्थापनावेदमिद्धान्तपरमार्थज्ञानानामाने ॥ २०
दैः ॥ विशेषकार्यविशिष्टसमानत्वसमप्राप्तो ॥ २१॥ स्थानकविशुद्धा तेष्वकार्यकारणे विद्धि ॥ परिवा
तुष्टो रोनिरुक्तैः कालज्ञाननिशारदैः ॥ २२॥ स्वकर्मगुणानेष्वकार्यकारणेष्विति ॥ पतिवा
नररूपनेष्वगमास्यर्थसमाप्तिनैः ॥ २४॥

कार्यं तन्निरन्ते ॥ २५॥ स्थापनं प्रथमं संब्रह्मसिद्धान्तमवस्थाननलयार्थं कारणेषु तस्याः परिहारसिद्धान्तः तै
र्यापरमार्थज्ञानानां तेः शास्त्रोक्तकालेन निःशेषविषः षिद्धान्तकल्पावच्छेदैर्बुद्ध्यपलब्धतो यो ॥ २६॥
दृष्टाः श्रीप्रादिकर्मनिर्णयपादितो ग्रन्थोक्तपालनादिः कार्यफलं [illegible] ॥ पदानि
दृष्टा हीनानप्रकाशाकं रथेनेन्माहिवाकं यद्वत्वानरक्षन्नमिवाय [illegible] त्यभिदैः स्वा
ग्रथः विहननः प्रवेशः रथेनेनिशावामाहित्वनीतिनिरीयमाणो [illegible] स्वमावाभिनेनसर्व के
बोलकस्मितेः प्रकार्यैर्मितां मावर्तने स्पर्शैः ॥ २४॥ राम

१४४

१८॥ प्रथमनिरूढः प्रथमनिमः॥२२॥२७॥ काम्यप्रथमस्य क [illegible] ॥२८॥ विन तेषु वेना निके

नेकुपदिशमणकौतिनयोवनमनोरमा॥ [illegible] ॥२९॥ नेका
प्रनिरूढः श्रीमानाम प्रथमपदानि॥ देवलोकप्रतीकाशः [illegible] ॥३०॥ नदीवाप्रमह
श्रियांप्रथमनोवाद्रष्टोमः॥ [illegible] नीमिवनि [illegible] ॥३१॥ [illegible]
पुष्पकेनप्रवाहिनी॥ [illegible] ॥३२॥ [illegible]
लिनेदृपमोविना॥ [illegible] ॥३३॥ [illegible] तथा॥ च
महात्मनः॥ [illegible] ॥३४॥ [illegible] ॥ नदना
कामिप्रदे [illegible] ॥३५॥ [illegible]
[illegible] ॥३६॥ [illegible]
[illegible] ॥३७॥ [illegible] ॥३८॥
नयोधने॥३९॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥४०॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥४१॥ [illegible]
[illegible] ॥४२॥ [illegible]
[illegible] ॥ देवलोकप्रतीकाश [illegible] ॥४३॥ [illegible]
[illegible] ॥४४॥ [illegible] ॥४५॥ [illegible]
[illegible] ॥४६॥ [illegible] ॥४७॥

[illegible] ॥४८॥ [illegible] ॥४९॥ ॥ राम

म॰भा॰
शां॰प॰
२५५

अथ श्रवणमानसनिलयाचरणात् नाटिप्रकारेणाविजते संलापं ... मनयामो हिनस्य धर्मः ॥२८॥ २५॥ स्पर्शो
नादेवेति ॥ अभोक्तव्याण वदेषतेन व्यवधानन्त्पदिग्रहापिकारोली निर्दिष्टितेन नत्र प्रमाणे स्वचेन सः प्रसं

वैशंपायन उवाच ॥ अथ भूयमानसमस्थितयाकोऽकलयाचरणः ॥ ... चारु
... ॥२०॥ विधानक्रमानां ... चेनच ॥ ... मिश्रवाचम ... तिः ॥२१॥
... अनाचरन् ॥ ... मने ॥२२॥
... अभिनास ... ॥२३॥ एवमसुक्तान्
... ॥२४॥ ... उवाच ... ॥२५॥ ...
... उवाच ॥ ... गो
... ॥२६॥ ...
... ॥ कुंडलो वाच ॥ ...
... ॥२७॥ ...
... ॥२८॥ ... उवाच ॥ ...
... ॥२९॥ ...
... ॥ मौनः ... ॥३१॥ ...
... ॥३२॥

[illegible]
[illegible] ॥
[illegible] ॥२॥

[illegible]

२४४

तानं.एव मापनंनेनेलोकाग्रलिकाः नेपुलोकऽंतनगोरुमतेः ॥ ॥ ॥ ॥ सुनाम

नानाभावेगुमादेव्यच्छ्यावलनमोधिते ॥ लोकाग्रलिकु [illegible] ॥ तनन
त्रचानिप्रंहक्षिपलानेसिनिनवनान ॥ तपहेमपपानिशन्दइ [illegible] ॥ [illegible] नोविविशामि
हविताशिमहीपतिः ॥ मग्नलोपहिनानिमाइ हूपिमधमायसन ॥ ॥ [illegible] नानोचप्रेहम्हनं
हतोहिने: ॥ जलसोकच्छमानानिमेनेसन पशेनम ॥ ॥ सकापुण्यनयोगुममाक्षमध्वचेष्णमे
नानस्यमेचमाणोचेनयोग्रनगुणौहने ॥ ॥ सकापुण्यपश्यपतनमदृष्टनेहेनेसमेनानाइहिभिव
पोपनेः ॥ निवेशसमानस्यपुष्पोहितो ॥ हानिविनमानधंमनोदूरमुमे ॥ ॥ स्वरिपचेशिखाकेमले
वेशाकायनाला च ॥ ननोणक्षनहाचाहूदेवेगेमानमनिहलनानान ॥ नागपचाप्रमेनहिलस्रशिं
सशिनतव्रनं ॥ ॥ सापपणमानननमोंसन्नंदहनप्नोपा ॥ ॥ मचाचकरहेत्रचेवेनेसेनादपशिव ॥ ॥
स्कतापचनसनेपाहेकनापीभिनहुकिलो ॥ निरुद्धकमापामानमानानापसीदेवधाधिरणौ ॥ ॥ सा
नेहदेवतानानेहंशनमक्षिनेदयण ॥ सानानेनशनिदिपमकाचप्रतिहद्यचा ॥ ॥ मसनेनाचेथिता
चपाधनाचैणचेवहि ॥ पशुहानामसंतानलकपलेचनगिथिं ॥ ॥ पशायदचेपिनायहशुचा
नामचेनदा ॥ उवाचसमधमानेचकिंकायेक्षिपनानितिनि ॥ नामवधीननोरानाकनांमयुगभाषि
णौ ॥ हरूचेवानवतांगीपश्यावलनिपलिन ॥ ॥ मापानेहेमहमानानहपिककनमयाकिने
कुपानोमयानानाइहेनलमाचदृष्णोमने ॥ ॥ पाकंतलोवाच ॥ ननः शिनामेमयानान्यकनान्यादु
नेमाप्रमानान ॥ माहनेसमनीहानहशाहेनमपाणाने ॥ ॥

स॰भा॰
आ॰प॰
१५९

१० ॥ सूर्यचन्द्रावेवात्मीयाः संवत्सिनी तारके ग्रहाणां वशि भूमं गमा माले कनहृ समर्थः ॥ ८ ॥ ९ ॥ यक्रीडिता
याः प्रहृष्टं क्रीडितं यस्याः विष्णोर्लोकः परायणं ॥ ४ ॥ न हि नाम वाप्नुयात्मा हृष्य के इन्द्र विहिते संधि

नाहं शंन प्रसाद्य नं प्रहीन सिन्धव कं ॥ कस्य महा हि यानानी तिर्जि हि य महा शोभन ॥ ६ ॥ हना
फलन महंश्रीम ... नाय कं ॥ कालनि हरम्र हृ कस्य मह हि या शोभन ॥ ७ ॥ यम श्रीम
श्रम ... या विष्णुकाल लि ... सर्वं ॥ ... प्रभावान ... कस्मान्मा
... ॥ ४ ॥ ... ॥ ... मेविन पदेव
... ॥ ४ ॥ ... क्रीडिता ... विह ... दैव ॥ मये
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

245

१५९

म॰ मा॰
श्रा॰ प॰
१६०

फलाहाराः फलाम्बाहारेणगताः ॥ ५ ॥ नक्षीरस्यान्नं अमरेलीनिन्नायविरोधमर्पणाद् ॥ अग्नमनानि ॥ १ ॥ द्युवौक
गांधर्वविवाहस्यक्तनेत्यतांवक्तंविवाहमेगनाद ॥ अग्नविनि ॥ ग्रंसः ग्रंहक्तत्यकन्याहानंनहदेवयतोने
क्तबिनेहानेदैवः महेमोधर्मेवरलाभिनिष्ठयाहानंग्रंनापत्यः वराहेमिष्ठनस्कंगरहीलाहनमार्थः
वहूथनेमहीनाहानमासुरः ॥ गांधर्वोव्यासोनः समानोप्रमनानांवाप्रहेनहेपाचोहलाभिनाचशो

पाकूं नलोवा च ॥ फलाहारेयोगनोपानभिलामेलश्राग्रमल ॥ महत्नेसप्तनीवहसमानश्वंप्रहा
चानि ॥ ५ ॥ ३ष्णं ॥ ३वा च ॥ स्त्रीभिलांवरारोहेभक्तमानामनिहिने ॥ नरर्थंमांश्यिनेविहिनक्रे
नेहिमनोमम ॥ ६ ॥ आत्मनोवंपुत्तमेवतानिरानमेवचात्मनः ॥ आत्मनेवात्मनोहानंकनेमहेहि
धमनः ॥ ७ ॥ प्रजापतेवमसासेनविवाहस्यधमेनः फलाः ॥ ब्राह्मोदैवलक्षैवार्षः सात्ताप्रमलक्षाप्र
ः ॥ ८ ॥ गांधर्वोराक्षसश्चैवपैशाचश्चाष्टमः फलः ॥ ८ ॥ नेकार्यनास्यात्प्रवेमनः सापेंचवौल ॥
ः ॥ ९ ॥ गांधर्वोराक्षसश्चैवपैशाचश्चाष्टमः फल ॥ ९ ॥ प्रजाग्रहणावेच्छायविहितप्रमेनानिहिने ॥ गता
प्रशालोप्रमनः श्रुवेन्नाहलाप्रयाय ॥ १ ॥ पश्चात्पूर्वांचवर्णाविहितपुंसकानिहिने ॥ पोषाव
नगरवातोनकोविहस्वहेषास्य फलः ॥ १ ॥ ४ ॥ वाचानत्तयोपुर्मापृष्टैसेहेफलाविह ॥ पोषाव
आसहाश्रेवनकलेभेकयचन ॥ ६ ॥ पनेनविधिनाकार्यापुमेश्रेवापानिः फलाः ॥ गांधर्वराक्षसो
नवेपमांनोमाविष्णकय ॥ ७ ॥ पृथगाकयहिवामिश्रोवकनेपानाचवंदश्याः ॥ सानंगमसमकाम
गृहकामाचवर्णिनो ॥ गांधर्वत्वविवाहेषामायासंवेनमहेहि ॥ ८ ॥

वेणिमहत्तीहयोहेन्माराहवाएनेनोक्रमावाहाखाताः ॥ ५ ॥ [illegible] तेनपः ब्राह्म
दैवमानाराताः पर्माः हेआर्षांनचोकन्यापत्यः गुहलाहस [illegible] चाव चहतेनहे
गहस्यारपैशाचानि ॥ ५ ॥ पतिपाकम्नेयर्वगवहोहबिग्रह [illegible] ॥ कायनेनि ॥ ६ ॥

दुर्वा॰

१६०

146

म॰ मा
प्रा॰ प
१६८

१९॥ पांशुनां चक्रं सेनं चक्रः कोकेषु मान ह्रीं वे ज्ञने सेनाय णां गणो हि मेव च क्र क वनि धा हू प्रह लिनि नि मिं

नशिय प्रहिणां पर्वो वि वाहः षोडशु रुमने ॥ सकामायाः सकामेन नि मिं जो गहू शि ष्टन ॥ ६२ ॥ मामा
चमहू माचद्रु णां तं शुहषो नमः ॥ अभ्यासाद्य नि पं नं भज मानं ष्ट कं न ले ॥ ६३ ॥ महू न्माज लिना लोके
शु ब लय महू मनः ॥ यः मा सागराणां गीक न्नं सो दन मि मे दि नी ॥ ६४ ॥ परं वा भि प्र यानं श्च च कं न
प्राम हा त्मनः ॥ मवि प्रयुन्य पनि हू न्ने सननं च क्र व र्तिनः ॥ ६५ ॥ ननः प्रन्नायणाहे सा वि ष्णुनं मनि
[illegible] ॥ ६६ ॥ [illegible] ॥ स [illegible]
मृ व वी न ॥ विनि धा य न नो मा सानि पाय फ ला निव ॥ ६७ ॥ [illegible] ॥ [illegible]
साने ष हू षो न म ॥ [illegible] ॥ ६८ ॥ [illegible] ॥ [illegible]
ल्कने व च वर्मि नी ॥ [illegible] ॥ ६९ ॥ [illegible]
वे [illegible] ॥ [illegible] ॥ ७० ॥ [illegible]
वे [illegible] ॥ [illegible] ॥ ७१ ॥ [illegible]
न सं ॥ ७२ ॥ [illegible] ॥ ७३ ॥ [illegible]
न क मा हि सं [illegible] ॥ [illegible] ॥ ७४ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ ७५ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ ७६ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ ७७ ॥ [illegible] ॥ [illegible]
वनि ॥ [illegible] ॥ ७८ ॥

॥ [illegible] ॥ ७८ ॥

८ ॥

१६८

२७॥ [illegible] ॥२८॥ [illegible] ॥२९॥ [illegible]

[illegible]

विक्रमः पराभिभवसामर्थ्यं ओजः कान्तिः चलम्मात्रं ॥ ३ ॥ २५ नरेन्द्रेणेन योऽभने चारित्रं रामेणे धर्मः पानि

विक्रमेणो नमाचे च बलेन च समन्वितः ॥ २ ॥ नेकमारम्भ सिद्धं कुरुके ... लिमानये ॥ समयोपे
वणास्याप्येन्यकी जं के नखो ॥ नरपनदेव मालायकवते: पिपरान्तचो चहे ॥ ३ ॥ पाके नताभिमयो
सदृपशाभितोगहला ॥ भलेः परपयनामा ... ल्लतुनिते ॥ ४ ॥ नारी स्मा चिरकासो हिवायवे
नये चने ॥ कीर्ति चा रियथ सिद्ध लक्ष्मान्नयनमाचिरं ॥ ५ ॥ नरपेस्मकानने सर्वे प्रानि ... नमहेनसः
पाकेनलोपशह .. नसगु गंगनसाक्षे ॥ ६ ॥ ... ल्लोचने ॥ प्रानमामन
ला: मुश्रुन्दः यतेविहिनाह ननन ॥ ७ ॥ पभिस्यचराननेविदिनाचप्रदेषिना ॥ सहनेने ... लचा
लाकुसमनेनसा ॥ ८ ॥ निदेशपिनाने ... नरामाना ॥ पूर्वनपिनापथामापस ... के
नसा ॥ ९ ॥ ... लाने ... विदिनाचप्रदेषिना ॥ ... नासेभिचिन्ताना ॥
नयापस्त ... तः ... ॥ ... ॥ १० ॥ यथा ...
... ॥ ... ॥ ११ ॥ ...
... ॥ ... ॥ १२ ॥ ... ॥
नयामह ॥ ... ॥ १३ ॥ ...
निः ... ॥ १४ ॥ ... ॥ कहदे
नि ... ॥ १५ ॥ ... ॥ ...
यारया मस्मवेनदा ॥ १६ ॥

श्रीमे ॥ २५ ॥ २६ ॥ ... काशिनेचैवाहि क

हृष्टंरक्षोभिस्तामासांतेन कंथांटत्रिंशनः ॥ चलितोत्रीनिंशपमिंवनासांतनमंवेदरहि ॥ २० ॥ श्राम्नतो
तन्मनः हेत्रंगुणंतमाः स्मानने ॥ स्मपीतमपिकाशानिः सहेतमास्तेप्रतां ॥ २१ ॥ प्रतिप
धयसमवर्णरागीरत्नर्हिन ॥ पिनताश्लिष्टनेमानिकिम [illegible] धिकेतन ॥ २२ ॥ सर्वेतव्यमभिप्र
नेमामिलांपंसिमिंसने ॥ प्रेत्वमारत्नकरा [illegible] किमर्थमव [illegible] ॥ २४ ॥ [illegible]
[illegible]

यरोत्समविस्म्रनीयं ॥ २८ ॥ २८ ॥ विहेनकः निरुकः ययोयनायकोवाहेहकाधायां ॥ २१ ॥ २२ ॥ निर्हेनःशखी

म. भा.
भा. ष.
२९९

र्वोमेनस्यपोहंमेयनंनवहृमिनायश्चि नाहंन्यामलिनानामिटश्रोहंगमनांनयया ॥ १ ॥ यांहुंत
[illegible]वाच ॥ ततनन्तर्षपमानानाहिमयात्क्तिहृहिमयानि ॥ मानस्नोनिल्यमानाहिययपचत्रमिनयश्यहि
मेनकाचित्कोविनशिरसन्स्यामिनकं ॥ समैवोक्लिन्नेनमनंङजपननवकल्पनः ॥ २ ॥ हिनाव
टमियाजेहुम्नहिदेचगमहं ॥ मानवयोनंवयण्यमेहसर्वपहोरिव ॥ २४ ॥ मदेंहुमुक्नेवरुपय
मधुवहमाशुच ॥ भवनामनर्षयामिप्रभावंयशमेनय ॥ २५ ॥ हानमामिप्रवाहोयंयप्रवसा
मिनेःनच ॥ निरर्थनाश्चनटेंषाकुलानंदेनमहंहि ॥ २६ ॥ निरूयोयावदार्टजानानः ययय
नेमहं ॥ मन्यतेनावदान्मानममेमोरुपवजं ॥ २७ ॥ यहानमवमारडेयिहक्नंशेमिवोदने
नहंनंविजानीतेमामानंचेनरंजने ॥ २८ ॥ श्रमीनरुयमंयमोनकेचिटवनन्यते ॥ श्रनीवनस्य
नवाचोमवनीहविहेनक ॥ २९ ॥ महावोहिनन्यनंतुहांश्रुनावाचःश्रुमाश्रुमाः ॥ उपश्रुमवाकाम
टनेवुशेषमिवसकः ॥ ३० ॥ मानल्लोनन्यनांतुहांश्रुनावाचःश्रुमाश्रुमाः ॥ तहावहावमाहने
हंसःदीरमिवांमसः ॥ ३१ ॥ श्रन्यानान्यानिवदन्तुतेश्राहियानिनयाने ॥ नथ्यपरिवदरनंनांसहोम
वनिरुजेनः ॥ ३२ ॥ श्रमिवाधयथाहङानंनेनागच्छंतिनिवृत्तिं ॥ एवंसहजनामाकुपयमहोभवनि
निर्हनः ॥ ३३ ॥ मानेजीवनदोषनामहोरोषानदेषांनः ॥ यत्रक्तानमाःयोःसेलःयतनाकुलया
वियानः ॥ ३४ ॥ श्रनोहायनंलोकेकिंचिदल्पनदिवियने ॥ ययक्तसलक्षिणाहदुजेनः समुनवायं ॥ ३५ ॥

२९९

२४ ॥ यत्रविषयैः पौरैः सडिर्वोचाः निर्याः संलोहयात्मनः यसानमाटुरवैध्याहेरसनाडुः ॥ ३६ ॥ २५

[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

॥ २१ ॥

[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

252

स॰ भा
स्क॰ ५
२२७

त्रयोदशद्वीपाः समंतात्समेतानि वलयाकारेण वेष्टितं सप्त समुद्रा आवर्तेनोरसमाणाकोयं द्वितीयः पादः सह

लोकालोकमेकं पतनं सिद्ध त्रयं समकोटिस्तिल्ले कादशानंतरं द्वीपस्तोपद्वीपाः हादशानंतरं द्वीपः सलाटिपद्

कं जीवस्य द्वादशद्वीपाः सलादिपद्मकस्यैव न विभु वपादयोद्दशा॥ ३५॥ अनंतदर्शी दर्शोदर्शीनं सप्तसप्तद्वी

कालितं सप्तदशद्वीपः लतोः नदर्शी लोकपादेशा निलयश्च॥ पादानां तेन अनंतदर्शी पाचके पूर्वं पानचरितनिलिनिश

विदेः सवितुर्हेचके वीर्यकालमानः शूरवाः॥ नवरचसविप्राणां लोकालोकोशतानामधि॥ ३॥ शतलक्ष

पलंत्तलक्ष्यलोकातुपेमहः॥ अनन्तदर्शननतस्यके अन्यारह्लान्नवाप्येति॥ २॥ यनोमहर्षिभिः कल्पैः स

पशसोमलवपत्त॥ लोमालिनीवलमदानपूर्वसलोनतापिप॥ ३॥ शहिंगो पर्वलोकस्थत्वं वेषपाससहि

तो विनाद॥ सानिनासक्रियार्थेश्रीसर्वापवहिहिता मिथः॥ ४॥ सहतानवेर्द्वेलादारद्वहीमानमन्य

म॥ सहत्रसवनायुस्य पालात्रयोवेषपीमता॥ ५॥ नक्षत्रंदृशामांगाणनिर्णम नेनकं॥ सर्वान्

विसत्त्वानेतानायेः तृणान्यवचते॥ ६॥ आनुतोवनक्षः दृष्टेः पीमानस्मपपादकम॥ तांस्पशारामस

महत्कर्मणांस्पृष्टिवीपते॥ ७॥ तिन्नवेदात्स्थो विप्रानांपवीरणारवमान॥ नक्षः पादयामास

प्रव्रमथो विशा॥ ८॥ सहनादप्तविद्यानात्मश्रीकरमहापपत्त॥ शृवैवजलत्र्यहेवाहयामास

वीर्यवान॥ ९॥ कारयामासचैवलनमभिमयदिवोक्सः॥ तेजसानपमाचैवविक्रमेणान सान्यः॥ १०॥

मः॥ तेषानसंप्रत्यमसमासपमालपस्याहितापदेर्दशीनेन स्माम्नाजमप्रोत्रिष्णोलसमानाविधापचपानेविन

त्रोपः॥ ११॥ १२॥ विराहृविराजमानः त्रियापात्र्हेपन्मरविलोप्याः ... ॥ आपुष्पाद्यकांतनस

--॥ १४॥ १५॥ महत्वेनिक्षविप्रमः कंजप्याह्वेनदर्शः॥ १६॥ कारयामास॥ १७॥ ... चितेनमादेहृ॥

कांप्याविक्रमेणपरामिभवक्षणमर्दन॥ तेजसाकुंद्रीस्थिपवनेन॥ १८॥

२५४

253

स॰ भा
स्रा॰ पं
१५५

नेनयानवग्रानयाप्रर्द्धरूपमाकाय लोपोवार्थः ॥ ५५ ॥ ५० ॥ कामानां कामभोगेन प्रवेत्य कामसेवयान्
प्रमावेत्ताना ॥ ५० ॥ हविप्राममितिशयाहिना ॥ ५१ ॥ एकस्यकामिनः सर्वेनालेनपर्यासयसं कामर्णांनि
५॥ सर्वथा कामशमेन्नसेवमचनी माह ॥ यदेनि ॥ यापंकामभनेष्ठपचमलान्म केपुसाहिपुविषयेषु
चनसोहिकामस्याद्वस्याप्रम मानन्नोविछिनाउदायचनन्नममिवययोवीजमाचाव शेषाप्रसमावा

यत्नेप्रयाविलवयानन्नायो वृत्तगोचर ॥ प्रहंजयंममाह्यय राजेप्रया स्रामिनेःत्तया ॥ ५२ ॥ एवम
कः मयजर्विज्ञायो वीर्थममाश्रेयान ॥ संत्तायया मासजयंनदाप्रजेमहात्मनि ॥ ५३ ॥ योरवेगाथ
वयमायात्नायोवनमधिष्ठितः ॥ पंयानेनापिवयमा यज्ञप्रहकायन ॥ ५४ ॥ ननोवधेमहसांने
ययानिरयपाजिनः ॥ ष्ठिनः सन्नयथाईलः यार्ईलममविक्रमः ॥ ५५ ॥ ययातिरपियत्नीभ्यांदीर्घक
लंविहृत्य च ॥ विष्याप्रापहिनोरेमे प्रनष्ठेव्रयथेवने ॥ ५६ ॥ ... श्रजनदाननमिकामानांसमदाय
याः ॥ प्रवेयमनमायानत्रिमायायांलदानौ ॥ ५७ ॥ नन्नलकामः ... नामएभोगेन शामयि
हविषाकृष्णवर्त्मेवभूयएवाभिवर्धते ॥ ५८ ॥ पृथिवीत्नीलंमंपूर्णां हिरण्यं पशवः स्त्रियः ॥ नालमे
कस्यतन्सर्वमितिमत्वाशमंव्रजेत ॥ ५९ ॥ यदानकुरुतेपापं सर्वभूतेषु कर्हिचित ॥ कर्मणामन
साकाचाब्रह्मसंपद्यतेनदा ॥ ६० ॥

यनामाचपरो ममनस्थिरिष्ठिताः ॥ नन्वीनलवयनिकेमनस्थिरूपादिदर्शनेनउदूतामनोरथानिकावि
त्तिन्नामममा षिकावेन याप्तलाजानप्रामायान ॥ उदायाभोगकालेनचकर्माणिउदायाः याह
निःवाचेनिनन्ताः मनसेनिपनमायाः यदेवंनदेवयम्मभ्रप्रयोनमना ... वैषसेचनथाच
कलिः ॥ यदासर्वेभ्रमवंनेकामायेष्यहृदिश्रिताः ॥ ... नेःनिमर्व
उपायाम ॥ ६१ ॥

१५५

254

[illegible]

स॰ भा॰
आ॰ पं॰
१२६

स्यात्तेषामिति ॥ वैशेषिकैस्तु यैर्लिंगैर्यैरेवयमीश्वरामविज्ञामसंनिरूढो ॥ २ ॥ जिज्ञासयैवोनिसाधुस्तो
कः पारमार्थिकस्तोमस्य यैर्लिनाविनिसंबंध ॥ २१ ॥ रत्ननैकमेथ्यनिहावैनद्रूष्यक्रं हिदानवारवंति

स्यात्तत्समस्तानां च समस्तात्पन्नवैमिथ्यः ॥ येषामर्थपतिसंबंधः वैशेषिकमतवचनावदे ॥ ३ ॥ लिंगीय
यानतो देवावत्रिशंगिसंमनि ॥ योऽपि हिंसेनपातार्थकायानेष्टनंसंपदे ॥ ४ ॥ आस्तोत्तनावृभौ
निमनमोमपरोऽस्तिनोमधं ॥ ६ ॥ नत्रदेवानिनस्त्रयंन्यानवान्हृदिसमानान नान्तननीवयमार
कास्तुविद्यावलाश्रयान ॥ ननलेश्वनदृश्यायायोयथावक्रिदेवन ॥ ७ ॥ यथात्तत्तनिजस्त्रयीन
सर्वसमस्तमथैनि ॥ ननान्संजीवयामासहृदस्थानिहृदा यो ॥ ८ ॥ नहिदेवस्थनंनाचिद्यायांकायोदे
निवीयंवान ॥ संजीविनीननोदेवाविशादृमयामस्य ॥ ९ ॥ तेनदेवामयोहियाः कायाडपानसह
दा कृत्रः कचमप्यागमस्तोद्गुत्रवह हृद्याने ॥ १० ॥ जनमानानान्नस्थास्तानह हनः साधमतने ॥ पा
स्यविद्यानिवसनिवासस्त्रोः मिननेत्रषि ॥ ११ ॥ अङ्केनामाहशचिरंम गमानो मविद्यानि ॥ शुपर्व
समीपेहिषुवोद्गुत्रवयाहिन ॥ १२ ॥ रहनेस्थनवांत्तेनस्वरस्थानवान ॥ जमनापयिनवा
क्रोमवान्सवंवर्णांकवि ॥ १३ ॥ देवयानीचरयिनांसमानानस्यमहात्मनः ॥ नायमिनेशकेनान्यः
कथमनविद्यते ॥ १४ ॥ योनस्तिगमायुर्यरावारेगादमेनच ॥ देवयान्ने हिनाश्वविद्यानाप्रा
प्तियुवं ॥ १५ ॥ नथेत्स्मानन्तः प्रायाहृदयानिसतः कचः ॥ नत्रापितुसिनोदैवैः समीपेवपर्वतः ॥ १६ ॥
स्यानानवितोयानदेवैः संप्रेषितः कचः ॥ अगतदेवरवप्रेषकरहृदानाकमनावाचरू ॥ १७ ॥ स्यहोगि
रसः पौत्रंपुत्रंसाक्षाहृहस्पतेः ॥ नाम्नाकचमितिस्यातंशिष्यं [illegible] ॥ १८ ॥

गृहाणमस्यानोमत्रमायाहितिस्यकनानाग्रवत्सेवमहानवान देवान [illegible] हितीनिवाः नवबति

255

३
३
१२६

म॰ भा॰
आ॰ वी॰
१२०

संपा सपशार्हं कन्या ॥ ४० ॥ मा विनिर्हे यदु मा वद ति ॥ ४१ ॥ येनः शिवं षिप्रीकन्ये न धर्षः ये वी कन्ये नि समाये पि
कोऽस्य वादे या भाव प्रार्थः सम संहृत्य जीवितेन यद्यम् ः सम नी विनः अनन्य मरणो हि प्रयाग विय माना त्व

त्व कउवाच ॥ प्रयमे शनि संपा हृन्यन्तं तं जीवयाम्यहं ॥ ततः सं जीवनी विद्यां प्रयुज्य कच मारुह्य न
मिता मिता यातीयात्युक्तं कन्योऽहं विनिर्गतः ॥ माहूतः प्रादुरभवत् कचो हृष्टो ऽथ विद्यया ॥ ४४ ॥ कस्मा
त्विरायितो सीनिर्गत्य मा ह भार्गवी ॥ सनि पश्यकु त्यादीनि काष्ठभार च भाविनि ॥ ४५ ॥ स ह्री नाम्
समाया तं नेवद्रह्वं समाश्रितः ॥ मा च्छायाम् हिता सर्वा त वृक्षे याम पाश्रिता ॥ ४६ ॥ अथ दानव समान
त्वा कन्तं मिम न्यचो दयत ॥ हत्वा शालि हत्त न या हं कव च न ममि विच्छिन्न ॥ ४७ ॥ स्वत्व न मा त्रे श्रं दनायैषी
कैना न हत नवा ॥ हत्वा या ला हके न्य लसा विते न सः तमा ला य ॥ ४८ ॥ माहूतो विद्ययाम हैभार्गवे ण
महात्मना ॥ ततस्ती याभिह्या यानः कचं विनष्ट संजीविना ॥ ४९ ॥ हतो र मिनि वाच त्वौ पुष्पं हो ब्राह्मणोक
स्यया ॥ सपुनर्दै वया योकः पुष्पाहारो य हच्छया ॥ ५० ॥ वनं यायौ कचो विप्रोदरा हैलतेन वाज्ञ ने ॥
पुनस्त्वे पेष यित्वा न सम सृजम स्मा मिश्रय ते ॥ ५१ ॥ विता मैवुनः कन्या पितरं मस्मवेदयत ॥ विप्र
लाम्रुनयाहृतो विद्यया गुरु सापं [illegible] ॥ ५२ ॥ पुनर्यो हत्य मत्स्त्वं न्य वेदय न न य ष्या ॥ न न हत्वा दंहा
नां दग्ध्वा कन्या चचूर्ण शा ॥ ५३ ॥ देवयान्य थ भूयो पि पितरं वाक्यम ब्रवीत ॥ पुष्पाहारः प्रेष ण
कृत कच शुक्र न न हृष्य ते ॥ ५४ ॥ व्यक्तं हतो मृतो वापि कच स्तात भविष्यति ॥ तं विना न च जीवेयं कचं
सत्यं ब्रवीमि ते ॥ ५५ ॥ शुक्र उवाच ॥ बृहस्पतेः सुतः पुत्रि कचः प्रेत गतिं गतः ॥ विद्यया जीवितो प्ये
वं हन्यते करवाम किम ॥ ५६ ॥ [illegible] देवयान्युवाच ॥ [illegible]
[illegible] च न नदीन ड हो
[illegible]

ऽथ जीवन तिमिति मा वः ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ गुरुदेव कृतः [illegible] विद्यया [illegible] ॥ ५९ ॥ श्री
रामाय नमः ॥ ६० ॥ प्रेष्य गृहं कार्यं कर्तुं ॥ [illegible] ॥ राम ॥ श्रीरामाय ॥

156

१२०

सं॰भा॰
आ॰प॰
२५८

157

[illegible]

म नेणं न म न्न भावा दम कुरु स्पो मित्र संवेद: [illegible] ॥ ४४ ॥ [illegible] निवेश: ॥ ४५
स्या ने सं यो प स्यान काले त्रि सं प्रा मि न्ना [illegible] ॥ ४६ ॥ [illegible] ॥ ४७ ॥ [illegible]
दे म्या ने क [illegible] पाल वा चा नि [illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible] देव या नि [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] नोच ॥ ४८ ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ४९ ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ५० ॥
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ५१ ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ ५२ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ ५३ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ५४ ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ न
[illegible] ॥ ५५ ॥

[illegible] ॥ ५६ ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ ५७ ॥

स॰ भा॰
सभा॰ प॰
१०९

[illegible] ॥ १८ ॥ [illegible] ॥ २५ ॥ [illegible]

वैशंपायन उवाच ॥ [illegible]

[illegible] ॥ १ ॥ [illegible] ॥ २ ॥ [illegible] ॥ ३ ॥ [illegible] ॥ ४ ॥ [illegible] उवाच ॥ [illegible] ॥ ५ ॥ [illegible] ॥ ६ ॥ [illegible] उवाच ॥ [illegible] ॥ ७ ॥ [illegible] ॥ ८ ॥ [illegible] ॥ ९ ॥ [illegible] ॥ १० ॥ [illegible] उवाच ॥ [illegible] ॥ ११ ॥ [illegible] ॥ १२ ॥ [illegible] ॥ १३ ॥ [illegible] ॥ १४ ॥ [illegible] ॥ १५ ॥

758

१०९

[illegible]

स॰ सा
आ॰ ०
२६

259

वाणम्नतोइः कन्याहयहाताम्कवनवयोः निरोधोस्मारनार्थे ॥ २१ ॥ समसाचारः ससाचार ॥ २ ॥ प्राहय ॥
होति ॥ अत्रयथा [illegible] ॥
वनिराण्या [illegible]

क्रोडं नीनांन [illegible] ॥ वाणमूलः [illegible] ॥ ४ ॥ न
नोज [illegible] ॥ वसा [illegible] ॥ २ ॥ नव
वाम्रो [illegible] ॥ ५ ॥ नन [illegible]
[illegible] ॥ ३ ॥ देव यान्त्र वाच ॥ कस्मा
[illegible] ॥ ४ ॥ फ [illegible]
वा ॥ [illegible] ॥ [illegible]
न ॥ ९ ॥ [illegible] ॥ ७ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ ८ ॥ वेशं [illegible]
न उ वाच ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ ९ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ १४ ॥

[illegible]
[illegible] ॥ २२ ॥ [illegible] ॥ २ ॥ [illegible]

मः मा
श्या प
२९१

२९॥ नियच्छन्ति प्रगच्छन्ति यान्महो येऽर्हन्ति लकमेभिरेव हलवडः वेननानाशो नेननननशापपापान्येः
पनदेवाह ॥ सन्येशनिलिः क्रनिः पक्लभोगेन निरहनं ॥ ३ ॥ नीतंनमभंमियनः यहर्द्वनिपुरानवे ॥ ४ ॥ इदंपूर्वं ॥

इस्मा उ हिन्वं का ओ इव यानी ननोवने ॥ नाकुभ्यो संपरिश्रुतडः विनोवाकमस्त्रवीन् ॥ ३९ ॥ आनमहोये
निपच्छे नि सवैडः लमलिननाः ॥ मन्ये उ स्म हिंननेहि यच्छेयंलिः क्रनिः क्रनाः ॥ १ ॥ देव यान्स्वाव ॥ निः
कनिमे ललवामाल्लस्य एवाव हिनोमम ॥ आनिह यायडकाः लिडहि आहपपर्वतः ॥ ४० ॥ सलिकिलैन
स्याशाहदेमानामसिनायनः ॥ पतं हि मेकस्थयनि यशमि सुनावाधपर्वताः ॥ २ ॥ वचनं नीलनापहंषक्रेय
१ने व तनास्थं ॥ लवनो उहिनानिं यावनः प्रनिरहनः ॥ ४१ ॥ अदेवलस्मानस्यददनोप्रनिरहू
नः ॥ ३ ॥ देमामा इश्च मिंश्रु उहिनाहषपर्वताः ॥ क्रो यसंसनशलाटे हूताविनः वनः ॥ ४ ॥ यपहे
लववलानउ हिनाप्रनिरहूनः ॥ अमरशः भेवशमिवामिस्मकानमवीमया ॥ ४२ ॥ अयूउवाव ॥
लवनोउहिनानवं यावनः प्रनिरहूनः ॥ अलोनः लयमानस्य उहिनादेवयान्यपि ॥ हपपर्वत
नहदशाक्रे एनावनाकुपः ॥ अविं पवहनिहं हमेश्वां हिवलंमम ॥ ४३ ॥ यच्च किं चिन्यंगानंभूमौवा
यहि वाहिवि ॥ नस्याः हमीश्वरोनिंयनहेनोकः सर्वं भवा ॥ ४४ ॥ अहं नलं विश्वसाहिमनानांहिनः
कामयपा ॥ वृसास्यैवपयः सर्वाः इनिसन्यब्रवीमिने ॥ ४५ ॥

क्रं ॥ १४ ॥ १५ ॥ २ ॥ नाकुषः यपानिः मम पेश्व
इनिहं हमयनिप ह्वंवलमहि ॥ ४६ ॥ इस्थावनमेवाह ॥ अजेति ॥ स्वं [illegible] मन्ये न्याहिनाहदेन काराण
ननष्ठेनयहणोनिशेषः ॥ ४७ ॥ अहं मनन्नमवं हयें [illegible] नामं यस्तुक पुवे आनमहमाह ॥ अह

२९१

260

दकं पीयते स्मा हिति दत्पानेनकृपं ॥ ५० ॥ वस्त्रानामे [illegible] ॥ ५१ ॥ [illegible]

[illegible] दत्पानेनलोदकं ॥ ददर्श [illegible] ॥ ५ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ ५ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ ५ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ उहिन्ना [illegible] ॥ ५८ ॥ देव [illegible] च ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ६ ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ६१ ॥ वै [illegible] च ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ६२ ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ६३ ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ६४ ॥ देव [illegible] च ॥ [illegible] ॥ ने
[illegible] ॥ ६५ ॥ वै [illegible] च ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ६७ ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ६८ ॥

निदिवानि ॥ ५९ ॥ [illegible] ॥ ६० ॥ ६१ ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ [illegible] ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ [illegible]
नो ॥ ६७ ॥ ६८ ॥

स. भा.
सा. पं
२२२

यायाते: यायं:॥ ननः कायः कविगुरुः समन्युः सक्रोधः॥ इति॥ ननु पित्रु कं नं पश्चेताम सच्चतेचेन ...
स्वफलं प्रयोक्ता यीति यायाविवेयायात्रिति ति न नयो वैभाति नं भानू ने च घने वैनं रूपयहि वैनं न च यने च्छ ...
इमच्छ यो वे वयन इति यन मान मायि नां हृहो कायाणे देव सेवु रः यो वो वान च्छनीति सु ने:॥ न्यायस्य ननु ...

नयनोद्भः कवलं मन्ये के च्छ पितिरित्रु॥ वृः सपनप्रियं यो मांसीन सी: पर्पुवायसने॥ ...॥ त्यावि प वे ति या
यातं॥ वे ष्णं पा य न ३ वाच॥ ननः कान्त्रामा ... सममत्स्य पुनाम्ब ह॥ इमप वो गोमालीन मित्रवाचा
विचाययन॥ ... नायमेव पितोषानन्म ... फललिगीमीव॥ पुत्रेषु वान ... वान वे दानम निप ... ति॥ ...॥
फलमेव यु व पाप ... मनक मितो ते॥ यद वौन यथा विप्रं कुवमा गिनं ननु॥ अपा पशीलं वर्म
नं ... मन हे तनं॥ ...॥ ... ते न ल ... व या वं हिन ... ॥ इषप वेति वो वे ... स्या मि नं
सको पवे॥ ...॥ स्यान न ... मि नया सह॥ ... माम मिजाना मिदे ... ति ...
...॥ ...॥ ... न ... स्त्र वे न वे॥ ... वो वा च॥ नायमेन ... मि जाना
...॥ ... न ... व ना॥ ... माग ... ॥
... ॥ ... वा च ... ति य ना ... न ...॥ ...
हि न ... ति ...॥ ... यो ... ॥ ... वाच॥ यत्किं चि ... ॥ ...
... वाच॥ यत्किं ... ॥
हि न ... यानी ... ॥ ९॥
ते ... फल ... [illegible] ॥ ...
... [illegible] ॥ ४

161

म॰भा॰
आ॰प॰
८१

विलानं ब्रह्मानमवः विद्यामनलंतीविनी ॥ ५५ ॥ यायाने रथ्या यं ॥ श्रुत्वेति ॥ १ तेन सख्यं [illegible] तेन [illegible]

देवयान्युवाच ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ ११
शर्मिष्ठोवाच ॥ येन केन [illegible] ॥ [illegible]
वैशंपायन उवाच ॥ [illegible] ॥ देवयानी [illegible] ॥ २०
देवयान्युवाच ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ २१ ॥
वैशंपायन उवाच ॥ एवमुक्तो [illegible] ॥ [illegible]
॥ सारिपर्व ययाति यानं ॥ वैशंपायन उवाच ॥ [illegible] देवयानी [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ १ ॥ तेन [illegible] ॥ तमेव देशं [illegible]
[illegible] ॥ २ ॥ [illegible] ॥ [illegible]
माधवी ॥ ३ ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ४ ॥ तमेव देशं [illegible] ॥ ददर्श देवयानीं [illegible] ॥ ५ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] देवयानी [illegible] ॥ ६ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ ७ ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ ८ ॥ देवयान्युवाच ॥
[illegible] ॥ [illegible] ॥ ९ ॥

[illegible] ॥ १० ॥ [illegible] ॥ ११ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ८ ॥ ९ ॥

262

८१

महाकविमित्यादि पृथक् वाक्यं ॥ ४३ ॥ दासीमिति ॥ इंद्र देवयान्या [illegible] शर्मिष्ठायाः

वैशंपायन उवाच ॥ एवमुक्तस्तयोत्स्नाद्रूपपंचमोसहा कविः ॥ देवयान्यो निर्वक्तं गत्वा तमर्थं श्रा
द्धमगेव ॥ ४८ ॥ देवयान्युवाच ॥ यदि त्वमीश्यास्त्वात्मनो चिर स्वमानीव ॥ नाभिजानामि तद्दे
होर्य ॥ शुक्र उवाच ॥ यं काममभिकामासि देवयानि शुचिस्मिते ॥ ननेदं संप्रदास्यामि
यदि वा पिदिरं उरसमं ॥ ५० ॥ देवयान्युवाच ॥ दासीकन्यासहस्रेण शर्मिष्ठामभिकामये ॥ अनु
मां तत्र गच्छेत्सा यत्र दद्यान्मे पिता ॥ ५१ ॥ शुक्र उवाच ॥ उत्तिष्ठ त्वं गच्छ धात्रि शर्मिष्ठां शी
घ्रमानय ॥ यं च कामयते कामं देवयानी करोतु तं ॥ ५२ ॥ वैशंपायन उवाच ॥ ततो धात्री त
त्र गत्वा शर्मिष्ठां वाक्यमब्रवीत् ॥ उत्तिष्ठ भद्रे शर्मिष्ठे ज्ञातीनां सुखमावह ॥ ५३ ॥ त्यजति ब्राह्मणः
शिष्यान् देवयान्या प्रचोदितः ॥ सा यं कामयते कामं स कार्योद्य त्वयानघे ॥ ५४ ॥ शर्मिष्ठोवाच ॥ यं
सा कामयते कामं करवाण्यहमद्य तं ॥ मा त्वेवं गमच्छुक्रो देवयानीकृते हि मां ॥ मद्दोषान्मा
गमच्छुक्रो देवयानी च मत्कृते ॥ ५५ ॥ वैशंपायन उवाच ॥ ततः कन्यासहस्रेण वृता शिबिकया
तदा ॥ पितुर्नियोगात्त्वरिता निश्चक्राम पुरोत्तमात् ॥ ५६ ॥ शर्मिष्ठोवाच ॥ अहं दासीसहस्रेण
दासी ते परिचारिका ॥ अनुयास्यामि यत्र त्वां दास्यति ते पिता ॥ ५७ ॥

वाक्यं नाहं दासीसहस्रेणेति ॥ अन्वत्त शर्मिष्ठां कन्यासहस्रेणानुयास्यामि तिवाक्यशेषः ॥ ५८ ॥ ७ ॥ ५२ ॥ ५ ॥ ५४

एकक्षेत्रमात्रमस्ते हे देवि हे ह्रानवपवाः मल्लिकार्जुनपादपल्लवे इत्यादिना ॥ ९ ॥ आगे वनवासमयपाहिमित्यग्रहणं कुलमनः
दर्शनी विचारयवसरोनान्ही मयारोनाह पार्वतीतिकपितृभिः कालित्रहत्या स्त्रीघ्न मैः ॥ २१ ॥ २२ ॥ पार्वति०

मामा
श्रा०प
१६६

पार्वत्युवाच ॥ एकदेहे द्विदेहवान्तर्गतम्भ्रुनासोपि वर्णने ॥ पृथग्भूतेः पथन् सौते पानजमाप्राक्षेवाः
॥ ईश्वर उवाच ॥ कालिन्दीपानाह घायेन शुभिः स्त्रीवितैः स्त्रः ॥ तमेन मद्वीरदैत्यं पत्येमिनामदेहनं ॥ २२ ॥
कृष्ण नमो नमन ह्निन्नाः पातिमतः पुमान्नृपोन ॥ नदीन नक्षत्रे दिव्यां दृष्ट्वा [illegible] विप्रान् ज्ञवर ॥ २३ ॥ पार्व
त्युवाच ॥ कृष्णाप्रदर्शी निषानस्यपापोत्कलनामस्वनो महान् ॥ इत्यं छिनरो विप्रो देयः पुंसा विज्ञाननः
ईश्वर उवाच ॥ कृष्णमाश्रीनिषानस्यपापोत्कलनामस्वनो महान् ॥ इत्यं छिनरो विप्र इत्याशुद्धषम
२४ ॥ पार्वत्युवाच ॥ एकमापुष्टिविप्रो हनिस्याहितौ कश्चवध्यान ॥ हृज्ञि विप्रः स्वयाप्रापि पुरापुराः पिंडि
क्तापितः ॥ २५ ॥ इत्यं छिनरो विप्रहत्याप्रोक्ता हि महनोमम ॥ अनेन संगोच पितृणां भवेन्नविवहाम्यहं ॥ ईश्व
र उवाच ॥ इदानीं वदहानन्यानं पितृपापजन्मनो मया ॥ अपावर्तनो भवेन्नाक्लिष्टं ज्ञात्वा प्रतिसिद्धत ॥ २६ ॥
देव्युवाच ॥ नरितिं देवपापस्य पुण्यं दृष्ट्वा पितृनामनः ॥ सर्वं निवेद्य मामनयाज्ञीनसैवप्रयामसं ॥ २७ ॥
एक देवच समराजान्ते दंशयामात्मगार्थिव ॥ दृष्ट्वैव वचनां नं स्वर्कं यथालिंगपृथिवीपतिः ॥ ववंदे श्राद्धलग्ना
कां संप्राप्तलिः प्रमाणः स्थितः ॥ देव्युवाच ॥ राजपुत्रनाक्ष्यवत्तानन्दो भे महाप्रामप्रहीन ॥ नमस्ते
देहि मामसमीलो केनाम्यपानिहतो ॥ २८ ॥ शुक उवाच ॥ शौनिनयापाविनीरहतवपानं समस्तेपुण्या ॥ स्वदीपे
मामयापदेनाम दृष्टीनं देवानामज ॥ २९ ॥

त्वत्स्वत्वशर्मिष्ठासनमा देव पान्या: प्रकोपेपमिप्रक्रान्त्वीनः स्वल्पश्रीदेवउवाच कृष्ण इति ॥ २३ ॥ २४ ॥ प्रत
नाभिनिहेदः ॥ २५ ॥ मामामयं वक्षिप्तेगलाहरणीपर्यग्निपलन देषमं ॥ २६ ॥ २७ ॥ [illegible] देवे ॥ २८ ॥ २९ ॥

263

१६६

॥१०॥ विधानं देवमनवर्जितं त्वं मनस्तस्मात्ति ॥१२॥ तत्तो रूपं स्नाहोकाने [illegible] देनस्वयं वृत्तकामेणास्तुतस्तेति
॥१४॥ पर्यत्नकार्यं णात्वा विनं मीनपमादिधन्नशक्तो सिधल [illegible] नेकालोति ॥१२॥१८॥ संस्तुतं
स्तिन्नणपस्तवस्पवासस्तणवीर्याधदेव नसंरूपकाशस्तणा स्वयं मम सर्वहस्तयिय कन्यासतेषाम स्तुति

यं च मे स्तुतो दासो यशा हंतन मगमिनी ॥ नुहिताण्दानवें रस्य शालिग्राम तपर्वेषु ॥२३॥ यथा ति
स्तुवाच ॥ कथं नतेस्तुतो स्तुतीकृ नो यं च मवर्गिनो ॥ प्रमति हसला मदः पांकोन स्तुतोहि मे ॥२४॥
देव यानुवाच ॥ सर्वेष वन वृश्चे हृदि धानमनवर्तते ॥ विधानविहिते न [illegible] विचित्रः कथाकृ
या ॥२५॥ पानवरूपवे योनेश्वा हंसी वाचं विभक्तिं च ॥ केनाम सन्कृत यशासिक सपशब्दयां त्वमे ॥२६॥
ययाति स्तुवाच ॥ वहस्वपर्यणवे देवो महः सः स्पृनिप यं ननः ॥ तत्ता हृतानशब्द स्वयं ययाति रिति वे
षृतः ॥ देवयानुवाच ॥ केनासर्वं नन्नपते संदेवमम्यायान ॥ लिचूतवर्योति जंकिं वि रूपवाक्
नलिपया ॥ ययातिरूवाच ॥ स्वयनि विस्मय हं मदे पानीयार्थं वाक्पानालः ॥ वहूयापत्नशक्तोस्तिन र
न्यालनमईशि ॥२७॥ देवयानुवाच ॥ हाकर्त्तकन्यासहस्रं तदावाक्षिपयासहृ ॥ नदयीना
स्तिभर्ता त्वं स्वत्तो भर्ता तव मे भव ॥२८॥ ययातिरुवाच ॥ विद्धौशन सि भद्रं ते न त्वामर्हो स्मि भाविनी
अविवाह्या हि राजानो देवयानि पितुस्तव ॥२९॥ देवयानुवाच ॥ संसृष्टं ब्रह्मणा क्षत्रं क्षत्रेण ब्रह्म सं
हितं ॥ ऋषिश्चाप्यृषिपुत्रश्च नाहुषांगवहस्वमां ॥३०॥
ब्रह्मक्षत्रमानापन्नानामित्यर्थः स्नातकावेणाद्वस्तैति

तेत्वस्मिन्‌कृत्वि विनायन्नुहर वातनतो न स्ववलननसिति रविय कन्यायां ब्राह्मणलोत्तानोत्र
स्नेणः स्वयियरा श्रुत्वा हनणानान् वयिश्चे यरत्तुहोनानेता न्यायेय यरालमा तान् शकांक
विवाहितस्त्रानित्यर्थः ॥ रखावनवहस्वमादिन्तायस्व ॥३१॥

।।रहिते जिनने ।।२४।। अथ वंदं दवानवं ।।२५।। नमोगुरूं भगवान्हासगुरुं वचनेभ्यन्ननमपिनहितजिते
यननकंनमवतीमर्थः ।। वोगुरा भाषग्रहमेनानामेयेनमकिन्नलाभिकृताचेद्रहितजिपनेष्यप ।।
ननाग ॰ रेपि ।।२६।। तीब्रन्ननेनहितजितिग्रन्ननसन्नारोगननमागष्वहितलोभाव ।। पूर्वोक्तानि ।। सा
सोगुरुहमनरसेगन्नथा अवदंनेष्वरूपंपनितिनयदंनितनमिथ्यामोक्षाशुणाहीयोननानाथापर्थ्यकृतमाव

अथ निःकृष्याननामोनहितन्नालेयरद्भया ।। अथ मोक्षवनिनाभ्यसोपानिमुक्ते मोपहित्तनः ।।१०।।
नमोकं रहिते रत्नापापाचिद्या वाहराक्षिनी ।। अत्रगुमो मिन्नितिकृतागतानेवाकामरवीन ।। २ पार्मि
व ।। सोमसेरहस्यविसेरोमसुवहृष्यव ।। नववानाद्रुपमारेकः वियरहस्यमहेतिना ।। ३ रूपाभिन
नयालोहिं ने गजन्नेमा ।। संनायावेग्रमापाहस्तोनेहितरायविप ।। ४ ।। यव्ना नितवाव ।। वेमि
नापीलमषपग्रारेस्थकन्यामनिहितं ।। रूपेवलेनलपयपामिदह्यप्रमभवितिहितं ।। ५ ।। अग्रवीडपा
नांकामोरेवयानीयदावहं ।। नेयमादृजिनमाने प्रापनेवाभिपवेतगी ।। ६ ।। मार्दिवेप्रोवाचा ।। नन
मेगुरुं वचनेहितहितनमोमुनजनलविवाहकाले ।। प्राणान्यपेमर्वपन्नापहारोपंचान्नमामा
द्रुपानकानि ।।१।। सूत्रेतमावेग्रवदंनमन्यथावदंति मिथ्यापनितेननरंद्र ।। एककार्यनायानम ।।
माहिनायांमिथ्यावदंनेनःस्तेनहितसि ।।२।।

स्यापि पूर्वप्रहितनानैथावहिंसाहेतः सत्यमथान्न
मेव अहिंसाहेतुरन्ननमथिमन्मेवेतिभावः प्रकृतमाह ।। एककार्य ...कृ प्रयोजनेनायांप्रमा॰
हितायामावयोन्नहगायनद्वेष्प्रयोजनेनन्त्येनेनिष्ठितेसमिदेपयं ...नेलनमभायानप्रामिथ्ये
ति मिथ्यावदंनेनामेवान्नेहितनत्नोमर्थः ।। १२ ।।

264

१६२

म.भा.
शां प.
१३९

११॥ एतत्तेप्रतिनिगदवती ॥२०॥ इति श्री महाभारते शांतिपर्वणि राजधर्मे [illegible] ध्यायः ॥ २१ ॥ ॥२१॥ युधिष्ठिर

न क्षित्नमायायामे भ्रमुः पार्थिवात्काद्राहिनी ॥ लोभे कामे प्रयमनः नष्टाशू प्रतिघनमान ॥१॥ एन दे
चननः कालेन नश्वरो वनता ॥ कृमां देवगर्भेमं वाञ्जो वनिश्चलोनवेन ॥२॥ [illegible] ॥
वैशंपायन उवाच ॥ अर्जुनाक मांनाननले देवयानी श्रुचि स्मिना ज्ञिनयामासइः कोनी पार्थिवा
प्रतिभाषत ॥ अभिगम्य वयार्थिवादेवयाय्त्र वीरिं ॥२॥ देवस्थान उवाच ॥ किं मिदं दुजिनं कृ
कृतं वैकमलत्रया ॥३॥ युधिष्ठिरोवाच ॥ अर्थितस्थानमन्त्रः कृतिदुर्भेमावे स्पाकृना ॥ ममयाबा
दुःकृमं चिंतितोयभंहितं ॥४॥ नाहमनया पलः कामसावशालिष्ठुविस्मिते ॥ नस्ताहंधिमेसाय
तो मिनि प्रसंपरवी मिते ॥५॥ देवस्थान उवाच ॥ प्रोभं नेभी मक्षयेश्रमध्यमङ्गायते हितः ॥ किं च नामा
मिननतावे नभि द्वाम्निनं हितं ॥६॥ युधिष्ठिरोवाच ॥ नयह्याते लसावेव दीप्यमाने पया विं ॥ तं
इक्ष्मामनं सह पार्थिवीनी सीत्नुविस्मिते ॥७॥ देवस्थान उवाच ॥ यचोनदेवमार्गि तन मन्त्र वियतेम
म ॥ एपनंयदितेलत्रं सेवाक्रु प्राचवेहितानं ॥८॥ वैशंपायन उवाच ॥ अन्नान्यमेवमस्मानं तं
प्रदद्युचनेमित्रः ॥ नगाममार्गदीवेक्षुमनक्ष्यमिस्यवनान्वधी ॥९॥ प्रयत्नाहि देवयात्मकां गुच्छ
जनयतपः ॥ यदं चनवंचैवशक्तविश्रुद्वापयौ ॥१०॥ नस्ताहं वनस्पार्थं पार्थिवावधं यावे ॥
ली ॥ दुःप्रवानं च दुःहंच शीक्रमानान्नीतनल ॥११॥ नतः कालेन कांक्षिप्रदेवपानोमृविहि
ता ॥ ययानिमहिंतापाउजातामपदितं वने ॥१२॥ दहर्षा वनचानवर्कमामाद्वह्रपिताः ॥ अरी
दुःमानान्वविध — नविस्मितावे दमब्रवीत ॥१३॥

मध्ये सानवती ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२

१६९

265

१८॥ एककार्थेनाभेदवद्याच ह्ये समाविति॥ देवानन्वेनोविकाशेमनोवृ[illegible]नैसर्गान्स्यादेवृषदेव
यान्यान्तमानसाह्वन्यन्तदेवमयापीमष्ठे:॥ यान्तो यत्तेमस्या:पति॥ स[illegible]समापिपतितेनलो
क: प्रसिद्धाद्दयांतिसमेसद्विवाहेमत्योसदेवनरा[illegible]निवाहंसिद्धमदूर्दयो: प्रदेयइत्थानचव्रतोय
वादेहास्यनादल:मेमयाद्वनोसिरम्न:प्राश्येयेत:पतिर्विति॥ १९॥ राजानाभाधोमसभंतेरासोनार्हतोनि

याज्ञवल्क्य उवाच॥ राजा प्रमाणं भूतानां सनश्येन्नस्यावरन॥ यथीहकुर्मदपि प्राप्यन निर्थोक्तने
मन्नाहे॥ २०॥ गार्गी उवाच॥ सपावेनोमजोरान्तन्यतिःसत्योग्रपःपति॥ समेविवाहविन्याहुःप्र
त्योमेशिवन:पति॥ २१॥ याज्ञवल्क्य उवाच॥ रातनेयाचमानेभ्यानिमेचनमाहिते॥ तेचपाचविमाक
मेद्ह्रिकिंकरनाप्तिनो॥ २२॥ ऋषिरुवाच॥ अथमीमाहिमांगत्वाभेचप्रतिपाद्य॥ तजोपान
तीसोकेचरेयुधर्मेश्वतमे॥ २३॥ नयपवायुनारत्नाधोदासत्याप्तन:॥ तंतेसमपितानेतिप
योनेनसुनतदंते॥ २४॥ देवयान्यामर्जितयाभिवयपाचनवभर्तो॥ साचाहंचनयाराजंभजनीया न
भजस्व मां॥ २५॥ वैशंपायन उवाच॥ एवमनलस्यनान्तनसधिम्भिन्तिवान्॥ पुत्रपामाप्त
सिद्धायमेचप्रत्ययारयन॥ २६॥ सहसमागम्यशर्मिष्ठांपद्याकामसवाप्यच॥ पन्योन्यंचाभिसंपू
ज्यजग्मतुर्लोकयथागतं॥ २७॥

प्रकान्तेनेरेमरतःभोहेदातेपतिसातीनेदानयामिति॥ २८॥ अथपर्मोचरद्न्यवरत्नानाहमिकाराज॥ २९॥
ननतमपिपित्रारतेनपनेनपर्मेचांनीयतिप्रमृद्धिकिं संतमेनामंचात्॥ च यशस्वि॥ ३०॥ भजिसादे
वयान्याभर्तनामितंनीतियोगादृशो॥ ३१॥ भतिपालसमस्यालयामितिनिश्चभिनदिवान॥ प्रभिनः
साकलेनतानवान॥ पमेसलनदानेनप्रातंवाणा॥ ३२॥ २५॥

म॰ भा॰
आ॰ पं॰
२६२

अथ योनन्तीवस्थाभिवृद्धिहलमस्यहृष्टः अनिहता भिवतः सकाशादपत्यं यथाविधि गमेनातिकान्ता
उहं चिनाभि ॥ १५ ॥ तदेवाह ॥ वयरानि ॥ १ ॥ अथ यमेव अपत्यं कृत्याः ॥ १७ ॥ नान्यथैव सा न काम सोऽमे

देवयान्युवाच ॥ अथ धर्मेण त्वामिति सोऽयं धर्मः पुत्रत्वमपत्येत्वं ॥ शर्मिष्ठयाभिहिता भित्रहित्वान्नृपपर्वणः
१८ ॥ नवयौवनां तदानीं तः पुत्रत्रयाणां तेन यथा तिना ॥ ३ ॥ मिनाया समहौन पुत्रतोनानन्तवं तौ मित्रे ॥ २ ॥ य
मेत्रयति विश्रोत यत्र गता भ्रमण २६ ॥ अतिकान्त ग्रसमर्यादा हं कथेन तत्र स्वयामित्र ॥ २ ॥ शुक्र उवाच
यदितः स्नस्य त्यावधायधर्ममकृत्याः प्रियं ॥ नस्या तदानामचिरादेवेत्थितिपनि इजेया ॥ ३ ॥ ययाति
रुवाच ॥ सततैवयाचमानानायामयाजनस्य चेतस ॥ ददिन दानं वैद्यपथ मेसेन तत्र नमया ॥ ४ ॥ सर्वे
वेषा च मानानायानदद्यानि पुमान्नृनं ॥ भूमि देहेत वनेवहान्याद्दहन्वादिभिः ॥ ५ ॥ भूमि कामां हि
यद्यत्र गमामाद्द्रभियावितः ॥ नायेति सचधर्म भूमि देहेत वनेवथे ॥ ६ ॥ तस्मेनातिसमीत्याद्द
कामत्वौ भ्रान्त देह ॥ अथ तमभयपं तिमः शर्मिष्ठा मपतत्मिवाम् शुक्र उवाच ॥ तवनर्हप्रस्यवेत्या ते
मद्यौ ना भिया शिव ॥ मिथ्या वा यस्य धर्मे च चार्थं भवति ना द्दृश ॥ ७ ॥ वैशंपायन उवाच ॥ कुद्देनो
शनसा शप्तो याति ना ईदहवलद ॥ दृष्टवं च यः पतिमान्यनराम्पयोत्नवयं ॥ ८ ॥ ययातिरुवाच ॥
अनस्मीयौवनेत्प्राह दैवयानीमयानदह ॥ प्रसादं कुरु मेव्रह्मन् जरेयं न विशेच मां ॥ १० ॥ शुक्र उवाच
नाहं मृषावदवी मैतं जरां प्राप्तोतिभू मिप ॥ ११ ॥ जरां त्वेतां त्वमन्यस्मिन्संक्रामय यदीच्छसि ॥ १२ ॥

न ॥ १३ ॥ न कांचन पश्ये देहदेवितिस्त्र तिलिये पातिकमन प्राप्य धर्म यशः भयपस्त्रोऽभिज्ञः अन न्मपूर्विकां गमं
यांकांचनविधायस्तं यादृमानां न पश्येद्देन स्नापावतीतेनिस्क न्दर्थो ॥ १४ ॥ प्रतिवेदस्तः अस्मिन्क
मित्रिमस्यात्वायिन या प्राप्यैनोदिये ति मतवः ॥ १५ ॥ १६ ॥

१८

॥१॥ [illegible] ॥१४॥ [illegible] ॥१५॥ [illegible] ॥ [illegible]

देवयान्युवाच ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥१६॥

वैशंपायन उवाच ॥ एवं [illegible] ॥ देवयान्युवाच ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥१७॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥१८॥ वैशंपायन उवाच ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥१९॥ [illegible]

[illegible] ॥२०॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥२१॥ देवयान्युवाच ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ शर्मिष्ठोवाच

[illegible] ॥ [illegible] ॥२२॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥२३॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥२४॥ वैशंपायन उवाच ॥

[illegible] ॥ [illegible] ॥२५॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥२६॥

[illegible] ॥ [illegible] ॥२७॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥२८॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥२९॥

[illegible] ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥

म॰ भा॰
श्रा॰ प॰
२२९

१८॥ लिंगे योनौ नाभिस्थाने प्रकाशयामि [illegible] ॥ १९ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ २० ॥ [illegible]

[illegible] वाच ॥ न कामये [illegible] ॥ २१ ॥
यथा निरुवाच ॥ यत्रं मे हृदयं [illegible] ॥ २२ ॥
[illegible] ॥ २३ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ २४ ॥ [illegible] वाच ॥ यत्रं
[illegible] ॥ २५ ॥ यथा निरुवाच ॥
[illegible] ॥ २६ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ २७ ॥ [illegible] वाच ॥ [illegible]
[illegible] ॥ २८ ॥ यथा निरुवाच ॥ यत्रं मे हृद
[illegible] ॥ २९ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ३० ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ३१ ॥ [illegible]
यथा निरुवाच ॥ [illegible] ॥ [illegible]
रुवाच ॥ [illegible] ॥ [illegible]
ये ॥ ३४ ॥ यथा निरुवाच ॥ यत्रं मे हृदयं [illegible] ॥ [illegible]
लक्ष्यते ॥ ३५ ॥

[illegible] ॥ २२ ॥ २४ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ २२ ॥ रामः ॥ राम

२२९

267

[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

॥५॥ विषयादित्यागं यादृशः गोचरेव यो यद्यन्ते विषयगोचरः ॥ ६ ॥ यदीतिसोवर्षे [illegible] पञ्चहृदि
नादिनानिपञ्चदर्शनाय [illegible] निफलक [illegible] नेत्रकने [illegible] धिकप्रतनत्रपरिनाम्न
[illegible] कलाः काष्ठा [illegible] निमेषाः काष्ठाः त्रिंशत् [illegible] कला [illegible]
[illegible] ॥ ७ ॥ पलकायां [illegible] कालः [illegible] कालं कालो [illegible]

धर्मेणावमज्जतः सर्वाय यथावदन्तानयन ॥ यथा [illegible] ॥ ८ ॥ [illegible]
हविषं [illegible] विषयगोचरः ॥ [illegible] ॥ ९ ॥ [illegible]
मानन्तमः [illegible] ॥ कालं [illegible] ॥ १० ॥ [illegible] कालतः क
लाः काष्ठा [illegible] ॥ [illegible] ॥ ११ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ पलकायां [illegible] ॥ १२ ॥ [illegible] कालं [illegible]
[illegible] कालपूर्व [illegible] ॥ १३ ॥ [illegible] ॥ [illegible]
विषयाः [illegible] ॥ १४ ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ १५ ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ १६ ॥ [illegible] निमिषं [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ १७ ॥ [illegible] विषयासक्त [illegible] ॥ [illegible]
ने ॥ १८ ॥ [illegible] ॥ निर्द्वन्द्वो [illegible] ॥ १९ ॥

[illegible] ॥ २० ॥ [illegible] ॥ २१ ॥ [illegible]
[illegible] विषयभोग [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] निर्द्वन्द्वः [illegible] निमेषः [illegible]

भा॰ भा॰
स्कं॰ ३
१९९

१६८

१९९

[illegible]

म॰ भा॰
आ॰ प॰
८२

कार्त्तिकके ॥ २४ ॥ इति श्रीमहाभारते भावदीपे अध्यायः ॥ एवमिति ॥ १।२।३।४।५।६।७।८।

दृष्ट्वा च पुष्करे वेदान् वनवासमथो विदितः ॥ ९ ॥ तान्न निर्दहतो राजन् आहतो लोपहैः सह ॥ १० ॥ यदा तस्य दृष्ट्वा ... तस्य सोऽर्थवनाः स्वना ॥ ११ ॥ ... मना ... भोज्या ... तमेव ... ॥ १२ ॥ पूर्वे ... योऽर्थो ... पार्थिव ॥ १३ ॥ ... कारयितुं ... ॥ १४ ॥ स्या दिप ... या ... स ... स्व ... ॥ वैशंपायन उवाच ॥ एवं ... ॥ तस्य ... ॥ ... फलमूला ... ॥ ... कालेन ... ॥ ... ॥ ... ॥ जनमेजय उवाच ॥ ... ॥ ... ॥ ... ॥ ... ॥ ... ॥ ... ॥ वैशंपायन उवाच ॥ ... ॥ ... ॥ १० ॥

१२०

[illegible]

विद्न्नाम्भिमानानि । यथा सर्वे तस्येद्रष्टव्यो वक्तव्यमित्यविमर्शान्यायानिरास ॥ अक्रोधनः इति ॥ वैरिषि कृष्ट
नानान्नस्य ष्ठेम च्याने समानसमानविषयसमेद्रूनान्नः निसमयोविषमा हिंसमयोः साम्यं चरन्नास्वगुना
न्याया यान्नि यनस्यारणान ॥ आकर्षणमानः इति अपचमाक्रोशु सहकं नतिनि त्वं विरतिनन्नाक्रो चोतस्वी
यमविहक्रन्तेना यायनी तिमानवः ॥ ॥ नावेनरइति ॥ कायेननन्न यंसत्यवादी निवा चापि पौरुं नकर्या दि
त्यक्रं ॥ नहीनन्नः परमस्यादीनेतिहीनेनाम्भि चा पाहिक मेणापरं प्राक्ने नवधो कने मिद्धेदितिमनसा

अक्रोधनः क्रोधने भ्योविरिषि प्राम्भनिवि यिर्लो इतिनि वो निमिहः ॥ अमानवे भ्योमान्नु पास्य
यानाविहं लक्ष्ये वानि इच्छः प्रधान ॥ ॥ आकृषण मानोनाक्रोधे मन्त्ररेवनिमि वनः ॥ अक्रोप्यार
निरंहनिसकं नं वाम्यविरतिः ॥ ॥ नाहं नरः प्यान्नस्वं सत्यवादीनहीनन्नः परमस्यादीन ॥ ययाः
स्यवाचापाइहिजेननतां वदेदुपदतोपापवलोक ॥ ॥ यहं नन्दं मददं तो न्यायवाचं वाक्कंटकं चिन
दं नं मनव्यान ॥ विषा दलस्योकनमंतनानं मत्वेनिवकं निरस निवर्दन ॥ ॥ तद्भिः उपस्कंदमि
पूजितः स्यात्सहिलतथा प्रद्युतोपदितः स्यान ॥ सत्यं यननामनिवादांतिनिवेस्मनं नानं चाग्दीना
ग्रहनः ॥ ॥ वाक्यायवैः नदं नोनिः पने तिषेपहनः पोचनिरामहानि ॥ पापवाक्सं हनेपनं वि
हेदन ॥ ॥ वाक्यं पतिभो नाव हस्नेन्यरेष्ठ ॥ २१ ॥

विपापौरुं नकर्या हिन्यक्रममहः तलननदंने प्रसंने नदति मधयनीति कंटकवनूप्पादिनिपदार्थः ॥ न
स्वं सखवादीप्पादिलेननस्यायेनप्रपंचयतियपारथेनिइयंनीदहेनीहघनीमितिपादेदिशं ॥ ॥ वि
प्रादलम्भीकनमभिन्यनेनयहषवचसांदर्शनमपिप्रलसोकरनान्यदिहाये मिसुक ॥ ॥ केनदे
नस्तंनाइत्यन आहसहिरिति ॥ अमनामनिवावादानतुप्तान्नामनिक्रमवचनानिनितिवेन ॥ ॥
॥ २२ ॥

अथ ष. क. वाच॥ कर्मणैव तु नानाविधवनस्पत्यः स्वनेनतमादीप्यमानोपयाग्निः॥ पनसदी तां च यथा यंथकाः पात्रवानावेवयाणां अवबोधयनात्कं॥ १॥ इत्युवाच मां तु धीवयास्ततेनवै श्रानरात्कं यत् निमयमेधं॥ किं न श्रिवेनतत्प्रलनीतिसर्वे विनर्कं यत्नः परिमिता हितात्स॥ २॥ इत्युवाच नारायणि नेदं वमा गोपाकार्षेविस्वप्रतिमप्रभावे॥ यस्मात् नाल्लोवयमयस्वेनतं च य नेनवतित्रा समानाः॥ ३॥ न वापितात्प्रसमः प्रभुमग्नेनचनमसमानत्कक्षिये वंयमः॥ नमोऽस्तु ते मंस्य हत्वीयत्रप्रकस्थनं वाकिं निमित्तं नमममाः॥ ४॥ मयं ननेवेन विषाद मो हे त्वजा श्वेवेदं सम प्रभाव॥ तां चनेमानेहिमनांमकात्तेनात्वप्रसोऽतुं वलह्या पिपाकः॥ ५॥ सनः प्रतिज्ञा हितल श्रुताः तान्यत्तान्मरैवामयपालकस्या॥ ६॥ नेसंगनाः श्रावतेनमपेषाः प्रतिहितलं संख्या सं प्रभु रत्रिः प्रनपवेमुक्तिनवपनेप्रभुः॥ प्रभुः स्वधः प्रकाशिते सन्तं वाप्यपालः प्रभुः॥ ७॥ यवत्तितु नरयायाते॥ यथा तिष्ठवाच॥ अहं यथातिनं इयप्रभुवनः स्वरो विना सर्वं मानाम॥ प्रभ्रंशिनः स्वर्गविमृष्टिं लोकात्त्वरितं मनः ॥ ८॥ अहं हि पूर्वो वय सामवमुः तेनाभिवांसमवत्तोनष्टने॥ के विषयात्तमया नत्तनानालहृदः स्वस्त्येमवति हितानां॥ २॥ अथ कृत्वाच॥ अवादीत्त्वंवयसायः प्रहृष्टः सर्वेष्वनश्चापयिकः कथं वै॥ गोविषयात्तमयासंप्रहृष्टः स्वपवत्वत्तोमवति हितानां॥ ३॥

नहीदृशं कानिविद्याद्रिवनस्कंदंवनंनसंभ्रमं नेपरमेश्वरस्थानापनं ॥ ॥ [illegible] ॥ [illegible]
दृष्टो ॥ [illegible] ॥ किंमयंपरोपदेशमेव कृतनवानं [illegible] नैतिपरीदिन
तिद्वउवाच सर्वलोकानि ॥ ॥ [illegible] ॥ नाहंमि

नहीदृशं देवनने त्रिषु लोकेषु विद्यते ॥ दृष्टा मे तीर्थभूतेषु दानं च मयप्रदत्तं च ॥ ॥ नसान्तं
तेमया दानं नवा तेपदृष्टं चिन ॥ [illegible] चपावे [illegible] ॥ ॥ [illegible]
ति उ नर या यानि ॥ इंद्र उवाच ॥ सर्वा [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ॥ यया नि उवाच ॥ नाहं देवमन
[illegible] ॥ ॥ इंद्र उवाच ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] लोका [illegible]
[illegible] ॥ ॥ यया नि उवाच ॥ [illegible]
[illegible] लोका ॥ [illegible] ॥ इंद्र उवाच
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] उवाच ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ॥ [illegible] ॥ ॥

[illegible] ॥ ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ ॥ [illegible]

म॰भा॰
आ॰प॰
२७२

वनदेवविनृत्यौति ॥ स्वदेहीनिहाय्या ॥ २६ ॥ भयंननेवनविषादमोहविनि ॥ यदष्टकेनोक्तनचो
नमाह ॥ भयेइति ॥ यानाहिर्ढ ॥ २७ ॥ यहमिवाक्येषिहियाधीनाग्वेमाह ॥ स्वेदनाइति ॥ एतेषिदि
हृदयेषुएवपापोह्वेदेसांषकृ निपांतस्य भनंनिमामवंनि आगोहकमेणमोदयोगंदेहंप्राप्ते
पूषः ॥ यदहानावालोपनिषद्धिय्यविमकंप्रकल्पत्रहिनंनोः प्राणेहलकममाणेषुहहलाकं
जस्य मावष्टेयेनामावहनीमृनामोहीभवनीनिनंनपदेनप्राप्तिमावसाधारणेनसंस्वेदनादे
नामपिमाहाहागाणाषांमोनापिकामदर्शनानाः आश्वर्वेनेगमनापनीयेसमतिकनिकायां

सर्वेहितंनयेहिवापिडःस्वदेवाधीनेगिदनेनानायानाः ॥ नस्माहिमुंवलवनस्यमानोनसं
नदेहनापिहृष्येकर्थविन ॥ २८ ॥ वःदेहेनंनषोलमहेः यहष्येनमेनवनंलसदेवधीरः ॥ दिष्टवनो
यइतिमन्यमानोनमंनदेहापिहृष्येनकंथविन ॥ २९ ॥ भयेनमहामयुहकाहकदर्चिन्संनापोमेमा
नमानाहिकथ्विन ॥ यानाययाणांविहधीनलोकेषुवेनयाहंभविनेनिमनः ॥ ३० ॥ संवेदनाङ्ग
उनाघोहिनाश्नमरीमया:क्रमयोयाघ्रमत्स्याः ॥ नवाश्म नहरणकाष्ठचमवंदेहनयेसा
प्रकृनिमन्नानि ॥ ३१ ॥

वानेवेवागंमापांवानरेषुनगिस्युयक्रमपक्रमिकीनस्योयाश्वमनकाःसंलनवाक्येनितंनषानृषे
वरणाबालस्मासादेवस्वेदनाहीनामयिदिदुनयेस्लेनयांपांयोनिक्रकेनप्राहारदोषोयणालः
मृगाप्पाश्यमेपिकेसंवनेमहनीयेपनहर्षेकीने ॥ उन्मनवेदविप्रवन्यवेडमीनिस्थायानेवानाण
संपामहनानदर्शनेनमंहस्यं ॥ नस्माहारेममाणपनसंस्थाःकृणपंक्तिविन ॥ नंदस्थायोनिव
नेनमसंवनीमहीयनेइनि ॥ कृणदर्शनेनसंदेस्वरदर्शनदिहिनवयनानावयानेन ॥ ३२ ॥

२७२

272

[illegible]

273

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

स॰ भा॰
अ॰ पं॰
२०५

स्वांगत्वमिति प्रकाशयत्स्वेति ॥ यदेनमहलेपनमत्त्वं इति यतत्रफलदनमः पापादेनोः पतनः स्वांगत्वमव
मानानत्वोपलक्षणात्वं इति तेषु ह यः कथं भवति यथा नभूत्वा व कथं न यद्यन्तेऽक थं वा भवति इ
दयादिसिंनो भवं तिक थं वा गर्भत्वं आसंवनो इति प्रश्नत्वं ॥ ४ ॥ तत्र यात्मनः यात्म प्रतिनाश्रेत्मेवा-
यात्मेव तत्विर्वतत्वेन यथेन माकृयात्मरुक्षभूतानाभूतो भवति युते भूतः स्वभवति प्रश्नं भूत्वा मेवो भवति
सेवो भूत्वा प्रवर्त्ततिति ॥ तत्र वकृद्योति यवाशेव पिवनस्थनयालिलमायाद्दति जायते इति युक्तत्वं

274

प्र॰ क॰ ॥ व ॥ यदेनमहलेपनमनत्वं इति भोमा मेंमा पवमाली स्वाद्युतः ॥ कथं भवति क
थमा भवति कथं भूत्वा गर्भं भूत्वा भवति ॥ ४ यथात्मनिह व ॥ प्रसूतेनः तुष्टफलान्वह
मन्ये तित हे तु ह पेण्वहं ॥ स्वेन स्थांवनया प्रयत्नेवे हगर्भं भूतः समस्ये तित व ॥ ९ ॥

स्वर्गतां प्रवहं देवदति ॥ प्रत्यशाद्वोदः वोम् स्वावीयत ॥ भावः तुहपवचनो भवंतोति युक्तः तेः देहस्वंम
केश भूतस्वत्वेषु वर्तते स्वर्गोत्व ॥ आवभावप्रयुः स्वाजनमयंस्थारी दभवतोति युक्तेच ॥ तद्वमवेवोत्वे
देहवीतं तृष्णफलस्यानीयनत्वं यायोग्न कर्मयोषे परान्दृहत्वं स्मरणां यायोनि मापयंतदति युक्तः तेः
प्रवृत्ति ॥ प्रतनसर्वं तिजीवः ननत्वानगं प्रहेदे ह पेगोनसिकाद्वहं स्वं हदयुं भवति ॥ हधभूतद्वसा हतो
तीवोरेतो भावं प्राणः संस्तत्याः स्त्रियः रेतः गर्भयो यीनतां प्रापयनस्त ॥ त्तिनवोगर्भं भवतो भवति

२०५
९

मा॰

तस्मादेन नकाम्यंकुमेड एनिखिहृंगहृंतीयमामि वाप्रिकं च वर्जनीयं ॥ ५ ॥ नवत्रकंकदिमहिनस्युक
व्यस्तहःएसनावकश्चवाशगीवं नरेत निभावउनिरे हस्त्यवाहमाम्रियकंऊंने ॥ भोमोनारकध्यकउनिष
वुनि ॥ यसाननानितिनि ॥ ५ ॥ नरमाइ ॥ कृधंकिनि ॥ नरेहनायेनमानमनाधानुनहानारिप्रहंगानिनिम्
मोनिमनोप्रएवेनेपातेयनाघदेहिनः स्यात्तमनोन संवंनिपयाश्चनकिनिश्चनेः ॥ निमिनभुनेनक
मेणोनकदेरेनभमाणेदेदंप्राप्यनिगमानदेयकें संदेनोनकग्रनदेयथास्यानयात्पयिसांसंचरेनिन

नस्मादेनहलेनीयंनरेंदउपंस्नोकेगदंगीयंवकमें ॥ स्मात्मनेनेपार्थिवसर्वमेवभयंथेदांनी
वदृकिंनेवदामि ॥ ५ ॥ प्रष्ठ कउवाच ॥ यदाननानिनदेनेवचांसिनथ्यादृष्ट्वाः खिनिकंदाः पनेगाः
कथमवंनिकथमामभंनिनमोममनंनरकंस्पलोमि ॥ ९ ॥ प्रुष्ठ निरुवाच ॥ कृष्णंदेवकमेनांरे
भमाणमंककंएथिव्यामनसंचरंनि ॥ स्मंमोमंनरकंनेपनेनिनावेहंनेवधिएमाननेकान ॥ ९ ॥
घहिसदस्माणियनेनिमोक्षिनथाषयोनिगोचरमानि ॥ नाम्नेनदेनिप्रपननः प्रपाने
भोमामोमापदसाणीदणदृष्टाः ॥ ८ ॥

देवसंचरंतं भोमोनारकः कनोस्थनारकनमनआह ॥ नावेसंनेवर्धएमाननेकानामात्मादत्रपनिनाःग
नंवयोनवधनेकभिभूनिप्राप्यापिनहिनायनयंनने नोनिमोदृप्रदोयेनोकोनारकपवेम्नर्थः ॥
एनेनकंकादिमहिनस्यापिशनदेहयोगात्मानीनसं ॥ ७ ॥ स्वर्गेनमापिवनः पानाववयभावाद
गंलोकोउः पोहसानिस्माह ॥ वहिसदहस्याणीनिम्नणीनिव ॥ वहिसहस्राणिपदिवस्तरानि
मोनिमनोंनिनापनंनीनियोजनारवरवेनिवदंनोस्तगादयोभौमानारकाः ॥ ८ ॥ राम

तद्देनदग्धानुनाथेके पाणिग्राहीकारे कारदिहृदति वाक्यः समकर्षेनीति वाकुशे हि लिंगं वाकुवेगो नम
तनस्तं वाकुरेवक्षा हिवाकुः समहितिति श्रु. तिश्रं: ॥ पंचश्रुतागम नो वुद्धिः दृष्टो हि यस्य समन्वितं ॥ श्रुपं चौ
कु. नम. नो स्य हू. स्वां गम. नक्षायनतिथिः क. रूपं ॥ नक स्नान्मे यो नि गर्भे स्थानं मातके कर्म. न स्य नो स्वीय
तस्थितेन: हृदौके. श्लोकारेन श्लोके. कर्म. कलो कान्दक न्वामानस्यारसौ. हृदौ ने ला नप्रको गोगक मम
मन्त्र. षित्ति ॥ श्रुशौ शालाकृति: समयगादि. नम यति प्रते ॥ श्रुतिः स्पष्टाणले हृ हिहे हे न्यनतः प्रज्ञा इति
स्यते ॥ पं चश्या मा तूनानाण: श्रुत्तवचमो भवनीति श्रु. ने श्रु. ॥ सा मा स्प थय स्पा हि रूप: क. मसमव
तिनी हे हं न न मं भिक्रा श्र पारेनो रूपाः स्पहीनाति गणिपिनी बोग भौ यू पवि श्रुतो न्य ष्ठः ॥ श्रुन्य.
त्या स्ततो हिक. मतिरेन: हृयेन्स हं मवेन्स शिवी भवेव श्रु वाकुस्य च नर्भ पायेन स्वाः गतिहू. स्यम.

यथातिथौ च ॥ वाकुः समकर्षेतिगर्भयोनिस्तौ रेतः श्लोकस्थान
प्रकम ॥ समवचनस्या च कृ. नाधिकार: क. भ्यांतं वकुयनी हगर्भम ॥ १४ ॥

तातिनेष्याद्यानभ्रतै: कृतस्याधिकारो यावदपवर्गेव स्थानं यस्य स: तस्मा च कृताधिकार: एवंम.
तो वाकु: क. मेण गर्भे व द्धेयति यथा दृष्टै हतः ॥ श्रुक्रा नि रे के प्रमाणं भवति यो हि ता तिरे के तीभ
वति ॥ स्नायं सप्तमेन नखक्रेश कोशतां भवति ॥ श्रुकृ. भौ तेन य प्रमो भवति ॥ एक तत्रोणितं फलं भवति ॥
पंचगाता द्वेदः समगतास्येषौ हिः समगता दृहेदः ॥ पंचविषानि नाड: स्वस्थिनो वृत्ताभवति मा समा
वाक्. हितो भवति हि मासाभ्यंतरे शिरः संपद्यते मासत्रयेण श्रीवाश्यादेशे मासचतुष्टयेन वसाहेण
पंचमे मासेन त्वचो मम्श्राहेशः षष्टे मास नासिका हि श्रोत्रं च संभवति ॥ सप्तमे च वलन समर्थो भवत्या
ष्टमे हस्तायां वस्थितिन वमे संचां गनं पूर्णो भवति ॥ मनःश्वासाहू श्रुत नं ... ... ॥ पनः रेन स्या
विजानस्य वाकुना स्पष्टोनसार तितनूक्तनी एव. हृगं मेते च श्रु ... कु. मैं तं हैं नग्र घेन ॥ १५ ॥

कथमसंवेनः किंचासंस[illegible] ॥ वनस्पतीनोषधी[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ २२ ॥ [illegible] ॥ [illegible]

वनस्पतीनोषधीः [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ २३ ॥

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ २४ ॥ [illegible]

सं॰ भा॰
भा॰ पं॰
२०१

प्रतिपादयन्नाह नेत्रः कर्णे वैलक्षण्ये न हि भजते ॥ प्रत्यक्षं योनि मिति ॥ आहारे ग्रन्थ वचनां कल्याणन्तरं प्र
कृष्ट ते पितृ संबन्धं यं वांशे वं कथानाथानां वाक्यार्थे वेनिश्चितेः ॥ पितृव्या न्यून संयो निम वशो हेतुनाम ॥
लोपय चरण्यां स्थानो हृपयन्ते न म एवीयां यो निं वाल मिपयो निं वे निश्च ण्योयो निभजन्ते ॥ एवं यो पाम
पिण्डप च लोना र कौ यो नि म ना व हृष्य च एणः कहण्यो योनि मा पय घते स्व यो निं वा मल करयोनिं
वा वा ग्रल यो निं वेनिश्चितेः ॥ पापा यो निं भजन्ते निकी टाः पन्नगास्त्र मवं ति पापा पापे कृत्वा भावाः शुभे
नयेः प्रयोनारके नरे एवं च न नानी मानि तत्सु एवं सकृदा वजी निजा यत्र प्रियत्वे स्नेन न नं नीयस्या

तृप्तं यो निं प्रणयन्कृत्वो भजन्ते निपापा यो निं पापकृत्वो भजन्ते नि ॥ कीटाः पन्नगास्त्र भवं ति पापा
न्मे निव वालिम हानभाव ॥ ८५ ॥ न न भव दाग्नि पदाः सहृ पदा स्थान पाभ्यू ना गर्भ भ्रूणा भवं
ति ॥ भव्यो न सेन त्रिपि ते न सर्वं भवत्वं किं ए ह सितजन्तिं हि ॥ ८५ ॥ अष्ट कृद्धाय ॥ किं विन्द
ना समने नानलो कान्तरं प्र दांत पमा वियपावा ॥ नन्तेष्व हः पांसर्वं पथ्या व शुभ्रांलो
कान्ते न पा लोककृमेण ॥ ८५ ॥

नेः निश्चितेः ॥ कीटा द्वियो निमसकृत्कृज्जन्ते नि ॥ अनय वयो निं हं वा रणेः रव व हुल वाल मेवि वदा
नि महान भावा नापामे स्या द्रव्य प्रला ये पवितं मे स्या द्रव्य क मंकवी ये निश्चय मा एणजा पा रिमांस्वे
हे मि त्रापा मनजा हि किं नमूलि प्रायानेः कर्म मे व स्याप वि व्या मीनि भाव ॥ ८५ ॥ एवं वक्ष्य लाः
त्स्र ला व दे हा हि वे चिन स्पर्श हि नः नसें व धा तु लक्षा निः ततानां ल आ दृश्यां नामाना ने स्थल से वि
व त्ता लीनि न ह्लंतं वो नक मन न्नुं नं वो न स्यालम्भा पक म पा पं ए द्व इति श्रीकं स्थि रिति सौ प्रानाः

२७६

सेनिमयार्थो लाद्यमानो वर्धमानः विगतहीनमानः [illegible] यमानः संसार
मनीषीणां [illegible] संभावयतो मानः सर्वोनेव हि [illegible] मानमानः ॥
वाक्यवति ॥ एवं भूतस्य [illegible] नीचस्य [illegible] स्थितिर्भवति [illegible] ॥
तत्र मतमानः किं [illegible] येन [illegible] निश्चयात् [illegible] लोके [illegible]
॥१४॥ नमस्कृत्य [illegible] ॥

स्तन्ताद्यमानो विगतहीनमानः संसारमपि [illegible] यतन्ते मनवाप्यः ॥ [illegible] यतो ह्यहं स
वै [illegible] च ॥१५॥ [illegible] वन [illegible] भावं ॥ [illegible]
[illegible] विविधि [illegible] ॥१६॥ [illegible] संस्थितः [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] वन [illegible]
[illegible] ॥१७॥ [illegible] च ॥ [illegible] ॥
[illegible] भजन्ते [illegible] ॥१८॥

[illegible] ॥१७॥ [illegible] सर्वं [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥
[illegible] ॥ [illegible]
ना ॥ [illegible] भजन्ते [illegible] ॥१८॥

प॰ मा
श्रा॰ प
१२८

177

नत्वमाविघयावे जिनयोविद्ययोः कनाद्याजिस्म्य स्थानंमाएक मिजिद्धेनएसम्लत्राएउएकाक
नघकाविघायाः साक्षाद्देवनन्यापकनमाह॥ येवेति॥ मनोगुप्तिसमनोनिग्रहशीलस्यप्रमानताश्र
येहाण्यामाप्तिप्रानंउगात्रगापिनवंकृरस्यकार्यकारणावद्दिकागिनमवनीनर्थः॥ मानसस्यमार्गः
एतवत्रमाएएतेनतद्धमानांनयइत्नयेविशंसावेदुयंनेविदंनिहार्थेलिचनमेवेकंज्ञानोपयमा॰
मानेनचेटवेदीमहंतोविनष्टिः निःकलंनिःकिंचनजिस्याघएमेनानुभवामंचजानेजिनहल

येवाश्चयंवेदयंनेउगागेमनोगुप्तिमानसस्यगेहदं॥ नहः श्रेयत्नेनसंयोगमेन्यपयंपांनि
प्रामत्रः प्रेमचेह॥ २२॥ इत्यादिपवेषिउनयपयाने॥ श्र४कउगेव॥ चान्नरहस्यः कश्रमेनिय
मिान्कथंमित्नः कश्रमावार्थकर्मा॥ वानसस्थः कन्याश्रेसनिविप्रोवहूनहिनंप्रनिवेदयं
नि॥ २२॥ यपानिरुगेव॥ भ्राहूनाप्यायोगुहकमेस्वचोघः पूर्वोम्याघोचामंचोपपापी॥ मदइदं
नोपूनिमानप्रमनः स्वाघ्यायपीत्नः क्षित्तनिग्रहचारी॥ २२॥ यमानांप्राप्यपनंयज्ञेनरयान्स
देवानिष्योमोनजेत्र॥ अनादद्रानस्मृपरैरदनेसेधानहस्योपनिपन्नगात्री॥ २३॥

वः श्रुष्माकं श्रेयः यस्मानेनवहगणसंयोगमेन्यपेकंप्राप्यपगणेनिकेवस्यप्रासत्रलोरहनीव
सोवदेहे श्रेयदेहामिमानानश्रुस्याय॥ नयावश्र निः॥ प्रानीतास्त्रक्षणश्रुण्वंमोनिहपसंपयहेन
नयेएणामिनिष्यचनइति॥ २॥ २॥ श्र्रहयगः॥ वाश्निति॥ अहिसन्यपर्वेतिप्रहेवहूनिग्रानिहगगपिवेद
यंतिवेदिका॥ २॥ वनारिकर्मांएणमयंकगलीम्याश्रमकमैत्यानमंत्रुक्तरुभमनंनदेवविहलेरणा

॥ ... १२८

[illegible]

[illegible]

गिर्वंश्चनमयायांवहूनिमाद्दुहापकामयौयानृति ॥ २५ ॥ चननाचोयनश्चश्रायीनंत्रह्मचारियोधर्मसोनं
यलेः यनामिहोवैरतरयोद्दयोरपिसाधारण ॥ २४ ॥ अनोमानाप्रमानादिहंद्दसहिस्मेवेदिया
हृ ॥ नमानमानौरतिमरनिदयाििनेिहंमिकस्यस्ययमिश्रकापनाभिनयः ॥ अनस्यपयादि
र्देमवर्जितंचेमोद्दहांनानाथोनर्थः ॥ २५ ॥ २६ ॥

म॰ भा॰
शां॰ प॰
१२४

योगी ज्ञानी चेति ॥ हे मुनी इत्याह ॥ अरण्ये इति ॥ अरण्ये वसतो नित्यं यस्य योगिनः ग्रामो ग्राम्यं वस्तु
पृष्ठतः स्मृतोऽपि न एव भवति योगाभ्यासकाले ॥ सर्वसंन्यासी स्यात् ॥ ग्रामे लोके वसतो माया प्रपञ्चेन इव
[illegible] ॥ १ ॥ [illegible]
ति ॥ कथमिति ॥ २ ॥ [illegible] ॥ न ग्रामे वसति ॥ ३ ॥ हितो

अरण्ये वसतो यस्य ग्रामो भवति पृष्ठतः ॥ ग्रामे वा वसतोऽरण्यं स मुनिः स्याज्जनाधिप ॥ १ ॥ पद्यक
र वा च ॥ ॥ कथं हि वसतोऽरण्ये ग्रामो भवति पृष्ठतः ॥ ग्रामे वा वसतोऽरण्यं कथं भवति पृष्ठतः ॥ २ ॥
य[illegible]ति [illegible] ॥ न ग्रामे न पदं [illegible] अरण्ये [illegible] ॥ न त्वा [illegible] वसतोऽरण्ये ग्रामो भवति पृष्ठ
तः ॥ ३ ॥ अनग्निरनिकेतः स्याद् ग्राममन्नार्थमाश्रयेत् ॥ कौपीनाच्छादनं यावत्तावदिच्छेच्च चीवरं ॥ ४ ॥
यावत्प्राणाभिसंधानं तावदिच्छेच्च भोजनं ॥ तथास्य वसतोऽरण्ये ग्रामो भवति पृष्ठतः ॥ ५ ॥
पञ्चकामान् परित्यज्य [illegible] जितेन्द्रियः ॥ आतिष्ठेच्च मुनिर्मौनं स लोके सिद्धिमाप्नुयात् ॥ ६ ॥

278

विविवेकिनः [illegible] मित्याह ॥ अनग्निरनिकेत इति ॥ अनग्निः संन्यासी अनिकेतः [illegible]
नः [illegible] ॥ कौपीने-
ति स्पष्टार्थं ॥ ५ ॥ एवं प्रकारेण ग्रामे वसतो विवेकिनो [illegible] ॥ तथाहेति ॥
६ ॥ पञ्चकामान् [illegible] जितेन्द्रिय [illegible] ॥ [illegible] ७

१२४

५॥ अलोकः पमाणीयमाणायदेवालयकूलानप्रकाशदेवरक्ष्यामाय भिन्ने[illegible]नेरापी[illegible]कु॥तिसलोय
गाथः लकुःपाविश्वरूपमाणः॥५॥पदहूंवनविवनेनदहूवेवपवडेनेदिति[illegible]नके[illegible]श्रहूपमारकालमा
हू॥पउभेति॥लोकं नवंति॥लोकरूपाहूपापाविधयाः यधेवमआयदेवा[illegible]तिना॥नह्रीकृनाःसावाः
मादावह्मपुविकमाविजिनाःवयावनिनेविनामेवरावंजिनदेवमवंपविश्रहूंसंमसपारगपसंस्थः प्र
ययहवाणयनमिस्यायनमिमाचदोनेउआचयामेवानदरम्पहूचे[illegible]मावितचोवसलोकेनतीय

सवीयेजीवोहविनाविहुमोदावापरेमोनपरोपनापी॥नादहुनिःसिद्धिमपेतिमसंसो
वसम्बपलेनियनाह्मावेय॥५॥भ्रष्विसुजीवीमपाचाहुनिस्यनिनेद्धियःसवेनेविस
पुनः॥भ्रनोकपायीवहुपलपमावायवनेपानेकचवःसमिन्हः॥६॥पपापयावाभिनि
नाम्हलोकरूपमवंतिकमामिनिनाःसालोयः॥नामेवपाविमयालेनविहूनपपसंस्थोभ
विनेयनाम्ना॥७॥दपोवपूर्वान्सपाचापवंपलानीनपापमानमपेकविषं॥भ्रपपवायो
सहकृनेदपानिविमआपपसपावीरयानजू॥१०॥भ्रष्टकृयोच॥कनिविरेवमनपः क
निमोनानिवापन॥भवनीनिनदाचलयानमिह्यामहूवयं॥८॥

साभिनोहिवीनिश्र[illegible]निश्रमिहं[illegible]हसनिधुं[illegible]कनंपलेनेनवयो॥१॥भ्रपपवाहीहर्दहसनिधुःनवे
वहादेशयीयपानस्पालसलभनरूपानविमचाप्रविलापानमपिहार्दनहकनेनिःकलय॥
हतिकितमानमहकनवचानाविश्र[illegible]निश्रमिहचिदेकरसदयानिप्रविलापयनि॥२॥सवेधाय॥
मधुकिहिवलीनकरूपापदानसमापेचामादहेदभिननकिनवेवमोलोसनायमानाउपी
तिमयपानःपहुनिकनीतिमनयेमोहिपःमोनानिमोदमाणः॥८॥

स॰ भा॰
श्रा॰ प॰
२१०

कलयन्ति ॥ छलयोर्धीर्भिन्नानि नोऽमध्ये देवानां ज्ञानानां ब्रह्मप्राप्तिः ॥ ज्ञानात्मदेवोऽनुभवतीति निष्कलेः ॥ एषां
देवानां सः विस्तृतानि निश्च लिपद्योरर्थः धावतोः चलमानयोः कः एवं कलनक्रमो भवतीत्यर्थः ॥ ॥ छलन
मनिकेतनानि ॥ संचलः सायायत्ता प्रानसमाधिमानसहस्योत्तु वहन्नपिवासंचलन ॥ ॥ ज्ञानिकेतनोऽभि-
दां हृदयोद्गावोऽयोगोमध्यनानि हृदयांपार्थः ॥ ज्ञानोद्दवेंकरूपतत्रयोनचाननाम्भनरार्थोर्थः ॥ एवं
भावः ॥ ज्ञानिनः स्व निश्चु क्रिस्यांतरा किंचयान निश्च धान ॥ दक्षिकेनापि निर्विकल्पकसाक्षात्कारेण
ब्रह्मात्मैक्य निश्चयो भवतीति योगिनः स्वानंदभावात्रिविकल्पसमाधिप्रभावबलेन देहेन विस्मारितशरीर

अथ कथं च ॥ कलनाक्षनयोः एवं देवानामेतिसाक्षात्मा ॥ उभयोर्धावतोः सज्जनस्थयोश्चेतद्रमसोरि
व ॥ ॥ य मनि ह चा ॥ ज्ञानिकेतनोऽरहस्योऽनुकामस्तुनेत्वसंचलनः ॥ ज्ञानमयवत्सन्निवासलयोः एवं
तेनगतः ॥ १ ॥ अथ प्राप्य दीर्घमायुश्चलयः प्राणो हि कृतिवेल ॥ नग्नात्नेयरि निलकात्मावेन्तोऽस्मत्मालय
नः ॥ ४ ॥ पापानां कर्मणां निर्वाणं विभ्रयाघस्तुमनलवः ॥ स्वारामसप्तावगत्निसं सोऽन्तःनरानवेश्यतो ॥ ४ ॥

इत्नीयप्रकिनिलंवासु मस्या धामपदतिति ॥ प्रस्थैवत्प्रविलतन्मयलंचोत्तमसूभेः जन्मांनरेविपितला
भो ह्रीमाह ॥ प्रशाध्येति ॥ आयुः स्वायन्नं कालेवारीवेंउकविपनिस्नापयांमे विकृतिंरिप्यारिप्यविघ
यमोगंभो गमिस्थिवलेन च रेत्नोपिसोमर्यादिवलय प्रानायंप्राणः सम्यनयोंनंवातिरहजन्मनिजन्मां
तरेवायोगभ्रष्टहृत्निप्रमापणाहित्यर्थः ॥ १ ॥ ज्ञानिनलनप्राहिकामाह ॥ पापानामिति ॥ चलमानचो
ज्ञानीनिल्पमविनाशिवलप्रहाणविभृयानतमसीति ज्ञानात्मनकेनचयातेनपापानां कर्मणां
कर्मणां पापीनानिर्वाणयशोहमाचारनिरुद्यनएवेत्यर्थः ॥ न हि प्रलोकसंज्ञानापाकेनदहनाग्निरः ॥

२७९

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ इति श्री

महाभारते [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ इति श्रीमहाभारते [illegible]

भ॰ गी॰
अ॰ ८
१८१

280

॥१॥ आब्रह्म आब्रह्मभुवना ॥१६॥ सहस्रयुगपर्यन्तमित्यादि ॥ वेदविदे वदन्ति ... अर्जुनः ॥ [illegible]
... ॥१६॥ कृष्ण उवाच ... [illegible]

... अर्जुन उवाच ॥ यावत्स्थितिं ... ब्रह्मलोकः ... नाव लोकाः ...
... ॥१॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥ ... लोकाः ... ब्रह्मणो विदुः ... ॥१७॥ ...
... ॥१६॥ ... कृष्ण उवाच ॥ ... ब्रह्मणः ... सहस्रयुगपर्यन्तम् ... [illegible]
... ॥१५॥ ... ॥१७॥ ... कृष्ण उवाच ॥ ...
... लोकाः ॥ ... ॥१४॥ ... अर्जुन उवाच ॥ ...
... ॥१॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥ ...
... भवन्ति ॥ ... ब्रह्मणो ... अहर्यद्ब्रह्मणो विदुः रात्रिं युगसहस्रान्तां तेऽहोरात्रविदो जनाः ॥ [illegible]
विप्रमदेन मोहः ॥१६॥

... कर्मविधिवन्तमानः ... ॥ ... ॥ ...
... ॥११॥१४॥ ... ॥ ... ॥
... ॥ ... ॥ ... ॥ ... ॥१७॥१६॥ राम ॥

१८१

रंपद्धमसामोमोदेञ्चयाधर्मेमेव मेवतेन्याह ॥ नहवलि ॥ यः प्रहष्टः सर्वंबुद्धिर्नालि ॥ धर्मोमोदेष्व
हिधर्मलनथाभूतः सन्त्यांधर्मंमेवनेनसेवनेनपंससमर्थंचमसदाइनतारलिस्यफल
ताचविविदिनंति ॥ यसेनदानेनेनाद्विस्त्र लिखिदंधर्मस्यमोदहेनतेषांलिस्यकाम्यधर्मेकृतधा
मान्नेनानाडः त्वमध्येसमापेयानतोतिन्वान्तीनधः ॥ एवमन्नीपम्पाजिनेद्रियस्याधीयनमधिन्यं
सममसंचयनमोत्वाठेकृतंतेनवाजेचक. मेणामचिनफलेनदैवसस्याथिः यावासिद्धिमेलेनद

तेदैन्यंपुमेनदसन्यमाहूर्थेः सेवनेधर्मेमनर्थेबुद्धिः ॥ धर्मीपनीः नस्यनथेवतदं लक्षाजेवं
ससमाधिन्नादाये ॥ ५ ॥ प्रह कृ ३ वा च ॥ केनाप्रहूनः धर्मिनोधिरातन्नचाषमवीदं पंनोधः स
वर्वाः ॥ कन्याधानः कृतरंसंदिप्पिनमनाहोलिनार्थेवस्थानमलि ॥ ६ ॥ यथानिह वा च ॥ ३ ॥
मोमेनरकंसौलाशुण्यः प्रवेशमन्नीतागान्नाद्विशहीनः ॥ ३ कार्हवः यपलिशस्यानेनवेनं
लिमालोकपान्नाज्ञशिपाणवे ॥ ७ ॥ सन्नातकायेनहूनः प्रयानलोमेधनागवन्चेनलस्वर्वे
पाडकावलक्षोहिवतोमध्येसपनिष्यनामभिनलेनवेड ॥ ८ ॥ प्रह कृ ३ गा च ॥ प्रहृष्टाभिन्नामा
प्रपनप्रयानेयद्दिसोकाः पार्श्विवसंनिमेत्र ॥ यथनतिहेयास्याश्विशिनाः हेत्रसंनानस्प
धर्मेसमन्वे ॥ ९ ॥

तिनदेवान्मंमाचेशानेनाधनभिन्नर्थः ॥ क्रमानावस्मान ॥ करहस्तोपलदृ
वोधिपोयाननमानेयोमीलेलिः कामधर्मेपवेयर्थः ॥ ५ ॥ केनकनयसोनिशिप्रहिनो. सान्यन्यः
९ ॥ विश्रहोलाः चपुनः उनामाप्रहवः पुष्पान ॥ ० ॥ ८ ॥ प्रयानेयपनिनामाप्रयनपानेमाप्रामहोन्य
वेः ॥ कमाविनाटनप्रयोगः समलवांतेन्यवजीदंशेस्यादिवहोकाः भोग्यविप्रघाः ॥ दिविमेह
पृशेसंतलिवेनवयमंडलाशैलेत्रहिंदस्थानंतदमिते ॥ ९ ॥

स॰ भा॰
अ॰ प॰
१९२

181

परीक्षमानं पाठकं नाम नावसंस्थानानां नावमानेकं नवानं हिरण्यवंतः [illegible] नाग्न्यर्थः ॥ ॥ [illegible] नाः म

वदमानं वाच ॥ नांलं लोकानां निपतनं लवणं नमपादनां स्वहिनेषुः क्रपले ॥ सुहं नं ननानेम
निगं नाननीं इत्सर्वे लोकाः लवनं तेषभवंत ॥ ॥ शिवि रुवाच ॥ एवं नामिह [illegible] विवि तो पूर्णानरोहं मम
पिलोकाः यदि संनो हलान ॥ तथंनरि देवपदिवा दिविषित्ताः देवतं नान स्यापमें स्यामन्ये ॥ अ
या ते हवाच ॥ न यज्ञवाचा वाहस्त्वेनापि सावभूतवरी यमाना नासावसंस्थानरेहः ॥ तेनानं ना हि विलो
काः श्रिताले विषः रूपां स्वनवं नोमहोनः ॥ ॥ शिवि रुवाच ॥ नांलं लोकान्न निपतनस्वान् नन्मपा
दनान्न हिनेषुः क्रपले ॥ न वाहं नान्यनि पतन्सोहं दनाप वनाननानां नयो चेनिपीता ॥ ॥ ययाति
रुवाच ॥ यथा नमिंद्र प्रतिमप्रभाव लेषापनंतानन रेद लोकाः ॥ तथापि लोके न रमे न्यदत्ते
न तस्मात्छिवे नाभिनंदामि दत्तं ॥ ॥ अष्टक उवाच ॥ नचे देकै कशो राजन् लोकानः प्रतिनंद सि
सर्वे प्रदाय भवते गंतारो नरकं वयं ॥ ॥ ययातिरुवाच ॥ यदर्हाय ददध्वं तत्सन्तः सत्या भिनंदि
नः ॥ अहं न नाभिनंदामि यत्कृतं न मया पुरा ॥ ॥ अष्टक उवाच ॥ कस्यैते प्रतिदृश्यंते रथाः पंच
हिरण्मयाः ॥ यानारुह्य नरा लोकान भिवांछंति शाश्वतान ॥ ॥ ययातिरुवाच ॥ युष्मानेते व
हिष्यंति रथाः पंच हिरण्मयाः ॥ उच्चैः संतः प्रकाशंते ज्वलंतो ग्निशिखोपमाः ॥ ॥ अष्टक उवाच
आतिष्ठस्व रथान राजन् विक्रमस्व विहायसं ॥ वयमप्यनु यास्यामो यदा कालो भविष्यति ॥ ॥
ययातिरुवाच ॥ सर्वैरिदानीं गंतव्यं सह स्वर्गजितो वयं ॥ एष नो विरजाः पंथा दृश्यते देवसद्म
नः ॥ ॥

[illegible] नारकं म्लोकम् ॥ ९ ॥

१९२

त्पं संकिंथे ॥२०॥ ग्रन्थैः बालकैः यन्मानित्यप्रख्येन कलेनदए वे प्रमम नदमेवकथं कर्थमिति
भावः ॥२१॥ अध्यायः ॥ एकत्रमीलितं ॥ पलयानानपन्ने प्रकाश्यति ॥२२॥ शिष्यमारप्रयानाकालवः

धृतराष्ट्र उवाच ॥ नमस्ते नेत्रनाशः महत्कर्तेकामयेन योगदो मे पार्थिवं पार्थिवः सन् ॥ देवादेव
दापदं स्थापना विद्धि संसारे न यं मे न हि नानतजा ॥७॥ यदि मार्गं पन्नमा नेत्र प्रश्नं कर्म योनस्य
मम वेदनामा ॥ न मद्विधो धर्मबुद्धिः प्रज्ञाननं कर्म दे वेकृत्य तं कार्यदास्य ॥८॥ कर्म दृष्टः
वे न कुन्ते यदस्य विधि विज्ञमानः किमकुर्वत सञ्जय ॥ श्रुत्वा तो मेवं नपलि यथा ज्ञि न योन मोव स
र्गेन श्रवो ना ॥९॥ श्रीभगवानुवाच ॥ नममानवाच ॥ प्रश्नं मिलितं नमस्मानो घद
शिष्य पवित्रलोकोद्धि विमेन वेद ॥ यदेन रिदे प्रथिनोम हान्मन्दे त्वं नान स्थप में स्मम
न्ये ॥१०॥ धृतराष्ट्र उवाच ॥ यदेनरिदं पृथिवी दिशा यतेनसानपने मानमां सा ॥ लोकान्वा
वंनो दिविविलंक्षितानावे नैनं नानवंतप्रनिपालधृति ॥११॥ सञ्जय उवाच ॥ नानेलदत्तनिमाप्रप
नप्रयाने पमे लोकालवने वे भवेत ॥ श्रीधृती वे नां नस्नलके नाधिरानन्मनि प्रहस्ते यदि
यो मन्न डप्त ॥१२॥ धृतराष्ट्र उवाच ॥ न मिथ्याहं विकथं वेस्मरा मिनथान्न ही ने शिष्यकाद्वे
कमानः कथं न्मचेवाकृत नपूर्वं मन्ये विधि निर्ममानः किमकुर्वत सञ्जय ॥४॥

कार्त्तेकमानः अदृश्य राविश्र उमेव संयोध मेश्रज्ञानानान रम्यकृतिनि त्रश्न मिथ्याक्रिपान्न
कंकाय स्यं उत्तरमिनिभावः ॥ शिष्यकः शिष्यमारेस्यादि तिमेदिनी ॥ शिष्यकान्वं दवाल

गीतादि...

॥२०॥ श्रीइति नीलकंठस्य कृतौ भारतभावदीपे उनरपावोनसमप्रकाप्यायः॥ भगवद्गिति ॥१॥४॥ व

मरामहं पृथिवीमात्रां हात्मानः एगाँ मिमामक्षितां तां कान्हेनेन॥ गोभिः सर्वतोलनयने श्रुम
क्षिलतां दृंगाशानमद्भुतानि॥२२॥ प्रत्येनमेषां चवत्रप्र रा चनथे वा गिरिं बलने मानवेष
नमेह याबाहनमेवनाकांसार्थं हि सनः प्रतिपूजयंति॥२३॥ परहकमत्रवीमीह सत्यंपन
दे नेवोपरंश्च नष्टेव॥ सर्वेच लोकामनयश्चदेवाः सत्येनहमाङ्निमेमनोगतं॥२४॥ योनः
सर्वतितनः सर्वानन्याहजनेनिवेदयेत॥ अनन्तबुद्धिं नात्रेमयः सत्समेत्नः सत्रोकलतां॥२५॥
वैशंपायन उवाच॥ एवं तानाममहात्मा राजानोवसेदेहि वैलासिन्नेमिद्मम्हा॥ स्कनामहे
परमो दाक कर्मा स्वर्गंगन :कर्मेभिर्मिदांप्रापछृंजो॥२६॥ स्मादिपर्वणि उत्तरयायातं समास
मितिश्रुमो॥ जनमेजय उवाच॥ भगवन्ब्रोतुमिच्छामि पूरोर्वंशकरान्नृपान्॥ यद्वीर्या न्या
द्दशांश्च प्रतिपावनोयत्यराक्रमान्॥१॥ न त्यस्मिंन्छीलहीनोवा निर्वीर्योवानरापिपः॥ प्रजा
विरहितोवापि भूतपूर्वः कथंचन॥२॥ तेषां प्रथितवृत्तानां राज्ञां विज्ञानशालिनां॥ चरितं
श्रोतुमिच्छामि विस्तरेणतपोधन॥३॥ वैशंपायन उवाच॥ हंततेकथयिष्यामि यन्मांत्वं
परिपृच्छसि॥ पूरोर्वंशधरान्वीरान्शक्रप्रतिमतेजसः॥ भूरिद्रविणविक्रांतान्सर्वलक्ष
णपूजितान्॥४॥ प्रवीरेश्वररौद्राश्वास्त्रयः पुत्रामहारथाः॥ पूरोः पौष्ट्यामजायंतप्रवीरो
वंशकृत्तत्र॥५॥ मनस्युरभवत्तस्माच्छूरः सेनीतनः प्रभुः॥ पृथिव्याश्चतुरंताया गोप्तारा जी
वलोचनः॥६॥

तदंताया:॥ चनः सप्तद्वनक्षिमायाः॥

२७॥ देवथानाथनुसालोकमार्गे प्रमये यावनमवेस्त्रं यद्दत्मवे [illegible] र्थः॥ एतेषितयते
चैवगानाश्यार्थानतेषं॥ २८॥ सोमममकूरनेविधिनस्तापालनेकाम॥ ३॥ नन्यमेवश्रेयः साध
नमिति॥ विधानं एवं कं प्रयोगे नरे॥ प्रनेनचूदनि॥ प्रथापुकरम्पदिना॥ ३॥ प्रकारं प्रागने
मानिस्परूपनरे॥ ३०॥ आदनंनीविकालेनदर्शयानं॥ प्रनीनफलनारस्य स्यर्षसखन लेन

चैश्रीभगवानुवाच॥ नेधिरु [illegible] वैप्रधानानात्पमनमा॥ ३॥ [illegible] मेतोहि [illegible] धर्मे
एणत्रमयोरसो॥ १॥ अर्जुन उवाच॥ [illegible] मेकोकिमिनामा [illegible] चेद्रः सदेवधामेमद्य
न्ता॥ क [illegible] देवशिविधिवो [illegible] नरोपमेकोमाग [illegible] चेतोन [illegible] ॥ २॥ श्रीभगवानुवाच॥ अदृ
ष्टदेवधानाथधावहिनमविदन॥ ३॥ प्रीनरात्मप्रकेरणेन [illegible] रोहि [illegible] शिविः॥ ४॥ दाने
नपः [illegible] विधिनस्या॥ [illegible] प्रमेधाणिरा
ज्ञः [illegible] धा॥ [illegible] निनिदयध्यपमानमनोद्धि विरूपगा
देरथेन॥ ५॥ श्रीभगवानुवाच॥ [illegible] पुनरेचान्नपत्न्या [illegible] नेदैनरनरूप
[illegible] ॥ [illegible] नलेमस्याधदिनतस्य [illegible]
[illegible] ॥ ६॥ अर्जुन उवाच॥ [illegible]
[illegible] ॥ ॥
[illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ ७॥

म. भा.
शा. टी.
१८४

283

१४॥ सर्वैः सर्वसंतैः परैः ॥ ४४॥ २१ ॥ [illegible] ॥ १४ ॥ [illegible] ॥ २

ततो [illegible] ॥ [illegible] ॥ ४४ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ४४ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ ४ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ४८ ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ४९ ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ५० ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ५१ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ५२ ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ५३ ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ५४ ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ५५ ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ५६ ॥

१८४

[illegible]

ऊचिरेवं कोकारे [illegible] ॥ गिरिशृंगावली ॥ [illegible] ॥ ७५ ॥ वलिपुत्रः करदान ॥ ७६ ॥ सोमी-

ऊचिरेवं वसिष्ठोपि भगवानात्मवान्मुनिः ॥ अथाप्यतिगन्ता राजेन्द्र [illegible] ॥ विश्व-
[illegible] सर्व [illegible] नः पार्थ ते ॥ ४७ ॥ [illegible] ॥ पुनर्वसि-
ष्ठन [illegible] सर्व महीक्षितः ॥ ४८ ॥ ततः [illegible] महाबलः ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ४९ ॥ ततः [illegible] ॥ [illegible] सर्वा
[illegible] ॥ ५० ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] महानभाः ॥ ५१ ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ५२ ॥ [illegible] ॥ ५३ ॥ [illegible]
[illegible] वीर्यवान् ॥ [illegible] महाबलः ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ५४ ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] महात्मा ॥ ५५ ॥ [illegible] सर्व [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] वीर्यवान् ॥ ५६ ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ५७ ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ५९ ॥

सूर्यकन्या ॥ ४ ॥ [illegible] ॥ ५२ ॥ ५५ ॥

284

संवरणे के आख्यान आगे तपती के [illegible]
तपती सूर्य की कन्या है

तं घनं तां ध्यादेतैर्नभिः तन्मयशक्तिभिः ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ अभ्यासान्नं संवरान्तं एकं संवृतानि संचं ॥ ३८ ॥ एतन्नयतनम

कापीथं नननेत्रासुं देशैर्नानाविधैलया ॥ तन्मनन्यमननाद्रूपा यान्ति भिन्नसमाहितं ॥ ३९ ॥
गुणपुञ्जस्वभावनाशैर्वेतसवनान्तेन नालाचि ॥ वातलग्नस्यांचेबैर्ववनेनवानर्गिलिता ॥ ४० ॥ एव्य
यान्नेवर्णवास्तोविविनिमानारन्तामही ॥ असंतोहिताभिर्दर्शभिः सवनेसमन्नेनवन ॥ ४१ ॥ ननः सदा
ः सासाचः सश्रवः सहस्रनन ॥ नानांवरणालेश्वाश्यलाघनलसदाभयानन ॥ ४२ ॥ किंपोनेदस्यात्
हन्तोनिवृत्तेन्मवसनदा ॥ नदीविप्रमादिनेपवनसमसमोपनः ॥ ४३ ॥ नवावसमन्वहृन्कास्मान्मा
यनाद्धेममात्रिनाः ॥ नेपांनिवसन्तेनन्नचमहहंसपरिवन्नानन ॥ ४४ ॥ मयाभ्यानाद्धृद्रनाद्धसिद्धो
भगवान्धिः ॥ नमाभानेप्रयवेन प्रन्नरूम्यानिवायच ॥ ४५ ॥ मन्त्रमभ्याद्दंतसोनेमवैभाय-
नालसा ॥ निवेदसर्वस्वयसेसन्ध्यारामवचैमः ॥ ४६ ॥ नमामनेचोपविशेयान्नावदेवयंनदा
पुष्टेहिनोमवानन्हृत्तान्नायनयनेमहि ॥ ४७ ॥

श्रुतभावार्थः ॥ १९ ॥ ४४ ॥

स॰ भा॰
श्रा॰ यं॰
१८९

185

गुणाः सर्वे तत्र स्युः प्रभावो देवता दिवि शिल्पे वीर्यं तारी रंवल मोनः मानवे सामर्थ्ये ये यां दिनमरी
नत्वे नस्मात् प्रथनमानना ॥५॥ अहिनेदं दो मृत्तायनदत्वाद् हितिः पदी तिनिष्ठ नयोः इच्छितमयो

गुणप्रभाववीर्यजः सनोन्मात्‌दवनामहं ॥ ननस्यामिकर्यां मध्यत्रमतां त्वात् हं मिनां ॥६॥ वे
यं वायन ३ वीव ॥ स्मरणजनमुराममम प्रयातदेयकनात्रुने ॥ यो आमानं मयाक नस्रं वत्वं पाननने
भूमं ॥ ९॥ दत्वाद् हितिनि बहिनेर्विर्व स्वान्नविवस्वतो मनन्मतो हिंडरत्वा पाः ॥ ७ ॥ स्त्वाः पुरूरवस
आयुरायुषो नहुषो नहुषस्य ययातेर्दे भार्ये बभूवतुः ॥ ८ ॥ तुष्णान्सोऽदहितिः देवयानी हु सम्यं
श्रुष्टहिनाशर्मिष्ठानाम ॥ अयानन्तं यो कोमवति ॥ ९ ॥ यदुं च तर्वसुं चैव देवयानी व्यजा
यत ॥ द्रुह्युं चानुं च पूरुं च शर्मिष्ठा वार्षपर्वणी ॥ १० ॥ तत्र यदोः यदवाः तुर्वसोः पौरवाः द्रुह्योः
भार्याकैतस्या नाम नक्षत्रमप्युक्तेत ॥ तत्र मे नपोनामयतीनक्षत्रमेया नानहा विष्णुजि
नावेष्टावने विवेष्टा ॥ ११ ॥ ततमे नयो बल्वनं नो पयेमे माधवीनस्या मप्युक्ते प्राविना
न ॥ यः प्राचीदिशं जितायया वल्लभ यो दयाननन्तं प्राचिन्वतम ॥ १२ ॥

यमाह ॥ दत्वाद् हितिनि निराशयसुहृहविंशो वदाने ॥ अहिने देवो पृष्ठाद्वापूर्तिग्रनपोग्रपवयोः
कल्पमेदेनश्रवश्या ॥ १ ॥ १॥ यावन्महं यौदयाचनयष्ठं नरके नैवाहूर इतिनभावः ॥ १२ ॥

१८९

४॥ सलानां कुरिकादीनां श्लेष्मलानां हृदि निपालेनल पलं तस्येष्मोन्नीत्पनात्मनक्षिनानां हृदि निश्चा

कुरोदरः परानिष्टावसानि ष्टापमः स्तनः ॥ सर्वे पर्मार्थे कपालाः सर्वेभूत हितेरताः ॥ २५ ॥ पुन
कालूप्रापरानालो नत्प पुरोष कंरिकः ॥ हलो बिनकुः कालाप कंडिनष्टा पिंगवनः ॥ २६ ॥ हविष्ट
वाल्लवेक्रूमः समनष्टापपा निनः ॥ पानेनपहू नानानां गतोने नान्यथिनानां वि ॥ २७ ॥ प्रनीयंपर्मे
नेत्रंचलनेचंचापि मापन ॥ प्रनीयः प्रथितलोकांतभूतापनिमोमवि ॥ २८ ॥ प्रनीपष्टवरः पत्रा
नलिंवेभालधेम ॥ देवापि पंतनधेवचालीकस्य महारायः ॥ २९ ॥ देवापिष्ट प्रवजानने पां धर्मे रि
नेषपा ॥ पंतनस्य महीले मेवाली कस्य महारथः ॥ ३० ॥ भरतस्यान्वये ह्नानाः सन्तवंनेन नरापि
पाः ॥ देवर्षिकल्पान्नपने बहवो राजसत्तमा ॥ ३१ ॥ एवं विधाष्ट्वा पपर्रा देवकल्पा महारथाः ॥ जा
नामनोरन्ववाये ऐलवंशविवर्धनाः ॥ ३२ ॥ इति श्री महाभारते खिलेषु हरिवंशे पर्वणि कीर्तने नाम प्रथमो ॥ रा
॥ नवमे जयकाव ॥ कुनहनो मयाप्रहास्ते शंकमवेम हान ॥ उरनाद्या पितं पासित्रा
नानेनेपविश्च नाः ॥ १॥ किं नलल छंदंश के पिपाख्याननमामति ॥ श्रोतुमन्यतो भचाम्नुपो
सिल्लोलां नवीनवे ॥ २॥ एतानेवकथां दिव्यामाप लानपतितेमनोः ॥ नेषामानननं पुत्रंककष्ट
नशीलिमावदेन ॥ ३॥ स्यमेणुणमहात्मा पितृविवर्धिनम्मनानं ॥ विष्णुल्लोकंपाली नेपांपपाः स्मृ
नमवस्थिने ॥ ४॥

लेखं ॥ २८॥ अध्यायः ॥ कृनानि ॥ ४॥ श्रीरामचन्द्रपदाब्जवामदेवमोविंदवेकंठमकुंदकृष्ण ॥ ॥

क॰ भा
श्रा॰ प
१८१

पयाणं वेसवाडियाडो कोभवति ॥ नेसेणश्रवनी प्रवंमतिनेणश्वनीजनन ॥ इंसिनेननयणामसकाडिया नेस
याणमते ॥ २४ ॥ इंसिनलरहंनयेः इयंनणणसंवइवाननीजननं ॥ २५ ॥ इयंनः वेलविद्याभिरइहिनरे
पाकंननेलेनासोपपेमेननस्मासमस्पनलेसवल ॥ २६ ॥ पजानवंपासोकोभवनः ॥ भनामानापिनः प
सोपेननानःसएवमः ॥ भारवपइंडयंननमावसंध्याप्र कंननला ॥ २७ ॥ रेनोपाः पवइनयनिनरदेव
मंघेनपानं ॥ नेचाप्पयाननाणमंप्पनन्मसाइपा कंनेला ॥ २८ ॥ ननोप्पभरननंभरनः वेलकोपोया
वपपेमे ॥ सांवेसेनीसनंदनामनलप्पमस्पननेभमन्मः ॥ भमन्मः वेलदासाहीमपपेमेचिन
यंनामनस्पामस्पननेसदेय ॥ २९ ॥ सदेवः वेलिवाककमामपयेमे ॥ सवयंनामनस्पामस्प
ननेइन्लीपरंदंहलिनपुरंस्यापपासाए ॥ एननदस्पद्वाहिनपुरनं ॥ ३० ॥ इन्ली वेलवेणनेमपपे
मेपयोदंनानाम ॥ नस्पामस्पननेविकंवनोनाम ॥ ३१ ॥ विकंवनः वेलदस्पाहीमपपेमेसदेवोनाम
नस्पामस्पननेअजसमीडोनाम ॥ ३२ ॥ अजसमीडस्पवनविंपानिप्रनयाणेवभवकेकेयंगांपार्यविं
पालापामस्पायंवेनि ॥ इत्थवरयारंनपापयानपनरइ. नतेवेणकरः संवइयाः ॥ ३३ ॥ संवइयाः व
लवेवरनी ▬▬ नपनीनामोपपेमेननस्पामस्पननेकरइ ॥ ३४ ॥ करइः वेलदासाहीमपपेमेसूप्रं
गोनाम ॥ नस्पामस्पननेविरइ ॥ ३५ ॥ विरइः वेलनमाधवीप्रपपेमेसंपियंनाम ॥ नस्पामस्पननेअ
नस्पानाम ॥ ३६ ॥ अनस्पाः वेलमानधीमपपेमेअमहनानामनस्पामस्पननेपरीविन ॥ ३७ ॥ परीविन
लवाइदासपपेमेनपणानाम ॥ नस्पामस्पननेभीमसेन ॥ ३८ ॥ भीमसेनः वेलकेकेयामपपेमेतः
मारीनाम ॥ नस्पामस्पननेप्रतिसुववानाम ॥ ३९ ॥ प्रतिसुववमः प्रतीपः प्रतीपवेलपोसमपपे
मेसनंसंनामननस्पाशनवस्पादयामामदेवापिपां ननवाह्निकंचेनि ॥ ४० ॥ देवापिः वेलवा
लएववारप्पेविवेपा ॥ पं ननवलमहीपालोवभूव ॥ ४१ ॥

286

१८१

एकाग्रमनाजन ॥ २३ ॥ २४ ॥ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ॥ ॥

[illegible]

प्राचीनानां चलयमकोमपथेमेयाद्वीनस्यामस्य जन्ने संपातिः ॥ १३ ॥ संपातिः खेचलरूपर
लोरुद्दिनरेखरांशीनामैनस्यामस्य जन्ने यद्दे यातिः ॥ १४ ॥ यद्दे यातिः खेचलकुनचौद्दरुहिनर
मपथेमेभानमतोनामतस्यामस्य जन्ने मार्देभोमः ॥ मार्देभोमः खेचलतिनानरूराकेकेपौ
लनेरंनामतानमपथेमेनस्यामस्य जन्ने नयलोनोनाम ॥ १६ ॥ नयलोनः खेचलवेदभौमपथे
मेमश्रवानामनस्यामस्य जन्ने प्रवाचीनः ॥ १७ ॥ प्रवा चोनोपिवेदभौमयमेचोपथेमम
योरंनामनस्यामस्य जन्ने प्रविद्दः ॥ १८ ॥ प्रविद्दः खेचलभौमपथेमेनस्यामस्य जन्ने महद्भोमः
महद्भोमः खेचलप्राग्नेनजितोमपथेमेसथ्यंनाम ॥ तस्यामस्य जन्ने प्रथुनतां यिथः प्र
रूपा ॥ तामप्रथुनमानयन जे नामस्या प्रथुननामिनं ॥ २० ॥ प्रथुननामोविल पप्रश्रवसौरुरि
नमपथेमेकामोनाम ॥ तस्यामस्य जन्ने कोयनः ॥ २१ ॥ खेचलकालिनीम कर भोनामो
पथेनस्यामस्य जन्ने रेवानिधिः ॥ २२ ॥ रेवानिधिः खेचलवेदेहीमपथेमेमर्यादंनामनस्यामस्य
जन्ने विरेहोनाम ॥ २३ ॥ प्रविद्दः खेचलंगामीमपथेमेमदेवानामनस्यामप्रथुमत्तीजनन्नदरे ॥ २४ ॥
कुत्तः खेचलनयकरुहितरमपथेमेस्वालोनामनस्याम्प्रथुरेमनिनारनामोमादयामास ॥ २५ ॥
मनिनारः खेचलमयमन्योनगणसमविनेरादपानापिवंकरकमाहुतन् ॥ समयमेचसनेमारव
सः सिनमयनेयनरांरवरयामामनस्यामप्रथुनमत्तीजननंतंनाम ॥ २६ ॥

[illegible]

पांडुः पप्रच्छ गांगेयं मार्गे लोपासनं यथा कांको वाच ॥ ५७ ॥ स्वच्छाय न्यायादिदं प्रागसवानहं स्मृ
तोमि चनानपन्मस्य स्त्रोकाः सैनीति ॥ सानंमदृष्टेवृत्रान न्यायादृष्टेनि कंनीमवाचसा
नष्टोकातृग्रान्तन्यायादयामास ॥ पसौतृति हिरंमाहनाडीमसेनं पाकार्दर्कनमि
ति ॥ ५८ ॥ नीमहृष्टः पांडुरुवाच ॥ इत्थं नेमवान्मः नपन्मसाध्यासापन्मम
स्यायनामिति ॥ एवमस्त्विति कंनीनां विधं मामुनः प्रायच्छत ॥ ५९ ॥
माद्रामस्थिभ्यां नकुलसहदेवावुत्पादितौ ॥ ६० ॥ माद्री त्वल्प
लेकृतां दृष्ट्वा पांडुर्भावं चक्रे सनातनं दृष्टेबद्विदेहंतं स्मतः
॥ ६१ ॥ नवैनं त्विनाग्निस्थां माद्री समन्वाः ह्रोदेह ॥ ३
वावकुंनीयमस्योश्यमन यावदं भविन
त्वमिति ॥ ६२ ॥

[illegible] भवति ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ५५ ॥ [illegible] ततः [illegible]
[illegible] मिति ॥ ५७ ॥ [illegible]
[illegible] मिति ॥ ५८ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ६१ ॥ विचित्रवीर्य [illegible]
[illegible] ॥ विचित्रवीर्ये [illegible] ॥ ६२ ॥ विचित्रवीर्यः [illegible]
[illegible] ॥ विचित्रवीर्ये [illegible] ॥ ६३ ॥ विचित्रवीर्ये [illegible]
[illegible] ॥ ६४ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ततः [illegible]
[illegible] ॥ ६६ ॥ [illegible]
[illegible] विचित्रवीर्यः [illegible] ॥ ६७ ॥ [illegible]
[illegible] पाण्डुं [illegible] ॥ ६८ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] पाण्डुं [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ६९ ॥ [illegible] पाण्डुं [illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ [illegible]

नरेन सार्धं तत्र [illegible] सहनन यस्य हीरनाम ॥ ११ ॥ भीमसेनवलश्चैव सिंहिकायाः सुतो हतः सहदेवेन
वंशजम् मार्दयामास ॥ १२ ॥ इत्येनमेकादशाक्षौहिणीनां तत्रान्तेषां वध्यंपाकरोमि सत्य: ॥ १३ ॥ स
विराटस्त्वद्रहिनरसमयश्च रुद्रवत पाण्डवानसमनसहाससङ्ग्रामपुरा भीमसेनभवनसत्तो नरविनत्राह
प्राणिनो गाम्भीर्यधीरसमस्तवानरेवससापाणाहिकेनाममध्मेनंजीवपिण्डमीनि ॥ १४ ॥ स
भगवतानाराश्वेनामं नानवनवीर्यपराक्रमो कालजानो स्वामिनाश्चलेनसोस्वेन
संजीविनः जीवयिनाचैनमवाच [illegible] परिक्षीणोऽकलेसानो भवनयं परीक्षितामेति ॥ १५ ॥
परीक्षितनल्मारूढवंनीनामोपयोगेन स्मानरं नस्यांमवान्ननमेनय: ॥ १६ ॥ भवनोप्युप
मायांहोपजोजनानेपानानीकः पांककलिस्य पानानी कस्य वैदेशापवद्धलोः स्वमेय
हलइति ॥ १७ ॥ एवमुक्ते वैशपः पांडवानां चकीर्तितो यन्यः पुण्यः पापसपवित्रः सततं श्रोत
व्योब्राह्मणैर्नियमवद्भिरनंतरंदविपैः स्वधर्मनिरतैः प्रजापालनतत्परैः ॥ वैश्यैश्चापि च
श्रोतव्यो विनमस्यथ ॥ तथा शूद्रैरपि विवर्णैश्च श्रुतिभिः श्रद्धयान्वितैरिति ॥ १८ ॥ इतिहासमि
मंपुण्यमश्रोषतः श्रावयिष्यंतियेनराः ॥ श्रोष्यंतिवानित्यमनामानेविमत्सराः ॥ मेवाचेद
पराज्ञेयिष्यंजितः पुण्यलोकाभवंति ॥ सततंदेवविप्रा हृष्टमानसमायांसाम: संहस्त
स्य ॥ १९ ॥ परांहीदंस्मारंतंमगनवृत्तामासे नरप्रोक्तं पावनं येव्रामहस्मास्योवरतः ॥ श्रद्धयाना
श्रममुख्यमेवेदेसंपत्राः श्रोष्यंतिनेविपश्यंजितः संकलितोः प्रोप्यः कलाकनेभवेति
॥ २०॥

188

१२९

८॥ विधलवघुघः रिवः चातनान॥ ४॥ आत्मविहूलाः श्रनिक्रांतवंतः वस्त्रमात्रेन॥ ५॥ स्त्रन्वउमादय

मस्त्रमि
मविंनविनानपनिरेपानमांहलपेपनान॥ पनीयंतीवयामानपिनवंमूहिलेनहं॥ ०॥
घनानहस्त्रानहीपेधानचुननपं॥ नमेवमनसाप्राप्यं मृपावनेनविहूरा॥ ५॥ सानविघलवघुघः
कप्पनामिहूनाहूप॥ दृदपीपथिमंलोवहूदेवानिचेकस॥ ६॥ नयाहूपांग्लानस्त्रायमद्ध
मरिनावरा॥ किमिंदनष्टहूपाः स्यकश्चिन्लोमंदिवोकसां॥ ७॥ नामूचवेमवोदेवाः पामाः
सोवैमहानदि॥ मलेमयावेसंभाहूमिद्धेनमहामना॥ ८॥ विमूढाहिवयंसर्वे ... नमयिस
नमं॥ सप्रावमिहूमामौननमच्छामिहलाः श्रुता॥ ९॥ नेनकोपः हंयशामा यालोसंमव नेनिह॥ १०॥
ननछंकांनिवंनेपितंपडकंबहूनादिला॥ नमहमामानधोमूनाहूजपुत्रान्वहन्मवि॥ ११॥ नमान
धीमंतनकंयविपोमवयंम्मे॥ इन्यनानैषेवनमिलपेमन्नावनीरिदं॥ १२॥ गंगो वाच॥ म
येषपुहूच श्रेहः कोवः कर्त्ताममविघ्नानि॥ १३॥ वमव ॐ वः॥ मनीयस्त्रहनोगनापांननलोक
विसृजतः॥ भविनामानवेलोकेमनः कर्त्तामविघ्नानि॥ १४॥ गंगो वाच॥ ममाघेवंमनदेवायया
मांवहनानघां॥ प्रियंनयकविघ्नानिपुमाकंचैनदीशिनम॥ १५॥

१३॥ १४॥ १५॥ १६॥ १७॥

मा॰मा॰
म॰ मी॰
२६०

189

२६०

२०॥ अध्यायः॥ ध्यायतो विषयान्पुंसः संगस्तेषूपजायते॥ ३ स्तावकवपोनि॥२॥२॥ ३॥४॥ ५॥

भवति कार्यशोकः॥ इदं हि वेदैः समितं पवित्रं मयि चोक्तं॥ यं नंपरां प्राप्य मानुष्यं श्रोतव्यो निष नाम्नामि॥ ३॥ स्वारिपदीतिश्रीम हाभारते ष्ठवैयासिक्यां नम॥ वैशंपायन उवाच॥ उक्ता ऊचे श्रुत्वा समं तत्ता ली त्वं शिवं दीपतिः॥ महाभिवइतिस्तानःसन्यचान्यचन्नपचिक्रमः॥१॥ सोयमे यसहस्रेणान्नरुपमानेनच॥ नोपपामासदेवेष्वंस्त्रोग्लेभेननः शमं॥२॥ ननःकदाविद्धा स्तानसुपासंचक्रिरे हरा॥ नत्पाजयया श्रामन्नचपानामहाभिद्य॥ ३॥ अथयांगामसरिच्छ्रेष्ठा सम्पायानिनामहं॥ नप्पावासःसमहंसमांगजनेनपावितामभे॥ ४॥ ननोभवन्त्रसंगमासहसा स्त्राश्रलनःसः॥ महाभिवलभ्यजनोगंतुंशंकोरुणवान्नृदे॥ ५॥ सोपापानोभगवन्नाद्दसमान्नम हाभिषः॥ उक्तश्रमानोमस्तेषुनवीकानवाप्रस्ति॥ ६॥

स॰ भा॰
भ्रा॰ प॰
२४२

१३॥ समृद्येन लिप्तमेन न नमी मांसेन न विचारयेत्॥ १४॥ २॥ यत्नेन नशत्रुमध्ये जिमाद्॥ शांतस्योपरनस्य च
शास्त्रहीनान्नो विहाय यनि यां ननन नः नकारयोपेन शांतनत्रि लिनाम॥ १५॥ मैत्र्यं त्रिनिवर्हितमपि

सयोहः कामिनी भोग्यल्लयामव विवृजिन॥ नम्मादहं नाचरिष्ये नयिकामंवगाने॥ १॥ व
णनिभवनस्रो हित्रयाश्रेनां लुणम्पाद॥ स्रुयापदेहि कामोहनमागम्पसमाश्रिता॥ २॥ सुवाच॥
एवमपाल्लपतिनसंश्रुत्रेपं मनेननो॥ नइनाः नभञिच्छामिप्रहसानं भावनं कं लं॥ ३॥ एषिया
पार्थिवायेवनेपां शुपपरायणं॥ यु णोन हिमयापावानानं कं हं श्रप नेर यि॥ ४॥ कलस्पयेवः म
थिनाललसायुवमथानमं॥ एमयेनेहयमित्रप्रावरेंगवनस्त्रिनं॥ ५॥ नलवमेवपुमलेनमी
मांसेनकहिविन॥ ६॥ एवंव संनीश्रेनेवर्धयिच्छाम्प्पराति॥ ध्रवैः श्रृणुयेपिये श्रेववसोय
प्पानिनेमन॥ ७॥ वैशंपायन उवाच॥ नथेमकमनसापुजलसैन्होनं पीयन॥ एवजनम्पप्रती
लग्वेमुणात्नानद्धारयन॥ ८॥ एनमिन्नुवकालेनप्रमोधःवनिर्यर्थमः॥ नप्रलेपमनसार्थं
प्रभाथः कक्नेइन॥ ९॥ नधेः सम्भवस्रेशाइयोः समरहामिषः॥ पांनसाज्जेपंनानलसाद
मीमपांनव॥ १०॥ संस्कारंस्थावयाणो कालिक्तिनांशेनकमेणा॥ त्रएषकर्महरेशामोक्षेननःकरु
मनम॥ ११॥ प्रनीधःश्रीनन्तवयोवनम्प्लनमोल्लयान॥ त्रगनोभांनमम्पागा आंननोभूनयेनव
नामाश्रजेयाहिरहः साव्रज्ञवरवर्तिनो॥ कामयानाभिरूपाणाहिरयाहीपुत्रकाम्यया॥ १२॥
मानवयानानयोक्षसौकस्याहि चांगने॥ यवकपांत्ननकायंमाश्रहमानयानच॥ मशिवेग
हवेनीनांभवेत्याःस्वाचन॥ १३॥ वैशंपायन उवाच॥ एवंसंदिश्यपनेनसंप्रतीषः शांतनवं तदा
सेवा ये संमिषिवेनवनेयात्रा विवेशाह॥ १४॥ समाजापांनवपीमाएवराजसमयकृतिः॥ वभव
स्वधयाशीलः सननंवनगोचरः॥ १५॥

मानवहेननानानीयर्षः॥ १६॥ २२॥ नाववयोक्षयानप्रहसा॥ २२॥ २.५॥ ॥ २४॥

१९०

कालि

२४२

नविस्त्कास्यपीत्नः प्रमस्क ॥ ४ ॥ नवीया दे प्रस्मांस्मेचम स्तभि व स्तंभौ [illegible] विना योग [illegible] ॥

तमव ऊचुः ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] वाच ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ तमव ऊचुः ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] वाच ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] वाच ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] वाच ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] वाच ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] वाच ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ ६ ॥

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible] ॥ [illegible] ॥ ६ ॥ ॥

स॰ भा॰
आ॰ पं॰
२५२

252

पादांतरे श्रमवाणामपि विहीनः चिरक्रतन ॥ १२ ॥ भीमाम निमान मदेह विपोनने भीमामा भिनां देवनां
दृपं तानाविमवाहे ॥ १३ ॥ तेनयत ॥ १४ ॥ १५ ॥ पाचानमे पारिणी ॥ १६ ॥ नजननी देनोः ब्रह्मभागां मपिनवामि

रममाणालयासार्थं यथाकामं नरेश्वर ॥ महाकनन यत्र तं लामममरं सनिमान ॥ १७ ॥ नानं ना
नवमा तं हि पं नं मविमारत ॥ भीमाम देनामित्रकाणमाभोन मनयन ॥ १८ ॥ नमानवपियं
यातः पानतेनायवन्न स ॥ नवनाकिं वनोवाव मामादृी नामहीयति ॥ १९ ॥ पुष्टेनामहमे पुत्र नातेम
हसनी भिव ॥ उवाचवणनारः रानैः पनीमाण्य बमानन ॥ २० ॥ मावधीः कमस्मकामो निकिं हि नलि
हनाजिति ॥ तव श्रि हममहंनणपं मम्रासने हरा हिंनं ॥ २१ ॥ [illegible] च ॥ तव कामननेहमि पत्रंपुत्र वनां
वर ॥ नीर्णलममवामो पं यथा समम यः कन ॥ २२ ॥ महांमान कुमनाम हर्षिमाणाहविनं ॥ देवक
र्यार्थं मिद्ध यं मुधिनाहं नपामह ॥ इमिद्धोन मचारे वामहामामाम होजमः ॥ तमि इच्चाम दाषेणा
मानयन मपाणनात ॥ २३ ॥ तेषां ननपिनानान्मलाः तेषु विविधाने ॥ महिंपामानवी पाशी लोकेना
लीहकाचन ॥ २४ ॥ तस्मानन्ननी देनोमीं नयन मपाणाना ॥ ननपिना वहलबी निनालोकालया
नयो ॥ २५ ॥ देवानां समयं लेव वननां मं यु नो मया ॥ जानं जानं मो दपि ब्रोनमनो मानया हि ॥ नते
पापाहि निवेक श्रापवस्थम हामनः ॥ हनिने न्नामिषामि पुत्रं पाहि महाव्रतं ॥ एवमेवांयवा
मोमे वहूनां मत्रि योकन ॥ मम्महं तेविनानी हिं गान्नमिमहनं ॥ २६ ॥ [illegible] पोषा प
नि ॥ शांनव [illegible] चा ॥ आपवोनाममकं लेवन वसूनां किं वडः कर्तं ॥ यष्यामि शापाने मर्वेमानवो यो
निमागताः २

लाधान ॥ २७ ॥ संश्रुतोः श्रीक्रनः ॥ २८ ॥ आपवस्यव मिह स्थ ॥ २९ ॥ एषषुत्रः मेमया यु भूतानां वहूनां मत्रि योक
नाहं दैयं मंया छिनः किंमूलः अहमां प्राग्हातो हि पांवा मः स्यानं सर्वेषामं योवि तो यं मयावदे थे मा

२५२

रा॰ भा॰
टी॰ अ॰
१६२

२१ ॥ अथ ताः वसिष्ठ पाद युग्मेऽभ्यगः एतने वा ननकिं नः ता तांपतान ॥२३॥२४॥ २५॥ २६॥ २७॥ २८॥ २९

एतच्छ्रुत्वा ननसारे वीन्द्र योजन महानभा ॥ नम बाचा नवर्षा गीभर्गी रंदी मनेन सं ॥२०॥ अलि
मे मानुषे लोके नरदेवान्म ना सावी ॥ नाम्ना निन वनो नाम रूपयोवन पालिनो ॥ २१ ॥ दीन
रक्षणतत्परः सन्तु संयम्य योगिन ॥ ऊर्ध्वं नाम प्रथिता लोके मानुषे स्वप्नं पदा ॥ २२ ॥ नभसा दे तो भ
क्ष्मा नासवन्मां गाम मे षितां ॥ आनयन्त्वासां भ एन्नि तंस पवर्धने ॥ २३ ॥ यावद्दृष्टाः पवनः यो
नामामवीमममा न रं ॥ मानषेषु मवने कान ना योगा विव जिता ॥ २४ ॥ एतत्कर्म महाभागा कृतं
महत्यनि देन ॥ प्रियं प्रियतनं तस्मान्नाहि मे वनकं वन ॥ २५ ॥ एतच्छ्रुत्वा वचनस्याः देवा प्रि
योऽधिकोपेना ॥ तथात्वेऽमान्नमिमा यं घोल ताने नदृष्टां ॥ २६ ॥ नयाक मलपत्राक्षी नितुको
नौलकस्त्रप ॥ स्वपे लक्ष्मणपत्नीं तं न पाथाक नि विप्रितिं ॥ इत्ता गोः भाल रामेन नवपातन ल
ननकिंन ॥ २७ ॥ अथाभ्य मपर्दं प्राप्तः फलाम्या शयवा दृ ति ॥ नवाप पवनस्यां न नव मवना कान
नोनमे ॥ २८ ॥ ननः समरायामाप्तवने न सिंहलपोयन ॥ नाथाप नमच्च स्नानं — लांगांम लिखदा
ंगी ॥ २९ ॥ नाना न थाप नीनां ना वमभि रिंम दर्शन ॥ ययो कोपयव शमप्रः शापा पचव हं लदा
३० ॥ यस्मात्ते वसवो न कूगीं वे देवाः गोहवाल यिं ॥ तस्मान्म वेन निवद्धं निमानकश्चेषु नसं शाय
एवं शापशापमगवान्सलान्मत्रनपम ॥ वर्षा कोपप्त्रेमंस स्यापवोन्मनि समनम ॥ ३१ ॥ शा
प्राप्नानाम्महाभाग नलप स्नेम मनोरथे ॥ एवं शाम वाप्रान्नवसूनहोत नयोयन ॥ ३२ ॥ महाप्रभा
वाप्नमहर्षि देवाक्रोपमम्लिनः ॥ अथान्यमपर्दं प्राप्ता माले वै मयोम हानमनः ॥ फायाः स्वानि ना
नाले शापिंन मपवक्रमः ॥ ३४ ॥
३० ॥ ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ॥ ३३ ॥ ॥ ३४

292

१६२

[illegible]

श्रिया ॥ २५ ॥ २६ ॥

पुरुषभेदेन पतनं पुरुषभेदेन दुर्लभम् ॥ ५ ॥ स्थानं बहिर्वेदिः पर्वैः स्वाचाराः नदः नदीप वासो दियोगन्यास्या

एवं सगुणो सर्वज्ञो यस्तीर्थे कृपालोऽस्य ॥ श्रोषीकृतं तं पापसंगो स्यास्तं जनस्य च ॥ १ ॥ कं वृत्रो वः
पृथु सोम नवारणो विक्रमः ॥ अन्नितः पतिः सुर्गोर्धैः सर्वै देवनिलक्ष्णो ॥ ४ ॥ नष्टकोऽतिम
तोस्तु नमवे स्व पतनेन नराः ॥ पन्नेव तपः कामाद्यथा ते निश्चय विहिनः ॥ ५ ॥ नानास्या सन्न हृष्न त्वं
तनो स्पृहध स्वभे ॥ नवात्मप्रहस्पा: कश्चिद्धुर्मनः पश्चिमोऽभवत ॥ ६ ॥ चतो मानं हृदिप्रमेषु सर्वेषधमेष्ट
तात्वं ॥ तं महीपाम हीपालं मनं नाशेष्मा धेच यन ॥ ७ ॥ धीन धोक्ष भयात् कयाः सत्वं ख्याति विवाय
नाः ॥ पनि भारतनो मारंभ समपहृतन्मूर्भिपाः ॥ ८ ॥ धांतान्न प्रश्न हिरीयो मेलो केन्न पनि भिन्नदा
निपमान्न्वं वर्गेनायमी नरमवं तेन ॥ ९ ॥ कल पर्थे वन्न्वे विष्णु: नवनमन प्रनाः व्रस
दस्यान्नरेक स्थधहृः पयोधरन्निशा ॥ १० ॥ महाक्षितन गुरेरमेक रूप्यान्तुरभेदने वसन्ताराप
धीता मन्वयास हरौपरा ॥ ११ ॥ महेवराज सहश्रेपायमित्तः मन्यवाम्हत्तः ॥ हान पर्भिनापायोगाक्षि
यापरम याद्गुनः ॥ १२ ॥ प्रणगहेप संगुरुः सोमवन्न प्रिय दर्शनः ॥ तेनस्वास्थ्यैकस्योम हायवेन
समोत्तवे ॥ धनक पनिमः केयेतमते हपिवीक्ष्मः ॥ १३ ॥ वपुः पृथुवराहूणान सैव महतापहे
तां ॥ धान्नतो पृथिवी पालेनावतेनन यथा नय ॥ १४ ॥ महत्पर्भी नरेगास्वे शान नर्वित यानस्थवा
न ॥ सर्वेषु शामसम्भूतानि कामरागविवर्जितः ॥ १५ ॥

न संधान मेन व्रतस्पथान ॥ १५ ॥ १४ ॥ प्रहपर्मीनरे ॥ श्रद्धिहप मेस्पनेविनयान्नवान ॥ विनयवा

१८॥ न प्रकाशयति तान्मनः अनेनोक्तं न कश्चिद्विद्यते निष्कामेनेति ॥ ३९॥ न द्वेष्टेनः स्थित इति ॥ ४०॥ ४१॥ ४२

प्रसादस्थेन लक्ष्मं विंबसच: पार्थिवर्धम ॥ ले भिरेलच नामाने प्रकाशस्थ विस्तनमान ॥ प्राप्य चान्य
रूपसायज्ञमश्वं पर्मे विचाय रहान ॥ ३ ॥ वाच च सथमानामा मा पू पंधारस्थ: ॥ प्रन संवन्मरे सर्वे पा
पमोदमनाषण ॥ २ ॥ पयेन यत्कनेष्ठं मपापामा: सन स्थान ॥ यो लद्मानमे लोके दीर्घेका
ले स्वकर्मणा ॥ ३ ॥ नात्तनेन शिकौ धानिकृते उद्यान्मरवे ॥ न प्रजनामनि च: पंपश्च मानते पू
मनुष्यना ॥ ४ ॥ भविष्यानि चय मानुमास वे पापरविपाप ट: ॥ पिन: प्रियहिनेगुरु: सौमोमान्य
नेषिणानि ॥ ५ ॥ पद्भम नकावस्तनवां सतन्नमामहृत्संधि: ॥ तनोमामपजनाम हि समेनावस्त
वस्लद ॥ ६ ॥ प्रयांचं नवमांपाजस्थानं नचामयाकृते ॥ नानान्द्वानाच्छहि पामास्वयंगंमेनमे
भहि ॥ ७ ॥ पदवेनेघामहूसमधकृपमानं सनननमः ॥ मोनाशं मानघालोकायथावहृन
वाणहि ॥ ८ ॥ प्रंथयामपारधलस्प एक एवं नस्पोनम ॥ योपानमान्धेलोके चिंवस्थितिमात्र ॥ ४९ ॥
वैशंपायन उवाच ॥ एतत्द्वाख्याय सादेवीं तत्रैवांतरधीयत ॥ भारद्वाजकुमारं तं न्नागनमाश्रय
यो स्थितं ॥ ५० ॥ स तं देवं ब्रनोनामं गांगेयरति चाभवत ॥ पकनामधंतं ततो: पुत्र: पंमनतेरुपि
केशवो ॥ ५१ ॥ पंपनतन स्थापि पशोकर्नीलमामहस्तशुं ततन ॥ न स्पार्हकोनेधि श्यामि धंगनतेपर
पिकामनापनना ॥ ५२ ॥ महृ भागपवनस्पतने धांगलस्पमहृत्मतन ॥ यश्चेति हाश्च घुतिमानमहृभार
तमस्थानि ॥ ५३ ॥ इत्यादिपर्वणि पंचसभासं ॥ वैशंपायन उवाच ॥ सपन्ना पंमनतन्नधीमाननवरा
नोधिसन्कृतन ॥ यथमानमासर्वलोके पुसम्यवाणिनि विष्कृतः ॥ दमोदानं तपातुहिदीपनि
हेतनाश्रनम ॥ निनकप्यासनाहृपसने पांननोपुहरवंमि ॥ १ ॥

॥ ५८ ॥ अध्यायः ॥ सप्तनामि ॥ २

३३ ॥ अधिजगे अथी नवान ॥ ३४ ॥ उपानाग्रकः ॥ ३५ ॥ श्रीमिरसः पुत्रो हरस्यानिः ॥ ३६ ॥ सोम्नानंसः ॥ स्या

[illegible] नादति [illegible] नंकस्मा [illegible] ॥ ३७ ॥ अनेक नामा [illegible] विरलोवसंहतो ॥ [illegible]
[illegible] विसर्ग नाम [illegible] नवः ॥ ३८ ॥ [illegible] वाच ॥ [illegible] विद्याः ॥ स
[illegible] विदनानसः ॥ ३९ ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] विमो ॥ ४० ॥ वेदान [illegible] वान ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ४१ ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ४२ ॥ नयैवं [illegible] नः ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ४३ ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ४४ ॥ [illegible] को वि
[illegible] ॥ ४५ ॥ [illegible] ॥ नयैवं [illegible]
[illegible] ॥ ४६ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ४७ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ४८ ॥ स
[illegible] विक्रमः ॥ ४९ ॥ स
[illegible] नदी ॥ [illegible] ॥ ४९ ॥
स्याने ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥

१२॥ बालकस्तं त्रिनाभवन ॥१८॥ षोडशाब्दीनां संकल्लनं यद्विंशा सभाः वयोगिनः ॥१९॥ ग्रस्तेषु संग्रमयेषु
यास्तेषु पार्थिवेषु यत्नवाणगदादि हस्थिवी विकारेषु शस्त्रेषु ॥२०॥ तायेसर्वेनेनगंमगप्रवाहस्य निरोधा
देवखिंचिपितस्य यत्नार्थं सारथ्यं पंतलदा क्रियाः ॥ न चाथ सेनाकेपो चित्यातिना सभवदत्थः ॥२१॥ ग्रस
वानामनाथानां निर्यणो निवर्तते नो ॥ सपवगजास्वर्वेषां भक्तानामभवस्थिता ॥२२॥ नासिन्धु सा
निशोछेरा जगाजेशोरेसाति ॥ त्रिनाबागभवनालय दानथर्षो त्रितंमनः ॥२३॥ ससमाः षोडशाब्दो
वचतस्तोष्णोनतथा यथाः ॥ इनिमभागवेत्वीषुन भवदनगोचर ॥२४॥ लथाशुपस्तथा चारसलथा
वक्रसलथा पुनः ॥ तांगेयमतस्यपुत्रो भुजामत्वादेवदनोवस ॥२५॥ सर्वोदेवपुरनिस्तानः पार्थिव
क्षितरेषु च महाबलो महासत्त्वो महावीर्यो महारथः ॥२६॥ सकदाचिन्स्यतो विहंगगामन
सानत्वा ॥ भागीरथी मस्पजलां शांतनर्दहवान्सा ॥२७॥ नांदह्वाचिंतयामासशांतनः पुरु
षर्षभः स्पंदते किं नियं नाद्य सरिच्छेष्टा यथा पुरा ॥२८॥ ततो निमित्तमन्विच्छन्ददर्श समहा
मनाः कुमारं रूपसंपन्नं हुंहंतवाकदर्शनं ॥२९॥ दिव्यमस्त्रं विकर्षतं यथा देवपुरंदरं कृ
त्वा गंगां समाहत्य शरैस्तीक्ष्णैरवस्थितं ॥३०॥ तां शरैरावृतां दृष्ट्वा नदीं गंगां तदंतिके ग्रस
वदिशित्रो राजा दृष्ट्वा कर्मातिमानुषं ॥३१॥ नालमार्गेश्वरं दृष्ट्वा नंदनं शांतनन्नलदा ॥ नोपले
मे स्मृतिं धीमानभिज्ञातुं तदात्मजं ॥३२॥ सतुतं पितरं दृष्ट्वा मोहयामास मायया ॥ संमोह्य तु
ततः क्षिप्रं तत्रैवांतरधीयत ॥३३॥ तदद्भुतं ततो दृष्ट्वा तत्र राजा स शांतनुः ॥ शंकमानः सुतं
गंगामब्रवीद्दर्शयेति ह ॥३४॥ दर्शयामास तं गंगा बिभ्रती रूपमुत्तमं गृहीत्वा दक्षिणे पाणौ
तं कुमारमलंकृतं ॥३५॥

नाल ॥ ग्रस्यजं सा ॥२५॥ स्पंदने प्रस्त्रवनानि ॥२६॥ भिज्ञातुं परिचेति ॥२९॥ ३९॥

स.भा
श्रा.पं
१९६

२३॥ विधायं ननानें किमानशिमास्ताम ॥ २४॥ एवमिति॥ एतत्संनालस्य बोधः सःप्रनंसमनवोधृतद्
न्यायस्वमाणरूपस्यादिपूर्वमपिहिं नापूर्वमयलोकेलीनिनमहोपणवोधिः॥ तस्मान्नपूर्वोमान
र्द्दरसार्वायिपिहितीनिमेनविंगमन॥ यनंथोधः सायनंरनियनवसमसुपायो नालिनस्मासंद

गुणं सानां यथानपरीयस्यानसमनथायस्यात॥ अपनंसेनत्रमेवैकः कालेमहनिभारत॥ २१॥ साल
नः प्राप्तेनिमस्यर्योः स्थितस्वरंचरस्थितनः॥ अनिमलावलोकानामसन्यशेचमित्रवक॥ कथंवि
नवमोगेयविमत्रोनास्लिनःकले॥ २२॥ अमंसायंतनमेवेकः श्यामारूपिवरःस्मनः॥ नचाश्मरं
तृस्याभूयोदानानेनमिहेमदे॥ २३॥ संनालयाविनासामयकामयेमदूमस्नाने॥ अनयमेक
पुरनमिमानुर्येमेवास्नि॥ २४॥ अग्निहोत्रेत्रयी विघासंनालनमपिकावयं॥ सर्वोपरिनामप
मादकलानाहंलिताउंपरी॥ एवमेतन्नमनवोधृतनवसयंतं इमलिमि॥ यदयवंमहप्राप्तन
त्रमेनालिसंसायः॥ २५॥ एषा त्रयी पुराणानां देवतानां चशाश्वती॥ नवसूरः स्यामंधीपा
हतिनस्थमायन॥ नान्यत्रतस्मान्नेपुत्रत्रियपतेनेविधानेक विन॥ २६॥ सोमिसंसायमापन्नः
नचिपूर्णानेकथंमवेन॥ इतिनेकारणानानतः स्वसोनमशोपनः॥ २७॥ वैशंपायन उवाच॥ त
नकारणानारोनानापूर्वमशोधनः॥ देवगुरोमहाबुद्धिः समयाचान्वचिंतयत्॥ २८॥ अ
माराग्लनदेवास्पृहर्गमान्पपिनहिं॥ नमस्तृसनदालंपिवलस्यैककारणं॥ २९॥

फलवनयथाकथंचिदपतेनमादनंकनेमिमिनिभावः त्रयीवेदः सोयंलोकः एवैकत्रयोनान्येनव
मेणा॥ कर्मणापिनलोको विघयादेवलोकइत्यादिपुराणानांमूलभूतादेवतानांप्रमाणभूता

295

१९६

दाशस्यानौ धीवराणां ॥४५॥ नरेन्द्राय वै ॥४०॥ ध्यात्वा स्थैर्यं विनिश्चित्य पादेयं न वेति ॥५२॥ शारीरेणेन कामेन ॥५३॥

नस्य प्रभावस्मान्निज्ञान्निचचाराश्रमं ततः ॥ स ददर्श तदा कन्यां दाशानां देवरूपिणीं ॥४५॥ नाम
एकस्मात्पुत्रकन्यासमितेनाचनां ॥ कस्य त्वमसि कन्यासि किं चिकीर्षसि ॥४६॥ सोऽब्रवीत्
दाशकन्यास्मि पित्रोक्ता नावं वाहयितुं ॥ पितुर्नियोगाद्भद्रं ते दाशराज्ञो महात्मनः ॥४७॥ रूपमाधुर्य
गन्धेनास्तं तां देवरूपिणीं समीक्ष्य राजा दाशेयीं कामयामास शंतनुः ॥४८॥ गत्वा पितरं
तस्या वरयामास तं नृप पप्रच्छ ततस्तस्याः पितरं सोऽपि कामाय ॥४९॥ ततस्तं प्रत्युवाचेदं
दाशराजो महीपतिं ॥ नात्र मानं ममेदं यावत्तव वर्तिनी ॥५०॥ हृदि कामं स कृत्वा कस्मिंस्तं निजा
धं जगाम ॥ दाशीमेव धर्मपत्नीं तु मनः प्राप्तवान् नहि सत्यवतीमपि स्वप्ने समपश्यत् स शान्तनुः
सम्यगेनमपश्यत्तां कन्यां मनसा ध्यायन् ॥ न हि मन्त्रमिमं कश्चिद्देवतामपि विवेदिति ॥५२॥ शान्त
नश्च ॥ स कदाचिद्देवव्रतः स्वयमेव महीपतिं ॥ तातं चिन्तापरं दृष्ट्वा स्वयं कथं चन रा
जाऽऽसीत् ॥ अप्रियं जायते यः पुत्रः स तातात्पृथिवीपते ॥ तत्सर्वं समभिपृच्छतां नात्यः कश्चन
पार्थिवः ॥५४॥ वैशम्पायन उवाच ॥ नैकामयत तं तदा देवव्रतं दाशराजं ततः ॥ शारीरेण नतीर्थे
ण दह्यमानोऽपि भारत ॥५७॥ स चिन्तयन्नेव तदा दाशकन्यां महीपतिः ॥ अन्यथा दातिनश्च
रं कामोपहतचेतनः ॥५९॥ ततः कदाचित्तां चिन्तयन्तं ध्यानमास्थितं ॥ पुत्रो देवव्रतोऽभ्ये
त्य पितरं वाक्यमब्रवीत् ॥६०॥ सर्वतो भवतः क्षेमं विधेयाः सर्वपार्थिवाः ॥ तत्किमर्थमि
हाभीक्ष्णं परिशोचसि दुःखितः ॥ ध्यायन्निव च मां राजन् नाभिभाषसि किंचन ॥ एवमुक्तः
स पुत्रेण शान्तनुः प्रत्यभाषत ॥६१॥

म॰ भा॰
आ॰ टी॰
१००

२७ ॥ कौमारिणां कुमारीसेवितानां ॥ ८८ ॥ ९२ ॥ भीष्मो भयंकरकर्मकारित्वात् ॥ ९४ ॥ इति श्रीमहाभारते

त्वमेव नाथः संप्राप्तः शंतनोरमितद्युते ॥ कन्यायाश्चैव धर्मात्मा प्रभुर्दानाय चेश्वरः ॥ ७९ ॥ इदं तु
वचनं सौम्य कार्यं चैव निबोध मे ॥ कौमारिकाणां शीलेन वक्ष्याम्यहमरिंदम ॥ ८० ॥ यस्त्वयं सत्य
वत्यां मे सत्यधर्मपरायण ॥ राजन्मम च ते शीलं ... ॥ ८१ ॥ नामस्थानं महाबाहो संपा
यावनकस्मान ॥ न वापनं भवेत्तत्र ... संपायो महान ॥ ८२ ॥ वैशंपायन उवाच ॥ तस्य तन्म
तमाज्ञाय सत्यधर्मपरायणः ॥ प्रत्यजानात्तदा राजन्पितुः प्रियचिकीर्षया ॥ ८३ ॥ गांगेय उवाच ॥
दाशराज निबोधेदं वचनं मे नृपोत्तम ॥ शृण्वतां भूमिपालानां यद्ब्रवीमि पितुः कृते ॥ ८४ ॥ राज्यं ताव
त्पूर्वमेव मया त्यक्तं नराधिप ॥ अपत्यहेतोरपि च करोम्येष विनिश्चयं ॥ ८५ ॥ अद्यप्रभृति मे दाश
ब्रह्मचर्यं भविष्यति ॥ अपुत्रस्यापि मे लोका भविष्यंत्यक्षया दिवि ॥ ८६ ॥ वैशंपायन उवाच ॥ तस्य
तद्वचनं श्रुत्वा संप्रहृष्टतनूरुहः ॥ ददानीत्येव तं दाशो धर्मात्मा प्रत्यभाषत ॥ ८७ ॥ ततोंतरिक्षे
प्सरसो देवाः सर्षिगणास्तदा ॥ अभ्यवर्षंत कुसुमैर्भीष्मोयमिति चाब्रुवन् ॥ ८८ ॥ ततः स पितुर
र्थाय तामुवाच यशस्विनीं ॥ अधिरोह रथं मातर्गच्छावः स्वगृहानिति ॥ ८९ ॥ वैशंपायन उवाच ॥
एवमुक्त्वा तु भीष्मस्तां रथमारोप्य भामिनीं ॥ आगम्य हास्तिनपुरं शंतनोः संन्यवेदयत ॥ तस्य त
द्दुष्करं कर्म प्रशशंसुर्नराधिपाः ॥ समेताश्च पृथक्चैव भीष्मोयमिति चाब्रुवन् ॥ ९१ ॥ तद्दृष्ट्वा
दुष्करं कर्म कृतं भीष्मेण शंतनुः ॥ स्वच्छंदमरणं तस्मै ददौ तुष्टो महात्मने ॥ ९२ ॥ इत्यादिपर्वणि
सत्यवतीलाभो ॥ १०० ॥

...श्रीनीलकंठकृते भारतभावदीपे ॥ ॥ ॥ ॥

१००

न सोमस्य कृष्णमात्मानाय यथा वायुरिव लक्षितो ॥ वरं शाशांस कन्यो नाम दिव्य भरतर्षभ ॥ ७ ॥ ततो
देवजानां सर्दैव तु त्रिये: सा दिव्य ग्नदा ॥ अगिगम्य दाम्या तंत कन्या वज्ञोपितृ: स्वयं ॥ ८ ॥ सदा शा: प्र
तिन वाम्य दृविवियि वृत्ता निष्ट्रत्य च ॥ अत्रवी चै न सा मीने राजन्मे सर्दिभारत ॥ ९ ॥ तमेव नाथ: पु
र्यामः पान नो भवे न तथैम ॥ पुत्र: शास्त्रश्च नाशु ह: किंतव स्या भितव च ॥ १० ॥ को हि सं वेय क
न्या न मीयित्रं योनमोदर्या ॥ अति काम स्व न तप्पत मा ताद पिशातकृत ॥ ११ ॥ अप्स्य संवेत दा
र्थस्य यो कृष्णाकं स मो मयो: ॥ यसम्प्रकाम्य वती सम्भ ना च वत्सी नी ॥ १२ ॥ तेन नमे वक्रुश
त्वा न पिता ते परिकीर्तित: ॥ अर्दे: सत्यवतीबोढुं यमेत: सनराधिप: ॥ १३ ॥ अपि तोह्य
पितृवर्धि: अत्या त्यान: पुत्रा मया ॥ स त्य वत्सा भवत्या चार्थीम अप्रीदपि सतनम: ॥ कन्या पितृ
त्वात्किंचित्तव स्या पितो न राधिप ॥ वनल स्या पत्नीनामत्र हो पप्पामिकेवले ॥ यस्य हि वे
सपत्न: स्या हृदर्थ वैस्या स्व र स्य वा ॥ न म सजा ना नाचिरं जी वेन स्यि कृ हे पं र न प ॥ १६ ॥ वेशंपायन उवा
च ॥ एवमुक्त्वा गांगेय ल्यकं प्रत्य भाषत ॥ ल्वातनां भूमिपालानां पितरथ्यो य भारत
यदंस्पे वृतमाद ल्स म तेस सप्य चनां वर ॥ नैव ज्ञानो न ना ज्ञात ईद पं ल कृत्स्न सहेन ॥ १८ ॥ एव:
मेतनक रिष्या मि यथा ना तम सन्माय पंसे ॥ यो स्यां न निष्पत्ने पुत्र: स नो राज्ञा भविष्यति ॥ १९ ॥
रत्न जकः पुनरेवाथ तं दाशः प्रत्यभाषत चिकीर्षुर्दुष्करं कर्म राज्यार्थे भरतर्षभ ॥ २० ॥

इत्ते ॥ ७ ॥ आह येति ब्राह्मः ॥ ८ ॥ मिथुनेनेत्यत्रैतेनेति आर्षः विनेनेत्याहुः वलेनेति राक्षसः अनुमानेति गांधर्वः ॥ ९ ॥ प्रसन्नेति पैशाचः स्वयमन्येति प्राजापत्यः आर्षविधिपितृत्वेनैव उक्तः ॥ एनेष्टा-

वैष्णव पात्र नारायण ॥ इत्ते विवेकं गार्हे भीष्मो वाले ध्यानं त्वकौरवः ॥ पालयाम्यासनं ज्ञानं स्वयमन्यत्र मामने स्थितः ॥ १ ॥ संग्रामगौरवेनेत्युपाख्यानं पीमनेनावरः ॥ भीष्मो विचित्रवीर्यस्य विवाहाय कन्याः ॥ ७ ॥ अथ काशिपतेर्भीष्मः कन्यास्तिस्रो वरोप्सराः ॥ श्रावयसहितानयत्तन्नुवाचानाचैव स्वयंवरं ॥ ३ ॥ जनः सर्वस्थितानां श्रेष्ठोर्थनेकेन पात्रेति तत् ॥ जगाम मानमतेमानः तदीनवत्सुमीयम ॥ ४ ॥ नवराः समहितानां संबन्धः समयागतानां ॥ दद्यात्कन्यालाभे च भीष्मः पौननेनेदनः ॥ ५ ॥ कौसमानेषु यत्नेन नदानामसमर्थेषु ॥ भीष्मललाटमध्यं कन्यावरयामासमलाः अभ ॥ ६ ॥ मुवाचच महीपाला न्ब्राजेनेत्युत्तिष्ठन ॥ अथ मात्योत्यनाः कन्या भीष्मः प्रहृत्तावरः ॥ ७ ॥ आहूयाहूतं कन्यानां गतात्तव ॥ ८ ॥ स्वस्तं युद्धे ॥ अलंकृत्य प्रयत्नाः शान्तिं प्रदायपचयपतानन्यौ ॥ ९ ॥ अयधुत्यपौ कन्या मिथुनेनेतावामपि ॥ विजेन कथितेनात्मवलेनाम्येन नान्यच ॥ १० ॥ समत्तामपयतां प्रस्ने स्वयमन्ये च विदते ॥ प्रमुर्विविधिपुत्रकृत्यसारा लिंदृत्तिचापरे ॥ ११ ॥ अहमेनतमस्थो विजविवाहं कविमिईतां ॥ १२ ॥ स्वयं वं तयाजनमाः समस्तंस्पृशपतां निच ॥ १३ ॥ अमस्थानहृता मातुं स्वां यशीपमेवादिन ॥ तास्माः पृथिवीपालाजिहीर्षा निवलादिन ॥ नेयननंपंपरं यान्यां विनयायेन रावणा ॥ १४ ॥ स्थितोहं पृथिवीपाला युद्धायकृतनिश्चय ॥ एवमन्या महीपालान्काशिराजं च वीर्यवान् ॥ १५ ॥

विवाहः ज्ञात्वाख्यातः ॥ १० ॥ अष्टमंगावरमं विवाहं प्रशंसन्ति स्वयंवरमिति ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥

197

ततः इति ॥ १ ॥ [illegible] ॥ ४ ॥ [illegible] ॥ ७ ॥ [illegible] ॥ ८ ॥

[illegible]

॥ ९ ॥ इत्यादिपर्वणि नीलकण्ठीये

श्रीभारते भावदीपे [illegible] अध्यायः ॥ ९८ ॥

कश्मिनांकरिंतौ प्रासंवारत्रेय प्राणरोनन प्रासोन तनेभिंदन कश्मिना हौकरित्यौ श्रेमसरः ॥ २०॥

नान्विनिर्जिमनरत्रेसर्वेणाकाश्वलांवरः ॥ कश्माभिः सुहिनः आयाभ्रूरत्नोभारनान्मनि ॥ २१॥
ननकेलपूहनोनाजेछ्वानवाजोमहारत्रः ॥ प्रमणभाङ्गदमेयानस्मामौकेवांननवरत्रौ ॥ २२॥ वार
त्रेनतनेभिंदंनाम्णामणरेयश्मा ॥ वाश्विनामनकंप्रासोत्रूपशोवलिनांवरः ॥ २३॥ हौकामहि
पूनिहेनिमौष्मामाहृसणार्थिवः ॥ श्माल्वत्रेनोमहूकाङ्गमर्हेवामहोरिनः ॥ २४॥ ननः सपूरुष
मान्नोभौषः प्रावलार्दनः ॥ नहूश्माकलिनः कोधात्रिंदुमोभिरिवलवन ॥ २५॥ विननेपूप
नःपात्रिवर्कविननलवारश्मन ॥ नन्नयसेषमामाघमपेनभयर्षेयमः ॥ २६॥ निवनेयामाम
रत्थं श्माल्वप्रनिमहाघः ॥ निवनेमानलंश्छ्वानजानःमर्वेववने ॥ २७॥ श्रेलवाः समपर्येन
मौष्मशाल्वममाणमं ॥ नोऽहमाविवर्नेदनौवविनौवाभिलंनने ॥ २८॥ मन्योन्मममिवर्नेनाव
लविक्रमषमालिनौ ॥ ननौभौष्मवांननवंपारेः सननहूनवः ॥ श्माल्वराजोनात्रेहूः सम
वाकिरत्सूनौ ॥ २९॥ पूर्वेसमपहिनंद्धपूणौमौषमणाल्वेननेनपाः ॥ विस्मिनाः समपर्यंनमाय
मामिनिचापुवन ॥ ३०॥ लाहवेननापनेहेप्नाममरेमवेपार्थिवाः ॥ प्रद्धनयनमहद्धाणाविधिः
पाल्वेननायिष्प ॥ ३१॥ वर्त्रियाणांननोनारवः श्रुत्वाप्रपूर्वंनय्यः ॥ कुरूः पूणाननवोभौषमः निष्ठ
निष्ठेसमाषन ॥ ३२॥ नारथिंचापरवीलकुद्वेयाहियवेषपार्थिवः ॥ यावद्धौनिहन्म्यधमजेन
मिवपरिवाहं ॥ ३३॥ ननोनेवाहरनेम्मयोजयाम्नमवेरथः ॥ नेनाशंपवनोमहूनाम्नाल्वा
नयमपूयनेः ॥ ३४॥

॥ ३५॥ हथोरेनःपेककाभोरानेयोपोलुषावेववारेंनहासाह वर्धानवाभिलापूषिलांगेलवदंनरे

१५॥ प्रकीर्णैर्द्विभेदैर्यथोक्तैः पल्लविता ग्रंथसंस्तरीमन्वयः॥१५॥१८॥ अत्रान्वयानि नराः रत्नाविशेषाः

सर्वाः कन्याः सर्वको रत्नो रत्नमारी पचसकं॥ आमं अवसानान्याया ज्ञीके कन्याः प्रसन्नाः

ननतेपार्थिनाः सर्वे सम लेन रमस्थिताः॥ सिद्धशांतः स्वकान्ताहृ न्द्रंशनोदशानकृदान॥१४॥

नेषामाभरणान्याप्तनरिनानां विमिचनो॥ आमंचनौ चवमी णि समभसः समहानभन॥

नाराणां भिवसंपन्नो वभवजन नमेतय॥ भघाणानां चमर्वे योक वचानाचसर्वेषः॥ सर्वमेपि

भेषणो अप्रकीर्णैर्द्विरिनलतः॥ सकेताथा मधी जिय भ्रकधार्थीक तलोचना॥ ततोह्रमा

त्रुविया मदश्रोरूपकल्लिनान रत्नानाम्यायते वीराः सर्वप्रहृरणान्विताः॥ अयोनमथ

कोरत्नमनमस्तु रूदागुथाः॥ ननः समभवयकृद्द - नेषांतस्याभरत पकस्पवनहृनाच

नमलेलोमहर्षणा॥१६॥ नेति प्रजन्यामाहसोलसिन्द्धगणपदादिपन॥ आश्रा मंश्रेवः

नानाप्रभीमः स्वीनथानम॥१७॥ आकिनकर वर्षेणा महतालोमवादिना॥ ननन्तेषा

श्चितां सर्वे सर्वतः पारिवारेंर्त रत्नपुः शरत्नेणा वर्षेणो वादिमंत्रदः॥ सनंतावागयं

वर्षेषा रैणावार्य सर्वतः॥ ननः सवीन्हीपाला सर्थ विश्वा्धिपिधिपिः॥१८॥ एकेकल

नतो भीमराजलिद्धापयवचभिः॥ सचनान्नानि लिकाथ दाभ्यां हाम्यां पराक्रमन नयं

हमासी तमले चोरंदेवासंगोपमं॥ पधणनालोकवीरगणाप्रावयातिसमाकुले॥१९॥ स

यन्त्रपिधजायाशाणिवांधानचर्शितांषिच॥ चिके देसम रेभीषः प्रानपो थमहसवः

नश्यानि प्रहृपानसालाचर्वरथचारिणः रत्नगोचानलः संत्वे पानवो यस्य पूजय

न॥२०॥

लावंशैकुं परगृजादिकेदेयानरत्नावोपपूजयन॥२०॥

हृष्टो वने यथा मेघघोषो द्विपसत्तमो नैव च हन्ती तुल्यान्वर्जन्यथा मेदुनान्ते ॥ ५८ ॥ स्थितेन नरदेवनिहतो वसौ ॥ ५९

म॰ भा॰
आ॰ पं॰
२००

प्रत्याययौ सर्वा नियंकमात्रे पुंर्दंदे च मयाजिना ॥ वनानि सरितः शैलान्नानाद्रुमलतापका ॥ निर्दिष्टान
पार्श्वे च समावर्तमानपरिविनका ॥ ३ ॥ स्नुषा इव स धर्मात्मा भगिन्य इव चानुजाः ॥ विनिर्जित्य सपत्नांस्तान्
पौर्वैर्दयानीतैः ॥ अनन्तरं तेन च स्नुषा भीष्मः पुंसां कथाशिपने हृताः ॥ ५५ ॥ अंबिकांबालिके भार्ये प्रादाद्भ्रात्रे
यवीयसे ॥ भीष्मो विचित्रवीर्याय विधिदृष्टेन कर्मणा ॥ ५७ ॥ तयोः पाणिं गृहीत्वा स रूपयौवनदर्पि
तः ॥ विचित्रवीर्यो धर्मात्मा कामात्मा समपद्यत ॥ ५८ ॥ ते चापि बृहती श्यामे नीलकुंचितमूर्द्धजे ॥
रक्ततुंगनखोपेते पीनश्रोणिपयोधरे ॥ ५९ ॥ आत्मनः प्रतिरूपोऽसौ लब्धः पतिरिति स्थिते ॥ विचि
त्रवीर्यं कल्याणं पूजयामासतुः शुभे ॥ ६० ॥ स चाश्विरूपसदृशो देवसत्त्वपराक्रमः ॥ सर्वासामेव ना
रीणां चित्तप्रमथनोऽभवत् ॥ ६१ ॥ ताभ्यां सह समाः सप्त विहरन्पृथिवीपतिः ॥ विचित्रवीर्यस्तरुणो यक्ष्म
णा समगृह्यत ॥ ६२ ॥ सुहृदां यतमानानामाप्तैः सह चिकित्सकैः ॥ जगामास्तमिवादित्यः कौरव्यो य
मसादनं ६३ धर्मात्मा स तु गांगेयश्चिंताशोकपरायणः ॥ प्रेतकार्याणि सर्वाणि तस्य सम्यगका
रयत् ॥ ६४ राज्ञो विचित्रवीर्यस्य सत्यवत्या मते स्थितः ॥ ऋत्विग्भिः सहितो भीष्मः सर्वैश्च कुरुपुंगवैः
॥ इति श्रीमहाभारते शतसाहस्र्यां संहितायामादिपर्वणि विचित्रवीर्योपरमः ॥ १०१ ॥ वैशंपायन उवाच ॥
ततः सत्यवती दीना कृपणा पुत्रगृद्धिनी ॥ पुत्रस्य कृत्वा कार्याणि स्नुषाभ्यां सह भारत ॥ १ ॥ समा
श्वास्य स्नुषे ते च भीष्मं शस्त्रभृतां वरं ॥ धर्मं च पितृवंशं च मातृवंशं च मानिनी ॥ प्रसमीक्ष्य महा
भागा गांगेयं वाक्यमब्रवीत् ॥ शंतनोर्धर्मनित्यस्य कौरव्यस्य यशस्विनः ॥ त्वयि पिंडश्च कीर्तिश्च
संतानं च प्रतिष्ठितं ॥ ४ ॥ यथा कर्म शुभं कृत्वा स्वर्गोपगमनं ध्रुवं ॥ यथा चायुर्ध्रुवं सत्ये त्वयि धर्मस्तथा ध्रुवः ॥
अध्यायः ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ ४ ॥

२००

नो विनं शमा मनाश्च वद्योधितं ॥४४॥ कापथपथकाशिरानलथ ॥४६॥ गुन्नजीः क निक्षुम ॥४५॥ नस्वरो

ग्रहैरस्मानि मंवार्थपत्न त्वरानम्थकैरवः ॥ भीष्मोन्नपतिशाईत्न न्यवपीनथसार्थिं ॥४७॥
ग्रहे पत्ना वापाथै इ पान्यवर्थीनरपोनमान ॥ कंन्पाहेनोनेरश्रेष्ठः भीष्मः शांतनवस्तदा ॥४८॥
तिना विसर्जयामास जीवन्तं नृपसत्तमं ॥ ततः शाल्वः स नगरं प्रययौ भरतर्षभ ॥ स्वराष्ट्रमन्वपा
लयद्धर्मेण नृपतिस्तदा ॥ राजानो ये च तत्रासन्स्वर्गकामाः स्वयंवरे ॥ स्वान्येव ते पि राष्ट्राणि जग्मुः
पार्थिवसत्तमा ॥४९॥ एवं विजित्य ताः कन्या भीष्मः प्रहरतां वरः ॥ प्रययौ हास्तिनपुरं यत्र राजा स कौ
रवः ॥५०॥ विचित्रवीर्यो धर्मात्मा प्रशास्ति वसुधामिमां ॥ यथा पितास्य कौरव्य शांतनुर्नृपस
त्तमः ॥५१॥ सोऽचिरेणैव कालेन अत्यक्रामन्नराधिप ॥ वनानि सरितश्चैव शैलांश्च विविधद्रुमा
न् ॥५२॥ अक्षतः क्षपयित्वारीन्संख्येऽसंख्येयविक्रमः ॥ आनयामास काश्यस्य सुताः सागरगासु
त ॥५३॥ स्नुषा इव स धर्मात्मा भगिनीरिव चानुजाः ॥ यथा दुहितरश्चैव परिगृह्य ययौ कुरून् ॥२
आनिनाय स महाबाहुर्भ्रातुः प्रियचिकीर्षया ॥ ताः सर्वा गुणसंपन्ना भ्राता भ्रात्रे यवीयसे ॥५५॥
भीष्मो विचित्रवीर्याय प्रददौ विक्रमाहृताः ॥ सतां धर्मेण धर्मज्ञः कृत्वा कर्मातिमानुषं ॥५६॥
भ्रातुर्विचित्रवीर्यस्य विवाहायोपचक्रमे ॥ सत्यवत्या सह मिथः कृत्वा निश्चयमात्मवान् ॥
विवाहं कारयिष्यंतं भीष्मं काशिपतेः सुता ॥ ज्येष्ठा तासामिदं वाक्यमब्रवीद्धसती तदा ॥५८॥
मया सौभपतिः पूर्वं मनसाभिवृतः पतिः ॥ तेन चास्मि वृता पूर्वमेष कामश्च मे पितुः ॥५९॥
मया वरयितव्योऽभूच्छाल्वस्तस्मिन्स्वयंवरे ॥ एतद्विज्ञाय धर्मज्ञ ततो धर्मं समाचर ॥६०॥ ए
वमुक्तस्तया भीष्मः कन्यया विप्रसंसदि ॥ चिंतामभ्यगमद्वीरो युक्तां तस्यैव कर्मणः
॥६१॥

वाहिकस्य कर्मणः काले ॥६२॥

स॰ भा
आ॰ प॰
२-१

भू विद्वविणानेजसावाङ्कवलोनाहवना ॥ २४ ॥ २५ ॥ इति श्री निलके ठस्ते नौ भारत भाव दीपे प्रथा
१००

एवमुक्ता नवेत्रामद्विद्वविणानेजसा ॥ मानासमेवलीभी षामवाचनदूनेतनं ॥ २६ ॥ जाना
मिनेछिति स नेपरांसमपपराक्रम ॥ ३ ॥ वहनदृनेयाहीलोकाननांतहेनतेजसा ॥ २८ ॥ जाना
मिचेवस्संनमरत्तोपवभाषिते ॥ आपद्गंतमाबीस्ववेहेंतेंत मं तौंबुवं ॥ २९ ॥ यथानेकलनं
तस्य धर्मस्य नपराभवेन ॥ स्वरूद्रसूप्रद्वसो रलथाक्रमपरंनप ॥ लोलप्पमानांनामेवंक्रप
णोपव्रसहिं नो ॥ धर्मादृपेनंवृवनीभीष्मोभूयोऽब्रवीहिं ॥ ३१ ॥ नपमानवेवस्वमानः सर्वी
नीनधाः ॥ सम्याक्तुतिः तावेयस्थलयमेंष्व प्रशान्ते ॥ ३४ ॥ शांतनवो पिसंतानेयथास्याद
तयंभावि ॥ ननेयमंप्रवक्ष्यामि तावंराहिसनातनं ॥ ३२ ॥ फलानंमनिपद्यस्वप्राप्ते: सहव
योहिनैः ॥ आपद्धर्मार्थकुशलैः लोकतंत्रमवेक्षच ॥ ३३ ॥ इति द्विपर्वणि ॥ श्री भीष्म उवाच ॥ जाम
दग्न्येनरामेणा पितर्वधमसमृष्यता ॥ राजा परमुनाहर्वेहैहयाधिपतिर्हतः ॥ १ ॥ शतानां
निहत्वा बाहूनां निकृत्ताःस:जनस्य वै ॥ लोकस्य चरितो धर्मले नानि किलडम्बरः ॥ २ ॥ त
नस्थयनगतायमहरहाणीप्रमेवना ॥ निर्दयंतत्रमममक्रदस्थेननतयनाबरः ॥ ३ ॥

श्री॰ ८

यः ॥ जामदग्न्येनेति ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ॥

मनयम्पिवनीत
वान्=॰

२०० २१

तनेशग्रानि वि ल्लशत ॥ ५ ॥ श्रा श्राप्य वि श्रासंप्राप्य ॥ ७ ॥ तस्यैवैव त त्स्य ए व क ज्ञानान स भिषेच य ऊह

वेस्य धर्मा स्य घृमं तत्सम्मा से नेन लं रेणं च ॥ विविधान्ते षु नीयेस्य वेदांगानि च सर्वशः ॥ ५ ॥ स्याव
स्थानं च तेन धर्मे ऊलाचारं च लक्षये ॥ अतिथिर्जिं चकं देशु पुष्पकं गिरमयोरिव ॥ ६ ॥ न स्नानस्य
पानाश्राप्यलयिधर्म मनोवर ॥ कार्येतानि नि यो त्स्कामित्त ज्ञाताकर्नोम ईलि ॥ ७ ॥ नमपुत्रलव
ज्ञानानीयेवान्नप्रियपुत्ने ॥ बालपुत्रान नः स्तगिमपुत्रः पुत्रपौत्रं भ ॥ ८ ॥ पुमेमरिष्येषां ध्यान लेकऊ
शिराजनन ले श्लाघे ॥ रूप यौवन संपन्नं पुत्र कामेन च भामिन ॥ ९ ॥ नयोरुत्साद्यापान्स सेना लाय
ऊलस्य नः ॥ मन्त्रियो मान्याद्वारा हो धर्मे कनेमिग्रहीं स्मि ॥ १० ॥ तत्स्य वे नामिविद्या स्व भाषानानं नः
पुणधिच ॥ तदा वकूरुय धर्मं प्रमानिमन्त्रीः पिनामहान ॥ ११ ॥ वैश्यापाय नन्दा च ॥ नयो चमानोमा
नाचमहर्द्धिःस्य परोनपः ॥ पुत्रा वा चाधृ धर्मानात्मधर्म मेवो नरं च च ॥ १२ ॥ प्रसंशायं परो धर्मत्त
कामान कल्हान नः ॥ नमपांत्र प्रति च मे प्रनि तां वेपावेणंत्र ॥ १३ ॥ अन्ना त्रिवयम्बा च नेपृत्तं कु रे
लोकलं दंतो ॥ सम्मन्न वति मसां नेष निन्ना ना मा हृपुत्रनः ॥ १४ ॥ प्रविन्य लेय ब्रै वो ना नां रा ज्यं देव पु
कापुत्रनः ॥ यद्दा पापि कमे नात्प्यानन लम्बं कं धेवन ॥ १५ ॥ त्यक्तेवि पृथिवीं गं धमाय घ्नाना नः
सोनिलयानत्तेरूपं वा पुः स्पर्शान्संतान्ते नेन ॥ १६ ॥ प्रभां समन्वरे जेदकें पृभ केनलर्पामा स्मा
तानेवत्तं तथा काशं सोमः प्रीतां पुण्यां तानेन ॥ १७ ॥ विक्रमेव्दहान ना द्वसे नपाच पर्मेरा दु
नव हंसत्यमन्त्रापुत्रा वसेवं कर्थं चन ॥ १८ ॥

२८

प्रहच येसं कस्याभ्युन्ति प्र कान्सं तत्यश्री सं गोऊहमानि मन्त्रीः मानिमन्त्र ॥ ५ ॥ ८ ॥ त्वदं नरेव

पन्नवणत्तेउ पगनवाण ॥४॥ णारएणताउ परएणत्तं ॥ ॥ आणमाणं चिंतेनिय छिन्नं निरयत्तं ॥ ॥ काम
मेघुन्नेमाणम ॥ ॥ न पाणपणे निसंवेयण ॥ ॥ होहंतनमणं यणं ॥ ॥ हम्मक्कानेविमाणेयसानस्क

उनध्यायणवीयं हत्तरोपा हिंदिवोकसं ॥ हहस्स निर्हेदनेनाममनामन्वपयन ॥ ॥ चवहि
चममनानेनदेवं वहंनावरे ॥ अंतवन्नोनहंभागाउ ऐहेनारमणनामिति ॥ ॥ पयंचमेमह
भागकत्तावेवनहस्सने ॥ उँनगेमवेहमेवेम्मघडंगेपन्नयीयन ॥ ॥ पमोहवेनानं चापिहु
वोनाहणचमेमव ॥ नस्सादेवगानेवघसुपारमिनमहंहि ॥ ॥ एवमनक्कलहामस्सारहस्सति
हहापयी ॥ कामाम्माननेसम्माननधुशाकनियछिन्ने ॥ ॥ सवम्भवननः कामीनयासाय
मकामपा ॥ उनहतेंनंननेरेनः समामेस्योभ ः गामसन ॥ ॥ ओग्नानमागामः कामेहयोनीत्तीह
संमव ॥ पस्सावक्कायोमभागवमहूवेवाहंमिहसानः ॥ ॥ पमोचरेनाधुमवाजपीउंगकनेमहेस
गधूनेवननहंगंगामेध्युसाहहसाकि ॥ नगामभेघुनायेवममनाचाहत्तोचंना ॥ ॥ धुमे
सयीननोत्रुहनसागामेगनोमनिः ॥ पञ्चामायेयपसागेभुञ्चसचहहस्स नेः ॥ ॥ सानमगम
मघनहेनः पनिरननहं ॥ पपानमहमामेमानन ः कुमेहहसाति ॥ ॥ नहहुपतिनं भुक्कसगापह
हघानिन ॥ उनअगुरगमेस्युनिभनस्युणगवानरिधि ॥ ॥ पन्नमामीरहेकालेसवंभनेधिनेम
नि ॥ एवमाम्यवचलसानमेः हीह्रेपवेतपहि ॥ ॥ सवेहंधनमानामसगापाइवरतापयन ॥ हहस्सने
हेहन्नोनेहिहसानिरिवोजमा ॥ ॥ तश्चाजनयामाहसोनमारीम्महंः शुगाः ॥ सघरहनयासयन
हगनानक्वहहुरो ॥ ॥ यमीम्माचसहामाववेदवेहागापारगः ॥ मोयमेमोमेगाचमेयोन
निविवंमनिः ॥ ॥ पावनेननथ्याकनेभुहबालहगाकपा ॥ मनोविनधमधीरनहहुमानव
नमाः ॥ कुहमोहाभिम्मनाहेमवेनजाभ्रमीकसः ॥ ॥ पहेयभिवमयोहेनाभ्रमेवेत्तमहं
लसहहरोविहीगिसापिहहयेनये ॥ ॥ मेपमेमकामामेघुनेमेःमेपागकाममपेनदयासयीमा

पारिकशा रूढो तिनन कथं न हि मानाभसा पिनः १ जो येनज्ञा नः सपृथक सन्नु सं ॥ नवो घो [illegible]
न्यालमस्ति अन्योऽदृ योमन नसापिनसेन सोमसमार्थ १ च १ निरोध पहि लाप ममन मन्ना हमनालीति
स्य. ति स्वरो रे यो नाश्चान्य दे ये स्वस्मान्स दो ये वाः न्य सा ज्ञानो नाम्न १ च १ निति हं [illegible] स्माह ॥ धर्म
कि ति ॥ सु मिनमार्थ १ जो भविष्यनीति अभिलाषम स्थावल क्षन मेघः पहृ घानि सं कल्प प्राप्त
सुने सौ १ मय यो भि पो य स्वसंक स्यो रूढ लो च १ च १ न्य धे ॥ मानाभ से तिन विवाह विप्र यं न न्ये व

एवमुक्तवा चैव सो भीर्यो वै [illegible] हान्मना ॥ ततः समक्ष नः पृथिवी कन्या तिः हरिश्चाप्युन ॥ ५ ॥
ननः सम्यक् स चोऽभिः हरिश्चापि तिः सपनेनन ॥ अपाहिना [illegible] निचा सर्वे वे दधार यो ॥ ६ ॥ प
रिग्राहृत्य ततन त्र १ निवेदं १ निश्चितं ॥ यं मम नक्षि से [illegible] ना सा लां भ्ना: सम्मत १ ॥ ६ ॥ लोके
धाचरितो रुष्टः हरिश्चापि पुनर्मेचः ॥ ततः पुनः समरिते निधन स भवन्ति दा ॥ ७ ॥ समे वे वाचव
रोहित निहन्तं पुरानने ॥ ७ ॥ अथ धान स्या नि स्थान सामी हो मान्थि: १ ता ॥ सम सता नाम सनस्या
सौहृ यो पर मसं म ना ॥ ८ ॥

पालिते रेवे घन वी नाद पिशान्तं क रो पनि: स्थाहि तिचेन ॥ स
ना मि रूख्यावक रत्नो कंट्ठा दृष्टि चिवां क रोन्य ति दहेः सु सलहे क मना हो पृव मया वनं स्तो दे: पहु
डु लप्सु नां क रो मनि दहे सुभा वनाविशे ष ननस्य थ में स्व विषेप्या याय क नाम्भु पन मान ॥ धनादि
नाउ पनि सं ग लक्ष दे पाने व स पं न ति ने विप्र स्य ॥ १ ॥ लोके १ ति ॥ कल्याण पा दंड जे भ रव न्यां व नि ॥
हे न १ नाउ मा दिना १ ति लोके ॥ अथ यावतिलोः नु ष्टिनो रुष्टः हरिश्चापि तां भ व उन्यति वी ह प्रोध्य ति
फोधः विश्वेभ्यः हरिश्चापि तां पुनह दयो द सुद मन्यो: ॥ १ ॥ ८ ॥

ग्रोतृस्पृष्टान्स्वरूपतान्नार्थस्मिन्निभावः संस्थितार्थे ॥ ४ ॥ ४४ ॥ यथैव हि निजं ग्राहग्राहणो भोवेत्पाहुर्हिमिन्यर्थे ॥ ४२
प्रश्नाय ॥ श्रुत निति ॥ ४ ॥ ४३ ॥ संप्रवलमानयाहृत्यानवमा ॥ ३ ॥ विश्रामादेनं गमन्त्रहे: संतानानायविलाया
इयाचनेमहर्षिर्यान्नाम मैनस्इति मायत ॥ नेत्रवाचमहर्षिलंममेमइनिचाववीत ॥ श्रुत्वा यो नो म्रया
हिमेनानि कः श्रीवरस्य: ॥ ४५ ॥ ओं परहेच मांच स्नात्वा देवान्महि स्रोन ॥ प्रक्रमन्प्रहरेम [illegible] था
वेषितं कामम ॥ ४६ ॥ ततः प्रमादस्याभासश्रुतनस्त्र [illegible] मनेनम ॥ नहिः परे स्त्रा [illegible] हिता
स्तृत ॥ ४७ ॥ नामसर्पिश्रीन मां तेषु [illegible] देवीमस्थास्त्रवीन ॥ म विश्वानि कमाराले नेनसा [illegible] स ॥ ४८ ॥
[illegible] वन: कर्लिंगा [illegible] महाप्रनस्तना: ॥ नेमांदेश: [illegible] समनामकस्थिना [illegible] ॥ ४९ ॥
[illegible] मवदे [illegible] स्सन: ॥ कलिंगा [illegible] कलिंग [illegible] ॥ ५० ॥ [illegible]
[illegible] स्सन: ॥ एवंचले: [illegible] महर्षिणा ॥ ५१ ॥ एवमस्त्वमहे [illegible]
[illegible] नाना: [illegible] वीर्थचनोमहावला ॥ [illegible] नानम [illegible] मान: क
[illegible] न ॥ ३ ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] नानाहृदये ॥ न
[illegible] निग्रहन्माननसनेमिनिगादृन: [illegible] ॥ [illegible] ॥ विचित्र:
वीर्थदेवेषु प: समन्ताम्स्थे [illegible] ॥ [illegible] ॥ ततः [illegible] मान
[illegible] ॥ [illegible] चीन ॥ [illegible] यथावदभिमान ॥ विश्वा [illegible]
[illegible] नान ॥ ५ ॥ नते [illegible] मिन [illegible] ॥ [illegible] मेवन: फल
[illegible] नि ॥ ६ ॥ [illegible] हेनन ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] नान [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] परमर्षि [illegible]
[illegible] नदी ॥ ७ ॥ [illegible] सनात्मानो [illegible] प्रावदीनह ॥ सं
[illegible] रवचः ॥ ८ ॥ एवं [illegible] नेनक [illegible] ॥ ॥

[illegible] ॥ ७ ॥ आप [illegible] निश्चोष: पर्म: ॥ [illegible] ॥ ५ ॥ मनं वचन [illegible] ॥ ६ ॥ [illegible] ॥ ९ ॥

[illegible]

[illegible]

203

[illegible]

इदस्तनिधुरयस्तरनेकारिष्यति॥४४॥ एतां तु हकांतारस्य धीमनिष्ठं तीमितिनिस्तचयति कथं चिदिति

२॥ अध्याय॥ ततस्ते॥१॥ अनन्तप्रवेद्यानि॥ [illegible] तोन्न वोदरं ग्रागमिष्यति॥२॥ प्रचिंतनदिति॥ य

१०२

एवं ततस्तस्य श्रोत्रिये राजसत्तमधर्मं॥ [illegible] निकलस्तनः॥४४॥ [illegible]

ततो येनां कथं [illegible] राति॥ [illegible] देवर्षीननिषीलया॥ [illegible]

ति॥ श्रीमहाभारते॥ वैशंपायन उवाच॥ ततः [illegible] कालेवर्षं [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] यिष्यति॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] भविष्यति॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] भविष्यति॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] भविष्यति॥१०॥

नेनगर्भ [illegible] ॥१॥ [illegible]

204

१५॥ परं च मे निहनि रूपमपरं यत् मे प्रहनि रूपमात्क्षिक मे हि क मिलि॥ १६॥ द्वितीयो गतभार्ये॥ १७

यद्वीयमलव भान् भो यें मरसनोपमे॥ तूपयेन नसंपन्ने पुत्रकामे च धर्मेन॥ १७॥ नयोरू

मारवपापं सम यौ मि पुत्रक॥ अन्नहूं कलमरखसनन्ता: प्रमवपच॥ १८॥ व्यासउवा

च॥ वेम्या यमें मस्यवनि पां चामपमेवच॥ नया न वमहा प्रानेयमें प्रणिहिता मनि:॥ १९॥

नस्मारहन्न नियोगाद मे म हि चपकवां॥ दिनेने कुमिष्यमिह रूमे नस्तना नने॥ २०॥ श्रोता:

पुत्रान्प्रदम्पानि कि सान कपये: समवन॥ अनेचवेनानेदे यो निरिह मि रूप न्मया॥ २१॥ देवन्म

रेपयानस्यापनन: प्रद्वं अनिपन:॥ नहिमामत्र नोयेनाउ ये यान्करिरुनना॥ २२॥ सत्यवत्यु

वाच॥ स यो प आस प होने दे यो गर्भे न चाकरु॥ प्रन्ने कुपपाहु पुनानिल सहि मे देवना॥ २३॥

कथनमानकं राजपुं पानं पारधिनेसभो॥ नस्मात्सु मेममायनन भो मकः संद्रये पिप्पनि॥ २४॥

आयसउवाच॥ यदि पुत्र: प्रदान व्यो मया भ्रात्र स्वकालिक:॥ विरूपता मे सहन्तां न यो यैनस्पर्शने

मदिमे सहनेन शंसहपं देवं तंनपया व ५॥ अद्येव गर्भों कौशल्या निक्षिप्र निप पानं॥ २५॥ वैशं

पायनउवाच॥ एवमुक्त्वा महानेजा व्यासः सत्यवतीं तदा॥ समागमनमाकांक्षतिनि सोन्तर्हि

तोमुनि:॥ २६॥ ननोभिगम्य सा देवी स्नुषां रहसि संगतां॥ धर्मार्थ सहितं वाच ववचन

हितं॥ २७॥ कौसल्ये धर्मतंत्रं नायद्ब्रवीमि निबोधतत॥ भरतानां समच्छेदः प्रत्यक्षं मदभाग्यतः

यानं॥ २८॥ व्यथितां मां च संप्रेक्ष्य पितृवंशं च पीडितं॥ भीष्मो बुद्धिमदान्मह्यं कुलस्यास्य विवृद्ध

ये॥ २९॥ सा च बुद्धिस्तवाधीना पुत्रि ज्ञापय मां तथा॥ नष्टं च भारतं वंशं पुनरेव समुद्धर॥ ३०॥

नस्माद्यथाधीमोपेनं कं नयामांप्रापयस्व गृहार्थे नयोन्नय॥ ३१॥ ॥ ॥ ८ ८२॥ ॥ ॥ ॥

सं॰ भा॰
अ॰ पं॰
२२

[illegible]

२२

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

५१ मूले देहं नः प्रविष्टस्य स्थूलमाणमय्यां निकेतो मूलं चिह्नं निकेत इति मेदिनी ॥ ६ ॥ आचारात् ॥ आचर
णं पवित्रत्वार्थात् ॥ ७ ॥ आत्मोपस्थानार्थं नघ कौमार्य त्वौ यौ मातृत्वाः ॥ ८ ॥ उपालभमानानाहितवान् ॥ ९ ॥ ४

एवमुक्तस्ततो नाम प्रसादमकरोत्तदा निः ॥ कलप्रसादं राजानं ननः समव नारायणः ॥ ४ ॥ प्रव
नार्थं च स्थूलाचारान्नरूलं निश्चयकं परं ॥ प्राकृतं पश्यन्नितु पूर्णस्थूलं मूले च चिह्नितं ॥ ५ ॥ मान
स्थं नगोने नैव स्थूलेनमाचरन्मनिः ॥ तेनानिलप्रमालोकान्निजिगेह लेभामपै ॥ ६ ॥ आत्मो
मातृत्वाः निचननो लोके पूगीयते ॥ धर्मानाम प्रदर्ने विप्रोधर्मं स्थूपामा नमवितं ॥ ७ ॥ आत्मनस्थं
नंनोधर्मं स्थौपालभमनप्रभुः ॥ किंननकुः कुलं कर्ममयाकुलमनना नना ॥ ८ ॥ यस्येव फलनि
हेतिरीर प्रणामादिनामया ॥ ध्रुवमाचव त्वमेननं पथ्यमेन पर्मोचवले ॥ ९ ॥ युधिष्ठिर उवाच
पतिकानां पुञ्जेषु नमेषीकामवेदिना ॥ कर्मणां लक्ष्मने प्राप्तं फलमेनन पार्थनः ॥ १० ॥
आत्मोपमां दु व उवाच ॥ अवेन पारायोमि महत्सममहं तु लयपालनः ॥ स्वर्गयोनानवनो धर्ममान
वः सममविष्ठति ॥ ११ ॥ मर्त्यादीनां न्यायपरामधघलोके धर्मफलोद्भवं ॥ आचरन्तं तत्काहुं धान्न
मविष्ठनिपापकं ॥ परं तःकृवेनामेवहे पण्वमविष्ठनि ॥ १२ ॥ वैशंपायन उवाच ॥ एतेन नव
पापेन धनधानस्यमहात्मनः ॥ धर्मो विदुर रूपेण स्मृद्ध योनावजायत ॥ १३ ॥ धर्मं वार्षेयच
कपालोलोभक्रोधविवर्जितः ॥ दीर्घदर्शी शममपरः कुरूणां च हिते रतः ॥ १४ ॥ युधिष्ठिर उवाच
एतत्त्तीमांडव्योपाख्याने ॥ वैशंपायन उवाच ॥ तेषु त्रिषु कुमारेषु जातेषु कुरुजांगल ॥ कु
रवोथ कुरुक्षेत्रं त्रयमेतद्वर्धत ॥ १५ ॥ ऊर्ध्वं सस्या भवद्भूमिः सस्यानि रसवंति च ॥ यथर्तु व
दीर्घदर्शी सर्वकालपरमर्थीशममपरः निर्वैरः ॥ १६ ॥ स्वध्याय ॥ तेषु कुरुजांगलदेशे पंकरवः पुह

संयम्य चैव वह्निरिह ॥ १४ ॥ १५ ॥ अग्नीन्वेदान्समपानघनस्वाधीनानकरोन्नित्यं वेदनानौ पिवेदात्म
विस्मनवानित्यर्थः ॥ यद्वा अग्नीन्मनोन्मस्य मौषेडयानयदिन्शकं नरेचविहतौनिप्रलाप्रज्ञादिना

ततः स्वकं समम्भवर्द्धिताणां तमनिं प्रति ॥ मेघसंघेनेन तनोपात्ते दृष्टं शैवचन्द्रे च दृष्टवान् ॥ १९ ॥ तं राजा
सादृत्तेष्ठौ रत्नपाण्डवानामिति ॥ स्वर्द्धिमितेर्तानतः स्वसैन्यो सोमदत्तकः ॥ १२ ॥ ततस्ते स्म
मार्यो पालेमनिरवितानलस्य ॥ श्रीतिजन्ममहीपालेधनानाथ्यदानलाम्य ॥ १३ ॥ एलाद्यः स्नतयमा
नाकुलेनसहतानतः ॥ निरुद्धयोपि निशीथे रक्तनामग्रहन ॥ १४ ॥ यावत्यामास च प्राणान्दृष्टे
त्मास्म पान घन ॥ मालाश्रेनपमानेनतनपञ्लेनमहत्यमना ॥ संतापमर्मेनम्भमेनदलयमलि
ना ॥ १७ ॥ नेरतीघ्राकनाभलाशदिग्धमनमारन ॥ दृष्ट्वा धर्मानोघ्याधार्मिकन मधद्रुविन्तेनानमे ॥ १६ ॥
ष्णनिमिद्वामहेवसनिपार्थकनवानमि ॥ येनेदूतमनप्राणमष्टलोकः रवेभयमहन ॥ २० ॥ इत्या
श्वमेधिके पर्वणि श्रीमहाभारते ॥ वैशंपायन उवाच ॥ ततः समनिवर्ग्हलसमानवाचनपांपनाम ॥
हेघनः केनविषमाविनहिमेःस्योपपयति ॥ १ ॥ नेदृष्टा त्रिणेवचमलव्यानहनिषेहनि ॥ न्यवे
दयन्त्वशपतेयवाह्ननेनतपिप ॥ २ ॥ तना चनकपिष्ठ. नानिः कृष्णयहकमेविधिः ॥ प्रसादयामा
सनदयमलक्षणविमनमे ॥ ३ ॥ राजोवाच ॥ धनमप्यायकमेमोहाद्वानाद्विमनम ॥ प्रसादये
नैनदाहंनमेकों प्रलम्महंसि ॥ ४ ॥

२०४

॥ १५ ॥ दृष्टेष्वन्तः स्थानिहृताप्रिकणायंतः ॥ २ ॥ इति श्रीभारतभावदीपे नीलकण्ठकृतौ ...ध्यायः ॥
ततः ॥ हेघनः नकमपिदेविप्र कथयातिहनहकनमेवमयामजपते सन्यर्थः ॥ २ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥

प्रमः प्र[illegible]सामान्यतः सामान्यानामप्येतद्धि धर्मेषु ॥ १८ ॥ २४ ॥ यमैश्च परमसामान्यैर्हीनं गतः परमः संपदेन
धर्मो धर्मोपयोगेनानर्थं नियतिभिर्यात्र वसतो ऽके ॥ २५ ॥ निर्वचनं प्रसंगः ॥ २६ ॥ धारस वनान्त प्रद

सं भा
ष्या च
२८

संस्कारैः संस्कृतानां तेन तत्ततथा च न संभूतः ॥ अमत्या याम कृ प्रतः समपद्यन्तके फलं ॥ २९ ॥
यन्न वेदे च वेदे च न तदा पुत्रैश्चित्तधर्मा ॥ न शैवमानन्दिप्रिया यांनी निश्चातो पुण्यं ॥ ३० ॥ सर्वनि
द्वारेण पुण्याप्तो पुनानां प्राप्ता सर्वोपितः ॥ वेदवेदांगानतत्त्वाः सर्वसंक्रमनि [illegible]धराः ॥ ३१ ॥ सांपूर्व
नयविशिष्टं नाना रेषु प्रयोपिकं मवन ॥ ३२ ॥ सम्मोक्ष वन्त वा नानाग्नीहुत राहुमहीपति ॥ ३३ ॥ विष्णुतो
के विनानासीत स्थितिहिंड रसं मित ॥ धर्मनित्यमलयायमन्यमेव परमगत ॥ ३४ ॥ मनसा संयान
नो वेदं धर्ममीत्यान्यानन्दहते ॥ नतो निर्वचनं त्वो केसर्वं नाभ्रवर्तित ॥ ३५ ॥ वीरसनाका शितमते
देशानां कृतं गतं ॥ सर्वधर्मविदं मीमाः प्रणतो मनसा कृपं ॥ ३६ ॥ प्रनतामुह्य च चक्रानाशंसं
नयन्तयप्तन ॥ धारसवनाद्धि डेरानना फंदुवं भूवस ॥ ३७ ॥ कदाचित्त्यांगोपः सर्वनीतिमतां
वरः ॥ विड्रं धर्मनन्नतं गा नामाद्यपोविनं ॥ ३८ ॥ तारिपवेदि श्रीदहमाहते ॥ मोमडका च ॥
य्योः समहितं ममपाशिदेनः प्रथितं कवं ॥ अन्नमान्स्थिरो धावानामर्थिसामधिरज्यभाक् ॥ २ ॥
रतिं नाजभिः पूर्वं धर्मविद्धिर्महात्मभिः ॥ नोमाद्धमनामवेदं कदाचिद्देहनः फलं ॥ ३ ॥ मयाचस
नवमाचक्रमेण च महात्मना ॥ समवस्थापितं मयो प्रश्मा मकलतं नव ॥ ३ ॥

पांजाह्रणाञ्जाननान ॥ करणोत्पत्तिमाहः ललणायावानमाधायापेथं शत्रुसंकरणो वे यथादि
तिनिर्वचनानन ॥ २४ ॥ अध्यायः ॥ प्रतोरीति ॥ ३ ॥ ३ ॥ २ ॥ ४ ॥

२८

207

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible]

[illegible] ॥ २४ ॥ ५५ ॥ ५ ॥ ० ॥

म.भा
आ.पं
४६

नान्नकीनियलनयम्मसंरंदनवनी ॥ ४९ ॥ अन्नगंअएथमसंनांग्रहेजनमानः एवंप्रतिज्ञायमयाप्रथममपमं
नमंपदेयमिनिप्रतिष्ठ.न्य ॥ ५० ॥ यमैनिरदंनिस्थएवंहिंजेयेंदर्शीनान ॥ ५१ ॥ म्रापदमेस्वैवेदयाभ

दनाभमयानीवेरायथाहंचपरिछदं ॥ श्रुनपायान्हनगारंभीमेगप्रतिद्रलिनः ॥ ५२ ॥ नंतयार्थ
पिवगतेहस्वीलाचारविवेहिनेः ॥ नांत्रिकवृणेमवैसांजनयामासभावन ॥ ५३ ॥ हन्नेर्तनोयमा
नर्वैनपाहस्पनिपगयणण ॥ वावापिवहयानन्पान्सवनानाःकंनैयन ॥ ५४ ॥ वैतंपापनःवा
च ॥ स्पूलेनामयउश्रुत्रोवमरदेवपिनाभवन ॥ नसकन्पायथानःमरदेणप्रतिमाभवि ॥ पि
रक्ष्मीयायहनामनयमायमायन ॥ मग्रामयेप्रतिज्ञायहस्थापन.स्पहस्पवाक ॥ ५५ ॥ मग्र
नामथनाकस्पस्पनेनयहवराहिणे ॥ अदेके.निमेनायमुखमम्बेमहास्सेने ॥ ५६ ॥ नियक्त
सापिनगेहेमहरणनिश्चिपूजने ॥ उग्रयर्वरदवंमहरणंसंशिनवतं ॥ ५७ ॥ निगदनिश्चयं
यमेयुनेउवासमंविउः ॥ नमश्रसंशिनामानंसवंगानैयनोयन ॥ ५८ ॥ नसेमयरदेमंत्रमाप
दुर्माहस्वेदया ॥ प्रभिवाणभिसंयकमरवीवेवनामन्जि ॥ ५९ ॥ यंयदेवंनमेनेनमंत्रेणवा
हतिष्ठासि ॥ नस्यनस्यप्रभावेननवग्रमेमविष्यति ॥ ६० ॥ नथेननासानविप्रेणकंनीवेनिह
हत्वाग्निना ॥ कन्यासनीदेवश्रेकमाजहावयथाहिनी ॥ सादरंशेनमः ॥ तनेमाहकं रलोकमाव
नं ॥ विशिनावानवधांगीरह्रानन्मरदं ॥ ६१ ॥ नोममासाघदेवहविवहमी ॥ रमवीन
प्रथमस्यश्नितापांगीवृहिकिंकरवाणिते ॥ ६२ ॥ कंसुराच ॥ कश्चिनमेब्राह्मणःप्रापदवंविप्रां
वणादहन ॥ नहिनिजामयाकुनंकनवन्पाशिनेविभो ॥ ६३ ॥ एतस्मिन्नपरापेमांशिरसा
प्रसादय ॥ सोपिनोहिमरासपः स्वपापदापिनिष्पगाः ॥ ६४ ॥ रामः ॥

विसंनानमप्रनिवंपप्णानानानावेदनोनामिवारः वशमाकर्णणहिलक ॥ ६५ ॥

श्वे:

२०८

४६

यादवीयादवम्पशाद्यकेनिभोजनस्यताप्रयतः ॥ २०॥ येषयाभाम्हलाभिनिवेशः ॥ २२॥ २३॥ दिनि

नचैनकर्थलेभ्यः कलंमामायवताद्या ॥ नथामयाविधानसंनयाचैवनसंयाय: ॥ ४॥ श्रुयनेयाद
वीकर्मामन्नकाकलस्मन: ॥ नवलयामत्ताचेवनश्रामदेष्पायधच ॥ ५॥ कलोनाद्भवनस्याः
कर्म्याः शुभमवेषाः ॥ ६॥ विनायेचमंदेधनेसाकंदत्रियछेमाः ॥ मनेचर्याविलयालोनादयोम
नावर ॥ संनानार्थेकलयामयदूर्गिदेरसनामेस ॥ [illegible] ॥ ७॥ भवान्पिनाभवान्मालाभ
वानः परमोगरुः ॥ नममान्नयंकलमामविनाधेककृतदिने ॥ ८॥ [illegible] ॥ श्रेयश्च
[illegible] ॥ ९॥ [illegible]
[illegible] ॥ १०॥ [illegible]
[illegible] ॥ ११॥ [illegible]
[illegible] ॥ १२॥ [illegible]
[illegible] ॥ १३॥ [illegible]
[illegible] ॥ १४॥ [illegible] ॥ १५॥
[illegible] ॥ १६॥ [illegible] ॥ १७॥

[illegible] ॥ १८॥ [illegible] ॥ १९॥ [illegible] ॥ २०॥ २५

म॰ भा॰
आ॰ ५०
१२०

कर्णेति ॥ सहजं कवचं चास्य कुण्डले [illegible] ॥ विशेषतः कर्णेने ने ति विनिर्णेनः सुतरुवैकर्णेनः सार्थेन

स्वगात्रात्सम[illegible]कवचं च स निशितेन ॥ विप्ररूपाय [illegible] कर्णः कृताञ्जलिः ॥ ४५ ॥ प्र निगृह्य [illegible] ॥ ४६ ॥ देवाः [illegible] ॥ ४७ ॥ [illegible] ॥ ४८ ॥ [illegible] ॥ इति वै [illegible] ॥ वैशंपायन उवाच ॥ [illegible] ॥ कुन्तिभोजस्य [illegible] ॥ [illegible] ॥ १ ॥ ततः [illegible] ॥ २ ॥ ततः [illegible] ॥ ३ ॥ [illegible] ॥ ४ ॥ [illegible] ॥ ५ ॥ ततः [illegible] ॥ ६ ॥

१४ मग्गो मम ॥१७॥ स्वस्मानाच्छाद्यं नीयपचारमपराधं ॥८०॥ वसनाकंडलकं चादिनाकइत्ति वहये

सुवेशाचा ॥ वेदाहं सर्वमेवेलनयद्दुर्वासावरेदहो ॥ संनम्रभयमेवेहक्रियतांसंगमोमपा ॥१२॥ समो
वेदर्शनेमम्रमाहूनक्षाक्षिलेपगेहे ॥ दृष्याहून्ने षितेमीकः दोषः स्नानाजनमंगप्राय ॥१२॥ वेदेशुण
गुनः वाचा ॥ एवमकाचहूदियिं षंसानवदेवंविवस्तन ॥ स्नानेनैच्छहेसरोरेहाकेन्याहमिनिभातन
वेगुणत्वभगाहूलानन्नयाचयगलिनी ॥ नामर्केः पुनर्येवेदमत्रवीङ्गरनंतम ॥१४॥ मनमसातन
नेगक्षिमविनादेयद्द्गत ॥ एवमकामममगवान्कु तिरजहननेनदः ॥ ग्रकाणकंनानयनः सव
भवनयासद ॥१५॥ नवबीरः ममभवन्तर्वणातमनोवरः ॥ ध्यामक्रकयचः श्रीमान्देवगर्भः क्षि
याजन ॥१६॥ सद्दूनंकवचं चिम्रन्कुद्दलो योतिनाननः ॥ अनायनसनः कर्णः सर्वलोके शुविश्रु
त ॥१७॥ भ्रातदानसेवकत्वानेपुनः सपामच्छतिः ॥ दनाचतपनाश्रेष्ठोदिवसाचक्रमेतनः ॥१८॥
दृष्टाकमार्जाननेसावासौयोदीनमानसा ॥ पृकाकांक्षिनयामास्किंकृत्वा सुकृतंभवेत् ॥ गृह
माना यचार्यसावेपुपदत्वभयानेदा ॥ उनसंरंकमारतन्नवेके तीमहावने ॥१९॥ तमनरह्यजनसे
नामेयायाभर्तीमहाप्रयणः ॥ ग्रजनेकस्यधामाममसमार्थः सुजनेनदनः ॥२०॥ नामधेयंच चक्राणेन
सप्वालापनाद्युभो ॥ वसनासहजानोयं तत्सहतेलोभवतिति ॥२१॥ सवर्धमानोवलवान्सर्वाये
सुयनोभवत् ॥ आहहूनायादादिममपालिहनवीर्यवान् ॥२२॥ नोष्विन्कालेननपुनलसपवी
रप्योगमनः ॥ नादेयंजासतोसासोहिं चिदहमहीतले ॥२३॥ नमिंदेजासहतोभूत्वा भिक्षार्थी
समपागमत ॥ कवचंप्रार्थयामासपकंतराप्रस्याहितेरतः ॥२४॥

ण ॥२५॥ आहहूनायानमथानयर ॥

सं. भा.
आर्य
२२२

यद्यपि कन्याशुल्कग्रहणं गर्हितं विवाहे इति तथापि कलौ धर्मेनादयति इत्यर्थे प्रमाह ॥ पूर्वैरिति ॥ पू
र्व ॥ धर्मेषु आर्षे विवाहे कन्याशुल्कं तेन गोमिथुनग्रहणोद् ग्राह्यान ॥ २ ॥ तथा च पितामहेन

पूर्वैः शबरैस्तैर्न किं विनष्टं वे किन्न पश्यन्ति मे ॥ साधु वाप दिवा साधुन त्रातिकोऽनुमन्यते ९ ॥
आर्षे तद्वत्तन्नाथ विविहिते नात्र संशयः ॥ नवत्तं तेन स्यात् ककुंभवान्दैविसमनम १० कु
लधर्मः सनेत्री रूपमाणां वधूयं चननः ॥ तेन नानत्रवर्ति नदैवं संक्षिप्य वचो विहन ॥ तं मोक्षः प्र
स्वाचेद्विधाय जनसनाषिषा ॥ धर्मेषु पूर्वतोऽपि प्राजेलयगरुं स्वयं भवा २ ॥ नात्र कस्मनदोषो
ऽपि पूर्वैर्विधिरयं कृतः ॥ विहिते पंचतेषु स्वमर्षेह मा धुसमना ३ ॥ स्वस्तका समहा तेना ॥ आ
नकं मकृता कृतं ॥ रत्ना निच विचित्रा प्रित्यथास्या पारम्परहे समा ॥ ४ ॥ नानानन्यान्न यं यत्र व
काङ्क्षमाणमरणं निच ॥ मणिमुक्ता प्रवालं च गां गोदा समहत्स्वर्णं ॥ ११ ॥ तस्मात्स्यपनं सर्वेषु
स्तः संप्रोक्षमानसः ॥ दर्शनीयं सप्तलेकृ कन्यासु समापको वरवधूमे ॥ १२ ॥ तस्मात् संप्रदाय मोक्षः
स्वयंवरमाहतः ॥ स्वाज कामतः श्रीपीमाना विप्रोतनसाहदयं ॥ १३ ॥ नतश्चेह निशामे गृहे नेमाधु
संमते ॥ जग्राह विधिवत्प्राणिं सावत्रः पाठुनतापिया ॥ १४ ॥

नाद्यमधिपूर्वः ॥ स्वयं भवा वेदे तोके इति ते यमेतेन विप्रीतो विकलाचारो नस्यात्पाइ तिदर्शितं
१३ ॥ पूर्णानकंमकां चनं कृतार्थ कृतं न शक्तिमदवतिन ॥ १४ ॥ समहत्स्याहतन ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ ॥ १८

२२२

210

ते निष्पाद्य तत्तं पांडुः केन्या सर्वैन तपि पिपाः॥ यथा गाते समा तप्यतो नैर्ष्ट्यैरश्चैः तथा॥ ६॥ ततस्त
स्याः पितापत्तनिवा हमक रोत्प्राभ॥ सनय्या कंनिभोनच्छा हिजाकः स्त्नेदन॥ १५॥ ७ कृते मिनहो
मायपः पौलोम्यामसचानिच॥ कृतो पांडुश्च सालेङ्कं निभो न्येमहीपति॥ १६॥ कृतोदा हलगता
न्नानानावसुभिर्वचितं॥ मन्नं श्रेष्ठपद्मामामासयाना कःकमनम॥ १९॥ ततोपसेनमहूनानानाष्तप
नाविना॥ ततस्यमापाः सचाधीमिर्धामग्रेष्ठमहर्षिभि॥ ११॥ ततः पनगारतजापांडुः कौरवनंद
न॥ ततो वेशपतत्तोभायाँ कंतीमवनेप्रभ॥ १२॥ [illegible] वाहे॥ नैतं कायन
दुवाच॥ ततः पांनंनचोभी पौरातः कंतेर्षु पाणिनः॥ विचारस्यामहाम्सोर्धुचकारसनिमात्म
नि॥ १३॥ सेनानेः श्रवविरेः स्तार्थं ज्ञानमेश्च महर्षिभिः॥ बलेन च नरेश्वरो तनयामहूपनेः पुरं॥ १४॥
नमानन सभिक्ष न्यानां श्रेवाहीकपुंवाव॥ पूतगहस्यचेविवाचपुरमाचे शयन्तप॥ १५॥ स्मा
त्रुपाय्य ततन्त्रगाम सर्वेन श्रेवचा॥ मधुपर्कं च मद्रे शः पूतश्चानमनेस्थितं॥ १६॥ ततो भ्यः प्रश
वाचेदं मद्र पतेजकं रूहह॥ याणानं सा विज्ञानीहि कन्यार्थिनमरिंदम॥ १७॥ शृतनेभवतः साध्वी
हसामाद्री यशस्विनी॥ तामहं वरयिष्यामि पांडोरर्थे यशस्विनी॥ १८॥ युक्तरूपो हि संबंधे त्वं
नोराजन्वयं तव॥ एतत्संचिंत्य मद्रेश गृहाणास्मान्यथाविधि॥ १९॥ तमेवंवादिनं भीष्मं प्रत्यभा
षतमद्रपः॥ नहि मे न्यो वरस्त्वतः श्रेयानिति मतिर्मम॥ २०॥

भीष्म=

नानाछन्दोविधिः हृत्क्रिनाघ्नयेषा ॥ ४५ ॥ प्रतीतमनसो निःकल्पविलाः संनद्धहृष्टाः ॥ ४६ ॥ न

मल्लिमनकाष्ठकालं चमत्वात्रिंशं नानं वहृ ॥ गोरन्नानम्धरन्नानि थरन्नानि कं नरान् ॥ ४७ ॥ वरो
कुमश्चिषो धेवयम्बकिं चिरन्नादिकं ॥ कंवलानि चरन्नानि राकवान्ननानि च ॥ नास्यं प्रति
नयाहृष्टाननानागषराष्ट्रिपः ॥ ४८ ॥ लहृष्णधयेयांतः पुनर्द्रिनवाहनः ॥ हृपेषिष्वन्नरां हुः
शिखिष्क्रः कहृषनानि षुः ॥ ४९ ॥ प्रनष्टः कौशिनः प्राहुः पांडुनाथनवाहनः ॥ तेष्टुं च कहृपाञ्चायि
जम्कः कहृयनानि च ॥ तेनागषपरिंहेनपांडुनाकारदीक्षनाः ॥ सत्वमापंनगाजानोगजामाम्पा
श्रमयाना ॥ ५० ॥ प्रतीतमनसो हृष्टाः पौराः जानपदैः सह ॥ प्रमयधुश्चनप्रांनंमवैमोमथुरो
गमः ॥ ५१ ॥ तेनहृयमिवायानं गाननानागषालपान ॥ प्रहृतं हृष्टं हृष्टालोकं वहृविपयेनैः
नानापानसमानीनैरलैः हृष्टावचैलदा ॥ ५२ ॥ हृष्टस्वरस्वरालैषधोमिः हृष्टैलस्वाविभिः ॥
नानं हृष्टप्रारूपाघमोधेगाहहृकौरवा ॥ ५३ ॥ सोभिवायपितः पार्द्वैर्कौम स्पानंदवर्धनः ॥ य
यार्हं मानयामासपौरजानपदानपि ॥ ५४ ॥ सहृषधरागाद्धाभिकुलाष्टेषुनगगान ॥ युद्रमा
श्रिपमोक्तलहृषीहृष्टपवनेयन ॥ ५५ ॥ सरहृतं गनमंवानामेरोरिवमहात्मनेः ॥ हृष्टय
स्वपंषाः पौरान्विवेषागजसाह्वयं ॥ ५६ ॥ इत्यादिपर्वणि शंभवे ॥ वैशंपायन उवाच ॥ ततो रा-
जा ममनलाल स्वबाहुविजितं धनं ॥ भीष्माय सत्यवत्यै च मात्रे चोपजहार सः ॥ २ ॥

रः पुरं चगजसाह्वयं ॥ पांडुनोगजसिंहस्य भरतस्य च धीमतः ॥ ३ ॥ ५ ॥ मः

इति महाभारते शतसाहस्र्यां संहितायां आदिपर्वणि संभवपर्वणि पांडुदिग्विजये ॥ ५ ॥ ११४ ॥ अध्यायः ॥ पांडुराज्ञोऽति ॥ १ ॥ राम

विरथः शिशाल ॥२४॥२५॥ प्रागाहूतः चोरप्रायः पर्वताद्याश्रितान ॥२२॥ ऊहकर्मस्यो जिताः

तवेत्विवादे निर्हते नेमराजा कृष्णनंदनः ॥ [illegible] भार्याश्च भेदे प्रमतिमाविनी ॥२१॥
एतान्यानास्य चारस्य पंभार्यान्यां राजसतनमः ॥ [illegible] ॥ ततः
सर्वकौरवो राजा विहन्याविरथानि पाताः ॥ [illegible] ॥ ततो मम
[illegible] च ॥ [illegible] कृष्णसमाना ॥२२॥ [illegible]
[illegible] ततः ॥२४॥ [illegible]
[illegible] ॥२५॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] जिताः ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ततः सेनामुपादाय पाण्डुर्नाना [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥२८॥ ततः
[illegible] ॥ पाण्डुना [illegible] जिताः ॥२९॥ तथा क
[illegible] ॥ [illegible] ॥३१॥ [illegible]
[illegible] ॥ पाण्डुः [illegible] ॥३२॥ [illegible]
[illegible] ॥ पाण्डुना [illegible] जिताः ॥३३॥ [illegible] सर्वे [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥३४॥ [illegible] सर्वे [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] च ॥३५॥

कृष्णेन [illegible] ॥३७॥ ३५॥३३॥

म॰ भा॰
आ॰ टी॰
२१३

१॥४॥५॥६॥७॥८॥९॥१०॥११॥ लोहाष्ठीलालोहमयीगोलिका॥ नहनोहलाकविना॥ २॥३॥४॥

नन्दभेजयउवाच॥ कथंपुत्रशतंजज्ञेगांधार्यांद्विजसत्तम॥ कियताचैवकालेन तेषामायुश्च किं
परं॥२॥ कथंचैकःसुतोवैश्यायांधृतराष्ट्रस्य भवत्॥ कथंचसदृशीभार्यांगांधारीधर्मचारिणीं॥३॥
आनुकूल्येवर्तमानां धृतराष्ट्रोत्यवर्तत॥ कथंचशप्तस्तपसाऽपांडुस्तेनमहात्मनः॥४॥ समुत्पन्ना
दैवतेभ्यः पुत्राःपंचमहारथाः॥ एतद्विद्वन्यथान्यायंविस्तरेणतपोधन॥ कथयस्वनमेतृप्तिः
कथ्यमानेषुबंधुषु॥५॥ वैशंपायनउवाच॥ क्षुच्छ्रमाभिपरिग्लानंद्वैपायनमुपस्थितं॥ तोषयामा
सगांधारीव्यासस्तस्यैवरंददौ॥६॥ सावव्रेसदृशंभर्तुःपुत्राणांशतमात्मनः॥ ततःकालेन
सागर्भंधृतराष्ट्रादथाग्रहीत्॥७॥ संवत्सरद्वयंतेनगांधारीगर्भमाहितं॥ अप्रजाधारयामास
ततस्तांदुःखमाविशत्॥८॥ श्रुत्वाकुंतीसुतंजातंबालार्कसमतेजसं॥ उदरस्यात्मनःस्थैर्यमुपा
लभ्यान्वचिंतयत्॥९॥ अज्ञातंधृतराष्ट्रस्ययत्नेनमहताततः॥ सोदरंघातयामासगांधारीदुः
खमूर्छिता॥१०॥ ततोजज्ञेमांसपेशीलोहाष्ठीलेवसंहता॥ द्विवर्षसंभृतांकुक्षौतामुत्स्रष्टुंप्र
चक्रमे॥११॥ अथद्वैपायनोज्ञात्वात्वरितःसमुपागमत्॥ तांसमांसमयींपेशींददर्शजपतांवरः
ततोऽब्रवीत्सौबलेयींकिमिदंतेचिकीर्षितं॥ साचात्मनोमतंसत्यंशशंसपरमर्षये॥१२॥ गांधा
र्युवाच॥ ज्येष्ठंकुंतीसुतंजातंश्रुत्वारविसमप्रभं॥ दुःखेनपरमेणेदमुदरंघातितंमया॥१३॥ श
तंचकिलपुत्राणांवितीर्णंमेत्वयापुरा॥ इयंचमेमांसपेशीजातापुत्रशतायवै॥१४॥ व्यास ३
उ॥ एवमेतत्सौबलेयिनैतज्जात्वन्यथाभवेत्॥ वितथंनोक्तपूर्वंमेस्वैरेष्वपिकुतोन्यथा॥१५॥ घृत

२१३

212

१॥ अश्वमेधयज्ञेन लभते यः सहस्रफलैः पंचमहायज्ञैः गर्भांशस्य श्रीलयते सुनाथिकातल॥ ५॥ २२॥

विद्याय यस्मै पांडुः प्रेषयामास लंदने॥ सहस्रशाखिय श्रीमानाय नेनसमनधियत॥ ९॥ ततः स

त्वत्तेनं भीमः केशवस्यांचय यत्रागिनो॥ अभे पांडुतिनेवर्षे सोमयामासभारत॥ १॥ ततं दमा

नां केशवस्थानमग्रतिमनेत्तसं॥ तथैव मिवयोः सोमीषरिहस्यनाथिम॥ २॥ तमशिवोस्मवि

क्रांतैः सहस्रयानदक्षिणैः॥ अश्वमेधयज्ञे नैरीतेय ततनाशमहायज्ञैः॥ २॥ सम्पशुकलांकं

स्याचमासुराच भरतर्षभ॥ जितनेत्रलदापांडुवेभवचनेनोचरः॥ ४॥ हितायशासादुनिल

यंश्च भानिशयनानिच॥ अरामिनिताः मतत्तेवसवतमनायाधरः॥ ५॥ सचरर्वेदिनं कर्षिवमा

हिमवतो गिरेः॥ तुमाममिशिरहे पुयमहाश्मतवुनेषच॥ ६॥ तत्र कृष्णमासुराचयाकुः सहव

नेचरान॥ करोतेवो हिमप्रमन्यः श्रीमान्योधेद्रो ततः॥ ७॥ भारतेसहभा धर्मात्मा बहुवाणय

नर्थां॥ विचित्रकवचं वीरं यामास विर्दल्प॥ ८॥ देवो यमितयमन्यतचरतेवुनवाप्तिनः॥ ९॥

नया कामंसमोमांशत्तताम्निमनेद्विजाः॥ १०॥ तत्र कृष्णेनैतेषुतततयपूरचोहिताः॥ अथ

यायशवीकस्यादेवकस्यमहीपतेः॥ नृपयोवतमं पश्चात्स शुभाता पातमततः॥ ११॥ ततस्तु व

रथिताना मानीयभरतर्षभ॥ विवाहे कायमामाविज्ञयमहायज्ञे॥ १२॥ तत्संगेचो यत्र तद्या

सविदुरः कृष्णेन सह॥ पूजायित्वयतं पश्चात्तानाततः सह पूजयामीति॥ १३॥ इत्याद्ये पर्वणि श्री

मद्भारते शतसाहस्र्यां वाचा॥ ततः शत्रुघ्नतेनततोयायां तत्तमेजय॥ पूनयपूजये वै पूजायामेक

शाखिपाततास्तरः॥ ५॥ पांडोः कुंत्यां च माद्र्यां च पुत्राः पंचमहारथाः॥ देवभ्यः संभवतस्ततनाय

कृतवस्यवे॥ २॥

पारशवीयात्स्यानतूणवाहाणेनमहूतांजानां॥ २४॥ २४॥ अथ अध्यायः॥ ततरति॥ २॥

२०॥ भवदद्येषृतवन्तो॥ २१॥ २४॥ हृतावचननादचाखक्रमयानेचपाह्लैरसरप्रमेवाकरोत॥ २२

ह्नतप्रोक्तेकंभपानेहिप्रमेवनिपीयतां॥ तमसेवृचदेशोवृरत्नाचैवनिपीयनं॥ पीनाभि
योङ्गरसौलावमत्वपातनयानरा॥ भेगस्पदेमाजातांगभीपालेप्रयोवृत॥ २२॥ एककृथिकंपा
नेशृलिंयपायेगांनिपणंपने॥ मांसयेप्रपालदराज्जक्रमपाः कालपटंपान॥ २३॥ ननलांने
पुक्रेडेपुगमांनेवदयेनरा॥ स्नलयमेपुदेशोभुरत्नांनयादृपतन॥ २४॥ पाशांसचेवभाया
न्कालेनेनावनापन॥ उद्वारनीयान्येनानिक्रुतानीनिचमोवसी॥ २५॥ मनक्षाभगवानास
लक्ष्यानिनियापव॥ नयामननपसेधीमानिमवेनेमिलोचनं॥ २६॥ नसेकमेणचैनेननेषां
दुर्यायनेोस्नपा॥ नस्मन्लप्रमालेनमेपेतानापुपिहिरः॥ २७॥ नदासोनेनभीपायविदुरा
ग्रवपीमने॥ यशिन्नद्रनिंड्पंदीजनेदुर्यांपनलरा॥ २८॥ नशिन्नेवमहाचादुर्नेत्रेभीमो
पिचीर्थवान॥ सलालमाचपवा॥ पानयापूहनोन्यप॥ नासभायचमहपुरूतवचननादच
नेवाणः प्रमाणेनगदकेमापवायमाः॥ चानापप्रवनुमापिदिशेंहस्याभवनरा॥ २९॥
ननलभीनवन्नाशलपाप्रेववोदिदें॥ समानीयचहृनिप्राभींकंचिडरमेवव॥ ३०॥ प्रन्मा
मातहसेयाजनकहृन्मबांलचेवच॥ पृथिशिरोराजपुत्रोत्रोशेनः कलचपेन॥ ३१॥ मामः स
गणतोगज्ञेननशिन्नाप्रमशिनः॥ कंपननेनयत्सरनाटपितानामनिघ्ननि॥ एवनहिदृन
मेनकंपयदनमविनाप्रकं॥ ३२॥ वाकापेनलनियनेहिताप्रबांसभारत॥ कृयादाः प्राण
दनोराः शिवाप्राणिवपालिनः॥ ३३॥

३०॥ ३१०॥ ३१॥ ३२॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

म॰भा॰
अ॰प॰
२२५

२४॥ अध्यायः॥ ॐ स्वस्तिनि॥१॥२॥३॥४॥५॥६॥७॥८॥९॥१०॥११॥१२॥१३॥१४॥
२३

नेत्राणि चाविद्यानजरकममाभागोनपोयनः॥ दलनेकश्चिन्तनजानुः पालाजन्मभावनः॥ वृद्धिरु
द्रैश्च किंभूयोवर्त्तनेविद्यामितेनवः॥१०॥ इत्यादिपर्वणीसभरे॥ जनमेजययाच॥ ॐ स्वस्ति ॐ स्वस्ति
नेत्राणि नामानि चपथवकृत्यकृ॥ एतराभूस्थत्रयाणामानुष्यौपश्चौनेय॥१॥ वैशंपायनउवा
च॥ दुर्योधनोरथस्थस्तुराजानुः पाणानलसाध्याः॥ दुःसहोदुःशासनश्चैववनरसंधः समःसहः॥ विंद
नविंदौदुर्धर्षः सुबाहुर्दुःप्रधर्षणः॥ दुर्मर्षणोदुर्मुखश्चदुष्कर्णःकर्णएवच॥२॥ विविंशतिर्वि
कर्णश्चपालः सनः सुलोचनः॥ चित्रोपचित्रौचित्राक्षश्चारुचित्रःशरासनः॥ दुर्मदोदुर्विगाह
श्च विवित्सुर्विकटाननः॥ ऊर्णनाभः सुनाभश्चतथानंदोपनंदकौ॥ चित्रबाणश्चित्रवर्मासु
वर्मादुर्विमोचनः॥ अयोबाहुर्महाबाहुश्चित्रांगश्चित्रकुंडलः॥ भीमवेगोभीमबलोबलाकी
बलवर्धनः॥३॥ चित्रायुधोनिषंगीचपाशीवृंदारकस्तथा॥ दृढवर्मादृढक्षत्रः सोमकीर्तिरन
दरः॥ दृढसंधोजरासंधःसत्यसंधःसहस्रवाक्॥ उग्रश्रवाउग्रसेनःसेनानीर्दुष्पराजयः॥४॥
अपराजितः कुंडशायीविशालाक्षोदुराधरः॥ दृढहस्तः सुहस्तश्च वातवेगसुवर्चसौ॥ आदि
त्यकेतुर्बह्वाशीनागदत्तोऽनुयाय्यपि॥ कवचीक्रथनःकुंडीकुंडधारोधनुर्धरः॥५॥ उग्रभीम
रथौवीरौवीरबाहुरलोलुपः॥ अभयोरौद्रकर्माचतथादृढरथाश्रयः॥ अनाधृष्यः कुंडभेदी
विरावीचित्रकुंडलः॥ प्रमथश्चप्रमाथीचदीर्घरोमश्चवीर्यवान्॥६॥ दीर्घबाहुर्महाबाहु
र्व्यूढोरःकनकध्वजः॥ कुंडाशीविरजाश्चैवदुःशलाचशताधिका॥७॥

२२५

नप्रनाश्यनिप्रःनामानमनोनेच्छनिसर्वेप्रानिपदिकेभ्यःकविलालसायांनगाहकाविनिवा

यदि भावा श्वलं ये पशी कृत्वा नेन महर्षिणा ॥ नप्रनाश्यनि वेद्यः सौचलेको कथं चन ॥४॥ कथं न संभवेत्तत्स्याद्रुःपालाप्याव दत्स्व मे ॥ यथावदिह विप्रर्षे परमे ऽकृतन्नहल ॥५॥ वैशं
पायन उवाच ॥ साधुःपृष्टोऽस्मि हे तात [illegible] ते यत्नवाँ मित्रो ॥ नाना साये योगी भगवान्स्वयं प्रभव
तानयाः ॥ यो नाभिरिड्डिनामिच्छ भागाभागमकल्पयत ॥६॥ [illegible] लोभिगलोन पाप
नवान्सपा ॥ कुन ब्रवीपि तं भेषु पवै कं प्रादिपन्नदा ॥७॥ पन [illegible] नरो माधो नामापारी सहटवना
ड्डिरित्स्वेह संयोगामन्वायपवर्गो या ना ॥८॥ मन सा चिन पनरे नोपन स्वब्रथानं मम ॥ म विधा
निन संदेहो नवनीत्स्य सामान ॥९॥ म मे यं पर मान हि ड्डि नामे भवेपरि ॥ न कापनाधिक
बाला भविकानि नागी यसी ॥१०॥ ननोदेहि नालोकाः स्वाहो सो पनि कैम ॥ पयिकाकिरना
गीएकपीनिनो मान्ननामवेन ॥११॥ यदि नामममापिप्रानन्डहि नेकायानाधिका ॥ कृनकृप्य
भवेयं वैपुत्रदेहि नहना ॥१२॥ यदि समं न पलमंदने वाधु स्वाहुनं ॥ सारच नो स्थिना वाधिन
पाल्पडहि नामम ॥१३॥ पननिनेयकालेनकृसहैपाय नं स्वयं ॥ सामनस्सनदापे श्रीभगवा
न्विहरनः ॥ गमपिनिनापनं [illegible] नानामाद्सौपवलौ ॥१४॥ अर्जुन उवाच ॥ कैलिंगैस्त्रीगुणाने
तेनननलिश्यावानदाहना ॥ देहि य यो मा यभागाणकः किम्रःशाना स्याः ॥१५॥ पधानेसमगा
कृत्याभविषानियवेकिना ॥ ननोभ्यंकृनकेभवहमानायमहानपाः ॥१६॥

कालेहगगामः ॥१७॥ ॥१८॥ स्वजाहः देहिजानविसोकानविसोकास्मामनौस्यर्थः ॥ २॥२॥२॥२॥

म॰ भा॰
शां॰ प॰
२१६

विधिं दैवं अशक्ते प्रतिरूपमतिप्रज्ञायामाप्नोत्यबुद्धिः || प्राज्ञः प्रज्ञानवान्धर्मं विविधपर्यायगतान्देवोपा
नानप्रतिपद्यते || नवेत्ति किं नप्रज्ञावलेनैव एतन्नकामात्मिन्मिति मन्यते || अतो नावबुध्यतेऽपाय
इति प्रज्ञावानिति पाठे प्रज्ञावानेवैनं ज्ञानानिलमूढ इत्यर्थः ||२|| नवापिमोहं इत्यादौ प्रथमोऽस्याह ||
प्राप्नोतीति ||११|| यान्कानवेस्मनात्रो तामसमाहुर्नरकं ||१२|| पच्छुरुना प्राकृतेनुमायया प्रच्छन्नरूपेणाकोवा
कोऽम्लमासीनः ऋनन्पिष्टन्नरस्थानानां तापितास्यानां नामनाथाप्रहैव किं तत्तत्त्वरत्नतः प्रोक्तम
नेनोपाकरणाभ्याससवनादिकल्लुपमानवास्याप्रपहत्योनोनिवन्नराणारूकनाप्रोदयामासेति वा

न विविधं शास्त्रेऽप्रकाशं तु शास्त्रे विधिः || विविधपर्यायगतानर्थानप्रकाशानभिपद्यते ||२||
प्राप्य इष्टं नाम नो मनः प्रकृतौ लीनान न मायाम || कामलोभाभिभूतस्य कृत्ये च निवर्तते ||३||
पापे कृत्वा || परमार्थं ध्यायेत्यहनिः सामर्थ्यात्ताद्वयेन्नरा || राजानं स्वरामां मोहान्नवेगाहि
नमर्हति ||४|| अस्य कर्मनामध्यायावसरगात्रां च पश्यति || सर्व एवं धर्मीभावान्तां ननरहि वे किं
नगाहते || आरण्यः सर्वमासीनम्स्रकामरणाया वृद्धिः आरण्यात्सर्वे दैवमानसमानाम्नेस्य
महावने ||५|| प्रमाणाय हृदय मैत्रानकृत्यमकारानिनाहसे आरण्यस्याभिचारो गाथ्रमार्कं वैपदा

ऽनेऽवं प्रमाणे वेदः आम्नान्यवर्तमानात् || आगमस्येति || आगमस्य पिदर्थं स्वगायामाच रत्नोपचारेण
वेदोहेत्वनेनशुष्मार्कं वपाक दत्तीमर्भवत्सह पक्षेमांसासूयः कृताप्रथं श्रिकृतानारण्यो न त्व
स्तीति षाणहि देवनौ देशोनत्याकामपित्राश्रयणानामर्थे स्थिरपरत्वहृपं कर्वनाः सावर्णेन नलभि
नेनकृतावगानिकनयावपमपिनमेवधर्ममवहस्यातो नभवनाहस्यात्मन स्मृभिप्रायेणार्थश्रीकः
||४|| नीतिशूलिति || नमः शिष्टनामन्हि पुत्रधर्मे आत्मनाकांननानाहि समवेषपाट्कृत्य मवेति || शांतिमाने
षां च पकालः संग्राम रूपः लोके प्रपापाने प्राभिमहान्यापापिनानाशं च वक्ष्यह रूपः ||१४||

२२१

225

॥ १९ ॥ ऋषय ऊचुः ॥ कश्चिन्न शक्ति पार्थः स्वविप्रमादरेण तदः पुमन्यथेष्टरः पुण्यदहनो ज्ञानतान ॥ २ ॥

११३

१ निश्चय पार्थं यान्नदृष्ट्वा चैव पाना [illegible] ॥ नामधेयान दृष्ट्वैव [illegible] ॥ ४ ॥ सर्वेन नि
रुध्याः स्थानाः सर्वेषु तु निपानदाः ॥ सर्वेषु [illegible] सर्वे सर्वकामकारो विदुः ॥ ५ ॥ सर्वे [illegible]
[illegible] ॥ पूर्वं [illegible] ॥ ७ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ १९ ॥ इत्यादिपर्वणि [illegible] ॥ ततः [illegible] उवाच ॥
कश्चिन्नो [illegible] ॥ [illegible] ॥ १ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ततः [illegible] ॥ २ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ३ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ ४ ॥ [illegible] उवाच ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ ५ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ ६ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ ७ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ ८ ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ ९ ॥

॥ १० ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
॥ २ ॥

स॰ भा॰
आ॰ पं॰
२२

२९ ॥ नानां भवनगामित्वानि ॥ ३० ॥ प्रज्ञायैः ॥ नं प्रानीनं मनं श्रुतिषाये न पर्येदेव पन राजा ॥ ३१ ॥ कामना
लेविधि प्रज्ञानां ॥ ३२ ॥ देवे भावक स्यस्य ग्रहणनाना ॥ स्वर्गमनार्हत्व ॥ ३३ ॥ मोहमार्गं प्राप्त वस्त्वा मिनितिं तीर्थे
श्रेयसः रतेननवाहिंसायायनवेद्याहृत्या किंतजयाकस्थित्वा मोहे यानो पयान्मा नार्थं लोकारितिरुक्ते

मिथ्यायामहर्ष का संप्राप्त काम विमोहितः ॥ नमपथ्यान्मवह्याया येन कं लोगामित्वादि ॥ ३४ ॥
श्रेनकाले हिंसेन संप्रयाणिनां मिकैनया ॥ प्रेनराजगृहे आसं स्वर्गम् नउरस्य ॥ ३५ ॥ भनानामनित्य
तां श्रेष्ठ स्वैवनावनामित्वानि ॥ ३६ ॥ वनेमानः शरीरे ऽः श्रेयस्याहं प्राप्तिं नरया ॥ नयानांच सर्वे
प्राणिनः प्रमयाणा मित्वानि ॥ ३७ ॥ वेगंपाय नउवाच ॥ एवमस्तु नारदः प्रोक्तो विनानस्य महा
त्मा ॥ श्रुतः पांडुपुत्रः प्रोक्तः स्तोत्रस्य पठन ॥ ३८ ॥ इति श्रीमहाभारते ॥ ३९ ॥ वैशंपायन उवाच ॥ तं
प्राणीनमनिकमस्याप्रमहितं पवं ॥ सप्तार्थः प्रोक्तः स्तोत्रः पर्यदेवयदानरः ॥ ४० ॥ पांडु उ
वाच ॥ मननामयिक वेजाना कर्मलोकेन उक्तानि ॥ प्राप्तुवंस्यक नाम्नः कामनाल विमोहि
ताः ॥ ४१ ॥ प्राप्य हर्षं मनना ज्ञानां वानल वपिन नामम ॥ नीवितां नम वज्ञानः कामा देवेति नः श्रुतं
नस्य कामात्मनः देवेरतः संपनता गर्भिः ॥ कस्य देवा यनः सानाहृता वा नामनीननन ॥ ४२ ॥
नस्यायमनेतु द्विः सना ते ये मसायमा [illegible] स्वयं देवेन यानस्यापायरियावनः ॥ ४३ ॥ मोच
मेव सव स्वामि वयो हि मनमहन [illegible] नि मनवनिश्चे नामसहं पिन प्रयां ॥ ४४ ॥ श्रुतीवन
पमान्मानं यानवित्वा पस्य संयायः ॥ नस्मादेके हमेकाः कीण्वे केकामि स्वन स्पैनौ ॥ चरनी वंस
मेवेनज्ञानमिन्नार्ह वयो हीति ॥ वंयः पुरुषेषु गणेषु मित्र पिनयस्त्र ॥ ४५ ॥ मनिमित्वं स्य रित्वा व्याप्य
वधौ यो नान्तिपिन श्रीवस्य ॥ ४६ ॥ नयमाप्य वनमनननामेन प्रालो चने न साधनं वितं येननयि प्रा
मिसमा पान मिश्रा मिनरना पनाम्यार्ह ॥ नस्मादिति ॥ एकः श्रीवीनः एकाकी निप्राहिंसि सह

२२६

श्रीमहाभारते शान्तिपर्वणि मोक्षधर्मे

२२१

ग्रमनननमासव्रथानेनेनी र्तैः गमप्रफासेरा ग्रेयाद्धिंभिः विद्वत्नेय्राकेचेनिस्मागान्ननद्वीनयसात्रमानाप्राद्व
गंनवयोनिचोननननम्समागाणमिमायुयः॥ १० ॥ हवानद्धसयसामहिनस्यः शुओमेभविद्यनीनि नमःद्युन

स्रयाइकाव॥ नविहतेमकमीह्यपविमेचेविननः पायन्न॥ रेप्रणधांविशेष्वात्तवयकारुसः प्रजाश्वो
यो रु रुनाच॥ प्रमनमप्रमनंचाविहमेओलिचोनमा॥ उपाथैविविचेश्ोसोः कसान्नगविनादे
शे॥ ११ ॥ स्रयाइवाच॥ नाहवेनमगात्राननियाईचानमकाणान॥ मेशुलेनप्रनीह्यमनधहृपन
कायना॥ १२ ॥ सर्वेपननहिनेवालेमचंभनेशिनेनया॥ कोट्टिविद्याग्रगंहस्यावानेमेशुनवने
प्रणामपायावयानेद्दयांनमेशुनमावरे॥ शुद्धाधिफलेकंगीननयाचिफलीकने॥ १३ ॥ योरवा
गांमहावानेनघामर्ति फलकं मेरणां॥ नेयोनानमावोधाननाननत्रयाकिंदनव॥ १४ ॥ हयांसककमिस
मद्दनवेनोकविगाईने॥ अर्वाग्रमयशुद्धवाणापकिंचभगन॥ १५ ॥ द्वीभोगान्नाविशेषश्चः मा
हयमोचनमविन॥ नाईहहयम्रकाणकमेमहांमोद्दृयां॥ १६ ॥ नयानंदयांमकनेरः पापावाण
शुमानवाः॥ निशामाः पाचिवशुद्वितमांयाद्यानिना॥ १७ ॥ किंकननेनरशुद्धमाद्विदनाया
संह्रना॥ मनिसवफलानाशमनवेचपांहिनं॥ १८ ॥ नावमानमाप्नेषुनिदयानमनानां॥ नयाहे
हिंसिनेप्रयाननमानामपाहृयाये॥ १९ ॥ हकोनेयोमचकनोरमयत्नकमभोहिन॥ नोविनांनको
भावयचमेवागामियानि॥ २० ॥ एवहिवकमोनानमनयमाप्नविनोमनि॥ स्रयाद्वयननयाणांमणा
मेशुनमाचरे॥ २१ ॥ सोधनानमोः साधंचनामिनहनेवचे॥ ननवेवसहयंधमविद्यस्यविनाननः
मनाक्षयपाद्दनामामिवंकममोहिन॥ प्रयत्ननयकंभद्धयाणमीरपानेवरि॥ २२ ॥

शुद्धपाधिफलंगहमेमेशुनेनाछेनीयंफलंशेवंकमंउकवयिने॥ २३ ॥ विवर्गविनि॥ धर्मार्थकामहीनाः
२४॥ नेनया॥ ॥ नयकानीशुहयाकोः नर्णामकनांविहयमेशुनाकस्योवंयसकमांर॥ २५ ॥ १९ ॥ राम

२२९

217

२२९

[illegible]

[illegible]

सर्वः

[illegible]

सं॰ भा॰
व॰ प॰
२२९

218

निशम्य शैव्य यत्तं ॥ ३ ॥ तनिर्होत्रेण तथा मानिकं तथा मः नूननवाडवहः ततः आत्मा आत्मा वैतनतामासीनि

वैशंपायन उवाच ॥ ततो वनगता पार्थ ते राजानं तेषु नरः ॥ ततः कृष्णस्ततो निषद्य मनाद्वैतं रुला
निच ॥ ३ ॥ तथा विचमहाहे त्तौ नो ता मामपूर्णनिच ॥ शत्रुघ्नमेव विप्रेभ्यः पांडुः पुनरभाषत ॥ ४ ॥
ताननाना पश्चाद्वाचां पांडुः पुत्रविलोचने ॥ अथो कामस्तु वे चैव रनि चपरमानिकं ॥ पुनश्चैव
वमनस्ततपार्थः कृष्ण नरन ॥ ५ ॥ ततस्तस्मान्नयानाश्मले चैव पाश्चारकाः ॥ अतः तामानोपिद्रप
विविधाः कस्मात्तनि ॥ भीमसेनं तथैव नाहो हि दिव्याविकृष्ण ॥ ६ ॥ ब्रह्मसमविमेवं तत्त्वेवि
हायसहीपति ॥ यतुर्नाम त्वन्तो सर्वं मातामहजर्द ॥ ७ ॥ नेपानामनगां पुत्रोपयाहत्तंमहा
त्मन ॥ कथयां च किं वै तत्र कंवर्द्धन विविधं दद ॥ ८ ॥ अनाने मन्नतः पूर्वं यथा तत्र महाबने
पुनरपत्रा नरश्रेष्ठः पांडुमेवान्वपोचत ॥ ९ ॥ नशत्यामसमभो गोष्ठं विहं निक हिवित ॥ आ
नतो कस्मा विप्रलम्भे नात्रं विवितयत ॥ १० ॥ तानपश्चम्तु कौरव पांडुमे लफलाशनः ॥ कृता
मसहपत्नी मान्नत्वोनानापञ्चानंगिरि ॥ ११ ॥ स चैव रथमासाद्य कन्यकृ दसनीमव ॥ हिमवंत
मनिव मप्रयोवींपमाद्न ॥ १२ ॥ रम्यमाणे महामुनैः सिद्धचारणसेविताः ॥ ततस्तस्मिन्महात
जसमेष विप्रमेव च ॥ १३ ॥ ईक्ष्यमाणः पाण्डु समहतमतीस्य ॥ कालं ततो महात्मना तापसः
ममनयान ॥ १४ ॥ जनमेजय उवाच ॥ ते ॥ १५ ॥ वैशंपायन उवाच ॥ तमागतंतिततोपहितो
वनेमानः सर्वोदेवान क्षितु चारणाश्च यानां वम वर्णिपदर्शनः ॥ ५ ॥

श्री॰ वनेः ॥ तत्र सप्तयानां ॥ २४ ॥ ४५ ॥ अध्याय: ॥ नयापीति ॥ २ ॥ राम ॥ राम राम राम

२२९

उत्तमांगं तु कल्पयोग्यं ॥ २२॥ १५॥ त्रिमूर्धान्नं हिंसादि रोधं पंचकायकं केवलं फलादि श्रावकं करादि पत्नं
नकं मेरु ध्यानादिकं पदः तत्स्थानं दृष्टि होत्रादिकमपवत्ः ॥ १४॥ वानप्रस्थं ज्ञानस्थानादि दर्शनं समक्रियाणि

निपात्यव चनं भनेनैव नासे एतात्मनः ॥ तन्मात्रं च चनेकं तीमाद्दी च समभावन ॥ २९॥ ज्ञानेनापि
ग्राम्यमाः इति निषेध्य प्राणायाम भवनतिभ ॥ श्रावकाभ्यां तु मेपत्नीभ्यां सह वनं समं नयामहेन ॥ ३१॥ पादौ रक्षापि
मातापस्तां गंगाप्य मह एषुलें ॥ तमेव सभ विनाभं नो स्त्रो ध्यानादि न मं पुण्य ॥ २०॥ अविष्यामि द्विय ग्राम
भजेत्लोकपदायाक्ति ॥ तपस्कान्त्वा [illegible] सपवे यावान च्यातो विशुद्धंतनप ॥ २२॥ यदि चावां महाशातन
त्वक्षिनं निपात्यने ॥ अयो वा वां अहू च्यातो तो विनेनाचं सपापः ॥ [illegible] ॥ यदि स्याच क्षिनं हो
नयुक्त योर्धं से संहितं ॥ स्वद्द निमनन्च निष्ठेनाम हुयिन रकावां ॥ ३१॥ तपस्का अयमव्यह लोकहंतन प
मानेम हृजयः ॥ वल्कलौफलमूलाशी च रिष्यामिमहवने ॥ ३४॥ प्रयोन दृष्टभौ कालान्तु भोक
लावुपस्थान ॥ कृत्वाः परिभिनाराः चीरचर्मजटाधरेः ॥ ३५॥ प्रतीनवानैनप सहः वनंमिपाशानवे
तवः ॥ नपसाउ अवरोधं प्रावीरमपश्योपयन्न ॥ ३६॥ एकांनयोनीत्रि सुगानप कायकेन च नैयन
त्रिनन्नेवांभ्यवसेन नाद्विरद्धिभ्यन्न पिपन्न ॥ ३७॥ वानप्रस्थं ज्ञानस्थानादि दर्शनं कुलवाक्षितं ॥ नापि
संकल्पचारी धामिकि पुनर्धामयामिनं ॥ ३८॥ एवमारण्यपवत्सामश्रमयतानं विधि ॥ कं स्माल
इत्यास्तोपदे इत्यास्वसमापन्नान ॥ ३९॥

चनाचरित्यामिनयाकल्पवापिनं भाव्यादीनां ॥ ४०॥ आत्मनः वानप्रस्थाने धांसमस्तानि यसविष
पकानिनेधामयो विहितं तं आख्यायेयं गीकरिधो वा समापन्नान ॥ यावत्समाप्ति ॥ ३९॥ ॥

उत्तः

स॰ भा॰
आ॰ प॰
२२

न मे वेदमनीनामाप्यायं प्रद्युह्न ॥ पाण्डव उवाच ॥ अमृतत्वेति ॥ तपश्चित्त्वा तेन परिवितः सर्वेश्चानपश्यतु ति ॥ २४ ॥
नापश्यमसैव पतनः पितरत्वमेव नितिश्च य अमृतत्व श्वारीं इत्यनितेनुन यत्ता दिकं विफलीकृतेश्च मिति
निश्चयः पितरत्वं तेनेन नानृ पो स्वर्गतिः भूमौ पतन्न पितृ प्राप्य एव किमनन्दे हनाशेत् निमावः ॥ २५ ॥ प
तदेव विशुष्योति ॥ अथो हि मा हिना ॥ २५ ॥ २६ ॥ अपि दैवमनु ष्याणां अष्टा दिति शेषः इत वेद्यां पि

पाण्डव उवाच ॥ अमृतत्वमहात्मानामहात्मानं यदि चरितं ॥ स्वर्गेतेना मितनो हरमप्रजसत्वयी मिवः ॥ २६ ॥
पितामहष्टां दत्तिसर्गः स्वतेन नतश्चेनपोपता ॥ देहनाशेषु वो नाशः पितृत्वमेव निश्चयः ॥ २७ ॥ अ
शोश्चतपि: संयुक्ता ज्ञायं ते मानवा भवि ॥ पितरं दैवर्षिमनर्जेदेयते नभ्यश्च पत्तिन ॥ २८ ॥ पतानित
यथाकालं योनकृपातिमानवः ॥ नत्यलोकाः सन्नीतिपर्मे विद्धिः अतिद्धितं ॥ २९ ॥ तदेतदे
वान्नीचलितावापावैरुपसामनुनीत ॥ त्वदेः श्राद्धैः पितृश्राद्धि अन्नरूपं तेन मानवान् ॥ ३० ॥
अपि दैवमनुष्याणां पितृमनो स्थितपतिः ॥ पापात्मितपितृत्वनारूपनाज्ञानित पश्यति ॥ ३१ ॥ पि
तामहष्टां दत्तिसर्गः स्वतेनीम कितना पता: ॥ हतस्या स्वर्गानूलो: अन्नायं तेनरोन मा ॥ ३२ ॥ पश्येवा
ह पितरः देवेनात्मत्वेनमहर्षि तत्त्वं ॥ नश्वे वा क्रिस्तमहे श्रेकर्थवेसंभवेत्मता ॥ अयपन्तु: ॥ अ
त्निवेनवयम्प्रीत्मन विश्वौ देवा यसंजुषं ॥ अपनयमनवपातन्नं येदिनेन चदया ॥ ३३ ॥ देवा दिष्टं
नरमात्रकर्मणे हेतुपापादय ॥ अलितं फलमममयो विदितेन इडिमानुरः ॥ ३४ ॥

नतो अपत्ता तनाशः अमृतत्वा पाना मुमश्वा स्वनिदेहेन दृष्टि तिमलिमोयं लोकः पुत्रे पौत्र वनयोनाः
नोननकर्मणो निश्च ने ॥ ब्रह्मदेहनाशोपि पश्चात्पितृत्ववस्तुवायमानेन नाशो स्वर्थः ॥ तदेवाह ॥ पितामह
ष्टां दिति ॥ २७ ॥ दैवो दिष्टं देहष्टा देहकाता कृतायजा ज्ञा नानकर्मणा स्वर्गस्थः ॥ अमृता श्रेविद्दतेः

९२७ धौ॰

दि... २२

[illegible]

[illegible] ॥ १ ॥ कुलीनः [illegible] हीनः ॥ २ ॥ कृत्रिम
[illegible] कुलीन [illegible] कृत्रिमः [illegible]
[illegible] ॥ ३ ॥ [illegible] ॥ ४ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ५ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] कुलीनः कृत्रिम [illegible] ॥ [illegible] ॥
[illegible] ॥ २ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ३ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ ४ ॥ [illegible]

[illegible] १ [illegible]
[illegible] १२ [illegible]
[illegible] १५ [illegible]
[illegible] २ [illegible]

२२०

[illegible]

कां स्रोवती कांट्टीवनोऽड्हिता ॥२६॥२७॥ स्तनंमरान्ते अप्रतं म्रक्रिवानन व्रह्मलोकांतमेघ्वर्थे ॥२८॥ अ

सं° भा°
अ° ५
२२२

स्राम्रीनंकांत्नीवनी वाह्मभार्यापरमसंमना ॥ भुजानाममनुष्ये इत्रुरेणा महृषीभवि ॥२९॥ का
मयामामतलोवयास्यारामिनिस्रुते ॥ सनस्पाकामसंपन्नोपुत्राणांसमपद्यत ॥३०॥ तेनाचि
रेणकालेनजाताभाहमिवांशुमान् ॥ नक्षित्रोनेमनष्ठेरेमाधासु रप्रातुःक्षिना ॥३१॥ अथ
गुरुगृहमानुविललापेनिनःश्रुते ॥ भद्रापरमतुःखार्तानेनिवोधननापिप ॥३२॥ भर्तृहीना च ना
रीपरमप्यमिनसर्वाभर्तृविनाकृता ॥ पतिविनाजीवतियानसाजीवतिदुःखिना ॥३३॥ पतिवि
नामतनेश्वेयोनार्याःक्षवियपुंगव ॥ नकृतांतनमिस्राप्रियशीघ्रमनयस्वमां ॥३४॥ त्वयाहीना
क्षणमपिनाहंजीवितमुत्सहे ॥ प्रसादंकुरुमेराजन्नितस्तूर्णंनयस्वमां ॥३५॥ पृष्ठतोनुगमि
ष्यामिसमेषुविषमेषुच ॥ नामहंनरशार्दूलानुगंतुमलिवर्तिनं ॥३६॥ त्वायेवानुगमिष्यामि
त्वांनरवराबर्तिनी ॥ भविष्यामिनरव्याघ्रनित्यंप्रियहितेरता ॥३७॥ अद्यप्रभृतिमांराजन्क
ष्टाहृदयशोषणाः ॥ आधयोभिभविष्यंतिनामनलेमुपुष्करेक्षणा ॥३८॥ अभाग्ययामयानूनंवि
युक्ताःसहचारिणः ॥ तेनमेविप्रयोगोयंवयासहभविष्यति ॥३९॥ विप्रयुक्तातुयापत्यामुहूर्तमपि
जीवति ॥ दुःखंजीवतिसापापानरकस्थेवपार्थिव ॥४०॥ संयुक्ताविप्रयुक्ताश्चपूर्वदेहे
कृतामया ॥ तदिदंकर्मभिःपापैःपूर्वदेहेषुसंचितं ॥४१॥ दुःखंमामनुसंप्राप्तंराजंस्त्वद्विप्र
योगजं ॥ अद्यप्रभृत्यहंराजन्कुशसंस्तरशायिनी ॥४२॥ भविष्याम्यसुखाविष्टात्वदर्शनपरा

निवर्तितुंगच्छन्तंखियमानामिप्सर्थः ॥२४॥ प्राणप्रेमनसोवृत्तयः ॥२९॥ सहचारिणःमिथुनिनः

२२१

२२२

रचयिति ॥९॥ अकाल्यपलवणीकृतवान ॥१०॥ नहूमकृतवान सोमसंस्थाः अग्निहोमादयः सम ॥

वैश्यं पाद न उ वाच ॥ एवमनकूमहूराजकेनी पांडु सभायान ॥ कहूणामदयमं वींनदाम्भमिपति
पति ॥१॥ नमामहूंसिथमेतवनकृमेचकथेचन ॥ यंमेपत्नी मभिरमान्नपिराजीवलोचन ॥२॥ नमे
चनमहूवाहे मयपप्यानिभारत ॥ वीर्यं वीर्यं पपज्ञानि धर्मं नोतन पित्रपि ॥३॥ एषांमनन पुण
हैलगके तेसहिनानया ॥ मपपापचमागतद्रनमेरकरूनेहन ॥४॥ नराहूमननसाध्यंगतेयम
हूलेनये ॥ तनः प्रतिविचित्रमच्चोमोभिभविमानच ॥५॥ मोचनानवहूमोत्रमोराक्षी फणागोमेक
पा ॥ पांचस्रनोविषालाहृकौ नेविपामिपाम हू ॥६॥ त्र्यपिनाशयंनिसानोवमहबकि सपातैवः
पपपामयालिसूः कृषोगेयानिवहन ॥७॥ नहितमपतनमानेवेयमोनहनिमहाभजे ॥ उपागमेल
नोदेवाः सेवूद्वेवाभिमिःसह ॥८॥ प्रमापादिहः सोमेनदहिलाभिहिंनानच ॥ नपुविनाश्यसराज
वैल्लनोपदेमएतमनः ॥९॥ देवानहायं पञ्चव चक्षुः कमेनयनना ॥१०॥ मपुविनाश्यल्लनोपतनाति
मसोनवोचन ॥ सर्वेमनान्यपिययानपनः शिलोफयान्दये ॥११॥ पविनिमानहोनावन्यपतीनराज
सनम ॥ सवानदीवान्नमायामसृदिपपानकन्यपन ॥१२॥ प्रपामेयेमहायनेमुपिनाश्य
लापवान ॥ रम्भवमहिराजेंद्रस्यनापचलान्निल ॥१३॥ पपापवपाधंमांपतिये प्राणविदेननाः
मपुविनाश्येयथोहहूमनपांदूकरूजनम ॥१४॥ मपुविनाश्यः कमहूनाचितिमोमांचसंपरो ॥ सुपा
लपत्रमवप्रमोनानप्रानिवोरमान ॥१५॥ पतनमानोमहायपौः प्राणामभाथनरहो ॥ अनन
रक्षामाहापसंनेहूरमहाकृतन ॥ हपाववचहूनोमानोमसंस्यालनानच ॥१६॥

स॰ भा॰
आ॰ प॰
२२३

अनविपर्ययेनेअनन्तस्यार्थेने ॥ ८ ॥ न पश्यन्ति चावेद्ये नकार्यं च नपरिहारे हि निवामद्ये अवज्ञानेष्ठमेशु नार्थिन्याः
स्थिताः अन्यायोनेन निषेधः ॥ ९ ॥ न विद्यारूपकालनः ॥ १० ॥ येनोके नोमानां यिनः समवेतं नचामे

नैव धर्मो योगतां निर्धर्मो लिगताः प्रजाः ॥ अधर्मान विपर्ययेनेकामक्रोधविवर्जिताः ॥ १ ॥
प्रमाणेऽहेयो धर्मो यं प्रवर्तते च सर्वदा हि ॥ प्रजानेर्ष्टिमोहकत्वच्छायापि प्रवर्तते ॥ २ ॥ शीलमन
ग्रहकरः स हि धर्मः सनातनः ॥ अखिलं लोकेन विद्यान्स येऽहं यं प्रवृत्ति स्थिते ॥ स्यापि लाये
नयस्याखनन्तेविलनः आप ॥ ३ ॥ न भूतो हन्त कोना मम हृषिति नित्यः अतः ॥ येन केन वि
लिख्यानः प्रवलत्याम वनमनि ॥ ४ ॥ सर्वधाद्ययं कृतानेन धर्मावेष्टन केनना ॥ कोपाकमल
प्रत्याहिपर्यर्थं न निवोधमे ॥ ५ ॥ स्येन केनोः किलप्रयामसतं मानां यिनः ॥ अग्राहग्राहणेः पा
तोयानुगावसतिकाश्रवीन ॥ ६ ॥ कृषिप्रयलनः कोयं वकारामर्षवोहितः ॥ मानानां लोनयाः इष्टा
नीयमानां वलाहिव ॥ ७ ॥ कुर्वन्ते न तथिनाः इष्टायेन केन मवाचहः मानानको यं प्रकाषीहास
धर्मः सनातनः ॥ अनाद्युनाहि सर्वेषां वर्णानां मयानाम्भवि ॥ यथायावः स्थितान्तान हेहे
वर्णेन याप्रजाः ॥ १४ ॥

२२३

२२२

सर्वेवर्मां कृतवान् ॥ ११ ॥ १२ ॥ [illegible] स्थिताः प्रवस्थिताः ॥ १४ ॥

१०॥ पावं येन यावीं स्वपरिच्छिन्नस्य चित्तयं नमानित्य नयः ॥ ३२ ॥ ३० ॥ अ... ॥ ३१ ॥ अनाचाराः सर्वे ते
कुर्वन्ति योग्याः कामचारी रतिमत्वेन दृष्टं विहारिणः पर्यटन्ति पतिताः स्वतंत्राश्च भर्तारं हि विरतिकाचारः

दर्पाय स्वतन्त्राः भूयः कामिनां मम सत्यानि तानि ॥ रूपवन्तं नाथ कुर्वन्ति चित्तवन्तीं नरेश्वर ॥ ११ ॥ कं सू
वाच ॥ एवं वदन्ति ये धन्याः मानिन्यः पतिव्रताः पुनः ॥ तेषां चैव परित्यक्ताः किं तेन हि नाव्रती
न ॥ १२ ॥ उत्तिष्ठ भद्रे गच्छ त्वं दत्ता नीचं वरं न च ॥ जनयित्वा पुत्रान् निश्चयं हे चारुहासिनि ॥ १३ ॥
आत्मकीयं वरारोहे पावनीयं च न देहि ॥ अद्य मे चान्यत्र नातां सविशेषा मया सह ॥ १४ ॥
एवमन्यानि सा देवी पावनेन भर्ता न भ ॥ जीवनं पतिं प्राप्य नरो भर्तृनाम्ना नाम न सत्तम ॥ १५ ॥ नया
नमतिमयेवं मन्न साभान्तभ ॥ पाके जननयित्वे पुत्रं शीलपतिं देव वरा ल्लितः ॥ १६ ॥ इत्यादि
दिव्यं सावित्री भवे ॥ वैशंपायन उवाच ॥ एवमुक्त्वा ययौ तानि तेन देवी पुनर्वरं ददौ न ॥ यमं विहाय
संपूर्णं मितं वचनमनन्तरं ॥ २ ॥ पांडुरुवाच ॥ एवमेतन्मया ... के नोक्तं तिनाम प्रकारक ॥ यथा
वयो... कस्याणि सर्वमसीदमरोपम ॥ ३ ॥ अथ निर्दं प्रवत्स्यामि धर्मेन दुनिवोधमे ॥ पुराणम
पिपि देहं धर्मविद्भिर्महात्मभिः ॥ ४ ॥ अनाहृताः किल पुराणि स्त्रियः प्राणस्वयान ने ॥ कामचारवि
हारिण्यः स्वतंत्रश्चा हृहासिनी ॥ ५ ॥ तासां व्युच्चरमाणानां कौमारात्सुभगे पतीन ॥ नाधर्मो
भूद्वरारोहे सो हि धर्मः पुराभवत् ॥ ५ ॥
तथा च के पतिव्रता ॥ यथोक्तमेव नद्दु... भद्रा पूर्वकाष्ठिनी नद्दा ॥ २५ ॥ सनेन... वेदेवी " ३ २ ॥
६ ॥ पनी व्युच्चरमाणानां व्यभिचारिणीनां ॥ ७ ॥

स॰भा॰
२२४

223

[illegible] ॥२५॥२५॥ [illegible]

[illegible] ॥२५॥ [illegible]
[illegible] ॥२६॥ [illegible]
[illegible] ॥२७॥ [illegible]
[illegible] ॥२८॥ [illegible]
[illegible] ॥२९॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥३॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥
[illegible] ॥३१॥ [illegible] ॥३॥
[illegible] ॥३२॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥३३॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥३४॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥३६॥

[illegible] ॥२९॥ [illegible] ॥२५॥३६॥ ॥

२२४

यथा लेना पयाम् यणा हैव भवनियो: योनौ लेः सिंचनौ मयेनौ अस्यारे पुंसांगमनानाम्मवायस्य
निशिद्रि:नथाये मीहे यो निःहृ तिनाशिंयी वे निमे चेनाशियणा निःहृते योगुशस्य दर्शनानलक्षीणा
मध्यिपायं संगो हे यो सेवो रुः॥ नथापि योनाथे सेवकपानिङ्गयायव हये निहिते निहेयं॥ अथ

अथिप जो सनेयमें मेनकेननेचक्रमे॥ चकारं चेवमर्यादाभि सोमोपुस योभविन॥ ११॥ मा
नयेपुम ह्रमाभेनने नाले पुनंनप॥ नमाशश्च निमर्यादाः स्थिनेय निनिनः श्रुनं॥ १२॥ लपवुसंमा:
यनिनाशे शयप्रश्नं निधानने॥ श्रुणम्हमानमे चोरं भविनिम्नमावान्हे॥ १३॥ भयेनन थायुचार
नः वैसमार अल चामिनी॥ यानिनुनामेन देवभविनापानकंभवि॥ १४॥ यन्यानियुमहयाचेव
यानौपुमार्थमेवच॥ नवकृगियतेनन्यायम भविशनिनदेवहि॥ १५॥ इनिनेनपुराभौहम
योगस्यापिनानुस्वान॥ अहालकस्यपुत्रो नायस्यों तुश्चेनकेनना॥ १६॥ सौरामेन चारंमोहनि
पुकापचननामानि॥ मट्टयनौनगमनहिंवसिशमिनिनः श्रुनं॥ १७॥ नमायुत्रे मेचसापुत्रमम
कनामभाविनौ॥ मार्याकुस्मायथायस्य भनः शिमुपनिन्दौ हिया॥ १८॥ अपूर्वाक निनिनेजलम्बि
हिनेकमलेदाणे॥ कृस्स हैपायपना डीहकृहं गाग्वशा हरू ये॥ १९॥ अतनयनानिसर्वाणिकारामा
निशमौ रुवे॥ समेनहचनेयमैकनम हप्रनिहिते॥ २०॥

वाच्च चरणोनेन ह्रिनोनं नरोयः किं॥
नपृश्च नानानामे वे तिनास्वर्थमनथाकृस्या पियाराद्धिदोध वमल्ने: अहिसाहिना णाणकिं॥
ह्रीनोनालद्राननं चे ये नाशानालन॥ २१॥ २२॥ प्रकृनोपपुत्रकृमार॥ नयेनि॥ अपुत्रकमपि धर्मो नयाः॥

म॰भा॰
आ॰प॰
२२५

मैद्रे । ऐश्वानरत्वेष्वमुमेसंवत्सराणां मानं प्रमिमितिने । मिमिते निर्मिमितिनम्नहर्नेसमाद्वेः अमेम्नहर्नेदिवा
म्मूत्त्यः यद्देम्मध्यपन्ने न लायन गानेनि सौ शत्रौ ऐहि याणां वसमाम यायोगः पायेणाम्ल्विन म्म्नहः पं

तत्र कार्षा हि यथमुं राणो राम जि यपरे ताद ॥ ते मेरुं वरायो हामर्वे प्राणा म्र्लां दिनं ॥ २॥ ऐद्रे वं
तत्र कार्षाहिय धर्मु णणे रामम जिय परेणा ॥ तेमेसु दे ह्यगो हाम र्वे प्राणार्लां हिनं ॥ २॥ मानमात्र
इसमात्रके म्नहर्नें मिमिने ऽप्ये ॥ दिवाम ध्यागने शहेनि सौ शत्रौ निश्मिने ॥ ३॥ मानमात्र
मनेन शिलानाम वाचा याजी रिगो ॥ ४ मयय स्मता प्रो प्राण विद्य निन्नो नमः ॥ ५ विकान स
नवानके वयानार श्याम विद्यनि ॥ ६॥ पुपि हि इ निशान पानेः प्रथमजः सत ॥ भविता
प्रस्थिनो यजा विश्वलोके पुविश्रु न ॥ ७॥ यशा मानेन माचे वहने नच समन्वितः ॥ धार्मिकं त
स्तनं न स्नापांतु नांच नवज्र कीन ॥ ८॥ प्राह देव वलं मे घुवलं मे हनने हरम ॥ ततस्थाकृ
मत्रां न वायुमेवानह्व वग्ना ॥ ९॥ ततमा माणन्नो याधु दिगात्रु पीमहावलः ॥ किंतेकं नि
नाम्य प्रस्रु हि यन्नेइ हि श्विन ॥ १०॥ माम तुना दिदृष्टाद्यु पुत्रं देहिह गो नम ॥ ववनं तेमहाकु
जंश्वर्वेत्व प्रमं ननं ॥ ११॥ तममाजने महावाहुर्भीमो भीमपराक्रमः ॥ नमस्रानि वृक्षानां
वायवाचामशरीरिणी ॥ १२॥ सर्वेषां वलिनां श्रेष्ठो जातोयमिति भारत ॥ १३॥ तनमाद्भुत वाक्यो
जातमात्रे वृकोदरे ॥ दहं कायनिनेमानः शिलां पादैः व्यचूर्णयत ॥ १४॥ तं तो कायभयो
द्विमा पहृद सानि ताकिल ॥ नान्वज्यननसमम मं तो गो वेद कोदर ॥ १५॥

तमयां मवनी निनदै वयर्मराज पुजन्ने परपठः ॥ १६॥ १७॥ प्रस्थिनोय शात्रविश्रुनः कीर्तिमान ॥ १८॥ १९
ज्ञकाम्पनने देतमाह ॥ कुन्ती निभवसमथेन शिलाविचूर्णीमूतानाह सुप्राचाले वनिय ससनि
मूर्भयो पिनजानः निर्वेदनताह न्तवपापी रनादिन्यष्ठेः ॥ उत्संगेसमीये ॥ २०॥ राम ॥

224

२२५

॥२॥ विलोचनहः योद्रूपचाचायेवेति॥४०॥नः क्षत्रियाणांधर्मः पालनमपकर्षणानस्पृश्यत्वेनसंभव
ति॥ अतः केवलंदृष्टादेवपत्रपपृष्ठस्य३तिभावः॥ तथाभि३तिमन्यतेलोकः सलोनः धर्मोऽस्तिसंवेयः
धार्मिकत्वंप्रव्रदेनचाहु॥ धर्मोऽस्तीति॥ धर्मोऽपिचविहितेनलोकिकवैदिकाचारेणाधिकं॥४१॥उ
पचारप्रावृत्यादिचारोचारापालनलापं॥४२॥भयोनयोग्यस्तनीनयेनस्केनियोजनाप्रदर्शित

चाचारधार्मिकंदेवेद्विसमचनोचर॥४३॥नलोनलोऽसतोर्धर्मि विधत्तिनकर्मणिस्थितो
पारूवाच॥ अधेवर्णेनरागोद्वेषनापदलपरााविधि॥ धर्मसंचारधर्मेमतिरिलोकेवृध
त्वभावः॥४४॥ तथाधर्मापालनोधर्मः संपुत्रेणनकथंचन॥ लोकस्याप्येवंगतोहृधर्मोऽपिविनिमन
ते॥४५॥धार्मिकत्वंकनृत्यंसभविधानिनन्मेपापरः॥ धर्मप्रचारापितनस्यनाधर्मेस्थानेमनः
नस्मादूर्ध्वंप्रहृष्टनिरतानंमृत्विविद्विते॥ पृथचारगुभिचारमंधनधर्ममावोदृस्त्वये॥४६॥ वैशं
पायनउवाच॥ समनर्येत्नानन्चेशर्कलेनभवितवरोनना॥ धर्मिचारापनलाताप्रदर्शित
भवतीति॥४७॥ निवित्रपवैतसंभवे॥ गेशंपायनउवाच॥ संवत्सरचपलेनगर्भेयां पार्थानावेभ
नय॰ धर्मकृधर्मसर्वेकंनोगाभोऽर्थेधर्मसमनले॥ १॥ सन्वलिंतनिनादेवीधर्मोपोपनन्दाहृ
जेनांपविपिंतनपंश्चर्नेनवीक्षसोगत॥२॥ सावतमानलनोदेवोधर्मोऽभरवसानन्तः॥ वि
मानेनस्थितेनकापोकेनोपचनापविश्चिना॥३॥ विदृष्टनानलनोकृशाककिनिकिनेदृष्टभ्यहं॥ सा
नेविदृष्टमानातापिवृक्षेदृष्टञ्जवीतिदं॥४॥
माज्ञानकृत्लमवर्तनेकृतवती॥४॥ मपपंः॥५॥ वं
वनरेति॥६॥ लक्ष्मंद्यग्मर्देवनाहृतं॥७॥ विमानेस्थिताधानगामेषनलपः जयपस्थितानपनिष्ठा॥
जनोविदृष्टनाममवीक्षिप्यपद्यानेदेकंतिर्किनेदृष्टमिनहृधाऽतिसंवेयः अधादिपापाठोल

१४ ॥ ग्रामाध्यक्षे हुंकृतिरात्तिसंवाद्य ॥ ३४ ॥ वह्निष्यति ॥ ३५ ॥ मेघानलश्च मेघानल ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ राम

इदं कैलवकल्पाग्निरद्योरेवगतोऽस्मर ॥ रूपमस्मिन्ननितेष्टत्वं यथा संकल्पितं तथा ॥ २० ॥
अतिमानमकं मां त्वं यथाख्यितमर्हसि ॥ नीतिमन्तं महात्मानमभिरूपमसमनेन सं ॥ २१ ॥
तु गपर्थितः क्रियावेतनमनो वाङ्गुलदर्शने ॥ पुत्रं जनयपश्चात्तोऽग्निं यामवाक्यतने ज्ञमं ॥ २२ ॥ सर्वः
प्रसादेदेवं द्वानमाङ्गुत्थपुष्पितिक्षिनं ॥ २३ ॥ वैशंपायन उवाच ॥ एवमुक्ता नतः शाक्रमानहर्ष
यशस्विनी ॥ अथाजगाम देवेन्द्रोऽनलयामास वार्जितं ॥ २४ ॥ तातमाह्वेक्रमाोरेव वाचावाचाश्च
गीर्षि ॥ २५ ॥ महान्तं भीरनिर्वाणानमोना रूपनीनद ॥ २६ ॥ स्फूर्जेत्नामह वंशमूलानानं ते घांचाप्रम
वासिनां ॥ कुंतीमामाध्यविप्पभूमनावेदस्य तिक्षितं ॥ २७ ॥ कार्तवीर्यसमः कुंतिशिवलस्य
पराक्रमः ॥ एवमाकर्षावानप्येय शालेतथापिछलि ॥ २८ ॥ धर्मेण विदुरनापीतिर्ध्यामूरभि
वर्द्धिता ॥ नथा विदुरसमः प्रीतिवर्धयिष्यतिनेर्नन ॥ एवमनून्त पोक्रमाकहे श्रमत्रसोमकैः
वेदिकाशिकरुपांस्वक हलम्नीवाह्निष्यति ॥ २९ ॥ पनसमजवीर्येण लोडवेहयवाहनः ॥ मे
हसमवेश्मलानानास्त्रिभयाष्यति वैयरी ॥ ३० ॥ आमतोऽस्मसहीपालानेव तिलामहवलः ॥ सं
त्वभिः सहितो वीरक्तोऽसेपानाहविष्यति ॥ ३१ ॥ जामदग्न्यसमः कुंतिविदुसलसपराक्रमः ॥
एववीर्यवतां श्रेष्ठो मविष्यतिमहायशाः ॥ ३२ ॥ एव पुत्रे महादेवतोदयिष्यति शंकरं ॥ सर्वं
पाण्डुपतनामलस्मानमिह्वारूवाष्यति ॥ ३३ ॥

२७॥ २२॥ समाधिना ध्यानेन परमेण तन्मयेन ... ॥ २५॥ सूर्येण सह उदयाद् ... ॥ २६॥

ततः सर्वत्र ... ॥ [illegible] ॥ २७॥
... ॥ २८॥
... ॥
... ॥
... ॥
... ॥ २१॥ ...
... ॥ २२॥ ...
... ॥ २३॥ ...
... ॥ ...
... ॥ २४॥ ...
... ॥ २५॥ ...
... ॥ २६॥ ...
... ॥ २७॥ ...
... ॥ २८॥ ...
... ॥ २९॥

म॰ भा॰
भा॰ टी॰
२२

ब्रह्मचारी वटुकगणः सर्वतोऽपि निविष्टनः ॥ विष्णव ब्रह्मसमस्तमतं वेदमस्तु प्रासतया ॥५६॥
गीतनृत्यं यथा [illegible] लोचहाहाहाहा ॥ इत्येते देवगंधर्वा जरा [illegible] ॥ नवे
वाम्बरधोऽहशः सर्वालंकारभूषिताः ॥ नानावेषमहाभागा जरद्वायनलोचनाः ॥५८॥
अनलाननवयाः [illegible] वा ॥ [illegible] सोमासिद्धके [illegible] ॥५९॥
मरीचिः [illegible] विकाचैव [illegible] तिलोत्तमा ॥ घृताचिका [illegible] रेमा देवी रम्भा मनोरमा ॥६०॥
[illegible] सिता च [illegible] ॥ उर्वशी [illegible] ॥६१॥ का
[illegible] ॥ मेनका [illegible] ॥६२॥
[illegible] विश्वाची [illegible] चित्तिरपि ॥ [illegible] चेति [illegible] नार
[illegible] ॥६३॥ सर्वे [illegible] जरद्वायनलोचनाः ॥ [illegible]
[illegible] ॥६४॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ महिमानं [illegible] वरेस्थिताः ॥६५॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥६६॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] स्थिताः ॥६७॥ [illegible]
महाबलाः ॥ विश्वेदेवास्तथा [illegible] स्थिताः ॥६८॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥६९॥ [illegible]
[illegible] महाबला ॥ एते चान्ये च बहवस्तत्र [illegible] स्थिताः ॥७०॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] स्थिताः ॥७१॥

226

॥२॥ देवनिकायानां देवनानिलयानां विमानानां नेनन स्थाने देवानामिनिलयाने ॥ ५४

निवातकवचानाम दैत्यानि वृथ विहितः ॥ प्राकारया महावाहुल्लान्वयि पालितेसन:
नयारि यानि वानानि निवि लेनाहरिपानि ॥ विपनहो श्रियंचापमा नो पुरुषेभः
पनामस्यपु नांवाचं कं नीशमा व सनके ॥ वाव सद्वानाम सैलानिसूम्य तपहिना ॥ ५२ ॥
वभवपरमोहर्षः पानस्पु नित्राविना ॥ नपादेव निकायानां से इगणांच दिवौकसा ॥
प्राकाशेऽ इमीनां च वभूवनमलः स्वन ॥ इति गुणमहत्तोयः पूर्व हि भिराहत ॥ ५३ ॥
समवेत्य च देवानां गणः पार्श्वे समहेन्द्रयत ॥ काद्धे पावेननेपाशोपर्वा व्यासमस्तथा ॥ प्र
नानांपतयः सर्वेसमवेव मरदिदा ॥ ५४ ॥ मरद्भुतः कपूपेगो तमस्त्रो विश्वामित्रोऽन
मदग्निर्वसिष्ठः ॥ तत्त्वोदिनो भारद्वाजस्त्वेन्तानवि भिर्नवानाजनाम ॥ ५५ ॥ मरी
चिरंगिरावत्रे वसुब्रह्मपुत्र कृतुः ॥ ददवः पुलापीनियेवर्गं पर्वत व्यासस्तथा ॥ ५६ ॥
हितमा सत्याव्रतः सर्वलोकाभविता ॥ ३पगांधनिवी मन्तैनन्यने व्यासौगणाः
तथामहर्षिणा पिपिपुलस्य समतंतनः ॥ गंधर्वैः सहितः श्रीमान्प्रायात्तत्र वेनेव
तः ॥ ५५ ॥ भीमसेनोग्रसेनौ च ऊर्णायुरनघस्तथा ॥ गोपतिर्धृतराष्ट्रश्च सूर्यवर्चास्त
था सप्तमः ॥ युगपस्तृणपः काष्णिर्नन्दिश्चित्ररथस्तथा ॥ त्रयोदशः शालिशिराः पर्ज
न्यश्च चतुर्दश ॥ कलिः पंचदशश्चैव नारदश्चात्र षोडश ॥ सद्वा बृहद्वा बृहकः करालस्च महामनाः ॥ ५७ ॥

सैनानमविज्ञेदं लोकस्यप्रियं वलवन्यमानेन निर्भग्नं ॥ ॥ ममहर्षेण च प्राप्तिं विनाशमायाति
विनाशमानावायव हृत्प्रचेत्रकथितं प्रियत्रमांसनेनविज्ञेदं मंसवादिन्यष्ठः ॥ कस्याप्तेत्रं

ननलितं स्मरेदं नानार्थ यदिशमानः पर्वं ॥ मन्येथुवं मयोनाकाशा वचनं प्रतियत्स्यते ॥२॥ वै
शंपायन उवाच ॥ ततः कृष्णो पुनः पांडुविविक्तः स्मरवीन ॥ कलापुसमस्तेनानेलोकस्य च
कः प्रियं ॥१॥ समवाप्तिं नाशमाय हर्षे मामपिवात्मनः ॥ स लिप्रयार्थं वकस्याप्तिकस्य कस्यामे
मनसं ॥१॥ यशमोर्थाय चैवानं कः ककमसद्धःकं ॥ यायापिपान्नसिंद्धत्रायस्मिन्नेनिर्यपशोर्थि
ना ॥२॥ नयामंत्रविशेविप्राह्लपलमानहत्कं ॥ सहलनमुपगाहुनियत्रामेः र्थायमुविनि ॥२॥
नशाराजषयः सर्वैत्रासाक्ष्यनपोयनाः ॥ चक्रुकृष्णावचंकर्मयप्रासोर्था यत्तःकं ॥३॥
सांनमाही हवेलेवनार्थे नामलिहिते ॥ अपयामंविभागेन पर्वकोशिमवामहि ॥५॥ पव
मस्कापवीमाही हकुस्त्विनय हैवनं ॥ रसाह्नेमविनापुनमन्नरूपमहंषायं ॥६॥ ननीमा
श्रीविचार्यं वजनाममनसाक्षिनो ॥ न वागमहतोनप्राजननपमामनर्थमो ॥७॥ नक्रवेष
हृदेवचरूपेणाप्रतिमोमहि ॥ नथैवनाद्रुपियमोवामवाचाक्षारीरिणो ॥८॥ सर्वहृदयाउ
णाचैनो भवनोद्भस्थिनाविं ॥ भामनलेजसामर्थ्ये रूपं इविगोसंयत ॥९॥

नरोत्साहने ॥१०॥ यथास्मरानि ॥ कमलं ... यथार्थं देव सर्वाधारायनं कर्वनीमयं ॥११॥ एवं वं
द्रुपनित्रमाकं स्यामंत्रैकनेसनिकंनी ... द्वीमत्रवीदितियोजनाय्यत्रवीदितियोजनाप्रस्थिना

१८ ॥ इति भारतभावदीपे द्वाविंशोऽध्यायः ॥ २२ ॥ कं नो इति ॥ १ ॥ निरालोकेऽस्मात् ज्ञानानि कृते अवरोके
निद्यापयेच्च वरीयाः कस्माद्धर्मो यथा ॥ २ ॥ [illegible] अभिमानः ॥ ३ ॥ [illegible] इति ॥ ४ ॥ [illegible]

[illegible] ॥ ११ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ १२ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ १४ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ १५ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ १६ ॥ [illegible]
[illegible] वैशंपायन उवाच ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ १८ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ६ ॥ पांडुरुवाच ॥ [illegible]
[illegible] ॥ २० ॥

[illegible] ॥ २१ ॥ [illegible]
[illegible]

सं॰ भा॰
भा॰ पं॰
२२६

मधुमाधवे चैत्रवैशाखयोः संयोगतः [illegible] ॥ १॥ तपः [illegible]
[illegible] ॥ ६॥ [illegible] ॥ ७॥ [illegible]

मधु [illegible] ॥ १॥ [illegible]
[illegible] ॥ २॥ [illegible]
[illegible] ॥ ३॥ [illegible]
[illegible] ॥ ४॥ [illegible]
[illegible] ॥ ५॥ [illegible]
[illegible] ॥ ६॥ [illegible]
[illegible] ॥ ७॥ [illegible]
[illegible] ॥ ८॥ [illegible]
[illegible] ॥ ९॥ [illegible]
[illegible] ॥ … ॥ [illegible]
[illegible] ॥ … ॥ [illegible]
[illegible] ॥ … ॥ [illegible]
[illegible] ॥ … ॥ [illegible] ॥ … ॥

२२८

॥ … ॥ [illegible] ॥ … ॥

२२६

[illegible]

इत्यादिपर्वणि ॥ वैशंपायन उवाच ॥ [illegible]

[illegible]

अध्यायः ॥ [illegible] ॥ ७ ॥ [illegible] ॥ ८ ॥ [illegible]

[illegible] ॥ ९ ॥ [illegible] ॥ १० ॥ [illegible]

[illegible] ॥ ११ ॥ इत्यादि

पर्वणि [illegible] ॥ १२ ॥ वैशंपायन उवाच ॥ [illegible]

[illegible] ॥ १ ॥ [illegible]

[illegible] ॥ ३ ॥ [illegible]

[illegible] ॥ ४ ॥ वैशंपायन उवाच ॥ [illegible]

[illegible]

म॰ भा॰
आ॰ पं॰
२३

229

२२॥ येन कार्ये लोके कि का शिला यदृ मा वै पितृ मे यम शि हे का शि मि विवि वह ॥ २३॥ गंधर्वेन गांवे
ष्टं ॥ २४॥ यशोनं सोतिः पाते धनेन क वल्लाह निवेश कर्मानेष्टं पनाका धननोर णोन्विन य-

न्मेन योः शारीरे तुष्टा मेन यो वे न ॥ किंया मिन न रहं तं मेन सत्वा पांनपा ॥ २५॥ येनका
र्ये निहतो न पितृ मे धनकृ पया ॥ लभ नं ना वधर्मजः पांडुः कुरु कुल हेतु ॥ २६॥ वैशंपायन उ
वाच ॥ एवमुक्ता कुरु [illegible] ॥ [illegible] सर्वे [illegible] ॥ २७॥
गंधर्वेन [illegible] ॥ [illegible] ॥ २८॥ [illegible]
[illegible] ॥ २९॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ पांडवे [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ३०॥ [illegible] ॥ पांडवे
[illegible] ॥ ३१॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] पांडु [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ३२॥ वैशंपायन उवाच ॥ [illegible]
[illegible] ॥ पांडु [illegible] ॥ ३३॥ [illegible]
[illegible] ॥ ३४॥ [illegible]
[illegible] ॥ ३५॥ [illegible]
[illegible] ॥ ३६॥ [illegible] ॥ पांडु [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ३७॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥
[illegible] ॥ ३८॥ [illegible] ॥ पांडवे [illegible] ॥ ४४॥

[Margin, left:] स॰भा॰ प॰ २२१

[Margin, right:] स्वैः सं॰ २२१

[illegible]

...केन कारणेन ॥

म॰ भा॰
आ॰ प॰
२३२

231

१४ ॥ अध्यायः ॥ ततः इति ॥ २ ॥ [illegible]

[illegible] ॥ २४ ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] ॥ २६ ॥ वैशंपायन उवाच ॥ [illegible]

[illegible] ॥ १ ॥ [illegible]

[illegible] ॥ २ ॥ [illegible]

[illegible] ॥ ३ ॥ [illegible]

[illegible] ॥ ४ ॥ [illegible]

[illegible] ॥ ५ ॥ [illegible]

[illegible] ॥ ६ ॥ [illegible]

[illegible] ॥ ७ ॥ [illegible]

[illegible] ॥ ८ ॥ [illegible]

[illegible] ॥ ९ ॥ [illegible]

[illegible] ॥ १० ॥ [illegible]

[illegible] ॥ ११ ॥ [illegible] ॥ १२ ॥

१८॥ कालीपकारे रिंगं कृस्वा महालिङ्गं ॥१९॥२०॥ लिंगपञ्चकं गंधपुष्पाणि पूजयेत् ॥२१॥२२॥ राम ॥

[illegible] ॥२२॥
[illegible] ॥२३॥
[illegible] ॥२४॥
[illegible] ॥२५॥
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥२६॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥२७॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥२८॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥२९॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥३०॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥३१॥ [illegible]
[illegible] ॥३२॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥३४॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥३५॥ [illegible] ॥३६॥
[illegible] ॥३८॥ ॥॥

म॰ भा॰
आ॰ प॰
२३२

प्रमाणकोट्यां गंगायां प्रदेशविशेषे स्थलं किंचिदुपेत्य जले प्रवेश्य स्थले च क्रीडागारं ॥ ४८ ॥ भक्ष्यं दं-
ते: खाद्यमपूपादि भोज्यं तिक्तकषायादि पेयं लेह्यं चोष्यमिति रसभेदाः पानकादि पानं ... यदात्मनि ... भक्ष्याद्यन्नपेयं तत्र पायसादिकं
हिरोधं ... ... हितं सुखलालनार्थं ... भावन ... ...

एवं स निश्चयं पापः कृत्वा दुर्योधनस्तदा ॥ नित्यमेवांतरप्रेक्षी भीमस्यासीन्महात्मनः ॥ ४९ ॥
ततो जलविहारार्थं कारयामास भारत ॥ चैलकंबलवेश्मानि विचित्राणि महांति च ॥ ५० ॥
सर्वकामैः सुपूर्णानि पताकोच्छ्रयवंति च ॥ तत्र संजनयामास नानागाराण्यनेकशः ॥ ५१ ॥
उदकक्रीडनं नाम कारयामास भारत ॥ प्रमाणकोट्यां तं देशं स्थलं किंचिदुपेत्य ह ॥ ५२ ॥ भक्ष्यं भो-
ज्यं च पेयं च चोष्यं लेह्यमथापि च ॥ उपपादितं नरैस्तत्र कुशलैः सूदकर्मभिः ॥ ५३ ॥ न्यवेदयंस्तत्पु-
रुषा धार्तराष्ट्राय वै तदा ॥ ततो दुर्योधनस्तत्र पांडवानाह दुर्मतिः ॥ ५४ ॥ गंगां चैवानुयास्याम
उद्यानवनशोभितां ॥ सहिता भ्रातरः सर्वे जलक्रीडामवाप्नुमः ॥ ५५ ॥ एवमस्त्विति तं चापि प्रत्यु-
वाच युधिष्ठिरः ॥ ते रथैर्नगराकारैर्देशजैश्च गजोत्तमैः ॥ निर्ययुर्नगराच्छूराः कौरवाः पांड-
वैः सह ॥ उद्यानवनमासाद्य विसृज्य च महाजनं ॥ विशंति स्म तदा वीराः सिंहा इव गिरेर्गुहां ॥ ५६ ॥
उद्यानमभिपश्यंतो भ्रातरः सर्व एव ते ॥ उपस्थानगृहैः शुभ्रैः वलभीभिश्च शोभितं ॥ गवाक्ष-
कैस्तथा जालैर्यंत्रैः सांचारिकैरपि ॥ संमार्जितं सौधकारैश्चित्रकारैश्च चित्रितं ॥ दीर्घिकाभि-
श्च पूर्णाभिस्तथा पद्माकरैरपि ॥ ५७ ॥ जलं तच्छुशुभे छन्नं फुल्लैर्जलरुहैस्तथा ॥ उपच्छन्ना

दिषु पादितं ॥ ५६ ॥ उपस्थानगृहैः सभागारैः आस्थानमंडपैः शुभ्रैः श्वेतैः वलभीभिः
चंद्रशालाभिः गवाक्षकैः जालैः ... जलयंत्रैः ... ...
... ... सांचारिकैः संचार्यमाणैः ॥ ५७ ॥ दीर्घिकाभिः कुल्याभिः ७

232

२३२

[illegible]

[illegible]

वैशंपायन उवाच ॥ [illegible]

[illegible]

भा॰ भी॰
प॰
२२४

इत्यतीतः पीनविषः ॥ २४ ॥ ध्यार्य के ततो नागं नरेन स्वयमाता माता नाम हेनकं तिभीजन हरायं संवंधा
तितापने ॥ हे हिडंब तितार्यं कनाग स्व दो हितः स्वरः नहे हिडिंबो भीमस्तु निपात हि हट्टेन नदमेन स्वर

हनाव पोषा भीमसेन सर्वं वाल किमाप्यतु ॥ ऊरुस्वयं सर्वं रत्नानं नरा न किं वान चो पनं ॥ २४ ॥ ध्रुवं
नरोवेनागोरु तपस्व वधाय वेषिताः ॥ यथा वनो मति होरवि सपोतो मविष्ठा निः ॥ २५ ॥ निपो तो
स्मान नपा मः स्वच्छ हेन्नवुधन ॥ सर्वं न स्वापि तं न न हि नाव वधन मास्वन ॥ २६ ॥ योधर्यंते
महावाहु तवैन ज्ञान मर्दिनि ॥ ततोवान किं व्योम नागोर नुमानलरा ॥ २७ ॥ पश्य निरसमहा
वाहु भीमसभीमपराक्रमं ॥ २८ ॥ ध्यार्यके तेच रक्षः स्वयथाया स्वार्यके तव ॥ नदा दो हि डंवो हि
डंः पीडकः स पीडित ॥ २९ ॥ समीनश्या भवन स्वयमा नकिः सम हायपुत्रः ॥ ध्रुव वीनच नागो
रुः किं सम स्वकिं यं नावियं ॥ ३० ॥ यनोतो रत्न निव यो व न चा स्वपुत्र हीयते ॥ वयमन्न कल हान्ना
तो ना न किं यमभापन ॥ ३१ ॥ यदि नागे रुन ते हि किं स्वयं यन मंचये ॥ रसं पिवेकमार्य
नयि पीनेन महाबल ॥ ३२ ॥ वलं नागसहस्र स्य यथिनं हे उत्तिष्ठिते ॥ यावत्पिव नि वालोयं
तावद्देयं प्रदीयतां ॥ ३३ ॥ एवमस्त्विति तं नागा वा न किः प्रत्यभाषत ॥ ततो भीमस्तदा नागैः कृ
त स्वस्त्ययनः शुचि ॥ ३४ ॥ प्राङ्मुखश्चोपविष्टः सरसं पिवति पांडव ॥ एकोच्छ्वासात्ततः कुंडं पिवति
स्म महाबल ॥ ३५ ॥ एवमष्टौ स कुंडानि ह्यपिवत्पांडुनंदन ॥ ततस्तु शयने दिव्ये नागदत्ते महा
भुज ॥ अशेत भीमसेन स्तदा यथा सुखं भरितर्षभः ॥ ३६ ॥ इति श्रीमहाभारते आदिपर्वणि वैशंपायन
उवाच ॥ ततस्ते कौरवाः सर्वे विना भीमं च पांडवाः ॥ वृत्तक्रीडाविहाराश्च प्रतस्थुर्गजसाह्व
यं ॥ रथै र्गजैस्तथा चाश्वैर्यानैश्चान्यैरनेकशः ॥ ब्रुवंतो भीमसेनस्तु यातो ह्यग्रत एव नः ॥ ३७ ॥
ततो दुर्योधनः पापस्तत्रापश्यन्वृकोदरं
भ्रातृभिः सहितो हृष्टो नगरं प्रविवेश ह ॥ ३८ ॥ युधिष्ठिरस्तु धर्मात्मा
मानामहृतनाभू ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ नागारं नेभि नितो व हि ॥
नितराम अपाप यदा ... ह्यात्मनेन ... त्वात्मनिभाव इति हेतुः ॥ ३९ ॥ अध्याय ॥ १२ ॥ तत स्ते ॥ ततः स

२३३

श्लो॰
१२
२२४

म॰ भा॰
आ॰ टी॰
२३२

१४॥ तान्कृत्वा लक्षणान् ॥ न्यवेदयत ॥ १४॥ अध्यायः ॥ गरुडाख्यकमथो कौरव्याणां महात्मनां वनं गत्वा
नेहकृत्यप्रविष्टेषु पाण्डवेषु तेन भवनं गमाः ॥ सान्त्वयामास तं प्राज्ञः प्राविश्य वचनं चेदमब्रवीत् ॥ २ ॥ युधिष्ठिरो
महाबाहो सोऽयं वीर्यं समनः ॥ न सभाग्यागाम तव लोकानां ... भविष्यति ॥ २१ ॥ तमब्रवीत् वचस
... ॥ भानरहितो नन पाण्डवानां विनाकरणं गत ॥ २२ ॥ नतः सोऽतो महा
बाहुः ... ॥ ततो नागमा भवने हृ ... ॥ २३ ॥ ...
... ॥ भक्तावास ... ॥ २४ ॥ ...
वीर ... ॥ दिव्य ... ॥ २५ ॥ ...
... ॥ २६ ॥ ...
... ॥ २७ ॥ ...
... महाबल ॥ ... ॥ ततो भि ...
... ॥ कनीयसः ... ॥ २८ ॥ ...
... ॥ ... ॥ ततो ...
... ॥ भ्रातृणां भीमसेनस्य महाबलपराक्रमः ॥ ...
... ॥ ३० ॥ ततो युधिष्ठिरो ...
... ॥ ३१ ॥ ततः ...
... ॥ एवमुक्त्वा महाबाहुर्भीमसेनो युधिष्ठिरः ॥ ... सर्वे ... ३४
... ॥ ३२ ॥ इत्यादिपर्वणि ... ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ ...
... ॥ अध्यायः ॥ ... ॥ २ ॥

२३२

२३४

[illegible] ॥ ५ ॥ [illegible] ॥ ६ ॥ [illegible]

[illegible]

॥ विदुर उवाच ॥ [illegible]

[illegible] ॥ ७ ॥ वैशंपायन उवाच ॥ [illegible]

[illegible]

[illegible] ॥ १६ ॥ २२ ॥ ५९ ॥

235

२३६

पायद्धयामतः गौतमो गौतमो ज्ञानः पार्थैः सहूतानः [illegible] ॥ ॥ जनेश्वर

वैशंपायन उवाच ॥ महर्षिर्गौतमो [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ ॥ [illegible]

[illegible]

स॰ मा॰
श्रा॰ टी॰
२३०

ध॰ श्री पार्वतीः ॥

हा तेन तेन मनसा श्रीनो मार्गं हालनलनो भवत ॥ ५५ ॥ न चैव च च व स न्यो मान्य न चैद प रो भवत ॥ स श्रा व म हा म्या नं ना म स्य ण प रं न प ॥ ५६ ॥ सर्वं ज्ञान मिदं विप्र सर्वं कामं विदं च वै ॥ ज्ञा स ए भ्य ल हा ण ज नि सि न व म स व पुः ॥ म ग म ग्र प न वै द दि ज्ञान्न ला गि चैव ह ॥ श्रु ता ते प्र म न यु के नो लि पा त्रि न श्चैव च ॥ ५७ ॥ ततः स त्र लि मि सि पो लि पा च के मे ह न पा ॥ ततः प्र पा जा म हा वा दु मे ह इ प व तो न मे ॥ ५८ ॥ ततो म ह इ मा मा त्र मा ह जो म हा न पा ॥ त्वं न हा न स मि व ग्र म प या हु ग नं द नं ॥ ५९ ॥ त नो ह्य ग्रे ज नः पि ग्रे ह प ग म्य म न दृ ह ॥ मा च भो वा म्र नो ना म ज न्म चा गि ग म सः कुले ॥ ६० ॥ नि वे घ पि र स्या भ सो पा दो चैवा म्य वा द्य न ॥ त न लं स र्व म नु ज्य व नं जि ग मि पु न दा ॥ ६१ ॥ ज्ञा म स्या म हा त्मा नं मा हा जो व वी हिदं ॥ म हा ज्ञा न म म न्य ते न प्या नं मा म प यो नि जं ॥ आ ग तं विज्ञ क्षा म च वि हि इ गं हि जो न म ॥ ६२ ॥ न म त्र वी न्म हा त्मा नं स र्वं ज्ञ वि य मं इ नः ॥ ज्ञा ग नं ने हि ज श्रे ष्ठ प हि च्छ मि व द स्व मे ॥ ६३ ॥ ए व म न्त्र्य न रो मे ग मा र हा जो द्वि जो त्त मः न म स्कृ त्य त ज श्रे ष्ठ हि स्नं न वि वि प व म ॥ ६४ ॥ अ र्ह प न म नं त न हि प्रा र्थ ये वि प्र ल य नः ॥ ६५ ॥ पार्वत्युवाच ॥ हि र ए प म म य ज्ञा न्त ह न किं चि हि हि जि नं ॥ ज्ञा ह ग ए म्यो म या ह नं स र्व म न न प्या य न ॥ ६६ ॥ न श्चै व यं प रा हे वी मा म गं ना म य ह ना ॥ क श प पा य म या र ह ना क त्वा न ग म मा हि नी ॥ ६७ ॥ पा र्व र मा त्र मे वा घ्म य घे ह म व शो षि तं ॥ अ ह्या पि च म हा हं पि प त्ना पि वि वि पा नि च ॥ ६८ ॥ म हा पि का श रो र वा व र मे न न्म पो घ नं ॥ ह ए पि ष्ठ किं म य त्वा मि न्मं हो ग ए व ह श्च न न ॥ ६९ ॥ ईश्वर उवाच ॥ म हा पि मे म म श्च वि प्र सं ह या पि भा षि व ॥ म प्र यो ग रं हे न्य पि दा न म हं इ प्य पा व न ः ॥ ७० ॥ न श्चै न्म क्रा न न ल मै म र ह इ मा पि भा षि वः ॥ म हा प्य च न श्चै व प न वै र म पो घ नः ॥ प्र नि म ह्य न न म्र वं ह क ना हो हि ज स न मः ॥ प्रि यं म वा च

२३०

म॰ भा॰
आ॰ प॰
२३८

237

२३८

तत इति ॥ २ ॥ कषायीकृते रक्ते लोचने यस्य सः अकृता असंस्कृता ॥ ४ ॥ सामर्थ्यं समानेनार्थेन समर्थं
तदेव बन्धनं यस्य सौहृदस्य तत् ॥ ८ ॥ एनं सख्यभावं विहरति निष्ठुरं करोति हरति नाशयति ॥ ९
एवं जीर्णं भवता जीर्णत्वं प्राप्तं सख्यं मा उपास्स्व पुनः अपाकृधि दूरीकुरु ॥ १० ॥ एवं स

वैशम्पायन उवाच ॥ ततो द्रुपदमासाद्य भारद्वाजः प्रतापवान् ॥ अब्रवीत्पार्षतं राजन्सखायं
विद्धि मामिति ॥ ३ ॥ इत्येवमुक्तः सख्या स प्रीतिपूर्वं जनेश्वरः ॥ भारद्वाजेन पाञ्चालो नामृष्यत व
चोऽस्य तत् ॥ ४ ॥ स क्रोधामर्षजिह्मभ्रूः कषायीकृतलोचनः ॥ ऐश्वर्यमदसंपन्नो द्रोणं राजाब्रवी
दिदम् ॥ ५ ॥ द्रुपद उवाच ॥ अकृतेयं तव प्रज्ञा ब्रह्मन्नातिसमञ्जसी ॥ यन्मां ब्रवीषि प्रसभं सखा
तेऽहमिति द्विज ॥ ६ ॥ न हि राज्ञामुदीर्णानामेवंभूतैर्नरैः क्वचित् ॥ सख्यं भवति मन्दात्मञ्श्रिया
हीनैर्धनच्युतैः ॥ ७ ॥ सौहृदान्यपि जीर्यन्ते कालेन परिजीर्यतः ॥ सौहृदं मे त्वया ह्यासीत्पूर्वं साम
र्थ्यबन्धनम् ॥ ८ ॥ न सख्यमजरं लोके हृदि तिष्ठति कस्यचित् ॥ कालो ह्येनं विहरति क्रोधो वैनं
हरत्युत ॥ ९ ॥ मैवं जीर्णमुपास्स्व त्वं सख्यं भवदपाकृधि ॥ आसीत्सख्यं द्विजश्रेष्ठ त्वया मेऽर्थनिबं
धनम् ॥ १० ॥ न दरिद्रो वसुमतो नाविद्वान्विदुषः सखा ॥ शूरस्य न सखा क्लीबः सखिपूर्वं किमि
ष्यते ॥ ११ ॥ ययोरेव समं वित्तं ययोरेव समं श्रुतम् ॥ तयोर्विवाहः सख्यं च न तु पुष्टविपुष्टयोः ॥ १२ ॥
नाश्रोत्रियः श्रोत्रियस्य नारथी रथिनः सखा ॥ नाराजा पार्थिवस्यापि सखिपूर्वं किमिष्यते ॥ १३ ॥
वैशम्पायन उवाच ॥ द्रुपदेनैवमुक्तस्तु भारद्वाजः प्रतापवान् ॥ मुहूर्तं चिन्तयामास मन्युना ॥
भिपरिप्लुतः ॥ स विनिश्चित्य मनसा पाञ्चालं प्रति बुद्धिमान् ॥ जगाम कुरुमुख्यानां नगरं ना
गसाह्वयम् ॥ १५ ॥ स नागपुरमागम्य गौतमस्य निवेशने ॥ भारद्वाजोऽवसत्तत्र प्रच्छन्नं द्विजसत्तमः

लोऽनिष्टकालः क्रोधो वैरं च इत्यनेन पितृनेनार्थः ॥ विरुद्धः क्रोधो निरूपितो ॥ १ ॥ द्रुपदेनेति ॥ पाञ्चा
लं प्रति चिन्तयामास भवोपायं मनसा विनिश्चित्य बुद्धिः प्रतीकारबुद्धिः पश्चाद्बुद्धिः तद्वा

म॰ भा॰
श्रा॰ प॰
२३९

॥ दिशः [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥
[illegible]

238

[illegible]

२३९

१४॥ सांप्रतं त्वं कथं नित्यं स्थानेनास्थिति ॥ १५॥ विकोटियानि ना[illegible]स्यात् कविना नेत्रं [illegible] ॥ १६॥ स

कुमार उवाच ॥ अभिचारस्य मम हे[illegible] सन्नेन [illegible] विद्यते । कोशिकं तं विना [illegible] किं कार्य

महे ॥ १७॥ देवी पार्वत्युवाच ॥ एवमुक्ते [illegible] कुमारकान ॥ १८॥ [illegible] उवाच ॥

[illegible] चक्षुर्भ्यामा[illegible] [illegible] महर्षिनाः सांप्रतं त्वं नित्यं स्थाने ॥ १९॥

देवी पार्वत्युवाच ॥ न [illegible] च [illegible] कुमारकः । [illegible] चलत्यंते

[illegible] न [illegible] विधं ॥ २०॥ [illegible] जानन [illegible] स्वरूपः [illegible]

[illegible] चित्तं च ॥ २१॥ [illegible] नित्यं [illegible]

[illegible] ॥ २२॥ [illegible] सर्वं [illegible] [illegible] स[illegible]

[illegible] ॥ [illegible] चित्रं [illegible] ॥ २३॥ [illegible] नाम [illegible]

[illegible] समाः ॥ [illegible] चिरं [illegible] ॥ २४॥ [illegible] नोम

[illegible] ॥ २५॥ [illegible] ॥ २६॥ [illegible] उपकारी प्रिय

[illegible] ॥ [illegible] चित्र [illegible] ॥ २७॥ [illegible] नमेव च ॥ [illegible]

[illegible] ॥ २८॥ [illegible] नित्यं [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ २९॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ ३०॥ [illegible] ॥ एवम [illegible]

[illegible] ॥ ३१॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ ३२॥ [illegible] ॥ [illegible] च

[illegible] चरमे [illegible]

[illegible] ॥ ३३॥ ३६॥

ननादति ॥ ४ ॥ स एव हि स्कन्नं सप्तधा ताम्रलिप्तं ॥ ३ ॥ ततो नाम्ना समाहूतो [illegible] कृतोपसदना [illegible]
न ॥ ५ ॥ धनुर्वेदप्रचिकीर्षया [illegible] द्रोणो [illegible]

वैशंपायन उवाच ॥ ततः संपूजितो द्रोणो भीष्मेण द्विपदां वरः ॥ विशश्राम महातेजाः पूजितः कुरुवेश्मनि ॥ १ ॥ विश्रान्तेऽथ गुरौ तस्मिन्पौत्रानादाय कौरवान् ॥ शिष्यत्वेन ददौ भीष्मो वसूनि विविधानि च ॥ २ ॥ गृहं च सुपरिच्छन्नं धनधान्यसमाकुलं ॥ भारद्वाजाय सुप्रीतः प्रत्यपादयत प्रभुः ॥ ३ ॥ स ताञ्छिष्यान्महेष्वासः प्रतिजग्राह कौरवान् ॥ पाण्डवान्धार्तराष्ट्रांश्च द्रोणो मुदितमानसः ॥ ४ ॥ प्रतिगृह्य च तान्सर्वान्द्रोणो वचनमब्रवीत् ॥ रहस्येकः प्रतीतात्मा कृतोपसदनांस्तथा ॥ ५ ॥ द्रोण उवाच ॥ कार्यं मे कांक्षितं किंचिद्धृदि संपरिवर्तते ॥ कृतास्त्रैस्तत्प्रदेयं मे तदेतद्वदतानघाः ॥ ६ ॥ वैशंपायन उवाच ॥ तच्छ्रुत्वा कौरवेयास्ते तूष्णीमासन्विशांपते ॥ अर्जुनस्तु ततः सर्वं प्रतिजज्ञे परंतप ॥ ७ ॥ ततोऽर्जुनं तदा मूर्ध्नि समाघ्राय पुनः पुनः ॥ प्रीतिपूर्वं परिष्वज्य प्ररुरोद मुदा तदा ॥ ८ ॥ ततो द्रोणः पाण्डुपुत्रानस्त्राणि विविधानि च ॥ ग्राहयामास दिव्यानि मानुषाणि च वीर्यवान् ॥ ९ ॥ राजपुत्रास्तथैवान्ये समेत्य भरतर्षभ ॥ अभिजग्मुस्ततो द्रोणमस्त्रार्थे द्विजसत्तमं ॥ १० ॥ वृष्णयश्चान्धकाश्चैव नानादेश्याश्च पार्थिवाः ॥ सूतपुत्रश्च राधेयो गुरुं द्रोणमियात्तदा ॥ ११ ॥ स्पर्धमानस्तु पार्थेन सूतपुत्रोऽत्यमर्षणः ॥ दुर्योधनं समाश्रित्य सोऽवमन्यत पाण्डवान् ॥ १२ ॥ अभ्ययात्स ततो द्रोणं धनुर्वेदचिकीर्षया ॥ शिक्षाभुजबलोद्योगैस्तेषु सर्वेषु पाण्डवः ॥ १३ ॥ अस्त्रविद्यानुरागाच्च विशिष्टोऽभवदर्जुनः ॥ तुल्येष्वस्त्रप्रयोगेषु लाघवे सौष्ठवेषु च ॥ १४ ॥

द्रो॰ ॥ १४ ॥ अस्त्र एव तेषु विशि [illegible]

प्रकृते पश्चिमिनि प्राप्याखोत्तं ॥ १२ ॥ यान्पार्थ मे विदं न्द्रो मम मराऽपश्मिनि केने ॥ १३ ॥ प्रतिप

प्रकृतेषु न व प्रत्या च सम्बन्धानि समं न सौ ॥ प्रदाप्य मांनं प्रश मं सखानो ने हमिनि छिन ॥ १४ ॥ संग
मानीद्वन्द्वौ हनि क्लेन पवि जीर्यन्तः ॥ सोऽहं मेनवा प्राप्ती न वै सामर्थ्यो वंधने ॥ १५ ॥ नाश्रोति
यः श्रोत्रिय मण्नाव श्रीय(?)श्विनः सतां ॥ श्रीमान्हि सर्वं भवति वै धन्यो धनं ने ॥ १६ ॥ न सर्वेषम
देवोके निधने ज्ञानक स्य चिन ॥ सोऽयं वेन निद्रानि क्रोधो वेन हन्त न ॥ १७ ॥ मे वेनी निरपराह
न सर्वेषु भाव सर्वा कृ नि ॥ प्राप्ती न सर्व द्विजश्रेष्ठ न पापं सत्ये निवेधने ॥ १८ ॥ न हि नाथः सर्वोऽपु
नानि हानि च्छिः सतां ॥ न शत्रु सर्व सतां ज्ञानी न सनि ते विनिम्नने ॥ १९ ॥ न हि न सर्वदी णो
नाम्रे च भूते नैव कति न ॥ सर्वत्र भवति मे नानान छिप यहीने हं न चाने ॥ २० ॥ नाश्रोत्रियः श्रोवि
यस्य नाव श्रीय श्विनः सतां ॥ नापनां पश्चिम सर्वनिवनि हि एवं किं तिष्ठते ॥ २१ ॥ प्रहेन पापं नता
नाम्निरा र्याणां सलि इंकृते ॥ एकप वेन ने सर्वकामं दा प्राप्ति भोननं ॥ २२ ॥ एवमुक्तस्त्वहं तेन
सदा सर्व प्रविन सता ॥ नापतिसं प्रतिना प्रयोगं न सर्वचित्रा हि ॥ २३ ॥ इदं पदेते वमुक्तोऽहं मम
नामिषनिहनः ॥ प्रमिता ब्रूहि कृष्ण नौ कामि भोरश्री यतो निनिते ॥ २४ ॥ ततो हं भवनः कामं सव
हं थिनमानन ॥ इदं नाम श्रेयं मम ब्रूहि विं करवाणि ते ॥ २५ ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ एवमुक्तस्त
या भीष्मो भारद्वाजं महामनाः ॥ २६ ॥ भीष्म उवाच ॥ प्रपद्ये तं निपत्यं ना प्रसा प्रं प्रतिपाद ॥ भव
मो नापक्व स्त्रं श्रीमुक्त मानः कृष्णवे ॥ २७ ॥ कृष्ण लिंग हि न सर्वे वं सन्नाहुक ॥ नमवप
श्मोपनाम संवेकल्य लव ॥ २८ ॥ यच्च तेषां पश्चिन सर्वानकतेन दिनि निम्रतां ॥ इति श्रीमहाभारते शि
प्रमहात्मेतु पवेः श

इय श्रमल्कमाक्षे मानि श्रेष्ठः कृष्णवे कस्यापहे ॥ १२५ ॥ २८ ॥ अध्यायः ॥

शां० ५ ॥

म॰ भा॰
आ॰ पं॰
२४१

२४॥ संवत्सरो दुर्गुणवद्देनिकामुपयोगोयुगावद्दनेकैः सहप्रुहेवा॥२४॥२४॥नैषामन्त्रचेतयानेष्या
गिकेमाप्शिनिवृषा॥२५॥महीमयेस्त्वमयं॥२६॥दृष्ट्वातुप्रयोगोयोगंपकाण्ड॥२७॥लवृत्तंपीत्व

द्रोण उवाच॥प्रथनिश्चेनष्वाकर्णयप्याना मोयनर्दैरः॥नत्वंमोमविनालोकेसत्येनदृवी
मिने॥२८॥वैशंपायन उवाच॥ततोद्रोणोजनेमयोद्धयेष्वानेषुच॥पृष्टेयमसावचिचात्
शिलामशिवयन॥२९॥नटाक्षुपुचयौयानोमरप्रासमतोक्षि॥ द्रोणः संवत्सरद्वेषुशि
वयामामकैरवान॥३०॥नयनकोशालप्रनायनवैरजितहवचः॥ततोनातनुत्रास्त्रममा
जस्यःसहस्रशः॥३१॥ततोनिषाद्राजस्पहिरण्यधनुषःसुतः॥एकलव्योमहाराजद्रोणमभ्या
जगामह॥३२॥नसप्रतिजग्राहनैषादिरितिचिन्तयन॥शिष्यंधनुषिधर्मज्ञस्तेषामेवान्व
वेक्षया॥३३॥सतुद्रोणस्यशिरसापादौगृह्यपरंतपः॥अरण्यमनुसंप्राप्यकृत्वाद्रोणंमहीम
यं॥३४॥तस्मिन्नाचार्यवृत्तिंचपरमामास्थितस्तदा॥इष्वस्त्रेयोगमातस्थेपरंनियममास्थितः
परयाश्रद्धयोपेतोयोगेनपरमेणच॥विमोक्षादाननसंधानेलघुत्वंपरमापसः॥३५॥अथद्रोणा
भ्यनुज्ञाताःकदाचित्कुरुपाण्डवाः॥रथैर्विनिर्ययुःसर्वेमृगयामरिमर्दना॥तत्रोपकरणं
गृह्यनरःकश्चिद्यदृच्छया॥राजन्ननुजगामैकःश्वानमादायपाण्डवान॥३६॥तेषांविचरतांतत्र
ततत्कर्मचिकीर्षया॥श्वाचरन्सवनेमूढोनैषादिंप्रतिजग्मिवान॥३७॥सकृष्णंमलदिग्धांगंकृ
ष्णाजिनजटाधरं॥नैषादिंश्वासमालक्ष्यभषंस्तस्थौतदंतिके॥तदातस्यायभषतःशुनःसप्त
शरान्मुखे॥लाघवंदर्शयन्नस्त्रेमुमोचयुगपद्यथा॥३८॥सतुश्वाशरपूर्णास्यःपाण्डवानाजगाम
ह॥तंदृष्ट्वापाण्डवावीराःपरंविस्मयमागताः॥३९॥लाघवंशब्दवेधित्वंदृष्ट्वातत्परमंतदा॥प्रेक्ष्य
तंव्रीडिताश्चाभूवन्प्रशशंसुश्चसर्वशः॥४०॥तंततोन्वेषमाणास्तेवनेवननिवासिनं॥ददृशुः
पाण्डवाराजन्नस्यन्तमनिशंशरान॥४१॥नचैनमभ्यजानंस्तेतदाविकृतदर्शनं॥अथैनंपरि
प्रपच्छुःके॥१२ २४ उपकरणंश्वागतोहिमसंधेनकरणंआत्तपमेव॥१२॥१२॥१२॥प्रहेप्रयोला

कम्मं च लस्स सामत्थ ब्बाहिलं वेन सुसमीयं ॥ २९ ॥ कम्मं विलीणं किम ब्बिनासयः सुखमीयं न सफलं समाइ ॥
यावदिति ॥ ओद्दनलन्नलवान ॥ ३० ॥ विओ योपचे ये गमाजलरूवस्रु पकरु मरे वा ले स नो न सायाय नन वि
हो नाभून ॥ ३१ ॥ पोमामे करुण ॥ ३२ ॥ पुनं न देयं किं लयं करु पे म सा दन्य ३ सा सा: ग निये नी निनाते व ॥
दसा नीनि सव्र याया चाइ निभाव: ॥ निनये अनिने अयं भाव: ॥ अनुभासाल्ले सारन्य ग्र सा सानवते

सवे पामेव कि मात्मांच भगवान माकी के नेनुः ॥ ये हि मपनि मे इ गाउ यारे पो छ मन्यन ॥ ३२ ॥ एवंस
वे कम्माण ति सं पन्न पार यन ॥ कम्मं च ल च स वे यो सा य इ विरक सपान ॥ ३३ ॥ एवं सवेकम्मा
णा नि स्तं अन्य पार यल ॥ कम्मं दले च सव्वे यो सा य विरक सपान ॥ ३४ ॥ ही ए पा च ए श्र याथ
नन्नु मति मरो इन ॥ ३५ ॥ ननः सनायतोणे एरपि नाक म्मं दलं ॥ सम सा चाय्थे यो ए ग इ हम्मे
नि एत्नम ॥ ३६ ॥ पाचां थे ए याने सानविपो सा पवये एण्क ॥ न म्हा यन मे धा वी पा थी पास
वि हेवर ॥ ३७ ॥ पनीनः परति यल मा निए हे ए ननेः ॥ स विरु प र मे यो ना मि यो हो ए पावा भ च न ॥ ३८ ॥
ने इ मानि रुम च क फि प त य नि फ नाने ॥ साहू ये च च न रू ग भ र हम्म द समभाय न ॥ ३९ ॥ अय क
रे नी ना या चे न देवे ने क राव न ॥ न वा खि य मि ट वा प्र मह को विने दे न या ॥ ४० ॥ ननः कदा वि
माने पव वो वा उ र जे ने ॥ ले ननन व सदीय: स दो रुमा नो निसो फिन ॥ ४१ ॥ भन्न एव न कै ने या
नाम्या दन्य व न ने ॥ दसले जलिन नल एम नू एत्ना क र णान ॥ ४२ ॥ न द भा सर क नमनाम
नाव विप सं चा उ ल: ॥ पा पा च कं म स वा उं ऐ न फ पाउ न दन: ॥ ४३ ॥ न ए ज्ञा न सनि वी से इ पए:

ने वण वेन म हि ण सा रिल रुप दन्य ३ शग अ खि न पने श्रीन स्व का जे ना य दि के ने द म न क मि नि ए खे नई
सो वि क प वा ग म ए इ नि नं अ नि व नं क यं न न लड़ ए ल वा चा मे न दि नी नि ॥ ४४ ॥ एवं गा हू ए म सि क सा भ्मा:
मे अ ह नी ना वि ना यं न न: सा गे वा जे न: सा ह घा ने ने व न न न न ना वा नि म ह ॥ हा भ्मा न न न नि ॥ ४५ ॥ अन
उ ह्णाम भ्मा म: ॥ ४६ ॥ पो पा पा म भ्मा ये ॥ ४७ ॥ श्र व णो न ने उ भ्मा यो पे मे नि क म: ॥ ४८ ॥ राम ॥ राम ॥

म. भा.
द्रो.
२४२

स्यात्कौरवाः सहः स्वहस्ताभि मा श्रिः नकुलहतस्य शकोपानेषु देकृष्णा लौ ॥ ६ ॥ तथा शेषुः सम मोफारे रिभिस्समाः
२४ ॥ अहत्य तानानेकश्च प्रहस्तानि निविचारे ॥ ७ ॥ भास्नीलपद्वे पदिताणञ्च ऊतलस्तिपस्यास्थायस्तिपदरे ॥ ८ ॥

शुश्रूषमाणा रक्षेषु सर्वे स्युर्यधिको भवन ॥ तथा निपुरुषानन्यानस्मारकेषु मनातुमो ॥ ९ ॥ युधि
ष्ठिरो ऽपश्रुतः सर्वैर्वन पर्वनयः ॥ अश्विनः स्मानां ताधार्यः पूपण्पूत्य ॥ १० ॥ युधिष्ठिराव
लोक्यारैः सर्वांशेषु वनिष्ठिनः ॥ शरैर्गवेनगाणेविनिशिराम बद्धनेन ॥ ११ ॥ न सेवशोपदृष्ट्या
पुष्पेण एवेन चवीर्येण वान ॥ एवं सर्वकुमाराणां च लब्धानि शश्रोन्नेन ॥ १२ ॥ माणविसिर्भीमसे
नं कृन विधिपतेन नये ॥ पालैर्गापुरस्रामाने नाम स्थान पारयशः ॥ १३ ॥ नैलसर्वो समानां यम
वेविधाम सिविलनान ॥ दोणः प्रहस्तान्ते निलावः शूरवधमं ॥ कृत्रिमसमाधमाणे शुरश्चा
शुभि शिल्पिभिः कृतं ॥ अविकलं कमागतालव्यमूतमपारिश्यन ॥ १४ ॥ द्रोण उवाच ॥ पौत्रम
वनः सर्वैर्विधिपतेन वा शस्त्रयस्मै वशाः ॥ भाषमितेन मनारिपुपलिष्ठूर्धं संयिनेषवः ॥ १५ ॥ मन्दमसम
कालेन शिशेराविनिपातनं ॥ एवं कपानि योसामितस्याकृतन वश्चकाः ॥ १६ ॥ वैशंपायन
उवाच ॥ ततो युधिष्ठिरः पूर्वमस्त्रांचार्यास्तदा ॥ संयताश्वापारे देवमहास्त्राणि विसृजत ॥ १७ ॥ त
तो युधिष्ठिरः पूर्वं यतनं पापार्जन ॥ नस्यो माप्तमपुतिशस्य गतवाकाणचेष्टितः ॥ १८ ॥ ततो वि
तलपताना नकेलाल कंरनंदनं ॥ समस्तनाइवाचे स्वचनमानद्यम ॥ १९ ॥ एवमेतेन कुमारा
स्त्रमानेन स्व राक्षसः ॥ पशयामीति वमाचार्यं पुत्रस्वावाय युधिष्ठिरः ॥ स्पष्टं नीशिवश्नतुं
ण लक्षयमभाषत ॥ द्रोण उवाच ॥ अथ रवमितिसवामनुत्नायि शरपसि ॥ २० ॥ नमवाचम
कौन्तेयः पश्यामीनं वनस्थलि ॥ भवन्तं च तथाधान्स्मायवेनिश्चनः पुनः ॥ २१ ॥ नमवाचाप्रम
र्त्तनिस्ताः प्रीतमनाः इव ॥ नैतच्छकोतयावेद्धु लक्ष्यमिति वक्तुमयन ॥ २२ ॥

२३ ॥ अंशिशिरसांवाः द्रोणः ॥ २४ ॥ २५ ॥ माहंपद्धपतत्त्वकाग्रदृष्टिर्भवेन्यर्थः ॥ २६ ॥ २७ ॥ तमितिमि ॥ शवाणा
शिरश्चानात ॥ अग्रदृष्टिर्न तेषां तानानासर्वानपिनिराचकार ॥ २८ ॥

२४२

241

[illegible] ॥ ४४ ॥ [illegible]
[illegible]

॥ एकलव्य उवाच ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ४५ ॥ वैशंपायन उवाच ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ४६ ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ४७ ॥ अर्जुन उवाच ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ४८ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ४९ ॥ वैशंपायन उवाच ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ५० ॥ [illegible] ॥ एकलव्य [illegible]
[illegible] ॥ ५१ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ५२ ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ५३ ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ ५४ ॥ एकलव्य उवाच
[illegible] ॥ ५५ ॥ वैशंपायन
उवाच ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ५६ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ५७ ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ ८० ॥
[illegible] ॥ ५८ ॥ [illegible] ॥ ५९ ॥ [illegible] ॥ [illegible]

२८॥ अभयास्माकम्भयापहारणं॥ २९॥ इति भावार्थभावदीपे संभवार्थप्रकाशः समाप्तः॥ कृतार्थोऽयमिति॥ १॥

कः केन कमारभ्य शिष्टाः॥ २॥ मन्मनसः संप्राप्ताः कथं न तत्कालं विधानानाद्यन्तम्॥ ३॥ निर्वेदात्

आद्यः पंचत्वमापेदे जंतोः नामकरणमहात्मनः॥ अथाद्वयी महात्मानं मारकं तेऽमहार्थ॥ ४॥ सम

णोऽमम स्वकार्येश्चेत्परमनिश्चये॥ आत्मज्ञानविदो नामसदा योगनिवर्तनं॥ ५॥ न च तेऽमानु

षेण तस्य योग्यं कर्तव्यं॥ ज्ञाननिदिध्यासनेन तस्य तेजः स्थापितं॥ ६॥ अस्माकमपि तन्नाम

न लोके धर्मे नियोगे॥ नष्टा येष्वाः प्रपन्नः प्रख्यातं ते चेतसा॥ वायेनानामनघः पात्रं यदि

ना वीतकल्मषं॥ नष्टपापप्रवृत्तेश्चालक्ष्यविस्मये॥ ७॥ तथैव निष्प्रपंचः स्वीयः

कृतांजलिः॥ नमस्कृत्य महात्मानं तत्त्वेन पृच्छते॥ ८॥ भविता नष्टमोहः पुमांल्लोके यत्न

तः॥ ९॥ इत्यादिपदैर्वर्णितं भवे॥ वैशंपायन उवाच॥ कृतात्मानं ततो ज्ञात्वा तदा अध्यापयत्

इत्युक्तेऽपि तेन ... ॥ १०॥ कः ... कस्य च योगमनः॥ ... यस्य च ... विशुद्धस्य च॥ ११॥ ... कर्माणि ... मनः॥ तत्त्वविदः

... ॥ ... ॥ १२॥ राजोवाच॥ भा

... ॥ ... निर्वेदं ... ॥ १३॥ ...

... ॥ १४॥ ... ॥ ...

... ॥ १५॥ ... ॥ ...

... ॥ १६॥ ... ॥ ...

निर्वाणं च स्वर्गं इति॥ १७॥

...॥ ... ॥ १८॥ ... ॥ १९॥ निर्गुणानां ...

वेनन्नमहद्दसितामहस्य ॥ ५७ ॥ समस्तमसंयं नैवाहिस्त्रुणीनोत्र वीहिदम वं कन्नेसाइनिवा एकलवसः
माघनेनिघ्र. चिमांयघवेनिनञ छवेवकनेसामितिनर्जनीमघमामाघां पांशुमवा. स्माकर्सं गां कन्नेसामि

एकलव्य उवाच ॥ निषादाधिपतेर्वीरहिरण्यधनुषः सुतं ॥ द्रोणशिष्यं च मां विद्धि धनुर्वेदकृतश्र
मं ॥ ६१ ॥ वैशंपायन उवाच ॥ ते तमाज्ञाय तत्त्वेन पुनरागम्य पांडवाः ॥ यथावृत्तं वने सर्वं द्रोणायाच
चख्युरद्भुतं ॥ ६२ ॥ कौंतेयस्त्वर्जुनो राजन्नेकलव्यमनुस्मरन् ॥ रहो द्रोणं समासाद्य प्रणयादिदमब्र
वीत् ॥ ६३ ॥ अर्जुन उवाच ॥ तदाहं परिरभ्यैकः प्रीतिपूर्वमिदं वचः ॥ भवतोक्तो न मे शिष्यस्त्वद्वि
शिष्टो भविष्यति ॥ ६४ ॥ अथ कस्मान्मद्विशिष्टो लोकादपि च वीर्यवान् ॥ अन्योऽस्ति भवतः शिष्यो
निषादाधिपतेः सुतः ॥ ६५ ॥ वैशंपायन उवाच ॥ मुहूर्तमिव तं द्रोणश्चिंतयित्वा विनिश्चयं ॥ सव्यसा
चिनमादाय नैषादिं प्रतिजग्मिवान् ॥ ६६ ॥ ददर्श मलदिग्धांगं जटिलं चीरवाससं ॥ एकलव्यं ध
नुष्पाणिमस्यंतमनिशं शरान् ॥ ६७ ॥ एकलव्यस्तु तं दृष्ट्वा द्रोणमायांतमंतिकात् ॥ अभिगम्यो
पसंगृह्य जगाम शिरसा महीं ॥ ६८ ॥ पूजयित्वा ततो द्रोणं विधिवत्स निषादजः ॥ निवेद्य शिष्य
मात्मानं तस्थौ प्रांजलिरग्रतः ॥ ६९ ॥ ततो द्रोणोऽब्रवीद्राजन्नेकलव्यमिदं वचः ॥ यदि शिष्योऽसि
मे वीर वेतनं दीयतां मम ॥ एकलव्यस्तु तच्छ्रुत्वा प्रीयमाणोऽब्रवीदिदं ॥ ७० ॥ एकलव्य उवाच
किं प्रयच्छामि भगवन्नाज्ञापयतु मां गुरुः ॥ न हि किंचिददेयं मे गुरवे ब्रह्मवित्तम ॥ ७१ ॥ वैशंपाय
न उवाच ॥ तमब्रवीत्त्वयांगुष्ठो दक्षिणो दीयतामिति ॥ एकलव्यस्तु तच्छ्रुत्वा वचो द्रोणस्य दारुणं
प्रतिज्ञामात्मनो रक्षन्सत्ये च नियतः सदा ॥ तथैव हृष्टवदनस्तथैवादीनमानसः ॥ ७२ ॥ छित्वाविचा
र्य तं प्रादाद्द्रोणायांगुष्ठमात्मनः ॥ ततः शरं तु नैषादिरंगुलीभिर्व्यकर्षत ॥ ७३ ॥ न तथा च स शीघ्रो
ऽभूद्यथा पूर्वं नराधिप ॥ ततोऽर्जुनः प्रीतमना बभूव विगतज्वरः ॥ द्रोणश्च सत्यवागासीन्नान्योऽभ्यभवदर्जुनं
॥ ७४ ॥ द्रोणस्य तु तदा शिष्यौ गदायोग्यौ बभूवतुः ॥ दुर्योधनश्च भीमश्च सदा संरब्धमानसौ ॥ ७५ ॥
अश्वत्थामा रहस्येषु सर्वेष्वभ्यधिकोऽभवत् ॥ ७६ ॥ तथाति यमौ यौ नकुलसहदेवौ ॥ ७७ ॥ युधिष्ठिरो रथश्रेष्ठः सर्वत्र तु धनंजयः ॥ ७८ ॥ ७९ ॥

[illegible] ॥ ५९ ॥ इति भावार्थभावदीपे संभवार्थप्रकाशः समाप्तः ॥ [illegible] ॥ १ ॥

[illegible] ॥ ४ ॥ [illegible] ॥ ४ ॥ निर्वेदात्

प्राहुः पंचलक्षण [illegible] महात्मनः ॥ [illegible] ॥ १ ॥ [illegible] ॥ २ ॥ नच [illegible] ॥ ३ ॥ [illegible] ॥ ४ ॥ [illegible] ॥ ५ ॥ [illegible] ॥ ६ ॥ [illegible] ॥ ७ ॥ [illegible]

॥ ११ ॥ [illegible] ॥ वैशंपायन उवाच ॥ [illegible] ॥ १ ॥ [illegible] ॥ २ ॥ [illegible] ॥ ३ ॥ [illegible] ॥ ४ ॥ [illegible] उवाच ॥ [illegible] ॥ ५ ॥ [illegible] ॥ ६ ॥ [illegible] ॥ ७ ॥ [illegible] ॥ ८ ॥ [illegible]

[illegible] ॥ ९ ॥

[illegible] ॥ २ ॥ [illegible] ॥ ४ ॥ निर्गुणं [illegible]

स॰ भा॰ स्क॰ १२ अ॰ [illegible]

२४२

म. भा.
आ. प.
२४४

गंथर्वैन गणकारमङ्गल रुद्रं ॥ २० ॥ यन्नक्षिमार्गेम्बुलक्ष्णानलाद्दीनाथर्थचर्यामृमार्गात् त्रीश्रीतन सने
गान२ह्निणप्रदेत्वणमंत्रुलगणाहिनूपान्तहमार्गां लिर्थिगर्भ्यपः रहेऽग्नचरणरूपान्तवान्नामू मि
श्रुत्याद्दिश्रष्टेषुभविता ॥ २१ ॥ लाचैवंश्रोत्रंश्रोत्रंवंचानरी एके नैव ह्रेके नम मंत्रानृ मिले नृश्रुतापर
नेकाश्रुयनिवारणंश्रोमार्गसर्वैनो [illegible] ला [illegible] लाएमानेक हेमूश्रुमक्तानां गननेनामिलवाक्ष्यिप
नन्नृमायवलेनुयरहीनश्रापकार्मकं ॥ गंथर्वैनगणकारं येष्ट्राने विहितामवल ॥ २२ ॥ सह
सांश्रुकृश्च्यम्नेनएः शानसहम्सराः ॥ विसर्यानृसलनम्ननाः सांश्रुमाण्णिनिमारता ॥ कृतार्थ
नथितेमार्गत्वयचर्यामवासकृता ॥ गुनरुषिश्रुषीचलिवृतेचमहाबलाः ॥ सह्नीनहेकृचमर्गा
एलताभूयः स्वहाणिणः ॥ मकृमार्गीसवर्याहिताश्रेयः सर्वाहमूमिष ॥ २३ ॥ तावुवंश्रीहवंश्रोमं
गङ्गालिहनश्रहिनां ॥ हसश्रुलन्नसर्वेमासमोणादकृचमेलिः ॥ २४ ॥ प्राणानिम्भ्यमहश्रोमयाय
नन्तकोरवी ॥ सवनीर्णलन्नहलानेकृश्रूणानिचावनी ॥ २५ ॥ वहकदी महावाहुयोरक्षाय
वध्यितं ॥ सहनौवासिनाहेलाः समदोकृनयि ॥ नौप्रर्थक्षिप्रमयानिवक्रनवें महावलो
वेरनर्मितुवगती मरमश्रविवकृतवी ॥ २६ ॥ विरोधनतयाव्याघ्रमाय्योः पाउवादिः ॥ न्यवरये
ताननर्वकृमार्गणां विचेष्टितं ॥ २७ ॥ इत्यादिपर्वणमहाशोक्तादैशक्षत्रउवाच ॥ कृत्राजेहि
गाश्लोमीमचवलितांवदो ॥ पवयानकृतलेहः सहितेवामवलनः ॥ २८ ॥ हमीमकृराजेतिह
भीमःतिनदपन्न ॥ वृक्षाग्राहविवुलाः मङ्गःसहमीस्थिता ॥ तिनः श्रवः श्रावलनिमें
गमाबोधाश्रहिमान ॥ भगवतः श्रिश्रुत्रमश्रास्थमानमत्रवीन ॥ प्राणाकः [illegible] तराये
नौमहावीर्येकृनयोगान्नमावयि ॥ माभूदगणकौयांतभीमश्चयोयनोहवः ॥ ३० ॥
नमभीतर्वेद्रसहितांहेकृम्मनाहल पवपतिनपुलतिकंगलमरुलवं ॥ प्रयोगंनिरुपीतं
३१ ॥ हर्षोपाप्यांतेनमकार्योः ॥ न्द्रनौषाहेकृताणिवापिनाहलितीं ॥ ३२ ॥ वेगतः पश्चाभहल
गतावलानवकव [illegible] मार्गस्यपतिवेदपालनमनौ ॥ ३३ ॥ पांडवाक्षिः कृती ॥ ३४ ॥ श्री [illegible] पः ॥

विरा०

243

२४४

[illegible]

स॰ सा॰
श्रा॰ पं॰
२४५

[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible] ॥ २॥२॥३ ॥ ॥

[illegible]

244

२४५

॥ मूर्खान नरश्रेष्ठः ॥ चिरस्थानलपः ॥ ७० ॥ यदुक्तो पांचालि चांगो छेन सोयाः नचा [illegible] नचारणो [illegible] लिता
णो [illegible] चर्मसदं ॥ ७१ ॥ कर्ण चनेनि ॥ नरोकोमेक कव चानां ननधमा जाल सान्नेन स्य चक्रमा दर्के [illegible]

वैशंपायन उवाच ॥ तन स्लाच स्थन नाहो गद्द [illegible] चारिनो ॥ धृतंना नानि [illegible] महाहे साधि
नाणि ॥ ७२ ॥ ततो राणां [illegible] नानो हो [illegible] चोनमडवीन ॥ नि चार्थ वा दि [illegible] महा [illegible] निमहाने ॥ ७३ ॥
[illegible] मूर्खान नरः सर्वे [illegible] नि पाण्ड ॥ [illegible] मूर्खान नरः सर्वे [illegible] ॥ ७४ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ७५ ॥ यदुक्तो [illegible] ॥ ७६ ॥ ततः सर्वे [illegible]
[illegible] ॥ ७७ ॥ [illegible] ततः [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ ७८ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ ७९ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ ८० ॥
[illegible] किन्नमरो भवत ॥ ८१ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ८२ ॥ ततः [illegible] किमेषा [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ८३ ॥ विदुर उवाच ॥ [illegible] पांडुनन्दनः
[illegible] ॥ ८४ ॥ धृतराष्ट्र उवाच ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ८५ ॥ वैशंपायन उवाच ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ ८६ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ ८७ ॥
[illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ ॥ इति श्रीमहाभारते [illegible] ॥
[illegible] ॥ ८८ ॥ [illegible] ॥ ५९ ॥ ॥

कर्णो विरमद्युधन ॥ २४ ॥ पार्थो वा युध्यत: कर्णेन किरीटी शरवर्षिणा: ॥ भारद्वाज: कृपो भी
ष्मो द्रोण: पार्थलनो भवत ॥ २५ ॥ हि याताः सम्मतमनी लोके यमजायत ॥ कं नियोन इहनामो
इ विज्ञानार्थानपापम ॥ २६ ॥ नीनघातो हमाणता विदुर: सर्वधर्मवित ॥ कं नीमाश्च सुधामाश्च
शेषाभिष्ठिर नोऽर्के ॥ २७ ॥ नन: प्रत्यामन प्राणान्नाद्ग भोगनिष्ठिनो ॥ पश्चो इष्मामस भाननानो
न्तपघन किं वन ॥ २८ ॥ नाद्य घनमह चापो हरूप: पमाद्ध लोक्रवी ॥ हे दृष्ट समपाचारे कृपाल: ॥
सर्वधर्मवित २९ अथ प्यायापालनय: कर्णोयम्यंदुर्नेदन: ॥ कौरवोभवना पार्थ दृष्ट्वा
कृष्णनि ॥ ३० ॥ नमपोवं समहाबाहो मानं विनं कलं ॥ कः प्रथमवन वै द्रोणेपांतं कल
भूमता ॥ ३१ ॥ नानो विदिनापार्थ हांप्रनियोस्य निवानवः ॥ द्युपाकवम समपाचारे नयुधंने
द्रुपानाना ॥ ३२ ॥ वैशंपायन उवाच ॥ एवमनकुष्णकर्णोप्रज्ञो इव वनन मानन ॥ वमोवधांव
विशिवंपमानानि विनय था ॥ ३३ ॥ दुर्योधन उवाच ॥ आचार्यं विविधांपानीनं तं यथा हवि
नियत ॥ सकलीन अथ श्रुत्वा सेनां प्रकर्षन ॥ यघपघकालानेयुद्धेनानानापोदभिद्ध
नि ॥ नम्पादेवीगाविवघसमधानापेभिविन्यते ॥ ३४ ॥ वैशंपायन उवाच ॥ ननलोमिन्तारा
कर्ण: सलाजकहमे वैदे: ॥ कां च नै: कांचने पीठे मन्नविद्धि: शिर्महात्मा: ॥ अभिषिक्तं गागाऽ
सथियायुक्तो महाबल ॥ ३५ ॥ ततः ब्रवाणं अज नीज यथा होता नेताच ॥ उवाच वैदेवराजा
वचनं महद्घलाद ॥ ३६ ॥ अथ राजा प्रहसन प्रसद्य पार्थं किं ददानि नो ॥ महाहि राजा वा ईल
कर्णो द्रुहितनयानाः

सिंहर्षभगजेन्द्राणां बलवीर्यपराक्रमः ॥ रौक्मिकं नियम्य नियतौ सर्वे इष्टलोकपमः ॥ ५ ॥ सांप्रतं वन
कुलालाभसिंहसिंहनेनो युवा ॥ तां ते त्वयैव यतः भीमा माहकरमणानासंभव ॥ ७ ॥ स निरीक्ष्य महाबाहुः
स वैनोयसमं ऊले ॥ अथ तं मसूचनाक्रमयोः भीमार्जुन क्रियावकुरोन ॥ ८ ॥ समस्यानन्तनेः सर्वे निःश्वलः स्थिरलो
चन ॥ करोयक्रियानानः सोभः वैरेन हस्तावरीभवन ॥ ९ ॥ सोऽब्रवीन्मेघगंभीरस्वरेण वरनावर ॥ यं चाहि
मयोनसवो हि मेवं सर्वतोनन ॥ १० ॥ सौ निशम्य मननं सा तु इर्षोयन महाविशाल ॥ द्रौ यह कोयस्यवी
भन्तो वाणीनानाविवेशास ॥ ११ ॥ ततो द्रोणप्रभृतान्नः कर्णः पिराश्रमाः सह ॥ यन्तकनेनव पार्थेन ता ॥
चकारामहाबल ॥ १२ ॥ पश्च दुर्योधनस्य भ्राताभिः सहभारत ॥ करोति विक्रमस्सर्वान ततो वचनमब्र
वीत ॥ १३ ॥ वैशंपायन उवाच ॥ स्वागतं ते महाबाहो दिष्ट्या प्राप्तोऽसि मानद ॥ अथ हृच्चक्रहस्तेन च पश्यतो हम
पश्यता ॥ १४ ॥ कृष्ण उवाच ॥ कन्ये वै सह मन्यसा हि ते चतनपागते ॥ दृष्ट्वा हृष्टं च पार्थेन कर्ममिदं
स्य हृष्टमो ॥ १५ ॥ भव लभो गाम्भया सार्थं वेपूना प्रियकहृव ॥ उहेदं कृष्ण वै मामपि पारमहि दम ॥ १६ ॥
वैशंपायन उवाच ॥ ततः स्मितकिया मानेन मनसा पार्थो ममापन ॥ कर्णोऽयान्नस्मनृद्वस्यमधो चव
मिवदित्यते ॥ १७ ॥ अर्जुन उवाच ॥ अन्नाहृतोयपश्चमाममनाहृतोपनलिनं ॥ देवोऽकाशन्नः कृष्ण
मयानवाविषनस्य ॥ १८ ॥ कृष्ण उवाच ॥ देवो गंधर्वसामान्यः किमत्र नवपद्मानन ॥ वीर्ये श्रेष्ठाश्च रा
जानो नलेय मीनवर्नते ॥ १९ ॥ किं देवपर्ई वेवाशायाः पार्थेः कथयभारत ॥ गतोः सहस्रं यावन्न हृता
मधशिरः पार्थः ॥ २० ॥ वैशंपायन उवाच ॥ ततो द्रोणप्रभृतानः पार्थः परं तनयः ॥ भ्रान्तमि
त्वयाक्षिप्तो रणायोपजगाम ततः ॥ २१ ॥ ततो दुर्योधनेनापि संभ्रान्तासमरे धनः ॥ पश्यतं स्थि
तः कृष्णः प्रत्यहाभणां धनं ॥ २२ ॥ ततः सविस्मयस्तानितैः सेहापूर्वके रागमेः ॥ आहृतं गमानमे
वेदैस्तावकार्थं किराविभि ॥ २३ ॥ ततः सोऽहं दृष्टिहृदयं हृष्टां गावलोकिन ॥ भालकतेपानयत्रा
कुहमीयो युगतानवनान ॥ २४ ॥ मेघकाशोपमहसनतोरथ्यनफालानः ॥ हृषीनपपविविमः

२ ॥ यस्यायेन तां तेन तथोः सोऽयमन्ततमसं कार्मुकं पाण्डेन समुद्धतामस्य तथा तां वा पार्थः सम्यग्बाणैर्निनि
न्ये प्रतिक्षिप्तं प्रति तांस्तदा योनिमर्थः ॥ २४ ॥ सकार्मुकं सोऽपि निष्क्रान्तः विनतां प्रमसः ॥ २५ ॥ अर्जुनः
१२२

समस्तं तेन समवधं समर्थं तद्बाणैर्विनिवृत्तिं ॥ कथयामास महात्मा सर्वं तथा वाक्यं तन्निघ्नन्ति ॥ २६ ॥ इति
वीरा समवहं तं तां पार्थः सर्व देवाः ॥ अनेन वाहू वीर्येण समवाप्तानन्त विनाः ॥ २७ ॥ तस्य वाम
न्न श्रेयं न तां नाम हि चेष्टितं ॥ तथा महामुनामा विनाम पञ्चक कार्मुकं ॥ ततः सर्वे सर्वं तं ।
स्मृत्वा तोयमहात्मनः ॥ सायुधा सन्नद्धः सर्वे सत्यमनयं ॥ २८ ॥ ततो द्रुपदः कर्णं
मालसारथ केशवः ॥ दीप्तिमत्पिकतमालोक संशयाद्विनिर्दिष्टं ॥ २९ ॥ पाण्डवाश्च महत्त्वेन;
सकृत्पार्थ विशांपते ॥ भीमसेनमहिमनः सर्वे युधः संदिग्नि देवताः ॥ ३० ॥ अनेन नियतः कश्चि
त्कश्चित्सर्वे विमानान् ॥ कश्चित्पुनर्यानि देवानृषिगणैः प्रतिवाद्यताः ॥ ३१ ॥ कुमारामभिताड
मन्तकामहाविनं ॥ उत्तमाङ्गे सर्वेषां समाश्रयन् ॥ ३२ ॥ इदं यस्याभिनरकर्णसामा
युधा ॥ अभ्युद्यतेनवं तानादिमन्तराप्रीयतः ॥ ३३ ॥ स चापि वीरः कृतशान्तिः कृतः श्रमः
पीततमामं ददौ च वायं पुष्पिमहात्मा अभवत्तस्य सततं कर्णस्यो विधननर्थः
तो ॥ ३४ ॥ इत्यादिपर्वणि संभवपर्वदर्शने ॥ वैशंपायन उवाच ॥ पाण्डवास्तेन महाप्राज्ञ तामात्मसमीप
तः ॥ १ ॥ पर्वतं दिशं सर्वेषां कालेषामात्रमन्यनवैरहः ॥ २ ॥ ततः शिष्यान्समानेऽपि प्राचार्यं पार्थमचोद
यत् ॥ ३ ॥ आचार्यः सर्वान्शिष्यान्दक्षिणार्थं समाहूयत ॥ ४ ॥ पाञ्चालराजं द्रुपदं रणे जित्वा तमानय ॥ ५ ॥
पाञ्चालं तमहं रणाय साधुं द्रुपदं रणे ॥ ६ ॥ न योत्स्यत्तानतेषां सर्वे श्रेष्ठतां समहाविनः ॥ आवा
हं गुरुदक्षिणार्थं द्रोणेन सहिता ययुः ॥ ७ ॥

पाण्डवानां ॥ अनन्तरं विनिवाना ॥ ८ ॥ अर्थं गावेदं कृतमितरं रचितास्ते ॥ २४ ॥

246

सिंहर्षभगतेंद्राणां चलचीर्यपराक्रमः । ईदृशं कं नियताभिमतेः सर्वेषु खलु लोपमः ॥ ४ ॥ प्रांशुः कन
कतालाभो विहसंहननोपवा । शांतस्त्रियगणाः श्रीमान्मानकरथ्या नरर्षभः ॥ ५ ॥ तं निरीक्ष्य महाबाहुः
सर्वलोकमनोहरं ॥ प्रणाम्य श्रीमाकृष्णो गांधारीदत्तमिवाकरोत् ॥ ६ ॥ प्रत्युवाच ततेः सर्वे निःस्पृहाः स्थिताः
तनः ॥ कृष्णं मिमाननः चोमः चैतन्य त्वलपरीभवन ॥ ७ ॥ सोऽप्रवीत्संयोगो भीरुस्तीष्णवदनोवरः ॥ यं ज्ञाहि
महावीन्नस्यो हि संवे सर्वलोकन ॥ ८ ॥ श्री निशम्य मननगाद्यदुर्योधनम पापचिन्तन ॥ द्रौपदीकोपसंचरी
भर्तृसं स्वपोनाना विवेशार ॥ ९ ॥ ततो दुर्योधनस्तानः कृष्णः प्रियसनाः सर ॥ यत्स्कंनत्र पार्थेन त
च्च कामप्रवल ॥ १० ॥ पप्प दुर्योधन न्नतत्र श्मान्यिः सहमानं ॥ कर्तीप विस्तुर मदानलोवचनमब्र
वीत ॥ ११ ॥ दुर्योधन उवाच ॥ स्नानं ते महाबाहो दिष्ट्या पांतोभिमानतः ॥ सुहृच्चक्रहतं नव यश्रेष्ठम
पसृपतां ॥ १२ ॥ कृष्ण उवाच ॥ कृतं च सर्वं महासन्तप्तविनं चत्रपापान्तोषरेद्रस्थं च पार्थेन कर्तुं मिच्छा
म्यहमत्मो ॥ १३ ॥ भवत्वमोपा नामपापसाधे वे धूर्तना प्रियकृद्व ॥ उदेददं कृष्ण चैपामृषि पारमर्दितम ॥ १४ ॥
वैशंपायन उवाच ॥ ततः स्मितमिवाभाते भगवान्पार्थो महाबाहौ ॥ कर्णोभ्याव्रसमृद्धमण पो चल
मिवादित्यं ते ॥ १५ ॥ अर्जुन उवाच ॥ भवान्हृतोपपर्यान्मनाहृतोपन स्विन्नं ॥ रोन्नस्तु कृष्णः कर्ण
मयूरवपुरयं स ॥ १६ ॥ कृष्ण उवाच ॥ रोगो यं सर्वं राधानः किमस्त्र नवपालन ॥ वीरो प्रज्ञाप्य
नातोनवेयमीनवर्तते ॥ १७ ॥ किं देवेषु वैनाधार्यः सर्वेः कष्ट यभाग ॥ तदनंतः सर्वदंयावत्रे हृता
सहस्रिमः पार्थेः ॥ १८ ॥ वैशंपायन उवाच ॥ ततो द्रोणमपनस्नातः पार्थः पराङ्गनयः ॥ भ्रात स्मि
स्वरयाद्विलोरणायोपज्ञामस्त ॥ १९ ॥ ततो दुर्योधनेनापि सभाजनसमतोषन ॥ पार्थं ऋनः स्मि
तः कृष्णः समरसाहरणं पन ॥ २० ॥ ततः स विष्णुः स्वाति ते सेद्रायुध वोगुषेः ॥ प्राह तं गगनं मे
चे वेलाकार्यं कि तातिमि ॥ २१ ॥ ततः लेखासि रिदं यदद्यूत्पणावलो किन ॥ भाषस्तेपानयज्ञा
र्पो हमीपोपगनानन्नानन ॥ २२ ॥ भेजकायोपष्टदृसततोरपपत फालानः ॥ दुर्योधनपपिसि

स. भा
ग्रा. पं
२५७

१॥ यस्य येन [illegible] कार्मे कं [illegible] इति ति
[illegible] निमर्थः॥ [illegible]॥ [illegible] निग्रमः [illegible]॥ २५५॥ [illegible]
१२२

[illegible] हितं॥ [illegible] निष्पाति॥ २५॥ [illegible]
[illegible] नेन [illegible] लिना॥ २६॥ [illegible]
[illegible]॥ [illegible] कार्मकं॥ [illegible]
[illegible]॥ [illegible]॥ [illegible]
[illegible]॥ [illegible]॥ [illegible]
[illegible]॥ [illegible]॥ [illegible]
[illegible]॥ [illegible]॥ [illegible]
[illegible]॥ [illegible]॥ [illegible]
[illegible]॥ [illegible]॥ [illegible]

246

[illegible]
नौ॥ [illegible]॥ [illegible]॥ [illegible]
[illegible]॥ [illegible]॥ [illegible]
[illegible]॥ [illegible]॥ [illegible]
[illegible]॥ [illegible]॥ [illegible]
[illegible]॥ ५॥

२५१

[illegible]॥ [illegible]॥ [illegible]॥ २५॥

[illegible]

म॰ भा॰
शल्य
२४८

नमलं यहं मपपश्चिनं च स्व नाना मसामसन दण्डकौ यानेवे निषेदुः ॥ नइदं नीनि चापि नइदं नं
सायमनानामनीक्षानि नन्दनारे वमाननं ॥ ४॥ इयौं यनं विक्रमं चक्रं चापि महाबलं ॥ नाना
रूपमनानाकी यत्नौ मानि विविधानि च ॥ मनानवक्त्रं वच्चं चरणं नानेपथ ॥ ५॥ नाना
नानयः सर्वे मसले यौष्ठमिलना ॥ मामवदनं रक्तं मुखं मामानामाव ॥ ६॥ मवालरक्तले
यौप्तः कौरवानामप्रतुलदा ॥ स्व नानानमलंतु रक्तौ रवानेवमानं ॥ इवं निमानदं निमतं
नः पांडुवानानि ॥ ७॥ पांडवालं नंस्व नानानी नालोमहं यतः ॥ प्रभवयनतो दुनी यथा ना
रुरुद्रुलव ॥ ८॥ शुचिविरनिनायी प्रमानुहवेनि पांडवे ॥ माइयौ वकरं रौन्नफनानुरवनद
कौन ॥ ९॥ सेनाप्रनौमौम सेनः सहमं रुद्रयामह ॥ नदतुरबं नस्वनानान्यं भिः महिनानदः
श्रावभ्रुवेन कौने यांयुष्ठेनानानात्वग्निप्रः ॥ १०॥ पांचालानां नानः सेनामहनां चलिः स्वनं
भीमसेनो महानाहुः इव पांचालानं क ॥ अविवेशमहासेनामकुः मारयथा ॥ ११॥ स्वय
ममदेवन्नौ मौ नानानीकं गमापरः ॥ स्तुहकशलः पार्थो वाकुवी यनावानः ॥ सहनंक
नीकं यदः यावानहापरुह ॥ १२॥ नेननामिरिंकांपाः वानोह सिरवह ॥ भीमसेनमाग
द्याभित्रमलक पिवक ॥ १३॥ पनेनिर्हिरमभौ वनवानानि वाचलाः ॥ नानानसार्वं यांडे
वपानयामास पांडवः ॥ पहानीमयांडे दयवधीरनेनापज ॥ १४॥ गोपालवदे नसथा
पश्चानानन्नने ॥ नानयमय नानाम्बं कनवानरकेरवः ॥ १५॥ वैशंपायन उवाच ॥ माइकर
त्रिगकले मधनः कुनानानया ॥ पांडवं पार्जनाने नाविपनानानस्वपांडवः ॥ १६॥ हयो नाश्च
रथो नाश्च गजो नाश्चमं नननः ॥ पानयन नमपेनन नपुनानानि विवलेन ॥ १७॥ नननलेह
मानानावेपांचानाः दिजयानया ॥ कौरेनानानाव पौन नपापं पांसवार महे वश ॥ १८॥ निहनांद
॥ मौविः कनानममयुनानपांडवेः ॥ १९॥
वपांडवानानी मथः ॥ नयानननंदी वेमयिनेयं ॥ २२ २२ ॥

२४८

247

हे॥ ततो महत्पितिगमनाः हृष्टो मार्गे तमसन्न्याहो भन॥ ५॥ नेप्रतोद्विजः यत्नहेन माललस्लैतिषो[illegible]॥ ६॥

ततो भिन्नमनाः पांचाला क्रिद्धं नलेन रधिमाः॥ ममकुलस्य नगां कुपदस्वमहीजसः॥ ४॥ कुर्वीय
नस्य कर्णापुत्रपुत्रस्य स्वमसहाव्रतः॥ कृष्णस्यनो विकर्णास्य नलस्य धःस्व सेना वनः॥ ५॥ ततो चान्ये
वनहृवः कुमायावाङ्क विक्रमाः॥ अ[illegible]मिस्रो वन्निय धिभाः॥ ७॥ ततो वार स्था वृहा क
मायाः साविभिः सह॥ प्रविष्य नगरं सर्वे ततो माहिम न्यायत्र॥ ८॥ ततो क्षिप्रकालेन पांचालः श्रु
ताहृष्टमहत्तः॥ भ्रातृभिः सहितो राजन्लाया निषेधो सहृतः॥ ९॥ ततस्लक्तनमस्वाहिष्य दूसह
मोमहीयरः॥ तत्र वीक्तिमेचैनः पापोद्वृजः सर्वथवेन॥ १०॥ ततोरथेनस्य धर्मात्मा सम्प्रासाद्य ततो
भूवान॥ यथा सेनः पापान्न्यायान्नरसि त्रु धिष्ठितेय॥ ११॥ इति श्रीद्रौपदी स्वयंवरे अध्यायः॥ एवमेवतनसंमस्यपा
वीजूलाम स्थावर्वीन॥ द्रौपदीकृष्णा मा तमा चास्ये द्विजसत्तमे॥ १॥ एषां घटकसमस्तानेवय
क्रवीमसार्हणी॥ पतेरथ वराः पांचालास्य हीते रणाम ध्येति॥ २॥ अवस्मत कानवैनोयो भ्रातृभिः
सहितो नव॥ सर्वे अपांतननगारत्निष्टः कहिरेवसः॥ ३॥ द्रुपदः कंवखान्पूर्वपावन समन्त
न॥ वारस्तालेनमसत्तमो हथन्कोरवीचमं॥ ४॥ तमथन रथोनेक आत्मका वितामारवे॥ म
नेकभिवसंज्ञात्मानो निरेवनचकेरवा॥ ५॥ द्रुपदस्यपापयोपविचेहः सर्वतोदिशं॥ ततः पांचा
ध्रुमोधो सम्हेम्यास्यसहवयाः॥ ६॥ यावाद्यतमसहाराजन्पांचालानानिचेष्टाने॥ सिंहनादस्य
ग्रानन्देर्पचालानोमहानाः॥ पनश्शेनलपापु सृष्टस्य पूजनानेमहन॥ ७॥ द्रौपदीजनि
कलिष्टावयाकृशीहे लोचनः॥ द्रुपदः मसनसयस्कुन्दः पाररथीरवाकिरन॥ ८॥

कृष्णामकवीर॥ १२॥ १८॥

म. भा.
आ. प.
२४८

५६॥ ततो हिडिंबं [illegible] ततस्तस्माच्च [illegible] वाहयामास [illegible] सिंहनादमथ
नदच्च भीमो महाबाहुर्मर्दनीनं तथन्तं बलाः॥ ततश्च पार्थो यतनः हिडिंबं [illegible] ॥ पंच
मिलन [illegible] ॥ ६१॥ ततस्तं [illegible] ॥ [illegible]
कौन्तेयः सिंहनादमथाक [illegible] ॥ ६२॥ [illegible] पांचाला [illegible]
मा [illegible] ॥ [illegible] ॥ ततस्त
पांचाला [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] निर्जगाम [illegible] ॥ ६४॥ [illegible] ॥ [illegible]
नगरं तु [illegible] महामनाः॥ ६५॥ अर्जुन उवाच॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] भीम [illegible] ॥ ६६॥ वैशंपायन उवाच॥ भीमसेनस्तु [illegible]
निवारितः॥ [illegible] महाबलः॥ [illegible]
[illegible] ॥ ६७॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ६८॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ६९॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ७०॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ७१॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ७२॥ [illegible] ॥ [illegible]
हिडिंबा [illegible]

इति हिडिंबवधः॥ ५॥ [illegible] शक्तिर्महाबलाः॥ [illegible] ॥ ७४॥

२४९

ततः स समवहीरं समहाद्भुतदर्शनं ॥ सिंहनादस्वनं कृत्वा नानाशस्त्रास्त्रकल्पनैः ॥३४॥
ततः किरीटी सहसा पांचालानां समरे द्रुवन् ॥ श्रान्तश्चिपन्नास्तेन महत्वामोदयत्रिव ॥३५॥
धीविक्रमः [illegible] नानांसंस्थानस्य कालिपु ॥ नानारंदृशे किं चिन्नैतेनत्वरय पाण्डित्यनः ॥३६॥
सिंहनादस्वनं तेसात्युधा हुनमिश्रितः ॥ ततः पांचालराजस्य तथा सन्यजितानामहं ॥३७॥
नयमानोपि द्रुपदं च महद्दंपाच रोयया ॥ महतापाद वर्षेण पार्थः पांचाल महात्मेन तु ॥३८॥
ततोहत्वा हत्वा पादपुत्रा सीमां पांचालकेवले ॥ निघ्नन्निम हां सिंहानानामिव सुस्थपः ॥३९॥
न द्रुपदा पार्श्वे तं स्थानेस्याजित्तस्यन्यविक्रमः ॥ पांचालेन पार्थो मेघमीक्षन्नेनतपमइउवतं ॥४०॥ ततः
नव्हलीनपांचालो गुरुसमस्य सामानी ॥ अवलोमयेनानो तेन्याकिंदृवैरोचनाचित्र ॥४१॥ ततः श
सत्यजितं पार्थो दशभिर्मर्मभेदिभिः ॥ विव्याधं स्वबलं च महावेन दृष्टाभिवाभवत् ॥४२॥ ततः शौच
पुत्रास्तैः पार्थं पांचालः शीघ्रमर्दयन् ॥ पार्थेस्तु पाद वर्षेणाछादयमानोमहत्स्यतः ॥४३॥ वेगांच
द्रे महावेगो धनञ्जयमर्दयस्य च ॥ ततः सत्यजितश्चापं छित्त्वा नानाम [illegible] यानं ॥४४॥ प्रथमं
सदृश्य [illegible] लिहेगावमानं ॥ पार्थेश लंकार्थं पार्थो विवाय पदमनाः ॥४५॥ सेनान्यमहस्वे
पांचालः पांचालेनाहितो गुधि ॥ ततस्तया विनापार्थं शरामहसत्वरानं ॥४६॥ द्रुपदाद्यान्पंथत
महिंमसोनो पाहिमध्ये ॥ सततश्चाभिदृष्ट्वामानेषु कार्मुकेषु पुनः पुनः ॥ द्रुयेषु विनियुक्ते
षु विशिखो भवदारुवे ॥४७॥ सहसत्यजितमालोक्य तत्याविमलत्वमारुहे ॥ वेगेनमहतागत्य
ञ्जन्मयं वर्षेण पांडवं ॥४८॥

म॰ मा॰
श्रा॰ पं॰
२५

तउरकानिट्ठनष्टाईशामर्दनेजिननिहं॥ ५॥ नीर्थीमाजंजनंगमप्पितंसंग्रहपावित्र्होदार्थमिम
थं:॥ ९॥ अल्पवीर्थप्रमानरोधु॥ ६॥ नयाग्राहानंमोवयनाग्रामग्रागोवसमपोविधालाभ
नेनांगउरवेदहिगाणहानं॥ ५५॥ उनगमरक्रष्टनांदिपांउपदेशग्रायात्मामवानचराणेत्रुपर्मर

[illegible]

२४९

[illegible]

म॰भा॰
श्रा॰प॰
२५१

[illegible]

[illegible]

[illegible]

250

२५१

वहत्पर्वणि नवं नः ॥ २४ ॥ ...यैः ॥ दुष्टिकानगाधिकु
पालः हि तिनः पा तहिसापां ॥ २३ ॥ ...मर्वेत्रयामाः यज संगा... ॥ ...
न ॥ ५ ॥ ...वनलादेदनीति पतां ॥ २ ॥ दुष्टिन ...सर्व... मिनन ...नानादि नि गम्यते ॥ ...
...वने नव ...निचन ...पारेव ...

...पार्थे नधीमता ॥ २५ ॥ ...
...नीवव ...सुरमानी ...॥ विन तो नाम ...वीर ...॥ २६ ॥ ...
...नानि ...॥ ...मि ...नाम ...वीर ...नयन ॥ २७ ॥ ...
...नाम ...चरः ॥ ...नः समरे ...नयः ॥ २८ ॥ एवं
...नाम ...॥ ५ ॥ ...ध्रुवाः ॥ २९ ॥ ...
...नान्तादि ...मनः ॥ ...वैश्वः ॥ ३० ॥ ...
...नः ...सहानि ना ॥ ...उवाच ॥ ...
...॥ २४ ॥ इत्यादिपर्वणि ॥ वैशंपायन उवाच ॥ ...
...ततः ॥ ...॥ २ ॥ एन
...॥ ...
...॥ ...
...राष्ट्र उवाच ॥ ...॥ वैशंपायन उवाच ॥ ...
...॥ ...नने ॥ ४ ॥ ...
...॥ ...

...॥ ...
...॥ ५ ॥
...॥ २ ॥ ...

४८॥ मयेनेति॥ प्रत्यगात्तु समासम्नामप्रत्युत्क योगोक्तागदरूपणानेन कलत्पणोनसास्वसाम
र्थ्येन च बुद्धिभेदः॥ ४९॥ इतवाक्येवंकर्णेनोक्तानि पाठे पि ते न मान्ये वार्थः॥ बृहि माण मिन
सूचकं मनि वर्णन यति पाठे भूमि वेदः न॥ ५०॥ उभौ जिगीषुतत्सो पापनपाने पापय नौ वेक्षु

णनक्रिड्रेव कालेन नकुलो प्याल कामदः॥ न मन्याव मह्यानन कुलं तं व कोवने॥ ४४॥
सवागवलमनाग्रिम निर्जिता लेपनो गताः॥ ममद्तानि पुष्टं नभ स्त्व मांसयपशिते
४५॥ नकुल उवाच॥ महान वलोदक ष्वेव बुद्धिमान पि मूढकः॥ निर्जिताय नवपाचीत
लक्षा दीनोगेभवान॥ ४६॥ ननपाण्डुसरे यो हृमिन्नकालोप्युपापामन॥ कर्णउ
वाच॥ एवं तेषु प्रयातेषु जेष्ठेकाद्रमानसः॥ लोकानिष्पनद्गांमानसेकः सन्मप्रनिष्ठ
यानः॥ एवं समावारिते सुरमेष्यनमूपानिः॥ मयेनमे दत्वोद्गीहं सरामनज्ञविक्रमेण
लब्धमर्थं प्रदानेन समसम्मनन योजसा॥ ४७॥ एवं तेन कथितं राजन् धृतराष्ट्रपरान्तथा
पुत्रः समालोक्य भ्रातावापिनावापहिवागहः॥ निपुष्णानेपुवनेनः कर्णमाभ निवर्य
नाः॥ पापपुत्रा नाप्यहं हन्याद्दुःशासनेन बाधुनः॥ ४८॥ विशेषमापापावापिनोपादेन क
पंचनि॥ उभौ चेन्म पापापेनौ युद्धं वालयवर्धने॥ मनेदपपवलिमस्य कार्यकार्यमः
जाननः॥ सप्यपनि पत्र स्पमां सम्भवनि पापासने॥ ४९॥ कुरुक्षपकुरुद्धपः स्त्यालिसित
पूर्वाभिभाषिता॥ नवापवमपधेसेकदद्यविकोपमेदनः॥ मद्दीप्रभाव्यिंदद्भुपाल्प
हारवापिभारन॥ अङ्गलवहकपापीनशोवेनवद्दन्व॥ ५०॥ ग्राम्यामयेन्नापिपदांसा
नयमं पद्यानिभिः॥ मृत्युपापमहेकालेयपद्यांविलिनेपथि॥ अपिचेता पिनयस्यपमं
मसिभ्रमनिहन॥ महिप्रदश्यानैहेपः शोलाश्रैर्विवाधिनेः॥ ५१॥ हवालोमडकाबाद्याव

स्ववर्णने॥ यद्दृष्टे च कं वाप्यामि निमेदिनौ॥ ५२॥ ननमोहोपुपिधिरः कथंहं नम्यमापा
कान्ह॥ पुरेति॥ अववलिमस्यप्रानवलेनगाविनप्र [illegible] पांडो मामम न मिममजानन लोप

म [illegible] ॥ ४१ ॥ [illegible] ॥ ४४ ॥ [illegible]

जंबुक उवाच ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ ४७ ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ ४८ ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ ५० ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ ५१ ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ ५२ ॥ गृध्र उवाच ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ ५३ ॥ जंबुक उवाच ॥ [illegible]

[illegible] ॥ ५४ ॥ [illegible]

[illegible] ॥ ५५ ॥ गृध्र उवाच ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ ५७ ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ ५८ ॥ जंबुक उवाच ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ ५९ ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ ६० ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ ६१ ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ ६४ ॥ एवं [illegible]

[illegible]

न ॥ ११९ ॥ [illegible] ॥ ५३ ॥

म॰ भा॰
श्रा॰ सं॰
२५५

253

स्त्रासिग्धेत्यनेनेति प्राप्तीयं ह्रस्वस्य कथं कमाह ॥ सतृष्णिन इति सतृष्णिनः प्राप्ते नैव फलाशाः
प्राप्तेन न फलं दर्शितं न प्राप्तस्य नास्ति विशेषो नजर्थे मानमस्य शान्तव्यं न ॥ श्रामः पचे भवति
वेन्नवनीतेन यत्नमपि न शत्रु सोऽपि विनाहीयेन ॥ ११ ॥ एवं नानोपायैः प्राप्तुं शक्यं सन्त
नीतिमाह ॥ त्रिवर्गा इति ॥ त्रिवर्गो धर्मार्थकामस्त्रिविधः प्राप्तिरुपकारी पीडा च केके न प्रकारे
ण पीडनं नास्ति ॥ न त्वस्मन् प्रसादस्य नास्ति न ददत्पः फलं न दर्शितं नरदेव विविधं श्रम
पीडालक्षणस्य भाः त्रिवर्गे च यत्नेन पीडया मोक्षनेऽपि ॥ १२ ॥ न च पीडा समाह ॥ धर्ममिति ॥
धर्मस्यैतेन विचारेण दुःखः ॥ द्वाभ्याम् अर्थकामाभ्यां धर्मस्य चतुर्थश्च पीडा भवति धर्मार्थपीडा

सतृष्णिनः स्यात् फलः फलवान् स्यात् नद्ययं ह्रदः ॥ श्रामः स्यात् तु संकाशो न च नो यं
न कर्हिचित् ॥ १३ ॥ त्रिवर्गो त्रिविधा पीडा यत्न वधः नष्टो वच ॥ अनवधाः स्वमात्मेषाः पीडा
लक्षणं विवेचन ॥ धर्मं विचारेण पीडा या विभागेन नियच्छति ॥ अर्थं स्यात् दृष्टेन तु सकृ
न्नस्यानिवर्तितेन ॥ १४ ॥ अग्नाविन्धनमाक्षिप्य शान्तं न तु शक्नोति न च विना ॥ प्रवेवितार्थः स्व
स्वाम्य प्रपीड ह्रिजैः सह ॥ १५ ॥ कर्मणा येन तेन वा मृदुना दारुणेन वा ॥ उद्धरेद्दीनमात्मा
नं समर्थो धर्ममाचरेत् ॥ १६ ॥ न हि पापं पुनर्नाहं नरो मत्तं गणिकाभिः ॥ कं वा एवं स्तवा

चिन्तवेकस्यं भवति साधिष्ठः पीडा धर्मे नियच्छति नियतं हानिकर्तः पीडे वधर्म पीडेन
वेः ॥ अर्थेन कामार्थेन यस्य कामस्य चानिवर्तितेन ॥ इति सा श्रेयः लक्ष्यम् अर्थं विचारः दुःखः
र्थो कामयमों धर्मं पीडितास्य पीडा भवति ॥ तापि पीडा धर्मे नियच्छति एव मनिवर्तितेन
कामविचारेण दुःखो द्वाभ्यां धर्मार्थाभ्यां पीडा भवति सा पीडा कामनियन्ती नियोगः ॥ पृथ
कामस्येति पादैकर्मणि प्रहृष्टो ॥ १७ ॥ १८ ॥ समर्थो धर्ममाचरेदिति न तेन हृद्य कर्म सर्व
कौहि स्वाहिके प्राप्य येव कार्यं नान्येन ॥ ७ ॥ संसारयन्यासङ्कट ॥ १८ ॥

२५५

यन्नप्रासमनयः पश्चोत्रेद्वेन स्विष्टः चोगाद्रिः ॥ अथनाः हारहः संनोनाम्लिकामपुत्नोक [illegible] हारहिनाः
[illegible] ॥ ५० ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ५१ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ५२ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ५३ ॥ [illegible] ॥ ५४ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ ५५ ॥
[illegible] ॥ [illegible] ॥ ५६ ॥
[illegible] ॥ [illegible] ॥ ५७ ॥
[illegible] ॥ [illegible] ॥ ५८ ॥
[illegible] ॥ [illegible] ॥ ५९ ॥
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ ६० ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ ६१ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ ६२ ॥

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ६३ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ६४ ॥

स॰ भा॰
श्वा॰ प॰
२५५

254.

दृष्टाघनजुगुप्सास्याद्धेयविकृतेश्चः नवनलस्तोमवेन दैवकाकानेककर्मणे यथाभ्रमरयमहयलांमयविम
उम ॥ ९३ ॥ नेषांसमयोनेश्रयपक्षेश्रयोगोहृतन्नउपहितानिम्नुयः ॥ ९४ ॥ कालः म्नद्मोपि ॥ ९५ ॥ आत्मानं स
पुरुषानिसदृशाइनावर्ण्ययनिसंचयमिंयत्नानांपदेशरूपाणा ॥ ९६ ॥ आसांकालवर्णोदृष्टा
दिव्यनः श्वाकदृशिणाय्याप्रादानवंनदानवंप्रश्नामेवप्रद्माणवेदिन्यर्थंपदंनि ॥ कालवर्णो

उत्कृष्टश्चापियत्नेनकर्नेमोभूनिमिज्ञना ॥ विभ्रमदृष्टाकालोवदेवंपर्मोदयमहयः ॥ ९७ ॥
नैः श्रयमोनतोनेयोदृष्टाकृत्वाविनिहितानि ॥ नालवर्णकृतेनमूलंवाक्यणात्रदृयेविनः ॥
गहनेश्विविवोस्पृहः दिंशंनायतेमदृशन ॥ ९८ ॥ प्रश्निलोकमिवामानसंपूरयतियेनरः
सवर्धमानोमुखनेमदानमपिसंचयं ॥ ९९ ॥ आसांकालवर्णोकृष्णोकालेविशुद्धनयोजयेन
विशुद्धनिमिननोरूपाविभिमिंजवापिदेनन ॥ १०० ॥ ननोभूत्वाहदेयााानिशिन कालमाप
नः प्रतिश्चतोलोमहर्षादिदृश्लंनापविवर्जन ॥ १ ॥ पंडवेपुण्यापायममपचकदंदृ ॥
वर्णमानोनमङ्गलेनपाकसंहमावर ॥ २ ॥ मसंवेकलीलाधनयत्नेविलिबिहाइतिनिश्चयः
नस्माकपादृश्वमोरसानमानेनवापिप ॥ ३ ॥ मानमावहिनोयमानंतुश्वानशुपिपः
पश्चानापोयश्वानस्यानयानीनिर्विधायनं ॥ ४ ॥ वैश्रंपापनःवेच ॥ स्ववर्णकामेननेस्थ्ये
कम्निकलाग्रहेननः ॥ एननपस्त्रोपिकौमयः पोकाशेःसमदपन ॥ ५ ॥ यत्वादिपवेशिकः

हर्षोवनिमनोनिमिननः हेननः नमपिदेनंनरोगा ॥ ६ ॥ वारवावविनिपिनलीलाः नि
दृयःनियावननपदेशाणोहीदःकालमायनः हिदृकालापेवः पदेकालनलपादानकं
प्रतिष्ठत्रोएषपायः पदेवनमश्रदष्ठन्नःलोमहर्षोग्ननवोममसाहोपदेलोमहर्षेदकलोम
हर्षोनिपाटेपिनावेवार्थो ॥ १०७ ॥ कस्यापोपिनश्वगनस्यादिमिः संपन्नःविशिष्टः कृलघो

२५५

२५५

255

प्रधानतः प्राधान्येन प्रकृष्टवर्णाः धनकोषाः मलाद्याः सद्धीमः ॥२७॥ ललितविभ्रमः निपुणकः ॥२८॥
प्रधा[illegible]पः ॥ ललितप्रकृतनयः प्रकृतीः संजहारवापीनाथके ॥२९॥ समताः पद्मपते [illegible]

सं॰ भा॰
ग्रा॰ टी॰
२५७

२५६

[illegible]तरकृतवाक ॥ उर्धा[illegible]नसमयाधीनहृदि[illegible] ॥ अमि[illegible]
[illegible] ॥३०॥ नच[illegible]नचद[illegible]नमः ॥ वि[illegible]
[illegible]कहिविन ॥३१॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible]न ॥३२॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ दीपनडग्धच ॥ [illegible]न ॥ [illegible]
[illegible] ॥३३॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible]कहिविन ॥३४॥ [illegible]यन[illegible] ॥ नचैकः [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥३५॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥३६॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥३७॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥३८॥ [illegible]
[illegible] ॥३९॥ [illegible]
मनोरमे ॥ [illegible] ॥४०॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥४१॥ [illegible]
इति ॥ [illegible] ॥४२॥

लक्षः ॥४॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥४३॥

257

[illegible] सममानः समविकाराः सान्वयाः अन्वयोपेताः सकृन्नीका [illegible] र्थः ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ ८ ॥ २२ ॥ [illegible]
[illegible] ॥

[illegible]

२८ ॥ [illegible] ॥ २९ ॥ अध्यायः ॥ ॥

[illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible] ॥

[illegible] ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥२॥

[illegible] ॥

[illegible] ॥

[illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥

[illegible] ॥

[illegible]

[illegible] ॥ [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] ॥२॥ राम

258

पांडवा विनिनि ॥ ४ ॥ प्रकृतयः प्रकृताः ॥ ५ ॥ अन्वयुरनुजग्मुः ॥ ७ ॥ ८ ॥ प्रस्थाने प्रयुक्ते ॥ ९ ॥ [illegible]

वैशंपायन उवाच ॥ पांडवास्तु [illegible]

[illegible]

कलौ हिमाद्रौ न खिन्नहेमनो प्सान्मसौकर्नेण तिष्ठती मन प्राह ॥ कल्पान्ति ॥ कल्पः ऊर्ध्वे:
प्रावृषि नित्यावननरं हेतिनाल्लूनी नि कल्पः पार्श्वेवाः शुभो चन एव प्रचलत्पार्श्वेव प्रथमे परे अन्यथः
तेनेर ग्रसिद्ध गन्धलने प्रोक्तमापानानानि ॥ कल्पद्रुम एव पिपासितः सुमालिहिन ल्लोति शिशिरो शि:
खहिंसाया मिमेख रूपं नेन हं नीति नि पि पि पिपासितः मावागो लीनि वली भिका पिकाय दघहूय
प्रथमेव पार्श्वे वैनी शुभानाम्निनाहं न प्रापानी मध्ये: ॥ एवं नहीं यमेव हंनः: उन वार्णवन मग
लैवकूलिन श्रंग्रेन्नागेन व्यभिम्मा प्रावर्णाह ॥ महाकल्पान्ति ॥ महति कल्पे हि प्रलीनि कल्प
वः पत्र वर्णेलोपेन कल्पे महति प्रयोगे वि एवं नयं कल्पेम पावन्न कपटो हि वल वान् प्रातः प्रम
लमेव पहं होहि निमाव: ॥ कल्प द्वयंपायेन प्राह ॥ त्रिलोक मलः त्रिलोनः प्रविष्ट व्यान्त
रोचनान रहेत ॥ नखरा हेमभाव नाभिन नारहन वितेकर्ने मित्र स्पष्टं: ॥ अन्येनेन प्रकारेण

कल्पः क्षितिनिमन्त्र महाकल्पे विलोकयः ॥ नरहे हितिवा मानं योरहरति मन्नी वृति ॥ ५३ ॥
नावल्लवैनिन्यानं नाचरावर्वि टनोहि पा: ॥ नाम्तुनिर्वेहिमासोनि तु स्व हे व प्रवापिन: ॥
अनापूरैनमाटनेनर: प्राहामसोहर्ज ॥ स्वावि व्यामसमाक्षप्रमचेन हूनापानान ॥ ५४

मानं योरहति मज्जीवति न स्मान्यपाश्चेवं हानाय पाठे नाम्ना संरहणीयं प्रत्यर्थ: ॥ ५३ ॥ न नवि
लंपति हा नाम स्माकं विलयावे प्रदीमेलव छिन्नां अनहूमणान नाथः कल्पेश्वरस्य फंकवि वे
कं विनामार्गा नानं हिनानं च नमवति ये यं विनाचेश्च यं च नश्राप्यनः ति विवेकं ये यं चाप्रय
लेमाह ॥ नाचवर्वीति ॥ वृष्टे प्रवयक्ने नेति च वर्विवेकः स हूनए वायं हो कोनीति पृष्ठे
नार्थे ॥ ५४ ॥ नचमार्गे विवेकं नावदाह ॥ अनामेति ॥ अनामे प्रच भिर्दनं हो कारितं फहारह
नहून नस्य हि विलक्षमयनो भवति नादृशं विलमासाय प्राप्य हूनापानानामनचेन ॥ स्वा
मानंमोचये त्नेन विलप्रवेशेन मार्गानेण सघयव विलाहहि निस्सरनां प्रथमाकं नान
हूस्याणमार्गा समविष्यनीत्यर्थः ॥ ५४ ॥

नदेवचवनेयावयिनेयुयिहिरमोभमलोककोनियाज्ञानानं..नेयारस्यायाओः प्रस्तानीनिया
मेक.पदेननियामसमत्पायाधिपानुदंनयाइनिक.गिक.ववनेनुयंलरनकानिलीवोज्ञानाति
सपुमानिदयायापानुक.ल्लिनामापदंनिलनेनयाकुयोयत्रमितिपोमः॥ः॥नामेवाह॥ज्ञाने
हूमितस्वादिना॥पानुगोक.नेकायगोवनेस्यायावंसमलिपोनेप्रमितिनिसुत्सायाप्रासरं
यावेनिलंदिवोनप्रोनीतिनंवेयः॥यामसिनिदंनयसकायस्यानेनालस्यपुकयंकःवेहसभाप
नाईनयइनिवलवतेविकारः यामसायेइरादेसमतयोननयुनुयंलनमेवविमिनशिप्र
लोहूमितिपलोपननेलोप्रिः यायाहिइपदीनिवदलोलोपः नेननयायपानिइपानिहृयातिनन
पायामनेरमायोनिलदोने॥नेपाक.दःसमहेयमिन्नाप्रोगेरोहूकेहवोहपनमिमयेः॥न

योनानानिपरप्रवेनोनियामानुमामिवंगे॥ निकायेहूनयाकुफेरापदंनिलोपया॥२॥
प्रलोहूनिमितंनपायेपापीरपरिकनेने॥योचेतिननलनेक्रतिप्रतिचानविदंहिपः॥२२॥

हिंकिंनानिलानमशायानिवेत्पनआह॥पारीरपतिकनेनमिति॥पारीरलहूपरेलभा
पनाइविभक्तिकमिंदपदंपनिलपायाकाघवगिहुयलोपः पवितनेनायोंयाकूनेनहिंस
कनलिलदहूननहिंनामेवायेघानिद्यागिलियायोवेनेनेनसहूयेगादंपतेप्रतल
पगीरवनेनप्रसारदपतिमात्पयोवेतिकनेनमितिहिंसार्थेसकूलनेहू पनसेदनायेः
प्राकूनतेतिलितेपंकनेनकालमाह॥निमोति॥मत्रनिमितंकनेननितिपदत्रयमानिवेके
गपकायंमहिनुभापवेवोके॥एवमशेषिहीकेकतिपपपदोल्पवहेनुभापाभवनिनय
वःप्रोकानिहेतयोवेतिनंप्रतिचानविदंनरूपायापरतत्पन्नोचानः॥प्रतीति॥नहिंदहिंय
पानुवोननंतिहेननयाकूवंनिरूपयेः॥२२॥

म॰ भा॰
अनु॰ प॰
२६१

260

ततः स्तुति ॥ ४० ॥ आगतानि निलेष्टः ॥ ४१ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ४२ ॥ [illegible] ॥ ४३ ॥

[illegible] ॥ ततः [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ४४ ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ४५ ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ४६ ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ४७ ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ४८ ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ४९ ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ५० ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ५१ ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ५२ ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ५३ ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ५४ ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ५५ ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ५६ ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ५७ ॥ [illegible] ॥ ५८ ॥

२६१

[illegible]

॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ [illegible]

॥ वैशंपायन उवाच ॥ [illegible]

[illegible]

कविमाहेतुनावाहमेवाह ॥ मोमकिनि ॥ मह:स्वामोपिपेषांनाजिनरैरविरिनकर्नेषाने
नर्ष ॥ २ ॥ प्रवविशे ॥ ॥ अध्यायः ॥ विहारेनि ॥ ॥ प्रवनेपयाम्यानयापांडवान्‌ प्रथ:

भीमं तु विलमदेवकावापसमंहतं ॥ मूदोत्वाध्यावनलव हुलाद्याः संप्रयसनि ॥
वसनोदपथ्यावामानतुस्रेनपीवन ॥ मोमोकाविननः कुपिनयाकापंमनंनिशि:
१ ॥ इन्द्रादिपर्वेशिजनमहदाहे ॥ वैशंपायनउवाच ॥ विरायमहरकघिनवनकः कपु
ल: स्वचि: ॥ विविकेपांडवान्ननामिदेवचनमबवीत ॥ ॥ आहिनोविहारेणामिवेत
क: कपालोमह ॥ पांडवानांयिधिकापीमिनिकिंकरवाणिवः ॥ ॥ प्रवत्रवविडरेणोक:
श्रुपत्नमिद्दपांडवान ॥ अनिपादयविस्वामाहिनिकिंकरवाणिवः ॥ ॥ कुलपदेवन
देयपांपायावस्पुवेचन: ॥ भवनस्पनवहोपिप्रहाणिहृत्कपानं ॥ ॥ मायामहमहस्पत्रा
पांडवांग्रहपंडम ॥ निधवविनंपाधेमूलनापूष्पमेमधुनं ॥ ॥ किं विन्नविरेणोकोमे
तु वावामिपांडव ॥ नपापिवनधमकमनहि स्वाप्कारणेन ॥ ॥ वावनंनमपूर्तिः कं
नीशक्रोशपि हि ॥ ॥ अमिनानामिमोमनामहद्विद्वपवै ॥ ॥ पविमानमिपेदेवहन
कमहानं ॥ नविघनेकवे: किचिद्मितानपुत्रोजन ॥ ॥ प्रयानःसनयानहनिहिपुत्रा
वपंनपि ॥ भवन: सपयानस्पपालयाम्यानयाव ॥ वि ॥ ॥ रंशाणमामेपमरधोमिनि
ममनि ॥ तपोवनेन विहितं पानेनपूष्पशाहनान ॥ ॥ सपाप: कोशवायैवससमहाप
स्रुतमिति ॥ प्रस्मानपहितं प्रानानिमकालंप्रवायने ॥ समवानाओवयनसान्यवेना

प्रनिपादयेन्मकोहंव: किंवाकावि ॥ ॥ ॥ हेतुवाचाहेतुभावया ॥ १ ॥ कवे: सर्वनमकेनर
स्विनोस ॥ ॥ यथावयंनस्पनथाभवनमपालनीया: ॥ अनोस्मान्ययाकविः पालयनिनया

[illegible]

[illegible] ॥ ७ ॥

[illegible] ॥ ८ ॥

श्रीभगवानुवाच ॥ [illegible]

[illegible] ॥ ९ ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ [illegible]

[illegible]

262

स॰ भा॰
स्वा॰ यं॰
२३४

263

[illegible]

२३४

[illegible]

[illegible] ॥ इत्यादिपर्व [illegible] ॥ वैशंपायन उवाच ॥ [illegible] ॥ २ ॥

[illegible] अध्यायः ॥ [illegible] ॥ २ ॥

२४७

म॰भा॰
आ॰ पं॰
२६२

प्रजानां वैः ॥ अनन्तमवैः ॥ दुःकानतूर्णैर्विस्मितैः ॥ ४ ॥ पुत्रैः सैः लंबः त्वयो हृ स्वशालोऽहवः अवमन्य ना
मिनः ५ ॥

अगामद्यवनोहि पामल्पमल फलोदकं ॥ कृत्यलस्म गंधो सांमायाकृ भरतर्षभ ॥ ६ ॥ बोनम
ममवत्सं प्यादापुरतमना तूष्णिं गतः ॥ अग्रकायमाहि पुः सर्वो वानेगमत्त नांगवैः ॥ ७ ॥ गुरोर्लघ
गपयैतानलतु गत्मन्तुपैर्तु से ॥ असावभ्यग्रम भू प्रि वैनोनाइत्मसमाकुले ॥ ८ ॥ नेतूमेगाव
केशमात्त स्वधायाच श्रवौदिनाः ॥ नायक्कुर्वत्तु लतागानानिरूयाचग्रहंद्द्य ॥ ९ ॥ न्पविगानहिने
सर्वैविगतात्मे मतृवने ॥ ततः तमायरिक्तानाकुंती श्रामानपाद्यवीन ॥ १० ॥ सानास्रनोयातुरा
नायवानामयान: श्रियना ॥ नस्रया दिपरी नातिस्र श्रानम्स्य म पाद्यवैत ॥ नतुर्मनाभी सप्त
नपमानत्ले हात्यनविनं ॥ कामयेनमतत्ल न समामनायोयव कमे ॥ नतोभीमोवनेचोवंप्र
विश्य विजनं महत् ॥ न पूर्वं विचलत्तां यं समार्गांगं दृष्टवैदे ॥ ११ ॥ नत्रनिदिधतानवंगनरा
चमानवैम ॥ वानीतं मरायामीहविश्रम ॥ मिनिम्रभो ॥ १२ ॥ उनेहतंनिम शुंसोरमानतल
चाहितः ॥ प्रचमवत्तनत्यानं मद्वेतिमैम ॥ १३ ॥ अनजानः सागवेनिश्राचाजे हनमावत
नामनत्यक्षसमाराजनवाहितः ॥ १४ ॥ तनचवीनायानीयंल्लानचमुंनवैम ॥ १५ ॥ इन
गीये गपानोयमानयामाहमावल ॥ १६ ॥ तातृत्तिमाचाहागुल्सविनोमानात्प्रति ॥ पुत्रोहृक
वपरीनामानिशुञ्श्राशोयणोयया ॥ १७ ॥ सतमामानोत्र्टहृष्टैभ्रातृनं भवत पानले ॥ १८ ॥ मत्राणे
कपरीनामाविलताय तु कोटर ॥ १९ ॥ अतः कथनं किंन्तु दृष्टो हि मविश्यानि ॥ यत्र यत्र मि
महीममाश्रानूनयनमंस्माक ॥ पायनेकुपनयै तु येनुनाचायगावनै ॥ नायिनासल्लत्य
निसुंनेहमाहिमहीनले ॥ २० ॥ त्वमांचत्तदेवत्रयशत्रुहवाहमहिन ॥ कंनिग्यतहीनाकंनी
सर्वेलहागच्छुजिनां ॥ २१ ॥ नैवाविविचवीर्यस्य भार्यापांशोर्महात्मनः ॥ नयोरचासकृत
मिनः ॥ २२ ॥ तस्रयानत्या ॥ २३ ॥ २४ ॥ गत्त्विमाचाननकोषाहृयान ॥ २५ ॥ सुमंदमानस्रतिमेहमामः

मनि ९

264

२६९
२४

स० आ०
भा० प०
२६६

265

[illegible] क्रोधात् हिना ॥ ४४ ॥ इति श्रीनैलकंठीये भारतभावदीपे [illegible]

[illegible]

२६६

५४॥ अध्यायः॥ सेवयंत्यानवद्यांगी अतिकृष्णशरीरः॥२२॥ कामसमिति॥ समाश्वासनवचनेन प्रकारांतरः

भीमसेन उवाच॥ सुखसुप्तान्वने भ्रातॄन्मातरं चैव राक्षसि॥ न भयाद्बोधयिष्यामि भ्रातरं तव दुरात्मनः॥ न हि मे राक्षसा भीरु सोढुं शक्ताः पराक्रमम्॥ न मनुष्या न गंधर्वा न यक्षाश्चारुलोचने॥२॥ गच्छ वा तिष्ठ वा भद्रे यद्वापीच्छसि तत्कुरु॥ तं वा प्रेषय तन्वंगि भ्रातरं पुरुषादकम्॥३॥ ॥इत्यादिपर्वणि हिडिंबवधे॥ वैशंपायन उवाच॥ तां विदित्वा चिरगतां हिडिंबो राक्षसेश्वरः॥ अवतीर्य द्रुमात्तस्मादाजगामाथ पांडवान्॥१॥ लोहिताक्षो महाबाहुरूर्ध्वकेशो महाननः॥ मेघसंघातवर्ष्मा च तीक्ष्णदंष्ट्रो भयानकः॥२॥ तमापतंतं दृष्ट्वैव तथा विकृतदर्शनम्॥ हिडिंबोवाच वित्रस्ता भीमसेनमिदं वचः॥३॥ आपतत्येष दुष्टात्मा संक्रुद्धः पुरुषादकः॥ साहं त्वां भ्रातृभिः सार्धं यद्ब्रवीमि तथा कुरु॥४॥ अहं कामगमा वीर रक्षोबलसमन्विता॥ आरुहेमां मम श्रोणिं नेष्यामि त्वां विहायसा॥५॥ प्रबोधयैनान्संसुप्तान्मातरं च परंतप॥ सर्वानेव गमिष्यामि गृहीत्वा वो विहायसा॥६॥ भीम उवाच॥ मा भैस्त्वं विपुलश्रोणि नैष कश्चिन्मयि स्थिते॥ अहमेनं हनिष्यामि प्रेक्षंत्यास्ते सुमध्यमे॥७॥ नायं प्रतिबलो भीरु राक्षसापसदो मम॥ सोढुं युधि परिस्पंदमथवा सर्वराक्षसाः॥८॥ पश्य बाहू सुवृत्तौ मे हस्तिहस्तनिभाविमौ॥ ऊरू परिघसंकाशौ संहतं चाप्युरो मम॥९॥ विक्रमं मे यथेंद्रस्य साद्य द्रक्ष्यसि शोभने॥ मावमंस्थाः पृथुश्रोणि मत्वा मामिह मानुषम्॥१०॥ हिडिंबोवाच॥ नावमन्ये नरव्याघ्र त्वामहं देवरूपिणम्॥ दृष्टापदानस्तु मया मानुषेष्वेव राक्षसः॥११॥ वैशंपायन उवाच॥ तथा संजल्पतस्तस्य भीमसेनस्य भारत॥ वाचः शुश्राव ताः क्रुद्धो राक्षसः पुरुषादकः॥१२॥ अवेक्षमाणस्तस्याश्च हिडिंबो मानुषं वपुः॥ स्रग्दामपूरितशिखं समग्रेंदुनिभाननम्॥१३॥ सुभ्रूनासाक्षिकेशांतं सुकुमारनखत्वचम्॥ सर्वाभरणसंयुक्तं सुसूक्ष्मांबरवाससम्॥१४॥ तां तथा मानुषं रूपं बिभ्रतीं सुमनोहरम्॥ पुंस्कामां शंकमानश्च चुक्रोध पुरुषादकः॥१५॥

266

पालयोनमिवश्यालंकरमिव ॥ २५ ॥ यथा मलं हरतः अग्नेन वह्नेमाभ्यांनिवल्यमातनान ॥ २६ ॥ कुरोपकं हि
श्नानर्वचनमात्तायल्वरमाणेच्चरालसी ॥ नामकन नयन्नस्थांनुचाभरनषिम ॥ हदहंसनत्रसागना
वारत्वानुष्यमाहृ ॥ यायकनानभोमसेन चनायनेनपनविने ॥ रहेनभोमसेनेसायकलयोन
मिवोहृतं ॥ रालसीवकमयामासहयेणणप्रनिसंभवि ॥ २७ ॥ नयं यया मामहनानुसिंहलंकयोमहा
पापः ॥ केवग्रीवः श्वक्तःनदोसंभनोपुत्रः भवेमम ॥ २८ ॥ नारैरमानलवचोनानकुर्यांकुरोपलंहि न
पनिसनेहेनिवलचानननयाभानलो हृदे ॥ २९ ॥ महानेमवनगर्भभवेद्मनमेमेव च ॥ हनेनेन
रहानानमोहिंद्यापश्चत्तीः समाः ॥ साकामहविलीहयंकनामानधमनमं ॥ उपनयोमहवा
हुभीमसेनं यानैः यानैः ॥ लानमानेचललना दिवामामनाभविना ॥ स्मन हृवें मिंदवा कं भीमसे
नमयाद्यचीन ॥ ३० ॥ कनलमसिसमासः कश्यामिपहघाभम ॥ कसमे येषनेचे दश्वहघादेवह
विताः ॥ ३१ ॥ केर्थेवहहनीय्यामाहकमारीनवानवा ॥ पोनेवनमिदंश्मश्चियालानरहेयथा
नेदंनाननिमहनेवनंपदसमेविन ॥ वर्षानिसन्नयायाकाहिंदि वोलामपल्सः ॥ ३२ ॥ ननाह
ये हिनायुरुषाउहभावेनरवसा ॥ विमहयिषनामांसंयुगमकममयोधमाः सार्दनामभिसंप्र
त्येचनामसमग्रमं ॥ नांमभौमनिश्चायिसनमेनहृदीमिने ॥ एनांदेनायधर्मेवराग्कंमविहमा
वर ॥ कमलोवरहनचितांभीमनमानांभनहामां ॥ ३३ ॥ ताताविनांमहवाहननदमानहघादकान
बल्मालोमिरिउग्रोदुमतांभवममानहा ॥ ३४ ॥ सानविहयर्तरांमकिकमनीविचरामिच ॥ सन लामा
महिष्वीविनमनवमयामह ॥ ३५ ॥ भी [illegible] ॥ मानस्थानेमे [illegible] नकयंनिमान
गनिपलेनकेनचापुमवविवाचरिः ॥ ३६ ॥ [illegible] ॥ मानं
रंचननोलिखेन्कामानिरवमहिय ॥ ३७ ॥ [illegible] ॥
मोनहियाग्यामहंकामसंपादकामहघादकान ॥ ३८ ॥ दी

नहिंमाधुगं ॥ १५ ॥ वि

भवहिंबलनामहविनमिंद्य

१५५ ह

म॰ भा॰
आ॰ प॰
२६८

267

४४॥ लताश्चाकर्षतस्ततः ॥४४॥४५॥ प्रबुद्धास्तेति ॥४५॥ जितं हिडिंबेनेदं स्वार्थसन्

हिडिंबउवाच॥ गर्जितेन तथा किं ते कत्थितेन च मानव॥ कृत्वैतत्कर्मणा सर्वं कत्थेथा मा चिरं कृथाः॥३४॥ बलिनं मन्यसे यच्च आत्मानमपराक्रमं॥ ज्ञास्यस्यद्य समागम्य मयात्मानं बलाधिकं॥३५॥ न तावदेतान् हिंसिष्ये स्वपंत्वेते यथासुखं॥ एष त्वामेव दुर्बुद्धे निहन्म्यद्याप्रियंवदं॥३६॥ पीत्वा तवासृग्गात्रेभ्यस्ततः पश्चादिमानपि॥ हनिष्यामि ततः पश्चादिमां विप्रियकारिणीं॥३७॥ वैशंपायन उवाच॥ एवमुक्त्वा ततो बाहुं प्रगृह्य पुरुषादकः॥ अभ्यधावत संक्रुद्धो भीमसेनमरिंदमं॥ तस्याभिपततस्तूर्णं भीमो भीमपराक्रमः॥ वेगेन प्रहितं बाहुं निजग्राह हसन्निव॥ निगृह्य तं बलाद्भीमो विस्फुरंतं चकर्ष ह॥ तस्माद्देशाद्धनूंष्यष्टौ सिंहः क्षुद्रमृगं यथा॥४०॥ ततः स राक्षसः क्रुद्धः पांडवेन बलाद्धृतः॥ भीमसेनं समालिंग्य व्यनदद्भैरवं रवं॥४१॥ पुनर्भीमो बलादेनं विचकर्ष महाबलः॥ मा शब्दः सुखसुप्तानां भ्रातॄणां मे भवेदिति॥४२॥ अन्योन्यं तौ समासाद्य विचकर्षतुरोजसा॥ हिडिंबो भीमसेनश्च विक्रमं चक्रतुः परं॥४३॥ बभंजतुर्द्रुमान् सर्वान् लताश्चाकर्षतस्ततः॥ मत्ताविव च संरब्धौ वारणौ षष्टिहायनौ॥४४॥ तयोः शब्देन महता विबुद्धास्ते नरर्षभाः॥ सह मात्रा च ददृशुर्हिडिंबामग्रतः स्थितां॥४५॥ इत्यादिपर्वणि हिडिंबवधे॥ वैशंपायन उवाच॥ प्रबुद्धास्ते हिडिंबाया रूपं दृष्ट्वातिमानुषं॥ विस्मिताः पुरुषव्याघ्रा बभूवुः पृथया सह॥१॥ ततः कुंती समीक्ष्यैनां विस्मिता रूपसंपदा॥ उवाच मधुरं वाक्यं सांत्वपूर्वमिदं शनैः॥२॥ कस्य त्वं सुरगर्भाभे का वासि वरवर्णिनि॥ केन कार्येण सुश्रोणि कुतश्चागमनं तव॥३॥ यदि वास्य वनस्यासि देवता यदि वाप्सराः॥ आचक्ष्व मम तत्सर्वं किमर्थं चेह तिष्ठसि॥४॥ हिडिंबोवाच॥ यदेतत्पश्यसि वनं नीलमेघनिभं महत्॥ निवासो राक्षसस्यैतद्धिडिंबस्य मम चैव च॥५॥ तस्य मां राक्षसेंद्रस्य भगिनीं विद्धि भामिनि॥ भ्रात्रा संप्रेषितामार्ये त्वां सपुत्रां जिघांसता॥६॥

६॥ ॥६॥ ६॥ ६॥

२६८

२८॥ गर्भिणा स्मिता भिण्णा भिन्न धिष्णा मीनि वा पादः॥२४॥२३॥

[illegible] ॥२८॥ [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] ॥२३॥

२४ ॥ आभ्रामयत्स्वसंतानं भ्रामितवान् ॥ २५ ॥ वृथामांसैर्वृथावर्धितांगत्वात् वृथामरणं वायुवृद्धेन हृत स्वर्गको-
र्तिरभावात् ॥ २६ ॥ कोपो हेतुः तमारुह्य वचनमुवाच यद्वदिवेति ॥ २७ ॥ २८ ॥ कोलाहलं विना निवर्तनं तेनैव मरणेन तापघ्नी

वैशंपायन उवाच ॥ अर्जुनेनैवमुक्तस्तु भीमो रोषाज्ज्वलन्निव ॥ बलमाहारयामास यद्वायोर्जगतः
क्षये ॥ २४ ॥ ततस्तस्यांबुदाभस्य भीमो रोषात्तु रक्षसः ॥ उत्क्षिप्याभ्रामयद्देहं तूर्णं गुणशतान्वितं ॥ २५ ॥
भीमसेन उवाच ॥ वृथा मांसैर्वृथा पुष्टो वृथा वृद्धो वृथामतिः ॥ वृथामरणमर्हस्त्वं वृथाद्य न भवि-
ष्यसि ॥ २६ ॥ क्षेममद्य करिष्यामि यथा वनमकंटकं ॥ न पुनर्मानुषान् हत्वा भक्षयिष्यसि राक्षस ॥ २७ ॥
अर्जुन उवाच ॥ यदि वा मन्यसे भारं इममाजौ निशाचरं ॥ करोमि तव साहाय्यं शीघ्रमेव निपात्यतां ॥ २८ ॥
अथवाप्यहमेवैनं हनिष्यामि वृकोदर ॥ कृतकर्मा परिश्रांतः साधु तावदुपारम ॥ २९ ॥ वैशंपायन
उवाच ॥ तस्य तद्वचनं श्रुत्वा भीमसेनोत्यमर्षणः ॥ निष्पिष्यैनं बलाद्भूमौ पशुमारममारयत् ॥ ३० ॥
स मार्यमाणो भीमेन ननाद विपुलं स्वनं ॥ पूरयंस्तद्वनं सर्वं जलार्द्र इव दुंदुभिः ॥ ३१ ॥ बाहुभ्यां योक्त्रयि-
त्वा तं बलवान्पांडुनंदनः ॥ मध्ये भंक्त्वा महाबाहुर्हर्षयामास पांडवान् ॥ ३२ ॥ हिडिंबं निहतं दृष्ट्वा संहृ-
ष्टास्ते तरस्विनः ॥ अपूजयन्नरश्रेष्ठं भीमसेनमरिंदमं ॥ ३३ ॥ अभिपूज्य महात्मानं भीमं भीमपराक्र-
मं ॥ पुनरेवार्जुनो वाक्यमुवाचेदं वृकोदरं ॥ ३४ ॥ नदूरे नगरं मन्ये वनादस्मादहं विभो ॥ शीघ्रं गच्छा-
म भद्रं ते न नो विद्यात्सुयोधनः ॥ ३५ ॥ ततः सर्वे तथेत्युक्त्वा सह मात्रा महारथाः ॥ प्रययुः पुरुषव्या-
घ्रा हिडिंबा चैव राक्षसी ॥ ३६ ॥ आदिपर्वणि हिडिंबवधः ॥ भीमसेन उवाच ॥ स्मरंति वैरं रक्षांसि
मायामाश्रित्य मोहिनीं ॥ हिडिंबे व्रज पंथानं त्वं वै भ्रातृनिषेवितं ॥ १ ॥

ं विनाश्य यद्धि वनस्थं दैत्यो भंक्त्वा ज्ञोटयित्वा पशुमारमिव मारयन्यांडवांश्च हर्षयामासेत्यन्वयः ॥ २२ ॥ २३ ॥
२४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ इति श्रीभारतार्थभावदीपे आदिपर्वणि हिडिंबवधार्थप्रकाशः ॥ स्मरंति भ्रातृ-
सेवितं पंथानं गच्छ ॥ १ ॥

१५८

[illegible]

म० भा०
स्त्री० प०
२०

॥ पांडुकर्णौ नीलस्य हलायुकर्णौ ॥ १९ दीर्घबाहू गांडीवं नासिकं विकटे वक्षे उन्नद्धे उच्चैः पिंडिके ज्ञानगस्कं

वैशंपायन उवाच ॥ न चेतितमनुमितिं तायभीमसेनो रवीन्द्रिः ॥ भ्रातृनाय न हि सर्वेन समये नेव राम
हं २९ यावत्कालं नयत्वसिद्धस्त्रो मा हनं सह मे ॥ तावत्कालं ममिद्धामिन या सहस्रसमे ॥ ३० ॥ वै
शंपायन उवाच ॥ नचेतितमनुतिता यदृष्टिं तायवसीनद्यभीमसेन मया दाय सोर्धमाचक्रमेन
नः ॥ ३१ ॥ पोलभ्यागेषु रम्येषु देवनायननेषु ता ॥ मृगयाविहिविभूषितेषु रमणीयेषु सर्वदा ॥ ३२ ॥ कृ नाथ
रूपपरमेषु वांभरणामूषिता ॥ सनत्सूलीसमयुर सयामासमयाद्रवं ॥ ३३ ॥ जष्ठेनु वनद्रुमेषु पुष्पि
नद्रुमसानुषु ॥ सरःसु रमणीयेषु पद्मामलजलेषु च ॥ ३४ ॥ नदीहीपपुरेषु वेडूर्यमिकतासु च
सनीर्थवननामामनयामिलिटीषु च ॥ ३५ ॥ काननेषु विचित्रेषु पुष्पितद्रुमवल्लिषु ॥ हिमवङ्गि
रिकुंजेषु गह्वरावि विविधासु च ॥ ३६ ॥ पुष्पलनाननद्येषु मा:सामलवारिषु ॥ सागरस्य प्रदेषु च सम
तिरेसविनेषु च ॥ ३७ ॥ पहलेषु चारम्येषु महाशालवनेषु च देवारण्येषु पुण्येषु नयाधर्वनमा
नषु ॥ गुह्यकानां निवासेषु नाथ मायननेषु च ॥ सर्वत्तुफलरम्येषु मानसेषु सरस्सु च ॥ ३८ ॥ विच
नीयरमंरूपं रमया मामयाद्रवं ॥ रमयन्नीतया भीमं नवनवमनोजवा ॥ ३९ ॥ प्रजज्ञे राक्षसी पुत्रं भी
मसेनान्महाबलं ॥ विरूपाक्षं महावक्रं शंकुकर्णं विभीषणं ॥ ४० ॥ भीमनादं सुताम्रोष्ठं तीक्ष्णदंष्ट्रं
महाबलं ॥ महेष्वासं महावीर्यं महासत्वं महाभुजं ॥ ४१ ॥ महाजवं महाकायं महामायमरिंदमं ॥ दी
र्घघोणं महोरस्कं विकटोद्बद्धपिंडिकं ॥ ४२ ॥ अमानुषं मानुषजं भीमवेगं महाबलं ॥ यः पिशा
चानतीत्यान्यान्बभूवातीवमानुषान् ॥ ४३ ॥ बालोपि यौवनं प्राप्तो मानुषेषु विशांपते ॥ सर्वास्त्रे
षु परो वीरः प्रकर्षमगमद्बली ॥ ४४ ॥ सद्यो हि गर्भं राक्षस्यो लभंते प्रसवंति च ॥ कामरूपधरा
श्चैव भवंति बहुरूपिकाः ॥ ४५ ॥

नरः पाद्यान्दे पाः पिंडिकाले क्षयस्यानंतविकटोद्बद्धपिंडिकं ॥ २४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥

शूभिनाग्रायायैश्मामाया चोतारिकस्य वदेद्रूप ॥ ४७ ॥ नहि श्यामि प्रायप्रियामि ग्राहौ द्रुतवर्त्सार्धे

युधिष्ठिर उवाच ॥ कुदेविंशुकपवान्तु भीमसास्य सिद्धं च धीः ॥ धार्तराष्ट्रस्य प्रियकं यमे गोपय त्वं
द्रुव ॥ ४८ ॥ नयामि प्राययम्या पानम च धीलमहा वरे ॥ रवसलम्यमानि नो किं नः कुह्वकरिष्यानि ॥ ४९ ॥
वैशंपायन उवाच ॥ द्विरिंवालननः केनीम [illegible] प्रिकायरकना जलिः ॥ युधिष्ठिरेण कौन्तेय मिद्वंवचन
मब्रवीत ॥ ५० ॥ आर्येनाना सियद्रुलमिह श्रीणमनंग रे ॥ नदिष्टं मानन यामभीमसेन कनयमे
सोद्देनयथं डः लेमयाकाल श्नीलया ॥ सोयमपानानः कालोभ्विनामे यलो रथः ॥ मयापू
स्वेयमहदः श्यमिलननेनया ॥ ह्रलोयं पुहप्रयात्रुलनपुनः प्रति ॥ ५१ मे ॥ ५२ ॥ वीरेशाद्रनयाने
ननया कानि यया सिनी ॥ प्रत्यामा प्रानानजीवा मिश्वा भेन दुर्योधिने ॥ ५३ ॥ नरहे सिंहकं प्राकलेम
सिनवरचकिंमि ॥ मनाम देनिमानननेभ कायान प्रनेतिवा ॥ ५४ ॥ मधोनेनमहाभागे सयोजनपहले
नरं ॥ नमपादयमहे पेन ये मंदेवद्रुमितं ॥ पुनश्चैवानि यमासि विलेभं करुमेघ्यमे ॥ ५५ ॥ पुरुह
हिमनमसा यामानवान्ने प्यासिवः सहा ॥ नलिमना यप्रियामि भोगुविदमेघ्रवा ॥ ५६ ॥ एष्टेन वाच
हिंश्यामि पुष्टी कुणानि मभीयनन ॥ द्रुपंचमाद् करूलेभीमसेनोभमेन मां ॥ ५७ ॥ पापदलत्रो ग्राता
आप्रोयेन नेन वा ॥ सर्वे माहाय कनेवं नेयमेनन वान्नेना ॥ ५८ ॥ प्रायनपोयायतिमिमं यमे विदु
नमः ॥ यमनं हि नय मियय प्रतिमा मातर चाने ॥ ५९ ॥ पुरुषमालनयाययनि पुराणे सातार मयने
येनयेना वरेद्रुमेन मिना हानविदानि ॥ ६० ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ एवमेनयर्यामहिरेवे ना तुम
नापः ॥ ह्यानत्ननयागं सेयं नथा द्रुथां सातयामे ॥ ६१ ॥ ह्यानकुनाक्लिष्टं कं भद्रकनकोनकमंत्रा
रं ॥ भीमसेनं मनेयाज्ञं प्रागानुलामनातुरे ॥ ॥ यहस्तविद्रुनेनयं यान्कामनं ननो ननवा ॥ ग्रथ
नानयिनवालेभीमसेनः सदातिसि ॥ ६२ ॥

लिपाठे चिवहेरेवद्रूपं यं नामिनमं देशं ॥ ८ ॥ नालनयं गीकनप ॥ ६ ॥ युगनेचं पकं ॥ २४ ॥ २२ ॥ २६ ॥ २७ ॥

म॰ भा॰
आ॰ टी॰
२२२

270

ब्राह्मवेदं ब्रह्म प्रनि यावत्कं उपनिषद्ब्राह्मं ब्राह्मणो योग्यं कापिलाम सहं ब्राह्मं ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ एकचक्रा

ब्राह्मं वेदमधीयानानावेदांगानि च सर्वशः ॥ नीतिशास्त्रं च सर्वं तत्त्वं कापिलाम सहं ॥ ३ ॥ तेः स्मिवाय महात्मानं कृष्णद्वैपायनं नमः ॥ नष्टाः संजलयः सर्वे सहमाना युधिष्ठिरः ॥ २ ॥ ब्राह्मण उवाच ॥ म येदं समनं तु वे नि हितं नमस्तु धर्मात्मा ॥ अयानानीन सुमेरो गोमा तिर पूर्वि वा सिना ॥ ३ ॥ तं विदितं नामि संग्रामशिकैस्तु परमं हितं ॥ न विषादो नव ते हेतु दुःसमसमं तं ॥ तेहर्षं विकीर्णांमि हितं बलं निवोधन ॥ ७ ॥ समालेनेव मे सर्वे पूर्णं चैव न संशयः ॥ दीनलोवालतथैव लेहं कुर्वंति मानवाः ॥ ८ ॥ नस्मात्स्मयिकः हे हो तु समाहसमसमंतं ॥ तेहर्षं विकीर्णांमि हितं बलं निवोधन ॥ ९ ॥ हदं नगरमभ्यासे रमणीयं निरामयं ॥ वसनेहत्र निहत्य नामसा नमन कांचिन ॥ १० ॥ वैशंपायन उवाच ॥ एवं समनासमा श्रुत्वा सः सुमवनीतनः ॥ एकचक्रां समभिगतः कुंतीमाप्य समयक्रमः ॥ ११ ॥ ब्राह्मण उवाच ॥ जीवस्त्रिमूलं लेयं यमनिलोयुधिष्ठिरः ॥ यमो लपृथिवी नित्ताम कामस्तु हवेषिमः ॥ पृथिव्यां पार्थिवाः सर्वे ... हिष्यनि यमराट् ॥ १२ ॥ पृथिवीम विलानि नाम मासा गरमेवलां ॥ भीमसेना नवलां कोस्यनेनात्र संशयः ॥ १३ ॥ ... वचमात्रास्त्र मवेश यमहा ब्राह्मः ॥ नराष्ट्रे वि हरिष्यंनि हवेनसमनमः स्मृता ॥ १४ ॥ यत्स्थं निचनराज्ञा निजिता पृथिवी मिमां ॥ राजस्य यास्यमे यायोः क्रतुरिमि भूरिदक्षिणे ॥ १५ ॥ ... हृष्टा भोगेस्सर्यं सवेन च ॥ पि
... नामसहंराजमिममो हं निलेन ॥ ... :

समिति पानः नेः सहेलिपोषः ११ १६ राम

२२२

विकचः केशहीनः ॥१॥ चरः निचरसारण्यानं॰ चरः क्रिरः चरः सभारिमेनचिारः कूरकेरे॰ चेलि
मेदिनी हस्व उ[illegible] स्रोकचः विवेकेपनस्नोचरः ॥ उन्कचोयस्रेनियोगान ॥ चरोकचानि

प्रत्यग्र विकचः [illegible] विनस्त्र ॥ मानस्य परमेशान स्रोच नामास्य च कूल ॥१॥
चरोरु [illegible] इति मानानं [illegible] ॥ [illegible] नेन नामास्य चरोकचा इति स्म ॥२॥ [illegible]
र [illegible] नाना [illegible] चरोकचः ॥ ते [illegible] नित्यमात्म निमोचम चर ॥३॥ [illegible]
[illegible] नीर्णं [illegible] नेन सा ॥ [illegible] नि [illegible] ॥४॥ [illegible]
उपस्थास्येपि [illegible] निनित्र रोकचः ॥ [illegible] चोन [illegible] ॥५॥ [illegible]
मचवना [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] त्या [illegible] प [illegible]
[illegible] रो कचो त्य [illegible] ॥ [illegible] प [illegible] च ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] सिच ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ कचित् [illegible]
[illegible] ॥५॥

नामाउचीन ॥१०॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] नीति ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥

१४ यद्दृष्ट्वा तं त्रपिताः तुर्याशः प्रशमनयन्ति ॥ १५ ॥ कृतं तु पंकजं तेन न न तत्तिप्रस्य यकारं विना नाव सीदति

मध्यमानेन तु ततः वेन हृदयेन पृथानदा ॥ उवाच भीमं संकल्पा गौक्तयान्वितं मिदं वचः ॥ १२ ॥ वत्स
मम हि तेषु चन्द्रा ह्यण्यस्य निवेशने ॥ अश्नात्वा यान्नेयं पूर्वं मम नर्मदा नारी न मन्यवः ॥ १३ ॥ संचिन्तये
सततं तु चक्र सांख्यं च किं नु वर्द्धे ॥ पिपीतकु भामिनि निरहे यन्तप्रेक्ष पितानः ॥ १४ ॥ एतनावान्तु हष्यलान
कृतं तवपि सिन्न नृपति ॥ यावत्त कृष्णाद्रं भामपकं यादृशं पत्रिकं नानः ॥ १५ ॥ न हि दृष्टं ब्राह्मणस्य ततः व
मायति नित्यं कं ॥ नवत्य पतिहासं सर्वं कृत्यं यापवत्कृतं भवेन ॥ १६ ॥ भीमसेन उवाच ॥ तापना मन्य
यन तुः वेयतन श्रेव ममस्थितं ॥ किं हि निश्चयं तिष्ठा मित्युपि प्रपिताः ततः करं ॥ १७ ॥ वैशंपायन उ
वाच ॥ एवं नीलकण्ठं लोचनभूयः श्रुश्रुवतः ततः ॥ मार्गितं न त्वविप्रस्य सभार्यस्य विशां पते ॥ १८
ततः श्रुत्वा तन्न ब्राह्मणस्य मम हा नमः ॥ विवेद्य भव भीता कं नीव कन्ये व सोरमी ॥ १९ ॥ नतः
लेखा ह्यण्यं नभार्यया च महनेन च ॥ उद्दिश्य च वैद्यसहितं दृष्टवनना नतं ॥ २० ॥ ब्राह्मण उवा
च ॥ धिगिदं जीवितं लोके गतसारमनर्थकं ॥ दुःखमूलं पराधीनं भृशमप्रियभागि च ॥ २१ ॥ जी
विते परमं दुःखं जीविते परमो ज्वरः ॥ जीविते वर्तमानस्य दुःखानामागमो ध्रुवः ॥ २२ ॥ आत्मा ह्ये
को हि धर्मार्थौ कामं चैव न ननसे वते ॥ एतैश्च विप्रयोगोपि दुःखं परमनन्तकं ॥ २३ ॥ आहुः केचित्
परं मोक्षं स च नास्ति कथं चन ॥ अर्थप्राप्तौ च नरकः कृत्स्न एवोपपद्यते ॥ २४ ॥ अर्थेप्सुता परं दुःख
मर्थप्राप्तौ ततो धिकं ॥ जातस्नेहस्य चार्थेषु विप्रयोगे महत्तरं ॥ २५ ॥
एतावानेव पुरुषोन नयः ॥ २६ ॥ सोरमी कायधे

म॰ भा॰
आ॰ पं॰
२२२

271

२२२

१६॥ प्रथमा यः॥ पकेति॥ ७॥ पार्थिवानां पृथिवी संबंधिनः॥ ३॥ भेदं दर्शयितालसमन्वं चेह भेदिनवंतः

१४१

वेदं पायनउमाच॥ पत्रमपकानि वेपथेनानत्रासगुणस्य निवेशने॥ प्रत्रवीमंतुवप्रेशस्पर्धिद्दै
पायनकलदा॥ ५॥ इदं मासमनीतस्य मामसिकामस्य हे श्वनः॥ देपुस्कांसानिदिवैवतस्पृष्ठपरमा
मदं॥ ६॥ वासलैः प्रांजलिभिः सर्वैलयेप्पुत्कोनरापिपः॥ तमममभागवान्यासेपराणानस्मचिः
प्रभः॥ ६॥ ३॥ स्यादिय चेतिकचलप्रकाकेवासमन्नरापीने॥ तननेमेनपउनीच॥ एकचकांग
नालेन कंनीपुत्रामहणायाः॥ प्रनकपें हिजनेशहकिमकुर्चेन पांडुवाः॥ ५॥ वेशपायनउवाच
एकचक्रांगनानालेनकंनीपुत्रामहणायाः॥ कपुनीतिचिरंकालं जासतागुणस्य निवेशने॥ २
रमणीयानिपश्यंतोवनानिविविधानि च॥ पार्थिवानपिचोदेशान्सरितस्सरांसि च
चेरुर्भैक्ष्यं तदाते तेन सर्वे विपांचन ने॥ चमप्रनांगरागांचहे पुष्टेः प्रियदर्शनाः॥ ४॥ निवे
दयंतिस्मतदाकुंत्यामैक्ष्यंसदानिशि॥ नयाविभक्तान्मांगान्कुंजतेस्मपृथक्पृथक्॥ ५॥
अर्धं तेभेजनेवीरा सहमात्रा परंतपाः॥ अर्धं सर्वस्य भैक्ष्यस्य भीमोभुंक्ते महाबलः॥ ६॥ तथा
ततेषांवसतां तत्र विप्रस्य महात्मनां॥ अपचातिमहान्कालो वशस्यनिवेशने॥ ७॥ ततःक
दाचिद्वैक्षाय गतास्ते पुरुषर्षभाः॥ ८॥ भीमसेनस्तु तत्रासीत् पृथया सह भारत॥ अर्थार्तस्य
महाशब्दं भयात्तस्य निवेशने॥ ९॥

अथ परिदेवयतः विप्रस्य तस्य भार्या च॥ ८॥ परिदेवयतः विविधं लालप्यमानान्॥ १६॥ ७॥ १२॥ १॥ श्री॥

३५८ ॥ अध्यायः ॥ न संतापोऽस्ति ॥ २ न षष्ठं ॥ वैयग्र्यं विज्ञानतः ॥ ४ ॥ न च मर्त्येहि निमित्तं ॥ न च प्राणात्मानम्
१४३

आत्मानमभिविज्ञाय स्वस्थानं ब्राह्मणाः प्रलोकगः ॥ स्वकर्मणा तेनेमं यातयन्ते नेह दृश्यन्तं निजीवितं ॥ ५ ॥ प
वीता चान्यानभक्ष्याणि नरकं सोऽपि हि नवृद्धैः ॥ आत्मन्यागो हि नेच्छेमं परित्यज्य निमयाविना ॥ ६ ॥ सद्गु
णान्महात्मा पवित्रो न चात्र कर्मणि माधवः ॥ अहो यो पिकं गतिं ननु गतिर्भिक्षां मिसर्वाधवः सर्वैः सहस्र
नेत्रो योनव चमेजीविनं ह्यनं ॥ ७ ॥ इत्यादिपर्वणि ब्राह्मणोवाच ॥ न संतापस्त्वया कार्यः
शान्तिनेनेव कर्हिचित ॥ न हि संतापकालोऽयं वैयग्र्यं न च विद्यते ॥ ९ ॥ अत्र धर्मं निपुणं संसर्वे गतिं च
मिद्रमानवैः ॥ अत्र धर्मं मा विनश्येद्वैसंतापोऽत्र हि विद्यते ॥ १० ॥ भार्या पुत्रोऽथ दुहिता सर्वं मामात्मजं मि
धाने ॥ सर्वान हि परित्यज्यान्तं पराकाममिन्नच ॥ ११ ॥ एवं हि परमं नार्थाः कार्यं लोके सनातनं ॥
प्राणान्विद्यात्मानं च यदन्ते न हि नमाचरेत ॥ १२ ॥ न च तं न क्रम्यन्तं कर्मणा बाधितं दृष्टाविवर्हे ॥ भवन्मम
नवा त्वं लोके क्षिप्रं यत्राह्वन्तं ॥ १३ ॥ एवं वै वरंकर्पमं तपस्वं स्वाम्यहं न च ॥ अर्थे च न वयमस्य
भूयानन्नग्रहणने ॥ १४ ॥ यदर्थं मिच्छन्ते भार्याश्रमः सोऽर्थस्त्वयाऽपि ॥ कन्यां चैव कामं मरतु स्वकृतं
हमस्मान्नया ॥ १५ ॥ समस्थैः पौषणं चापि सन्न योऽरक्षणे नया ॥ न न्ह हेतुं तयोः शक्तानया रक्षण
पोषणे ॥ १६ ॥ सम हि सद्धि हीना याः सर्वप्राणापने स्वरं ॥ कथं स्थानं तं गतो वा लोके व्यवपंचकंचन
ह ॥ १७ ॥ कथं हि विधवानाथा बालपुत्रा विनात्वया ॥ मिथुनं जीवयिष्यामि स्थिता साधुपथे पथि ॥ १८

वृंदकर्म ॥ ५ ॥ ९ ॥ ॥ ॥

योगेनुपायं ॥२९॥३०॥ भूतग्रामैः सर्वं भूतानि नश्यं स्वर्गः ॥३१॥ ३०॥ मानसमां [illegible] स्मृतिसंगोरसं

नरियोगं [illegible] यिये नमचोयमापदः ॥ [illegible] मनामयं ॥२४॥ इति
नेचेमया [illegible] नया ॥ देमयनसनोगंनेनयानममनः [illegible] ॥२५॥ [illegible]
विहस [illegible] मेतिचे ॥ [illegible] मयाम [illegible] ॥२६॥ [illegible]
यियिना [illegible] विरेनव ॥ [illegible] कारति ॥२८॥ [illegible]
यु [illegible] ॥ [illegible] ॥२६॥ [illegible]
हिना [illegible] किंचनन ॥ [illegible] ॥३०॥ [illegible]
वरी [illegible] ॥ [illegible] कांगनि ॥३१॥ [illegible]
चविहि [illegible] ॥ [illegible] ॥३२॥ कलीनं [illegible]
[illegible] ॥ नामह [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥३४॥ [illegible] ॥ बालमसामवयस
[illegible] ॥३५॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥३६॥ [illegible] ॥ मन्यंते के चिदर्थ [illegible]
केचिद [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
नामह बालाकथम [illegible] ॥३७॥ [illegible] पितुर्नरा: कन्या [illegible]

[illegible] ॥ २४॥ २५॥ २२॥ २३॥ २५॥ २६॥ २७॥

म॰ भा॰
आ॰ प॰
२२४

२७३

यद्यैलैः ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ फलार्थं विधानज्ञ मिति संवेयः ॥ २८ ॥ आत्मन्ला सर्मस्सर्वेने नियध्य ध्यानानि
आत्मात्मं सततं सदैव ह्येयपिधमेर्द्ध = २८

यद्यैलयोभिर्लिंयमेर्देनैश्च विविधैलक्ष्या ॥ विधिष्ठाने विधयामर्ने लिंगं प्रियहृिने स्थितिः ॥ २४ ॥
नहिंदं यच्चि कीर्थाभिधमेयप्रमसंमनं ॥ स्वंचैव हिनं चैवनव चैव क्रलसुच ॥ २५ ॥ इह्मानि चाध्य
त्यानि द्वज्ञानिन्हदः प्रिया ॥ प्राप्त क्रुमप्रमो वाय मार्धा चाचिसलांमनं ॥ २६ ॥ प्राप्तद्वं थंयलं रखेन
दारैरहियनेयधि ॥ द्व वोद्द्य फलार्थं हि मार्या त्रमेयलंसद्दं ॥ २७ ॥ सर्वमेन हि यानक्षेत्रयानामेव
निश्चय ॥ २८ ॥ एकलो वाक्लं लक्न्नमानमावाकलवर्थं ॥ २९ ॥ नसमंसवेमेवेनि ध्यानामेवनिश्च
यः ॥ ३० ॥ कत्कृस्य मयाकार्थं नाव्यानमानमान्मना ॥ ग्रलजानी हि मामार्थं हलो मेपरियालय ॥ ३१ ॥ प्र
वर्णा हि यमिराङ्गध्मेताधर्मनिश्चये ॥ धर्मेराजा च सावाकुले हस्यात्सच मामपि ॥ ३२ ॥ निःसंशयं
वयः श्रेष्ठो ब्रीणां संशयितो वयः ॥ अतो मामेवयमेसमुद्व्यायिनमर्हसि ॥ ३३ ॥ भर्त्तः प्रियाप्रेच
मानिध मंस्यचकिलो महान ॥ नमास्ति संप्रियाप्राप्ताननर्मान्यपतिजीविनं ॥ ३४ ॥ जानन्ध्याचमहा
चप्रियकामाचनेमह ॥ समीर्येन हृहं सर्वधाव सांघं कतोमतः ॥ ३५ ॥ इतः स्याधिहि मामार्थंमा
पुत्रमन्मानपि विश्चियं ॥ नतः प्रतिहितो धर्मैः भविष्यतिवनलव ॥ ३६ ॥ नचाध्यधर्मः कुल्याणाव
पत्नीकृतांतरं ॥ स्रीणामयधर्मः समहात्मनः प्रवेशंलंबने ॥ ३७ ॥ एतत्सर्वं समीक्ष्यनमान्म
न्यायचराहिंत ॥ प्राप्तात्मानं तारयाद्य कुलंचेमो दयारतो ॥ ३८ ॥

स्यः ॥ २९ ॥ ३० ॥ ततस्ततः प्रहृतिः संततिः ॥ प्रजीवितं मरहो ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ सर्वस्यलंचनेतं विनामर्थं तद

महा॰ अनु॰
२२४

प्रवृद्धनाः गौरिताः शवशिमाः कश्चिकिनाः॥ अवसेयंतनगवेष्यालेपनेरूपाणेतिचेतिमेदिनौ॥२४॥मा

मर्दं रूनावलिमेमप्राणेमानाभिमांशलं॥ मपुत्रे स्वचसंवंधेरू धंपारूपाभिरहितं॥२५॥न्न
रूमाभिधं भूमौ आर्ये यं लिप्यथावेमाः॥ मार्ये यं निज्ञनाः कर्णे पलिहीनां न पाहिय॥२६॥मा देवे
वात्यमानावेम्राणेमानाञ्चयाप्लभिः॥ स्थालंपमिनश्चःस्थाभिस्तुनेहेह्रिनोजनम॥२७॥कंपनव
कुलश्लेकाभिमंवानानमानाम॥ मिनरोनामहेमार्गोनियोनकमरस्मृनमूं॥२८॥ कंसंपपाभिवा
लेपक्षिननपुणनापानमौक्षिनानन्॥ भनाथेलवेनोन्यमेषशानंपमिरूमिंवानन्॥२९॥ रमामभिचानेवा
लामनायांपरिभयमं॥ मनहः प्राधिष्ठिवानिमृदावेदम्नुलियशा॥३०॥ नाचेदंहूनदिलेयंपन
मूलेहपहेदिना॥ प्रमञ्चेनाहरेपुलेरूविधोंवावापपन॥३१॥ नेपेरूमाणपुंनेनानरूप
भिवानना॥ मनहंवपमापरज्ञाभिमावाविग्रंनंव॥३२॥ प्रचलानाचलेकेचनक्षानमान
मन्नानंनौ॥ मवलिसेनेवैश्रेहनमोपणभिनसंशपव॥३३॥ नोचहोनोमयावालोनयाचैवनंथा
मनो॥ विनपपेनाननेहेहेमनस्थाविवनलनहये॥३४॥ जिनयसर्वयायेवंविनपिण्डानपसंग
यं॥ नयाविहीनंनस्थानंमापरिमननुमहेफि॥३५॥ पुफिरपापणलोकोंहवंभतेःपपांगानि
गोनेब्रह्मनपुज्ञाणभिनिप्रर्विहेदिङः॥३६॥ पपिस्तनकः सनरूपापंडहिमेयंनपामया॥ वां
पवानाप्रपरिन्यकालप्टथेनौविनचमे॥३७॥

मेवक्कसंवंपहमे॥२८॥न

लानिपादीन॥२०॥ मांसः कारुः पपाकहिः महरामंपरुहिः फलेसमहेनौनिमेदिनी॥२८॥२१॥

स. भा.
श्रा. पं.
२२४

॥ फलसंख्याश्च फलमरणान ॥ २४ ॥ नच तावसमर्मीयेष्वसवार्थेवं प्रार्थं ॥ २५ ॥ श्रमनेव जीवं जीवस्य
हलोके कीर्तेः सनान ॥ २६ ॥ ततः प्रदानेन श्रावितराज्यसाहाय्यकन्या दानेऽर्हं न जानन्ति पितुर्गृहे

जनाश्च कपणा बाला यत्र कन्न गामिनी ॥ भविष्यामि नयानानविहीनाकृपणाग्रहः ॥ २७ ॥
अथवाहं करिष्यामि कन्याया विमोचनं ॥ फलसंख्या भविष्यामि कन्या कर्म दुःखं ॥ २८ ॥
अथवा यास्ये नेन यमुना मा हिन्नसलम ॥ जीवितानां भविष्यामि न स्वे न स्वामा मयि ॥ २९ ॥ नरस्य
दृष्टी धर्मार्थं प्रसवार्थं च सन्तम ॥ कामानं यदि वक्ष्यं स्वयं मांसं च संत्यज ॥ ३० ॥ अथ वपक
णीये च मानां कालेन गात्रं ॥ किं ततः परमं दुःखं यदृष्टं यं स्वर्गं नैव पि ॥ ३१ ॥ याचमानाः पुरा
दृष्ट्वा पीयावे महिम्नि वन ॥ न पितरो गेनिर्मेके के स्यात् स्मरास्वाय वे ॥ ३२ ॥ अमरन् वसन्ती लो
के भविष्या मि वृत्ता बिना ॥ ततः प्रदाने देवाश्च पितरश्च मिलितः स्मृते ॥ न यादृते नतो ये नम
विष्णोलिहिताय वै ॥ ३३ ॥ वैशं पायन उवाच ॥ एवं वदविघं नष्टा निशम्य पारिदेवितं ॥ पितामाता
च माचैव कन्या प्रदुःखमय ॥ ३४ ॥ ततः प्रहृदितानां सर्वासिं शम्याश्वमनलस्ता ॥ प्रकृतं नवलो वा
लः कलमधमनमधुवीन ॥ ३५ ॥ स पितः कं च मा मा न मा वस्महिति निर्वाचवान ॥ प्रहसन्निव सर्वा
णानेकैकमनसर्पालि ॥ ३६ ॥ ततः सरणामाहायसृहृद्धः स्वनादवीन ॥ अनेना हं दृह निष्प्रा
मिरावधं तु हत्वा रक्ष ॥ ३७ ॥ तथा पितेपां दुःखेन पीना लानि शम्यतत ॥ बालस्य वाक्यमथ
कं हृदि सममवलम्ब्यहान ॥ ३८ ॥

चकन्या या देवा श्च पितरस्य हितायतने निष्ठतं यथापि नयादनं न नोदे ननमवहितायेममवि
वंतिनी यथार्थ ॥ ३९ ॥ कलेमयुवं ॥ ४० ॥ हे पितः मा रुदः शोकं नं मा कृशेत ने न बाललीलापि भाविष्यमाश्च

सभापर्व... २२५

कस्यकेनदेहेनाकुप्यकेनतुंमावन्नकसाः रोमामनहनेनित्रवर्नंपद्माः कप्यादिकादिनामावा
हनणवहुंहवारित्योगतोः देपाएणांसोवावस्तंनिवाशंकरिंशनिनन निवेंयेनर्थः ॥२॥ मंचये
नसम्मस्याअपागजकेहिराष्ट्रेकनामायोवोरहूर्वोस्यान अमार्यस्यान्मनोयनमाजहूर्योस्यान ॥२

ब्राह्मणीः कस्यवन्नकसाः कस्यनाहं हवाषिताः ॥ स्वौरनेहिंवस्यंनिकामगाः प्रतिलोयथा
गतानंग्रस्थसंविंरेन्नेनोमार्यानननोयन ॥ मनस्यसेवयेनाप्रसानीमुजामुनारयेन ॥ ३ ॥ विप
रीनंमयाचेरंत्वयं सर्वमपाजितं ॥ नहिमामायदंप्राप्यमंरपातलग्यामहेवयं ॥ सोयमसानन
प्राप्तोवाराः फलविनाशनः ॥ भोननेगुहमयीकः प्रदेयननवेमया ॥ ४ ॥ नचमेवियतेवितं
संकेनेशुहयंक्वचित ॥ सहेतनंश्रयाकंवननयात्यामिकदाचन ॥ ५ ॥ नानिवेवनपुष्पाणि
स्थानोवायुरवसः ॥ सोहंतः स्वार्थएवमयोमहत्स्यसकरोम्यहं ॥ ६ ॥ सहैवनितिमिष्यामिवाय
वैरपावसं ॥ ननोनः प्रहिताः सर्वानेवोपमोस्यनि ॥ ७ ॥ स्यारिपर्वणिवकवधे ॥ कुसु
वाच ॥ नविषादस्त्वयाकार्योमयादस्याकथंचन ॥ उपायः परिदृष्टोत्र [illegible] ॥ ८ ॥
एकस्त्वंसमनोवालः कन्याचैव [illegible] ॥ नचैनयोलयायन्याग मन्ननवरोचये ॥ मम
पंचसनाबद्ध [illegible] ॥ नरूर्थं वत्तिमादायनस्यपायप्रवस ॥ ९ ॥ ब्राह्मण
उवाच ॥ नाहमेतत्करिष्यामि जीवितार्थी कथंचन ॥ ब्राह्मणस्यातिथेश्चैव स्वार्थे प्राणान्वि
योजयेत् ॥ नत्वेवनदकुलीनासुनामपमिच्छामिहंतुं [illegible] ॥ १० ॥

विपरीतंकुलस्येममार्याधिदहेननात् [illegible] ॥ १०॥११॥ [illegible] ॥ नविषादस्तत्रि ॥ १२
एवंतत्कर्म [illegible] ॥ १३ ॥

२२६

[illegible]

[illegible]

[illegible]

नन्वयमपि नान्यायलोचेत्याह ॥ गृहस्थोवेति ग्राहयेन ग्राहवत्‌ गृचारेन कवलेयेत्समसमहत्‌नः नकार्यं

गृहत्योवाननत्वानोग्राहयेत्संस्रानोमम ॥ नत्कर्थीनथा कार्थं विप्रयेनि मुक्तां मनं ॥ १९ ॥ पत्वप
कल्प्र्यत्यापविप्रोमार्यधामहं ॥ हृष्टः संपूज्य यामास तदा कामप्रत्नो पर्यं ॥ २९ ॥ ततः कुन्ती
चविप्रश्च सहितावनिलात्मजं ॥ नमन्नुतां कृत्वा विनिष्पत्येष्वत्रवीद्वचो ॥ २ ॥ इत्यादिपर्वणि
बकवधे ॥ वैशंपायन उवाच ॥ कस्मिंश्चिन्निर्मीमेन पुनिहानेयमानेन ॥ प्रजन्मलेन ततः स
वै भैक्षमारायथां तु वा ॥ १ ॥ आकारोपि च नतानावां तु पत्रो युधिष्ठिरः ॥ हृष्टः समुपविष्टो
त्तनः पप्रच्छमातरं ॥ २ ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ किं चिकीर्षत्ययं कर्म भीमो भीमपराक्रमः ॥ भव
त्यानुमते कच्चिदयं कर्तुमिच्छति ॥ ३ ॥ कुन्त्युवाच ॥ ममैव वचनादेष करिष्यति परंतपः
ब्राह्मणार्थे महत्कृत्यं मोक्षाय नगरस्य च ॥ ४ ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ किमिदं साहसं तीक्ष्णं
भवत्या दुष्करं कृतं ॥ परित्यागं हि पुत्रस्य न प्रशंसन्ति साधवः ॥ ५ ॥ कथं परसुतस्यार्थे स्व
सुतं त्यक्तुमिच्छसि ॥ लोकवेदविरुद्धं हि पुत्रत्यागात्कृतं त्वया ॥ ६ ॥ यस्य बाहू समाश्रित्य
सुखं सर्वे स्वपामहे ॥ राज्यं चापहृतं क्षुद्रैराजिहीर्षामहे पुनः ॥ ७ ॥ यस्य दुर्योधनो वीर्यं
चिन्तयन्नमितौजसः ॥ न शेते रजनीः सर्वा दुःखाच्छकुनिना सह ॥ ८ ॥ यस्य वीरस्य वीर्येण
मुक्ता जतुगृहाद्वयं ॥ अन्येभ्यश्चैव पापेभ्यो निहतश्च पुरोचनः ॥ ९ ॥

तथानकर्थीनयथाविप्रयापिशिवयागर्वीनयाकर्थीति ॥ १९ ॥ २९ ॥ २ ॥ ग्ण अध्यायः ॥ कस्मि-
न्नेरनीति ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ मोक्षाय बकभयादिति प्रोक्तः ॥ ४ ॥ ५ ॥

276

[illegible]

म॰ भा॰
आ॰ प॰
२०८

२५/॥ ... यः॥ उपपन्नं कृतं वाच्यं मित्रैः सौहृदः॥ २॥ पाणिग्राहः सम्बन्धः॥ २॥ भिन्नवक्त्रः॥ ...
१५०

यो ब्राह्मणस्य साहाय्यं कुर्यादर्थेषु कर्हिचित्॥ क्षत्रियः स शुभांल्लोकान् प्राप्नुयादिति मे मतिः॥ २२॥
क्षत्रियः क्षत्रियस्यैव कुर्वाणो वधमोक्षणं॥ विपुलां कीर्तिमाप्नोति लोकेस्मिंश्च परत्र च॥ २३॥
वैश्यस्यार्थे च साहाय्यं कुर्वाणः क्षत्रियो भुवि॥ स सर्वेष्वपि लोकेषु प्रजा रंजयते ध्रुवं॥ २४॥
शूद्रं तु मोचयेद्राजा शरणार्थिनमागतं॥ प्राप्नोतीह कुले जन्म सद्द्रव्ये राजपूजिते॥ २५॥
एवं मां भगवान्व्यासः पुरा पौरवनंदन॥ प्रोवाच सुमतिप्राज्ञस्तस्मादेवं चिकीर्षितं॥ २६॥
इत्यादिपर्वणि बकवधे॥ युधिष्ठिर उवाच॥ उपपन्नमिदं मातस्त्वया यद्बुद्धिपूर्वकं॥ २७॥ आ-
र्तस्य ब्राह्मणस्यैवमनुक्रोशादिदं कृतं॥ ध्रुवमेष्यति भीमोयं निहत्य पुरुषादकं॥ सर्व-
था ब्राह्मणस्यार्थे यदनुक्रोशवत्यसि॥ यथा त्विदं न विंदेयुर्नरा नगरवासिनः॥ तथा-
यं ब्राह्मणो वाच्यः परिग्राह्यश्च यत्नतः॥ १॥ वैशंपायन उवाच॥ ततो रात्र्यां व्यतीतायाम-
न्नमादाय पांडवः॥ भीमसेनो ययौ तत्र यत्रासौ पुरुषादकः॥ आसाद्य तु वनं तस्य रक्ष-
सः पांडवो बली॥ आजुहाव ततो नाम्ना तदन्नमुपभोजयन्॥ ४॥ ततः स राक्षसः श्रुत्वा
भीमसेनस्य तद्वचः॥ आजगाम सुसंक्रुद्धो यत्र भीमो व्यवस्थितः॥ महाकायो महा-
वेगो दारयन्निव मेदिनीं॥ लोहिताक्षः करालश्च लोहितश्मश्रुमूर्धजः॥ ६॥ आकर्ण-
भिन्नवक्त्रश्च शंकुकर्णो विभीषणः॥ त्रिशिखां भ्रुकुटीं कृत्वा संदश्य दशनच्छदं॥ ७॥

त्रिशीर्षवक्त्रः॥ भ्रुकुटिमर्धं त्रिशिखां विरेखां॥ ८॥ ॥

277

२०८

॥ विषाणः प्रमाणमर्थविषयोदितिनिमन्यय ॥२५॥ निर्दिष्टाः वाहिनिकाशिनः निरहारा नि-

यस्यावीर्यसमाश्रितस्य चलस्यशोभितसंपर्य ॥ २ यां म व्याम द्वेषां शां निहन्य पुनराद्भुतान् ॥२०॥
नमस्य चरमिलक्ष्मणो बुद्धिमान्स्याप कांक्षया ॥ सा चिन्तः विदेह हि सविलमा गानचेनसा ॥२१॥
के तु वा च ॥ पुनि द्विरन्नसंता पल्लया कार्यो नृकोदरो ॥ न चायं बुद्धिदो वे स्याप व सायः क
नामया ॥२२॥ इह निम्न प्रभव नेव यं पुनस्तो चिनाः ॥ पुत्रान्नयानेन पूर्णा सम्भक्तान्वीन
मन्यव ॥२३॥ नस्य प्रतिक्षिपा पार्श्वमुमेयं प्रसीदिना ॥ पलायानेव पुहपः कनयमित्रन
वृत्तिः २४ यावत्कापाद्मा स्यक पाद पुत्राणानन ॥ स्वामीमस्य विक्रोनलस्यनम्रहम
हन ॥२५॥ हिंतिंस्यव पादेव विष्या सोमे ह कोदरो ॥ वाह्नों वेहि मीमस्य नागपुनलमम
हन ॥२६॥ येन यूनन्तस्य प्राणा निकृतवा रणे नान ॥ हकार्दरा तारपेवदे कन्या नविद
ते ॥२७॥ कोनंनौ या घः प्रभुमौ पिचक्रया लद्यं ॥ नान मा ः पुनाचेनमभीक ल्पनेनोगि
रो ॥ पार्थो मोखाद स्याक्षिलागाचे विद्वांसिना ॥ नदहस्त्र याचा वाच वे भी मस्य पांडव
पुत्री कापपुविप्रस्य ननक्त नव नौमानि ॥२८॥ नेहलामा न चा ताना च च मा होदनि छि
ते ॥ वृद्धि पुत्रे यम प्रव्यक्षाय कलो मया ॥२९॥ प्रयोह्य वघि नि ब नो पुत्रि त्रि मविष्य
नः ॥ प्रनी कारस्य वा सस्य यमस्य च रिनो महान् ॥३०॥

पादे ॥ यकाः इचि नाः वाणान्चारणा
वतन्नारायचे निशोभः ॥३१॥ प्रनि कार्यैः प्रोमतिकृतवलीप्रनिकर्नेमिनि शोषः ॥३२॥

विसृज्य तं नमितिस्त्वं स्वकं नाम शिलीमुखं पुनः ॥ २४ ॥ शिरो यः कंधरां ॥ २५ ॥ चक्रे कृतं तव रिकंध
रयोर्धेनतेन एतद्वं शं व मं ने स्पर्शः ॥ रवं न मि ति स्व वचस्या व न लिंगं ॥ २० ॥ अध्याय ॥ ततः
भीमसेनोऽपि नद्धवः परिघ महाभुजः ॥ विसृज्य तं महाबाहुर्विव्याध बलाहनी ॥ २२ ॥
सह पुमाननो भीमसेनकर्षमाणश्च पातरः ॥ सम तत्र न नी चेणक्रमेण तत्र हत्वा रकः ॥ २३ ॥ न
यो वैरेण समद्ध नापि पृथिवी समकं पतत् ॥ वाहनं समहाकायां सूर्यं या मासनलल ॥ २४ ॥ ही
यमानेन ननद्धवः सभीत तत्र हतारकः ॥ निशि यामभूमौ जानन्मां समाजस्ये ह कोदर ॥ २५ ॥
ननोऽप्यजाननता हयसव पौसा वलादि ॥ वाहना पदिजस्था हदेद्विष्णुनेन शिरो यं ता ॥ २६ ॥ स
ब्रेन च करीटे योग्य एता सं शिपं तं रवः ॥ जरतो द्विगुणं च के रवं तं मे रवं रवं ॥ २७ ॥ ततोऽस्य
दधिरं वक्त्रात्स्रावयामीति द्विपांपतते ॥ स उवमान स्पृशी मे ननस्य ची रस्यारुवम ॥ २८ ॥ ततः दि
प [illegible] शिवकवचे ॥ वैरि पाप नर वध ॥ ततः समय पार्थी ओ न हिता मे रवं रवं ॥ शैलतज
सनी कातोगतना स्वयं वहक ॥ २ ॥ तेन पाहेन विज्ञ नेन तन स्थापयद्रवसः ॥ निपपात नरद्वा
ज्ञात नरहेव पवि वाति शिः ॥ ३ ॥ ताम्रौ ताम्विगतन ताना स्त्रीमः सद्द रतन सुः ॥ सांवपा माय
वहवान्स मये च न वे शापत ॥ ४ ॥ न हि द्विपा मान पा मूयो ग्र षा मि मिति कहि चित् ॥ द्विस्रतो
हि व यः श्रीक्रमेव मेवं मवे हितिर ॥ ५ ॥ नस्य नद्धवं नं स्ता ना ना नि रवं ता शिमारन ॥ एवम क्षि
तिनं प्राप्तुर्जगद्धः समर्थं च तं ॥ ६ ॥

ति समानि यान्यग्नी निपयामो अंगानि च हृत पापश्री निपस्य सनयाः ॥ १५ ॥

१॥ पितामहः शंतनुभिः कुलैः यमस्यात् नंयमग्रहे॥ २०॥ ११॥ २४॥ २५॥ उपदेवतामाशुवसस्यतनस्यशोभिते

भगवान मनंनेत्र प्रभीमसेनेनमहात्मनः॥ विवृत्यपनयनेकुरुदंडं वचनमब्रवीत॥ १॥ केन
गन्धसिद्धंभंजे मदकुमपकस्पिते॥ पश्यतोममदृष्टि विपाल्यमसारने॥ २॥ भीमसे
नमुनलना नापहरमञ्जिवभारत॥ गदेयानमना न्यभकेपरपरमुखः॥ ३॥ यवंभीमेषुवं
कृतमामहधाणकपत्रे भो॥ भमहवर्डीमसेनेनिवाममः शकयाहकः॥ न यमविधायमसेने भ
लमप्येलुकोदरः॥ यादवंभंजनएवानेधर्मधुवःपरवीरहा॥ ४॥ परमोत्तनसमुहिकेनी
शुभेश्वरं॥ नवानपुत्रेपाशिमपमहामापरणपूजनःस्थितः॥ ५॥ नपादवकवनाभीमः पा
शिभ्यांमपमहाहतः॥ नैवाव लोकयामास न वनेसंजय संशयः॥ ६॥ ततः सम्भयः सक्रूरीस
समाप्यपरसः॥ नातृपिताशभीमस्तुनरपश्चद्वहृतो॥ ७॥ ततोभीमः शनैर्भगानद
नेकृतपर्वभ॥ वाशुपदपणमंतनः नहेलापुपिमहाबलः॥ ८॥ निर्मुक्तेनजनंप्रतिन
श्रावणीशवान॥ सेनपाशिनाभीमः शहमनिवभारते॥ ९॥ ततः मृतनहपमहशवान्
दविपाल्वती॥ शहिलो भीमसेनायनसभीमस्तपाद्रव॥ १०॥ नद्वदशहमभवन्महीहर
विनाशनं॥ भोरहमहामनकानरणहरपाइपा॥ ११॥ नाभविशयानवकः समभिद्रम
पांडवं॥ भनामपशिनयाहभीमसेनेनमहावले॥ १२॥

पामावार्तुकप्रेतिमावः॥ १३॥ पतिनयाह॥ शविंशतिनवान॥ २२॥

उद्गमदंड्राहाणेन यद्दमोऽहं नाऽतिक्ष्य ना नाहाणेनांहवाऽर्थमहंडस्ध च ब्राह्मणेऽजना दिकं
चक्रुः ॥ २ ॥ अध्यायः ॥ तेनखेति ॥ ५ ॥ पांत्रहाडपनिषदं परमस्तं नमथीयानाऽइतिसंबंध ॥ १ ॥ संक्षि

सतत्त्वमथयाः याघ्यानोवककवं नं प्रति ॥ तेन नूनं मन्ये देवेन कमं से लोकहितं कृतं ॥ ४ ॥ ततस्ते
ब्राह्मणाः सर्वे तत्र विघ्यायामसुविस्मिताः ॥ वै पप्रच्छुः द्रष्टुमहेतिनाधककुं डेहमहंतनः ॥ २ ॥ ततो
ऽनन्तरपदे सर्वे आजग्मुर्नगरं प्रति ॥ तद्दृष्टं ननसंदृष्ट्वा पार्थान् लक्ष्मैव चात्र सन ॥ ३ ॥ ततश्चिर्भ्य वैदुपि
वक्तव्यः ॥ जनमेजय उवाच ॥ तेनश्चापि कथमाप्ता निहृम्यवकरावन्तं ॥ आनंडर्थं नतो ब्रह्म
न्किं मर्कवेनपांडवाः ॥ ४ ॥ वैशंपायन उवाच ॥ न थैव स्वयस्वन्नान्नन्निहंस्वकरावहं ॥ अथै
यानाः परं ब्रह्म ब्राह्मणा ऋत्विजो प्लुतो ॥ ५ ॥ ततः कलिपयाहस्य ब्राह्मणाः संशितव्रताः ॥ अतिथि
पार्थीनहे पूर्ण ब्राह्मणा स्वाध्यायमाहे ॥ ६ ॥ स च मूर्कः तिनाते विप्रं विप्रर्षभमलहः ॥ इदं प्रति
अथ तं तस्मिन् सर्वान् तिथिवतः ॥ ७ ॥ तत्तेऽपाडवाः सर्वे सह कन्याभरर्षभाः ॥ उपासां चक्रिरे
विप्रं कथयं नेकृत्याः शुभाः ॥ ८ ॥ कथया सह देवांषु नीथो निसहिल लक्ष्या ॥ तत स्ववि वि
धा स्वयाऽत्ये प्रांश्चैव पूजाऽपि च ॥ ९ ॥ ततः कथप्रवृत्तः कथांतेजनमेजय ॥ पांचालेन्द्र
नाकोयाव वसेन्याः स्वयंवरे ॥ १० ॥ पृष्ठकस्य चौतानिषद्भुतानि च विविधानि ॥ अयो निजं
कृष्णा पांडुपत्नी महीयसे ॥ ११ ॥

तवनन्यनित्यालब्धा पाटेव पं सामप्र पं तासंज्ञानायस्यसः अप्राप्य व्रतनस्मर्थः ॥ अतिथिव्रतार्थीवार्थी
र्थी ॥ १ ॥ अतिथिव्रतः अतिथिपूजनैकनिष्ठः ॥ ॥ ५ ॥ यावत्सेन्याः द्रौपद्याः ॥ १० ॥ ११ ॥

279

२॥ तत्ताग्रत्वात्॥ अन्यथोपि द्वंद्वं नश्रितिप्रसेः ३३॥ न एन तो न्न ना सिक सो ये न ग ग गो चे न दूध

ततः प्रभृति वंशे शिन त्र सो ध्या नि भाव ता॥ न पो रे प्रन्य दू द्वंद्व न न रे ने ग र व का सि सि ३॥ ४ तत नेत्री
मत्त मा द्य ग म ना र्थ पुरू षा र वं॥ प्रार दे श ति नि नि वि प्य न ग मा न य त्व हि ने ३॥ ५॥ दू स्त्रा भी म र वे
दू ने व वं वि नि द न न न द्या॥ वा न यो च्य य वो हि ग्राः प्रति न म त न न त न॥ ६॥ ततः स भो म ते हू ना
ग ना ग्रा प ता वे प्र न न न॥ प्रा च च दे य था दृ ने ग ग ः म वे म बो घ न ः॥ ७॥ ज तो न ग ः शि नि कं ता न
ग ग न त्व मे व न॥ ८॥ सू नि दू तं भ मो ग द सं ह धि रो वि ते॥ ९॥ ज म दि कू र म दृ थं वि नि को शि ग
मा न वं॥ १० दू सू ह हू ए पे मा ग यो च भृ च त व न ग ग ग ः॥ ११॥ ए क च कं ततो न व्या प हू शि प्र र इ ९
२॥ ततः स दू स्व यो वा न वृ रा न य र वा ति न॥ १२॥ त मा त्म य वे कं दू शु त शी ह कु मा र काः॥ त
त ले वि शि ना ः स वें क भि र्दू प्र नि मा न पे॥ दे व ना य च यां च कु ः म वे ए व वि यां प ने॥ १३॥ ततः
प्र ग ण्य ग म ह ः क स वा यो ग भो ज ने॥ ता त्मा चा ग्र ने वि प्र प्र कु ः म वे ए व ने॥ १४॥ ए वं ए ए ः
स व हू पो रत्न मा ग च्छ धा य वा न॥ उ वा च न ग ग ग न्य वां नि दूं वि प्र थ म त द॥ १५॥ प्रा ज्ञा पि ने मा ए
या ने दू दं ते म दृ वं य मि॥ दू द श्री ज्ञा रा प ः क श्रि नं न मि दे प्र म दृ प न ना॥ १६॥ प्रा रि ए स्तु प्र ग ए वे
परि कें यं प्र र च॥ प्र व वी द्भा रा ग ग्र श्री ग वि प्रा स्य श दू म नि व॥ १७॥ ग प यि प्रा प्र ह न मा
ग्र श्र म त दु रा न ने॥ ग नि मि तें भ यं चा पि न कं थं नि नि चा प्र वी न॥ १८॥

प्रा व च दे का ग्र हा ः॥ ३८॥ २९॥ २५॥ श्रा त्ता पि नं गा न की यैः प्र थ ने रा र म ह्य भो ज ना र्थं॥ २२॥ २५॥

म॰ भा॰
शा॰ पं॰
२८१

280

हकलमसेकलतं श्रुत्वा समसमहायस्या विवक्षितमात्मतमथः ॥ ८ ॥ समनन्तरात्मसमन — ऽनिष्ठा
ममरणालो यलानिष्ठा मनेषु ते निमित्तान ॥ कृष्णः सात्मोन्ययपादः आत्मेन्यविपदति ॥ ९ ॥ एवंस

वनं प्रस्थितं ते यां संभारसज्जमनो द्वीन ॥ आगतं विनक्रामंसं विदिष्टोऽग्रे हि जोनम ॥ ९ ॥ ग्म उवा
च ॥ शरीरमात्रमेवायमयाममवशेषितं ॥ अस्मामिवाधारीरं बाह्यसमेकलमं हलं ॥ १० ॥ देव उ
वाच ॥ अस्मामिश्चैवमर्वाणितेषां संहारमेवच ॥ प्रयोगं चैवसर्वेषां दानमर्हसि मेभवान ॥ ११
वा ... उवाच ॥ तथेत्युक्त्वा ततस्तस्मै प्रददौ भगवान्ददन ॥ प्रतिगृह्य तदा द्रोणः कृतकृत्योऽभ
वनदा ॥ संप्रहृष्टमना द्रोणो रामानामन्त्र्य तं ॥ प्रत्यागमत्सनन्तरात्मनो ह्युत्प्रियकोमवन ॥ १३ ॥
ततोऽद्रुपदमासाद्य भारद्वाजः प्रतापवान ॥ अब्रवीत्पुरुषव्याघ्रः सखायं विद्धिमामिति ॥ १४ ॥
द्रुपद उवाच ॥ नाश्रोत्रियः श्रोत्रियस्य नारथी रथिनः सखा ॥ नाराजा पार्थिवस्यापि सखिपूर्व
वं किमिष्यते ॥ १५ ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ सविनिश्चित्य मनसा पांचाल्यं प्रति बुद्धिमान ॥ जगाम कुरु
मुख्यानां नगरं नागसाह्वयं ॥ १६ ॥ तस्मै पौत्रान्समादाय वसूनि विविधानि च ॥ प्राप्ताय प्रददौ
भीष्मः शिष्यान्द्रोणाय धीमते ॥ १७ ॥ द्रोणः शिष्यांस्ततः सर्वानिदं वचनमब्रवीत ॥ समानी
यतनान्सर्वान्पुत्रस्य सखायवै ॥ १८ ॥

स्त्रा ३ निम विपूर्वं वा से क्रूनं सर्व किंकथं दृष्टाने प्राप्तै नेक त्वमयोग्यर्थः ॥ वालो हि मोचाहन
सेना मिसयो मित्रमिति तत्त्वमाहृत्य तिमानः ॥ १७ ॥ १८ ॥ समानीयपुत्रं सर्वानहीनाप्रदद्दौ ॥ ७ ॥ २८ ॥

२८१

१ ॥ [illegible] ॥ ११ ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ ततो [illegible]
[illegible] ॥ २ ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ कथं द्रुपदपुत्रस्य धृष्टद्युम्नस्य पावकात् ॥ वेदीमध्याच्च कृष्णायाः संभवः कथय द्विज ॥ १ ॥
कथं द्रोणान्महेष्वासात् [illegible] ॥ कथं विप्र [illegible] कस्य हेतोर्न [illegible] ॥
वैशंपायन उवाच ॥ एवमुक्तो द्विजो राजन् [illegible] कथयामास [illegible]
[illegible] ॥ ३ ॥ इत्यादिपर्वणि द्रौपदीसंभवे ॥ ब्राह्मण उवाच ॥ गंगाद्वारं प्रति महान्बभूवर्षिर्म
[illegible] ॥ भरद्वाजो महाप्राज्ञः सततं संशितव्रतः ॥ १ ॥ सोऽभिषेक्तुं ततो गंगां पूर्वमेवागतां
[illegible] ॥ ददर्शाप्सरसं तत्र घृताचीमाप्लुतामृषिः ॥ तस्या वायुर्नदीतीरे वसनं व्यपकर्षत ॥ ३ ॥ अप
[illegible] ॥ ४ ॥ तस्यां संसक्तमनसः कौमारब्रह्मचारिणः ॥ हृष्ट
[illegible] ॥ ५ ॥ ततः समभवद्द्रोणः कलशे तस्य धीमतः ॥ अध्यगी
ष्ट स वेदान्वेदांगानि च सर्वशः ॥ ६ ॥ भरद्वाजस्य [illegible] पृषतो नाम पार्थिवः ॥ तस्यापि
द्रुपदो नाम [illegible] ॥ ७ ॥ स नित्यमाश्रमं गत्वा द्रोणेन सह पार्षतः ॥ चिक्रीड [illegible]
[illegible] ॥ ८ ॥ ततस्तु [illegible] द्रुपदोऽभवत् ॥ द्रोणोऽपि [illegible]
[illegible] ॥ ९ ॥

[illegible] ॥ १० ॥ [illegible] कौमारं [illegible] ब्रह्मचारिणः ॥ ११
॥ १२ ॥

स·भा
स्या·प
२१२

पुत्रान्त्वं पुत्रयिष्यसि त्वं वीरास्तवान्वयः ॥११॥ कल्माषीकृष्णवर्णा यमुनासमभिन्नः गंगाकूले च परिभ्र
मन् कल्माषी समभिन्नः समीपेऽन्यः स्ये ॥५॥ परमेश्वर रूपिणी वेदे वाग्व्याख्याने पीलयपथ लोनारणेयो
कुमारी ग्रामा योधयोः कणिकामा सौनो नरपाणि कृपाणी सिकुमारी नो कथोः स्त्रियामिति मे दि ॥

ज्ञानान्तरान्नानि निर्दिष्टानि कुत्वह्नि नि नित्यान्त्रवीन ॥ निः स्थापयामस्यामीनष्टोणं प्रतिचिको
धिया ॥ ६ ॥ तमवं विनश्यति तामृणो णपा च विना नित्व ॥ नावेणचवचेना सिचिनयन्त्राध्याय
ना ॥४॥ पानि कर्त्तं नपश्रेष्ठो यजमानो विभाहन ॥ श्रमिनः सोऽयं कल्माषीं गंगाकूले परिभ्र
मन् ॥५॥ ब्राह्मणो न मस्यं पुण्यमासमासाद्य महीपतिः ॥ न च नास्ताणकः कश्चिन्न चासी दृश्वनीह्नि
नः ॥६॥ नष्टे वचमसहामान सोऽपि पुण्यम् स्थिनवनो ॥ यानेपयानौ वसर्षी पुण्यसं नौ परमेष्ठि
नो ॥७॥ संहितानामानेत्र कौशन स्थापि कापुण्यौ ॥ नाणोयोगकृ रूपौ वाग्रापणा ह्वविस
नमौ ॥ ८ ॥ पुनर्नाम संग्रयामासप्त सर्वकामैरनेहिनः ॥ तृप्ताव संन यो लव कनीयांसमपदृष्टे
द्विपरे लं रूपन्कामैरूपयानं यूनकतं ॥ पर स्पृष्टा प्रियागणकः प्रियवाक् सर्वकामदः ॥९॥ सर्व
विनायया मायमूपपाजनवाचूम ॥ सेनमेकर्मणाग्र सम्ब्रह्मापूर्णामस्ये ॥१०॥ उपया
नक्रनेन क्षिनपावां दानाप्ति लेहे ॥११॥ पयनेः स्नानद्विजश्रेष्ठ मनस्यापि यं महेन ॥ सर्वे
ननेप्रदाना हं नहि मे वालिसंशयः ॥१२॥

नीहूयं महासौ वात्राह्मणो ब्राह्मवि दोकस्पिमनमो मंत्र दृष्टे ब्रह्मश्रेष्ठो ॥४॥ उपहरेवकांने ॥२॥ बुधे
पापरेणवणोगनवान ॥१॥ नभिकापेक्ष्णने समति मूर्तिंहेदशाको दीः दानास्मि दास्यामि ॥१५॥२२॥

२१२

२८१

खेन्द्र वन्या स हिह्रके ॥ २५ ॥ रात्रौ यान्यार्थं न या सह संगम्य निशेषः आसीत् [illegible] निशि [illegible] ॥ २४

[illegible] ॥ सोतेनध

मात्वा यो वेन नं किंचिद् [illegible] नेनेसम ॥ [illegible] देशे स्मान् [illegible] ॥ ततो

मां वे [illegible] ॥ ४ ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ ५ ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ ६ ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ ७ ॥ द्रोण उवाच ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ ८ ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ ९ ॥ व्यास उवाच ॥ एवमुक्ते [illegible]

[illegible] ॥ उवाच [illegible] ॥ १० ॥ [illegible]

[illegible] ॥ ११ ॥ [illegible]

[illegible] ॥ १२ ॥ [illegible]

[illegible] ॥ १३ ॥ इत्यादि पर्व [illegible] भवे ॥ व्यास उवा

च ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ १४ ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ १५ ॥

[illegible] ॥ १६ ॥ नरेवा

भ.भा
गी.पं
२२६

नस्यनस्यादप्रत्योप्रेक्षः ॥ २४ ॥ सुसदवचेऽनिप्राधंप्रोक्तः योऽयमर्थं वस्तनेन सिद्धिं नेवचेनेन सिद्धे
ग्गानेविहितैः वेसम्पत्तिकेवलंज्ञानानदोषंनिषिध्यनेसावाहलाहरंनहीनोज्ञासवलेनभोन
इतिपाठे ॥ ज्ञानाद्गलाहीनः ज्ञाहंनेनः प्रयोहिवाल्कनपारणोकनवान्पनयुक्तलमयं नकर्मकृत्

त्वमियोनाविनस्योपपत्तिर्वाङ्कस्थिरप्रत्ययोः ॥ कोऽयंवाचार्थमप्यप्रमाणठानप्रयोमनः
क्रोणप्रयारत्नानिप्राणिदेहरनाणिच ॥ ४ ॥ ध्यानयोग्यास्वरूपनेपरमेश्वरत ॥ ५ ॥ व
हिंसाप्रतेषेणात्वांचेगमहंगुणं ॥ अनिहेनिमहेशासोमारङ्गजोमहामनाः ॥ ६ ॥ तच्चो
ङ्गेदपविहितोनामदरुपात्ताविनः ॥ नस्यप्रसतवंसचोरमप्रगुणंनरेमेवि ॥ ७ ॥ ज्ञानंसंधार
णंलेजोहनाहनिरिवानलः ॥ समेनपरहनाजोतावंपमिप्रकाराः ॥ ८ ॥ वसदवेचविहितेज्ञा
नेलेनोवशिष्यते ॥ योऽहंकामाद्धलाद्गीजोज्ञाहंतेजः प्रयोहिवान ॥ ९ ॥ हेणात्विशिष्टमासा
यमवंनेन्द्रस्यविनमः ॥ हृष्यांनकमहंप्रवेलमेयंप्रयिडेनेयं ॥ नकर्मकृत्मेऽत्रविनय
म्यहंगवां ॥ १ ॥ नष्टेमुक्तानलंयानोयाज्ञार्थमपकस्यपन ॥ सर्वेष्टंइतिचाकामप
याजमचोरयन ॥ ११ ॥ याजोहोणविनाशायप्रतिजलेनथाचमः ॥ ३२ ॥

३ ॥ यज्ञार्थंत्दुपरश्रेष्ठसाधनंयानमपकस्यपनमनसानस्ययोगंमहनवाचेऽभावज्ञार्थः
नवेष्टः यह्लक्षासावर्थप्रेनिप्रतिमोपेयंयच्छेणाहनःक्रुवस्योनपाहन मितिहेनेऽपयाजमकः
समपद्योरयनयुपकस्पनेप्रेतिनवान्प्राणमन्यप्रयंवेनइतिनापयेनउपयाजमपिनिष्ठयार्थे

भगवद्गीतासम्बन्धि
२२६

१.४२

११॥ अग्नीषोमपशुकं अग्नौ [illegible] विमर्शं विचारं संकल्पदाने संकल्पे [illegible] संपर्कः [illegible]
दाने॥ ११॥ [illegible] ॥ [illegible] नाहीनः॥ [illegible] देहदेहे [illegible] यागमनसा [illegible]

[illegible] निमित्ते [illegible] ॥ [illegible] अनुपदः [illegible] चरन्मनः॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] विविनयन॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] विविधरदे॥ [illegible]॥

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]॥

म·भा·
सभा·प·
२८४

३९ ॥ नेयं सेहेनसोढ्वं नो ॥ अयो निनच्छपृथक् स्वस्थाने नसोऽङ्ः सहन्नादि निभावः ॥ ४० ॥ ४१ ॥ स्र

ज्ञानतो उवाच ॥ एवमस्तकालपालेन नद्भुने हविधिमन्त्रतो ॥ नवस्थो यावकालमसान्क्रमा
तोदेवसंनिभः ॥ ४२ ॥ नानावर्णोत्तोरङ्गः किरीटी वर्मी चोनमं ॥ विभ्रन्सवेऽङ्गः सपाणीय
नथा निन दन्नाङ्ग ॥ ४३ ॥ सोथानी हत्स्थवरं तेन चप्रयथीनरा ॥ ननःप्रणोद्ःपाञ्चालाः
प्रहृष्टाः साधुसाध्विति ॥ ४४ ॥ हर्षा विप्रांलनन्दानाद्वेयं सदेवसंपद ॥ भयावहेपानप्रब्रः
पाञ्चालानां यशस्करः ॥ ४५ ॥ ततःषोकुमही नानयष्टे गावयायवै ॥ दृष्ट्वा च मददुः नम
दृष्टयं विचरन्दा ॥ ४६ ॥ कुमारी वापि पाञ्चाली वेदीमध्यात्समुत्थिता ॥ सुभगा दर्शनीयाङ्गी
नीलासितायतलोचना ॥ ४७ ॥ श्यामा पद्मपलाशाक्षी नीलकुञ्चितमूर्धजा ॥ ताम्रतुङ्गन
नखी सुभ्रूश्चारुपीनपयोधरा ॥ ४८ ॥ मानुषं विग्रहं कृत्वा साक्षादमरवर्णिनी ॥ नीलोत्पल
समो गन्धो यस्याः क्रोशात्प्रधावति ॥ ४९ ॥ या बिभर्ति परं रूपं यस्या नास्त्युपमा भुवि ॥ देवदान
वयक्षाणामीप्सितां देवरूपिणीं ॥ ५० ॥ तां चापि जातां सुश्रोणीं वागुवाचाशरीरिणी ॥ सर्व
योषिद्वरा कृष्णा निनीषुः क्षत्रियान्क्षयं ॥ ५१ ॥ सुरकार्यमियं काले करिष्यति सुमध्यमा ॥ अ
स्याहेतोः कौरवाणां महदुत्पत्स्यते भयं ॥ ५२ ॥ तच्छ्रुत्वा सर्वपाञ्चालाः प्रणेदुः सिंहसंघवत्
नचैनान्हर्षसम्पूर्णानियं सेहे वसुंधरा ॥ ५३ ॥

सर्ववर्णिनीदेवकुमारीवसुवपायोयताडर्गैस्तर्थः ॥ ५६ ॥

२८४

283

[illegible]

म भा
आ प
२८५

१२ ॥ द्रौपदीसंभवो व्यासस्य मास्मासतः ॥ वसन्निति ॥ प्रनष्टो न्मक्तं ननः प्रागेवानगामेन्वर्थः ॥ २ ॥ आपी

२६३

यानीहरमत्तो यानि वनानामपवनानि च ॥ सर्वो जिता निरस्तानि पुनः पुनरिंदम ॥ ४ ॥ पु
नई सूंह्निनानी हम्रीएवयं निवननलथा ॥ मैदंभवनं नथावी रलभ्यनेकेरु नंदन ॥ ५ ॥ नेवचं
सा पूर्णा वाला नगास्त्रा मयपरिमन्यसे ॥ मृत्पु वैदर्भनं वीरा समत्तो यंमवि च्छनि ॥ ६ ॥ सभिवा
श्रीवर्णा वाला : सूर्यं नेशाक्कर्षन ॥ यन्नमेनयुगाना मो क्रसमवे रानिस मूमः ॥ ७ ॥ एकचचिर
वासस्य हमोनचमनोमम ॥ तेनत्र साधुगाखा सोयदिनं पुत्रमन्यसे ॥ ८ ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ भ
वमायनमानं कार्यं नदृष्टाकं पदं हिने ॥ मृतनं जेलननजाला मिमाच्छेयुनें निचाप्रुनः ॥ ९ ॥ वैशं
पायन उवाच ॥ ननः कं तीभीमसेन मर्जनं यमजौनथा ॥ युवाचगामनंनेचनछो सवायुवं
लवा ॥ १० ॥ ततस्त्राभंमानं विप्रं कंनीगनन्मानैःसह ॥ ततस्ते न नदीरम्यां तुपदस्य महात्मनः ॥ ११ ॥
इत्यादिपर्वणि हिडिंबपर्वणि द्रौपदीसंभवे ॥ वैशंपायन उवाच ॥ वसन्त्वने युप्रछन्ना पांडवेषु महात्मसु ॥ आ
जगाम मायना नाइ पूर्वं आसः सत्यवनी सुनः ॥ १ ॥ तमागनमभिप्रेक्ष्य प्रत्युद्गम्य परंनपाः ॥ प्रति
पत्यामि वाद्यैनं नस्युः प्रांजलयः नदा ॥ २ ॥ समनुज्ञाप्य तान्सर्वा नासीनान्मुनिरब्रवीत् ॥ प्रछ
त्रुष्पूजितः पार्थैः प्रीतिपूर्वमिदं वचः ॥ ३ ॥ अपि धर्मेण वर्तध्वं शास्त्रेण च परंतपाः ॥ अपि
विप्रेषु पूजा वः पूजार्हेषु न हीयते ॥ ४ ॥

निकोम संचन्त ॥ ४ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

284

२८५

[illegible]

[illegible]

[illegible] ॥ २ ॥ २ ॥

स॰भा
श्रा॰प
२८६

285

गानेइति ॥ १ ॥ सोमाख्यः चेद्रूयपोहद्रूः नस्पष्टानंसोमसप्तायनां ॥ २ ॥ इस्मकंज्वलनानं ॥ ३ ॥ चत्वच
रति श्राविन ॥ ५ ॥ एवं नन्नाना मेव्रयश्चिमस्यो हि वि अर्थालुमिलाकं सलहृया यां संज्ञनेनक्राम
वति ॥ नस्पष्टामहूनं प्रस्तानका लमपणी मिलेवेलिमेवायेहींनं प्रचवते ॥ ७ ॥ नदेवमहूनं यवा

वेशंपायनःवान ॥ गानेभपावलिआसे यांइवाहूह्रमानसाः ॥ नेयनसुः श्रा कुत्समानंव
हूयष्टमाः ॥ ५ ॥ यानेहूत्स्रुवैमांगेंयेश्वो दिदृ्पवंनपाः ॥ नेनागृह्णन्नदेहेरात्रानीर्थसोमाश्रया
यणं ॥ ५ ॥ आसेदुःश्रुहृष माभ्रामंनगायांयांडुनंद्रनाः ॥ उस्मकंनसमपश्चनेधामश्रेयनंनयः
प्रकाशार्थंयथोनच्यलार्थंचम ह्राय ॥ २ ॥ नद्वंमानलेरभ्योविविक्तेश्रोद्युनियः ॥ ६ ॥
गंयवेयानोवेनलक्षीसम्प्रयायानं ॥ ४ ॥ श्रानूनेषांसप्तश्रावनंहींसमप्रयलयंनं ॥ नेनश्राद्धे
नवाविश्चसूक्ष्मोपवलवहूलों ॥ ५ ॥ सहूश्राणांदुवांनलन्नसहूमाञायंनयान ॥ विश्चश्रायन
नर्त्तीरमिदंवचनमवबीन ॥ ० ॥ संध्याभ्रूज्योवोयापूर्वेनन्नागमेव्रया ॥ श्रपीतिमिलेवे
हींनानप्तहूनं प्रचवतने ॥ ७ ॥ विहितंकोचायांनयवगंपर्वेरवसां ॥ शेषमप्तप्तश्च ष्टाणां
कर्मचारेश्वेहूनं ॥ ८ ॥ लोमामचारंचानलाप्तवेलामवेनयान ॥ उपक्रांनानिगृहीमोय
नसेः सहूवालिश्रान ॥ ९ ॥ प्रनोगनेयाग्नवनोजनंवहूविदोजनाः ॥ गाईयंनिनरानर्वाच
नष्टानलपनीनपि ॥ १० ॥

हींनां कर्मचारेश्रविहिनं ॥ अन्यान ॥ १ ॥ मनष्टाणांकर्मचारेश्रूयहूनमिमान्वयः ॥ संध्यायामश्री
निलवोपरियावोयहाहींनामेवसंवारकाल ॥ अन्याद्रूहूमेनष्टाणांइस्मये ॥ २ ॥ जलंश्राच

२८९

विलग्नमध्या कृशमध्या ॥ ५ ॥ १३ ॥ पार्थिनी पार्थिवेन्द्रदुहिता ॥ २४ ॥ २५ ॥ अध्यायः ॥ २६ ॥ १५७

अथ यथार्थं च हा कामनहा मम भगवान् ऋषिः ॥ विचित्रा च कथा लोलाः पुनरेव द्विजसत्तम ब्रवीत ॥ व्यास उवाच ॥ आसीत्तपोवने काचिद्द्विजेः कन्या मनोरमा ॥ विलग्नमध्या कृशोदरी सर्वगुणान्विता ॥ २ ॥ कर्मभिः स्वकृतैः सा तु भोगान् समुपाश्रिता ॥ नाथपाचे न्यानि सा न कन्या रूपवती मतो ॥ ३ ॥ तपस्तप्यमाना व्रते तपस्विनी तथा ॥ तोषयामास तपसा साक्षात् किलो केशव कथं ॥ ४ ॥ तस्याः सम्यग्व्रताद्वरः ॥ नाम वाचस्पतिस्तस्मिन् ॥ वांछितं वरदो नीति पूर्वकः ॥ ५ ॥ अथो कन्या वाचे समानं मनः सा वचो द्विजे ॥ पतिमेव गुणैर्युक्तं तेन सिद्धा मोक्ति पुनः पुनः ॥ ६ ॥ तामथ प्रत्युवाचेदं मौ पात्रे नोद्यतं वरः ॥ पंचवानेषुमतो भद्रे भविष्यन्तीति भारत एवमुक्तास्तत्र कन्या देवं वरदं ब्रवीत ॥ एकमिच्छामि हे देव नान्यमिच्छामि प्रभो ॥ ७ ॥ पुनरेवाब्रवीद्देवः इदं वचनमब्रवीत् ॥ पंच ते भविता यत्र पुनः पतिर्देहान्तरे पुनः ॥ ८ ॥ देहं मन्यमाना या सा यथोक्तं तं द्विजोत्तम ॥ दुपदस्य कुले जाता कन्या देवसुतोपमा ॥ निर्दिष्टा भवतां पत्नी कृष्णा पार्षती तिदिना ॥ ९ ॥ पंचालनगरे लक्ष्मी विजयश्रीवृन्दावनेश्वरी ॥ तामिन् लामन याषा मविष्य तनयं तत्र ॥ १० ॥ एवमुक्ता महाभागः पांडवान् स विनामरः ॥ पार्षतीना मयोक्तं नी च यानि ह्यनमहानवाः ॥ ११ ॥

अरंहिमानीनकं ॥ जनाह ॥ वयमिनि ॥ आयाम्यामयषिनवंनः ॥ १७ ॥ हमयाहौकमायानहिनीयावनीमी
नाचलः किंयुम्लकंनेदेनिममयायनामसम्हूंमः समयहनेनियोजना ॥ १८ ॥ आयपंषिनयायाः निःषो-
मनयायाः एकं आकायानूएं वग्रंनदंयम्याः नदंवग्रमिनिमेहिनी ॥ १९ ॥ अखंवायानिः संकरायजनानदी

वयंवयानि संयनाग्रकालेनामस्त्रअम ॥ अयाना हिरणोकूरत्रपानचं निमानवाः ॥ २० ॥ इराहि
सवलश्रेषाहेमश्रंगाहिनिः हना ॥ गांगागानाममहूंमः सममायममयज्ञन ॥ २१ ॥ गांगांचयमनांचे
वयहलानामयह्वनौ ॥ रष्टश्रुंगामायूंचैवगोलांनीगंउवौनथा ॥ २२ ॥ अयपंष्ठिनयायालेनदीः
ममयिवंतिये ॥ इयंमूलावैकवसायुविगरूयागापुन ॥ २३ ॥ देवेषुगंगागांयवंप्रामोमलकनेद
नां ॥ नश्यायिनन्वेनगत्रोडमायायकमिमि ॥ २४ ॥ गांगामभवनिवेश्राप्यहूलहे यायनोडवौन
आरंकायादेवनदीस्वगिमंयाहनीश्रभा ॥ कथमिङ्गहिनांरोहुनेधयमं: सनातनः ॥ २५ ॥ अनिवा
यमसंवायं नववाचाकथंवरे ॥ संसरुशेननयथाकामंग्रयंमःगीयुश्रीजनलं ॥ २६ ॥ वैशंपायन
उवाच ॥ शृंगायगंलङ्कुनाकूहस्थायम्यकामंकं ॥ युमेचवाया निश्रिनानहीनाश्रीविषानि
न ॥ २७ ॥ उलमकंथामयहलृगांगांडवश्रमेचोनवं ॥ मगेहनयागांलम्यमहीनेवयनंजय ॥ २८ ॥ अ
र्जुन उवाच ॥ विभीषिकावैगांयर्वेनाहनेषुप्रयुज्यते ॥ अहनेषुप्रयुक्तेयं फेनवन्मविलीयते ॥ २९ ॥

वनश्रहषिजहस्मनेनवायमयस्यकालंनश्रामोनीमर्थः ॥ २० ॥ अहीनमर्वाश्राश्रौविग्रान्विषदेन-
कुः ॥ २४ ॥ वर्मेहुनाकामाग्रयथानन्गणंग्रयोहनमयमानिवान ॥ २५ ॥ २६ ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

स॰ भा
आ॰ पं
२८८

से स्मृतानि जिनानन्तशः ॥ ४८ ॥ आगतो यो जिनो येन तु रूप्यात् ॥ ४९ ॥ यदि जिनानां यर्भिवाद्रूपं वर्णेन ॥ यद्रूपं यद्‌
भवति शिक्षा तस्मात् परतो विशेषितं तत्र सर्वं तर्कावर्त्मना सर्वं दायस्य संकस्मात् कारणात् पर्येषादि तथैः ॥
४७ ॥ अनेन व्याख्यातं यत्स्थानाद्विषयाणि ॥ ५० ॥ विशेषितानि विविधः शास्ति विशिष्टाः तस्मात् ज्ञानभाव
स्य आगमाना सत्त्वमनाहतं प्रत्ययादेः प्रदर्शितः दर्शनयोगाः ॥ ५१ ॥ लोकास्त्र अलोकास्त्र लोकालोका

अल्पं ज्ञिना विविधं यंदं लोके यत्र जनः ॥ यादृक् चित्र रथे यस्मात् ज्ञानानां यादृग्यस्य सर्वं ॥ ५२ ॥
संस्मृतानि चैव विषयं तन्न प्रसे हृष्मयापुरा ॥ निवेदयितानां सत्यज्ञानादयमहात्मने ॥ ५३ ॥ हे
भवितानानां सातितं च रत्नमाततं ॥ योगेश्वयोजयेन साधोः कस्मात् किं न सोऽहंति ॥ ५४ ॥ से
वादयीनां सविशेषं यस्मात् प्रदर्शमनः ॥ दर्शन विषया तस्य वेदस्य विशेषा वर्हदर्शो ॥ ५५ ॥ से
यं कारवे हृष्यं यस्मात् हृनोनां प्रत्ययवति ॥ आगमो व्याप्य यत्र प्रोक्तो वीर्यं प्रतिनिवोधये ॥ ५६ ॥
यत्र त्व यादृक् मिथ्या त्रिषु लोकेषु किंचन ॥ नन्ददेयादृशं चैवात् तादृशं पादृश्यमर्हति ॥ ५७ ॥
एकपादेन यत्त्वात्तस्मिन्नो विधानं समेऽहिंसा ॥ अनेन व्याप्यं हि विधानं स्वयं न यत्र तेन तेन ॥ ५८
विशुद्धानन्यतानन्तयंतं स्पष्टो विशेषिताः ॥ अविशिष्टास्तु देवानामनन्तभाव सुप्रदर्शितः ॥
गंधर्व ज्ञानानामस्त्यानामहेतु हृदयमनस ॥ आनन्दमूलवनंयंच दृश्यतानां शनैः शनैः ॥ दे
वगंधर्वादाहाले दिव्यवल्लभमनो जनवा ॥ लोकालोकाभवं स्पष्टेन तहीयं तेन चाहमः ॥ ५९ ॥

हृद्याद्रूपाणां वानेन भवं लिंगं हृष्मोवेगाच्छ्वनलोयं तत्र इति नकारणं हृष्यं गेहादेः प्रदर्शितः दर्शी
योऽसं लोकालोकालोकावितिवादे समर्थायां स्पर्थः ॥ ये स्पर्धार्थं स्वत्वदपतेः ॥ कर्मणि निष्ठायां देर्भित
तं च वने रेहे से वेगानि स्पायालं हृयं तेषु विशः विकमयविकं समर्थं भवं तीत्यर्थः ॥ ४० ॥ तस

२८८

287

मानपमानौ निर्मानः पार्थिवं तत्स्वयं ॥ नोदितोऽनायोऽस्मि ॥ २३ ॥ विलसन्तं दृष्ट्वा तं प्रणव ॥
प्रकृतं ॥ २० ॥ श्रीनारदो दिनास्पदं ॥ २४ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ २५ ॥ तस्मैव यथा चाह नरश्रेष्ठ

मानापमानौ नित्यं यस्य नावेक्षते ॥ नष्टाहंकारदोषेण योऽस्मि हन्तमायया
मानपमानौ नित्यं प्रणाशमस्य ततः ॥ २९ ॥
पुत्रमित्रकलत्रेषु तस्य ॥ भक्तानां यस्य नरोत्तमः ॥ ३० ॥
भक्तानां ... ॥ ... ॥
वैशम्पायन उवाच ॥ ... ॥ ...
... ॥ ३१ ॥ ...
... ॥ ३२ ॥ ... ॥ ...
... ॥ ३३ ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ ... ॥ ...
... ॥ ३४ ॥ भीष्म उवाच ॥ ...
... ॥ ३५ ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ ... ॥ ...
... ॥ ३६ ॥ भीष्म उवाच ॥ ...
... ॥ ३७ ॥ युधिष्ठिर ॥ ३८ ॥ भीष्म उवाच ॥ ...
... ॥ ३९ ॥
... ॥ ...
... ॥ ...
न ॥ ३९ ॥

सोऽपराधः ... ॥ ४० ॥ ... ॥ ४१ ॥

प्रीतेन दत्तमपि प्रतिग्रहणमंतरेणैवेचयेद्दाति प्रतिग्रहस्तु नियद्यमानाच्यानिशुद्धं निभंजकं भोज
यतेचैवमप्रतिग्रहीनिरुदत्वा॥ अन्यथा अक्लांनिनममत्वादिति भावः पदातानेन मम प्रश्नो

अर्जुन उवाच॥ यदि प्रीतेन मे दत्तं चक्षुषे जीवितस्य वा॥ विद्यार्थं नेक्षते वा पितृ नंदयंतं चये॥५४॥ गंधर्व उवाच॥ संयोगो वै प्रीतिकरो महत्सु प्रतिदृश्यते॥ जीवितस्य प्रदानेन प्रीतो विद्यां ददामि ते॥५५॥ त्वत्तोऽप्यहं ग्रहीष्यामि अस्त्रमाग्नेयमुत्तमम्॥ तथैव योग्यं बीभत्सो चिराय भरतर्षभ॥५६॥ अर्जुन उवाच॥ त्वत्तोऽस्त्रेण वृणोम्यश्वान्संयोगः शाश्वतोऽस्तु नौ॥ सखे तद्ब्रूहि गंधर्व युष्मभ्यो यद्भयं भवेत्॥५७॥ कारणं ब्रूहि गंधर्व किं तद्येन स्म धर्षिताः॥ यांतो वेदविदः सर्वे संतो रात्रावरिंदमाः॥५८॥ गंधर्व उवाच॥ अनग्नयोऽनाहुतयो न च विप्रपुरस्कृताः॥ यूयं ततो धर्षिताः स्थ मया पांडवनंदनाः॥५९॥ यक्षराक्षसगंधर्वाः पिशाचोरगदानवाः॥ विस्तरं कुरुवंशस्य धीमंतः कथयंति ते॥६०॥ नारदप्रभृतीनां च देवर्षीणां मया श्रुतं॥ गुणान्कथयतां वीर पूर्वेषां तव धीमतां॥६१॥ स्वयं चापि मया दृष्टश्चरता सागरांबरां॥ इमां वसुमतीं कृत्स्नां प्रभावः सुकुलस्य ते॥६२॥ वेदे धनुषि चाचार्यमभिजानामि तेऽर्जुन॥ विश्रुतं त्रिषु लोकेषु भारद्वाजं यशस्विनं॥६३॥

हानिः॥५४॥ आग्नेयप्रदानात्संयोगः स्यादिति॥५५॥ युष्मभ्यः युष्माकं भयं यस्माद्धेतोः॥५७॥ अनग्नयः दारहीनत्वात्॥ अनाहुतयः समावर्तनत्वात्॥ आश्रमविशेषहीनो ब्राह्मणो यर्षीणां

ग्रंथोन्यनिमाह॥ चनर्भिः प्रशांत ॥४९॥ भागीकृतः पोलीनादनेकधाभूतः वन्नभूताः नेष्ठने
पुण्यानेष्ठदेवेहपापाख्नेष्यानानेवमामान्यनोविपोपनमाहलोके३नियप्रोपनश्कः ॥
ष्टाहलोचवसेववनस्यस्कृपसेवेतिविधेयहिंगापेदयाहीननपेयपसिदयानपतिषा
वेषदेवामिदेतिचन॥५०॥ ज्ञानानाम्नयाभिः हविः प्रदनानवन्नइतरेषामालिंगभावेन
हविः प्रदेयानहेनाहतः सदेवेरुपाख्नेरयोहिदेवज्ञानामाहिवंनाशहेतनाइन्नेदे

शृणुकनंमहेदृष्णवन्नंहत्रनिवर्हेणं॥ दपाथापालधाचैवनद्यीगांहिव्रमूर्धनि॥५१॥
ननोभागीकृतोदेवैर्वेदभागरूपाख्यने॥ लोकेयपोयनेकिंचिनसावेवनननः स्मना
५॥ वामनोवाहणम् स्यात्रवंनत्यंमने॥ वेदपावैदानवन्नाणकमनन्यायवीपस॥५२॥
दवनवन्नस्पभागेनभव्रयावाजिनः स्मनाः॥ रयांनिरउवाहनेस्मराम्प्राचेवुयेयना॥५३॥
कामवर्णाः कामननवाः कामननः समयष्टिना॥ इतिगंधवेनांकामरूपविंरूनिमेहयाः॥
॥५४॥

वोपालंदानकर्मतोरपिग्रहहवत्रमीतिकरनाकन्नंनेनेनवन्नवंनेज्ञाहणारयोदेवे
रूपनीवनंरन्यर्थः॥५५॥ सहनेकिमाणानंनदाह॥ दवेतिवस्त्रवनंरयः॥ नखभागोनश्री
पानेनग्रवयाः॥ ग्रवपिभूनाः वाजिनोवेगवंतः॥ रथप्रवनेनग्रष्टोकर्षएवमाख्केकार
णंवपनाहिकमिनर्थः॥ रथांगंरथवालकंग्रष्टानवरवाग्राथायेममणलेचरणांगा
त्विनानहोस्नरन्यर्थः॥५६॥ स्वीचेद्यष्टेवुनिष्टेवमाह॥ कामेति॥ गंधर्वेनाः गंधर्वेती

म॰ भा॰
आ॰ प॰
२५०

लाभं लब्धुं यतं ॥१८॥१९॥ सांपरायः ॥ तापत्य इति ॥ तन्निमित्तं पुरोहितप्रसादादेव तापत्यत्वं ख्यापयितुं तापत्ये

लाभं लब्धुमलब्धं वा लब्धं वा परिरक्षितुं ॥ पुरोहितं प्रकुर्वीत राजा गुणसमन्वितं ॥१८॥ पुरो-
हितमते तिष्ठेद्य इच्छेद्भूतिमात्मनः ॥ प्राप्तुं वसुमतीं सर्वां सर्वशः सागरांबरां ॥१९॥ न हि
केवलशौर्येण तापत्याभिजनेन च ॥ जयेदब्राह्मणः कश्चिद्भूमिं भूमिपतिः क्वचित् २०
तस्मादेवं विजानीहि कुरूणां वंशवर्धन ॥ ब्राह्मणप्रमुखं राज्यं शक्यं पालयितुं चिरं ॥२१॥ इत्या-
दिपर्वणि तापत्ये ॥ अर्जुन उवाच ॥ तापत्य इति यद्वाक्यमुक्तवानसि मामिह ॥ तदहं ज्ञातुमि-
च्छामि तापत्यार्थं विनिश्चयं ॥ तपती नाम का चैषा तापत्या यत्कृते वयं ॥ कौंतेया हि वयं सा-
धो तत्त्वमिच्छामि वेदितुं ॥२॥ वैशंपायन उवाच ॥ एवमुक्तः स गंधर्वः कुंतीपुत्रं धनंजयं ॥ वि-
श्रुतां त्रिषु लोकेषु श्रावयामास वै कथां ॥३॥ गंधर्व उवाच ॥ हंत ते कथयिष्यामि कथामेतां मनो-
रमां ॥ यथावदखिलां पार्थ सर्वबुद्धिमतां वर ॥४॥ उक्तवानस्मि येन त्वां तापत्य इति यद्वचः ॥ त-
त्तेहं कथयिष्यामि शृणुष्वैकमना भव ॥५॥ य एष दिवि धिष्ण्येन नाकं व्याप्नोति तेजसा ॥ एत-
स्य तपती नाम बभूव सदृशी सुता ॥६॥ विवस्वतो वै देवस्य सावित्र्यवरजा विभो ॥ विश्रुता त्रि-
षु लोकेषु तपती तपसा युता ॥७॥ न देवी नासुरी चैव न यक्षी न च राक्षसी ॥ नाप्सरा न च गं-
धर्वी तथा रूपेण काचन ॥८॥

ति संबोधनं कृतं तदर्थं पृच्छति ॥ तापत्य इति ॥ तापत्यार्थं तापत्यपदार्थः ॥१॥ धिष्ण्येन मंडलेन

२८९

५
१
२५०

९९ ॥ मनोगुप्तिं मनः समिहिं नां च हिंसकस्य निश्चयो भाविना ॥ मनो [illegible] विनानं ॥ ९९ ॥ वाङ्गुप्तिं

यस्मिं वाग्गुप्ति [illegible] च विना नाम [illegible] ॥ [illegible] ॥ पि
त्तेन नानं [illegible] ॥ ९४ ॥ [illegible] मनः सर्वे [illegible] ॥ म
[illegible] सर्वे [illegible] ॥ ९५ ॥ [illegible] मनो [illegible] विना [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ९६ ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] वाङ्गुप्ति विना [illegible] ॥ ९७ ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] विना [illegible] ॥ ९८ ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ९९ ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ १०० ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ १०१ ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ १०२ ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ १०३ ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ १०४ ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ १०५ ॥

वाङ्गुप्तं ॥ ९९ ॥ [illegible] ॥ १०२ ॥

२५॥२०॥ तपनसंहरणपालकः पिङ्गः तापः ॥२८॥२२॥

सकृदाचिरथो राजा श्रीमानमितविक्रमः ॥ चचारास्यां यां पार्थ सर्वेजो पवने किल ॥४०॥ चर
तो मृगयां नृप स्तपस्यासमनिलः ॥ ममाराजः कौन्तेय गिरावप्रतिमो रूपः ॥४१॥ समता
मामां नाथ्यसमा मेव गिरौ नृपः ॥ ददर्श सा सर्वलोके कन्यामायतलोचनां ॥४२॥ स एकः
सामा कंन्यायां वरलार्दनः ॥ नस्त्रो नृपतिमार्इलः पद्मन्नविचचले नृपः ॥४३॥ स हि तां तर्के
यामास रूपतो नृपतिः श्रियं ॥ पुनः सन्तर्कयामास रवेर्भ्रष्टामिव प्रभां ॥४४॥ वपुषा वर्चसा चै
व शिखामिव विभावसोः ॥ अप्रसन्नां च कंसां चन्द्रलेखामिवामलां ॥४५॥ गिरिप्रष्ठे तु सा यस्मि
न्स्थिता स्वसितलोचना ॥ विभ्राजमानाशुशुभे प्रतिमेव हिरण्मयी ॥४६॥ तस्या रूपेण स गिरि
र्वेषेण च विशेषतः ॥ ससवृक्षः तपलतो हिरण्मय इवाभवत् ॥४७॥ अवमेने च तां दृष्ट्वा सर्व
प्राणभृतां वपुः ॥ अवाप्तं चात्मनो मेने स राजा चक्षुषः फलं ॥४८॥ जन्मप्रभृति यत्किंचित्दृष्टवा
न्स महीपतिः ॥ रूपं न सदृशं तस्यास्तर्कयामास किंचन ॥४९॥ तया बद्धमनश्चक्षुः पाशैर्गुण
मयैस्तदा ॥ न चचाल ततो देशाद्बुबुधे न च किंचन ॥५०॥ अस्या नूनं विशालाक्ष्याः सदेवासुर
मानुषं ॥ लोकं निर्मथ्य धात्रेदं रूपमाविःकृतं कृतम ॥५१॥

२६२

230

२ ॥ संप्रदानं दानपात्रं ॥ २२ ॥ २८ ॥ महादेवाङ्ग [illegible] श्रीमान् ॥ २८ ॥ २ ॥

पृथिवी [illegible] महानिनाद [illegible] लोचनः ॥ [illegible] चैव [illegible] वाचा चैव भाषिणो ॥ ६ ॥
नानारूपः महादेवः [illegible] त्रिषु लोकेषु भावनः ॥ [illegible] ॥ २ ॥
[illegible] ॥ नो [illegible] ॥ २ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ २२ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ २२ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ २४ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ २५ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ २ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ न
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ च
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ २८ ॥

अथेति ॥ ५ ॥ अहस्तन्न इत्येव श्याविः कृतस्मरान: स्त्रीलिंगतया इन न्याविर्भूतास्मि ॥ ६ ॥ प्रजन्इतिप्रजनइति

म॰ भा॰
अ॰ पं॰
२६२

गंधर्वउवाच ॥ अथ तस्या मरणायां रमणि: कामसोहिता: ॥ यातनः पात्रं संचालां पयानपरा-
णीनदे ॥ ५ ॥ न स्त्रियि त्रिधतिने भूमा वथ स्याचाहगामिनी ॥ पुनः पौनायनस्त्रोणी दर्शयामास तेन च
तं ॥ ६ ॥ अथाव भाषे कल्याणी ना चाम भूरयान्तपं ॥ नं कह्लात कलकरे कामा भिहत वेन सं ॥ ७ ॥
उवाच मधुरं वाक्यं तपती ब्रह्मन्निद ॥ उनिष्ठो तिष्ठ मद्दते न नमहे स्वरिंदम ॥ सोहं न्यपतिशा
ईलयांत मा विः कृतः विनो ॥ एवम सक्षेत्र न्यपतिर्वा चाम भूरयान्तदा ॥ ददर्शी विपुश्रोणीनामेवा
भिमवे स्थिता ॥ ९ ॥ अथ तामसितापांगीमाव भाषे सदार्थिवः ॥ मन्मथाग्नि परीतात्मा संदिग्धा
क्षयया गिरा ॥ १० ॥ साधु तमसितापांगि कामार्त्तमत्तकाशिनी ॥ भजस्व भजमानं मां प्राणाहि प्रजहं
ति मां ॥ ११ ॥ त्वदर्थं हि विशालाक्षि मामयं निशितैः शरैः कामः कमलगर्भाभे प्रति विध्यन्न शाम्य
ति ॥ १२ ॥ दष्टमेवमनाक्रंदे भद्रे काममहाहिना ॥ सानं पीनायतश्रोणि मामाप्नुहि वरानने ॥ १३ ॥ त्वदधी
ना हि मे प्राणाः किंनरोद्गीतभाषिणि ॥ चारुसर्वानवद्यांगि पद्मेन्दु प्रतिमानने ॥ १४ ॥ नह्यहं त्वदृते
भीरु शक्ष्यामि खलु जीवितुं ॥ कामः कमलपत्राक्षि प्रतिविध्यति मामयं ॥ १५ ॥ तस्मात्कुरु विशा
लाक्षि मय्यनुक्रोशमंगने ॥ भक्तं मामसितापांगि नपरित्यक्तुमर्हसि ॥ १६ ॥

२९१

॥ स्वनाक्रंदे अत्रानि कालेऽप्याक्रंदः॥ कं दनेः स्त्राने भित्रद्वारा सगुरुयोः शातयेचिचं प्रेषिस्या तितिसे

२६२

११ मतेवकपालानिमनकाथिनी ४९ ४२ वननयकाद्वीनलनयग्राद्यौ ४१ श्री रा: रामः
१२१

एवं सत्तर्कियामाम दूषण दुषितसंपदा ॥ कल्याण सदृशो लोके नृपः संवरणस्तदा ॥ ११ ॥ नांचरते व
कस्यापि किंचित्र स्यापमपि जने नीतिन्यनः ॥ न गाम मन्न साचिनो कामचारो न थोऽभिलः ॥ १२ ॥ दृश्यमानः
कस्तीर्णप्रदत्त यतिनि स्नापाशिना ॥ ऋग्रगा त्राण कूगा नृपोन दोषा वा चम नोद्यता ॥ १३ ॥ कास्ति कस्या
सिंरमोह किमर्थे चेदृ लिपुलि ॥ कथं च निर्जने राज्ये च रथे काम्यु चिलितिने ॥ १४ ॥ तंहि सर्वानव
पांनीतर्की मरणात्भूष्यिना ॥ विमृश्यामि वेने यांम्यग्राणा नामसौ चिंतं ॥ १५ ॥ न देवी नास्तरी चैव
न यक्षी न च गंधर्वी ॥ न च योगवती मन्ये नागी यक्षी न मानुषी ॥ यान्हि दृष्टा मया का चित्स्त्री रूपा
कापि वरांगना: ॥ न ताः संवासदृशी मन्ये नानासु मन कामिनि ॥ १६ ॥ दृष्ट्वैव चारुवदने चंद्र कांत
नां नव ॥ वदनं च मम मानं सो मम प्राप्तो वमनस्थः ॥ १७ ॥ एवं तां समहीपालो समाश्चिनत्तसानदा
कमानि निर्जने राज्ये प्रत्यभाषत निं. वन ॥ १८ ॥ न तो वा स्वप्य मानस्य पार्थिवस्य पार्थने वरण
सो दाक्षिनी व चाप्ये पुनर्वोवा नर यौ धन ॥ १९ ॥ नाम नेपुनरूपनि: श्रि व कामस्य वैन: ॥ चनेवन
नृपकांदी यमनन्नं मानव न्मादं ॥ २० ॥ श्राप्य पश्यमान: मनमां वह न च विलिप्यच ॥ निपत्य: पार्थ
व चेष्टोम हृत्ते मतिलिशन ॥ २१ ॥ इति श्रीदेवीपुराणे नाम ॥ ॥

निरालंतपमामाकं ॥ १ ॥ प्राप्तान संभ्रम: ॥ जानमथ: ॥ ४८ ॥ पुंडरीकपुत्रेण हंसगामिना ड्यौरमूलेननिर्भि
न्नमकरं दृष्टा हापनपार्थ्ये राज्ञ: शिरशिनिहितमायं प्रस्फुटन ॥ विप्राणां समृद्ध: प्रष्ठ समभूदिन्द्रार्थ: ॥ मा

म. भा.
स्वा. पं.
२६३

क्षितौ निपतितं काले धात्रा प्रजमिवोज्झितं ॥ तं दृष्ट्वा प्रमदे हानां संनिरत्नं पतितं भवि ॥ ४ ॥ बभू
व सोऽपि सविवु: संप्रदीप्तावाग्निना ॥ तापाचोपसंगम्य हिरण्यान संभ्रम: ॥ ५ ॥ तं समभ्या
पयामास नन्दपतिकामसोहितं ॥ भूतलानभूमिपाले यां पतितं पतितं ततं ॥ ६ ॥ प्रलपाव यथाचे
व कृष्ट: कौमं नृपे न च ॥ प्रसादं समभ्यार्थ्य परभूव विगतज्वर: ॥ ७ ॥ उवाच चैनं कल्पाणवा
चा मधुरयोज्झितं ॥ सामैर्मनज्जनाईं त्वमद्य सत्तनवानह ॥ ८ ॥ त्वमिमाप्रापरिश्रान्तेन कं यामास
वैत्यं ॥ पतितं यातनं संशोप्रणाजवाणांमहीतले ॥ ९ ॥ वारिणा च मयाऽनेन प्रिया लब्धा च च य
न ॥ अस्मा ईनकरं दाल: पुंडरीकहंसगामिना ॥ १० ॥ तत: प्रत्याप्तप्राणाल हलं वलवान् नृप: ॥ स
वै विप्रसैन्यामासनमेकं दाचिरं विना ॥ ११ ॥ ततलस्थान्तयाताकोविप्रलस्येमहद्वलं ॥ सतप
त्तानिविप्रस्थेनस्मिन्नरूपाविपान ॥ १२ ॥ ततलस्मिन् गिरिवरेष्वविभूनाकंतां जलि: ॥ आ
रिरायपितु: स्वयंनद्यान् धर्मवत्त: क्षितौ ॥ १३ ॥ तगाममनसा चैव वासिरामर्षिसनं ॥ पुरोहि
तममिवक्षेनदासंवरणोऽन्वय ॥ १४ ॥ तकं दिनमध्येकवहियितेनस्मिन्नराविधे ॥ अस्माजगा
मविप्रर्षिस्तदाहादशमेहनि ॥ १५ ॥

२९२

कं तरेस्यष्टोर्थ: ४ बवंसैन्य ५ मिमिग्रस्ते पोतशिवारे ११ १२ द्दृष्ट्वा मेहा हृदयां संलयामिनि

२६३

२३॥ रोचते न तृप्तिर्भवति॥ २४॥ भूयः कथय कमलाक्ष हरः हृतवानसि॥ २५॥ नहि तृप्यामि श्रृण्वन्नितश्चेतनारदः

त्वद्वाक्यामृतं पीत्वा योगेन ज्ञानमद्वैतं विभाविनि॥ त्वदर्शनकृतं लोके हृद्गतं न सुखं निमिषं प्रति॥ २६॥ न तां

दृष्ट्वा पुनरन्यत्र दृष्टं कल्याणि रोचते॥ प्रसीद वरारोहे नेमं कं मां मनभाविनि॥ २७॥ इत्युक्तवान् च

तां तेहे मन्मथोत्सृष्टां मन्यते॥ स्वर्गतां लोकविभूतिर्विश्वलावण्यनिधिः॥ २८॥ मन्मथाश्रितम

हृदं तां दृष्ट्वा कमललोचने॥ प्रीतिं समेत्य योगाद्भुतं कामिनीं देहः प्रदृष्टदयाम्भसे॥ २९॥ युवत्या सर्वं द्राष्टुं

प्रचंडं श्रावकां मनेकं॥ त्वदर्शनसमुद्रं नेत्रियं नेडः सदेहः प्राणे॥ ३०॥ युवत्यास्य पुत्रकल्याणि यात्रा

दानेन भाविनि॥ गांधर्वेण विवाहेन मामापेहि वरांगने॥ ३१॥ विवाहं नाहिरमोहं तां पर्वं तस्ये

पृष्ट्वा चाने॥ यम उवाच॥ नाहमीश्वरात्मनो यात्र नकन्या पितृमनोगतं॥ मयि चेद्रतिर्नेत्रीतिर्याः

चस्व पितरं मम॥ यथा हि नेमया आत्मनः कामदेहं नरेश्वर॥ ३२॥ नचाहमीश्वराद्देहस्य तस्मात्त्वं प

तिं सनम॥ स्वर्गं गंतो नापरा कामिनस्त्वं नाहियोषितः॥ ३३॥ कामिह सर्वेषु लोकेषु विश्रुतः नापितनं

त्वं॥ कन्या नाभिलषेत्तावां अमनोरंभमकं च ममाल॥ ३४॥ न सादृदेवगते कालेयाच यथापितरं मम

श्रायेष्ठ प्रशिव्यानेन न पश्यानियमेन च॥ ३५॥ सचेत्कामयते दानेन चस्मामशितहृदं॥ अवियास्या

मयंते सयानस्वान्तं व्यावर्जिनी॥ ३६॥ शृण्वहि न पञ्चानाम सर्वाणि [illegible] राजानना॥ यस्य लोकस

म यनो यानस्य जनंव्यथा निजनी॥ ३७॥ श्रुत्वाहि न पञ्चानाम [illegible] ॥ प्रस्वलोकम

दीप्यमस्त्यविनः तत्रियं धर्म॥ ३८॥ इत्यादिपर्वणि [illegible] उवाच॥ एवमन्यकालनलदृष्ट्वा

त्वगतमेऽपि सुमतिदिना॥ सनरानामपनमद्भुतनदेवलिपिगनहृद॥ ३९॥ पञ्चे समागतः सबलः नेरा

तानं त्वायामसं॥ अमात्यः सानपानत्वयनंदहृदं सर्वमहावने॥ ४०॥

न चेति॥ ४८॥ २२॥ अध्यायः॥ एवमिति॥ १॥ ततः पादैः किंविरमां शयाहर्तिसि॥ सहित॥ सानपात्र:

न·मा
श्रा·पं
२५७

१०॥ कल्याणं संस्थानं स्थानस्थाप्य समायौ समाहितो समायौ नियमे समाप्ते सति ॥ ११॥ गोपतिं सूर्यं ॥१

प्रतिजग्राह लोकानां सर्वं महर्षिभिर्लपनीतशः ॥ वसिष्ठोप्यभिहृष्टात्मा तु नरेन्द्रेण गामहा ॥ १३॥ यत्र विज्ञानकीर्तिः सम्भूय [illegible] ततः ॥ [illegible] तथा विप्रलब्धो नेतानन्तमना ॥ १४॥ हृष्टा चदेव कर्मान्तानपनीता महामिनी ॥ वसिष्ठेन सहायानीं हृष्टो [illegible] पिकं वमो ॥ १५॥ हृष्टवे सा भिकं [illegible] तपनं तनो नभलेखात ॥ सोदामिनी व विभ्रष्टा पोतनपं नीरिषात्रिषा ॥ १६॥ कल्याण दृष्टा रात्रेतनत्यागतः समाहिते ॥ आजगाम विप्रस्त्रात्मा वसिष्ठो भगवान् ऋषिः ॥ १७॥ तपसा त्व पवरदं देवं गोपतिमीश्वरं ॥ लेभे संवत्सरो भार्यां वसिष्ठस्ये तनेजसा ॥ १८॥ तनन्तस्मिन् गिरिश्रेष्ठे देवगन्धर्वसेविते ॥ तत्राह्विधिवत्पाणिं तपसा नन्दिनीम ॥ १९॥ वसिष्ठे नाम तत्रात्तः त स्मिन्नेव ययौ यतौ ॥ सोकामयत राजर्षिविहृत्ते सह भार्यया ॥ २०॥ ततः पुरे च राष्ट्रे च वने षूप वनेषु च ॥ आदिदेश महीपाल समेवमचिरं ततः ॥ २१॥ तपतिं च ततस्तस्य वसिष्ठो या पचक्रमे ॥ सोपि राजा गिरौ तु स्मिन् विजहारामरो यथा ॥ ततो द्वादश वर्षेषु काननेषु वनेषु च ॥ रेमे तस्मिन्नितौ राजा नक्षेवसह भार्यया ॥ २२॥ तस्य राज्ञः पुरे तस्मिन् समा द्वादश सत्तम नववर्ष सहस्रात्को राष्ट्रे चैवाप्ययमात ॥ २४॥

२५॥ नववर्ष ततः कर्मान्तसन्ना वार्षिकस्योतिषोमादिक्रियस्तोपात ॥ २५॥ ॥ ॥ राम

253

२५४

दिव्येन विधिना योगवलेन ॥ २५ ॥ पश्यन्नः स्तनः पपपन्नोर्ध्वा ॥ २ ॥ विहंगमहंसेवा ॥ २३ ॥ कि

नं

सविदिव्येनवनपातिं नपनमाटनमानसं ॥ दिव्येन विधिना [illegible] नाभाविनानमामहान्त्यिः ॥ २ ॥
नपानतिपतनमानेनंटवेमुनिसनमः ॥ प्राव भागेमः प [illegible] नमानसेवा विकीर्णपा ॥ ४ ॥ स
नमनमन्नेदस्यपपवतीभगनाननरवि ॥ क्रमा च क्रमेदू भा स्क रं भा स्कर रक्त नि ॥ ५ ॥ सहसा
प्युननोविश्रः क्रनोननविहपस्थिन ॥ वसिष्ठो हमितिप्रोंनमासचानमानेनपचेटयत ॥ ६ ॥ ननलो
चमहानेनाविवस्त्रानमनिसनम ॥ मह पंसमानंनेलनकश्ययस्यापश्चेपितं ॥ ७ ॥ यदिवसिम
हामायामनः प्रवदनोवर ॥ ननेदयामि प्रोन पपतिस्थानत्रः कर ॥ ८ ॥ एवमनः स्वेव सिवे
सिषुः प्रस्थापन ॥ प्रशिष्यमविवसंनमानमनमहानपाः ॥ ९ ॥ श्रीव सिष्ठ उवाच ॥ येपाने
नपनेनामसावि प्रवरनापसना ॥ नानासंचयापस्यासैवनमाभिविभायसो ॥ १० ॥ सहितानाह
हनंनीतियोगा विकुरायो ॥ श्रुतः संवाराणे मनोडहिनले विनागम ॥ ११ ॥ मनः सनदाने
नदनानीयेवनिपयः ॥ प्रस्थापपननविप्रप्रतिनंयादिवाकरः ॥ १२ ॥ वरः संवरणो राजानम
वीरणंवयोमने ॥ ननमनीयोधिनां श्रेष्ठा किमत्पाटप वर्जनान ॥ १३ ॥ ननः सर्वानेवयोगीन
पानीनपनः सवं ॥ इहेमेंववाणश्यावसिष्ठायमहानमने ॥ १४ ॥

मम्पनसोहमपवर्जनानसनात ॥ २७ ॥ २ ॥ ॥ ॥

गंधर्ववचनादिति॥२२१॥७४॥ अथ [illegible]॥ १०७॥ ५॥ ६॥ २०॥ २२॥ २५॥ ॥

वैशंपायन उवाच॥ गंधर्ववचः श्रुत्वा तत्तदा भरतर्षभ॥ अर्जुनः परया भक्त्या पूर्णचंद्र इवाबभौ॥१॥ उवाच च महेष्वासो गंधर्वं कुरुसत्तमः॥ जातकौतूहलोतीव वसिष्ठस्य तपोबलात्॥२॥ वसिष्ठ इति यस्यैतदृषेर्नाम त्वयेरितं॥ एतदिच्छाम्यहं श्रोतुं यथावत्तद्वदस्व मे॥३॥ य एष गंधर्वपते पूर्वेषां नः पुरोहितः॥ आसीदेतन्ममाचक्ष्व क एष भगवानृषिः॥४॥ गंधर्व उवाच॥ ब्रह्मणो मानसः पुत्रो वसिष्ठोरुंधतीपतिः॥ तपसा निर्जितौ शश्वदजेयावमरैरपि॥५॥ कामक्रोधावुभौ यस्य चरणौ संववाहतुः॥ यस्तु नोच्छेदनं चक्रे कुशिकानामुदारधीः॥६॥ विश्वामित्रा विनाशाय न चक्रे कर्म दारुणं पराधेन धारयन्मन्युमुत्तमं॥७॥ पुत्रव्यसनसंतप्तः शक्तिमानप्यशक्तवत्॥ विश्वामित्रविनाशाय न चक्रे कर्म दारुणं॥८॥ मृतांश्च पुनराहर्तुं शक्तः पुत्रान्यमक्षयात्॥ कृतांतं नातिचक्राम वेलामिव महोदधिः॥९॥ यं प्राप्य विजितात्मानं महात्मानं नराधिपाः॥ ऐक्ष्वाकवो महीपाला लेभिरे पृथिवीमिमां॥१०॥ पुरोहितमिमं प्राप्य वसिष्ठमृषिसत्तमं॥ ईजिरे क्रतुभिश्चैव नृपास्ते कुरुनंदन॥११॥ स हि तान्याजयामास सर्वान्नृपतिसत्तमान्॥ ब्रह्मर्षिः पांडवश्रेष्ठ बृहस्पतिरिवामरान्॥१२॥ तस्माद्धर्मप्रधानात्मा वेदधर्मविदीप्सितः॥ ब्राह्मणो गुणवान्कश्चित्पुरोधाः प्रविमृश्यतां॥१३॥

९१ ॥ अथ पक्षाः ॥ नीहारीणि न यथा न कलो हि दिव्यर्थः ॥ ४८ ॥ न नराश भूतेः मन स द्योः ॥ ४१ ॥

न न स्ना म ना हरणं प्र च ज्ञा या मर्विंद म ॥ प्र ना स्व य म्र या जन मः सर्वोः स स्या तु नं य मा ॥ ४९ ॥
न सिं न या वि ये कुरु से व नेमा ने स र्क कृ ति ॥ ना व प ना थः य या नो शों न नेः स स्या नि ना रू ह न ॥ ५० ॥
न नो वि धुं न न न सो न ना: स्व कृ य थो हि ना: ॥ यह ही निं स यि न्य स च म्र म: अदि स्रो दि यः ॥ ५१ ॥ न न
स्न सिं म्र रे या कुं न्य कृ सा र पु शि श्र हा ॥ पा र स्य र म म यों स्य च्च भा नो न हि रे न ना: ॥ ५२ ॥ न न्हा यों नें नि
या ह्वो वे: स्या च भू ते स्न या नि रे: ॥ श्र भ च न्ये त ए ज स्य श्रुं श्रे नी वि या ह्र ते ॥ ५३ ॥ न न स्व ना द पो ह हु स्नं स ए
व भ या व न्न शि: ॥ अ भ च शि न यों मा न मा व्य सि हो म नि स न म: ॥ ५४ ॥ नं च पा स्थि च पा हुं ल मा न या स्ना
म न स्प रं ॥ न प न्पा स हि नें रा ज न व्य धि नें श्र श स्म नीः ख मा: ॥ ५५ ॥ न न: श्र रु ह स्न ज्ञा सी य स्या पुं वें ह
रा रि हा ॥ न सिं न्प नि व्वा र्ह ले श्र वि हे न ग रं प न: ॥ ५६ ॥ प्र व व थि स ह स्ना स्व: स स्या नि न न य न्स भ:
न न: स गं हु मु म दे न स्पं य र या म्र दा ॥ ने न पा स्थि व प ल्लो न भा वि नें भा वि ना न म ना ॥ ५७ ॥ न नो ह
ह ना व शों नि न श्र न री ह्री न ना स्थि ए: ॥ न प न्पा स हि त: य भ्रा प या पा चा म रू न्प नि ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ वे ३
वी च ॥ ए व मा ही न्न ह्र भा ग ग न प नी ना म यों हि को ॥ न वे वे व स्त नी पा श्रि ना प न्प स्व प या म न: ॥ ६० ॥
न स्पां हं न न या मा स कृ हं सं व पा णो न्प ए: ॥ न पं न्प न प नों श्रे ह्ला ना प न्प हं प य या म न: ॥ ६१ ॥

त्या रि य वे मी ना मा नं स मा पु म ॥

मार नभावरी वेलावनार्षप्र कापा ॥ २९८ ॥ ॥ ॥

सं० भा०
स्था० प०
२९६

ग्राम्याक्षीराद्यः आरण्याः नीवारादयः षट्रसाः कट्वादयः रसायनं दिव्यदेहनाशकं ॥ १ ॥ येया
नि दीपादीनि भक्ष्याणि दैवस्वन्दनीयान्यपूपादीनि लेह्यानि पायसादीनि चोष्याणि इक्षुकाण्डादीनि
षट्उत्तमानामिति ॥ शिरोग्रीवास्व निष्ठ्याः नाभ्यूरुमध्यमलानाः शुभान्येतानि येन तन्मायनानि प्रचव

ग्राम्यारण्यौषधीश्चाड्डदेपयएवच ॥ षड्रसं चामरन निर्भरसायनमवनमं ॥ १ ॥ भोजनी-
यानि पेयानि भक्ष्याणि विविधानि च ॥ लेह्यान्यमृतकल्पानि चोष्याणि च नयानीन ॥ २ ॥ स्वानि
चमहार्हाणि कान्ति विविधानि च ॥ नैःकामैः सर्वसंपूर्णैः सूजितस्थम हीपति ॥ ३ ॥ सामान्यःस
वलश्रुवन्नतोषस्वरणं नरा ॥ ४ ॥ षड्ङ्गनं नाह्यणा श्रो दृष्टा उचमसायना ॥ संवृक्तनेत्राब्ला कायाः
पीतोधसमनिं दिनं ॥ ५ ॥ सवालयि षोडकर्णौ चाहृष्टमानमनोरमं ॥ शहायनशिरो ग्रीवा वि
भिन्नःसोभिवीयनां ॥ ६ ॥ समिनेष्ठसता यानने दिनौ गायिनंदनः ॥ अग्रवीक्ष्मस्थातनुः सप्त
तानसमित्रिन दाः ॥ ७ ॥ सर्वदेनगावावहास्त्यमयात्मेन वाहनः ॥ नेदिनी संप्रयच्छ स्वमं स्वयम्
महात्मने ॥ ८ ॥ व सि ष्ठ उ वा च ॥ देवतानिधिविप्रार्थं यावन्नार्थं च पयस्विनी ॥ प्रदेयानंदिनी यैवे
गार्हेनापि नवानघ ॥ ९ ॥

तेषद्रसुत्तमाषडसायनानं नघाष्टभिः पंचभिरंगैः सम्माहृतांगुल्कांतलानं स्ववर्णौ चैवनयनद्वितयंत
थामृष्टलेनानि यास्तानेयेन तां पंचसूरिभिः संवृक्तल्वेवउल्ललेनेत्रेयस्याः पीनं हृयः हीनाणयो
यस्याः सातापीनोधसं ॥ १० ॥ सवालयि षोमनपुच्छाषोडकर्णौ दवतीसौकर्णौ यस्याः सा ॥ ११ ॥ नंदिनी

२९६

१४॥ प्रकरणस्थं मणिकं हृतानि ॥ तस्माद्धीन ॥ ४ ॥ म ॥ ॥ यः ॥ किं निमित्त मिति ॥ २ ॥ मकृत्यन्त पुमहृसंसे
केवस्य नतत्प्रदेशे पुत्र्यन्यान मकृदेशेनाहंसौ चेचापेक्षानेपि वेनिमेहिनी ॥ ५ ॥ याया मकलिनः प्र

तत्रिपेण मिनालेन पृथिवीतेन मित्रना ॥ पुर्वं श्रेहिनः कार्यः पार्थराजा मिहृदये ॥ ३ ॥ म
हीनिमीयना राजा जसका पुत्र मस्य ॥ तस्मात्पुरो हिनः कश्चिद्गुणवानितिनेद्विपः ॥ ४ ॥ विद्
यावन्तं विप्रं पंकनकाचनसमिन ॥ ४ ॥ ह रि वं श भा ने गृ ना च ॥ किं निमि
त्तमभूद्देवं विश्वामित्र वसिष्ठयोः ॥ वसनो तापसे हृत्ये सर्वतः सर्वे मे वतन । १ गं वे वाच ॥
इदं ताम्रिपुत्रमात्रोनं श्रूयतां परिचरते ॥ पार्थस्य वेद्गुलोके ष्यत्याचलन्निवोध मे ॥ ५ ॥ कान्य
कुब्जे महाराजा सीनाम्ना गाधिरो भरतर्षभ ॥ गाधिरिति विख्यातो लोके कुशिकस्य आत्मसंभव ॥ ३ ॥ तस्य
धर्मात्मनः पुत्रः समृद्धबलवाहनः ॥ विश्वामित्र इति ख्यातो बभूव रिपुमर्दनः ॥ ४ ॥ स च चार सहा
मात्यो मृगयां गहने वने ॥ मृगान्विध्यन्वराहांश्च रम्येषु मरुधन्वसु ॥ ५ ॥ व्यायामकर्शितः सोऽथ मृ
गलिप्सुः पिपासितः ॥ आजगाम नरश्रेष्ठ वसिष्ठस्याश्रमं प्रति ॥ ६ ॥ तमागतमभिप्रेक्ष्य वसिष्ठः श्रे
ष्ठभाग्दृषिः ॥ विश्वामित्रं नरश्रेष्ठं प्रतिजग्राह पूजया ॥ ७ ॥ पाद्यार्घ्याचमनीयेन स्वागतेन च भार
त ॥ तथैव परिजग्राह वन्येन हविषा तथा ॥ तस्याथ कामधुग्धेनुर्वसिष्ठस्य महात्मनः उक्ता
कामान्प्रयच्छेति सा कामान्दुदुहे सदा ॥ ९ ॥

मेघ्यान्नानः ॥ १ ॥ पेयमाकल्पनकः ॥ ० ॥ परिजग्राह निमंत्रितवान् ॥ २ ॥ राम ॥

२३ ॥ ३४ ॥ पञ्चवाद्ययोः म्लेच्छैर्विप्रोष्मः प्रम्लवान ॥ ऊपः प्रहेषान ॥ पाकनः गोमयान ॥ ३५ ॥ ४० ॥

म॰ भा॰
आ॰ पं॰
२९०

नंदिन्युवाच ॥ किं नु त्यक्तास्मि भगवन्यदेवं त्वं प्रभाषसे ॥ अत्यक्ताहं त्वया ब्रह्मन्नेतुं शक्या न वै बला
न ३१ ॥ श्रीवसिष्ठउवाच ॥ न त्वां त्यजामि कल्याणि स्थीयतां यदि शक्यते ॥ दृढेन दाम्ना बद्ध्वैव वत्स
स्ते ह्रियते बलात् ॥ ३२ ॥ गंधर्वउवाच ॥ स्थीयतामिति तच्छ्रुत्वा वसिष्ठस्य पयस्विनी ॥ ऊर्ध्वांचितशि
रोग्रीवा प्रबभौ रौद्रदर्शना ॥ ३३ ॥ क्रोधरक्तेक्षणा गौः सा हंभारवघनस्वना ॥ विश्वामित्रस्य तत्सैन्यं
व्यद्रावयत सर्वशः ॥ ३४ ॥ कशाग्रदंडाभिहता काल्यमाना ततस्ततः ॥ क्रोधरक्तेक्षणा क्रोधं भूय ए
व समादधे ॥ ३५ ॥ आदित्य इव मध्याह्ने क्रोधदीप्तवपुर्बभौ ॥ अंगारवर्षं मुंचंती मुहुर्वालधितो महत् ॥
असृजत्पह्लवान्पुच्छाच्छकृतः शबरान्शकान् ॥ योनिदेशाच्च यवनान् शकृतः शबरान्बहून् ॥ ३६
मूत्रतश्चासृजत्कांचीन् शबरांश्चैव पार्श्वतः ॥ पौंड्रान्किरातान्यवनान्सिंहलान्बर्बरान्खसान् ॥ ३७ ॥
चिबुकांश्च पुलिंदांश्च चीनान्हूणान्सकेरलान् ॥ ससर्ज फेनतः सा गौर्म्लेच्छान्बहुविधानपि ॥ ३८ ॥
तैर्विसृष्टैर्महासैन्यैर्नानाम्लेच्छगणैस्तदा ॥ नानावरणसंछन्नैर्नानायुधधरैस्तथा ॥ ३९ ॥ अवा
कीर्यत संरब्धैर्विश्वामित्रस्य पश्यतः ॥ एकैकस्य तदा योधः पंचभिः सप्तभिर्वृतः ॥ ४० ॥ अस्त्रवर्षे
ण महता वध्यमानं बलं तदा ॥ प्रभग्नं सर्वतस्त्रस्तं विश्वामित्रस्य पश्यतः ॥ ४१ ॥

226

१५

२९०

२२॥ कथमद्य प्रणादि नां कश्यपश्चान्तेन [illegible] मानां ॥ २३॥ २२॥

विश्वामित्र उवाच॥ त्वमेवो हं भवान्विप्र [illegible] नः॥ [illegible] नोवीर्यं [illegible] स्तनान्मम॥ [illegible] ॥ [illegible] मित्रेण [illegible] मित्रबलेन गां॥ १७॥

वसिष्ठ उवाच॥ [illegible] वीर्यं [illegible] निच्यः॥ [illegible] विचार्य॥ १८॥

गंधर्व उवाच॥ [illegible] विश्वामित्रो [illegible] ॥ [illegible] हृदयं॥ १९॥ कथमद्य [illegible] ॥ [illegible] वसिष्ठ [illegible] नो॥ २२॥ [illegible] भगवान् [illegible] ॥ [illegible] मानानः २३

वसिष्ठ उवाच॥ [illegible] ॥ [illegible] किं कर्तव्यं [illegible] ॥ २५॥

गंधर्व उवाच॥ [illegible] ॥ विश्वामित्र [illegible] ॥ २२॥

[illegible] उवाच॥ [illegible] ॥ विश्वामित्र [illegible] ॥ २४॥

गंधर्व उवाच॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ २०॥

वसिष्ठ उवाच॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ २९॥

स॰ भा॰
आ॰ प॰
२९८

पथो मार्गात् ॥ ५ ॥ धर्मः सनातनः । राज्ञः पंथा ब्राह्मणा[illegible] नाम [illegible] इत्यादि [illegible] विहि-
तः ॥ ७ ॥ मानात्क्रोधाच्च मुनेर्मार्गं न [illegible] ॥ ९ ॥ १२ ॥ ननु इति ॥ एवं विश्वा-

शक्तिं नाम महाभागं वसिष्ठकुलवर्धनम् ॥ ज्येष्ठं पुत्रं पुत्रशताद्वसिष्ठस्य महात्मनः ॥ ५ ॥ अपग-
च्छ पथोऽस्माकमित्येवं पार्थिवोऽब्रवीत् ॥ तथा ऋषिरुवाचैनं सांत्वयन् श्लक्ष्णया गिरा ॥ ६ ॥ मम पं-
था महाराज धर्म एष सनातनः ॥ राज्ञा सर्वेषु धर्मेषु देयः पंथा द्विजातये ॥ ७ ॥ एवं परस्परं तौ तु
पथोऽर्थं वाक्यमूचतुः ॥ अपसर्पापसर्पेति वागुत्तरमकुर्वताम् ॥ ८ ॥ ऋषिस्तु नापचक्राम तस्मि-
न्धर्मपथे स्थितः ॥ नापि राजा मुनेर्मानात्क्रोधाच्चापि जगाम ह ॥ ९ ॥ अमुंचंतं तु पंथानं तमृषिं नृप-
सत्तमः ॥ जघान कशया मोहात्तदा राक्षसवन्मुनिम् ॥ १० ॥ कशाप्रहाराभिहतस्ततः स मुनिसत्तमः ॥
तं शशाप नृपश्रेष्ठं वासिष्ठः क्रोधमूर्च्छितः ॥ ११ ॥ हंसि राक्षसवद्यस्माद्राजापसद तापसम् ॥ तस्मा-
त्त्वमद्यप्रभृति पुरुषादो भविष्यसि ॥ १२ ॥ मनुष्यपिशिते सक्तश्चरिष्यसि महीमिमाम् ॥ गच्छ राजा-
धमेत्युक्तः शक्तिना वीर्यशक्तिना ॥ ततो याज्यनिमित्तं तु विश्वामित्रवसिष्ठयोः ॥ वैरमासीत्तदा
तं तु विश्वामित्रोऽन्वपद्यत ॥ १४ ॥ तयोर्विवदतोरेवं समीपमुपचक्रमे ॥ ऋषिरुग्रतपाः पार्थ वि-
श्वामित्रः प्रतापवान् ॥ १५ ॥

मित्रः स्वविद्याबलात् शक्तिनृपयोर्वैरम् याज्यार्थं यदा विश्वामित्रोऽन्वपद्यत तदा तयोर्वैर-
मासीदित्यर्थः ॥ १४ ॥ तयोः शक्तिनृपयोर्विवदतोः ॥ ऋषिः राजर्षिः ॥ १५ ॥

पर्व॰

२२७

२९८

४५॥४६॥ विश्वामित्र॥४७॥४८॥ श्री धौम्यः॥ कस्मात्पापादृते नि॥ अस्य रूपाः नाकिमद रूपाल सोपस्य

न च स्नातो विशुद्धं नेके चित्तं तत्र स्नाने निकाः॥ विश्वामित्र स्वयं मंत्रं कृष्णो वा सि [illegible] भूतं यथ॥४१॥ ता
मे न तस्य कल्मषं काल यामास रूपं न॥ विश्वामित्र स्नाने तं कासमा [illegible] योजनं॥४२॥ कौ
पापानं मयो हि [illegible] नाम्नावृतं न॥ दृष्ट्वा न [illegible] सतेजे भवेत् नदा॥४३॥ विश्वामि
त्रः [illegible] लोकाचा [illegible] न॥ [illegible] वर्स वसं॥४४॥ तनाव
लेविनिवि [illegible] एव [illegible] वलं॥ [illegible] नवेदीमान रूपम्रि [illegible]॥४५॥ मोगास्व
पूनः कृतानां [illegible] मनोदर्ये॥ [illegible] लोका [illegible] मनेतस्मा॥४६॥ तनाप [illegible]
दोमो नाना [illegible] वाकाम [illegible]॥ [illegible] नाम [illegible] कि॥४७॥ श्री वसिष्ठ उवा
च॥ श्री वसिष्ठ॥ ॥ श्री धौम्य उवाच॥ कस्मात्पापाद्दुर्गते वै लोके [illegible] रूपाकं वं [illegible] पा
पेनेनस्या [illegible] मम वि॥१॥ [illegible] निष्ठा योग तत्॥ [illegible] नु [illegible]
चचारि [illegible] न॥२॥ [illegible] चराचरे [illegible] वाच [illegible] नो [illegible]
निवहलेनन॥३॥ [illegible] विश्वामित्रः [illegible] वान॥ [illegible] मानं व सि
[illegible] नम॥४॥ [illegible] न्न [illegible] कायनगानः [illegible]॥ [illegible] निनः [illegible] नि [illegible]
मतागतं॥५॥

नः॥६॥ [illegible] वनिवेनदर्थं॥७॥ एककायनगानः एक [illegible] वायनं [illegible] चनज्ञानः ऋनि [illegible]

दीपि [illegible]

गच्छाम त्रिदिवं नो हि पौत्रा ह्यग्रे संप्रतीक्षते ॥ अथ तार्थिनं तमव्येन समाहितेनोपपादय ॥ १९ ॥ सौ
पदेवउवाच ॥ एवमुक्तस्ततः शक्रः सोनामासाद्यामिषं कृतिन ॥ निवेदयामास जनार्दनस्य केशव
याचितः ॥ २० ॥ राजा नात्र स्वभावविष्णुः शक्र माहूय तत्क्षणः ॥ अथैनं नासि सेन भोजनयेति पुनः पुनः
तथेत्युक्तस्ततः शक्रः संस्थानं वरदत्ताजिनं ॥ मत्वा जनार्दनारि तेन संसमयेन मोः ॥ शत
संस्कृत्यविधिवद्राजा यद्धत्तमाश्रवे ॥ तस्मै प्रादाद्वरह्राणो यत्त्वपि नायतनयहिने ॥ २१ ॥ समिद्ध
स्वल्पाहर्ष्टान्तदं तं द्विजसत्तमः ॥ अभोऽयमिति मामाह श्रोपधर्यौक्ते वर्णः ॥ २२ ॥ ब्राह्मण उवा
च ॥ यस्मात्त्वमोऽयमन्नं मे दत्तानि मन्यायामः ॥ तस्मात्त्वमेवमद्यभविष्यत्यस्ते लोकया ॥ २३ ॥
मक्रो मानवमांसेषु यथोक्तः पाविकितौ ग्राः ॥ २ देहेन नो यो भूतानां च रिष्यतिमहीमिमां ॥ २४ ॥
द्विरन्नमाहुलेराक्तः सपापोवल्कानभन ॥ रक्षो वलसमाविष्टो विसंन्नआभवन्तदा ॥ २५ ॥ ततः
सन्यनिःश्रेष्ठो ह्यमाप्रस्तेऽद्विजः ॥ उवाच शक्तिं तं दृष्ट्वा निरादिवंभाजन ॥ २६ ॥ यस्मात्सह
सः शापः प्रयुक्तोयं मयि निरया ॥ तस्मात्ततः प्रवसिष्ठो वो हितं पुरुषमानहं ॥ २७ ॥ एवमुक्तस्ततः
सध्यलं प्राप्तो विश्वमयुञ्चच ॥ शक्तिं अमहयामास श्रापैः पश्चमिवेश्मितम ॥ २८ ॥

पश्चाद्विश्वामित्र [illegible] नेनतं [illegible] शार्ङ्गिणा ॥ [illegible] ॥ ततो [illegible] ॥ तत [illegible] शार्ङ्गि [illegible] ॥ अ

ततः [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] विश्वामित्रो [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] शार्ङ्गि [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] विश्वामित्र [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] विश्वामित्र [illegible] ॥ [illegible] विश्वामित्रो [illegible] ॥ [illegible] ॥ ततः [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] द्विजः [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ ततो [illegible] ॥ [illegible] ॥ ततो [illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible] ॥ [illegible] शार्ङ्गि [illegible]

स॰ मा॰
म्रा॰ पं॰
६००

ततः पापो लहाऽत्मानं गाढं वपासहामलिः॥ नस्मात्तलोमहानयानि ममतत्तहः क्षिनः॥४॥
मथ हि नाननदी पापां लक्ष्मा गिवलसहदन॥ स्थलस्थं नमस्थि क्रुत्वा विपापं समवासनन॥५॥
उत्तनायततः पापो वि मतः समहानस्थि॥ विपाशोनिचनामाख्याः तथाप्युक्तेमहानस्थिः॥
पोकवुद्धिं नरपत्रेरे नचैकत्रकालिहन॥ सोगाह्न नपर्वतां देवसरिन सुसरं त्रिचा॥७॥
हृष्ट्वा महत्तनरेवर्षिनंदीहैमवतीनदा॥ चेदशा हू वतीभीमं न स्थाः होन स्थपानपन॥८॥
स्नान समभि स्थं विगमन वित्यहरिहन॥ पान पापा विद्धनयसा नतूरिनि विस्फुना॥९॥त
तः स्थलमानं दृष्ट्वा नरा ध्यानमान मात्मना॥ मनैं नशाक्यामीत्यकाद्धनरे वाक्यमेवयो॥१०॥स
नताविविपाऽऽश्रेताऽरे पान्वकृविपांकथा॥ अदृपं पन्माद्यावधाप्याश्रमेनुहतोभव
न॥ अथ पश्चात्तदंगतावेदापयननिहनं॥ एहनः पुरिह्लांश्च द्विरोरवेक्रुतं॥११॥
स नवजनिकोवैवमामि लेवाथ सोऽब्रवीत॥ अदं मिनूह पवनीं सहलू साहनमाधव॥म
पातके भीषणं महाभागनयो वृक्षान पहिनः॥१४॥व विपाशा च॥ ९ हैकसैय सागराचेदः
स्याध्ययनं स्वनः॥ श्रुतमांगस्यैवेदृष्टपापकेरिवमपापृतः॥१३॥

२११

६००

मुमोच पानयामास ब्रह्मास्त्रं देहं ॥ ५५ ॥ कौशिकः क्रुद्धिमोचि ब्रह्मास्त्रैः सार्द्धं ब्रह्मास्त्रं मुनीन्द्र ॥ ना

पाकिं तेन स्तनं रम्बुविश्वामित्रः पुनः पुनः ॥ वसिष्ठस्येव पुत्रे पुनरुद्भवः संहिदे शाह ॥ ५६ ॥
सनां द्रुमा वनान्युत्तान्यविसृष्टमहामनाः ॥ भवयामास सक्रुद्धः सिद्धः शक्तुरमानिव ॥ ५७ ॥
वसिष्ठो चानितान्मुनाविश्वामित्रे गानानस्तान ॥ धारयामास तं पो कं महाद्रिरिव मेदिनी
चकं चामविनाशुनं चतुर्दिक्षु मनिसन्नमः ॥ तनेव कौशिकोद्देहमेनेम निमनां वर ॥ ५८ ॥ स
मेरुकूटरराजमानं मुसोतभगा चान्द्रिः ॥ गिरस्तस्य शिलाग्रान् लगा या वियापन्नं ॥ ५९ ॥ न
ममार च पानेन सपदा लेन पांरव ॥ न दाशि मिहुंभगवान्संविवेयामहाव ने ॥ ६० ॥ ननदाह स
मिद्धं पिन ददाह ह ना षान ॥ दीपामानो पावित्र ब्रुणो लोषि भवननः ॥ ६१ ॥ समसदृश
मिश्रे दाषोकाविवृगौ महाह्मनिः वहुकंदेशिलांगदीनिपपानन्तं ॥ ६२ ॥ ससमद्धो
मिवे गेन ब्रह्मलोमलोम हाम्नतिः ॥ नगामसमतनः शिनः पुनो काश्रमं पुनि ॥ ६३ ॥ इत्यादिप
श्रीवाशिष्ठे पगांधर्वेड वाच ॥ ततो दृष्ट्वा श्रमपदं रहितं तैः सतेर्मुनिः ॥ निर्गाममसह्रः सा
नैः पुनरुपाश्रमान्तन ॥ १ ॥ सोपपपनःशिनं पूर्णाप्राप्राहरकालेन चांभसा ॥ वलान्बहुविधा
लोकाहरती नीरजान्बहून् ॥ २ ॥ मद्यपिना समायेदे पुनः कोरवनंदन ॥ ३ ॥ मप्सस्था निम
नेयमिलिङ्ग : वसमविनः ॥ ४ ॥

१६१

ति विश्वामित्रवसिष्ठहल्लवे हिंनो विक्रमाप्ताः ॥ ५५ ॥ अध्यायः ॥ ततो दृष्टेति ॥ २ ॥ ॥ ॥ राम ॥

प्रागेवैतन्नोक्तं तथापि तत्त्वमाह ॥ सहीति ॥ वसिष्ठस्याप्यस्ति हे पार्थ ॥२४॥२५॥ ब्रह्मनिष्ठत्वं दर्शय-

म.भा.
आ.प.
३०२

महिम्ना दृष्टानयानि वसिष्ठस्यैव तेजसा॥ अवलक्ष्यासीत्कृते देव पर्वकाले दिवाकरः॥२४॥ त-
स्माद्विप्रमुक्तोऽथ मरुत्पल्लद्गुनं महत्॥ तेजसा तं तथा मा स्म संयम्य भिवमाक्केरः॥२५॥ प्रति-
लभ्य ततः संज्ञामभियुक्तो कृताञ्जलिः॥ उवाच नृपतिः काले वसिष्ठमृषिसत्तमं॥२६॥ सोदासो-
हं समहाभागा यया त्यक्तोऽस्मि निर्जने॥ अस्मिन्काले परिष्वंगे ब्रूहि किं करवाणि ते॥२७॥ वसिष्ठ
उवाच॥ हृतमेतेन यथाकालं तेन नृपतं प्रयाथि वै॥ ब्राह्मणान्मनसोत्सृष्टुमा च मे स्थाः कदा-
चन॥२८॥ अर्जुन उवाच॥ नागमं स्तोम हाभाग कस्य चिह्नसहस्राक्षमान्॥ ननिदेवो ह्यतिसः समपक-
तून विप्राणां स्पृहं द्विजान्॥२९॥ इत्याहूतां च येनाहं मन्त्राः संयोद्धितो मम॥ तस्य त्वेतस्य स-
मिद्धामि सर्ववेदविदांवर॥३०॥ अपनयमी शिरं महं तानमहीम सितलम॥ पौलहस्पत्य गणे पे-
नमिक्ष्वाकुकुलवंशजे॥३१॥ गंधर्व उवाच॥ स्थानीयेव तं तत्र राजानं प्रमकाचह॥ वसिष्ठः पर-
मेष्ठां संभवत्संयोद्धितो नम॥३२॥ ततः प्रतियतौ काले वसिष्ठः सहतेन वै॥ ख्यातो ऽङ्गी-
रिमां लोके नयो यामन्नजेश्वर॥ तं प्रजाः प्रतिमोदन्तः सर्वाः प्रमुक्तनालदा॥ विपापमानं
महात्मानं दिवौकसप्रवेश्यं॥३३॥ सविशस्य मनःश्रेष्ठो नगरी पुण्यलक्षणां॥ विवेशाय
हितनालेन वसिष्ठेन महर्षिणा॥३४॥

३०२

ततयाकलेनं अप्यदिष्टुं शिहद्भलदागायाइयमलिः तयैव रवोमिमतेनमसवइवस्पतंमदि

[illegible]

[illegible]

स॰ भा
आ॰ प
३-२

४२॥ मैत्रावरुणिर्भिक्षावरुणयोः पुत्रः अगस्त्यपीः अगस्तिसिद्धांते साधी अगस्तापीयैस्पसोमस्यपीः॥२८॥४

अमन्यत समयं सौम्यावसिष्ठं पितरं स्मृतिं॥ तस्मात्पुष्करिणी सिंहलपितरौ वान्ववर्तत॥५॥ ततः
तु इति विप्रर्षिं वसिष्ठं पुत्रमभाषत॥ सोऽन्तः समस्तं कौंतेयस्मृहृद्यं समास्तेनच॥६॥ तानेतिप
शिष्टां कौंतेय तत्त्वतः स्मृत्वा च॥ स्मृहृद्यं तत्पुत्रां श्रीसुरवेतीनमवाचह॥७॥ सातानता
ननाते निस्पृहे नैपितरं पितुः॥ स तत्सामभक्तिततात नवनालोवन्नांतरे॥८॥ मन्यसेयं तता
नेति नैवनात तवात नव॥ आर्यपवपितातस्य पितलतयथा हितः॥९॥ पुत्रवमस्कोऽत्तः
लोकेः सम्यक्तानसंपितनमः॥ सर्वलोकविनाशाय समतिं चक्रे महामनाः॥१०॥ तंतथानिश्चि
तात्मानं समम्हात्मानमहात्मना॥ ऋषिर्विप्रो वसिष्ठो मैत्रावरुणिरंस्पपीः॥११॥ वसिष्ठो वार
यामास हेतुनानेन तच्छृणु॥ वसिष्ठ उवाच॥ कृतवीर्य इति ख्यातो बभूव पृथिवीपतिः॥
यास्येवेद विदां लोके मनुष्याणां पार्थिवर्षभ॥१२॥ स तातानसमभूत्तलात नपुष्येनच यतेनच
सोमं तेन पीत्वा मास विपुलेन विपुलं पुनः॥१३॥ तस्मिंस्तु पतिं स्वर्गाहते स्वर्याते यजकं यचन॥ व
भूवतत्कृतेयानां द्रव्यकार्यमुपहितं॥१४॥ भार्गवाणांतु धनं ज्ञात्वा तज्ज्ञातेनः सर्वं गवेते॥ याचि
स्वरोभिरत्यलोकास्तेभार्गवसत्तमान्॥१५॥ भूमौ तनिदधुः केचित् भार्गवा धनमक्षयं
ददुः केचित् द्विजातिभ्यो ज्ञात्वा क्षत्रियतो भयं॥१६॥

301

३-२

२५ ॥ पयानं मिलत्थं पुल्ल ॥ ४ ॥ ४५ ॥ सविदं कमनं संवभूव मिथुनी चभूव हि[illegible]न स्तौ [illegible] लोः
लोने मर्थः ॥ ४४ ॥ पौ वा दन्य पुं वं चौ दन्य पिनि निन परिनं पुक्ति मा दिवि का रो वा चौ दनं नि [illegible] मनं नर

दद स्यः नं म ह्री [illegible] म यो [illegible] वा सि ने नन नाः ॥ पुरो हि नेन स हिं नं दिवा कर सि चो दिनं ॥ ४८ ॥
सव नं [illegible] म ल [illegible] ली वनं नाव रः ॥ प्रयो [illegible] म पी नं [illegible] वार का ल रंचो दिन ॥ ४ ॥
मसि [illegible] पंथा नं पनः का [illegible] नं [illegible] मि नं ॥ मनः प्रह्न [illegible] मन [illegible] रमन नं म ॥ ४ ॥ नन
पुन नना [illegible] स्तपरी कर नं दन ॥ प्रयो भनन दानेन प्रा कें लो का [illegible] वनी ॥ ४५ ॥ ननः प्र
विहितन नौनि [illegible] न म नं मं ॥ रान न ल स्या न या हे वी व ति ह म प च क मे ॥ ४७ ॥ महर्षिः सं
विदं कना सं वभूव न न [illegible] हर ॥ हे [illegible] ने न नि [illegible] ना व सि [illegible] भा र वि ॥ ४५ ॥ ननलस्या
सम न ने ना भी म [illegible] निस न मः ॥ [illegible] वा दि न ले न न [illegible] म नि रा प्रं मं ॥ ४५ ॥ दीर्घका
लेन स [illegible] भं स पुं वे न न नं प स्ता ॥ न दादे वा [illegible] ना कः हिं तिं [illegible] रा हि नी ॥ ४५ ॥ ननो
पि हिद वो वं सि न न ते पुरु [illegible] भः ॥ प्रथम को ना म र न [illegible] दं [illegible] वे प्रा घन ॥ ४५ ॥
१ [illegible] वा सि हे ॥ नं प [illegible] वा चा ॥ प्रा [illegible] म स्या न नः पुन म रं [illegible] नी [illegible] नाय न
फा कें: क [illegible] कां [illegible] नीय [illegible] व पाकि लं ॥ ५ ॥ ला न क [illegible] दिक [illegible] कि या: [illegible]
म निस न मः ॥ को [illegible] भान [illegible] चे का र मग वा [illegible] ॥ ५ ॥ [illegible] न स्ते न च [illegible] स्या

हिं चो दनं नि [illegible] नेन रहं को रन मि ति भा व था प्र सिंहं ॥ ४५ ॥ [illegible] पः ॥ प्रा [illegible] म स्या नन उ
नि ॥ ५ ॥ पन [illegible] ति ॥ [illegible] पं सने [illegible] स्यानं ये [illegible] पः [illegible] प्रा [illegible] तन्न प्रा से उ ब

म. भा.
शा. प.
३०२
प्राणलेखका

१८॥ अध्यायः॥ नाहं मोक्षमानाः॥ ५॥ आह तानि ध्यानानि दृढानि स्वहृदं॥ ६॥ नानाह नानाः संयोयनार्थी
निपातो वयं॥ ७॥ कहतत्र यन्त्रयोर्वेदानि निहन्ति किमाह॥ अग्नेनेति॥ ८॥ आत्मनो मनः सर्वेषामपि

सत्त्वं भगवान्ब्रह्मा देवः कर्तृत्वेन स्थितो मने॥ तेन हि भिन्नमात्रेण प्रजाः संभवन्ति॥ ९॥ तत्पितृ
वेदे वै नानेहसं त्वा मित्रावरुणाने दृष्ट्वा क्षितिं दृष्ट्वा नित्या॥ अग्नेतन्मात्रं वो न्वलं महत् जः कपिलो
मुच॥ १०॥ तेन च तं विष्णुमानाय कोषादयाहायमना॥ स्मानानि हानान्वयुनादतानि नसं संप्रायः॥ २
गर्भानपि यदा न न महत् तृणोद्भिन्नत्वत्रकाः॥ तदायमपृक्तोप नमो भयादघ्न्या नक्षत्र॥ ३॥ बहुना
स्थाविरलोके देहिनां गर्भे स्थितो मेव॥ निवेश्य सर्वधायाः प्रियः श्रियाचि कीर्षया॥ ४॥ सोऽयं पि रव
या स्थूलं क्षोभादे हेतुमित्युक्तं॥ तेनास्मात्स्वहितेन च तं विष्णु बिना निव॥ ५॥ नमि सन्नान
याचः स्थितो वेममस्तुलोकानां॥ अग्नये वः पृथिव्यादीनां तेषां दृष्टीः प्रमोदयति॥ ६॥ वसिष्ठ उवाच॥
एवमस्मान्ततः सर्वयज्ञानन्तेन महतः॥ ७॥ ऊचुः प्रमोदे तिन यदा प्रभातं च चकार सः॥ ८॥ अग्ने
नैव च विश्वाने ना मा लोके मुक्तमनः॥ सत्त्वेन नित्यविग्रहे हं भिन्नात्मना यत्न॥ च वं वि
प्रतिलब्धा च प्रति तन्मात्रत्वेन यः॥ भगवन्नमनिर्मितेन सर्वलोकपयामवं॥ ९॥ संचक्रे
नानलोकानां विनाशाय महामनाः॥ सर्वेषामेव कार्त्स्न्येन मनः प्रजापतिर्मनः॥ १०॥ इष्ट
न्नपचितिं कर्तुं महदालोकमयत्नेन तु नः॥ सर्वलोकविनाशाय न यथा महतात्मिनः॥ ११॥

निकर्तुं प्रवर्तो ऽन्यार्थं स्थूलमहमनोपचितिं कर्तुं यो न यत्नीत्यर्थः॥ १०॥ ११॥

३०२

३०३

१४॥ १५॥ न हृ भेन स्वाः गर्भे यत्र लभ्यते स्त्रीयां का चित् द्रयादि नास्ति न स्या विगर्भे स्त्रा कि भिनि कि पनं कन

स्वर्गाच्च ह्लादद्रुः केचित् नेसां विनेयथ्ये श्रितेः ॥ स्त्रियाणां न दानान का स्त्रीणां न र दर्शनान ॥ ३॥ न
नोमहीनस्तं नान स्त्रि वेणयदृक्षया ॥ स्त्रीनना धि गतं चितं केन विकृगुचे श्रमनि ॥ ४॥ न हि तंद
दृष्टुः सर्वे समेनाः स्त्रि यथार्थाः ॥ गृहन मध्ये नन्तं ञेयाद्रुगं स्त्रा द्रु रणग नान ॥ ५॥ निज द्रुः प
ग्रमे द्यासाः सर्वे लानि वि नेः पारेः ॥ श्रा गर्भे स्त्रीकं नन स्रोहः स चौवले ध तं ॥ ६॥ नन उद्विग्न
मानेषु स्त्रा दे वं भया नदः ॥ स्वपतमो मिरिं डों हि म वं नष्ठ पदि ॥ ७॥ नास्ता म न्पनमागर्भे
भयाद्र्ग्रोम द्वेन सं ॥ कृष्णो केन वा मोरुर्भे र्नेः कलविद्रुहृ दे ॥ ८॥ न हृ भे म प त्नं म्या श्रु द्रास
णीमाभयादिना ॥ गदी वद्रुकृ च्चा या मास त्रिया लाम पद्रु दे ॥ ९॥ नन ले त्रि या न म ले न
भे हेन म घना ॥ १०॥ द्रु म्द्रु द्रांद्र णी ने च्चै दी च्च मा नं नाले न म ॥ ११॥ स्व च्चा गर्भे: स भिन्ने हंद्रास
एणानि न मामह ॥ म एद्र स्त्रीः स्त्रिया णं म शान्द्र स्त्र मास्तरः ॥ १२॥ नन च्च स्त्रि वि दीनां के मिवि
हं गिपुन म न ॥ नन ले मो हृ माप च्चा गजा मोन ह्रद्र घ य ॥ १३॥ मा सलो श र णं न गर्भ हृ ए थे ना
म नि हि नं ॥ ऊ चु श्रे नाम हा भाग हन्नि या लि वि वेन घः ॥ ज्योतिः अहो ला द्रुः त्वा र्नेः चं ना वि
पा वा द्र य ॥ १४॥ भगवन्तः प्रसारेन गा द्रेन्न ध स च स द्य ॥ उपार भ्य च रा द्रे भ स हिनाः पाप कर्मि
णः ॥ १५॥

मि नि हे नो भी ना उपद्रु रे स मीपे ॥ १६॥ द्रव्य लाम नि हि ता मि नि पा दे हं न मि नि शेषः ॥ ॥॥
१७॥ १८॥ १९॥ २०॥ उपारभ्य पा पा निवलि कला पा पक र्मि णो वदं ॥ २१॥ ॥ १११

ग॰ भा॰
श्रा॰ पं॰
पु॰ ५

पुरुकं वा निति || ३ || अनिलो लोकेः अकृतकार्येः || ४ || तथोत्पन्नः क्रोधोजेनत्वः नन सकारणकृत्य
हः || योहीनि || ५ || क्रोधकारणान्याह || अपि शास्त्रानामिति निष्ठानेषु कं || ६ || नहि धर्मे न च क्रियास्वकृति
न्याह || अक्रोधमिति || ७ || क्रं न उपक्रं न || ८ || न हि च क्रिया एव च यः नन लोकानन्तन्याह || संप्र

उवाच || उन्नवान क्रियया क्रोधान्नाति तं पितृभक्तम् || सर्वे लोकं विना प्राय न स्वामि वि
नथा भवेत || १ || तथा योषप्रति लोके नास्मि विनमस्म है || अनिलो लोको हिंसां रोषो दहेद् विरिवार
णं || २ || यो हि कारणान्नः क्रोधं संतानं तंतनः संहनि || नालं समनज्जः सम्यक् त्रिवर्गपरिरविनं || ३ ||
अहिंसानां नियता हि शिष्टानां परिरक्षिता || स्थाने रोषः प्रयुक्तः स्यात् येः सर्वजिगीषुभिः
अक्रोध महत् महत्क्रोधोगर्भ क्षयान्नालना || अनवं मान वंग्स्यभ्यगणं व त्रिवेदं ये || ५ || सं
हारो हि यस्य लोके भगणं च त्रियायमे || अपार्गी छेदनाक्रान्तलस्यामामन्यराविषात् || ६ ||
संहरणं लोकाः किल मेमानवः पितरमूलेषु || भयान्सर्वेषु लोके षु नानिजन्मः प्राप्यणं || ७ ||
नान्यगणं यदा दायान्कषिलाभ्युपपद्यते || मानानन्दाद्यारेपन्नू रूपेण केन मां स्वभा || ८ ||
प्रनिषेद्धा हि पापस्य यदा लोकेषु विद्यते || तदा सर्वेषु काले पुण्यापकृत्ता प्रपद्यते || ९ ||

णां निरुद्धापणं के वोजनप्रवृत्त यासां स्वयं पुमां सं प्रणः को यो नमा शांताः एति पत्रक्तनभीरुस्पर्थः || को धो
ष्टि संचये मास्ये पद्मामिति विस्तरः || संहरणं को योऽरत्पविपर्दति लोके स्तपिशमर्थे मन्मानरूपणं जा
णं नक्तनमनाहेपित्र वयम एवे मर्थः || ५ || एतदे वोपपाद्यति प्रनिषिद्धेति || प्रनिषेद्धरिमनिपापकृद्धे

303

१५॥ विरूपेण प्रतिरूपेण च हूनादावि येन निमित्तमात्रैः ॥ १६ ॥ प्राणम्येति ॥ एतेन स्वरूपणं नादिनामसौ
चास्यणेन रविपर्ययं दर्शितं ॥ १७ ॥ मावधीरिति ॥ तत्रिधा ॰ नित्यं नानापराधिनः समलोकान्य

नापयामास नां लोकान्सर्वान्यामस्य मानपान ॥ नपसो ये लामदनां चंद्र विद्यापि नाम हानं ॥ १८ ॥
ननलेपिन रसान विता यस्य न दर्ने ॥ पिन लोकाः पापाम्यामर्वे रूद्र विरिं च च ॥ १९ ॥ पिन र
चुः ॥ ये विरूपः प्रभावले नपसो ग्रामपूजक ॥ प्रमार्दरू लोकानां नियच्छ कोयमासनः ॥ २० ॥
नानीयोर्हि न सनानस्य तां विभां विनामभिः ॥ तपो दापे विलः सर्वैः रुचिराया लो विहिसन्न ॥ २१ ॥
ग्राप्रमा विप्ररूपेण यदानः वेद प्राणि पल ॥ न दामसाभि वेद्यलान रत्रि ये वो विनः स्वयं ॥ २२ ॥
नित्यानं यच्चयै विनं केन विरूपये प्रमानि ॥ येरा ये न नदान्य सं रत्रि यान्को पथि सभिः ॥ २३ ॥ किं
हि विनेननः कापि सर्वा पनां हि नो नम ॥ यद साकं यनापरः प्रभनं पुनमाद्रत ॥ २४ ॥ प
सनस्य नुपदानं ननः पाको नि मर्वे पाः ॥ नरागामियं द्वयाप्य लानं सम न ॥ २५ ॥ प्राणमह
नपुमां सान न सो कां लभ ने सालं ॥ ननो मामिः समोसे वं नानाना मा निपानिनः ॥ २६ ॥ न चेन
नः विपं नान यदिदं कर्म नि मिच्छसि ॥ नियच्छेद्रमनः पापान सर्वलोकपराभवान ॥ २७ ॥ मावधी
रविधा सजननो कान्समपूजक ॥ स्वयं नेनपसेज कोय मन्यति नेन हि ॥ २८ ॥ इत्यादिपर्वे
णेपर्वे

पर्वीय मावधीः किं ननः सं स्थनं ते जो रूपयंते जो यं न हि या दंतर मपोसं ॥ २९ ॥ अध्यायः ॥ ॥

१०४

हृदयशिरः बहवो मसाले ॥ २५ ॥ मधुपर्कं ॥ एवमिति ॥ ॥ साम्भोऽज्ञस्मना श्रावये यं ॥ ४ ॥ अग्रे पराशर ऋषिः

२७५

म·भा
आ·प
३०५

महृदयशिरोभूतायजनहेतवे विश्नोविद्रः ॥ नमस्त्रिमह्लिस्वक्राम्पिवस्मापो महोदयो ॥ २ ॥ नमस्ता
त्मनिभद्रेनेन लोकानं नमहेहि ॥ यपणावपां लोकाज्ञानेज्ञानवलाव ॥ ३ ॥ स्वाहिप वे
प्यौर्वे ॥ गंधर्वेऽ वाच ॥ एवमस्तुः सर्वविप्रर्षिवैषिष्ठेन महात्मना ॥ न्यपद्यत्रानमनः क्रोधं सर्व
लोकपरामवौन ॥ ४ ॥ जैव समहात्मनेतः सर्ववेदविदांवरः ॥ सर्वीदानमसवेतापराक्रोयोऽय
पराश्रया ॥ ५ ॥ नमोहृदंस्य वालोपश्रुतारसानमहामनि ॥ स्वाहविननेयहेपाकेवयमनास्र
स्न ॥ ६ ॥ नहिनेवाराणमानसवशिष्ठो रक्षसांवधः ॥ दिनोपामसस्यमाभावं प्रतिनामिति नित्य
यान ॥ ७ ॥ त्रयाणांपावकानांच सत्रेऽस्मिन्समहामुनिः ॥ आसीत्पुरस्ताद्दीप्तानां चत्वार इव पाव
कः ॥ ८ ॥ तेन यज्ञेन शुभ्रेण हूयमानेन पाविना ॥ नहि दीप्यतमाकाशं स सूर्य इव घनात्यये ॥ ९
तेवसिष्ठादयः सर्वे मेनिरे मुनयस्तदा ॥ तेजसा दीप्यमानं वै द्वितीयमिव भास्करं ॥ १० ॥ ततः
परमदुःसाधमत्रैस्ऋषिरुदारधीः ॥ समापयिषुः सत्रं तमत्रिः समुपागमत् ॥ ११ ॥ तथा
पुलस्त्यः पुलहः क्रतुश्चैव महाक्रतुः ॥ तत्र रक्षसां जीवितेप्सया ॥ १२ ॥ पुलस्त्यस्तु
वधात्तेषां रक्षसां भरतर्षभ ॥ उवाचेदं वचः पार्थ पराशरमरिंदमं ॥ १३ ॥

304

प्रद४

नित्यहोत्रिमिश्रेण नित्येन यज्ञेन द्विजेन हूयमानेन ॥ ६ ॥ ९ ॥ ॥ राम

३०५

पापं पापकारिणां ॥ किल्बिषान् ॥ ... ॥ ... ॥ ... ॥

यदा नश्यति यद्वा यत्पापीन लभते कचित ॥ निष्ठं निवहन्वै लोके न दायापे स्वकर्मत ॥ ... ॥ जा
नन्नपि च यः पापं शान्तिमात्र नियच्छति ॥ ईदृशः सको पि नैनैव कर्मणा संप्रयुज्यते ॥ ... ॥ ज्ञ
भिक्षु स्परे स्वे वय दिवे यिन तो मम ॥ प्राज्ञे नेप्रा कि नाम्नान निष्ठं मन्ये हन्ती चिंन ॥ ... ॥ मन एवा
महं कृष्टे लोकानामीश्वरो हहं ॥ भवतां च वचो नालमहं समभिवर्तितं ॥ ... ॥ ममापि चेह
देवमीश्वरस्यननो मदन ॥ उये वमाग्रस्पृष्टहींकानां किल्विषाद्भये ॥ ... ॥ यथा यं ममैतो
मेपि लोकानां दानमिच्छति ॥ दहे देय च मां मे वनिराहीनः ज्वलतेनमः ॥ ... ॥ भवतां च विज्ञाना
मिसर्वे लोकहितेषणा ॥ नस्माद्धि वंधयन्ने यो लोकानां मम चैव सः ॥ ... ॥ पालानमन्नलहे
ष्टिलोकानां दानमिच्छति ॥ अपत्नं मे च भर्तुं ने लोकाः पापास्थिताः ॥ ... ॥ कायो मया सर्वे
वृत्ताः सर्वमापो मयं पातगात ॥ नस्माद्युक्ता विधिं चेमं कोपापिं हितनमम ॥ ... ॥ अयं तिष्ठन्ते विवि
प्रयदीक्षस्मिन् हीदृयो ॥ मन्ये नोपि ईदृश्ये लोकाः पापो मयाः सना ॥ ... ॥ एवं प्रतिसाम्ये
येनवानव्यमविध्याति ॥ नचैवं पापानां लोकानामिहं निपातभवे ॥ वसिष्ठ उवाच ॥ नतलके
यंजनानतोवै शिवं कृत्वा ॥ ... मनमे च वापायत्वे ... महेदये ॥ ... ॥

कारणी भजतास्य ... लोकानामपि दुरात्मा ... ॥ ... ॥ उपयुक्ते भवयति ॥ ... ॥

२१॥ अध्यायः॥ यात्रा इति॥ २॥ आगमात्माललयातिल स्थान॥ ५२॥४॥२॥६॥१॥८॥९॥ अकृतार्थो अकृ

२७५

सत्र स्थापयित्वा सिद्धत्वान स्नानं कृत्वा वचः॥ भगवन्तं दृष्ट्वा ने वह्निः महापर्वणि पर्वणि॥ २१॥
इत्याश्विपर्वणि वंशमाने स॥ अरुन्धत्युवाच॥ रोहिता कस्मात् पादेन गौरी ब्रह्मविदं वरे॥ कार
णं किं द्विजश्रेष्ठ भार्या वै सन्नियोजिता॥ १॥ ज्ञातं तावत् परं पुण्यं वसिष्ठेन महात्मना॥ आग
मानमनेकं शास्त्रं तेनेन महर्षिणा॥ २॥ अथ शिष्टं वसिष्ठेन कृतं चापि पुरा महत्॥ एत
न्मे संशयं सर्वं छेत्तुमर्हसि सुव्रत॥ ३॥ गौतम उवाच॥ पुनर्नयनि वो ये ह्यं यन्मां त्वं परिपृच्छ
सि॥ वसिष्ठं प्रति तत्त्वं धर्मं यथावत् तत् सहेतुकं॥ ४॥ कथितं ते मया सर्वं यथावृत्तं सपार्थिवः
श्रुत्वा भगवतः श्रेष्ठं वसिष्ठेन महात्मना॥ ५॥ स च पार्थिव स्वं ग्रामं त्यक्त्वा कालेन वनं
निर्जगाम वनं तूर्णं सह दाराः पत्नया॥ ६॥ अरण्यं निर्जनं गत्वा सह दाराः परिचक्रमे॥ नाना
मृगगणाकीर्णं नानापक्षिसमाकुलं॥ ७॥ नानागुल्मलताच्छन्नं नानाद्रुमसमावृतं॥ अ
रण्यं घोरं संनादं श्वापदैः परिभ्रमन्॥ ८॥ स कदाचित् तथा विप्रो दृष्ट्वा तत्र मृगान्
दुर्दर्शान् यतिलिंगिः कुत्सितैर्निर्जने वने॥ ९॥ ब्राह्मणं ब्राह्मणीं चैव मिथुनं योगसंगतौ
तौ तं वीक्ष्य विवर्णा कृतार्थौ प्रयाविनौ॥ १०॥ तयोः प्रद्रवतो विप्रं ज्ञात्वा हन्तुमतिर्वल
त॥ इत्थं ग्रहीतं मर्त्यं मया ब्राह्मणं भावन॥ ११॥

प्रवनाव॥ ९॥ ॥ १२॥

स॰ मा॰ आ॰ ३-६

305

विप्र

३-६

प्रपचितं ज्ञाने सर्वमिति निश्चयः ॥ अज्ञानं नामभिनिपापरः विद्यः नाशं दर्शनि हि मायि हेयप्रज्ञः ॥१२॥ सर्वं
म ॥१३॥ पालिं चेति ॥ पुत्र देहे प्राप्ति नान पश्यतीन्द्र ॥१४॥ पापान् प्राप्ति ना ज्ञानी न जानाति मे वा

कचित् नवनिद्रं ने कचित् विद्यते ॥ अज्ञाननाम देहान् सर्वे सा न वसान ॥१५॥
प्रनोद्वे प्रसिद्धं ने न वि कर्तुन मर्हति ॥ लेपलाल नदि ना लीना परि हत पहिने ॥१६॥
मच्च पत्रियम् समाच रपरापार ॥ अथ मित्र विदः सलं रचनेन परापर ॥१७॥ पालिकापि
यमस्तेना ति कनम हर्हसि ॥ पुनायाग मनो देहेन चैव कर्तुमर्हसि ॥१८॥ पापापरि पानैवी
विप्रनदान कपपादितं ॥ यान्मनेन सदेहे परापालि भीन लोकोदिचे ॥१९॥ नहितेन दसःक
श्रित्रुनोय नदितं मने ॥ यानमनैवा मन लेन हतोम स लदामवन ॥२०॥ निमित मात्र
नासीद्दिया मिषः ददपाप ॥ ताजा कलाय पारप दिलमात् धर्मोदने ॥२१॥ येवचा कचिदाः
पुत्रावसिद्ध साम हापने ॥ नेच मर्दमनदप्रजा मोहेन मलिनाः सरे ॥२२॥ सर्वमनदलिपस
पिदितं वैमहा मने ॥ दर्मानस मर्दे रप प्रनाननप हितेनं ॥२३॥ निमित मनलवाक्रनो
वासिद्धनं दर्न ॥ नजाने च बभंद ने समाप्तमिरमहाने ॥२४॥ गृहवाच ॥ चलमनः प्रलसं
नवसि हेनवधीमनः ॥ नहाममाप्रयाममच्छपीत्र मलहामनि ॥२५॥ पनेमावससंक्रान्तमं
मर्दनाव कंनद ॥ उत्तरे हि मवनार्थ उनामसर्नम हाचने ॥२६॥

विलवाक्तनः पालेरेवापमपरायोनादसाक्रिपर्थे ॥२७॥ मोरवनेपाकि ॥२८॥ समद्वेरपपदं
निमित मनन्तनितो जनना ॥२९॥ मचवागज ॥ ३ ॥ २५ ॥

म॰ भा॰
आ॰ प॰
१-१

सदृशं न्यायसहितम् ॥ २२ ॥ अध्याय ॥ ५ ॥ अश्लोकमिति ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५६ ॥ इति जयाह श्रीगोचकाय

१७७

सक्षयाय च नष्टिः कालेन महता नरः ॥ कालकाले मियति तो मद्य्यं न्याति वातिनः ॥ न हि सम्यग्यमन्यते पापं कामसोहितः ॥ देव्यां सोथ वचः श्रुत्वा मंस्थानोन्यपसतमः नेषाय मनसंसम्यन्यपर्थं न याज्ञ समंगां नरः ॥ २ ॥ एन स्पाकाका यागाज्ञा वसिष्ठं संन्ययोन यन ॥ मम सोभुनपश्चे प्रसाद्यो मा न विना ॥ ३ ॥ इति श्रीमहा ... पर्व ... नम श्रून नाम ॥ अश्लोकमन्त्र पोवेय मान्ये यर्देवे दविन ॥ तुष्टो हि नंसमाचवत्मवं हिवि दिनं नव ॥ ४ ॥ ५ ॥ ५ ॥ यवी याने वलप्नैव वने श्याना न वष्टुति ॥ योमण्डले चके तीर्थं नेवमुदेयन्दैव ॥ ४ ॥ वै ॥ ५ ॥ नाव ॥ नलोन्मे नोवमाश्चेयं मदकै नयथा विधि ॥ गंधर्वा यतन दासीनो वचनं चेदमब्रवीत् ॥ २ ॥ नयोऽवनाय जिहं नह यागंधर्व सतम ॥ कार्यं कालेन हीयमानः स्वहितेनेहितमिति चार्ववीत् ॥ ३ ॥ तेनैव सोममभिहरप्य गंधर्वः पांडवात्मज ॥ रम्यां ज्ञागीरथीतीरं यथाकामं प्रजग्मिवे ॥ ४ ॥ तत जलं चकंती मगना यांमाश्च मंतने ॥ नेवम्भुः पांडवा यां मंपोतो हि माय आतन ॥ ५ ॥ नानौ मनः प्र तिजग्राह सर्ववेदविदांवरः ॥ वस्त्रेन फलमूलेन यो तो हि स्नेन चैव हः ॥ ६ ॥ तेनमनः शं स्त्रिवैव श्रोत्रिये यंपात्रं च पांडवाः ॥ ब्राह्मणं तंत्र व्रत्स्नु सपाचाली वसवयं चरे ॥ ८ ॥

पांचाली चलत्रामाशं हरि ॥ ५ ॥

306

१-१

रूपाण्युपगतन्यममवचोयत्नेवस्त्वामिमभवन ॥ अहिंसा वै श्रुतमवहुलं हि लोके परिश्रुतः ॥ ४४ ॥
गुरुमतं क्षिप्तो धर्मो गुरुरुच्छ्रूपेणैव ततः ॥ पुण्यपापहृतं दुर्धर्षेन वायं कर्तेमहे हि ॥ ४५ ॥
कृतकालेन संप्राप्तेन मर्त्येन मनकर्षिता ॥ अकृतार्था गृहं भर्त्रा सह वाक्यं समागता ॥ ४६ ॥
एवं विज्ञो प्रमाणतो [illegible] भर्तारं ... मिवेशितं
नस्याः ... ॥ सोऽपि ... ॥ ४७ ॥
ततः सापि लोके संतमप्रभर्त्स्न मनकर्षिता ॥ कस्मात्त्वया ...
... ॥ प्रेसंनमभ विनोमेदाश्रियो भर्ता महाय-
पुरः ॥ ४८ ॥ तस्मात्तमभि ... विविनिः ॥ ...
... ॥ ४९ ॥ ... तेन संगम्य
... ॥ ५० ॥ ...
एवं ... ॥ ...
... ॥ ५१ ॥ ...
न ॥ ... ॥ ५२ ॥
॥

४॥ ध्यायान्देवानिताने वाह ॥ यन्नमिन्यादि ॥ ७४॥ नटाः वेषभेदकारिणः वैतालिकाः ॥ मंगलपाठका

स॰भा
आ॰प
१८

योजनानः कवचीच्छत्री सप्रासः सपताकिनः ॥ समृमिद्धे महाबाहुः पावके पावकोपमः ॥ ६ ॥ व
सानस्थानवर्यांगी होपदीनतनमधुमा ॥ नीलोत्पलसमो गाधो यवत्राः क्रोपानामयावति ॥ ८ ॥ य
न सेन स्तवहनां सपुवराकुनबगोः ॥ गान्धाग महेव यंदुद्रुं नचहिम महोत्सवं ॥ ९ ॥ राजानो राजपु
त्राश्च पतनानीभूरिदक्षिणाः ॥ स्वाध्यायवंतः शूरश्च योम हात्मानो यतव्रताः ॥ १० ॥ न हतणां र्पणीया
श्च नानादेशसमागताः ॥ महारथाकुलामात्यस मपोधितिष्ठिमिपा ॥ ११ ॥ जेतत्र वि वियान्य या
ह्निनयार्थनेरेश्वराः ॥ प्रदातुं नियतं नागाश्च भद्रं मोदंच सर्वशः ॥ १२ ॥ प्रनिग्रह चनन्सर्वं दृष्ट्वा चै
व हयंवरं ॥ स्नन भुयोन्सवंचैव गामिष्यामो यथेप्सितं ॥ १३ ॥ नटा वैतालिका सूत नर्तकाः सूत मा
गधाः ॥ निषेध कास्त दे यो भध्यः समंतनिमहाबलाः ॥ १४ ॥ एवं कौतूहलं कृत्वा दृष्ट्वा च प्रतिग्रहं च
महात्मानो महात्मानः पुनः प्रतिनिवर्त्स्यथ ॥ १५ ॥ दर्पणीयांश्च वः सर्वानेव नृपानव स्त्रियानव ॥

307

समीक्ष्य कृष्णा वरयेत्सं गामेकतमं वरं ॥ १६ ॥ स्वयंवरान नव श्रीमान् र्पणीयो महाबलः ॥ नियुज्य
मानोविनयेत्संगम्याद्रविणं वसु ॥ १७ ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ परमं भोगमिष्यामो द्रष्टुं चैव महोत्सवं
भवद्भिः सहिताः सर्वे कन्यायाश्च स्वयंवरं ॥ १८ ॥ इत्यादिपर्वणि द्रौपदीस्वयंवरे ॥ ॥

रिणः नर्तकाः प्रसिद्धाः सूताः पौराणिकाः मागधाः वंशशंसकाः नियोधकाः मल्लाः ॥ १४ ॥ संग
म्यादेवयोगेन ॥ परमं यथेष्टं ॥ १८ ॥ अध्यायः ॥ ॥ १८४

१८

१॥१८॥ शैषपदीसप्तचत्वारिंशोऽध्यायः॥ नन्दनेद्रुनि॥ १॥२॥३॥४॥५॥६॥७॥ ८॥

पुरोहितेन तेनाथ गरुडेण संमानानन्तथा॥ नाथ वंन मिवान्मानं मे निरे भरतर्षभाः॥१॥ वहि वेदार्थ नन्नत्ततेषां गुरुः पार्थाः॥ तेन धर्म विदा पार्थाः पाण्डवा धर्मविदां कृता॥२॥ वीरान्स्त सहितान्मेने आमराणाममन्यमानः॥ वृद्धिं चोपचक्रे नाहं कृष्णान्वेषणं निचद्विजः॥३॥ कृतनक्षत्र युनाले नन्नतन्मे मनन्नाधिपः॥ मेनिरे सहितानां ते पांचाल्या लेष्टयं वै॥४॥ मार्दिपवे शि पदीहर्षचे॥ वैशंपायन उवाच॥ ततस्ते नरपतयः क्ष्मा श्रान्ततः पंचपांडवाः॥ प्रययुर्द्रौप दीद्रष्टुं नच देवां महोत्सवे॥५॥ तेषां यौनरवयाताः सहमानात्पांडवाः॥ ज्ञातात्मानं हंसगमी गंगाकुलनः संगमात्प्रयुः॥६॥ तेरुच त्रींस्त एकतातनमांरुवान्तसवादिनः॥ कृष्णवेनोगामिष्या निकृतेनाथानान्ते॥७॥ युधिष्ठिर उवाच॥ पत्नानानेकच्च कृष्णाः सोऽर्थाने कचारिणः भवंतो वेविनानं तत्सहमानाद्विनर्षभा॥८॥ धौम्य उवाच॥ न हतनामेवपंचालानुपद णनिवेशने॥ स्वपंचवतो मर्सानं त्वमविनाहमहायन॥९॥ एकसाध्यप्रयानां सर्वपंतत्रैव नामिनः॥ नरखकृतमंक्वा पोमृविनाहमहैनाव॥१०॥ तत्सेन सपद्दहिमानु पदस्पनहू स्मनः॥ विदीसधानसमान्याप मानिमेहृताः॥ दर्शी नोपान वयंगामेह कमारीमनस्विनी पृथकस्त्रस्य भगिनी द्रौपदी याज्ञसेनी प्रजापिनः॥११॥

स्तंभनः कुमारइदंयंत्र सतीनवलवंयोवेष्टावेदुमसमर्थः ८८ उयोपविष्टाः पादपूरणार्थाउ येनसमाव्रि

तिः समसमयोरुपादपूरणइति ८८ शिष्यमारोजनलक्षणः नदाकारलायसमहात्मकोविमलकृष्टि

ऋषभ उवाच ॥ इदं सर्वंपवनः कुमारसौरेमिश्चसायके: ॥ शालीनवलवंयोवेष्टासलतामलला

मिति ॥ ८७ ॥ वैशंपायन उवाच ॥ इतिसंकुपदेशमनावपंचरामचोपयन ॥ नष्टुनायार्थिवाः सर्वस

मीपुनवत्रभारत ॥ ८८ ॥ अपपश्यमहात्मानः स्वयंवरादिहृत्ववः ॥ उर्यापनगुरोमाश्रमकर्णाःक

स्वोनपाः ॥ ८९ ॥ आहारणाश्रमसङ्घामायादेशोम्यः सगुरामामन ॥ ननोचिंतनाराजगणोत्तु यदेनमहा

त्मना ॥ ९० ॥ उपोपविष्टांमंचेषु हृष्टकामाः स्वयंवरं ॥ ततः पौरजनाः सर्वे सागरोद्भूतनिःस्वनाः ॥ ९२ ॥

शिष्यमारशिरः प्राप्यन्यविष्टाने स्मपार्थिवाः ॥ प्राकुतनेरणेननगराद् भिभायेसमेत्रुमे ॥ समान

वाः पृष्ठमेमरतैः सर्वतोवृत ॥ ९३ ॥ प्राकारपरिखोपेतो हर्म्यतोरणमंडितः ॥ वितानेन विचि

त्रेणसर्वतः समवस्तृत ॥ ९४ ॥ तूर्यौघशतसंकीर्णः परार्ध्यागरुधूपितः ॥ चंदनोदक सिक्तश्च

माल्यदामोपशोभितः ॥ ९५ ॥ कैलासशिखरप्रख्यैर्नभस्तलविलेखिभिः ॥ सर्वतः संवृतः शुभ्रैः प्रा

सादैः सुकृतोच्छ्रयैः ॥ ९६ ॥ सुवर्णजालसंवीतैर्मणिकुट्टिमभूषितैः ॥ सुखारोहणसोपानैर्महा

सनपरिच्छदैः ॥ ९७ ॥

रः प्रदेशोयेषां दिक्षु अतएवसामान्याजिनादिकं तांदिशं प्राप्यन्यविशंत्वाप्तेव दिक्षु माह ॥ प्राकि

ति ॥ प्राकुतनेरणप्राद्रीचोत्तरनगरालेनगरान्समीपेपन [illegible] न्यतरस्यामहूरेपंचम्यान्येनवंतमिदं ॥ २९ ॥

पनाविति ॥ ५ ॥ एवं प्राकारं गन्नाग्र दर्शकारं लोकं समूहस्थानं कासं कृ ५: स्नानं पनानं वसे संगपायसम्
दयोगिनिमेदिनी ॥ ४ ॥ ननसिरेन तानवंन: ॥ ५ ॥ अनानमंनमपितिमपकां ॥ ६ ॥ वेदायसमंतगिदगांन
यंत्रेनीक्षवेगवनयाभ्यमकेननसदमागंसंकेचकं स्नानएववहं समितिंयंत्र छिद्रहानउपलक्षितंत

वै प्रपायनाक्षाच ॥ एवमक्त: प्रपानंतातेयांड वाननमेनय ॥ गतादद्दितपांचाननुपदेना
मिरद्दितान ॥ ७ ॥ ननलेशुमहात्मानं समहात्मानमकल्मषं ॥ ददृशु: पांडवा वीरमनिंद्यपायनंनस
॥ ८ ॥ नक्षेत्रयावस्तकारंहकं नानेनचसक्तनां ॥ कथानेचाभ्यनगाना: प्रपद्युडेपरत्वयं ॥ ९ ॥ पपंच
॥ नक्षैपयावत्सकारंहकं नानेनचसन्तानां ॥ ननननचसंतनयपानेजयमेहाग्या: ॥ १० ॥ सायायुवंन:
नोरमणीयानिवनानिचसतंतसिव ॥ ननननचसंतनयपानेजयमेहाग्यां ॥ १० ॥ तेनदहा श्रेनच
पूचयोमयुया: प्रियवादिन: ॥ धानपूर्वेणसंप्राप्ता: पांचालाः पांडुनंदना ॥ ११ ॥ तेनदृष्टा श्रेनच
कंपावारंचपांडवा: ॥ कुंभकारस्य शालायां निवासंचक्रिरे तदा ॥ १२ ॥ नत्रभैक्ष्यसमाचारमत्रोहा
तीहनिमापिता: ॥ नानसंज्ञातास्तेषां वीरानत्रतिरेननरा: कचित ॥ १३ ॥ यज्ञसेनस्य कामस्तुपांडु
वायकिरीटिने ॥ कन्यादद्यामितिसदानचैतनदिदशकोलिस: ॥ १४ ॥ सोन्वेषमाण: कौन्तेयान्पांचालो
जनमेजय ॥ दृढं धनुरनानम्यं कारयामासभारत ॥ १५ ॥ यंत्रंवैहायसंचापिकारयामासकृत्रिमं
तेनयंत्रेणसहितंराजालक्ष्यंचकारस: ॥ १६ ॥
द
नसमविवेहायसमिन्यर्थ: ॥ श्रवशिवायामेकेनाननेमेववलदेपानननेकृतंश्रन: सएवचननलपं
यहानलदंनेमेस्मा तिनानाश्च निनदनेय तामां चं ~ दुपदेनकृत: यद्यपिकर्णोसापेन स्वकं ॥
नत्याधिहीनकश्चनानाइपरिद्दमितिभाव: ॥ १६ ॥

द्वंद्वयन्तः द्वंद्वचलद्वंद्वमेचकाणाः चलयन्ति हिंद्वायगुणपद्वंचकाणानलद्वेषः समर्थयतितया ॥
घमार्याममगिनी ममेयमिति ॥ द्वयोः संवेद्यः ओमचौर्काणैः ॥ १४ ॥ नान्यान्यानि ॥ १६ ॥ [illegible] यः ॥ ३

१८०

निः शालेन कलेन क्षिन पद्धद्धमो विपांपाने ॥ रामधोगानलय मेघागंभीरयानिम ॥ वाकम
चैनगागैद्वंस्य नामधवडनमं ॥ ११ ॥ द्वंद्वपन्तलेख मिमेचकाणाः पद्धवेनमेप्रपनपः समुनाः
हिंद्वेणगंत्रयमसमर्थयपंथ्यावैः क्षिनेर्नीमचौर्द्वेधार्योः ॥ एनन्महकमेकरोनि योवेकलेणंद्व
पाणवलेनगुलकः ॥ नयाघमार्याममगिनीममेयंकल्याम विश्रीनमघावदीमि ॥ १५ ॥ नानेवमक
द्वपद्मयगुत्रः पथ्याहिंदं नंममगिनीमवाच ॥ नामाचमेत्रेणचकमेणचसंकीर्तयनमि
पनीममेनान ॥ १५ ॥ इसाहिपवेणिद्वोपदीवणंवरे ॥ १८ ॥ पद्धदनावाच ॥ उर्वीयनोद्वविषद्वो
द्वमेवोः प्रथर्षणाः ॥ विविपुंनिविंकणिम्यमहेद्वः पापहनलया ॥ १ ॥ युग्मवांगुवेगद्युमी
मवेगारवलया ॥ उग्रागुपोननाकीचकरकागुविरोचनः ॥ २ ॥ कंडकभिन्नधनम्पवर्णाःक
नकधूनः ॥ नंदकोवाकुम्भलीचनकंडोविकटलया ॥ ३ ॥ एनेचान्येचवहवोयानिराधूमहाव
लाः ॥ कर्णेनमहिंनावीरामद्वंद्वसमपागनाः ॥ ४ ॥ असंख्येनामहानानः पार्थिवाः क्षत्रियर्ष
भाः ॥ शकुनिः सौबलश्चैववृषकोथबृहद्वलः ॥ ५ ॥ एनेगांधारराजस्यसुनाः सर्वेसमागनाः
अश्वत्थामाचभोजश्चसर्वशस्त्रभृतांवरौ ॥ ६ ॥

यीयनारपादिम्य   स्वार्थीयंथः ॥ [illegible] ॥ १५

२०॥ विमानेषु सप्तसु भिरहेषु विमानो योमयाने च सप्त यो निगरहे पिच मेदिनी ॥ २३ ॥ पगिल्ली ठेर्मेः प

स्रग्राम्यैः सप्तवक्त्रैरागरुतमवाश्रिते ॥ हूं सं श्र वर्गी वर्हु भिरापोजनन तं धिभिः ॥ २१ ॥ पसं
वाय पानह्रारैः श्रयनापान पोभिते ॥ वह्रयानभि नद्रोगोर्हिं मक्तिरवैगिच ॥ २२ ॥ नव नाना प्र
कारैश्च विमानेषु स्वलंकृताः ॥ एकैं मानाकृरान्यो नंनि येकुः सर्वे काश्चि वाः ॥ नजोपविशा न
हृष्टमेहा सप्तपाक मान ॥ गन्तसिंहानक्ष भाम्हसा गहु निभू चिन्तान ॥ २४ ॥ महापसादा
न्महापणान्वराभू गरियन्हिश्रेणः ॥ भियान्सर्वे स्त्रलोकस्य महकृतैः कमेभिः श्रमैः ॥ मंचेषु चपण
योषु योरजानयस्ताजनाः ॥ कसार्थ्रोनमिश्रषौं स्वेताः सप्तपाविपाने ॥ २५ ॥ ताहशे लोकेच महि
नाः योउवाः सप्तपाविपान ॥ वहिंपाचा लगन्सपाश्र धंनमला मव्रतमं ॥ २७ ॥ ननः सप्तमानो
वहकै सप्तजन्विवसान्वहून ॥ रन्नप्रदानवहूलः योभिनोनटनने कैः ॥ २८ ॥ वर्नेमानेनशमाने
नरमणीर्हि पोउपो ॥ प्राप्नुनानोपहवहना सर्वोभरणभूषिता ॥ २९ ॥ माला च सप्त पासाय कं
वनी सप्त स्वलंकृता ॥ अवनीर्णेनले वं गं ट्रौ पट्टी भवनर्थभ ॥ ३० ॥ शुयो हितः सोमकं नं मंत्रवित् ।
ब्राह्मणाः प्रविशि ॥ पीरिलौ पंजरहवाश्चिमादेन विधिवृन्द ॥ ३१ ॥ सनपेपिनावृत्तनेब्रासण
न्हलिवाच्च ॥ वारयामासस्वर्वाशिकाहिश्चालिसंमतनः ॥ ३२ ॥

विनस्रीमां ॥ २४ ॥ २९ ॥ ३२ ॥

कैरोवानतनिष्ठेवक्षलीपिंडारकस्तथा ॥ उष्णीनरश्चविक्रांतोहम्यद्येप्रकीर्तिताः ॥ २१ ॥ भगीरथोमहद्भद्रः सैंधवश्च जयद्रथः ॥ हृद्दृढोबाह्लिकश्च क्षलातृश्च महारथः ॥ २२ ॥ तलकंकेनवोराजा विंध्यगहस्त्रुमांगदौ ॥ वत्सराजश्च मतिमान्कौसलाधिपतिस्तथा ॥ २३ ॥ शिशुपालश्चविक्रांतो जरासंधस्तथैवच ॥ एतेचान्येचबहवोनानाजनपदेश्वराः ॥ २४ ॥ मदर्थं मामानामहे लक्षियाः अथितानामवि ॥ एतेमेनिमित्तविक्रांतानानाद्वीपेलव्यमतमं ॥ २५ ॥ विरोतयद्वंदवं वरयेथाः अयेयतं ॥ २६ ॥ इति श्रीमहाभारते आदिपर्वणि द्रौपदीस्वयंवरे ॥ वैशंपायन उवाच

तेलंकृताः कुंडलिनो युवानः परस्परं स्पर्धमाना नरेंद्राः ॥ अस्त्रं बलं चात्मनि मन्यमानाः सर्वे समुत्पेतुरहंकृतायाः ॥ १ ॥ रूपेण वीर्येण कुलेन चैव शीलेन वित्तेन च यौवनेन ॥ समिद्धदर्पा मदवेगभिन्ना मत्ताद्यथा हैमवता गजेंद्राः ॥ २ ॥ परस्परं स्पर्धया प्रेक्षमाणाः संकल्पजेनाभिपरिप्लुतांगाः ॥ कृष्णा ममैवेत्यभिभाषमाणा नृपासनेभ्यः सहसोपतस्थुः ॥ ३ ॥ ते क्षत्रिया रंगगताः समेता जिगीषमाणा द्रुपदात्मजां तां ॥ चकाशिरे पर्वतराजकन्यामुमां यथा देवगणाः समेताः ॥ ४ ॥ कंदर्पबाणाभिनिपीडितांगाः कृष्णागतेनहृदयैर्नरेंद्राः ॥ रंगावतीर्णा द्रुपदात्मजार्थं द्वेषं प्रचक्रुः सुहृदोपि तत्र ॥ ५ ॥ राम ॥

320

१११

समवेतोमहानामानीलस्तैर्थमसमन्वलंकृतो ॥ सहदेवोमणिमांश्चैवदंडधारश्चपार्थिवः ॥ सहदे
वतनयश्चैवमेघसंधिश्चपार्थिवः ॥ निधारः सहपुत्राभ्यांपंचालैनैवोत्तमौजाच ॥ २॥ वार्धक्षेमिः
सुपार्श्वश्चसेनाबिंदुश्चपार्थिवः ॥ सकेतः सहपुत्रेणसुनाम्नाचसवर्चसा ॥ २॥ सचित्रः सुकुं
मारश्चवृकः सत्यधृतिस्तथा ॥ सूर्यध्वजोरोचमानोनीलः चित्रायुधस्तथा ॥ २॥ अंशुमांश्चे
कितानश्चश्रेणिमांश्चमहाबलः ॥ समुद्रसेनपुत्रश्चचंद्रसेनः प्रतापवान् ॥ २२॥ जलसंघः
पितापुत्रौविदंडोदंडएवच ॥ पौंड्रकोवासुदेवश्चभगदत्तश्चवीर्यवान् ॥ २३॥ कलिंगस्ताम्र
लिप्तश्चपत्तनाधिपतिस्तथा ॥ मद्रराजस्तथाशल्यः सहपुत्रोमहारथः ॥ २४॥ रुक्मांगदेनवी
रेणतथारुक्मरथेनच ॥ कौरव्यः सोमदत्तश्चपुत्राश्चास्यमहारथः ॥ २५॥ समवेतास्त्रयः शूरा
भूरिर्भूरिश्रवाः शलः ॥ सुदक्षिणश्चकांबोजोदृढधन्वाचपौरवः ॥ २६॥ बृहद्बलः सुषेणश्च
शिबिरौशीनरस्तथा ॥ पटच्चरनिहंताचकारूषाधिपतिस्तथा ॥ २७॥ संकर्षणोवासु
देवोरौक्मिणेयश्चवीर्यवान् ॥ सांबश्चचारुदेष्णश्चप्राद्युम्निः सगदस्तथा ॥ २८॥
अक्रूरः सात्यकिश्चैवउद्धवश्चमहामतिः ॥ कृतवर्माचहार्दिक्यः पृथु
विपृथुरेवच ॥ २९॥ विदूरथश्चकंकश्चशंकुश्चसगवेषणः ॥ आ
शावहोऽनिरुद्धश्चशमीकः सारिमेजयः ॥ ३०॥

२०॥ संहननोपपन्नं शुभसंस्थानं कारयित्वा तत्रकं स्फुरत्नानामपि नः असमसमर्थां तत्र कपालिः सत्कोटिनया श्र
न एव विदिशं समाणोः दृष्ट्वेन वीरा — पनपापनः कोप्याथामसयां वभूव रितिर्द्वयोः संवंधः॥२५॥ चक्र

ननरत्नेन पत्तनगणोः क्रमेणोत्कृष्टानि मितं कृतनविक्रमाश्च॥ सकलोके यो पत्तनसालया त
द्वेणाणायनिष्क्रामश्च मनीश्चवक्रा॥२६॥ कालिंगाभंगाधिपवांगपोंड्रविदेहराजो पत्तनाधिपश्च॥
अन्येचनानान्यपत्तनपौत्राग्राणाधिपकाः पंकजपत्रनेत्राः॥२७॥ किरीटहारांगदचक्रवालैर्विभू
षितांगाः पृथुवाहुवलेः॥ अनंतकर्मविक्रमसमनमनः च लेन वीर्यं तच वर्धमानाः॥२८॥ तत्र
कार्मिकं संहननोपपन्नं सर्वं तत्पोक्रमेन साधिकर्तं॥ तेविक्रमेनः स्फुरत्नाद्वेन विविधमा
णोपन्नाने रहाः॥२९॥ विचेष्टमानाय पत्तनेष्वः यथावलं शौर्यमणोक्रमाश्च॥ ताते
जसः सलकिरीटहारा विनिश्चमंतः पाममपावभूवः॥३०॥ हाराकृतं तस्तनपादृदेनवि
सल्हारांगदचक्रवालैः॥ कृष्णानि मितं विनिद्रूनकामं पत्तनदामंडलमार्तमासीत॥३१॥ स
वारूपांसान्यसमसीत्यकर्णोपनपंगणोप्रवरोजगाम॥ उद्दृत्य तत्कोपनदृयंतं तत्संचच
काराष्ट्रप्रयोगवाणान॥३२॥ दृष्ट्वा हैतंसमेनिरिपंडुपुत्रामिलानीतं लक्ष्यवांपरापां॥ पनर्थे
णगणाकृतप्रतिरूपमन्यप्रिसोमार्कसद्ध्यार्कपुत्रे॥३३॥ दृष्ट्वा ननतनद्रौपदीवामसद्वैजेयारुना
हैवरयामिरुतं॥ सामर्थ्यहारांप्रसमीत्यकर्णेनपाजकर्णोः स्फुरितंपनत्रलम॥३४॥ तं

वालंमंडलं॥३५॥ सामर्थ्यहारांसनीचक्रलयोगारमर्थैः सर्व्योणपायजनाहासः॥ २५॥ २२॥ २३॥

२१८ ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ९ ॥ [illegible] ॥ २७ ॥ तथै

[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ वि
[illegible] ॥ [illegible] ॥
[illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible] रिति भावः ॥ २५ ॥ विमानसंस्थानं विमानसं

दर्पान्न गर्वान्न दर्पान्न रोषान्न व्याजान्न चापलान्न अनवस्थितत्वान्न ॥ ९ ॥ लोकेषु ब्रह्मलोकान्तेषु लक्ष्यपुरु
षेषु संख्यानचारिषु देवासुरगन्धर्वयक्षरक्षस्सु न कर्मन विघ्नेषु ब्राह्मणानामसमाप्य ॥ १० ॥ महत्त्वं

अब्रह्मण्याम विंध्यं निजाग्रह्य कर्णः सर्वयज्ञस ॥ कर्मण्यस्मिन्नहं मिहेडे चापलाद्यपरीक्षितो ॥ ६ ॥
यथेष्टदर्पात्स्वधर्मस्थाप्य ब्राह्मणाचापलान ॥ अनवस्थितो यन्न पालने वार्धनं ताम्रायु मार्गमन ॥ ७ ॥
ब्रा ॰ ण ॰ चुः ॥ ना अब्रह्मण्याम विध्यामो न चलाधव मास्थितः ॥ नच विहितमितां लोकेनामि
थ्यामोमहीहितं ॥ ८ ॥ किंचिदाकृष्यवामीमान्यागयानकरोपमः ॥ पीमलं योहवाकृत्यर्थे यथेण
हिमवानिव ॥ ९ ॥ सिंहलोकेतिगतिः श्रीमान्मननागेन्द्रविक्रमः ॥ संभाव्य महिन्न कर्मेदं मत्स्वा ह
स्वानमोदते ॥ १ ॥ पालिरस्य महेन्द्रस्य द्विनस्याप्राक्रः स्वयंब्रजेन ॥ न च न द्विपने किंचिकर्मलो
केषु पञ्चवेन ॥ २ ॥ ब्राह्मणानामसमाप्यं चन्द्रसंख्यानचारिषु ॥ ३ ॥ अद्भवाचाप्य सवाप्य फलाद
राहदत्तनाम ॥ ४ ॥ कवेला अपि विप्राहिविद्वीर्याः सः स्वतेजसा ॥ ५ ॥ ब्राह्मणेनावमंतव्यः सदृशहा प्र
माचरन् ॥ ६ ॥ स्वकेक्तः स्वं महत्त्वं कर्म यत्समयायातं ॥ जामदग्न्येन रामेण निर्जिताः क्षत्रियाम्बु
धि ॥ ७ ॥ पीतं समुद्रेगाहम्येन स्मागायोब्रह्मतेजसा ॥ ८ ॥ तस्मात्कुर्वंत सर्वे त्वत्तु रक्षयन्त्रसहात ॥ स्मा
रोपयन्नश्चीस्त्रवैतथ्यस्तु त्वहिंसकेभाः ॥ ९ ॥

महदपि लघ्वं भवति यत्रतत्कर्म ॥ ११ ॥ न देवो राहरनि जामदग्न्येनेति ॥ १२ ॥ ब्राह्मणा एव चमा त्वब्रा
ह्मणामपि महत्कर्मकर्तुं प्रामानस्यमिप्रेत्य सर्वे येक मयमाहुः तस्मादिति ॥ १३ ॥

यन्नरागद्वेषमानाः परीक्ष्यमाणाः देवर्षीणां यन्नेश्वराः ॥२२॥ अध्यात्मसमाधिं ॥२३॥ यन्न पापात्मकं मायया

एवं नेमिनिः नेमुनिवेदविदां श्रेष्ठः समं ननः ॥ चेदीनामधिपो वीरो नववर्णानां तत्त्वकोविदः ॥२४॥ दमघो
षसुतो वीरः शिशुपालो महामतिः ॥ यन्न रागद्वेषमानान्नज्ञानं ध्यानमानसं नमः ॥२५॥ ततो रा
जा महावीर्यो नराणां योमहाबलः ॥ यन्न योगमाया समायानमन्यत्र स्थितो हिरिरिवाचलः ॥२६॥ यन्न पापी
शमान नलं ज्ञानं ध्यानमानसं नमः ॥ ततः श्यामवर्णस्सुरारिः पूज्यपूर्वमभिजगाम वान् ॥२७॥ ततः परमो
महावीर्यो महाबलः ॥ तद्व्याप्य मायामलं ज्ञानं ध्यानमानसं नमः ॥२८॥ न शिलासंस्थान
ज्ञानेश्वरमात्मनेनिविशन्वाहेशु ज्ञानायियेषु ॥ कंलीलानो निर्विशेषकं नेमकं यन्न लक्ष्यं प्रवी
रः ॥२९॥ इत्यादिपर्वणि दोपदीस्वयंवरे ॥ वैशंपायन उवाच ॥ ततो निशम्यराजानोपनृपः स
र्वकर्मणः ॥ अथो इतिसुहृदिः प्राणमयासितिस्यहृदाप्रीः ॥ शुद्रको यत्निश्रमस्याविगुन्वेनो
त्तिनानिच ॥ इत्युक्तं संग्रहाय्या त्वं शाखिनू केन समप्रभं ॥ केचिदाहानिमिनपुः केचिदाहस
नाहानि तानि ॥ आह कुपतयाश्च केचित्रिगुणद्धित्रीतिनः ॥ एकतो पत्र्यस्यमतवेः तत्रियो हो
कविप्रकृतेः ॥ नानलनेवलवद्धिहिंयनयेदपरायत्तो ॥ तत्कामंतन कृताय एतस्मात्तो दुर्यलीय
सा ॥ बहुसायोगणपातकं हि समंकनं यन्न हि जाः ॥ २॥

न ॥ २७ ॥ ... ममाणाः सत्वीकर्म्मनिमित्तन्

१९ निर्विशन्वाहेशु ज्ञानक्रतयन्न तद्यमनकथेशु ॥ २१ ॥ अध्यायः ॥ यद्दानिसरजनः ॥ १ प्राणयनः पाकि
नः ॥ २ ॥ २ ॥

१८२

पुत्रस्य यंती उन्नमयति लाम्यादस्यं तगर्भं कुर्वंती ॥२५॥ अध्यायः ॥ नरसिंहस्तुति ॥२॥ अवरोधेनप्रयाग्ज्ञायोञ

१०३

न किंचित्प्राप्नोमहं ति पुत्रहेतुं पितृप्रियो धर्मस्थतां वरिष्ठः ॥ आवापमेवो पत्नगामप्रीतं स्वार्थे यमा
ययांपुहस्तोनमायां ॥२६॥ विहंगलेलसंपूर्णमी स्त्रक्ष्मापायं च शोक प्रतिमं निरीक्ष्य ॥ आवाय
भक्तोवरमाल्यदामनगामसक्तो मनमस्मायंती ॥२७॥ सतामयारायविजित्यरोगो हि जाति
भिन्नोरभि एकमानः ॥ यंगानिरक्तामदचिंत्यकर्मा पल्मानयाचाप्यनगम्यमानः ॥२८॥ ऋषि
पर्णादिपदीश्य यद्वै ॥ वैशंपायनः ॥ वाच ॥ नत्वैविदित्वा निकन्यांनवाक्ष्यराणायनरूपे ॥ कोप
प्रासीन्महीपानामा लोकान्योन्यमंति कालं ॥१॥ प्रस्यान्नयमनिक्रम्यनत्वी कृत्यवसंगनान्
हान्मिद्धतिविप्राय ह्रेपदीयो पिनांवरां ॥२॥ अवरोधे हृहृदंतफलकाले निपात्यते ॥ निहन्से
नंडगमानं योपमस्यातनमन्यते ॥३॥ न हार्हस्येव मन्मानेनापि वृद्धकर्मगुणैः ॥ हन्मेनमहद
त्रेणाङ्गचारं त्स्यहितं ॥४॥ अयं हि समर्थान आहूयमन्कृत्यवनगणिपान ॥ गुणावज्ञोनपिता
न्तंनतः पश्चाल्ल मन्यते ॥५॥ अभिज्ञानसमा वायेहेवानामिवमंतये ॥ किमयं सहशं कंचि
त्पतिने वहप्रवान ॥६॥ न च विशेषु पिकारोविघ्नेवरणं प्रति ॥ स्वयंवरः क्षत्रियाणामितीयं
प्रथिताश्रुतिः ॥७॥ अथवायदिकस्येयंन चकिंचिद्विकुमहति ॥ अग्राचेनापरिक्षियायामयाप्या
क्षिपार्थिवाः ॥८॥

पंहीनिशवहिनस्थोकेन ॥ १ ॥ ८ ॥

२६॥ यो ध्येयः कर्त्ता॥ २९॥ चिदायुः चिन्मयो ज्ञानवृद्धिश्च निर्बंधनः चिल्लक्षिताः चिरसंस्थाल्लिनेहूल्लिप्यैवांते
नयाभूताः प्राज्ञवलस्तेयाविनाकृताचा॥ ३३॥ ध्यानमनेनानिश्चंगानि नांतोगुल्लिदेडयनर्थीवक्रा

एवंनेयांविलयनांविप्राणोविविधा गिरः॥ यज्ञोनोयन्नयोभावेन स्थैर्यगिरिविवाचसः॥ ३६॥
मानदृनः परिक्रम्य प्रदक्षिणमथाकरोत्॥ प्रणम्य शिरसा देवमीप्या नेवरेदप्रभे॥ ३७॥ कृतांच
मनसा कृतानात देवानेनो यन्त॥ यन्यार्थि चेत् किंतनोध्यवक्षैराधेयदवौयन्न च एप्रथा
लोः॥ नयायनवेदप्रैनैपिद्वेः कृतं न संपमहूनो पिपल्लान॥ ३८॥ नरदेनोवीर्थवनां सदर्थ
न्त्वैर्हिरिं द्यावनप्रभाव॥ सर्वे च चक्रे निमिषांनरे प्राप्तमथाद्ददप्रकर्षसंस्थान॥ ३९॥ विभा
यलंदनिपयानन तत्क्षिरेणाममोसहसा निविष्ट॥ ननोनाविदेवचवभवनाटः समाजमथ्येच
महानिनादः॥ ४०॥ तुष्यानिदिक्षानिवर्वधदेवः पावोस्मद्भिप्रिविनांनिहंत॥ चेतानिविश्वा
गुलजसाहायाणप्रसहस्रथाः॥ ४१॥ विलाहितान्नान प्रकृतेंहकाषांप्रसवेषाः॥ व्यपनेष्पात्रन
मसः समंतात्प्रयाहएराः॥ ४२॥ पाणांतानिचलसाँविवादकाः समवादकाः॥ हनमानायसंवा
श्यायालवंलत्रमसलराः॥ ४३॥ नरद्दाडुपरः षीतोवभवतिप्रहदनः॥ सदहैनाप्यपार्थेयस्ता
ह्यार्थे निविष्ठः॥ ४४॥

निवारनोपायायेवांतानि श्रृंगांगोनांतिकेपायप्रनीकेन्निलिविश्वः॥ ४५॥ साहाय्यार्थेद्वेपयलाभा

२०॥ घोषणानामा ॥ २१॥ कार्त्तिकेयाविनायम्‌ नोयमा ॥ २४ ॥ अध्यायः ॥ अजिनानि ॥ २।२।३॥ अङ्कावामंप

१८४

यच्च चक्रिरेऽर्थं मत्रैलयामासीमहत्कृतः कर्षतिनालमात्रं ॥ १९ ॥ एषोऽर्जुनोनाञविवार्यमसित्यघक्षि
रंकर्षणगावाहदेवः ॥ २० ॥ पुत्रोघहतंनरसुमवमदत्यारानिकारेमदः सा अहृतः ॥ द्वकोदृगात्राम्य
द्देनरयकर्णेसमर्थः समरेच्छियित्राः ॥ २१ ॥ योसौ पुरलोन्कमसाय मावसलनमेहासिंहनाति वि
नीनः ॥ गोरः सलंचोज्वलचाह चोणोविनिःसृतः सोऽच्युतयमेष्टुत्रः ॥ २२ ॥ यो लोकमायाविवका
र्निकेयो द्वाविंशेनेयाविनिमेविलकं ॥ मकाह्लिनसमान्तुनवेषमलाहान्मयाकृताःपांडुसुताः
पृथाच ॥ २३ ॥ नसुरवीरिंजलनोयदामोहलायुधोनलरत्नप्रतीतः ॥ सीतोपिसिरुद्धा हिपिनेवसा
र्छश्यांविमकाससहकोरवाश्चैः ॥ २४ ॥ यु नादि य लेमिट्ठोय द्वीमवयं द रे ॥ वेश्चं या प नःवाच ॥ अ
जिनानि विपुल्वनः करकाग्रहिजंभाः ॥ कच्छलेभीर्नकनेसावयंयानसमहेयान् ॥ २॥ ना
नेवंवरलोविप्रानर्जनः प्रहसन्निव ॥ उवाचप्रेक्षकामन्नापूयनिष्टयमार्षनः ॥ २॥ अहमेतना
नजिग्मार्थेः पानकोविकर्ताद्वैः ॥ वासयिष्यामिमं कृष्णामंत्रेगणिविषानिच ॥ २॥ इतिनष्ठन
गानमयाङ्कावानमहावलः ॥ भ्रातामीमेनसहितनहस्योगिरिविवाचलः ॥ ननकुलसहदेवो
नृष्ट्वात्रियाम्प्रुडुरुमहात ॥ संपेननरमीनोलौगजेप्रनिजानिव ॥ ५ ॥

सं.भा. आ.प. ३१९

अ॰

324

३१९

९॥ संज्ञासानज्ञासंसाध्के येनसर्वं सर्वेनप्रोदिनिश्चंकोभ्यानभयात्॥ ५॥९॥

ज्ञापदालोकविंचापत्पालोभाक्त्राकनचानिर्दं॥ विधिचंपार्श्चिरेदत्वानेप्तवथः कथंचन॥९॥
ज्ञास्यापाश्चें हिनोत्तसंज्ञीविनेहिवस्त्रनिव॥ पुत्रपौत्रेचुयत्यान्यहृस्साकेविधानेयनं॥१०॥ श्रवमा
नभयाश्चेवसत्थभिस्यचरत्पणन॥ स्वयंवरणमन्येवामाभदेवविधानानितिः॥११॥ तस्मात्पान्
प्पार्द्रेताः हताः पतिव्रताहवः॥ कृपदेनलिखंतासंतः सात्त्वपाः समपादवन॥१२॥ नान्तरहीतसा
चापाकुशानापनलोचहन॥ कुपदोवीरसंज्ञासानज्ञाहपांण्लाणकेताम॥१३॥ वीरानाययतनसो
लप्रभिज्ञानिवचाल्गान॥ पांडुपुत्रेमहेषासोप्रतिपाननाविंदमो॥१४॥ ततः समन्येनहदायुधा
लोमहीविनीवस्त्रतोयानलि [illegible] नाः॥ निर्गतामामनाः कृष्णनजप्रावमधिपंतोजनभीमसेनो
ननलभीमोद्गनभीमकर्मामहावलोरवसमानसमाः॥ द्वन्यान्दुदोर्भ्यांदुमसेकसीतेतिःपत्र
यामासयचापाग्नेद्रः॥१६॥ ततस्तमाद्रायाग्निपुत्रमाथींद्रीवद्देडिनरापाकुत्॥ नकुलोसहभीमेपु
हत्वभिमस्यापाकोस्याभीमः एपुत्रदीर्घवाहुः॥१७॥ ततोरूपकर्मानिमनयाचुद्दिजिसः सहभाानर
विरूपकर्मा॥ विविधिश्रियेवातिमयंविदायनश्चोपनसंहामहेद्रकर्मा॥१८॥ ततोरूपकर्मानिम
नुष्याबुद्दिजिसः सहभाानरविरूपकर्मा॥ तस्मोदनेश्चानरामध्रवीर्येहत्वापुपंचाक्रमिदंवभा
हे॥१९॥

मस्तेनांगस्यानमो ग्रनिग्रहणे ॥ २९ ॥ तेनोद्धेवांगस्यांगनिवापस्थानेवतनं पृष्ठकं नीरे लिकासायका
ननेरनिमेदिनी ॥ ३१ ॥ आकर्षणं दूरे नोदनं आकर्षणमर्वाक्कर्षणं अभिमुखमास्फालनं विकर्षणं

आलम्बयक्षाहनार्थं हि बाहू वीर्यसमाश्रितः ॥ विग्रहं यं विधायेदं मन्ये मां प्रतिगृह्यसे ॥ ३२ ॥ न
हि मामाहवे क्रुद्धमन्यः साक्षाच्छचीपतेः ॥ पुमानन्यो यथा विनं पाण्डवात्पाण्डुबाहुः किरीटिनः ॥ ३३ ॥ त
मेवंवादिनं तत्र फाल्गुनः प्रत्यभाषत ॥ नास्मि कर्ण धनुर्वेदो नास्मि रामः प्रतापवान् ॥ ३४ ॥
ब्राह्मणोऽस्मि युधां श्रेष्ठः सर्वशस्त्रभृतां वरः ॥ ब्राह्मे पौरंदरे चास्त्रे निष्ठितो गुरुशासनात् ॥ ३५ ॥
स्थितोऽस्म्यद्य रणे जेतुं त्वां वै वीर स्थिरो भव ॥ वैशंपायन उवाच ॥ एवमुक्तस्तु राधेयो युद्धात्कर्णो
न्यवर्तत ॥ ब्राह्मं तेजस्तदाजय्यं मन्यमानो महारथः ॥ ३६ ॥ अपरस्मिन्वनोद्देशे वीरौ शल्यवृ
कोदरौ ॥ बलिनौ युद्धसंपन्नौ विद्यया च बलेन च ॥ ३७ ॥ अन्योन्यमाह्वयन्तौ तौ मत्ताविव महाग
जौ ॥ मुष्टिभिर्जानुभिश्चैव निघ्नन्ताविति तेनतुः ॥ ३८ ॥ प्रकर्षणाकर्षणयोरभ्याकर्षविकर्षणैः ॥
आचकर्षतुरन्योन्यं मुष्टिभिश्चापि जघ्नतुः ॥ ३९ ॥ ततश्चटचटाशब्दः सुघोरो ह्यभवत्तयोः ॥ पा
षाणसंपातनिभैः प्रहारैरभिजघ्नतुः ॥ ४० ॥ मुहूर्तं तौ तदान्योन्यं समरे पर्यकर्षताम् ॥ ततो भी
मः समुत्क्षिप्य बाहुभ्यां शल्यमाहवे ॥ अपातयत्कुरुश्रेष्ठो ब्राह्मणा जहसुस्तदा ॥ ४१ ॥ तत्राश्च
र्यं भीमसेनश्चकार पुरुषर्षभः ॥ यच्छल्यं पातितं भूमौ नावधीद्बलिनं बली ॥ ४२ ॥

दूरे नोदनं आकर्षणमर्वाक्कर्षणं अभिमुखमास्फालनं विकर्षणं तिर्यक्कालनं ॥ ३९ ॥ समुत्क्षिप्य

32S

८॥ विलिनांशिलौ विलिनीयवन्तौ ॥ २२ ॥ स्वरार्थं वद्विवचनैः स्वरार्थवचनैः ॥ २३ ॥ प्रतिहन्त्र

ऋचुश्च वाचः ग्रहणात्सोऽयनात्नो यु ग्रन्थचः ॥ स्वाहदेहि द्विजस्यापिवयोहलोपग्रन्थतः ॥ ६ ॥ इ
त्येवमन्त्रा यानानः सहस्रानुदुदिहि ज्ञानन ॥ ननः कर्णमिवहानेनाश्निस्यप्रतियशोरणो ॥ ७ ॥ ग्रहा
र्थीवाशिना हेतोर्गतंश्च निगतंयया ॥ भीमसेनेनयशोषाल्येमन्त्रागमीश्वरोवलौ ॥ ८ ॥ दुर्योध
नादयः सर्वे ज्ञाताशैः सहस्रंगतानः ॥ सह एवं समयात्मेनपन्त्रपश्चलदान्हवे ॥ ९ ॥ ननोर्जिनः प्र
त्यविपश्चल्यनेनयिनैः पारैः ॥ कर्णोवैकर्तनंश्रीमान्विकृष्य चलचटनः ॥ १० ॥ नेषांपापराणांवे
रोनशिनानां निगमनेनसंगा ॥ विमुखमानेनराधेयोपलानमनयावनि ॥ ११ ॥ नावभावप्यनिर्दे
वयोलावचञ्चयनांवपो ॥ पात्रुयोनास्तसंख्याचमोक्षविजिगीषिणौ ॥ १२ ॥ कृतेप्रतिकृते
चपुपापप्यचाद्वचलंचमे ॥ दृष्टिस्वरार्थवचनैरभावेतांपरस्परं ॥ १३ ॥ ननोर्जिनस्यभञ्जयोवी
र्यस्पप्रतिमंभवि ॥ नान्यावैकर्तनः कार्णिः संख्याः समयोययन ॥ १४ ॥ प्रदर्शनेनप्रशुनंसा
न्यापान्येगवनः नदा ॥ प्रतिहस्तननादोषैः सेप्सानिनदप्रजयन ॥ १५ ॥ कर्णोऽवान प्यामिनेवि
प्रसञ्चभञ्जवीर्यश्चसंयुगे ॥ प्रविपार्थचैकस्यपाशापविजयस्यच ॥ १६ ॥ किंनसाकाद
त्वैदेयनमेवाविप्रसनमा ॥ अयमाताद्दिहयः सारहविसरव्यपः ॥ १७ ॥

तिहन्त्रवारुणेतिपदेननाशिकलोपाभावात्ननननप्रतिहन्तने ॥ १५ ॥ १७ ॥

वर्ष॥ श्रुमिगच्छति उपस्थिते सति॥ ५०॥ ५१॥ मार्गे वेदे ध्रमकं लालयद्दं॥ ५३॥ अध्यायः॥ गतान॥ २०५

१८५

ब्राह्मणैश्च प्रतिष्ठन्तो गौरवाणि नवाभिभिः॥ कृष्णेप्राणसमानलोनभीमसेनयतेजयो॥ ५०॥ विमनेतेजनने काथाच्छन्नभिः परिविह्वलो॥ कृष्णयाननगतोनवन्दवीरौ तो विजेजतः॥ ५१॥ यो तिमाय्योघ्नेमर्नो चेहुरूर्या विवोदितो॥ नेधामानावक्रविधं विनाशं पर्यचिंतयन्॥ ५२॥ अ नागच्छन्नगुत्रे श्रुमे रुष्णालेभिगच्छति॥ यानेरामेहैनानग्नविनाय कृष्णहृग्गवाः॥ ५३॥ मा यानिलेर्वारवेत्यभिः स्वर्णौ द्विवेरिभिः॥ विपरीतेमतंज्ञात्वा आत्मस्थाभिमहात्मनः॥ ५४॥ इ त्येवं चिंतयामास मृतनस्नेहात्विनाशया॥ ततः स्मतजनकोष्ठे ह्रदिने सेचसंहतो॥ ५५॥ महा त्वथापराहेतवने: स्वर्धिरात्रहन॥ ब्राह्मणैः प्रविष्टानन्नजितस्वर्भगौवदेवसतन्॥ ५६॥ इ ताः दिपर्वणि द्रौपदीहरणे पर्वणि॥ वैशंपायन उवाच॥ गतानंतो भार्गवकर्मपाशानपार्थेष ष्ठांप्राप्य महात्मा भावो॥ तोधार्तसेनीपरमप्रतीतोभिर्वे त्वथावेद्यतांतनरामेघो॥ १॥ क ही गतना ह्यानने वेद्धस्थम्भौ प्रोवाच मंजके निवसमेस्म सर्वे॥ पश्चाच्च कौंतीप्रसमीक्ष्य कृष्णां क ष्टमयामाषितमित्युवाच॥ सायर्मभीतापरिचिंतयंतो तायात्तसेनीपरमप्रतीता॥ पा ण्डोरहीतोपजनामकौंतीयुधिष्ठिरं वाक्यमुवाच चेदम्॥ ३॥

326

१२०

२९ ॥ ११ ॥ अवहायोग्रहान्त्रिवेर्गेन ॥ १४ ॥ साधारणा या अयोनि संधि राधे: अथ वाक्कालानन्तरे अपलाप ॥ १५ ॥

यानिने भीमसेनेन पालो वकः [illegible] वधं किते ॥ पुंकिनाः सर्वरजानः परिवत्रुहीकोदरं ॥ १६ ॥ कच
ग्रहकिनालन्त्रसाधुमिसोचारहरणसंभौ ॥ विनायेनेलंकनन्मानोकनिवासोनथेवच ॥ १७ ॥ कोहि
तायापानकयां नालंकोयोधयिनंरणे ॥ अन्यत्ररामकृष्णाभ्यां उवाहकिरीटिन ॥ १८ ॥ कृष्णाह
देवकीपुत्रान्कृष्णाद्यपिपृथग्जनः ॥ कोनाद्ययोधयन्तेषामकः प्रतियोधयितुंरणे ॥ १९ ॥ नचैवमह
पितृनिंपस्यवलवतांवरं ॥ वचनं देवानृते वीरा संदवाहकोदरान ॥ २० ॥ वीरादुर्योधनाह
नः पाकः पानयितुंरणे ॥ कियत्तामनवहांगेलाघवहद्गृहसंलनान ॥ २१ ॥ ग्रासजन्हि सदा
दृत्ताः साधारणायाविनिहता ॥ अथैवान्यत्र भोहपुनर्यामस्तामहदृवचन ॥ २२ ॥ तांसजवाकादिनः
कायवतायायाविनिहता ॥ अथैवानवलासंपहतनयां सर्वामहदृवलीन समी कारिनीश्वरान्
अथ्यान्यागुरहस्याग्रायिकृतानकसंयुगो ॥ २३ ॥ वैशं पा यन उवाच ॥ नकर्मभीमस्य समीरव
कृषः कंसो हनीनो परिशोकमानः ॥ निवायामाहमहीपतीलानार्गराजवेनननीय
सर्वान ॥ २४ ॥ एवंतेविनिहतानालपृद्वपहृविपुलाःदाः ॥ ययावाहसंयुगः सुवैविसिनाराजसन
मा: ॥ २५ ॥ हतोनशत्रोनयोगाः यावालीश्रान्तोहिता ॥ इतिश्रुवेनः प्रयुयंतनागहनमाना ना: ॥ २६ ॥

संयुगोनकर्मीकृतानलोभनानिविनिर्योधः ॥ २७ ॥ वाहनायहणनानि: उनंतनकुंयहिलनवहोन
ः ॥ २८ ॥

म॰ भा॰
भी॰ प॰
३१८

327

१॥ मेरुमध्ये यस्य द्वीपदीन तस्येन तेषां ज्ञ वः सुरितिनिमेदः॥२६॥ ते हि लोये व ल दे वः॥२७॥ २२॥

पं

नेषां न ह्योपदेशे हृष्टाः सर्वे कामम भितो ज्ञ सं॥ संप्रम श्रेष्ठ हिय प्राप्तं प्राज्ञ सामीन्मनो भवः॥२३॥
कामं हि हि यं चा स्या विधात्रा विहितं स्वयं॥ वमन वाधिक मन्यामः सर्व भूत मनो हरं॥२४॥
तेषां मा कार्य यमितः कं नीत्र योत्र पि हिरः॥ द्वैपायन वचः कृत्वं सत्या रमन तं धमः॥२५॥
श्रुत्वा वीर्य हितान्या तत्मिथो मेरु मयान्वयः॥ सर्वेषां द्वीप दीप्ता यीम विष्णुनि हितः शुभा॥२६॥
वैशंपायन उवाच॥ श्वानं धीच ला [illegible] तम मी त्व सर्वे श्रेष्ठ स्थाने तेनयान्तदानी॥ तमे
वार्थी श्वाय मानाना मनोभिः सर्वे वने नस्थुरदीन सत्त्वाः॥२०॥ हृ स्मि प्रवीर स्त्र कं हत प्रवीरा नाथं
समानः सह यौ हि तोय॥ नगा मनं भागी वक मे पानं यत्र सने ने गुरु षप्रवीराः॥२१॥ न
वोप विष्ट पत्रु दीर्घ बाहुं दद र्षी कृष्णः सह यौ हि तोयः॥ अज्ञान पाण्डुपरि वार्य तं नाथ पाण्डु यो
यविष्टा ज्ञ वलन प्रकाशान॥२१॥ ततो ब्रवी द्वा सुदेवो धमिन स्य कं तो मनं य मि स्मरं ता वहिः॥
कष्टोऽ हृ मस्मी जि नि पी मृग पादे गुपि हि र स्यात मीठ स्यातः॥२०॥ तथैव तस्यां पुनरो हि
तोयः नैव वापि हृष्टाः क्र र वो भ्यनं दन॥ पितृ वत्र सञ्जा पि यद्ग प्रवीरा व सहू तो भारत मुख्य
यादौ॥२२॥ प्रत्या न पात्र स्ये कृत प्रवीरः पद्मश्र कृ संकृ पालं विलोक्य॥ कथं व यं वा सदेव
तये हग द्वा व संतो विहिता सुसर्वे॥२२॥

३१८

श्रयमाँ वद्द भरेनाहृपः॥ विप्रमेवनेनाधर्मेण निर्धनो नौ पुनः पुनर्विशेषधर्मेण॥२ ॥१॥ नयमाँ

ॐ सूत उवाच॥ श्रुत्वेन कन्यां दुपदस्य राजा तं लब्धवान् नाम्नां मतिसंनिरूद्धा॥ युधो चिंतपुत्रमया
पिचोनं समेत्यमं नं निनपद्मा मासान॥४॥ महाकर्णनान्तनमनं मध्यमवेन्दुहृत्यगणनमसमथ
वीहि॥ पंचालराजस्य सनामधर्मोन चोपवर्तैननविप्रमेव॥५॥ वैशंपायन उवाच॥ सपंच
मनोमतिमान्द्रवीरो मा जामहृ नैनवचिंतयता॥ ॐ नीसमा भ्रातृस कृष्णवीर्योपनेजयंवा
कामिदंवभाषे॥६॥ नयानिनाफलान यानसेनीनरोषेव पांमिथ्य निरतनपत्री॥ सन्त्वान्यनाम
क्षिपमित्रमाहृरकलत्रपाति विधिवत्सनसमर्पणाः॥७॥ श्रीकृष्ण उवाच॥ मातांनवैरूनमस्यधर्मभार्या
कृष्णानयमाँ यमसिद्ध हृदः॥ भवान्निवेषणः स्वयमंननौधं भीमोमहृनाकुरचिंतयकर्म॥८॥
श्रुहृननोनकलैननरोमेषमनास्वंमहृदेवजनारली हृकोटरोहेचयमोच राजन्निर्यं चवकन्या
भवनोनिषेत्या॥९॥ पंचाननेयनकर्णयमनमयधर्मयचाप्नेकृहृनहिचिंतय॥ पंचालराजस्य
हिलचयत्यात्मप्राप्तिसर्वेसमयशोहि नाहि॥१०॥ वैशंपायन उवाच॥ निशोर्वचनमातायभ
क्षिलोहमसन्निनं॥ हहिनिवेपापासामासः पांचालं पांडुनेवदनाः॥११॥ हहानेनत्रयषं नीम
वैकृष्णायमाहिनी॥ संप्रेदा नोन्यमासीना हृदयेस्नासयायवन॥१२॥

यंहृषः श्रयंकः श्रमान॥ भवान॥ श्रपिहसाहिनवानिवेषणः विवाहः॥१२॥

संहननोपपन्नः २८ः शुश्रूषा ॥६॥ साधु विशंकमाना स्वस्थ श्रेयसस्य श्रेयसस्के यं नीशं कात्रासे
विनकैश्चेति मे हिनी ॥७॥ अगारेणैव यान्मानाभि विजानां ह्वदिंगां अभितः सर्वेषि हितागाहितः

अर्थं न मीमांसे चतुर्दे हिमद्रे ययप्रनागार्थमनस्य हृदयः ॥ गोरो शुवां संहननो पपन्न एषो हि
वीरो वह्नभवन्नेदेव ॥ ९ ॥ सा हि सूनुपेवजनगत्पुत्रीनस्यावचः साधु विशंकमाना ॥ यथा
वत्कं प्रचकारसाधीनेवापि सर्वे बहुमनुलसन्न ॥ कथेनभ मोपायनं च कारमाश्री शुक्रः
स्तहदेव लक्ष्मी ॥ यथा वाकीयान्म जिना निसर्वे सं लीथ्वीराः स्वशुर्ये पतं ॥ ७ ॥ अग
स्वपशामानम भिनो दिग्नान शिगोरिनेषां कहस्तनमानं ॥ कुन्ती शुशलानवमवने संपा
सेनदेवाश्च वभूव हृष्टा ॥ ९ ॥ अथानभ मो सहपांडुपुत्रैः पादो पयानी वहूताक्त शेषु ॥ न
नन्दुः स्वसन्नता पि नस्यान बाव मेने कहस्तु गवांहान ॥ १० ॥ नेनत्रसुराः कथयां बभूवुः क
था विचित्रां गुहन नाधिकाराः ॥ असाविदिमा निरथाः स्वनागान हुष्टान्नगाद्याधिपर
सुयांश ॥ ११ ॥ नेषां कथालापाः परिकीर्त्यमानाः पंचालराजस्य सुतेन तदानी ॥ अश्वा वक्त
सां वनसानिषण्णां ने चापि सर्वे ह्रदश्र मेन खाः ॥ १२ ॥ पूर्व पक्त नो राजपुत्रस्य सर्वे हृतं नेषां
कथितं चैव वाणी ॥ सर्वं पाले ड्ड यदा यथा विलेन निवेदयि त्वा हलिनो जनाम ॥ १३ ॥ पांचाल
राजस्तु विषण्णरूप स्तानांस्तवानप्रतिविद् मानः ॥ पूर्वपक्तं पर्यं पृच्छन्नमहात्माकसांगना
केन नीताच कृष्णा ॥ १४ ॥

पुरस्तान्निपाते पाखैव याहं नेपाद समीपप्रदेशे ॥ १ ॥ पादोपयानी वसर्वेषां पादस्पर्श
लभमाना कृष्णेषु कृष्णामने ॥ १ ॥ हननाधिकाराः सेनाधीपायोगाः ॥ ११ ॥ १२ ॥ अप्रतिविद्मः

पाञ्चालाः पाण्डवेयाश्च सोदर्याः ॥ २४ ॥ यानमर्ष्यं गताश्रान्तां वृद्धो वा निहितं न ह्येतत् ॥ २५ ॥ [illegible] ॥ २६
यत्न्यइति ॥ ५ ॥ प्रज्ञायमानः पांडवैर्विनिरेष अरातन्समीपे ॥ २ ॥ प्रथं प्रयम समादाय वर्तिकन्ह [illegible]

नमस्त्रवीक्षणे देवः प्रच्छन्नः पञ्चशो यान्तिश्चयं यानपरा जनः ॥ नैचिक्रमं पांडवेया ननीत्पकोन्यः
कर्मोनिष्यने मानवेषु ॥ ५ ॥ दृष्ट्वा सर्वे पावकाद्धि प्रमुक्ताः पूर्वं चोरान्पांडवाः पाञ्चालाः
द्विषन्पापाशोधलनापूर्णपुत्रः सहामात्यो नसकामो भविष्यन् ॥ २३ ॥ मद्रेवो ऌ निहितं यन्नं
हर्षं निवर्ध्य नलनाद्वेधमाना ॥ मावो विदुः पार्थिवाः केचिद्देवपाख्यावहे क्षितिरिपवेवना
वन ॥ २५ ॥ सोमनाताः पांडवेनापाय श्रीः प्रायाङ्कौन्तेवलदेवेन सार्धं ॥ २६ ॥ [illegible]
पदी [illegible] ॥ वे [illegible] ॥ [illegible] चारूपाः पुष्कलः कृष्णेनदृष्टो ॥ [illegible]
[illegible] निवेशने ॥ २ ॥ प्रज्ञायमानः [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] निवेशने ॥ ३ ॥ [illegible] ॥ मे
[illegible] ॥ ४ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ४ ॥
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ५ ॥

[illegible] ॥ ५ ॥ परिक्षिताः [illegible] ॥ ९

महीशयोर्द्वन्द्वं ॥ ५ ॥ उत्क्रान्तानाम्नामिति त्रिपोधः ॥ ८ ॥ ज्ञातव्यमानुषाणां प्रयोजनं ॥ ९ ॥ दर्शयाम्यनि-

स॰ भा
आप
३२

अथ तत्र समानस्य ततस्ततो महीस्तनो हिंसाश्रेणिभिरुद्धस्थानः ॥ चक्रमवज्ञाय दिनेहतेषु
सर्वैश्चदेवैस्त्रिभिस्त्रिदशवृषः ॥ ३ ॥ कृताप्रमत्ताजिनमन्त्रयांतेनाशीर्वपुः सहस्रा ॥ अप
त्यमानेषु नपियपिपृच्छन्देववैनत्वसमापनस्य ॥ ४ ॥ ततो पारः पार्थिवसंघमध्ये प्रद
त्तमानन्दमहो प्रयोर्ह ॥ प्रकालयन्त्रेवनपार्थिवो वान्कुशोनकः शासनमतो यथैव ॥ ५ ॥
नो पार्थिवानां मिषतां नरेंद्रकलाम पारायणानो नरार्यो ॥ विभ्राजमानाविव चन्द्र
सूर्यौ वाणाश्चरणशीवकमेघालां ॥ ६ ॥ नत्रोपविष्टाश्चिरिवानलस्य नेषांजनिश्रीति
ममघनकैः ॥ नथाविधेरेवनरप्रवीरैहृपोपविष्टेर्हिमिरग्निकल्पैः ॥ ७ ॥ नस्मलन
स्ताव भिवाघपादौ उत्काच कलशान्वभिवादयेति ॥ श्यितांचन त्रैवलिवेयहकलाभिवं
प्रचारयानानराशः ॥ ८ ॥ नेषांनमे स्वप्रतिमल्परकश्चान्दनावलिं व्याकरणसाचक
ता ॥ तांचैवनहंपरिवेष्यतांश्चनरप्रवीरान्वयमप्पभक्ता ॥ ९ ॥ स मालनेपार्थिवम
ध्यवने षांचकस्त्राचारणोपयाने ॥ आसीनुष्टिवितांश्चयनं चनेषांदर्भाजिनाशालर
णोपपन्नं ॥ १० ॥ तेनर्द्धमालाश्वकालमेत्ताः कथाविचित्राः कथयां बभूवुः ॥ नवैपुरस्य
द्वैपयिकीः कथाश्चानचहिताना कथयंतिवीराः ॥ ११ ॥

यशलाभ

३२

नाशमपर्थ्येजिनंचनत्वात्मरणं चेति समासः ९ ११

म्भोपदंष्ट्रैन वर्णैर्योगानवेषधृतैनत्पातित्यक्त्वा यत्नेन यथा वा पतन्तस्तथा नयन्ति पुरुषेतने
पापः स्यादपुत्रकः पुत्रमपत्यं लभते ॥ तत्र मातापितृकुमारीबालानपातितेति श्रुतमर्के ॥ २४ ॥ स
वर्णप्रचारः क्षत्रियश्रेष्ठः उद्रिक्तवर्णैर्ज्ञापयन्ति ॥ म्भोपादस्तवेषधृत्मा त्रेताज्ञास्ता नित्यपानयो

कश्चिन्नयान्ते तानहीनज्ञेनवैपुंसेन वा कश्चिद्दिनोदयपत्नी ॥ कश्चित्पादं संभिन्नयं कदिग्धं
कश्चिन्मालापतितायमधृतने ॥ २५ ॥ कश्चित्सवर्णप्रचारो मनन्यया उद्रिक्तवर्णैर्धृतनपवक
श्चित ॥ कश्चिन्नवामोऽममम्भोपादः क्रमाभिमर्दी तत्क्रतोऽयपुत्र ॥ २६ ॥ कश्चिन्नन स्पेप
रं संप्रनीलः संपुष्पार्थनन्तर्येमेव ॥ वदप्राननेन सहान्नमावकोसौ चित्तेना उद्दिन्न सं
मात्र ॥ २७ ॥ विचित्रवीर्यश्च नलस्य कश्चित्कृप्सबीजस्य प्रियंति पुत्राः ॥ कश्चिन्नपार्थन
पवीयमायधनरहीनेनिहन्तं चलदं ॥ २८ ॥ इत्यादिपर्वणि द्रोणपर्वणि द्रोणवधपर्वणि ॥ वैशंपाय
न उवाच ॥ ततस्तथोक्तः परिहृष्टरूपः पितृरेषा श्रणवयनं तपत्रः ॥ एष यज्ञः सोमका
नां प्रवर्हितन्तयथा येनहता चक्रुशा ॥ २९ ॥ एतदुक्त्वाय उवाच ॥ योसौ पुत्रा नाहितन्तोदिता
नः क्रमाजिनी देवसमानरूपः ॥ यः कर्मकाण्डं कृतवान्पितृंस्तं चयः पतितवाग्य
श्रितां ॥ ३० ॥

कश्चिद्भावितः ॥ ३१ ॥ कश्चिद्दिति काम प्रवेदनेप
ण्णच कर्णौ कलयापोः सतन्या च्यपोरपि दृष्टना मां भावितः ॥ ३२ ॥ प्रियंति जीवं
र्तेनसंपुत्र परमप्रनीतोऽयं तद्धितोहितनाद्रूपान्वोधिस्यान्वज्ञासं मवान ॥ ३३ ॥ प्रियंति जीवं
ति ॥ ३३ ॥ अध्यायः ॥ ततइति ॥ प्रवर्हउत्तमः ॥ १ ॥ २ ॥

श्वकं मरुद्रुपराज्ञेनेव श्रमनरूतं मन्नसृष्टा ||२४|| न देवाद || कृतेनेनि || २५ || सोमकिर्द्रुपद: ||२६

समीपतो भीमनिर्दहन्ती पण्यसमश्रीयतां पापसर्वेन यासो || मात्स्यः पुरोपाण्डुपदस्य राजलं कैमप्रयोऽस्मान्याधिकाद्दि सृजा ||२५|| भीमसत्तनस्तनकं नवात्रंरैद्रतां चैव पूजां प्रति रहहंदा न || सलोपरिष्टं नष्टदोहितं नतदा युधिष्ठिरो ब्राह्मणामितवाच ||२२|| पांचालराजेन सुता निसृष्टा स्वयमेह सेन यथान कामात || प्रहिष्णु कामुद्रुपदेन पत्ता मानेन वीरेणतथानुज्ञाता ||२३|| ननत्रवर्ती श्रुकुलाविवत्सान चापि शीलेन कुलेन गोत्रे || कृतेन सक्तेन हि कार्मकेन विद्वेन लक्षेण हि विप्रकृष्टा ||२४|| सेयं नष्टानेन महात्मने हकृत्स्ना जिता पार्थिवसंघमध्ये || नैवंगतेसोमकि र घयन्ता हंतां पमहैन्य सुवोयकर्तं ||२५|| कामस्य यो सौद्रुपदस्य राजा: सचापि संपस्यति पार्थिवस्य || संप्राप्यरूपं हि नरेंद्रकन्यामिमामहं ब्राह्मणमायुमन्ये ||२६|| ननहृत्वमं द्वबलेन प्रकां मोमीसमायोजयितं नयापि || नथाकृता हेयणनहीनजेनलक्ष्यं नयापानयितं हि पुत्रकं ||२७|| नस्मान्न तापंडु हि न निमित्तं पंचालराजो हि निकर्मसद्यनचापितन्यान नमन्यो हकर्तं हि शकां भुविमानवेन ||२८|| एवं ब्रुवत्येव युधिष्ठिरेन पंचालराजस्य समीपतो न्यः || नजातमा मास्यनरो हि नीयो निवेदयिष्यन्नि हास्थितमन्त्रे ||२९|| इ[illegible] लोदि पर्वणि द्रौपदी

२१॥ विद्यासंवर्धनमिक्षाम॥२८॥२९॥ आख्यानकथयत॥२०॥२१॥

निःसंपूर्णं दत्त्वित्यर्थं गालवो यथा हि पुत्रं कथयंतीति तत्त्वन॥ आपत्ति हि नो व्यञ्जनमित्यं सम
दृष्टमनमो हि प्राधान्यं लक्षणो भाविदायत्न॥२०॥ यथा हि लक्षणनिर्वंतनस्य समं कृत्तं तेन नत
पात्र सत्य॥ यथा च भावं तिष्ठरूपं तेन स्वन्नाश्रवं तेन च वेति पार्थाः॥ ततः स्वराज्ञा तु परः
प्रहृष्टः पुत्रो हि तं प्रे सत्यमाश्रमे तेषां॥ निश्चयमपूर्वानि तिभाष्यमाणो महात्म नः पांडुरत्नं
स्वकपितृ॥२४॥ हर्षीन वा वोरन्यते श्रेयो धारणात्रपूर्वं समभिधायते षां॥ वाक्यं सम
स्यते हिंस्या वदृश्च वाच वानरकर्म निक्रमेण॥२५॥ वित्तान भिक्षु स्वच नौ स्वयं रोव पांचाल
राजो वृत्दोव्य गाहि॥ सत्यस्यवेद्यागमिमं हि रहस्यं हृद्य स्यनां तेषु विप्रयतेः॥२६॥ आख्यान
चत्वानि कृत्वान प्रवीयं स्थिरः सहि विनां कृत्पं॥ प्रहृष्ट यथं हृदयं समे रंपं चालराज प्र
चक्षान्यास्य॥२७॥ पांडु हि राज्ञा तु परस्य राज्ञः प्रियः सता चास्य समोवभूव॥ तस्यैव चकासो
तु हितामयं सर्वाप्रदास्यामि हि कौरवाय॥२८॥ श्रुत्वैव हि कामोऽतु परस्य राज्ञो हृदि स्थितो
निश्चय निश्चितात्मा॥ यद्यज्ञो नैवेद्य पूर्वीवेवाकृधैर्यता विरेन सहं नामं मेनं॥२९॥ कृतं हि न
स्थानांतकृत्ये मध्ये दयश्चम पूर्णपंचा हि नं तदेतन॥ यथोक्त वाको हि पुत्रो हि नं स्थितं तनो
तिनीतं समदीक्षा राज्ञा॥३०॥

ऽजमवल निरन्तरवचिन्ततां तूलयानी प्रसन्नी निलई निमन्तोर्मे स्यवनमार्षं ॥ ८॥ गृहेतेन तां सालताह
ज्वलन ॥ ९॥ हिमम्हः स्यमज्जनवाष्पोल्लंकारात्पुष्टिभिः समस्तकान्ति कुलः पां दुवानां वेषधो येलेमवृक्षे वेषाः

वर्माणि च वर्माणि च भानमंनि रेत्कामसद्नो स्वर वासु विनाः ॥ यतं षिचा त्वामाणि पाणस्तु वि
ज्ञाः श्रान्तास्पुयः कांचन ममचतां स्तु ॥ १॥ आमाम हेसुस्य पारस्य पास्य सांग्रामिकं चैव नवेह
सर्वं ॥ शाख्यामसना स्वजनमवलत्वं निजवै वासो विविधं चनन ॥ ८॥ कृं जीन कृ सांपरिरय सा
धीमंतः श्वं दुपदस्याविवेश ॥ सिय स्य तां कोरवराजपत्नीमन्वर्च यामास यीन सनाः ॥ ९॥
नानिंद्र विक्रांत गानी त्रिरी सामहर्षमालान जिनो नरी यान ॥ गृहे नरां सान्सजगेंद्र भोयय
लेववा हूस्वहम्पप्र वीयान ॥ १०॥ राजा च पार्थः सचिवास्य सर्वे पुत्रास्पुरा जनहेंद्र स्वसर्वे ॥ प्र
धामास्य सर्वे निहिवि तं चराजनन्दपं समासेन रानीवनत्र ॥ ११॥ तेनत्र वीरः पांसास नेषु सपाद
पीठेषु विशांकमानाः ॥ यथान्नपूर्वं विविस्म्रनेरा या लथा मह्यहर्ष न विस्मयं तः ॥ १२॥ उच्चाव
चंपार्थिव भोजनानां पानानि जानूनदराजनीषु ॥ ताम्रास्य दास्यस्य हस्य स्वेषाः संभोजकास्या
थुपानजक्रनं ॥ १३॥ तेन त्रस्य नाथहष सप्रवीर यथा मकामं समस्य पुनरीनाः उत्कस्य हर्षीः
णिवह निरान्संख्या भिकं नेविविस्म्रनेवीराः ॥ १४॥ तत्त्रदयिता दुपदस्य पौत्रा राजाचय
थैः सहस्रं निमस्मै ॥ समर्थयामास महापेत्रहस्याः कं तीरनान्यार्थिवराजपुत्रान् ॥ १५॥ इत्या

दिपर्वणिद्रौपदीस्वयंवरे ॥

तेजसं भोजकास्ययथायोग्यं तांतूलादिकमपपादिकं चात्र मदीयं तथापाजके ॥ १६॥ अध्यायः ॥

321

१८४

३२२

तस्यार्थं वरप्रदीयतन्नाथं कृष्णा चननैवासुव [illegible] थना कृष्णा देलियारेवामोत्न
त्रैभवदीयतानादूवद्भिः सहैवेनिमावः ॥ ५ परियाप्य ॥ ६ ॥ ततः तत्रियतं परीक्षितं दृष्ट्वा [illegible]
हृष्टएक चक्रकृ नाट पिनवान ॥ ७ ॥ फलमाल्यादीनि कृष्णायै च [illegible] योग्यानि ॥ ८ ॥ कृष्णा नि[illegible]

नृप उवाच ॥ तस्यार्थं सत्येनुपदेन राज्ञा विवाहे दैनोदृपसे [illegible] नेच ॥ ततामत पं कृष्ण सर्व का
र्याः कृष्णा च तत्रैव चिरेन कार्यं ॥ २ ॥ सैरयाः कांचनपश्चिमाः सदृश्यंत्र कावरयाधिपाहैः
एतान्समाहृत्य परेन सर्वं पांचालतन्नास्यानि वेशने नन ॥ ३ ॥ वैशंपायन उवाच ॥ ततः प्रया
तां कृष्णां वाविष्णुरोहिनं परियाप्य सर्वं ॥ आस्थाय यानानि महं [illegible] नि कंनी च कृष्णा
च सहैव यानै ॥ ४ ॥ कृष्णा तान वासांसि पुरोहितस्य यान्युक्त्वा [illegible] प्रसेरातनः ॥ त्रिसा सदे
वाच करूतमानां दृष्ट्वा पपने [illegible] नहार ॥ ५ ॥ फलानि माल्यानि च संहृतानि वर्मा णि
च भूषितानि हानानि ॥ वार्षेयराजस्य चैवरत्नवीजानि चान्यानि कृष्णीनि मितं ॥ ६ ॥ अन्ये
भूषिते च यान्यपि पुरः सर्वाणि कृष्णानां शिविलेननत्र ॥ क्रीडानि मितानान्यपि यानि तत्र स
वाणि न [illegible] राजा ॥ ८ ॥

कृष्णी [illegible] पर्यन्तानि वासा दीनि क्रीडानि मितानि [illegible] सदोजना
दि रूपा चायाल [illegible] यादी नां क्रीडुः नामांसा [illegible] नानि यत्र पात्रा [illegible] कृष्णानि [illegible] सर्व [illegible] नि ॥
चनत्र [illegible] कालेन [illegible] निमित्ते ॥ ९ ॥

२४ ॥ ४ ॥ वरं पोदेवएतारिपवीनवं विनाशनमप्राकृतकालीनंकरवयमेंदगेः पवोंस्वैयस्याज्ञयामाने

वैशंपायन उवाच ॥ ततः समुद्यतो राजा हर्षमाकलनोऽव्रुतः ॥ अनिवर्त्य कृष्णा द्रुपदो नाभ्यकल्प
युधिष्ठिरं ॥ यदेतेनतनमतनंद्रुपदमनिमंत्रणपांडवाः ॥ अनन्द्रपांचालदाशाचाश्यस्ववाचयुधिष्ठिरं ॥ पश्य
श्चैवनंधर्मात्मायथाजोयतेतनः प्रतन ॥ मतनसैमवैमाचराप्योनानपुर्वेणपांडव ॥ २२ ॥ तम्भान्तरेप
दोयजनकृतंनीप्रवरस्त्रभाषितं ॥ विनाहृयामानापतनदायुतनयाहूंनरेश्वरं ॥ २३ ॥ मास्त्रात्मयामाश्चवनं
कुंतीपुत्रं युधिष्ठिरं ॥ अनिजल्लेवराज्यायतुपदेवदत्तं व्रतः ॥ २४ ॥ ततः कुंतीचकृष्णाचभीमसेना
र्जुनावपि ॥ यमौचराजानामंददिहंविविधमर्भवनंमहतं ॥ २५ ॥ नत्रनेनस्ववसत्राजन्यज्ञसेनेनपूजि
ताः ॥ अन्याश्चलंतनोराजासहपुत्रैर्ह्रवाचतं ॥ २६ ॥ यत्राक्षनविधिवत्माणिमयाकृपंकृष्णंददनः ॥
पुरस्ते हूनिमहत्वाद्धरजनः कृष्णांहृतां ॥ २७ ॥ वैशंपायन उवाच ॥ नमस्वीतनोराजायर्मा
त्माचयुधिष्ठिरः ॥ ममापिदारसंबंधः कार्यस्तावद्विशांपते ॥ २८ ॥ द्रुपद उवाच ॥ भवान्वाविधिव
त्पाणिंगृह्णातुदुहितुर्मम ॥ यस्यवामन्यसेवीरतस्यकृष्णामुपादिश ॥ २९ ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥
सर्वेषांमहिषीराजन्द्रौपदीनोभविष्यति ॥ एवंप्रव्याहृतंपूर्वंममामात्राविशांपते ॥ अहंचा
प्यनिविष्टोवैभीमसेनश्चपांडवः ॥ पार्थेनविजितानामैषारत्नंभूतातवाद्य ॥ ३४ ॥

यानेहृसम्रनिमंत्रितो ॥ २ ॥ २२ ॥ अनिविष्टः प्रक्षनविवाहः ॥ २४ ॥

ततः आसलोकासणार्थम चितेनाः भुम्यानादिनाप्रनिग्रहेणाभानि खोन ॥ ५ ॥ रसंयमादिप्राणेवे-

वे श्रीभगवानुवाच ॥ ततस्याह यथांचास्योतनश्रुत्वेश्र विहितं ॥ पवित्रदेणाचाहेणपविस्रा
मरणा.नि: ॥ २ ॥ पवर्श नद्रदीनानाकं नी श्रुत्वेस्वचे सं ॥ कथं ततो मभवतः दति यान्बाहणा
नत ॥ ३ ॥ वे पणान्याणणसंय चानयवाम्भ ह यो नितान ॥ मायामास्याथ वा विप्रां श्रुतः संवेनो
दिपं ॥ ४ ॥ कुसादे नोगन समाद्वाः संदर्णनाखिनः ॥ त्रचीतिनो मवानन्सं संदे हे हत्र नो म हान ॥ ४ ॥
ग्रथिनः संणाय स्यांनेमनः संततिमावदेन ॥ प्रथिनो भागघे यानि ग्रभानिस्पुः यांनप ॥ ५ ॥
इत्थं याह हितनसंपसन्यगजमयांभने ॥ श्रणाणनेन चतन्याचकन्यमन्त्रेनन ॥ ६ ॥ श्रकनाणम
रसंकापानवचाकमणिंदम ॥ अचंविवाह्करणमाण्याणाभिविधानतः ॥ ७ ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥
मायातन्विमनामभलं पांचास्यभी निश्चलाने ॥ दृष्टिनले अवः कामः संश्रनोयमसंशयं ॥ ८ ॥
वयं हि दत्रियायाजनपांडोः पुत्राः महात्मनः ॥ ध्येपंमां विद्धि कौंतेय भीम सेनार्जुनाविमौ ॥ ९ ॥
माधंन नरत्नाराज निर्जितान्राजसंसदि ॥ यमो च नरश्रेष्ठो च यत्र कृष्णा व्यवस्थिता ॥ १० ॥ श्रद्धानि
बेलुने मानसंस्तः विदतियाः सोनरं पभ ॥ पश्मिनी वसने येने हृदादन्यहृदं गता ॥ ११ ॥
नयांम हाराजसर्वमेनक्रचीमिति ॥ भवान्हिगहरसकं पांसंच पराधाणं ॥ १२ ॥

काणामिनवपर्भिकत्सेनपणेपघः सासंरूयाअन्यथा: ॥ १२ ॥ ॥ ॥ राम ॥

म॰ भा॰
आ॰ प॰
३२४

ततो लोकत्रयं ख्यातं॥ ५॥ विप्रलब्धे प्रतिगाढं न तत्र याश्रावीयेन कार्यघ्नेसहते अत एव लोकवेदविरोध

वैशंपायन उवाच॥ ततस्ते पांडवाः सर्वे पांचाल्यश्च महायशाः॥ प्रत्युत्थाय महात्मानं कृष्णं सर्वे
ऽभ्यवादयन्॥ ५॥ प्रतिनंद्य स तां पूजां पृष्ट्वा कुशलमंततः॥ आसने कांचने शुभ्रे निषसाद महा
मनाः॥ ५॥ अनुज्ञातास्तु ते सर्वे कृष्णेनामिततेजसा॥ आसनेषु महार्हेषु निषेदुर्द्विपदां वराः॥ ५॥
ततो मुहूर्तान्मधुरां वाणीमुवाच पार्षतः॥ पप्रच्छ तं महात्मानं द्रौपद्यर्थं विशांपते॥ ५॥ कथ
मेका बहूनां स्यान्न च स्याद्धर्मसंकरः॥ एतन्नो भगवान्सर्वं प्रब्रवीतु यथातथं॥ ५॥ व्यास उवाच॥
अस्मिन्धर्मे विप्रलब्धे लोकवेदविरोधके॥ यस्य यस्य मतं यद्यच्छ्रोतुमिच्छामि तस्य तत्॥ ६॥
द्रुपद उवाच॥ अधर्मोऽयं मम मतो विरुद्धो लोकवेदयोः॥ न ह्येका विद्यते पत्नी बहूनां द्विजसत्तम॥
न चाप्याचरितः पूर्वैरयं धर्मो महात्मभिः॥ न चाप्यधर्मो विद्वद्भिश्चरितव्यः कथंचन॥ ७॥ ततो
ऽहं न करोम्येनं व्यवसायं क्रियां प्रति॥ धर्मः सदैव संदिग्धः प्रतिभाति हि मे त्वयं॥ ८॥ धृष्टद्युम्न उ
वाच॥ यवीयसः कथं भार्यां ज्येष्ठो भ्राता द्विजर्षभ॥ ब्रह्मन्समभिवर्तेत सद्वृत्तः संस्तपोधन॥ ९॥
न तु धर्मस्य सूक्ष्मत्वाद्गतिं विद्मः कथंचन॥ अधर्मो धर्म इति वा व्यवसायो न शक्यते॥ १०॥ कर्तु
मस्मद्विधैर्ब्रह्मंस्ततो न व्यवसाम्यहं॥ पंचानां महिषी कृष्णा भवत्विति कथंचन॥ ११॥

के॥ ६॥ क्रियां प्रति व्यवसायं निश्चयं॥ ९॥ राम

३२४

३२३

ममयोनियमः॥२५॥ ज्वलनेज्वलनसमीपेकृतेनरहूनेपंचपाणिग्रहणानिकृतेन॥२६॥ पुंसः पुमा
न्सः यद्वा पुंसः वेदकर्तुः परमात्मनः सकाशान्नश्रुतं तेनस्मात्तेनैकान्तद्वैपदीविंदनास्तीतिवेदविरु॥
द्धं चाविदितेनिषिद्धं चेनदित्यर्थः॥२७॥ सूक्ष्मः नैकस्यैव द्ववः सहदलयदानिभ्रात्सहेतिगायद

यपनः सममयोगाजनन्नलक्षणसद्भोननं॥ नचनंदृत्तमिकामममपंदनजसनम॥२८॥ सर्वेषां
यमेनः कृत्स्नामहिषीनोमनिषाणि॥ यान्पूर्वोत्तसर्वेषांगरहूनननानेकृतान॥२९॥ द्रुपदउ
वाच॥ एकस्यपुंसोविहितामहिष्यः कुरुनंदन॥ नैकस्यावहूवः पुंसः श्रूयन्तेपतयः क्वचित॥
लोकवेदविरुद्धंत्वंनाधर्मंधर्मविन्नशुचिः॥ कर्तुमर्हसिकौंतेयकस्मात्तेबुद्धिरीदृशी॥३०॥ यु
धिष्ठिरउवाच॥ सूक्ष्मोधर्मोमहाराजनास्यविद्मोवयंगतिं॥ पूर्वेषामानुपूर्व्येणयातंवर्त्मानु
यामहे॥३१॥ नमेवागनृतंप्राहनाधर्मेधीयतेमतिः॥ एवंचैववदत्यंबाममचैवतन्मनोगतं॥३२॥
एषधर्मोध्रुवोराजंश्चरैनमविचारयन्॥ माचतेऽत्रविशंकास्यात्कथंचिदपिपार्थिव॥३३॥ द्रु
पदउवाच॥ त्वंचकुंतीचकौंतेयधृष्टद्युम्नश्चमेसुतः॥ कथयंत्वितिकर्तव्यंश्वःकालेकरवा
महे॥३४॥ वैशंपायनउवाच॥ तेसमेत्यततःसर्वेकथयंतिस्मभारत॥ अथद्वैपायनोराजन्न
भ्यागच्छद्यदृच्छया॥३५॥ इतिश्रीमहाभारतेआदिपर्वणिवैवाहिकपर्वणिद्रौपदीविवाहेयुधिष्ठिरा
दिवाक्येपञ्चनवत्यधिकशततमोऽध्यायः॥१९५॥

कुपतिनानिषेधोविहितः नतस
मयपदेनतत्सानिषिद्धंमन्वादिमतेऽपिमनेकेतिशास्त्रसंचनरहेष्वनीतिरेविप्रोक्तास्यानिषिद्धमपि
कर्तव्यंपरंपरागतमकृतमार्गत्वचवकिमतानिषिद्धमितिभावः॥ पूर्वेषांप्रचेतसः प्रभृतीनांतेषांतं
वर्त्मबहूनामेकपत्नीत्वमनपायमहे॥ तच्चमानपूर्व्येणोवननत्क्रमेण॥२९॥ इतिश्रीभारतेभावदीपे॥

अत्रयन्त देवा ऋषिसाहिताः त्रिपथगां नदीमितो नाम्ना यथा प्रख्यानं तथोध्याय इत्याल्मकः कवि
श्लोकेषु वर्त्तते ॥ २३ ॥ अध्यायः ॥ शुक उवाच ॥ कामिनामये पञ्चवर्धकं नानस्यकर्मणामिति ॥ ४ ॥ यमोदीचि

ततो द्वैपायनस्तस्मै नरेन्द्राय महात्मने ॥ आचचक्षौ नरव्याघ्र धर्मवृद्धनाम कथा हिताम् ॥ २४ ॥ स्नाहि
पुंडरीकाक्षं पदीस धर्ववदे ॥ मामसउवाच ॥ युग वै निमिषाणि देवाः सत्रमासते ॥ तत्र वैवस्वतो
जगाम निरमकरोनदा ॥ ५ ॥ ततो यमोदीक्षितस्तत्र यात ज्ञानमारययुक्त चिद्दपि प्रजानां ॥ ततः प्रजाना
बहुलावमृतः कालातिपातान्मरणप्रहीणाः ॥ ५ ॥ ततस्तत्र शक्रो वरुणः कुबेरः साध्या रुद्रा वसवो
स्याश्विनौ च ॥ प्रणेतारं भुवनस्य प्रजापतिं समाजग्मुस्तत्र देवास्तथान्ये ॥ ३ ॥ ततो ब्रुवं लोकगुरुं
समेता भयात्तीव्रान्मानुषाणां विवृद्ध्या ॥ तस्मादृ यात द्विजन्नः सुखेषुवः प्रयामसर्वे शरणं भ
वन्तं ॥ पितामह उवाच ॥ किं वो भयं मानुषेभ्यो यूयं सर्वे यदामराः ॥ मा वो मर्त्यसकाशाद्वै भयं भवि
तुमर्हति ॥ ५ ॥ देवा ऊचुः ॥ मर्त्या हि मर्त्याः संवृत्ता न विशेषोस्ति कश्चन ॥ अविशेषाद् द्विजंतो विशेषा
र्थमिहागताः ॥ ५ ॥ श्रीभगवानुवाच ॥ वैवस्वतो व्यापृतः सत्रहेतोस्तेन त्विमे न म्रियन्ते मनुष्याः
तस्मिन्नेकाग्रे कृतसर्वकार्ये ततएषां भविता वान्तकालः ॥ ७ ॥

तः सत्रे दृष्टिये यजमाना लब्ध्वा ततः सर्वे यान्ते ये षां दीक्षा वियजमान तामरणकालातिक्रमात् ॥ ८ ॥
यत्र प्रजापतिस्तत्र सोमादयः समाजग्मु ॥ १ ॥ ६ ॥ तस्मिन्कृत सर्वकार्ये समाप्तिं यदे सति एषां लो
कानामन्तकालो भविता ॥ ७ ॥ ॥

६८=

324

नमेऽद्य निवस्तुं नैवाच ॥ एवं धर्मेण गुरुणा प्रत्यनिर्वेशयन्नान उक्तमेवागतिं तिष्ठतं मतिमन [illegible] ॥ बाला
दीनां च स्त्रीणां दिग्धर्मं च तां प्रसंगेन पुंसां सर्वधर्मान्न बालवः सम्भवतिः स्त्रीन एवोक्तं तिः [illegible] ॥

युधिष्ठिर उवाच ॥ नमेवा गान्धारं प्रहृष्टनार्यो [illegible] मतिः ॥ धर्मे नेह मनो मे [illegible] कथं
च न ॥ ७ ॥ सूर्य नेहि [illegible] नाम [illegible] ॥ [illegible]
न [illegible] ॥ [illegible] ॥ १९ ॥
[illegible] ॥ १६ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ कुंत्युवाच ॥ एवमेन
[illegible] ॥ [illegible] ॥ १८ ॥ [illegible] सूत उवाच ॥
[illegible] ॥ [illegible] ॥ १९ ॥ य
[illegible] ॥ [illegible] ॥ २० ॥
[illegible] उवाच ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ २१ ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ २२ ॥

[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ २३ ॥ २० ॥ [illegible] ॥ २४ ॥ [illegible] ॥ २५ ॥

माघमा॰
स्का॰टी॰
३२६

क्रीडयापयामास क्रीडया समासा ॥ ४० ॥ ४१ ॥ एवं विलसमानो पि तं स्रजितं नित्यं प्रयत्नतः हृदीयथा वलादिकं
न वा प्रमेयं तथा निवर्तय ॥ ४२ ॥ ततः प्रोक्तं प्रसवे प्राहैतो ॥ २५ ॥ ४ ॥ एवं दृष्ट्वा विप्रो गुरुः उवाच देमव

यतान यथा समिहायक्रीडयान दादेवी हरनोनाम्न वाच ॥ मानी यतमामेव यतो हमायात्रैवं दर्शय
नाप्याविचान ॥ ४३ ॥ ततः प्राह स्वं समाचरनयान सलेखे : यतितो मृङ्गवाणो ॥ जमद्रवीङ्गवा
नष्टने त्रामैवं पुनः प्राक कृत्या : कथं चित ॥ ४४ ॥ निवर्तयेनं चम हाद्रिराजं वलं च वीर्यं च तथा
प्रमेयं ॥ विद्रुमचैवा विधिमध्यामध्ययत्राधनेन स्थिया : स्वर्धं भामः ॥ ४५ ॥ मत हिचमविचारं मह
गिरेस्त लभ्यम नीश्वनतो माननर्दयां ॥ मतान भिषेत्य वभूवङ्क : स्थितः कथित्राहं भविनावे यथा मे २॰
ततो देवो गिरीशो वन्मयाणि विहन्यने त्रैक यितो मुवाच ॥ दरी मे नं प्रविशय नं रात कृतोयनं मा
वात्माद्रवमं ख्या : शरता न ॥ ४६ ॥ ततः स्वैवं विमना देवराजः प्राचेपतानो महामेवाभिषं गात ॥
स तेगोर निलिनन त्नमस्त्र यत्नं गिरिराजमूर्ध्नि ॥ ४७ ॥ सप्रांजलि वैरुपवाहनेन प्रवेपमानः
सहस्रैवगुरुः ॥ उवाच देवं वरहयमग्रे हस्ता प्रो यस्यमवनस्य तं स्वाय ॥ ४८ ॥ नमद्रवी ङ्गव
चौ प्रहस्य नैवं यत्रीवा : राष समिहाम्वति ॥ एते ये वं मविनाद : शरता नस्यादे नाद्रो मा विप्य
प्रोष्ठ ॥ ४९ ॥ तत्रयोवं मविनाशोन नं प्राया यो नि सर्वे मा न प्रीमा विप्राधं ॥ तन्न प्रयक मंत्र ना वि
सर्वयं वहून न्यानि य तं प्राप यिना ॥ ५० ॥

अथ तं अप्तो यस्य मवनस्य प्रयपत्रि रश्मि प्रयेन्यनेन मां त्रिते धन वन यो नि स्वचितं ॥ ५१ ॥ प्रो यंप्र
सादं प्रोष : संकल्पो वयं अनेने नाप्रसादे चेतिसे दिनो ॥ ५२ ॥ ५५ ॥

३२९

325

यतः देवस्त्वनसो चलनः प्रज्ञ्वायोग वक्षेनविद्युल्लाद्भेयाभाव्यानतात्सनी साएघासें नोविनाशेभविम
नौषंदेवनासासं॥ ८॥ तस्यायरुचित्तः संधियार्थः॥ ९॥ कामयेयोतं ॥ १२॥ यु वनी सहायंकदे॥ १४॥

देवस्तनसैव ननविभू चितनावीर्या प्रध्याकुमनस्यहृ ॥ देवस्यसंतोभविनाशंतकालेननत्र
नौषंभविनानदेषु॥ ८॥ या स ३ वा च ननपलाने पूर्वजनेदेववाचंसम नानम धित्रदेवाप्यतंतो स
माषीनाशेषसोनामस्यावस्याभागीरथ्याहरप्रः त्रुष्टीके॥ ४॥ हृदुचनहिस्मिनाशेवभुक्तलेषा
मिंदलन्नप्रयोजनमाम॥ सोपाथपयोयामयायाचकप्रभाथत्रदेवीगंगासनलंप्रसूनाः॥ ५॥ सान
त्रयोधाकदनीजलाश्चिनीगंगादेवीसवगारुयालिपुन॥ नरत्नसुचित्तः पतिनोनयेयः नमस्य
मासीस्थानत्रकंचनं॥ ६॥ नदकुतेप्रदाचनीनदनीमगुवलोकोविनमंतिकाहे॥ कांतंभदैवो
द्विषिकस्याहेनोवीवंनम कायगेहंत्रवोहि॥ ७॥ तीउ वाच॥ तंचेनमहेमासिहयास्सिपाक
यदृश्यंनाहंनेहिमिमंदृश्यायाम॥ आनलनजनयरनोगानिसोद्रुहाहिनक्रोदिमियन्कनेदं॥ ८॥ का
स उ वाच॥ नायवृत्तीमन्यायात्रनसानीसोपप्रपवागानरुणांदृषोनोक्तं॥ सिद्धासनस्थपवनीस
हायक्षीरंतमदेविमिरिपातम्रदिं॥ ९॥ तमरावीदेवगजोयमयेदनं विद्धिचिदन्भवनंवयोक्षिनं॥
दुपोदमपदीनिलमनपरत्रवीहद्दासनमदेः हमखंपदायन्॥ १०॥ कृदेचपाकंप्रयमीसदेवोनहस
पाकंचपानेहदेवलन॥ संलंभिनाःभदश्यदेवराजलोनेहिनः स्याग्रादिवोनहो॥ १६॥
दं

युदेः देनमिः श्रमननामनायाने॥ ११॥ संतंभिनंः वनंमोकंउयनः सचननपवस्याप्रवि॥ १६॥

शुक्लकेशावेव रेतोहृतौ यौ पांडवानामिव कामरूपयोर्वधिप्रकरणे संगतार्थौ सान्तावेव रेतस्तदन्यत्रेव
युधिष्ठिरवत्कृष्णादेन एव देववर्णौ दौ हि एणं च सतांकेशौ यद्वेषु तच्चानेन न तु वर्णदेवेन च सतितन देवानामे
नोवर्णं वर्णस्य रेतस्योपपद्यते तस्मादित्थं नमनाम्यस्याद्विनयोरपि मन्दाने न देवप्रभवत्वमपा
न तथा च ॥ एतत्त्वात्त्वा नानात्वं मिथ्याने तीजस्रवाय मितिनिमावतः सात्तान्मत्याघवतारवीजनम्

सा चापि केशौ निविशेतां यदूनां कुले स्त्रियौ देवकीं रोहिणीं च ॥ तयोरेको बलदेवो बभूव
यो सौ श्वेतस्तस्य देवस्य केशः ॥ कृष्णो द्वितीयः केशवः संबभूव केशो यो सौ वर्णतः कृष्ण उक्तः
ये ते पूर्वं शक्ररूपा निरुद्धास्तस्यां दर्यां पर्वतस्योत्तरस्य ॥ इहैव ते पांडवा वीर्यवन्तः शक्रस्यांशः
पांडवः सव्यसाची ॥३४॥ एवमेते पांडवाः संबभूवुः ये ते राजन्पूर्वमिन्द्रा बभूवुः ॥ लक्ष्मीश्चैषां
पूर्वमेवोपदिष्टा भार्या यैषा द्रौपदी दिव्यरूपा ॥३५॥ कथं हि स्त्री कर्मणोन्ते महीतलात्समुत्ति
ष्ठेदन्यतो दैवयोगात् ॥ यस्या रूपं सोमसूर्यप्रकाशं गन्धश्चाग्र्यः क्रोशमात्रात्प्रवाति ॥३६॥

त्वमानेवविरूपेण ॥ अपि चक्षुर्वेलक्ष्यो दृष्टजनैस्समानैर्यैरेतः प्रभवत्वेः वक्तुर्विर्हान्तदेन मनष्यस्ययंज्ञत्र
नेचसत्ता न तथा च कृष्णलभवीगोन्त्वयमितिश्रीमन्माधवतोक्तिः संगतन्ते न च केशोत्कर्णत्कृष्ण
स्यात्वंशुक्लंप्रतीयत इति वाच्यं केशस्यदेहावयवाभावात्तस्यात्वमचिवयेकर्णेययापायेन वक्त
स्यपवेशाएवं देवकीरोहिण्योजठरप्रवेशोकर्णेश्मकेशाइयेनैदृयीमृतेनभगवतःकार्यमिनवाविर्भा

२४ ॥ उग्रायवोरः प्राप्त ॥ २५ ॥ वीर्य्यवान् सक्रेद्यराशक्रपसंकाम्तेदयासर्वनाधिकाशिकनादिदेवनिष्टे
पतिनिभावः ॥ २७ ॥ जैत्रसीदंधाः ॥ २८ ॥ सन्निसर्गानयाहमानाव ॥ श्रियमिति ॥ द्वोपदीश्रांगंश्रीः सं

आब्रंतावः पुनरेवेंद्रलोकेंसबकर्मामाब्रह्मलोकमहाहें ॥ सर्वेंमयाभाखिनमेलदेवेंकनिश्चमन
द्विवियाश्रीपुनकम ॥ १४ ॥ पूर्वेंद्र ऊच ॥ यामिषमानमोमानपदेवलोकाउयायविद्धितोयत्रसो
हः ॥ देवाहस्मानादपीढंनत्वायमीगाणकेकचानखिनोच ॥ २ ॥ पदेदिक्षेमीनघानोपमि
नाब्रह्मनारःपुनरेवेंद्रलोकं ॥ माप्तउवाच ॥ पनचक्षुलानउच्यकाशिवंचलतेदेवब्रह्मपुनरेवेदमा
ह ॥ वीर्य्यतामहेदुरुहवंकार्थेईनोदयामेथांपंचमेंमध्यम्हतं ॥ २९ ॥ विश्वभुंवहुमानयामाचिसि
विरिश्चनामवान ॥ पांनिश्चनयोलेसंबोलेनसीधंचमःसत्वन ॥ ३० ॥ नेयांकामंभगवानश्रय
न्याश्राहदिहसन्निसर्गाश्रेष्ठानं ॥ नांचापंचांयोधिनलोककौंनिश्चियंभायोंश्चादर्थन्मानचे
प ॥ ३ ॥ नेरेवसार्थनततःसदेवानगामनावाग्राणमप्रमेय ॥ श्रुनंनमवाकमजंपुराणंसना
ननंविश्वमनंतहृपं ॥ ३१ ॥ सचापिनहादस्यानमवंमेवननः सर्वेसंवभवर्थरापं ॥ सचापिके
योहरिहरवर्हश्चक्रमेकमपरंचापिकस्तं ॥ ३२ ॥

१ ॥ तैः विश्वभगादिभिः सहैवदेवोमहादेवः ॥ ११ ॥ वाद्यान ॥ विहितवान ॥ श्रावसमयानिसर्थः ॥ ३२७

प२॥ अ[illegible]यः॥ अथ नैवमिति॥ विहितं न पूजादेवो न ध्यायि न स्व अपयानं उपेक्षान्न देव वियानं प्राक्

सैवमन्त्रकाश्रीकण्ठादेवं वरदं सोमपं॥ पञ्चतिः सर्वे गुणोपेतः मित्र्या सीतिपुनः पुनः॥४१॥ इदं तौ
न स्थैर्यदेवे प्रालं देवं प्रीतमानसः॥ पञ्चतोपन सोमदेशं विप्रं नीलितं शंकरः॥४२॥ कामसमा
त्र्यन्तीदेवमिदं मूर्धा मामापन॥ एकं पतितगुणोपेतं नजोहं मितिशंकरः॥४३॥ तां देवदेवः
प्रीतात्मा पुनः प्राह पूर्वमेवचः॥ पञ्चकृत न कृत्यो नोऽहं पतितं देहीतिवै पुनः॥४४॥ न तत्याभविता
मद्देवहिते च मद्भक्तस्तु ते॥ देहमन्त्रगतानामाहितेसर्वेषां नद्वै विषं नि॥४५॥ तुपदेशं हि मान्त्र शेषतावे
देवहृ पितृणां॥ पञ्चानां विहितापत्नीकस्याप्यर्थन्यतिरिक्ता॥४६॥ एवं गोभीः पञ्चवार्थैंनमुम
त्यन्तामशताम्रवे मेहनस्त्रानयोर्यां रहितं नववाग्नता॥४७॥ सैषादेवीहचित्रदेवज्ञपूपचा
नामेकास्वकृतेने हृकर्मणा॥ स्वर्गम् रघुपतिदेवपत्नी स्वयंभुवान्नापतानन्दु पदेशे हृक्रमहश॥४८॥
इति [illegible]॥ अथ नैववचनं तेन महर्षयः सर्वे पतितं
हे वियानं॥ नैवपाकं विहितं न पूजा पयानं न देवेरम पयानं वियानं॥१॥ हिमसत्प्रोऽपि रनिव
र्तनीयः स्वकर्मणा विहितं नेह किंचित॥ कृतं निमित्तं हि वैकहे तोलं देवरम पर्यन्तं वि
यानं॥२

327

३२९

तेजयपनं कर्तं प्रयुक्तं॥२॥ ग्रन्थोऽर्थः नाम स्वकर्मणा तु दासीनतेनेन विहितं सिद्धं निमित्तं नयः॥३॥

दिव्यं योनमानं दिविविदितं चामोदे [illegible] ॥ १ ॥ [illegible] ॥ २ ॥ [illegible] दिन

इदं चान्यन्नीतिरूपं वेद [illegible] दिव्यमन्यत् [illegible] तेच ॥ दिव्यं च [illegible]
दिव्यैः [illegible] ॥ ३ ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ ४ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ५ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ६ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ७ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ८ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ९ ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ १० ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ११ ॥

[illegible] ॥ १५ ॥ ४५ ॥

म॰ भा॰
आ॰ पं॰
१९९

चतुर्युजानामश्वानां चतुर्युजां हेमसमर्थखलीनं मुखस्थरज्ज्वां लिपामकं तया समाः तिमाषया प्रसिद्धं तथा
प्रसंगाद्धेमखलीनं युक्तानां नमालिनां ॥ ४५ ॥ पद्मानि गजानां मस्तकस्थानि चिह्नानि तद्वतां पद्मिनां श्रीमतां वा यद्वा

क्रमेण चानेन नराधिपात्मजा वरस्त्रियास्ते जगृहुस्तदा करम् ॥ अहन्यहन्युत्तमरूपधारिणो
महारथाः कौरववंशवर्धनाः ॥ ४३ ॥ इदं च तत्राद्भुतरूपमुत्तमं जगाद देवर्षिरतीतमानुषम् ॥ म-
हानुभावा किल सा सुमध्यमा बभूव कन्यैव गते गतेऽहनि ॥ ४४ ॥ कृते विवाहे द्रुपदो धनं ददौ
महारथेभ्यो बहुरूपमुत्तमम् ॥ शतं रथानां वरहेममालिनां चतुर्युजां हेमखलीनमालिनाम् ॥ ४५ ॥
शतं गजानामभिपद्मिनां तथा शतं गिरीणामिव हेमशृङ्गिणाम् ॥ तथैव दासीशतमग्र्ययौ-
वनं महार्हवेषाभरणाम्बरस्रजम् ॥ ४६ ॥ पृथक् पृथग् दिव्यदृशां पुनर्ददौ तदा धनं सौमकिरग्नि-
साक्षिकम् ॥ तथैव वस्त्राणि विभूषणानि प्रभावयुक्तानि महाधनानि ॥ ४७ ॥ कृते विवाहे तत
न पाण्डवाः प्रभूतरत्नामुपलभ्य तां श्रियम् ॥ विजह्रुरिन्द्रप्रतिमा महाबलाः पुरे तु पाञ्चाल-
नृपस्य तस्य ह ॥ ४८ ॥ इत्यादिपर्वणि वैवाहिकपर्वणि द्रौपदीविवाहः ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ पाण्डवैः सह संयो-
गं गतेनापि न द्रुपदस्य ह ॥ न बभूव भयं किंचिद्देवेभ्योऽपि कथंचन ॥ १ ॥ कुन्तीमासाद्य ता नार्यो
द्रुपदस्य महात्मनः ॥ नाम संकीर्तयन्त्योऽस्याः जग्मुः पादौ स्वमूर्धभिः ॥ २ ॥

हेमशृंगिणां गिरीणामिव हेमशृंगाणां नानारत्नप्रभावयुक्तानां राजपत्न्यानां महत्कोणमहत्त्वं शिखरक
लक्षणादियुक्तं लक्षणं ॥ ४२ ॥ ५ ॥ इति श्रीमहाभारते भावदीपे वैशम्पायनीये द्रौपदीविवाहः ॥ ॥१९९॥

१९९

328

२॥ योयं पश्यतः नेनेनिलं न न पुण्यं न स्यावै वाहिकन्तान्॥ योप्यमितिपाठे॥ कृष्णाय हि न च कुरुं न ते

यथैव कुसोऽन्न वनी शरत्ला त्रै कान्तानी ने भगवान् दानं॥ सचाप्येवं च रमित्य त्र वी तं ताहे ते हि वे
नापरमिथः ३॥ ४॥ यदि चैवं विहितः पं के रे ण पर्मीय मीं वा ना त्र म मा प रा यः॥ ग र हं ति मे वि
धि व न्या मि म स्य य थो प त्नो च वि हि ते पा हि कु ष्ण॥ ४॥ वै णो पा य न नुन्न॥ न ना न्न वी ड़ ग वा
न्यमि रा ज न म थै व पु ण्य ह्म न वः पां डु वे पा ः॥ कृष्ण यो यं यो ग म पे नि च दू भाः पा नि कृष्णा या
स्नेन हृ त्य एव ॥ ५॥ त तो रा ना य त्र से न ः स पु त्री ज न्या पं म हं च कृ न्न न द श्य॥ स मा न य मा
स द ना च कृ ष्णा मा हा इ र त्नै वे च कृ मि वि मि स्या॥ ५॥ न न त्ला दे स ह दो न पश्य स मा न न मः स हि
ना मं शि ण्य॥ दुष्कृ वि वा हं प र म प्र नी ना हि जा स्यो यो रा स्य य का प्र या ना ः॥ ६॥ त तो स्य वे प मा स्य
न्नो प प्रो मि नं वि ली प मो न्न भूपि ना नि रं॥ व सो व र सो वि चि न मा व मो न मो प
या नि मि ल ना र का चि तं॥ ७॥ न न त्ला ते कौ र व पा न पु मा वि मू पि ना ः कु ड लि नो पु वा नः॥ म
हा हैव सां व र चं द नो ति ना ः कृ ता मि षे का ः कु त म ङ्ग ला कि या ः॥ ८॥ पु रो हि ते ना मि पु स मा
न व चे सा स है व यो मि न य था वि धि प्रमो॥ कु मा ण स र्वे वि वि श्व ल न ः स हो म हु षे मा गो पु मि
हो मि ते हि ता ः॥ ९॥ न त ः स मा धा य स वे द पा र गो न्न हा व मं त्रे ष्वे वि वि ते कु ता थ नं॥ पु रि शि र चा
प्यु प नी य मं त्र वि नि र्मो न धा मा स स हे व कृ ष्ण या॥ १०॥ प्र द क्षि णं नो ष्ण गु ह्री न पा लि म मा न या
मा स स वे द पा र गः॥ त तो भ्य न धा य न मा नि पा तो मि नं पु रो हि तो रा ज न ग ह हि नि र्ये यो॥ १२॥

प्र द क्षि न्य र्थः॥ हे मा य है ये पु॥ ५॥

प्रेष्याः दास्यः ॥१४॥१५॥ सहस्राणि सहस्रशो नानीयान् ॥१८॥ अलंकृतं जांबूनदं आकरेषु — नादिना अनन्यादिनं नीवीकृतं यान्यपरिवर्त्य स्थापयितुमालयापरावीकृतमप्यलंकृतमित्यपादे पिंडीकृतं कृताकृतमि

ण्यायनानां नानाविविधानि सहस्रशः ॥ वैदूर्यवज्रचित्राणि पात्राणि भाजनानि च ॥१७॥
नृपयोग्यानि वस्त्राणि तथा शय्यासनानि च ॥ प्रेष्याः संप्रददौ कृष्णा नानादेश्याः स्वलंकृताः ॥१८॥
गजान्विनीतान्भद्रांश्च सदश्वांश्च स्वलंकृतान् ॥ रथांश्च दान्तान्सौवर्णैः शुभैः पट्टैरलंकृतान् ॥
१९॥ कोटिशश्च सुवर्णं च तेषामकृतकं तथा ॥ वीथीकृतममेयात्मा प्राहिणोन्मधुसूदनः ॥२०॥
तत्सर्वं प्रतिजग्राह धर्मराजो युधिष्ठिरः ॥ मुदा परमया युक्तो गोविन्दप्रियकाम्यया ॥२१॥ इत्या
दिपर्वणि द्रौपदीस्वयंवरः समाप्तः ॥ वैशंपायन उवाच ॥ ततो राज्ञां चरैराप्तैः प्रवृत्तिरुपनीय
त ॥ पाण्डवैरुपसंपन्ना द्रौपदी पतिभिः शुभा ॥१॥ येन तद्धनुरायम्य लक्ष्यं विद्धं महात्मना ॥ सोऽर्जु
नो जयतां श्रेष्ठो महाबाणधनुर्धरः ॥ यः शल्यं मद्रराजं वै प्रोत्क्षिप्यापातयद्बली ॥२॥

निपातैर्वर्तितमप्यर्तितं च ॥१९॥ इति श्रीमत्पद[illegible]मर्यादाधुरंधरचतुर्धरवंशावतंसगोविं
दसूनोः श्रीनीलकंठस्य कृतौ भारतभावदीपे [illegible] द्रौपदीस्वयंवरांतग्रंथार्थप्रकाशः ॥ त
तो राज्ञां चरैराप्तैरित्यादि चरैः चारैः ॥२॥

329

सोमा प्रनसोनहिकरुाभन्नवरं सोमं ॥ १ ॥ ६ ॥ जीवः आयुष्मान्सेनतिप्रह्लः ॥ २ ॥ अभिधिचासदाभि

कृष्णाच सोमसंवीताकृत वैनक मंगला ॥ कृताभिवा स्नानाद्यमानसोमसहृ कृतांतनसिः
३ ॥ रूपलवाणांशदनामाथीसाचारसमन्विता ॥ दीपदीमवरं तेमाशदृथाः पीर्वचनं नत्तयां ॥ ४ ॥
यथैशाणीहरिदयेक्षाशचैवविभावसो ॥ रोहिणी चयथा सोमेदमयंतीयथानले ॥ ५ ॥ यथा
वैश्रवणोभद्रा च शिवैवा यार्हं पती ॥ यथा नारायणो लक्ष्मी तथा नंभवभर्तृ ॥ ६ ॥ जीवसवीरस
मीद्वेवकृसोपासमन्विता ॥ रमणा भोगसंपन्ना पत्युर्नापतिव्रता ॥ ७ ॥ अजितायी नागनानाय
नूदनावां तनयाग्रहान्ना ॥ पुनर्धन्या धथा या यं शयक्रांते न तेसमाः ॥ ८ ॥ कं रूतां गवम खेवृग
द्वृन्नगारेवृच ॥ मनन्तमभिषिज्यस्वन्तपतियं मंत्रस्तां ॥ ९ ॥ पतिभिर्नितिनाम्बीतिक्रमेण
महाबले ॥ कृष्णाशुणमास्वीमयमेयेमहाक्रतौ ॥ १० ॥ इत्येवं या निम्ना निगणवंतिग
णान्विते ॥ नानामहिंनक स्नानि हविनीयाय दंशानं ॥ ११ ॥ या चनाभिनंदामि वर्धयैसोमसं
हृतं ॥ नथाययोभिन्नक्षिप्राजानपुत्रांमणान्वितां ॥ १२ ॥ चैशपा यनउवाच ॥ ततस्तहृतन दाक्षः
पांडुनं प्राह्णिदिगिः ॥ वैदूर्यमणिचित्रशणि हेमान्वम्ब्राणि च ॥ १३ ॥ वासांसिच महार्हाणि
नानावर्णानि माधवः ॥ कंबलाजिनरत्नानि स्पर्शवंति शुभानि च ॥ १४ ॥

पेकंपाप्रहिन्तपतिपद्मभिधिकंग्रनानमन ॥ ५ ॥ देवप्रघ ॥ १५ ॥

म

१५=

१४॥ वेवार्थे कस्यामसत्ताः॥१२॥ चलनत्वरितानार्थमानोयनाभिन्नर्थः॥२४॥२५॥ गतश्रीः नष्टश्रीः कःम

विडूरथस्तथा तां च नाट्यो यद्रीयां डवैर्हतां॥ श्रीकृष्णो धर्मराजं स्म भ्रमरं रीपीनपानकानां॥१९॥ ततः
प्रीतमनाः चक्राय नरपुंभिः वंदनानो॥ उवाच हि प्रणाम करवोवर्धनाः इति विस्मितः॥२१॥ वैचित्रवी
र्यस्तुनपो निपपात विडूरथस्तदा॥ अत्रवीत्परमप्रीतो हि प्रणाहिष्ठोति मारत॥२२॥ मन्यते संबु
नपुत्रेश्चेष्टं दुपदकन्यया॥ दुर्योधनसमविज्ञानास्यतां च वदनैरेश्वरः॥२३॥ अथ नाना रत्नानां वामासहे
पद्माम्भमचलेवकुः॥ आनीयतां वै समृद्धे निधत्तं ते युध नेननं॥२४॥ अथाप्यथमाहिड रंभाचाहो
पांडवान्हतान॥ सर्वान्कृपालिनो वीरान् जितांडु पटेनहः॥२५॥ नेत्रांसंवेधितस्यानान्व हृत्व
लसमन्वितान्॥ समागतान्पांडवैर्येस्तु शिष्येवलपर्वते॥२६॥ सूत उवाच॥ यथैवपांडवैःपु
त्रान्हतन्श्रेवामयधिकःसम॥ यथा चामयधिकाबुद्धिर्भमतान्गानिनच्छाए॥२७॥ येनैव कलि
नो वीरो मित्रवंतस्त्रयस्तु वाः॥ तेषां पूर्वंधितस्यानेवहृव सुमहाबलाः॥२८॥ को हि दुःसहः॥
मित्रंहतः सवीयवः॥ नष्टश्रुभः शंवेनाहं गतश्रीरिव पार्थिवः॥२९॥ वैशंपायन उवाच॥
तेन धर्मात्मना विदुरः प्रत्यभाषत॥ नित्यं भवतां तेषु हिरण्यगर्भः स्त्रैते समाः॥२९॥ ततो
दुर्योधनस्याति पापेषु विपणायते॥ सुनत्वहूमपाराग्य वचो तु नामिदं तदा॥२६॥

वेनपेस्तर्येगणदीनवचभूषेनभविनमिश्चे नमप्यनस्वर्वांपीष्ठेन॥२५॥२६॥॥

सेनांगानां रथगजादीनां पालनः ॥ ३ ॥ चित्तकान्देहे येहे न माह ॥ सप्तमैनि ॥ ५ ॥ सुग्रीव इति छेदः ॥ ग्रीव त्रि

ज्ञासमयामासंस्कृद्वेषद्वेषणमहमात्रतो ॥ न चास्य संभ्रमः कश्चिदासीत्तत्र महात्मनः ॥ ७ ॥ स
भीमो भीमसंरब्धः पाञ्चसेनांगपालनः ॥ अहं तूपयोगं तु तामुक्ता तात्पांडुनंदनात् ॥ ८ ॥ कौ
तेयात्मजन्मे श्रुतिविस्मयः सम्यगाप्त ॥ सप्त ज्ञाहि पुत्रकं नीरूपमानतारेक्ष्य ता ॥ ९ ॥ नर्जाता
मिव चनानेमत्पेनन यातिपा ॥ १० ॥ यमराजः चंतदामां पांडुनराष्ट्रं च कोपं वं ॥ कर्मणानित्यपारे
नष्टो च न कलेन चै ॥ ११ ॥ हृते स्वयं दारे चैव पतनाः सहैव ते ॥ यथायातं विप्रतगमविदिवा
णं ड्यात्मलानं ॥ १२ ॥ [illegible] यनो राजा विमनात्मानं भिः सह ॥ प्रस्थयाम्बामानलेन क
र्णेन च कृतेणच ॥ १३ ॥ विनिहतो [illegible] तेन वाह्ने ॥ तेन उः [illegible] स्तेनोद्मीउ [illegible] संर
मिवात्ववीत ॥ १४ ॥ [illegible] दीनसः ॥ नहि [illegible] नेत्वेदक श्चि
द्भनं [illegible] ॥ १५ ॥ [illegible] ॥ [illegible] पन्नपांड
वाः ॥ १६ ॥ एवं [illegible] नं ॥ [illegible] दीना विगतचेतसः
[illegible] ॥ [illegible] विप्रास्तदा ॥ १७ ॥

नैवपाठः ग्रन्थ ॥ ६ ॥ २० ॥ ११ ॥

सुख्यापनं तत्र भर्तृणां त्यागः सचक्रवर्तनं दोषेण कारणं अच्छेदेन तत्र भर्तृष्वेव संप्रदर्शयां
इत्याने वचनतस्थां भेदयंतं जनस्थं तां लक्ष्यमहे इति शेषः ॥ १२ ॥ १३ ॥ न पादभाक् न चतुर्थांशभाक् ॥

म॰भा॰
आ॰प॰
३३२

सुख्यापयंतं वाक्यसां बहुनाम कर्ता हितत ॥ अथवा पाण्डवांस्तांस्तु भेदयंतं जनस्थतां ॥१४॥ भी-
मसेनस्य वा राजन्नुपायकुशलैर्नरैः ॥ मृत्युर्विधीयतां छन्नैः स हि तेषां बलाधिकः ॥१५॥ त-
माश्रित्य हि कौन्तेयः पुरा चास्मान्न मन्यते ॥ स हि तीक्ष्णश्च शूरश्च तेषां चैव परायणम् ॥१६॥ त-
स्मिंस्त्वभिहते राजन्हतोत्साहा हतौजसः ॥ यतिष्यन्ते न राज्याय स हि तेषां व्यपाश्रयः ॥१७॥ अ-
जेयो ह्यर्जुनः संख्ये पृष्ठगोपे वृकोदरे ॥ तमृते फाल्गुनो युद्धे राधेयस्य न पादभाक् ॥१८॥ ते जा-
नाना दौर्बल्यं भीमसेनमृते महत् ॥ अस्मान्बलवतो ज्ञात्वा न यतिष्यन्ति दुर्बलाः ॥१९॥ इहाग-
तेषु वा तेषु निदेशवशवर्तिषु ॥ प्रवर्तिष्यामहे राजन्यथाशास्त्रं निबर्हणम् ॥२०॥ अथवा दर्शनी-
याभिः प्रमदाभिर्विलोभ्यताम् ॥ एकैकस्तत्र कौन्तेयस्ततः कृष्णा विरज्यताम् ॥२१॥ प्रेष्यतां चैव राधेय-
स्तेषामागमनाय वै ॥ तैस्तैः प्रकारैः सन्नीय पात्यन्तामाप्तकारिभिः ॥२२॥ एतेषामप्युपायानां य-
स्ते निर्दोषवान्मतः ॥ तस्य प्रयोगमातिष्ठ पुरा कालोऽतिवर्तते ॥२३॥ यावद्ध्यकृतविश्वासा द्रुप-
दे पार्थिवर्षभे ॥ तावदेव हि ते शक्या न शक्यास्तु ततः परम् ॥२४॥ एषा मम मतिस्तात निग्रहाय
प्रवर्तते ॥ साध्वी वा यदि वासाध्वी किं वा राधेय मन्यसे ॥२॥ इत्यादिपर्वणि

२१॥ एकैकः कौन्तेयः अप्रलोभनीयः तत्र तेषु ततः प्रलोभनात् ॥ २१॥ सन्नीय ऐकान्तीनाः ॥ २२॥ यातव्याः
यातनयित्वा इति शेषः ॥ २३॥ २४॥ २५॥ इति श्रीभारते व ये ४ ॥

३३२

सपलव हिंनलकलाहद्दिभिनिवापादः सपहः हेवा श्रेष्ठ हिपतः पाहल ॥ ५ ॥ प्रामकालस्त कर्मणः शे
कीर्थाकनेमालं ॥ १ ॥ अधायः ॥ अहं निवेकन्यकौकलं ॥ २ ॥ इं गिनेष्व हितेः ॥ २ ॥ यवकनेव ॥ ३ ॥ अ

सन्नियो निद्रयस्यलं देहेवल्कं लपाकुमः ॥ चिविकमिनिवश्यामः किंनचेदं चिकीर्षितं ॥ ३ ॥
सपलव हिंयलालमन्यसेल द्विमानमनः ॥ अभिषोपिचयं वनः समो येहिपनावर ॥ ४ ॥ अन्य
स्मिन्नपकनेवो नमन्यकुरुध्वेनवा ॥ नेयांव लविचानेद्दिकनेमलान निन्यपाः ॥ ५ ॥ नेवयं
प्रामकालस्य चिकीर्षामन्त्रयामहे ॥ यथानोनग्रसे पुण्लेमपु ववलवांपवान ॥ ६ ॥ इसदि वे
हि ॥ शतराष्ट्र उवाच ॥ अहमप्येवमेवेन चिकीर्षामिय थापुवां ॥ विवेकनाद्दमिच्छामि नाका
र विदुरं प्रति ॥ ७ ॥ ननसेवां गुरुमिनीवकीर्मेयामिविशेषतः ॥ नाचचप्रेनविदुरामसामिप्रायथि
गिनेः ॥ ८ ॥ यस्माले मन्यसे प्रामं नन्दुवीहि स योधन ॥ तथेषमन्यसेयच प्रामकालं वदास्पनो ३
दुर्योधन उवाच ॥ अयतोकृपालोविदेः सहमेपनवा सिनिः ॥ कं नीपुत्रानोदया मोमाद्दीपुत्रौ
चपांडवो ॥ ३ ॥ अयवाद्दुपदेशनाम्प हृद्दि विनमेच येः ॥ पुत्रान्प्रापुलेोक्तनामसमान्पांश्चैव
सर्वपा ॥ ४ ॥ परिमन्ये धयानाकंनी पुत्रं पुतिष्टिरं ॥ स्पपनेव चनानेपां निवासे रोचयं ननेः ॥ ५ ॥
हेपांदेपवहाडवलोर्य नद्यकृत्यवकं ॥ ते भियमौलमेवमनः कर्वेन पांडवाः ॥ ५ ॥ अथ
वाकूपालाः केचिदुपायनिपुणाल राः ॥ ततेन तः पार्थानोदयंल नराननः ॥ ८ ॥

सकारिभिरवंचकैः ॥ ७ ॥ मियमानाः अस्सनः एवमवंनः ॥ ८ ॥ ॥ ॥ श्रीरामाय राम ॥

२३॥ आनयामस्त्वदर्थं ॥२६॥ २४ ॥

काष्ठानि ध्रुमूलानि सिमाणि च फलानि च ॥ यावन्नेषां तां यानि तावद्धि क्रमपार्थिव ॥२३॥
यावच्छ्रद्धा जापं चार्स्त्वेनोघ मेकरूनेमनः ॥ सहस्रैर्मंत्रवीर्यैस्तावद्धि क्रमपार्थिव ॥२४॥
यावत्तु स्थानि वार्सेयः कर्थन्या रस्वा हिंनी ॥ गजस्थैर्यांउ रेथानां पांचाल्प सदनं प्रति ॥२५॥
वहूनि विविधान्योग्यान्यप्येव चक्रे वलं ॥ न स्यात्स्महि क्रमस्यपांड वार्थे कथंचन ॥२६॥
विक्रमेण च महीश्रामासंतेन महात्मना ॥ विक्रमेण च लोकार्णीन्निनवान पांडवाःसनः ॥२७॥
विक्रमं च प्रयांस्तं निदर्शियस्यविपांपते ॥ स्वकोहि यमिः स्वर्गं लाविक्रमः पार्थिवर्षभ ॥२८॥
नेवलेनवयं राजन्नस्य नाचनंत्रितिवत्ता ॥ प्रमप्तद्वंदर्शी बुमानयामेहपांडुवान ॥२९॥
न हि स्नानस्नानदानेन नमेदेनचयांडवाः ॥ ध्यानं सायधिलं स्याद्धि क्रमेणैवनान्यहि ॥ मना
न्विक्रमेणाति वैमासमादिलाभस्त्वमेहिनी ॥ मनो नान्यप्रपप्रपाप्तिकार्यो पांचं जनाधिप ॥३०॥
वैशंपायन उवाच ॥ श्रुत्वा नारायणवचो धृतराष्ट्रः प्रतापवान ॥ अभिहृष्टतनःपश्चाद्धि
दं वचनमब्रवीत ॥३१॥ उपपन्नं महाप्राज्ञ कृष्णेनौहे स्वजनार्दने ॥ नपि विक्रमसंपन्नमिदंव
चनमीर्षितं ॥३२॥ अयं एव जनमी [illegible] विदुर एव च ॥ एवं च कृष्णं श्रुद्धिं भवेयानःस
कोदया ॥३४॥

332

दृष्टोयंनेनि ॥ ३ ॥ नानाप्रकाराः सहायवंतः नरश्रेष्ठ नानाप्रकाराः ॥ ४ ॥ दिव्यरूपेणनरेश्वनिर्मितो
न शोकिता ॥ पानिर्मलः नन [illegible] दिव्यप्रमाणं मोक्षे [illegible] पाको [illegible] निस्पर्शे ॥ ५ ॥

कः [illegible] ॥ [illegible] निमित्तिः ॥ न [illegible] फलाः [illegible]
[illegible] ॥ ६ ॥ एवंमेव [illegible] नानाप्रकारा ॥ निरहीनेन [illegible]
किनानाप्रकारा ॥ ७ ॥ [illegible] ॥ [illegible] किना
नेवर्णितं ॥ ८ ॥ नानाप्रकाराविदे [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ९ ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ १० ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ११ ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ १२ ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ १३ ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ १४ ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ १५ ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ १६ ॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] विचारय ॥ १७ ॥

[illegible] ॥ १ ॥ [illegible] ॥ २४ ॥

प्रियं न तेषां वनितस्य कामो नाशीन तथ्यं न तापं ॥ ५ ॥ हे वेदा गुरुकं गत्वा जिज्ञानानि ॥ २५ ॥ समं नवं संमतं कः

स्त्री॰ ॥
अ॰ प
३३४

न मितं समग्रपानि युधिष्ठिरं कृष्णकृष्णो चितं ॥ मनुष्यं पुमत्कादो पूर्वे कामात्मनः कृष्ण ॥ २२ ॥ द्रोणा
प्रियं ने पार्थो हि द्रोणा नीतिनिसाष्ट्या ॥ द्रोणा गुरोचनः पार्थो न तत्कामो स्वयं गतः ॥ २३ ॥
यदा प्रासानि दृष्ट्या लोके कं निमोजमहनाहता ॥ तदा प्रसनि मां धारेन प्रतोक्ष्य मि वीतिनं ॥ २४ ॥
लोके प्राणनुनं कं विद्युत्नाकं नीत यथा गतं ॥ न चापि दोषेण तथा लोके मन्ये मरोचनं ॥ २५ ॥
यथा नां पुरुष प्राज्ञो लोको दोषेण गच्छति ॥ २६ ॥ न हि दृष्टो विनतेषां न चकि ल्विष नाशनं ॥ २७ ॥
समं तत्कं महाराज पांडवानां च दर्शनं ॥ २८ ॥ न चापि तेषां वैराणां जीवतां कृष्णनंदन ॥ पितृ
णः पायसप्रासान मर्पितत्सुरतना स्वयं ॥ २९ ॥ ते सर्वे स्वर्गिता धर्मे सर्वे चैव कचेतसः ॥ धर्म
णा नित्यलोकान स्वेग तत्रे विपोचन ॥ ३० ॥ यदि यमे त्वया कार्यं यदि कार्यं प्रियं च मे ॥ देवमद्य
दिकं नं यानेषां समर्थं प्रदीयतां ॥ ३१ ॥ इत्यादिपर्वणि ॥ दैत्यवाच ॥ मं त्रायसमर्पानीतेर्ष
नराप्तृहि तेर्ष प ॥ यस्मा समर्थो यथा सं च बान्धवा तन स्वसमः ॥ ५ ॥ मम मापेष्टा मि नित्ला नया
श्री समस्य महात्मनः ॥ संविमआत्मवैतानेदायधर्मेण बहतानन ॥ ५ ॥ मे यानां द्रुपदयाप्त्वनः
कश्चित् त्रिपंवदः ॥ वक्तं वेरल मा दाय तेषामर्थाय मारत ॥ ३ ॥

333

३३७

तेषां ॥ २५ ॥ अथ धर्मेण जनलहृदाहृदिना ॥ २२ ॥ ... ॥ मं त्राय हिते तेर्षितैः ॥ १ तेषां पांडवानां ॥ २

२४ ॥ प्रथमाध्यायः ॥ नरोचनेऽरति ॥ २२ ३ ॥ ४ ॥ ५ ६ ॥ ७ ॥ मधुरेणाभीक्ष्णा ॥ ८ ॥ २२ ॥

नन प्राणानाथनानामर्के नोविशोः समरूपस्य प्राः ॥ प्राणनाशो मद्दाराजनंत्र याममर्वेन दा ॥ २

स्मादिपदेनेति ॥ भोज्यानाच ॥ नरोचनेनचित्र्य हो मे पांडु शे मेः कथं चन ॥ यथैव पूर्न रा प्रा

मेन यथा पांडुर संपाय ॥ ३ ॥ गांधार्या स ययाशुवालयाः कं नोऽन्न नाममम ॥ यथा च ममसते

द्या पनरा पूर्न यथानर ॥ ४ ॥ य श्याच ममराजपुत्र मा र्यां पनमानने ॥ नयाकस्य लाम्सर्वेषा

मन्ये याश्चो पिपासिन ॥ ५ ॥ एवं गांनेचित्र हूं ने नेरोच यसंयाय यदी रे देंपनाम पूर्व स्व निः ॥ ने

यामपीड्य विनाम सरान्नाराजं चिन्नयै वकहू नमाने ॥ ६ ॥ ते यं पनय याराज्ञं नमिदं ना

नयस्य शि ॥ ममयोन्सक मिन्ये ने विपय्यं नि पांडुना ॥ ७ ॥ यदि राजं पननेपाम्राः पांडवेया

ययाविन ॥ कनय वनना पौर्दभा रन स्पा सिक स्य चिन ॥ ८ ॥ अथ पूर्वे राजं पुने प्राप्त वा

नारत धभ ॥ नेविक रमननया मा ः प्रतीमे चेति मेमर्ति ॥ ९ ॥ मधुरेणो वाग्यस्पने याम धेय

दीयनं ॥ एन दिश्य यश्या दृढ हिने सचन नस्य ॥ १० ॥ अनोन्या पाचेतिकि पनेन हिनेनाम

विया ति ॥ नवाणकीर्ति सक लाम विपानि नसंपाय ॥ ११ ॥ कीर्ति रत्नमानि प्रकीर्ति

हिपरसंबचे ॥ नह की ने मन यम्ज्जी विनेय कसंस्ने ॥ १२ ॥ यावत्कीर्ति मेन यस्य नम

एतस्य निकोरव ॥ नाचनीवति गांधारे नह कीर्ति लनपानि ॥ १३ ॥

म॰भा॰
शा॰प॰
३५२

नन्वेनं नंगो वेककृत्यं मह्ये योनानमंत्रयोयमित्याशंक्यनं नंमामामासत्ताद्वि सोनन्तं नरंमाविमाह ।। इष्टेने ति ।। इष्टेन मित्रश्रेष्ठेन वलामनः संकल्पोलप्रकृत्येन पाञ्चहिनेक्षणानाथिस्वामिहितन वदामास मानेने नभ्रनत तान्समनाञ्चयाशः श्रुयान्मंत्रं मतंनासाधूनांसामिनंमनेइदंनुनि: श्रेयसंकत्याणंकथंकर्यं न ।। नकथमिति ।। पाइमित्रेहिपानयत्येवनोहिनाप्तमश्चं ।। २४ ।। ननस्य वमित्रवलनष्पापाप्रकेन याचस्वं वेत्रानास्यासम्यसंगाय्रत्याशक्तदेवमेवसापरेबहिद्मामादिद्वेनतिस्याह ।। नमित्राणीति ।। मि

तुष्टेन मनसा योगी वै प्रकृत्यैनां न तापनः ।। स्तुयात्ति: श्रेयसंज्ञामकृत्यंकर्यांसतां मतं ।। ४ ।।
न मित्राण्येव च कृत्ये प्रश्रयेण च याचका ।। विधिदृष्टं हि सर्वं स्यात् देवाय दिवा सदा ।। ५ ।।
कृतं न प्रतीतो कृतं न प्रतीतो बालो ह दृश्यमानवः ।। समहींसहायस्य सर्वं सर्वत्र विदुर्नि ।। ६ ।। प्र
यतेहि पुराकृस्त्रिदंडवीचरन्तीश्वरः ।। आसीदुग्रजयदैवराजामायया नाम हीविलां ।। ७ ।।
महीनः करणैः सर्वैः कृत्स्नामप्यपरमोन्नतः ।। अमात्यसंस्थः सर्वेषु कार्येषु वा भवनद ।। ८ ।।
नष्टामात्योमहाकर्मिविभूवैकेश्वरालदा ।। सबलेव वलमात्मानमन्यमानोऽवमन्यते ।। ९ ।।

त्राणिसाधूनि श्रर्थकृत्येष्कार्यसंकटेषु श्रेयसेदन यायनाशायवानप्रभवंतिहि मुख्यान विधि पूर्वं प्रयत्नपूर्व कहेन कसर्वं सत्रोदिकं ।। २ ।। एनदेवस्पष्टयति ।। कृतेनेति ।। सर्वं दैवोपनीतंस वं देशकालेच ।। ३ ।। प्रयत्नात्राधिकामाह ।। प्रयतेइति ।। ईश्वरः समर्थः ।। राजन्यदेहेनराज्य केनना रे ।। ७ ।। करणैरश्ववरादिभिः हीनो विकलः उत्साहएव परमो जीवतीतित्वानदेहेन यसंस्थः अमा त्यसंस्थः अमात्याधीनः ।। ८ ।। अवमन्यते राजानमिति शेषः ।। ९ ।। राम ।।

पो॰

३५२

334

[illegible]

[illegible] ॥ कर्त्तोवाच ॥ [illegible]

[illegible]

ग्राम्यं भीमसुद्रेणमप्यां पंच यं नमिदं ॥ ४ ॥ मनवरौ ओंओं ॥ ६ ॥ अनयोरेनेभ्यां र्कनेतिषष्टी ॥ ७ ॥ पवनसंभे
नेअवनरस्वैवीहनं ॥ १० ॥ नेषुयांशुवेष्ण ॥ १२ ॥ ननवमंत्रिणः नव अनरस्थविपांयं विहस्वानः ॥ नै

स॰ भा॰
ग्रा॰ टी॰
३३६
नृ॰

चिंतयंश्च नयपप्णमिराजं लवस्वहजमं ॥ ग्राभ्यांशुकरपसिंहाभ्यांयोवास्यान्मत्तवापपिकः ४ ॥
३ मो हिं वयसाप्रत्तपांचक्षु नेनच ॥ समोचनसिराजेंद्रनथाधांडु हनेघुच ॥ ५ ॥ धर्मेचान
पमोराजनस्सम्यनायांचभारन ॥ रामानशंषारछेष्ठे वगयाश्चेवनसंधायः ॥ ६ ॥ नचोक्तवना
वश्रेयः श्वरलादष्णिकिंचन ॥ नवाप्यपहृने किंचिदनयो लभ्यनेनयि ॥ ७ ॥ नाभुमोधुह
पमाश्चावनागक्षिनपाद्यि ॥ नमंत्रयेनांनश्रेयः स्वं संस्थपराक्रमो ॥ ८ ॥ प्रज्ञावंनोन
रक्षेत्प्रावस्थिंतोकेनरो ऽपिप ॥ ननिमिनममनोनेमोकिंचित्रिसेवहिष्णनः ॥ ९ ॥ इतिमेने
ष्ठिकोषु हिर्वेननेकरुनंरदन ॥ नचार्थहेनोर्धर्मसोरवनः पवलहंश्रिनं ॥ १० ॥ नेषुचेवहि
नकिंचित्संत्रयेषुयनहिदः ॥ मंत्रिणा लेनचश्रेयः प्रपसंपनिविश्चेषनः ॥ ११ ॥ अघानेहद
येगजन्विषेपलेषुवर्ननेन ॥ अंनरस्थैविहस्वोनाः श्रेयः कर्तुनेनेअवे ॥ १२ ॥

335

अवंशाश्चनेहिनंकषुः नवबैषम्यदोषमेवैनेप्रकाशायिषंजोत्पर्थः ॥ १३ ॥ राम ॥

१० नशणाकरत्नेकिंनिषेधय॥ २५॥ प्रासाद्यिकानात्पर्यमाह। किंमिति॥ नसमंदेवोवचस्सापूहये
इत्यानन्वयेइत्नेनतेविहितानांविधिप्राप्तेवननपत्लेसंप्रापादिना किंमन्यदहसान्यरायाणामहितेनाक
॥ २६॥ न
प्रणानाउपभोग्यानिक्रियोरत्नयनानिच॥ प्रासाद्देवर्षेपणेमृत्दयेपपंचद्धयेनदा॥ २७॥ ही
दादयचवसुस्सलाभालाभोपावर्धन॥ नपाहित्सवेमाययराजमसनितीहीविनि॥ २८॥ कि
नसप्तकरत्नोःसर्वफलाप्रपसप्तच॥ यतमानोपिनइष्टंनप्राप्नोकेतिनःकृतेन॥ २९॥ कि
मन्यहितहितानलेनसमसापूरूपेद्रूना॥ पादिनेविहितेनराजंभविष्यानिविपांपाने॥ ३०॥ स्व॥
पनःसर्वलोकसपस्पास्पतेनपिनकृते॥ एतेनन्ययाचेहिहितेयनमानोनलाप्रसे॥ ३१॥
एवंविदितनपावत्समंत्रिणांसापसापूनो॥ इहानांचेववोदूपमइहानांचभाषिते॥ ३२॥
इत्यायुवाच॥ विगुनेभावदेवगणयदर्शेमिरम्यान्वे॥ इहकंदयदेनोलंदोषमाखाप
वस्तुना॥ ३३॥ हितेननपरमंकर्णजवीमिकुलवर्धने॥ नयलमन्यसेइदंचूहितयन्यरमंहितं
प्रतेमन्याचेत्किंपनेयदूवीमिपरहितेन॥ कथंवोवेचितलांनिनचिरोंतोचमेमति॥ ३४॥
॥ नारायणवेकिमसहभारते॥ विदुरउवाच॥ राजनिःश्रेयसप्रयोवाच्यत्वमसितांच
वेः॥ ननसहसुमानोपवाकंसंप्रतिनिहति॥ ३५॥ प्रियंहितंचनहूकानकवाक्कृहस
नमः॥ सोकापूर्णननवोराजन्मानिरहः हितनचच॥ ३६॥ तथाहोतेनवक्तुयाभाषितंहित
मुननं॥ नवेराजननकर्णमन्यतेनहितंननच॥ ३७॥ मपीतिमावःप्रकृतेयोनयति॥ यदी
ति॥ ३८॥ तेनवमतंविसमावस्यदेपेणा॥ ३८॥ ३९॥ प्रदेयदूवीमिप्रतोन्यथा॥ ४०॥ प्रपायः रा

२५॥ बलवत्प्रत्यनीकं ॥ २५ ॥ अध्यायः ॥ श्रीकृष्णाय इति ॥ २०६ ॥

म॰ भा॰
आ॰ प॰
११०

उपदेशोपि महाराजात्राकृन देष्यनः शुरा ॥ नस्य संग्रहणं राजन्नुपदस्य विवर्धनं ॥ २२ ॥
बलवंतश्च सात्यकिर्हार्दिक्य बलवत्स विशेषतः ॥ यतः कृष्णस्ततः सर्वे यतः कृष्णस्ततो जयः ॥ २३ ॥
यच्च साम्नैव शक्येत कार्यं साधयितुं नृप ॥ को दैवशप्तस्तत्कार्यं विग्रहेण समाचरेत् ॥ २४ ॥
श्रुत्वा च जीवतः पार्थान्पौरजानपदो जनः ॥ बलवद्दर्शने गृध्नुस्तेषां राजन्प्रियं कुरु ॥ २५ ॥
दुर्योधनश्च कर्णश्च शकुनिश्चापि सौबलः ॥ अधर्मयुक्ता दुष्प्रज्ञा बाला मैषां वचः कु-
रु ॥ २६ ॥ उक्तमेतन्मया राजन्पुरा गुणवतस्तव ॥ दुर्योधनापराधेन प्रजेयं वै विनंक्ष्य-
ति ॥ २७ ॥ इत्यादिपर्वणि ॥ धृतराष्ट्र उवाच ॥ भीष्मः शान्तनवो विद्वान्द्रोणश्च भगवानृषिः ॥
हितं च परमं वाक्यं त्वं च सत्यं ब्रवीषि मां ॥ १ ॥ यथैव पाण्डोस्ते वीराः कुन्तीपुत्रा महारथाः ॥
तथैव धर्मतः सर्वे मम पुत्रा न संशयः ॥ २ ॥ यथैव मम पुत्राणामिदं राज्यं विधीयते ॥ त-
थैव पाण्डुपुत्राणामिदं राज्यं न संशयः ॥ ३ ॥ क्षत्तरानय गच्छैतान्सह मात्रा सुसत्कृतान् ॥
तया च देवरूपिण्या कुंत्या सह भारत ॥ ४ ॥ दिष्ट्या जीवंति ते पार्था दिष्ट्या जीवति सा पृ-
था ॥ दिष्ट्या द्रुपदकन्यां च लब्धवंतो महारथाः ॥ ५ ॥ दिष्ट्या वर्धामहे सर्वे दिष्ट्या शान्तः पुरो-
चनः ॥ दिष्ट्या मम परं दुःखमपनीतं महाद्युते ॥ ६ ॥ राम ॥

११०

336

मन्वाते ऽस्मानं ते ऽस्मानमिति निश्चये ॥ २० ॥ २५ ॥ निर्वेदेषु यन ज्ञानेषु ॥ २९ ॥ अध्यायः ॥ एवमेतद्दिति ॥ २१ ॥

भा॰ सं॰
अ॰ प॰
३३८

भारद्वाजो महाप्राज्ञो द्रोणः शिष्यवत्सलः ॥ मम द्रोणस्य पितस्तां कथां पालय इति ॥ ४२ ॥ राज
कृष्णपाण्डवान्सदा संबंधमीप्सितवान् ॥ कृतार्थं मन्यते ऽस्मानं तथा सर्वे पिकौरवाः ॥ ४२ ॥ ननु सा
राज्यं प्रीतिं प्रीतिकरी मता ॥ यथा संबंधकं प्राप्य स्नेहेन तथा मह ॥ ४५ ॥ एतद्विदि
त्वा न भवान्प्रत्यापयन्पाण्डवान् ॥ दुर्बुद्धिं धृतराष्ट्रं तं निकषो महा ॥ ४४ ॥ विपीडिता
दीर्घकालमेते चापि नरर्षभाः ॥ उत्तानां न गरं द्रष्टुं मविच्छंति तथा पृथा ॥ ४५ ॥ कृष्णामपिच
पांचालीं सर्वाः कुरुवरस्त्रियः ॥ द्रष्टुकामाः प्रतीक्षंते पुरं च विषयाश्च नः ॥ ४६ ॥ स भवान्पांडु
पुत्राणामाज्ञापयतु माचिरं ॥ गमने सह दाराणां मे तदत्र मतं मम ॥ ४७ ॥ निसृष्टेषु तथा
राजन्पांडवेषु महात्मसु ॥ ततो ऽहं प्रेषयिष्यामि धृतराष्ट्रस्य शीघ्रगान् ॥ ४८ ॥ आगमिष्यंति
कौंतेयाः कुंती च सह कृष्णया ॥ इति श्रीमहाभारते आदिपर्वणि विदुरागमने राज्यलंभपर्वणि ॥ एवमेतन्महाप्राज्ञ यथा
त्थ विदुराद्य मां ॥ ममापि परमो हर्षः संबंधे ऽस्मिन्कृते ऽनघ ॥ १ ॥ गमनं चापि युक्तं स्याद्दृढ
मेषां महात्मनां ॥ न तु तावन्मया युक्तमेतद्वक्तुं स्वयं गिरा ॥ २ ॥ यदा तु मन्यते वीरः कुंती
पुत्रो युधिष्ठिरः ॥ भीमसेनार्जुनौ चैव यमौ च पुरुषर्षभौ ॥ ३ ॥

337

३३८

॥ न्यायतो न्यायेन क्रमेण संयुक्तं ॥ अभिगमनं नमस्कारादिना विधिना ॥ ३ ॥ १९ ॥

वैशंपायन उवाच ॥ ततो जगाम विदुरो धृतराष्ट्रस्य शासनात् ॥ सकाशं यज्ञसेनस्य पांडवानां च भारत ॥ १ ॥ समुपादाय रत्नानि वसूनि विविधानि च ॥ द्रौपद्याः पांडवानां च यज्ञसेनस्य चैव हि ॥ २ ॥ तत्र गत्वा स धर्मज्ञः सर्वशास्त्रविशारदः ॥ द्रुपदं न्यायतो राजन्संयुक्तमुपतस्थिवान् ॥ ३ ॥ स चापि प्रतिजग्राह धर्मेण विदुरं ततः ॥ चक्रतुश्च यथान्यायं कुशलप्रश्नसंविदं ॥ ४ ॥ ददर्श पांडवांस्तत्र वासुदेवं च भारत ॥ स्नेहात्परिष्वज्य स तान्पप्रच्छानामयं ततः ॥ ५ ॥ तैश्चाप्यमितबुद्धिः स पूजितोऽथ यथाक्रमं ॥ वचनाद्धृतराष्ट्रस्य स्नेहयुक्तं पुनः पुनः ॥ ६ ॥ पप्रच्छानामयं राजंस्ततस्तान्पांडुनंदनान् ॥ प्रददौ चापि रत्नानि विविधानि वसूनि च ॥ ७ ॥ पांडवानां च कुंत्याश्च द्रौपद्याश्च विशांपते ॥ द्रुपदस्य च पुत्राणां यथादत्तानि कौरवैः ॥ ८ ॥ प्रोवाच चामितमतिः प्रश्रितं विनयान्वितः ॥ द्रुपदं पांडुपुत्राणां संनिधौ केशवस्य च ॥ ९ ॥ विदुर उवाच ॥ राजन्शृणु सहामात्यः सपुत्रः सर्ववचो मम ॥ धृतराष्ट्रः सपुत्रस्त्वां सहामात्यः सबांधवः ॥ अब्रवीत्कुशलं राजन्प्रीयमाणः पुनः पुनः ॥ प्रीतिमांस्ते दृढं चापि संबंधेन नराधिप ॥ अथ भीष्मः शांतनवः कौरवैः सह सर्वशः ॥ कुशलं त्वां महाप्राज्ञः सर्वतः परिपृच्छति ॥ १२ ॥

म॰ भा॰
आ॰ श्री
३३९

१९॥ किं पुनः प्रियं न कृतं न मया पितुः सर्वं कृतं नमेव किं तिति पाठेन पाठो वा कालं कारे पुनः पाठार्थः
किं पुनर्न कृतं नमया पितुः सर्वं कृतं नमेवे ति एवं वदे वार्थः॥१९॥२०॥ नगरेण सह कुन्ती पुत्रस्य कृतं नान नगरे

ननु चावयवा वाचः पौरैः प्रियचिकीर्षुभिः॥ उदीरिता मया पुत्रं ले पांडु नादह द्यं गमाः॥२०॥ प्र
यंमप्यह रूपया आह पुनराया निधर्मैविन॥ पौनः स्वाविवदायादान्यमेंण परिरक्षति॥२१॥ प्र
यं पांडुर्महात्मानो बुनादिवजनन प्रियः॥ आगानः प्रियमस्माकं चिकीर्षुर्न ततं संशय॥२२॥ किं न
नाथ कृतं तेनान सर्वे यानः परं प्रियं॥ यन कुंजीसुतान्वीरान्नगरं पुनरागताः॥२३॥ यदि दित्तय
दिहृतं विघ्नतेयदि नस्वपः॥ तेन निर्हतं नगरे पांडुनाशाप्रदापितं॥२४॥ नमम्ले सुतराष्ट्रस्य
भीष्मस्य च महात्मनः॥ अन्येषां च सुहृदां च कुः पादाभिवंदनं॥२५॥ कृतान्तकृपाल्लप्र
ध्रुमर्वेण नगरेण च॥ स्या विषो नाश्वे च स्मानिपुत्रराष्ट्रस्य शासनात्॥२६॥ विश्रांतालेम
हात्मानः कंचित्कालं महाबलाः॥ आहूता धृतराष्ट्रेण राज्ञा शांतनवेन च॥२७॥ धृतराष्ट्र उवा
च॥ मान्यभिः सह कौंतेय निर्बोध गदतो मम॥ पुनर्नैवि ग्रहो माभूत्ववांडव प्रथम्यमाविश॥
२८॥ नचवोवसनेन स्तूत्रक भिष्ट कः प्रताधिं नुं॥ संरक्ष मानानाम्याग्निन्त्रिंदशा निववज्रिणा॥
आर्धराज्यस्य संप्राप्य खांडवप्रस्थमाविश॥२९॥ वैशंपायन उवाच॥ प्रतिगृह्य तत्तद्वाक्यं
तथं सर्वे प्रणम्य च॥ प्रतस्थिरे ततो घोरं वनं तन्मनुजर्षभाः॥३०॥

णाविः कृतं कृपाल प्रसङ्गः॥२५॥२६॥ पार्थेनाज्ञेनेन॥२७॥ घोरं वनमिति॥ मसेर ईं सहस्र त्यो
देशः पांडवेभ्योद तु इति ज्ञायते॥२९॥

338

३३९

र ॥ सविहारं सलीलं ॥ ४९ ॥ प्रतिग्रहाय पांडूनामनाय ॥ ५० ॥ ५१ ॥ कौतेहलेनदर्शनेच्छया ॥ १५

गमकृलोचधर्मेतोनदगगच्छेनपांडवाः ॥ एतौ हि पुरुषव्याघ्रावेषां प्रियहिते रतौ ॥ ४ ॥
पु विदुर उवाच ॥ परं वंतोवचंगतं नंत्यविनर्वे सहानगा ॥ यथा तदुपासिनः सौम्या
नन्कविप्रासहेवयो ॥ ५ ॥ वैशंपायन उवाच ॥ ततो वीक्षवीक्षा सदेवोगमनेरोचनेमम ॥ य
थातामनयतेयातनाउपदः सर्वधर्मविन ॥ ६ ॥ दुर्योधन उवाच ॥ यथैव मनयने वीरो दपगाहे:
पुरुषोत्तम ॥ सामकालेमहाबाहुः सा हि निश्चित मामम ॥ ७ ॥ यथैव हि महाभागाः
कौन्तेयामम संप्रने ॥ न थैव चा सदेवस्य पांडुपुत्रान नंदपाय ॥ ८ ॥ ततसायति कौन्ते
यः पांडुपुत्रो युधिष्ठिरः ॥ यथो पांडु पुरुषव्याघ्रैः श्रेयो प्रायतिकेशव ॥ ९ ॥ वैशंपायन
उवाच ॥ ततलेसमनज्ञातानाउपदेनमहात्मना ॥ पांडवाश्चैवकृष्णस्य विदुरश्च महा
मते ॥ १० ॥ प्रादायद्रोणदीकृसांकंतीवेवयशाहिनो ॥ सविहारं सलेनमन्नेगतंना
गसाहृयं ॥ ११ ॥ प्रनाचा प्रागगनान्वीरान्ननराप्रोजनेस्वरः ॥ प्रतिग्रहाय पांडूनां
प्रययासासकौरवान ॥ १२ ॥ विकर्णं च महेष्वासं चित्रसेनं च भारत ॥ द्रोणं च परमे
ष्वासं गोतमं कृपमेव च ॥ १३ ॥ तेलेपरिवृता वीराः शोभमाना महाबलाः नग
रं हास्तिनपुरं शनैः प्रविविशुर्नरर्षभाः ॥ १४ ॥ कौतेहलेनननगरं दीप्यमाननिवाभ
वत ॥ नततेपुरुषव्याघ्राः शोकदुःखविनाशनाः ॥ १५ ॥

स॰ मा॰
आ॰ पं॰
१४०

त्वपोवनं सरहस्यकं ॥ ३९ ॥ ४४ ॥ प्रजपानिपनैतैः स्थलीलापाचनाम्र्यैः कृत्रिमैः पर्वतै रत्नैः स्थगोदधिज

नत्रस्मोपितावे देवौ कौरवस्यनिवेशनं ॥ पृथ्व्यमेधनसंपूर्णं पनाख्यस्य त्वपोवनं ॥ ४० ॥
नत्वागालन्दिजा [illegible] गानस्तर्वे वेदविदितवरः ॥ निवासं देवगंधर्वनिस्तस्वैमाथाविरलया
४१ ॥ वल्लिजसपाषपुलवनाना द्विजभीयुनार्षिनः ॥ सर्वे षिस्य विरलत्नवासपाम्माणम
नेलद ॥ ४२ ॥ उद्यानानि च रम्याणि नगरस्य समंततः ॥ आम्रैराम्रातकैर्नीपैर्धवैः कैः संपकै
र्लतः ॥ ४३ ॥ पुन्नागैर्नागवृक्षैश्च लकुचैः पनसैस्तथा ॥ सालतालतमालैश्च बकुलैश्च केत
कैः ॥ ४४ ॥ मनोहरैः पुष्पवृक्षैश्च फलभारावनामितैः ॥ प्राचीनामलकैर्लोध्रैरंकोलैश्च सपु-
ष्पितैः ॥ ४५ ॥ जंबूभिः पाटलाभिश्च कुब्जकै रतिमुक्तकैः ॥ करवीरैः पारिजातैरन्यैश्च विविधै
र्द्रुमैः ॥ ४६ ॥ नित्यपुष्पफलोपेतैर्नानाद्विजगणायुतैः ॥ मत्तबर्हिणसंघुष्टं कोकिलैश्च समाकु
लं ॥ ४७ ॥ गृहैश्च विमलैर्लिंबि [illegible] लताग्रहैः ॥ मनोहरैश्च [illegible] निवेतैः
॥ ४८ ॥ वापीभिर्विविधाभिश्च पूर्णाभिः परमांभसा ॥ सरोभिरतिरम्यैश्च पद्मोत्पलकुलांबि
भिः ॥ ४९ ॥ हंसकारंडवयुतैश्चक्रवाकोपशोभितैः ॥ रम्याश्च विविधास्तत्र वृक्षा [illegible]
वृताः ॥ नगरस्य वनान्याहुः [illegible] ॥ ५० ॥

339

[illegible] हरैः [illegible]
[illegible] ॥ ५१ ॥ [illegible] ॥ ५२ ॥

१४०

२४॥ नदैनलचोवं वनं सन्त्वार्गवलं उयांचक्रिरे ॥ २५॥ नदेवाह ॥ नगरं मायथामात्री मिन्नादिनः ॥ २६॥
गोगवनी मिवेनि प्रष्ठमार्छे द्दिनो यार्दै मिति निषानलेष्टो यो वा भोगवनी यष्ठो नष्ठे द्दिनेप्रमाद्यन्तो
वा ॥ २७॥ निर्विद्वैः प्रद्विष्टैरमेषे चो ॥ २८॥ वानि मि ईलदे प्याभि लों हमयीमिः ॥ २९॥ नी स्नांष्णेक्तमा

प्रयेग प्रसंष्यवांस्वप्रष्ठमाचिष्ठानः ॥ नलेतेयांडु वालत्रगनानाकृसघुरोगमाः ॥ ३०॥
गरुषांवक्रिरेन देयांस्तीवदच्युना ॥ ननः पुष्पांमावेदेपु यांनि कृतामहार ष्यां ॥ ३१॥
नगरं मायथामात्री पायनपुरोगमाः ॥ पाणरप्रमिद्र प्यामिः प्रदित्तामिरलंकृते ॥ ३२॥ ग्र
कृतेणा चुसंप न्नैर्दिव्यमानतयानिष्टनाः ॥ पांडुरथ्यप्रकाषोन हिमरश्मिनिमेन च ॥ ३३॥ गृमम
मेनत्रवृष्ठहंनागेभोगवनीमिव ॥ द्विपलगहडुप्राष्ठे दीरैः सोपैष्ठप्रेभिते ॥ ३४॥ नगम
मचयप्रगैयगैपुरेमंसरोपमैः ॥ विविधैरनिनिर्विद्वैः प्रकोपैतेः समंहतेः ॥ ३५॥ पाक्रि
मिप्रगाहतेनहिंजिद्वै रिवपन्नगैः ॥ नसैष्ठप्पाप्पाभिवैप्रकं ष्ठष्ठमेघोपरदिने ॥ ३६॥ नी
लणोकपयानग्नीमिंधरांनामलेष्ठयांमिते ॥ प्रायमेष्ठमहाचक्रैः प्रष्ठमेननयोजमं ॥ ३७॥
सुविभक्त महारथ्यं देवनावाषवर्जितं ॥ विगोचमानं विचित्रैः पांडुरैभवनोत्तमैः ॥ ३८॥
नंविचित्रपसंकाशामिद्रप्रष्ठंचारोचत ॥ मेघवृंदमिवाकाशे विद्धं विद्युत्समावृतं ॥ ३९॥

प्रपानप्रष्ठनामिः प्रात्रयोग पवलेन उनाद्दिमेनद्दमनिरेनयाः प्रगपनप्रानेसद्दंवामन
प्यादीनप्रंनितामिः प्रनप्रीमिर्कुमांत्रामिः ॥ ४०॥ विद्विषिणः स्त्रियः ॥ ४१॥

आसांचक्रुः स्थितास्तत्र नाचमत्रः ॥ पार्थिवेषु राजसंबंधिष्वासनेषु पृथ्वीविकारविशेषेषु ॥ ८ ॥ सर्वे

कुर्वाणाः पौरकार्याणि सर्वाणि पुरुषर्षभाः ॥ आसांचक्रुर्महार्हेषु पार्थिवेष्वासनेषु च ॥ ८ ॥
अथ तेषूपविष्टेषु सर्वेष्वेव महात्मसु ॥ नारदस्त्वथ देवर्षिराजगाम यदृच्छया ॥ ९ ॥ आस
नं रुचिरं तस्मै प्रददौ स्वं युधिष्ठिरः ॥ १० ॥ देवर्षेरुपविष्टस्य स्वयमर्घ्यं यथाविधि ॥ प्रादाद्युधि
ष्ठिरो धीमान्राज्यं तस्मै न्यवेदयत् ॥ ११ ॥ प्रतिगृह्य तु तां पूजामृषिः प्रीतमनास्तदा ॥ आशी
र्भिर्वर्धयित्वा च तमुवाचास्यतामिति ॥ १२ ॥ निषसादाभ्यनुज्ञातस्ततो राजा युधिष्ठिरः ॥
प्रेषयामास कृष्णायै भगवंतमुपस्थितं ॥ १३ ॥ श्रुत्वैव द्रौपदी चापि शुचिर्भूत्वा समाहिता
जगाम तत्र यत्रास्ते नारदः पांडवैः सह ॥ १४ ॥ तस्याभिवाद्य चरणौ देवर्षेर्धर्मचारिणी ॥ कृ
तांजलिः सुसंवीता स्थिताथ द्रुपदात्मजा ॥ १५ ॥ तस्याश्चापि स धर्मात्मा सत्यवागृषिसत्त
मः ॥ आशिषो विविधाः प्रोच्य राजपुत्र्यास्तु नारदः ॥ १६ ॥ गम्यतामिति होवाच भगवांस्तामनि
दितां ॥ गतायामथ कृष्णायां युधिष्ठिरपुरोगमान् ॥ विविक्ते पांडवान्सर्वानुवाच भ
गवानृषिः ॥ १७ ॥ नारद उवाच ॥ पांचाली भवतामेका धर्मपत्नी यशस्विनी ॥ यथा वो नात्र
भेदः स्यात्तथा नीतिर्विधीयतां ॥ १८ ॥ सुंदोपसुंदौ हि पुरा भ्रातरौ सहितावुभौ ॥ आस्तामव
ध्यावन्येषां त्रिषु लोकेषु विश्रुतौ ॥ १९ ॥ एकराज्यावेकगृहावेकशय्यासनाशनौ ॥ तिलोत्तमा
यास्तौ हेतोरन्योन्यमभिजघ्नतुः ॥ २० ॥

वीतात्मसमक्कृतावर्ग—

शुश्रूषणेनैतद्योगेन ॥ ४८ ॥ राजा श्रुत्वा ततो हृष्टो धर्मपुत्रो युधिष्ठिरस्तदा तो नेत्रसाश्रुतो ॥ ४९ ॥ इति भारते आ

तेषां शुश्रूषणेनापि तेनाहं मानिनां महत् ॥ पांडवानां महाराज शास्त्रनीतिरवर्धत ॥ ५० ॥
तत्रभीमार्जुनौ चैव धर्मपुत्रो यमेन तु ॥ पांडवाः सर्व एव ते वनवासिनः ॥ ५१ ॥
एवं भिक्षेभ्यो दत्त्वा मांसं श्रुत्वा समन्वितं ॥ श्रुत्वा भेतव्यं ... नागो भोगवतीं गत्वा ॥ ५२ ॥
तान्निवेश्य तदा तीर्थे तेषामस्य केशवः ॥ तपो ... वनीयंतं पांडवानां तनेन तदा ॥ ५३ ॥ इति
श्रीपद्मे ... ॥ १ ॥ राजोवाच ॥ एवं संग्रामं राज्यं ... प्रत्येक योधन ॥ श्रुत्वा
... महाराज ... किं समकर्षत पांडवा ॥ ५४ ॥ ... महाराज ... महा ...
... पत्नी च कर्णं तान्... ॥ ... कृष्णस्य आगमेन ... राज्यं ... व
... महाराज ... पांडव ॥ ... महा ... योधन
... ॥ ५५ ॥ वैशंपायन उवाच ॥ ... महा ...
... कृष्णस्य सह पांडवान् ॥ ... पांडव ... ॥ ५६ ॥ ... महा
... युधिष्ठिर ॥ ... धर्म ... ॥ ... तिनार
... महात्मनः ... ॥ ... पांडुनंदना ॥ ५७ ॥

टी ॥ वि ॥ ... ॥ का ॥ ... ॥ ...

मत्तेऽपचितिनस्त्वं गोवायुभक्षो व्रतव्रतः ॥ आत्मनं मां सानियतः तो घाहंस्वत्स्थाप्यपितृनो
ऊर्ध्वबाहुश्चानिमिषो दीर्घकालं तपन्व्रतो ॥८॥ तपोबलप्रभावेण दीर्घकालं प्रतापितः
धूमं प्रममचैवैवं यस्तदङ्गान्नभिताभवत् ॥९॥ ततो देवासमागम्य नगम्य देवास्तु तपोबलः ॥
तपो विघ्नार्थमथो देवा विघ्नानि च क्रिरे ॥१०॥ तत्तैः प्रलोभयामासुः सौमिष्ठैर्मोहन
वृन्दैः ॥ न चचाल चक्रन्नभोगं ब्रह्मन्स्थानमहाव्रतो ॥११॥ अथ मायां पुनर्देवास्तयो चक्रुर्महात्मनो
भगिनेर्मातरो मार्धा पत्योभ्रातृनन्तत्था ॥१२॥ प्रयान्त्यमानाविद्वल्लाः पुत्रदृल्लेनाद्व
सा ॥ मन्ह्याभरणेकेयानान्यन्याभरणाया सह ॥१३॥ अभिमानस्तनतः सर्वा लोकाहीतिविच
कृष्ण ॥ न चचाल चक्रन्नभोगं ब्रह्मन्स्थानमहाव्रतो ॥१४॥ यदा देवा भनोपघातिना निसन्थ्यन्नरल
यो ॥ तनन्नहियस्तामनं न चसर्वमनन्दयीयत ॥१५॥ ततः पितामहः साक्षादभिगम्य महाव्रतो
वरेण छंदयामास सर्वलोकहितः प्रभु ॥१६॥ ततः हरिप्रोपमं से तो भ्रान्तरेह द्विक्रमो
दृष्ट्वा पितामहं देवं तस्थानः प्रांजलीनत ॥१७॥ ऊचवनष्प्रथं देवं तन्नत्नेसहितोनत ॥
भावयोलयधानेनयहिसौतः पितामह ॥१८॥ माया विदवाल विदेवलिनो कामरूपि
णो ॥ उमावथ्थमनेस्वाचः प्रसन्नोयद्विनो प्रभु ॥१९॥

341

ग्रंथोन्यथीनिभावकं परम्परप्रीत्याभावोन्तर्हितः स्फुरन्तेन्यथा ॥ २ ॥ अथ नानाहननवेतो ॥ १४ ॥ क स्पदेवस्य क

इत्यन्तोपोहं नष्टानन्योन्यथीतिसूचकं ॥ यथावोनात्र भेदः स्यानन्दरूपपुष्टिहि ॥ २ ॥ पि

हि ॥ ३ ॥ वा च ॥ सं देपहं दानसदीकं स्वरूपे तोमहामने ॥ उपन्नाद्यकथं भेदः कथं चान्योन्यता

ज्ञानां ॥ १४ ॥ अथ पादेवकन्यावेकस्यचे मानितोनमा ॥ यथाः कामेन संमनोजमनलोपस्य

वे ॥ २२ ॥ एतनस्यैवयथान्तेविलरेणानपोचन ॥ योनमिन्नामहेत्रसन्यांकोनहलेहिन ॥ १५ ॥

श्यादिपर्दता ॥ २१ ॥ श्रीनारदउवाच ॥ प्राणमेचिन्त्योनमितिहांसपतनने ॥ मानभिः स

हिनः पाठेयथान्तंत्रपिहि ॥ १ ॥ महामरस्यान्चायेहिनाणकथियोः पुरा ॥ निकंभोना

मदेनेहलेनलीवलमानभूत ॥ २ ॥ नरूपपुत्रोमहावीर्यो नातेभो मणपकमो ॥ हंदोपहं

होहैनेहूँ सफलोक्रमानसो ॥ ३ ॥ नावेकनित्यथोरेसा - वेक कठंसमनो ॥ नितनाप

वतेनासमउः लिलवाणभो ॥ ४ ॥ विनान्योमनमजानेविनान्यो नेनन्तसनं ॥ ग्रन्थोमध्य

शिपकरावनोन्यथापिथेवदो ॥ ५ ॥ एकश्रीनममाचीयोहिदेवेकोमवन्तनः ॥ नोविदद्वे

महाकीर्याकार्येयुच्छेकनित्यथो ॥ ६ ॥ वेलोक [illegible] विनपांचायसमापायेकनित्यथे

दीकांडनानानोविंजनावुंशनेपनलपा ॥ ७ ॥ नोनधवेणकालेननपोपनोरवमवनः ॥

ननिपापापरिणंनोनरवरसवधारिते ॥ ८ ॥

ना ॥ २२ ॥ अध्याय ॥ २ ३ ॥ निरंजनं मति भेदविना ॥ ५ ॥ ८ ॥

१०३

नलतालध्वजैः कवचलघुनिभिः वाद्यघोषैर्न्वितौ ॥ २३ ॥ समाः बहूनि वर्षाणि एकं दिनमिवासुरौ ॥ २४ ॥ ग

नृत्तगीतमहानादैः हृष्टः पूर्णतालदिनैः ॥ हृष्टप्रमदिनं सर्वं दैत्यानामभवत्पुरं ॥ २५ ॥ तौ देवौ वि
हारैर्विविधैर्दैत्यानां कामरूपिणां ॥ समाः संक्रीडतां तेषामहरेकमिवाभवत् ॥ २६ ॥ इत्या
दिपर्वणि ॥ नारदवाक्ये ॥ उत्सवे वृत्ते त्रैलोक्याकांक्षिणावुभौ ॥ मंत्रयित्वा ततः सेनां
तावाज्ञापयतां तदा ॥ १ ॥ सुहृद्भिरभ्यनुज्ञातौ दैत्यवृद्धैश्च मंत्रिभिः ॥ कृत्वा प्रास्थानिकं रात्रौ
मघासु ययतुस्तदा ॥ २ ॥ गदापट्टिशधारिण्या शूलमुद्गरहस्तया ॥ प्रस्थितौ सहधर्मिण्या
वि महत्या दैत्यसेनया ॥ ३ ॥ मंगलैः स्तुतिभिश्चापि विजयप्रतिसंहितैः ॥ चारणैः स्तूयमानौ तौ
जग्मतुः परया मुदा ॥ ४ ॥ तावंतरिक्षमुत्पत्य दैत्यौ कामगमावुभौ ॥ देवानामेव भवनं ज
ग्मतुर्युद्धदुर्मदौ ॥ ५ ॥ तयोरागमनं ज्ञात्वा वरदानं च तत्प्रभोः ॥ हित्वा त्रिविष्टपं जग्मुर्ब्र
ह्मलोकं ततः सुराः ॥ ६ ॥ तावींद्रलोकं निर्जित्य यक्षरक्षोगणांस्तदा ॥ खेचराण्यपि भूतानि
जघ्नतुस्तीव्रविक्रमौ ॥ ७ ॥ अंतर्भूमिगतान्नागान्जित्वा तौ च महारथौ ॥ समुद्रवासिनीः स
र्वा म्लेच्छजातीर्विजिग्यतुः ॥ ८ ॥ ततः सर्वां महीं जेतुमारब्धावुग्रशासनौ ॥ सैनिकांश्च समा
हूय सुतीक्ष्णं वाक्यमूचतुः ॥ ९ ॥ राजर्षयो महायज्ञैर्हव्यकव्यैर्द्विजातयः ॥ तेजो बलं च दे
वानां वर्धयंति श्रियं तथा ॥ १० ॥

२०४

पाठः ॥ उत्सवे वृत्ते ॥ १ ॥ मघासु गमनार्थं निषिद्धे पि नक्षत्रे आहवकालप्रयतः ॥ २ ॥ विजयप्रति
संहितैः विजयकथकैः ॥ ४ ॥ ९ ॥ ॥

येनाभातस्त्वं मयेनारद पश्चिमानह्याग्नितं स्नापयन ॥ २४ ॥ प्रभविष्याचः प्रभवनमेश्वर्यं कलिकावः ॥
कामोव श्यामेन लक्ष्मीमोनदेव लक्ष्मतेनान्यदि स्वर्गः ॥ २५ ॥ यद्याव द्यायद्याच देव ॥ २६ ॥ मोहिनो कि

श्रीब्रह्मोवाच ॥ श्रुतेः मवर्तं पूर्वयोः सर्वं मजं भविष्यति ॥ प्रमहृत्पीतं स्वयोष्ठ विधान
ममहेः समं ॥ २७ ॥ प्रभविष्याद्यनियमस्वरुपं पतंतव ॥ पुत्रयो हं ननानेन नाम शंनवि
धीयते ॥ २८ ॥ त्रैलोक्य विज्ञया श्रीयाय वक्ष्यामा स्थितं तपः ॥ हनतानेनदे मंत्रेण वाकामंक
रोम्यहं ॥ २९ ॥ मंदोदरी संप्रयुवाच ॥ त्रिपुलोके पुत्रयकुने किं विस्याचरं जंगमं ॥ सर्वं लोकोभ
येनक्ष्याहतनेस्तोत्रं पितामह ॥ ३० ॥ पितामह उवाच ॥ यन्मां पितं तपोयोगं चकामसेतं तदा
निवं ॥ स्वयं विधानमेतन्न यथाव हं भविष्यति ॥ ३१ ॥ नारद उवाच ॥ ततः पितामहोहरता
कमेन नदानयोः ॥ निवसेन यस्लोचन्द्र स्वलोकं नगमत् ॥ ३२ ॥ सर्वावचरालिदे सेन्द्राच
तलोकान रावणो ॥ जय पौर्वलोक स्वलमेवभवनं नगतो ॥ ३३ ॥ तेन तस्य वरो हलाक
नकामोमनस्विनो ॥ सर्वैः सहजननता भ्यां प्रहर्षमपन निवान ॥ ३४ ॥ ततसेन नंतरंभ
सामोलिनो संवन्नवन ॥ महाहर्षं भयलोपेनो विज्ञलोवर धारितो ॥ ३५ ॥ प्रकालनं मरीचे
वचक्रमतः सर्वकालिको ॥ नित्यप्रमदिनः सर्वलयामेव महरन ॥ ३६ ॥ भवतो नामस्याना
निवेदयतां स्वनामिति ॥ नीयतां पीयतां चेतिस्वरस्यामीह देवदे ॥ ३७ ॥

रीस्वंनोमोक्षिः किरीटयाज्ञिलेवतिमेरिनोश्रोत्राद्विनोश्रोपाहिनादिनि ॥ ३८ ॥

उत्सवोयकन्याविवाहादि: ॥ २३ ॥ निवृत्तविपणाः क्रयविक्रयादिव्यवहाराश्चान्याः प्रायशः इह ॥ २४ ॥
अष्टौ निवृत्तपादादिसंबंधी नित्यंकालाः देहस्थाष्टौ नियमार्थादि सहितानि ॥ २५ ॥ अहः क्रमा

निवृत्तयज्ञस्वाध्याया याप्रणोद्यतयति हिता ॥ उत्सवोत्सवयत्ताचवमवनवयातया ॥ २६ ॥
हाहाभूतामयानीचनिवृत्तविपणापण ॥ निवृत्तदेवकार्याच पुण्योद्वाहविवर्जिता ॥ २७ ॥
निवृत्तकृषिगोरक्षाविधानतनयाग्रमा ॥ अष्टिवंकालसंकीर्णा मुर्वीमवोग्रदर्शना ॥ २८ ॥
निवृत्तपितृकार्यं च नित्यंतत्कारमंगलं ॥ जगन्मनिमयाकांडः प्रेतसममवत्तस ॥ २९ ॥
चंद्रादित्यौ ग्रहास्तारा नक्षत्राणि दिवौकसः ॥ जगद्विषादं तत्कर्म दृष्ट्वा संदेहप्रययोः ॥ ३० ॥
एवं सर्वाद्विशो दैत्यो जितानां क्रूरेण कर्मणा ॥ निःस्वपत्नीकृतं देवे निवृत्तमपि चक्रे ॥ ३१ ॥
इत्यादि पुराणे ॥ २४ ॥ नारदउवाच ॥ ततो देवर्षयः सर्वे सिद्धाश्च परमर्षयः ॥ जग्मुलर्द
वरामार्तिं दृष्ट्वा तत्कदनं महत् ॥ ३ ॥ ते भिन्नमूर्तिनं कृपाजितात्मानो ह्रितेन्द्रियाः ॥ पितामह
हस्तमवनं जगतः कृपयान्वहा ॥ ४ ॥ ततो दृष्ट्वासीनं सहदेवैः पितामहं ॥ सिद्धैर्ब्रह्मर्षिभिश्चै
व समंतात्परिवारितं ॥ ५ ॥ तत्र देवो महादेवस्तत्राग्निर्वायुना सह ॥ चंद्रादित्यौ च शक्रश्च पार
मेष्ठ्यास्तथर्षयः ॥ ६ ॥ वैखानसा वालखिल्या वानप्रस्थामरीचिपाः ॥ अजाश्चैवाविमूढा
श्च तेजोगर्भास्तपस्विनः ॥ ऋषयः सर्व एवैते पितामहमुपासत ॥ ७ ॥

दयः ॥ नारदः सप्तर्षीदयः ॥ नक्षत्राणि अश्विन्यादीनि ॥ २६ ॥ उवाच ॥ ततइति ॥ ५ ॥

नाकामंतनन्यामवंतः नयोः तोकर्मणि प्रयत्नो ॥ १८ ॥ न्यदश्यड्रिंतर्हितैः अपि भिईनम नेतोचिक
यानेविविधानि यावज्ञाः सेनिरूपाणि जगत्प्राणे निरोधमायाधनतत्वतत्वरूपाताना न्यकरान्मनीन

तेयामेवं मतत्वानां सर्वेषां मन्तारदिपां ॥ संभूय सर्वे रम्याभिः कार्थैः सर्वोत्मना वयः ॥ ११ ॥ प
वसर्वोत्समादिषण प्रवेनीरमहोदये ॥ कृपमणि समासाय जामनः सर्वेनो मुखो ॥ १२ ॥ प
तेषांनतिये केचिपान प्रतिचयेद्विजा ॥ नान्यर्वान्म हमंदूनावलिनोजगमतत्वतन ॥ १३ ॥ मा
प्रमेप्राश्रिदेवाणिमुनीनां भावितात्मनां ॥ गरुडो नाम दितिपुत्रः चित्रधं देनिकालये ॥ १४ ॥
नयोपनेमयेश्रुतेः पापाउत्तमप्राणसि ॥ नाकामंतनयो तो चिवर्दाननिराकृतः ॥ १५ ॥
नाकामंतन यदुपाणान्ता मनुकशितात्विच ॥ निग्रमानं पवित्रपदं वंतर्हितात्तय ॥ १६ ॥
प्रथितांपेतपः सिद्धादंतः शमपापग्रता ॥ नयोर्भं पानतउउ चुलेपेनतेपादिशेतमा ॥ १७ ॥ न
सपितितमसमें गेहिकोषिकन्यपाणदे ॥ प्राणमासी जनान्सर्वे कालेनेव इतनदा ॥ १८ ॥
तेपानन्तदृष्टद्विक्री विभिमृतमहात्मते ॥ उमोविनिस्त्रियेन कृतानि विक्रमानेव पेक्षितो ॥ १९ ॥
प्रभिन्नकरतोमजोमूमनाके नुरहपिणो ॥ संतीनमधिउगेषु निमनतधेममारनम ॥ २० ॥ सिं
हेमनाप्नतर्ष्प्रोश्रनान्यानर्हितानम्मो ॥ तेलेहपापेलोकहरएरवीनहृतानिनप्रत ॥ २१ ॥

तनादिहपोनितम्नतरित्यर्थः ॥ २१ ॥ तदेवाह ॥ प्रभिन्नेति ॥ प्रमदेनप्रभिन्नौ कटकौ गंडदेशौ यपो
स्तौ मदलीनमधिमतिं ॥ २० ॥ २१ ॥

म॰ भा॰
आ॰ प॰
१५५

प्रतो भवनमर्थानां संक्षेपमहं द्विजोत्तम ॥२०॥ लोमश उवाच ॥२१॥ शंकरं समकृदाशं ॥२२॥ भगवान्निस्सः प्राप्त
हो भावादिनाने मामपि तत्र मोहयन्नितः ॥२३॥ इन्द्रकामस्य ख्यातः ॥२४॥ देवनिकायानां देव

ब्रह्माणं सा नमस्कृत्य प्रांजलिर्वाक्यमब्रवीत् ॥ किं कार्यं मयि भूतेश येनास्म्यद्येह निर्मिता ॥१९॥
पितामह उवाच ॥ गच्छ सुन्दोपसुन्दाभ्यामसुराभ्यां तिलोत्तमे ॥ प्रार्थनीयेन रूपेण कुरु भद्रे प्र
लोभनं ॥२०॥ त्वत्कृते दर्शनादेव रूपसंपत्कृतेन वै ॥ विरोधः स्याद्यथा ताभ्यामन्योन्येन तथा
कुरु ॥२१॥ श्रीनारद उवाच ॥ सा तथेति प्रतिज्ञाय नमस्कृत्य पितामहं ॥ चकार मंडलं तत्र वि
बुधानां प्रदक्षिणं ॥२२॥ प्राङ्मुखो भगवानास्ते दक्षिणेन महेश्वरः ॥ देवाश्चैवोत्तरेणासन्सर्व
तस्त्वृषयोऽभवन् ॥२३॥ कुर्वंत्या तु तया तत्र मंडलं तत्प्रदक्षिणं ॥ इंद्रः स्थाणुश्च भगवान्धैर्ये
ण प्रत्यवस्थितौ ॥२४॥ द्रष्टुकामस्य चात्यर्थं गतायाः पार्श्वतस्तया ॥ अन्यदंचितपक्ष्मांतं दक्षि
णं निःसृतं मुखं ॥२५॥ पृष्ठतः परिवर्तंत्याः पश्चिमं निःसृतं मुखं ॥ गतायाश्चोत्तरं पार्श्वमुत्तरं
निःसृतं मुखं ॥२६॥ महेंद्रस्यापि नेत्राणां पृष्ठतः पार्श्वतोऽग्रतः ॥ रक्तांतानां विशालानां सह
स्रं सर्वतोऽभवत् ॥२७॥ एवं चतुर्मुखः स्थाणुर्महादेवोऽभवत्पुरा ॥ तथा सहस्रनेत्रश्च बभूव
बलसूदनः ॥२८॥ तथा देवनिकायानां महर्षीणां च सर्वशः ॥ मुखान्यभिप्रवर्तंते येन याति
तिलोत्तमा ॥२९॥ तस्या गात्रे निपतिता दृष्टिस्तेषां महात्मनां ॥ सर्वेषामेव भूयिष्ठमृते दे
वं पितामहं ॥३०॥

१५५

निकायानां देवसंघा नाथेन देशेन सा गता सा याति तिलोत्तमा बोनि सम्प्रवर्तत ॥३१॥

344

१२०॥ नमः [illegible] निरीक्ष

ततोऽभिगम्य ते दीनाः सर्व एव महर्षयः॥ सुंदोपसुंदयोः कर्म सर्वमेव शशंसिरे॥६१॥ यथा
हृतं यथा चैव कृतं येन क्रमेण च॥ न्यवेदयंस्ततः सर्वमखिलेन पितामहे॥६२॥ ततो देवग
णाः सर्वे ते चैव परमर्षयः॥ तमेवार्थं पुरस्कृत्य पितामहमचोदयन्॥६३॥ ततः पितामहः
श्रुत्वा सर्वेषां तद्वचस्तदा॥ मुहूर्तमिव संचिंत्य कर्तव्यस्य विनिश्चयं॥६४॥ तयोर्वधं समुद्दिश्य
विश्वकर्माणमाह्वयत्॥ दृष्ट्वा च विश्वकर्माणं व्यादिदेश पितामहः॥६५॥ सृज्यतां प्रार्थनीयेह प्र
मदेति महातपाः॥ पितामहं नमस्कृत्य तद्वाक्यमभिनंद्य च॥६६॥ निर्ममे योषितं दिव्यां चिंतयि
त्वा पुनः पुनः॥६७॥ त्रिषु लोकेषु यत्किंचिद्भूतं स्थावरजंगमं॥ समानयद्दर्शनीयं तत्तद्यत्नात्ततस्त
तः॥६८॥ कोटिशश्चापि रत्नानि तस्या गात्रे न्यवेशयत्॥ तां रत्नसंघातमयीमसृजद्देवरूपि
णीं॥६९॥ सा प्रयत्नेन महता निर्मिता विश्वकर्मणा॥ त्रिषु लोकेषु नारीणां रूपेणाप्रतिमा
भवत्॥७०॥ न तस्याः सूक्ष्ममप्यस्ति यद्गात्रे रूपसंपदा॥ न युक्तं यत्र वा दृष्टिर्न सज्जति निरीक्ष
तां॥७१॥ सा विग्रहवतीव श्रीः कामरूपा वपुष्मती॥ जहार सर्वभूतानां चक्षूंषि च मनांसि च॥७२॥
तिलं तिलं समानीय रत्नानां यद्विनिर्मिता॥ तिलोत्तमेति तत्तस्या नाम चक्रे पितामहः॥७३॥

[illegible] संबंधयः॥ १॥ २॥ ३॥ ४॥ ५॥ ६॥ ७॥ ८॥ ९॥ १०॥ ११॥ १२॥ १३॥ १४॥ १५॥ १६॥ १७॥ १८॥

म॰ भा॰
आ॰ प॰
१५६

345

ऋषिभिर्नाकाशेन ॥ १५ ॥ २ ॥

तौ तु पीतावरं पानं मदरक्तान्तलोचनौ ॥ दृष्ट्वैव तां वरारोहां व्यथितौ संबभूवतुः ॥ ता
भ्यामुत्पत्य सहसा हिता तत्र मनोरथेऽच्युता स्मि ताम् ॥ उभौ च कामसंमत्तावुभौ प्रार्थयतश्च तां ॥ १२ ॥
दक्षिणे तां करे सुभ्रूं सुन्दो जग्राह पाणिना ॥ उपसुन्दोऽपि जग्राह वामे पाणौ तिलोत्तमां ॥ १३ ॥
वरप्रदानमत्तौ तावौरसेन बलेन च ॥ धनरत्नमदाभ्यां च सुरापानमदेन च ॥ १४ ॥ सर्वैरे
तैर्मदैर्मत्तावन्योन्यं भ्रुकुटीकृतौ ॥ मदकामसमाविष्टौ परस्परमथोचतुः ॥ १५ ॥ मम
भार्या तव गुरुरिति सुन्दोऽभ्यभाषत ॥ मम भार्या तव वधूरुपसुन्दोऽभ्यभाषत ॥ १६ ॥ नैषा तव
मम मैषेति तत्र तौ मन्युराविशत् ॥ तस्या हेतोर्गदे भीमे तावुभौ प्रत्यगृह्णतां ॥ १७ ॥ तस्या
हेतोर्गदे भीमे संप्रगृह्य तदा तदा ॥ प्रगृह्य च गदे भीमे तस्यां तौ काममोहितौ ॥ १८ ॥
अहं पूर्वमहं पूर्वमित्यन्योन्यं निजघ्नतुः ॥ तौ गदाभिहतौ भीमौ पेततुर्धरणीतले
रुधिरेणावसिक्ताङ्गौ द्वाविवार्कौ नभश्च्युतौ ॥ ततस्ता विद्रुता नार्यः स च दैत्यगणस्त
था ॥ १९ ॥ पातालमगमत्सर्वो विषादभयकम्पितः ॥ ततः पितामहस्तत्र सह देवैर्महर्षि
भिः ॥ २० ॥ आजगाम विशुद्धात्मा पूजयंश्च तिलोत्तमां ॥ २१ ॥ वरेण च्छन्दयामास भगवान्प्र
पितामहः ॥ वरं दित्सुः स तत्रैनां प्रीतः प्राह पितामहः ॥ २२ ॥

१५६

...यः ॥ त्रिलोकनाथाय पीनं नखावनि नियोधयथा व्याख्यानयाः ॥ ५ ॥ प्रत्येति विवरेरः ॥ ६ ॥ देवंस्तु गामा
पीयत्सादिमनाहे यो मन्यो वै कल्पंतेनन्नद् यथा व्याख्यानयामह लोकनाथ सर्वो यारितनादिविनाशयत

नर्नगन्नानाननयाः सर्वेदेवाश्च नाममर्षयः ॥ कलनि ये च यत्कार्यं निरेह पश्यन्ति ॥ ७ ॥ त्रिलोक
मायान्नलक्ष्मनगनानायो लोक भावनः ॥ सर्वो निरंतर यथा माया देवान रक्षितान् नन ॥ ८ ॥
इत्यादि पर्वणि [illegible] अध्यायः ॥ श्री नारद उवाच ॥ त्रिलोकनाथ पृथिवी देवो निःस्पृहो लोकन
रक्षो ॥ कल्पनामैलोकामवाशं हन नह यो वसु वनः ॥ देवानां पर्वे यत्नात्मनो नानार्थं वरद
सं ॥ मायाय सर्वं रत्नानि परं नविम यानतो ॥ ९ ॥ परानम निधेहरा सत्यः संहीन केवल
निहयो गोनदान्नविन हीने मवा चिव ॥ १० ॥ तीर्थिमां सेयुगा येषु भस्मभो देवंत पुण्यलोके:
पाने यश्च विधिये देवः यत्र श्रीनिमवापन ॥ ११ ॥ जनः पुण्यवनो धाने पर्वतेषु वनेषु च ॥ यथे
विनेषु देशेषु विनदे नेमयावि च ॥ १२ ॥ जनः कदाचिदिध्यस्य प्रत्येन मनशीला नन्ते ॥ १३ ॥
नाशेषु पत्नेषु विहार मभिनन्दन ॥ १४ ॥ दिशेषु सर्वकामेषु शमानी ते पुन्ना युज्मो ॥ वग
सनेषु संरक्षोप हृत्योभिनिर्दिष्टोदनः ॥ १५ ॥ ततो वादिवन्तया धाम पानिरंद तनो क्षिप: ॥
गीते युगलति संस्थितः श्रीमान् समपननि विरे ॥ १६ ॥ तन हितो नमानन्दवनेषु स्वात्रि चित्व
नी ॥ देवं सहितश्रमा पाद्यकेने के नवासहः ॥ १७ ॥ जदीनी रेष्टुनाना नाकर्णिका तन्मयि च
न्तनी ॥ पानैनि गानन्दे परंयजा लंनोमहारहरे ॥ १८ ॥

देवनत्नं माक लपंनो नर्थी ॥ १९ ॥

नागैर्गजैः सरस्वती वहन्त्यो युक्ता वनस्थलीमाहिता तैर्युक्ताः तैः देवनगरशालयाचराज्ञानेव

स॰ भा॰
यात्र
३४०

तेन यानेन प्रसादात्वीरैः पतितैः सह पंचभिः ॥ बभूव परमप्रीतो नानागोत्रैः सरस्वती ॥ ७ ॥ वर्तमाने
युधिष्ठिरे पांडवेषु महात्मसु ॥ मार्तर्यं कुरवः सर्वे हीनदोषाः सबान्धवाः ॥ ८ ॥ अथ दीर्घेण
कालेन ब्राह्मणस्य विपर्यये ॥ कस्यचित्तनयस्य राजन् केचिन्मानवसत्तम ॥ ९ ॥ ह्रियमाणे
धनेन तस्मिन्ब्राह्मणः क्रोधमूर्च्छितः ॥ आगम्याक्रोशद्व्यग्रः सर्वक्रोशान्स पांडवान् ॥ १० ॥ ह्रियते
गोधनं क्षुद्रैर्नृशंसैरकृतात्मभिः ॥ प्रसह्य चास्माद्विषयादस्माद्यावन्न पांडवाः ॥ ११ ॥ ब्राह्मणस्य प्र
पन्नस्य हविर्धानैः प्रलप्यते ॥ ध्वांक्षैस्तस्य गृहाः सर्वे मांनीच क्रोशामि सहैव तेन ॥ १२ ॥ अविज्ञातार हि:
राज्ञानं बलिषड्भागहारिणं ॥ नमस्कुः सर्वलोकस्य धर्मस्य पापचारिणं ॥ १३ ॥ ब्राह्मणस्वे हृते
चौरैर्धर्मार्थे च विलोपिते ॥ रोरूयमाणे च मयि क्रियतां हस्तधारणं ॥ १४ ॥ वैशंपायन उवाच
रोरूयमाणस्याभ्याशे भृशं पार्थस्य पांडवः ॥ तानि वाक्यानि शुश्राव कुंतीपुत्रो धनंजयः ॥ १५ ॥
श्रुत्वैव च महाबाहुर्मा भैरित्याह तं द्विजं ॥ आयुधानि च यत्रासन्पांडवानां महात्मनां ॥ कृष्ण
या सह तत्रासीद्धर्मराजो युधिष्ठिरः ॥ संप्रवेशाय चाशक्तो गमनाय च पांडवः ॥ तस्य चार्तस्य
तैर्वाक्यैश्चोद्यमानः पुनः पुनः ॥ १७ ॥ आक्रंदे तत्र कौंतेय चिंतयामास दुःखितः ॥ ह्रियमाणे
धनेन तस्मिन्ब्राह्मणस्य तपस्विनः ॥ १८ ॥

३४०

नः एवं तेभिस्थो बुद्धिहेन व स्पर्शः ॥ २ ६ ॥ हस्तधारणं क्रियतामभयं दीयतामिति स्पर्शः ॥ १ ॥ १४ ॥

346

तेनसाकंवव्यासदृष्टाभिभावकताम॥ सहपुत्रैस्सहपुत्रांनकं॥ ध्यानिकस्थित॥२३॥२४॥ ... पः॥ एवमि

ग्गादिमचरितंलोकान्विचरिष्यसिभाविनि॥ तेनसार्चमहापुत्रांनकरिष्यनिकश्यन॥२३॥
एवंतमेवंरंटनासर्वलोकविनाममहः॥ इंद्रेचलोकमनापायबसलोकंगतः प्रभ॥२४॥ श्रीनार
द उवाच॥ एवंनोसाद्दितोभूत्वासर्वोहोद्देकनिष्यये॥ निलोनमार्गेसंकृहवनेम्नमभि वनन॥२५॥
नस्याद्वृष्टीसिद्धः सेवहन्मर्वोन्मतस्तनमः॥ तथावोनानभेदः स्यानस्वैपांद्वैपदीकमे॥२६॥न
थाऊदनमइंद्रोमममचेनियमिवत्य॥२७॥ वैशंपायनउवाच॥ एवमनकामहात्मानोनारदेन
महर्षिणा॥ समयंचक्रिरेराजंस्तेन्योन्यवशमागताः॥२८॥ समक्षेतस्यदेवर्षेर्नारदस्यामितौ
जसः॥ द्रौपद्याभ्यानःसहचारीनानत्योयंचोभिर्थंपेन॥२९॥ सनोद्धदपाव यो क्षित्वमचास्तिवनेवसे
त्॥ क्रतेनसमाधेनक्षितंरवैपंमचोरिभि॥३०॥ नारदेपावनममत्रीनाद्वेदेपामहात्मनिः १
एवंतेःसमयःपूर्वंकृतोनारदचोदितैः॥ नचाभिद्रोहंतेनसर्वेतरमोन्येनभारत॥३१॥ इतिश्री
महाभारतेआदिपर्वणिविदुरागमनेसमाप्तम्॥ वैशंपायनउवाच॥ एवंतेसमयंकृत्वान्यवसंस्त
त्रपांडवाः॥ वशेशस्त्रप्रतापेनकुर्वंतोन्यान्महीक्षितः॥२॥ तेषांमनुजसिंहानांपंचानाममि
तौजसां॥ वभूवकृष्णासर्वेषांपार्थानांवशवर्तिनी॥२॥

मम पादौ स्पृश ममाग्रे ममात्मजं मा मे नातिक्रमिष्यति येनान्वयः॥२३॥ समयः स्मरन् स वै पुत्र दृढव्रता [illegible]
[illegible] कोऽवनवासनियमः॥२४॥ स जनमान [illegible] ॥२५॥ अनन्तजानामि [illegible]

[illegible] महाबाहुर्वै ली वनोरथी [illegible] ॥ [illegible] ममतं [illegible] नन्दन च महद्दने
[illegible] मम पादौ [illegible] ॥२६॥ [illegible] हि जा
नये॥ आत्मजमात्मजं वीरः [illegible] ॥२७॥ सोऽभिवाद्य [illegible] भिन्नं दि
नः॥ [illegible] ॥२८॥ [illegible] मनसि [illegible]
मया॥ वनवासं गमिष्यामि मम [illegible] ॥२९॥ [illegible]
प्रियं॥ कथमिन्द्र [illegible] ॥३०॥ [illegible]
नरमच्युत॥ उवाच दीनो राजा [illegible] ॥३१॥ [illegible] मनः [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] मम प्रियं॥ [illegible] जानामि [illegible] लोकं
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible]
विपिलोपकः॥३३॥ [illegible] वचनं मम॥ नहि [illegible] न च
[illegible] ॥३४॥ श्रीजनक उवाच॥ [illegible] ॥ नम
[illegible] ॥३५॥ [illegible] उवाच॥ [illegible]
वनचर्या [illegible] ॥ वने [illegible] ॥३६॥

[illegible] करोति [illegible] विपिलोपकः [illegible] ॥३७॥ न वने [illegible]

उपदेष्टाऽऽगतः उपदेष्टाऽनघः प्रधर्मः प्रतिष्ठेदः ॥ २९ ॥ प्रनाशितकामाशितकामभावः ॥ ब्रह्मणोचितवये ॥ २६ ॥
प्रतिनिष्ठेनस्थिरः स्वानेन च नो स्वाक मधर्मे प्र महान् मवेद्राज्ञानं सस्तोकमात्र धागारस्तोप्र
तिमधिगतेस्तति ॥ ३० ॥ प्रनप्रवेशेपक स्मिन् सिद्धाम हुर मभाग सप्ताःज्ञानमने ॥ २८ ॥ प्रनष्ट

प्रत्तप्रमार्जनेन स्वकर्तेऽभितिनिश्चयः ॥ उपदेष्टागतो धर्मः तमहास्यान्महीपते ॥ २९ ॥
यद्यस्यहृदनोद्दीनकरोमप्यरवाणि ॥ प्रनाशितांवसर्वेधामस्वाकमपि रूहणो ॥ ३० ॥ प्र
तिनिष्ठेन लोके स्मिन् धर्मेश्चैवतेनोभवेन ॥ प्रनाशनमनगतानेनगतेमस्मिन संशयः ॥ ३१ ॥
प्रज्ञानप्राप्तोऽपनेमेंगिचैवान्तेनभवेत ॥ प्रनप्रवेशे राज्ञस्तवनवासोभवेत्तम ॥ ३२ ॥
सर्वमन्यानिहन्तेनधर्मेणनमहीपते ॥ अपधर्मीवमहान्तस्तवनेवामरातेमम ॥ शरीर
स्याविनाशेनधर्मेणवविशिष्यते ॥ ३३ ॥ एवं विनिश्चितान्ननः कौन्तेयश्रोधनंजयः ॥ प्रन
प्रविषयगतानेमाहस्रुवविपांपते ॥ ३४ ॥ यनगताद्यसंदेहे कोऽज्ञानात्ते प्रनभागतः ॥ ज्ञा
हागत गमनं धर्मैर्यावत्पर्यनेधिताः ॥ ३५ ॥ नहीनेतगतः त्वर्ष्याचकृष्णाचदेहमह
गावसितवनेगाम्यवचोरहस्तात्ह्नेनव ॥ ३६ ॥

नवासादिकं पतिहर्नेनतं धर्मिणान प्रधर्मोमहान्तवापाद्मवार्थेतेनाधर्मेणमवनेमराण
मिवक्षान्तपवाल्लपानोस्वान्नजवाराहणनोधर्मःश्रेष्ठः ॥ ३९ ॥ स्वाहष्टयनस्वादाय ॥ ४० ॥

अथ कृष्टः उपनीतः कामयानया नयानं पलितं ना॥१२॥ अशंकः मानेन आपद्धर्मे निःशंकपवना विस्मय रहितेन॥१४॥ समसमहं गांगेयं॥१८॥ अनंगग्लपितां कामेन पीडितां॥१९॥ जानाम्यहं पांडवेयस्मारिता

अथ कृष्टो महाबाहुर्नागराजस्य कन्यया॥ अंतर्जले महाराज उलूप्या कामयानया॥१२॥ ददर्श पांडवस्तत्र पावकं सुसमाहितं॥ कौरव्यस्याथ नागस्य भवने परमार्चिते॥१३॥ तत्राग्निकार्यं कृतवान्कुंतीपुत्रो धनंजयः॥ अशंकमानेन हुते तेनातुष्यद्धुताशनः॥१४॥ अग्निकार्यं स कृत्वा तु नागराजसुतां तदा॥ प्रहसन्निव कौंतेय इदं वचनमब्रवीत्॥ किमिदं साहसं भीरु कृतवत्यसि भामिनि॥ कश्चायं सुभगो देशः का च त्वं कस्य चात्मजा॥१६॥ उलूप्युवाच॥ ऐरावतकुले जातः कौरव्यो नाम पन्नगः॥ तस्यास्मि दुहिता राजन्नुलूपी नाम पन्नगी॥१७॥ साहं त्वामभिषेकार्थमवतीर्णं समुद्रगां॥ दृष्ट्वैव पुरुषव्याघ्र कंदर्पेणाभिमूर्छिता॥१८॥ तां मामनंगग्लपितां त्वत्कृते कुरुनंदन॥ अनन्यां नंदयस्वाद्य प्रदानेनात्मनोऽनघ॥१९॥ अर्जुन उवाच॥ ब्रह्मचर्यमिदं भद्रे मम द्वादशवार्षिकं॥ धर्मराजेन चादिष्टं नाहमस्मि स्वयंवशः॥२०॥ तव चापि प्रियं कर्तुमिच्छामि जलचारिणि॥ अनृतं नोक्तपूर्वं च मया किंचन कर्हिचित्॥२१॥ कथं च नानृतं मे स्यात्तव चापि प्रियं भवेत्॥ न च पीड्येत मे धर्मस्तथा कुर्यां भुजंगमे॥२२॥ उलूप्युवाच॥ जानाम्यहं पांडवेय यथा चरसि मेदिनीं॥ यथा च ते ब्रह्मचर्यमिदमादिष्टवान्गुरुः॥२३॥

तस्मात्ते ब्रह्मचर्यं ज्ञानं दर्शयंती द्रौपदीनिमित्तमेव ब्रह्मचर्यं नान्यत्रेत्याह॥ अत एवाग्रे पि चित्रांगदाहरणे भद्रोः पाणिग्रहणं संगच्छते॥२३॥

म॰ भा॰
आ॰ प॰
२४९

348

स्पृष्ट्वा यः ॥ नमिनि ॥ ८९ ॥ मेष्टाः भिस्त्राजीवेनो यत्नयो ब्रह्मचारिणा ब्रह्मचोदन्ता निपाटैवो दैवो गीतो भृवौ
दवेन यो नीलम मनोस्ते यो रिनि मेदिनी ॥ चोस्त्रा इत्थे व मध्ये: पानः ॥ ९० ॥ ब्रह्मचर्कः ऊर्ध्वरेतसः पत

इत्यादि पर्वं नियमेन नीर्थ्या कार्यं ॥ वैपाया तत्र ॥ नेत्र यां तं मह्या हं कौरवा णां पाण्डवे
श्रुत्वा य मेस्त्र मानो ब्राह्मणा वेदपारगाः ॥ ९१ ॥ वेदवेदांग विद्वांस स्त्रष्टे वा य्यान्त चिन्तकाः
मेस्त्र मनवद्रताः स्त्रजाः पोरागिकाश्च ये ॥ ९२ ॥ कथ काश्यपेरात्र त्रुमध्य एव वैनोक
स: ॥ दिव्या ख्याता निये वा पि पवे निम श्रुते दिजाः ॥ ९३ ॥ पनेया मे स्त्रवद्र भिः सहस्रैः पांडु नंदनः
प्राचः ब्रह्मकथैः प्राप्तान्हि विवासव: ॥ ९४ ॥ स प्रात्याम्निनिवाणि च नानि चसतां सिच
स्रतिनः सागरां मेवदेवा न पि च भावन ॥ ९५ ॥ व्यभाव पिचानी थीनिर स्पी भवन्ये भ: ॥ स्रगं
गानाद्य भाश्रितं नि वेशा मंकरो नाभ ॥ ९६ ॥ न व्रजन यात्रं तं कर्णेस्त्राते जन न मेन य ॥ कृतवाज्य
द्विष्ट्वा भांपांडु नां प्रवरो हि सः ॥ ९७ ॥ निविष्टेन न वर्के नेये जा स्रोत च मानः ॥ अग्निहोत्राणि
विप्रा स्नेपा इत्थ कृत्वे कस्या ॥ ९८ ॥ नेषु प्रवो वं माने पुज्या लिने पुरस्ते षु च ॥ कृत पुण्येप ह्र
वेश्रुत्वी वा नयनेषु च ॥ ९९ ॥ कृता भिषेकैर्विदद्भिर्नियतैः स्वस्ति भिर्निन ॥ पूज्य भेः नीवन्हस्र
नन् गंगाम चनना राहे ॥ १०० ॥ जना भिषेकं कृत्वा स नपी विना पिनामहृन ॥ उग्निनो प्रज्वलाग्न्याज
नाग्निकार्यं विकीर्णया ॥ १०१ ॥

यो ब्रह्मचारिणा ॥ १०२ ॥ अग्निकार्यं विकीर्णे पेति पत्नीसानि याभावे पि प्रवसता कोऽपि हेनहोमः कृ

कथयित्वेति ॥ १ ॥ भृगुतुंगो नाम तीर्थविशेषः ॥ ३ ॥ निवेशान् गृहाणि ॥ ३ ॥ महानदीं गयाख्यामेव

म॰ भा॰
आ॰ प॰
३९

वैशंपायन उवाच ॥ कथयित्वा च तत्सर्वं ब्राह्मणेभ्यः स भारत ॥ प्रययौ हिमवत्पार्श्वं ततो व
ज्रधरात्मजः ॥ १ ॥ अगस्त्यवटमासाद्य वसिष्ठस्य च पर्वतं ॥ भृगुतुंगे च कौंतेयः कृतवाञ्छौच
मात्मनः ॥ २ ॥ प्रददौ गोसहस्राणि सुबहूनि च भारत ॥ निवेशांश्च द्विजातिभ्यः सोऽददत्कुरु
सत्तम ॥ ३ ॥ हिरण्यबिंदोस्तीर्थे च स्नात्वा पुरुषसत्तमः ॥ ददर्श पांडवश्रेष्ठः पुण्यान्याय
तनानि च ॥ ४ ॥ अवतीर्य नरश्रेष्ठो ब्राह्मणैः सह भारत ॥ प्राचीं दिशमभिप्रेप्सुर्जगाम भरतर्ष
भ ॥ ५ ॥ आनुपूर्व्येण तीर्थानि दृष्टवान्कुरुसत्तमः ॥ नदीं चोत्पलिनीं रम्यामरण्यं नैमिषं प्रति
नंदामपरनंदां च कौशिकीं च यशस्विनीं ॥ महानदीं गयां चैव गंगामपि च भारत ॥ ६ ॥ एवं
तीर्थानि सर्वाणि पश्यमानस्तथाश्रमान् ॥ आत्मानं पावनं कुर्वन्ब्राह्मणेभ्यो ददौ च गाः ॥ ७ ॥
अंगवंगकलिंगेषु यानि तीर्थानि कानिचित् ॥ जगाम तानि सर्वाणि तीर्थान्यायतनानि च
दृष्ट्वा च विधिवत्तानि धनं चापि ददौ ततः ॥ कलिंगराष्ट्रद्वारेषु ब्राह्मणाः पांडवानुगाः ॥ अभ्य
नुज्ञाय कौंतेयमुपावर्तंत भारत ॥ ९ ॥ स तु तैरभ्यनुज्ञातः कुंतीपुत्रो धनंजयः ॥ सहायैरल्पकैः
शूरः प्रययौ यत्र सागरः ॥ १० ॥ स कलिंगानतिक्रम्य देशानायतनानि च ॥ हर्म्याणि रमणीया
नि प्रेक्षमाणो ययौ प्रभुः ॥ ११ ॥

349

३९

नदी ॥ ७ ॥ राष्ट्रद्वारेषु पर्वतसंधिमार्गेषु कलिंगाख्यतीर्थानामनतिप्रशस्तत्वात् ॥ उपावर्तंत परा

॥२४॥२५॥ १६॥ [illegible] विस्तर ॥ १४॥ अध्यायः ॥

पारस्यं [illegible] ॥ [illegible] दशवार्षिकं ॥ २४

[illegible] ॥ २५ ॥

[illegible] ॥ २६ ॥

[illegible] ॥ २७ ॥

[illegible] ॥ [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] ॥ वैशंपायन उवाच ॥ [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] ॥ ३४ ॥ [illegible]

[illegible] ॥ ३५ ॥ इति श्रीमहाभारते आदिपर्वणि [illegible] अर्जुनतीर्थयात्रायां ॥ २०८

[illegible]

म॰ भा॰
आ॰ प॰
३५१

अग्नौ मोहमयायित्र त्रिकाण्ड त्रिकाण्ड तत्रैव यान्नि तानि दृष्टिलकरानेवाचारोदूपणे ॥ २४ ॥ समाः वर्षा
णि हिमालये तपो विदूर्मनत्रये णेमएकाग्रौ लदः तत्प्रोमना तान हिमाद्रिनिवेदे प्रयोगोश ॥ २५ ॥

एतत्तच्छ्रुत्वं भवतस्त्वाः कल्पकल्पायकामि हे ॥ एतेन तत्र समयेनैनं मां प्रतिप्रसन्नो बभूव ॥ २४ ॥ तत
थैनि प्रतिनाय तां कन्यां प्रतिमहेत्य च ॥ उवाच तनाद्रेन किं किम्वः कंनीहतः समाः ॥ २५ ॥ तस्मा
तेन सम्यक्त्वमेव परिपूर्णस्य वर्णकं ता ॥ श्रामं सत्यप लिंगं तत्त्वतामभाव निवर्तितं ॥ २६ ॥ इत्यादिपुराणे लि
ङ्गजे न तीर्थयात्रायां ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ ततः स मद्रे तीर्थानि दृष्टिलोमस्तर्पणमः ॥ अस्य
गत्वा सत्यपुण्यानि सोमनाथानि पञ्चभिर्मिः ॥ १ ॥ तत्रैव तानि सर्वतीर्थानि तत्र पंच समतापसा ॥ प्रत
कीर्तानि यान्या ॥ सन्तु रत्नाकर पञ्चभिर्मिः ॥ ५ ॥ सुरा हत्य तीर्थं सोमद्रं यो लोमं च समयाववं ॥ कार्य
मंत्रसत्रेच हृदयमेव फलं च ततः ॥ ३ ॥ आरहाज त्यतीर्थं तत्पापप्रणाशनं मद्रतः ॥ एतानि पंच ती
र्थानि हृदयौ कुरु सत्तम ॥ ४ ॥ विविक्तान्यपलत्वायु ताननितीर्थानि यानि उवः ॥ दृष्ट्वा च वर्षमाना
नि मनि मि र्ये मेव हि मिः ॥ २ ॥ नारद उवाच ॥ आहां पंच वर्षं सोमद्रं नि चत योयतानां ॥ तत
एतानि वर्षेन तीर्थानि कृत हतं दृत ॥ ७ ॥

३५०

२९०

अध्यायः ॥ ततः इति ॥ पंच तीर्थानि आगास्य सोमद्रं योलोमकारं यमस्यावहानीयानि पंच तीर्थानि ॥ ३५१
२ ॥ यमेव हि मिर्ङ मेरणे देवतीर्थे नाम्न्य विनाशं यत्पद्मिः ॥ ७ ॥

[illegible]

स॰ भा॰
श्रा॰ प॰
३५२

श्रयः ॥ ततः किं ॥ अथ यामसान्नतत्त्वतः ॥ ५ ॥ प्रतीतो वृत्तसर्वोत्तमयितं ॥ ६ ॥ वर्द्धवर्द्धस्व ॥ ७ ॥ सैन्यः सर्वभूतसद्वन

२९९

शब्दे च घोरे मे योच समी चौ तु कुशलाः ॥ यो गाय यौ ननं विप्रसभ्यगा ज्ञा स भारत ॥ २० ॥ ताडंयो
धर्मं सम श्रुतो मयि ताश्च तं हितं ॥ तच्च ताम्रा सद्भूतं वा न मनो वा रक्षं यं च न ॥ २१ ॥ नाकं ध नस
हतेनाः स्थितसल प स्थितिनिर्मले ॥ सोऽय धन्य स्थितो ऽस्मा मत्ता सह तेः ह वियर्षभ ॥ २२ ॥ याहमूल
नवं भूयं च विश्वाय स्थानं समाः ॥ इत्यादि पर्वणि पर्वजैन तीर्थयात्रायां ॥ वैशंपायन उवाच ॥ त
तो वयं प्रस्थिताः सर्वा भगवन्सलम ॥ अथयामस प्रयाणे विप्रं ननय्योयनमच्युतं ॥ १ ॥ सूपेण वय
स्या चैव कं स्थीयं च दर्शिताः ॥ अथ सर्वं कनवनः सर्वं न सहै सिनो स्थित ॥ २ ॥ ततः एव वयो स्मा
कं समयर्षा स्मल योधन ॥ यह दधे सं स्थिता स्मानं प्रलो बुद्धा मि हागता ॥ ३ ॥ प्रव या नलस्थिय
सैन्याम सं ते यमं च हितः ॥ न स्मा हुर्मेत्त वह्निं स्थिनाः स्मा निं स्थित सहै सि ॥ ४ ॥ सर्वभूते षु य
स्थित मेयो ब्रा ह्मणा उच्यते ॥ सत्यो भवनक स्याच्च एवं वा हो मनो स्थितं ॥ ५ ॥ यत्र यो च प्रयचा
ना स्थितः कर्वे निपालनं ॥ पूर्व रुणे नां प्रपन्नाः सन स्मानं वं न सहै सि ॥ ६ ॥ वैशंपायन उवाच
एवमुक्तः स धर्मात्मा ब्राह्मणैः शुभकर्मकृत ॥ अस्मत्कृतवानीर विमोमसमप्रभः ॥ ७ ॥
ब्राह्मणा ऊचुः ॥ प्रानं स्थान सह ह्वं समर्थं मव यथा वाचकं ॥ परिमाण स्थानं वेनन्ते इस च यथा वाच
कं ॥ ८ ॥

कः सैन्यो ब्राह्मणा स्थितो य ॥ ९ ॥ स्थानस ह स्वादयः प्राह्य स्वलन वाच कः इहन यान प्राहुः स्थानमेव

३५२

352

चौ॥२०॥ उलूकदूतवउद्धृतमात्र॥१२॥२॥

वैशंपायन उवाच॥ ते यांति श्रुत्वा महात्मानो वीर्यं मार्गेण तपो धने:॥ ऊषुर्मनानिनि तीर्थानि दु
पुष्करमनसः॥ ततः सोमदमासाद्य महर्षिं लीकसनकं॥ विनयस्थदत्ता प्रश्रयः स्नानं चकृरे
पांडवाः॥१६॥ अथ तंवृष्टमस्यान्यंतरजेत्त चरोमहान्॥ जगाम देवर्षिरायादः कृतोपश्रुतेऽथवजं
यं॥१८॥ स नमस्य च तं तेषां विसृज्य यदजं तेचरं॥ उदंति इत्यमहत्या हृदये तेन चतिनी नाचर:॥१९॥
उत्कृष्ट एव श्रातृत्व सौ तेन तथा शालिना॥ वभूव नारीकल्पा याः सर्वा भरणभूषिता॥२०॥
दीव्यमाना श्रियायाता नन्दि कामरूपा मनोरमा॥ नदं कुंतमहेन तदप्रकृतोपश्रुतेऽथवनं तयः॥
ता स्त्रियं परमश्रीनंदं च वनमप्रदीन॥ कावेन समस्तिकल्पा किंक तेवा स्त्रिन तेचरि॥ कि
म थं च मरू पापमिदं कृ नवती पुरा॥ नारद उवाच॥ अप्सरा अस्मि महत्वाहो देवारण्ये विहारि
णी॥ दृष्ट्वापवनयं तेनिर्नियं वरा नाममहावल॥५॥ समस्त लोकप्रलयोन्याः सर्वाः कामगामा
श्रमा:॥ नाभिः सार्थप्रयाता नामिलोक पालभिवे पानं॥ ६॥ ततः पपनामहे सर्वा ब्रह्मणे
सशिलं तत्॥ दृष्ट्वं तनमधी यानमेकमेकां तचारिणं॥ ७॥ तस्यैव तनयसारानं तद्दनं तेन
सा हतं॥ आदित्याश्च तं देवा कृतं सर्वे कामायन॥ ८॥ तस्य दत्तान तन्वाङ्गह्रूप चा
रुतनमूत्रसं॥ अवनीर्णः स्नानं देशं तपो विघ्नचिकीर्षया॥ ९॥

४२ ॥ श्र[illegible]तः ॥ सोमयाने विधिना ॥ श्रपयाने वृष्णिसमभद्रतीरेषु ॥ ५८ ॥

वैशंपायन उवाच ॥ ततस्त्वाः पांडव श्रेष्ठः सर्वात्र विदुष्यं पतने ॥ न स्या स्वा पार द्वीनात्मा मोद यामास वीर्यवान् ॥ २७ ॥ तस्याश्रमं समासाद्य मतिलक्ष्मवनं स्वकं ॥ नालदास रसो राजन्न्रदृष्ट नयथाश्रुता ॥ २८ ॥ तीर्थानि पुण्यानि पवित्रावान तथा तत्राप्तुताः श्रम ॥ चित्रांगदं पुनर्ड्रह्म सलिल पुनर्ययौ ॥ २९ ॥ तस्याश्रमं नयत्स्वं राजन्नं तपस्विनं ॥ तात्र दृष्ट्वा पांडवो राजन्नगोन्द्र (िः) समभिनो गमत् ॥ २४ ॥ इत्यादिपर्वणि एर्जन तीर्थयात्रायां ॥ वैशंपायन उवाच ॥ सोपयाने वु तीर्थानि वु ए(ण)मायतनानि च ॥ सर्वाणि ऐश्वानु एवं ए(ज)नगामामितविक्रमः ॥ समन्दे पश्चिमे यानि तीर्थानि आयतनानि च ॥ तानि सर्वाणि गत्वा स प्रभासम् प्रजगामि वान् ॥ ५५ प्रभास दे पंसंश्रामं वीमत्त्वम पराक्रिनं ॥ हयुएंध रमणीयं चञ्चासावमधुसूदन ॥ १ ॥ ततो गत्वा ततं कौंतेयं समा(ो)यं ततन्नमा यत ॥ २२ सत्रानेन तान्वोन्वप्रभासे कृष्णपांडवौ ॥ ४ ॥ तावन्योन्यं समाश्लिष्य पृष्ट्वा च कुशलं वने आसीतां प्रियसखायौ नौ नरनारायणो महर्षी ॥ ५ ॥ ततोर्जुनं वासुदेवः पृष्टां चर्यां पर्यपृच्छत ॥ कि मर्थं पांडवैतानि तीर्थान्यनुचरस्यत ॥ ६ ॥ ततोर्जुनो यथावृत्तं सर्वमाख्यातवांस्तदा ॥ श्रुत्वो वाच च कार्णेय एवमेतदिति प्रभुः ॥ ७ ॥ तौ विहृत्य यथाकामं प्रभासे कृष्णपांडवौ ॥ महीधरं रैव तकं [illegible] वासायै वाभिजग्मतुः ॥ ८ ॥

३५२

यदा चेत्ति ॥ उक्तं पुण्यमेवाद्य तीर्थं स्नानस्वरूपेणि भाव: ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ ॥ ॥

यदा वर्षोशाद्य मनाय द्यानी: पुण्य यौन स्ते ॥ उक्तं पंनिनस्नान कप्रिस्यालंपुरु रुपसननस: ॥ १९ ॥
नदापूर्यं पुन: सर्वा: स्वरूपे प्रतिपत्स्यथ ॥ अन्नं नेत्रोक्तं एवं मेहसनायिकदाचन ॥ २० ॥ ना
निस्वेवाप्तिनीर्थानिनन: प्रस्नतिचेवरू ॥ नारीनीर्थानिनाम्ने हृदयोनिं यास्यन्ति सर्वशा: ॥ २१ ॥
पुण्यानि च भविष्यन्ति यावन्नानिमनीषिणा ॥ चरो वा चा ॥ न नोभिवाघनेतिप्रेक्तनाचाप्रिम
दर्शिनां ॥ अचिंत यामोघसन्न नस्मार्दृशः म्वरुः स्थिता ॥ २२ ॥ कन्नाम वयं सर्वा: कास्ते नास्ते ॥
ननेनरं ॥ कमनाछेमयोन लक्ष्मन्याद पेन न: ॥ २३ ॥ नावयं विनं प्रिनेवन हृत्रों दिवसान ॥
इत्युक्तं मोक्षनामात्र देवर्षि मननेनादे ॥ २४ ॥ तं प्रस्व प: स्नानं द्वा देवर्षिमुनिनयस्तिं ॥ नभिवा
यचनं पार्थ स्थितां सवीदिनाननाः ॥ २५ ॥ स्नानो पुत्र: दः लक्ष्मलनकवमोवयं चनं ॥ स्नान
नयथा नाम निदंवचन मन्नवीम ॥ २६ ॥ हरिशोमान नूपे पंचतीर्थानिसंनिवे ॥ पुण्यानि
रमणीयानिनन्वानन्नमाश्रितं ॥ २७ ॥ न चान्यपुण्यवान्ते: नंदवेयोपनेनय: ॥ मोदविप्रानि
पुण्य मावा: लोकसात्सृसंप्राय: ॥ २८ ॥ नत्रेमर्वाचयंवीरम नावाचापिनोगना: ॥ नदिदंस्नन्य
मेवाद्यमोदिना दंत्रयान्नव ॥ २९ ॥ नत्रालमनला: सत्येमन सोमान नेस्थिता: ॥ कृत कर्मण
मवीरपना: सर्वा विमोचय ॥ ३० ॥

कृतस्य भवने रम्ये सर्वभोगसमन्विते॥ उवास स सुखं कृष्णो नव कृत्वा [illegible] सर्वदा॥२०॥ इत्यादि
पर्वणि [illegible] तीर्थयात्रायां॥ [illegible] अध्यायः॥ ततः कल्पियया [illegible] तस्मिन्नेव तके गिरौ
[illegible] तदा तस्मिन् [illegible] ॥१॥ [illegible] ॥ मोक्षद्र
[illegible] गिरौ [illegible] ॥२॥ [illegible] गिरौ [illegible] ॥ [illegible]
मितो [illegible] ॥३॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥४॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] सर्वशः॥५॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥६॥ ततो [illegible] सहितः प्रभुः॥ [illegible]
[illegible] ॥७॥ [illegible] नाम [illegible] प्रतापवान्॥ [illegible]
[illegible] सहायवान्॥८॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥९॥ [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥१०॥ [illegible] महाबलो॥ [illegible]
वधे [illegible] कीर्तिताः॥११॥

९॥ कांचनांगेन सर्वाणि मयघ्नतादिमना ॥१७॥ निःकृदेषु गरहारामेषु पालकृताकि मनतान मार्गादिषु

एवं मेचनन कृस स्वच चनानंमहीधरं ॥ पुरुषामेदांचकुरु पनकुसभोननं ॥ प्रतिवस्तुतानं
नः एवं मप भक्ष चपांडव ॥ सदेव वासदेवेन रण वान्नटननेकान ॥२०॥ अभ्यन्नतापनान्सर्वा
नवे पिनाचपांडवः ॥ सत्कृतंपायनं दिव्यमभगातुत्म सहमानि ॥२१॥ ननलनमहावाहुः पाया
नः पायनेऽभमे ॥ नदीनांपतन नानांचप वेलानांनत्थैव च ॥२२॥ आपगानां वनानां च कथया
मासमानने ॥ एवं सकथयन्नेवनिद्र्यानननमेजय ॥ कौंतेयो पिद्रनल सिंकृयने स्वर्गसनि
भे ॥२३॥ मयुरैः कोकिलैः गीतेन वीणापणवेन चैव ह ॥ प्रबोधमानो बुबुधे स्नातिभिर्मंगलैर्लया ॥२४॥
सकृतावश्यकृत्यानि वार्ष्णेयेनाभिनंदितः ॥ रथेन कांचनांगेन हाटकामभिजग्मिवान ॥२५॥
सकृतावपक्रत्यानि नार्तयेना भिनंदितः ॥ कौंतीपुत्र स्थ एजाचं मयिनिः कृस्केषु पि ॥२५॥ दिद
अलंकृतान्हारकाननवमवननमेजय ॥ कौ नीपुत्रस्य पूजार्थं भणिनिः कृतकेषु पि ॥२६॥ दिद
क्षवः कौंतेयं द्वारकावासिनोजनाः ॥ नरेंद्रमार्गमाजग्मुस्तूर्णं शतसहस्रशः ॥२७॥ अवलो
केषु नारीणां सहस्राणि शतानिच ॥ भोजवृष्ण्यंधकानांच समवायो महाननभूत् ॥२८॥ सत
त्यागत्कृतः सर्वैः भोजवृष्ण्यंधकात्मजैः ॥ अभिवाद्याभिवाद्यांश्च सर्वैश्च प्रतिनंदितः ॥२९॥
कुमारैः सर्वशो वीरः सत्कारेणाभिचोदितः ॥ समानवयसः सर्वाना श्लिष्य स पुनः पुनः ॥३०॥

१६॥ २७॥ २८॥ २९॥ ३०॥

२४ ॥ अनन्तरं अनन्तानन्तवान ॥ २५ ॥ अध्यायः ॥ ततः इति ॥ तस्मिन्विवाहसंदेशे ॥ २ ॥ इति कृष्णनामधेनन्तरी

२११

स०भा
भ्रा०टी
३५५

सत्यमर्जुन कन्यां त्वं प्रसह्य भगिनीं मम ॥ हरस्व यं वरेष्यस्याः को वै वेद चिकीर्षितं ॥ २२ ॥ न
तोर्ह न स्म हृष्यस्य विनिश्चित्य ते निकृष्यतां ॥ पीतोत्यन्तं हर्षान् स्वान्मेषयामास नन्दने ॥ २४ ॥
यमंयानामयनः स्वैर्मिंदू स्य्यनानाघ्रवै ॥ एवमेव च महाबाहुरनततेसपाउवनः ॥ २५ ॥ आदि
पर्वणि सुभद्राहरणे ॥ वैशंपायन उवाच ॥ ततः संवादिते तस्मिन्ननुज्ञातो धनंजयः ॥
गतां रैवतके कन्यां विदित्वा जनमेजय ॥ १ ॥ वासुदेवाभ्यनुज्ञातः कथयित्वे तिकृत्यतां
कृष्णस्य मतमादाय प्रययौ भरतर्षभ ॥ २ ॥ रथेन काञ्चनाङ्गेन कल्पितेन यथाविधि ॥ शै
व्यसुग्रीवयुक्तेन किंकिणीजालमालिना ॥ ३ ॥ सर्वशस्त्रोपपन्नेन जीमूतरवनादिना ॥ ज्व
लिताग्निप्रकाशेन द्विषतां हर्षघातिना ॥ ४ ॥ संनद्धः कवची खड्गी बद्धगोधाङ्गुलित्रवान्
मृगयाव्यपदेशेन प्रययौ पुरुषर्षभ ॥ ५ ॥ सुभद्रा त्वथ शैलेन्द्रमभ्यर्च्यैव हि रैवतं ॥ दैवतानि
च सर्वाणि ब्राह्मणान्स्वस्तिवाच्य च ॥ ६ ॥ प्रदक्षिणं गिरेः कृत्वा प्रययौ द्वारकां प्रति ॥ ततः स
मन्वधावत्तामाशु कामबाणप्रपीडितः ॥ ७ ॥ तामभिद्रुत्य कौन्तेयः प्रसह्यारोपयद्रथं ॥ ८ ॥ सुभ
द्रां चारुसर्वाङ्गीं कामबाणप्रपीडितः ॥ रथेन काञ्चनाङ्गेन प्रययौ स्वपुरं प्रति ॥ ९ ॥ ह्रियमा
णां तु तां दृष्ट्वा सुभद्रां सैनिका जनाः ॥ विक्रोशन्तोऽद्रवन्सर्वे द्वारकामभितः पुरीं ॥ १० ॥

354

३५२

इतिकर्तव्यता ॥ २ ॥ ३ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥

१५॥१६॥ वत्स्यामि विजने स्वयमिति॥ कृष्णेन ह्यपरिष्वक्तमीनि ह्यचिन्तेयिषुर्मौलकउवाच॥ निष्ठुरं नर्तनः प्रतिस्रहं नानमन्यत इति गम्यते॥ १७॥ स भाव स्थानिमिनननःस्त्री विनष्ट गोर्धपांडिन्या

एनेप विलना स्त्रीमिमोर्थस्तु एवमकणथक्॥ नमन्स्वचं रैवनके थोभ पांचकि रैनष्या॥१८॥ विनेकौन्तेन लेनस्मिन्नर्त मानेन्द्रहाकृने॥ वासुदेवस्य पार्थस्य हिमोपरिज्ञगमनः॥१९॥ नन्दवकमम मात्तो नोव सुदेवस तोष्टुभो॥ अनेकनो म सलोमयो सभङ्घदद्रष्टलदा॥२०॥ हद्देवनामम जुनस्यकं दर्पः समस्तायत॥ तेनदेकाश्रमनसंकृसः पार्थमनवयत॥२१॥ अवीनगृहयज्ञः प्रदृसक्तिवमायन॥ यनेचरम्यकि मिदंकामेनालोभनेमनः॥२२॥ मर्मेषा भगिनीयार्के सारणस्य सहोदरा॥ हमत्रानाममद्रेतेयितनमेंदविनासना॥२३॥ यदितेवर्तने बुद्धिर्वत्स्यामि विजने स्वयं॥ अर्जुन उवाच॥ इहिमवसुदेवस्य वीरदेवस्य चस्वसा॥ रूपेणचैषा संपन्ना कमिवैषा नमोहयेत॥२४॥ कृतमेव तु कल्याणं सर्वं मम भवेद्ध्रुवं॥ यदि स्यान्मम वार्ष्णेयी महिषीयं स्वसा तव॥२५॥ प्राप्तौ नु क उपायः स्यात्तं ब्रवीहि जनार्दन॥ आस्थास्यामि तदा सर्वं यदि शक्यं नरेण तत्॥२६॥ वासुदेव उवाच॥ स्वयंवरः क्षत्रियाणां विवाहः पुरुषर्षभ॥ स च संशयितः पार्थ स्वभावस्यानिमित्ततः॥२७॥ प्रसह्य हरणं चापि क्षत्रियाणां प्रशस्यते॥ विवाहहेतोः शूराणामिति धर्मविदो विदुः॥२८॥

स त्वमर्जुन कल्याणीं प्रसह्य भगिनीं मम॥ हर स्वयंवरे ह्यस्याः को वै वेद चिकीर्षितं॥ [illegible]

ष्ठ.नाथार्थेष्वविकृतं ष्ठ.नाथाग्रंमहीनारूपेऽपदेष्णानकमानोकं ॥२३॥ भवेनवैश्वर्यता ॥२४॥ श्रा-

ननहोनरूवः ष्ठ.नाथाग्रतरूपंरहनाग्रुपान ॥ नहीमसालनसर्वेसायुमायिनिवावृवन
समंव चोनिपरुषेवपलदेवप्रधीमतः ॥ पुनरेवसभामध्ये सर्वेतेसमुपाविशन ॥२४॥
ततोऽब्रवीन्महादेव वचोग्रमःपरंतपः ॥ किमत्रागमविप्रोयमिरवमालोकनार्दन ॥२५॥
सन्कृतस्तत्कृते पार्थः सर्वैरस्माभिरच्युत ॥ नचमेऽर्दितोनाप्रजोर्ड्ढिः कलयासन ॥२६॥
कोहिनसैवमधृकाद्भनगानरमेनमर्दति ॥ मन्यमानः कलेनानमात्मानंपुरुषः कचित ॥
इत्येवैवहिंसंवयंकृतंपूर्वंवमानयत ॥ कोहिनामममैनार्थोस्माहंसेनसमाचरेत ॥२७॥
सोवमन्यनश्यास्ताकमनाहपुपवकेशवं ॥ अमहरत्नवानघसमुक्षममस्तुमात्मनः ॥२८॥
कथं हि जिरसोमयीदनंतेनपदंमहत ॥ सर्वविधिष्ठानिगोविंदपाटस्यशैलिवोमत ॥२९॥
अघनिःकोरवामेकःकरिष्यामिवमंयतां ॥ नहिमेसर्वलोकोयमर्जनप्रष्टलितक्रम ॥३०॥
तेनथानाजेमानंतमेप्रकुर्डिमिलिःस्ततं ॥ अन्वपघंननेसर्वेभोजनहस्यपकालया ॥३१॥
इत्याश्वमेधिकेपर्वणिमहाभारतेवैशंपायनउवाच ॥ उक्तवंतोयथावीर्यमसकृत्सर्व ॥
वृष्णयः ॥ ततोऽब्रवीन्महादेवो वाक्यंधर्मार्थसंयुतं ॥ नावमानेकलस्यास्यगरुडकेयणः
प्रयुक्तवान ॥ संमानोऽप्यधिककालेनप्रयुक्तोयंजनसंसदि ॥२॥

२५५

त्वपघंनअन्नमोदितवंत ॥२५॥ अध्यायः ॥ उक्तवंतेति ॥ ५॥२॥

३5ऽ

२० ॥ मेरी डुडभिंमान्नाद्रिकीसन्नद्धः सर्वेभवनेनिरुचयंती ॥ २७ ॥ सन्नेयसमदाये ॥ २८ ॥ २२ ॥

नेसमासाद्यमहिताः सुधर्मामभितः सभां ॥ सभायांन स्वनमर्वमाचक्षुः पार्थविक्रमं ॥ २० ॥
नेषंस्थ्रुतान्प्रभापालो मेरीमान्नाद्रिकीर्तनः ॥ समानत्रेमहाद्योषानानूनरत्नपरिष्कृतां ॥ २१ ॥
लक्ष्मीलेनाथशत्रुन्नमोनरस्यपकात्तदा ॥ प्रनघानमसामुद्याय समापेतः समंततः ॥ २२ ॥
नग्रनाचूलदंष्ट्रानिसृष्टं ॥ मंलगणवेतिच ॥ मणिविद्रुमचित्रणिललितानाम्निप्रभाणिच ॥ २३ ॥
नरनानाचूलदंष्ट्रानिपुष्ट ॥ ललगतावेतिच ॥ सत्रिविंशत्रुनानिशुभ्रपत्तिग्यानीचद्रुनाशुना ॥ २४ ॥
मेलिरेशुभ्रमायाताहृष्टं धकमहाबाहाः ॥ किंशुसनानिशुलपवोविम्यानीचद्रुनाशना ॥ २५ ॥
नेषांसमणविशालांदेवानामपिसत्रगे ॥ मचाखोचेष्टितनिमोः सभापालः सहानगा ॥ २६ ॥
नक्षुनाद्रविवीणालेमदंसरंजकलोचनाः ॥ शस्त्रमालाः पाठीपसमत्येनरंलेकृता ॥ २७ ॥ स
योनयर्धरयानाप्रभासानादरनेतिच ॥ यत्रंपिचमहाहेतिकचचानिदहंतिच ॥ २८ ॥
नानृत्कृष्णः केचिद्दृष्ट्वाम्योलयनेतिच ॥ स्थचनरणान्केचिद्दृढजनतहेमभूधितान ॥ २९ ॥ चना
रेषेद्यांनीपमानेष्ठकवचेष्ठपनः पुच ॥ यपिकेरन्नचोणलाननदातोननमनेमहत ॥ ३० ॥ किंचि
मार्तीननः दीवः केनाहकिंविरोपमः ॥ नीलकामामरेमिकारंवचनमग्रवीत ॥ ३१ ॥ यथ
देवकदयाप्रनालक्षोभलेननाईने ॥ श्रस्त्रभावमविनायसंकुलामोहुगर्जिताः ॥ ३२ ॥ राम
नावदभिप्रायपमाख्यानसंमहामतिः ॥ यदस्त्रहविरंकर्तेनर्कहपमतेद्विताः ॥ ३३ ॥ राम

२४ स्नायायनेहदनरेवयोनरेमति ॥२९॥ गोपालिकावधूः वल्लवीवेषं गोपालकृसंवंयानयदम

स. भा
श्रा. पं
३५०

गुभिगमय्य च राजानं नियमेन समाहितः ॥ प्रमचौजालणान्नायों द्रौपदी समितिसिवान ॥७॥
नद्रौपदी प्रणवाचप्रणम्यालकृहनंदन ॥ नद्रौवगाहकौंनेयय चसाहानलाम्मना ॥८॥ स्नव
द्रुमाणिभारप्रणृद्वेवंयः प्रयायने ॥ नयावद्गुविपंकृलांविलयंनीयनेजयः ॥ तांतथामा
नमप्रयमलमयामाप्तचामकृन ॥९॥ सभद्रांतवमालाप्पराकौशोयवासिनी ॥ पार्थः प्र-
स्थापयामासकृतांगोपालिकावधूः ॥१०॥ सापिकंतेनरूपेणशोभमानायशस्विनी ॥ सव
नप्रेष्माप्तायवीरपत्नीनवांगना ॥११॥ ववंदेपृथुनामाचोप्रथामद्रांयशस्विनी ॥ तांकृनी
चाहसर्वांगीमृणालिप्तनमूर्द्धनि ॥१२॥ प्रीत्यापरमयायुक्ताचाशीर्भिर्युक्तनातनां ॥ ननोभिगा
म्यवनितापूर्णेन्दुसहृशानना ॥१३॥ ववंदेद्रौपदींभद्राप्रेष्याहमितिचाब्रवीत् ॥१४॥ प्रत्युत्थाय
नदाकृष्णास्वसारंमाधवस्यचा ॥ परिष्वज्यावदत्प्रीत्यानिःसपत्नोस्तुनेपतिः ॥१५॥ नथैवम
दितामद्राताम्राचैवमहितिति ॥ ननस्तेहृष्टमनसः पांडवेयामहारथा ॥१६॥ कुन्ती च पर
मप्रीतावभूवजनमेजय ॥ श्रुत्वातं पुंडरीकाक्षः संप्राप्तं स्वं पुरोत्तमं ॥१७॥ प्रविवेन पांडवप्र
स्थमिंद्रप्रस्थागतंनदा ॥ प्राजगामविशुद्धात्मासहरामेणकेशवः ॥१८॥

हिषीवेषेणद्रौपद्याः कोपोमाभूदिति ॥२९॥ मद्राहमद्र ॥२०॥ श्रुंजनप्रयुक्त ॥२२॥

३५०

356

[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

स॰भा॰
आ॰प॰
३५८

२४॥ जन्मार्थे जननी यत्र लामर्हं नो ननस्याः वरपद्मीयाः नेत्रामर्षे॥ ४५॥ चनत्रेजं वाहृचन सकृतं॥ ४६॥
महस्य रथानां गवां दोषश्रीणां॥ ४७॥ वरवाना मधानां॥ ४८॥ सौरीणामहिरन्नसा॥ ४९॥ स्वर्णपा

शुपिशिरललामेणसमागजस्त्यथाविधि॥ मृगिकेषावमाप्राणवाक्र्यांपारिवहते॥ ३०॥
नश्रीयमाणोगोविंदोविनयेकाप्यहृजयन॥ भौमंचग्रहसमांद्रविधिवन्मनिहृजयन॥ ३१॥
नांघहस्वंपकश्रेष्ठान्कनीपश्रोशुपिशिरः॥ प्रतिजग्राहसत्कारैर्थाविधियथागतं॥ ३२॥
गृहवन्हृजयामामहतेषांकांक्षितहृयथ्यवन॥ कांक्षितभावदमेमणाकेक्षितरूपमिवादितं॥ ३३॥
नेषांदृष्टोहृषीकेशोजनमार्थेयनमाजमं॥ हराणेवैसमद्रयानानिदेयंमहायघा॥ ३४॥ रथा
नांकांचनांगानांकिंकिणीजालमालिनां॥ चतुर्युजामुपेतानांसहस्रैःकृपालशिक्षितैः॥ ३२॥
महस्रंप्रददौकृष्णोगवामयुतमेवच॥ श्रीमन्मातृरदेशणानांदोषश्रीणांवरणवर्चसां॥ ३४॥
दृदौपार्थाय शुक्लानाम सहस्राणएकविंशतिः॥ वडवानांचशुद्धानांचंद्रांशुसमवर्चसां॥ ३५॥
ददौजनार्दनःप्रीत्या सहस्रंहेमभूषितं॥ ३६॥ तथैवाश्वतरीणांचदांतानांवातरंहसां॥ ३७॥
शतान्ययनकेषूणांश्वेतानांपंचपंचच॥ ३८॥ स्नानपानोत्सवेचैवप्रयुक्तंवयसान्वितं॥ स्त्रीणां
सहस्रंगौरीणांसुवेषाणांसुवर्चसां॥ ३९॥ सुवर्णशतकंठीनांहरेवर्णणांसुवर्चसां॥ ४०॥ शु
वर्णशतकंठीनामरोमाणांस्वलंकृतं॥ परिचर्यांसुदक्षाणांप्रददौपुष्करेक्षणः॥ ४१॥ प्र
ष्टानामपिवाह्यानांवाह्लीकानांजनार्दनः॥ ददौशतसहस्राख्यंकन्याधनमनत्तमं॥ ४२॥
नैःसुवर्णमणिश्रांतंकेशयामाणांमाघरोमाणांत्रनाहितमयेमावलीनांस्वलंकृतानांमलनरामलेके

महामारः [illegible] ॥ २४ ॥ दानवानि मिन [illegible] यश्चैव कर्मनाम ॥ २५ ॥ हरणं [illegible] निरीक्ष ॥ २० ॥ प्रतिग्रहं च मानो

[illegible] पकस्य हामाये: [illegible] ॥ [illegible] ॥ सेवेन
[illegible] ॥ २२ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ २३ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ २४ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ २५ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ २६ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ २७ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ २८ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ २९ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ३० ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ३१ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ३२ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ३३ ॥ [illegible]

[illegible] ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ प्रतिपदे [illegible] ॥ [illegible] ॥ २७ ॥ ३८ ॥

श्रमित्ति ॥ कृतवान्सर्वं मन्त्रसानकोपवानननिःस्वरस्वर्भः ॥ २० ॥ श्रमीकर्मा ऋमीकर्मेनानाट्श्रमान
निमिषयनेनश्रयणगण्णेकसंच त्रिगोनश्चनाश्रययदर्शनः नक्ष्योयोवायवश्रात्मपत्नीनिसानरपश्चा

सवरयमनानीरेसगयांसमहायशाः ॥ मगानियन्वराहंश्वरेमेसार्थेकिरीटिना ॥ २२ ॥ ननः
समहासोमहंकेशवशवप्रियाहारा ॥ नयंनमिवयोलोमीर्वोनिमंनमजीननन ॥ २३ ॥ दीर्घं
वाहुमहोरस्कंरूपमानमपिंदमं ॥ समहामहावेवीरमहमिमनंनरर्षभं ॥ २४ ॥ श्रमीयमनमांयै
वननलमरीमर्दनं ॥ श्रमिमनमिनिशाकुरानेनिवृहत्वर्षभं ॥ २५ ॥ सुमानसामनिरथःसंव
मूवयननयान ॥ मनेनिमिषयनेनेवपामीगर्भाकुलागन ॥ २६ ॥ यशिलाने महानेजाः कुंती
पुत्रोयुधिष्ठिरः ॥ श्रपुनंगाहितानिमवःप्रादौनिषाकांश्चमारन ॥ २७ ॥ दयितेवाहदेवस्पेनास्पा
नमसनिचामवन ॥ पिनृणामिवसर्वेषांप्रजानामिवचंद्रमाः ॥ २८ ॥ जन्मप्राप्तनिकुलस्यचके
नस्रक्रियाःशुभाः ॥ सचापिवरुरोवालःशुक्लपक्षेयथाशशी ॥ २९ ॥

यदेहरूपनादयराणीवनमहाश्रग्निवदमिमन्वरनिशासं ॥ ३० ॥ निषान्नवप्रियमहिमाना ॥ ३१ ॥
३२ ॥ क्रियालंकरणादिकाः ॥ ३३ ॥

म॰भा॰
आ॰प॰
१५५

3 S8

कनाकनस्यकनमाकरत्नेपमनादिनामाधिने ग्रहकलेनांत्तून देस्वनः शिरं नस्य ॥ [illegible] ॥ प्रभिन्नानांमना
नांत्रिपानंत्र गताक पीम लेः ॥ [illegible] ॥ रत्नांग्यः पंतृमानांरम्य विवेषोनि संचयः प्राविद्वः सर्वेनोचि प्रकी

कनाकनस्यमृत्स्यकनकस्या श्रिवचेसः ॥ मनम्या वानदाशाहींदर्दोदशानना ईनः ॥ [illegible] ॥
गत्वानांनप्रभिन्नानांविया प्रकरवनांमरें ॥ गिरिकूटनिकाशानांसमारोहनिवर्तिनां ॥ [illegible] ॥
कूमानांचरुचिरानांवाहणांहेममालिनां ॥ हयानांदेहपेनानांमहद्धसाहस्रप्रिय: ॥ [illegible] ॥
रामः पालितहरुत्ति कंदर्दोपार्थायलांपाली ॥ प्रतिमानांहलधरः संचंधप्रतिमानयन ॥ [illegible] ॥ पा
समहायनरत्नौवोवस्वकंवलके नवान ॥ महागानमहाशाद्भः पताकाशोवलाकनस्य ॥ [illegible] ॥ प्रति
दुस्सारमाविद्वः प्रविवेशामहायन ॥ प्रतिमाश्वरंग्रलोपांद्वियचक्रोकावहोमचन ॥ [illegible] ॥ नेसमे
नग्राहनन्सवेंधमिराजोयुधिष्ठिरः ॥ गुरुनयामासनाचेरहंसंधकमहायान ॥ [illegible] ॥ नवनच
नामहात्मानः करहस्यधकोनमा ॥ विनद्भरमरावासेनाकसकनिनोयथा ॥ [illegible] ॥ एवमन
महानादेहलकशनसवादिते ॥ यथायोगंयथाप्रीतिः चिनकुः कहहसग ॥ [illegible] ॥ नाम्प्रहस्त
मवीयांहेविरुत्वदिवमानहन ॥ मुनिनाः कहर्षितेमनः शनदुरवनोप्रति ॥ [illegible] ॥ वामहवस्त
नयशेहयकमहारथाः ॥ रत्नान्यादाययभाप्तिस्तानिकहसनमे ॥ [illegible] ॥
पार्थेननवेवसहभारत ॥ उवासनगरेरम्ये पाककप्रहष्टोमहामना ॥ [illegible] ॥

तीः महायनोवकुमोत्सवः ॥ [illegible] ॥ नवेति ॥ नवोत्तोनाद्यायंनोवादयंनस्य विजन्कृतिनपर्वः ॥ [illegible] ॥

सर्वसंहननोपेतं सर्वैः संहननैः पराभिभावकैः सौहृदोपेतं ॥ १२॥ कस्येति ॥ नराणां मानलक्षणम्
तिस्मायेनरेतः सेल्कनितं कस्य ख्यायिने नवाकूलस्यस्यसर्वं नमस्तेनयथासचवान ॥ १९॥ प्रग्रह

म॰ भा॰ आ॰ प॰ ३१९

सर्वसंहननोपेतं सर्वैर्बलदानवदिनं ॥ कुर्यैश्वस्यधमर्कं पंमानाननमिवोरगं ॥ १३॥ सिंह
दंष्ट्रं महेष्वासं समन्नमानं नागविक्रमं ॥ मेघदुंदुभिनिर्घोषं बहूरांचंद्रनिभाननं ॥ १४॥ कृष्णस्य सहा
यं वीर्यं रूपेण सारूकौ ॥ ददर्श पुत्रं बीभत्सुः सुभद्रा चानिलवतं यथा ॥ १५॥ पांचाल्यपि च पंच
भ्यः शुभलक्षणाः ॥ लेभे पंच सुतान्वीरान्श्रेष्ठान्पंचाचलानिव ॥ १६॥ युधिष्ठिरात्प्रतिविं
ध्यं सुतसोमं वृकोदरात् ॥ अर्जुनाच्छ्रुतकर्माणं शतानीकं च नाकुलिः ॥ १७॥ सहदेवाच्छ्रुतसे
नमेतान्पंच महारथान् ॥ पांचाली सुषुवे वीरानादित्यानदितिर्यथा ॥ १८॥ शास्त्रतः प्रति
विंध्यमूचुर्विप्रा युधिष्ठिरं ॥ परप्रहरणज्ञाने प्रतिविंध्यो भवत्वयं ॥ १९॥ सुते सोमसहस्रे तु
सोमार्कसमतेजसं ॥ सुते सोमसहस्रे तु सोमार्कसमतेजसं ॥ २०॥ सुतसोमं महेष्वासं सुषुवे
भीमसेनतः ॥ २१॥ श्रुतं कर्म महत्कृत्वा निवृत्तेन किरीटिना ॥ जातः पुत्रस्तवेत्येवं श्रुतकर्मा
ततो भवत् ॥ २२॥ शतानीकस्य राजर्षेः कौरव्यस्य महात्मनः ॥ चक्रे पुत्रं सनामानं नकुलः कीर्ति
निवर्धनं ॥ २३॥ ततस्त्वजीजनत्कृष्णा नक्षत्रे वह्निदैवते ॥ सहदेवात्सुतं तस्माच्छ्रुतसेनेति यं विदुः ॥ २४॥ एकवर्षांतराः ॥ २५॥

रणेनानपावृत्तत्वमहारथे ... ॥ ... ॥ २० २१॥

३१९

359

वनध्यानदमिति ॥ मंत्रमनं वाभिमनं मनः मनं नवेवच ॥ श्रमनं च पनर्वेदेचनत्थान पणमीति ॥
गस्थपयो नावाति ननपर्म ह्यात्तदाय चाणारिदिनोयं ॥ प्रयोगोपसंहारान्यायगुरुं ननीयं ॥ चनये
मचस्मायिनेयानादि ॥ यदृष्टानादेवयात्रवः पलाधने ॥ यद्गुह्यं गुह्यतरं योगाय हृष्यानीतिलयावेशं
यायासः ॥ दर्शनविधं यथायोगेन ज्ञानेनयथा ॥ आदानमयसंध्यानं मोदायं विनिवर्तनं ॥ ध्यानमसृष्टिः
प्रयोगाय प्रायश्चित्तानि मंडलं ॥ रहस्यं चेति दशधाधनर्वेदागमिप्यते ॥ आदानं वाणायनिधनम
नस्यानं मोचंग योगाः ॥ मोदायं लयेनिपातनं ॥ विनिवर्तनं हीनन्यासं लयकालितन्यासमहस्य
प्रावर्तनं ॥ ध्यानं मध्यरूपं स्थानयनयोगायायाप्रयायाप्रसंध्यानेच ॥ मसृष्टि संगमलिनायपयो

वनध्यानं दर्शनाविधं पनर्वेदमसिंदमः ॥ अर्जुनादेस्वेदाद्धं सकलं दिव्यमानसं ॥ १ ॥ विज्ञा
नेनपिचावापयं योगदेचमहात्मनः ॥ क्रियायपिचमर्चोमविधेयाजन्मविद्यपन ॥ १ ॥
आगमेचप्रयोगेचचक्रे नरूपमिवामना ॥ तुलोपयुंजोमईश्वेदमायोनजयः ॥ २ ॥

गतलेनीमयमयोः ॥ मयमांगयुहयोगांमधोनकालसंयोगेनप्रायश्चित्तानिस्वनः पदनोचा
प्रामहप्रमानस्थकालायाचानशरयानादेशमिप्रानाथांलनमायप्रमायादिविधयः ॥ मंडलानिव
कवनस्थमनानुरूपेन आम्नायमायप्रस्थनदायवपः रहस्यं प्रयुक्तादिवेयोगुणयदेनेकेवलदेवगुण
रवानन्याहिदिकं ग्रहणादिमानचदुरादि ॥ ३ ॥ अहीनमाकालेप्रयोगानं नाविज्ञानेविधि
हेलानेसोप्रशेश्वमोवाप्रयोगपदनेक्रियायायायीपीयुउनर्धयाप्रसयाणदिष्युप्रविधेयाद
पिवानिप्रमितः सांकलेनापिलयदर्जेनः श्रुतं ॥ ४ ॥ आगमेप्रयोगेश्रनयाने ॥ ५ ॥

म० भा०
आ० प०
३६१

महान्तश्चैवं वेदोक्तं नानाकर्मयोगोपासनाद्युक्तः कृपया नः शाममार्गोऽयोनि सोमाद्वि ॥ २१ ॥ तत्संयुगपद्वस्य
मित्यत्र सोऽतिपाठे स्थानेगामिश्रीमाहृद्दृश्यानिवरेमिरे इत्यन्वयः ॥ ३ ॥ देवेन देवोपगानानकर्मणो
पालनेन केवलेरे अपितभावेन भगवानत्रदेवेनः परितोमनः कान्तं सनोरमं प्रजानां ॥ २ ॥ कर्मणा

ध्यानस्थिः सहितो राजा चलन्मिरपिकं च यो ॥ प्रत्युत्पन्नानैविलितो वेदैरिव महाध्वरः ॥ १० ॥ तं न यो
ध्यातृयोगिग्राः परिवार्यापतन्ति मिरे ॥ तद्दृष्ट्वानिसमानम्बोः सन्नाघनि मिवाम्बरः ॥ ११ ॥ यश्च सा
नेहानिश्रीमाहर्तांश्चन्द्रश्यामले ॥ प्रनानां रेमिरे तत्स्नेनगामिद्दृश्यानिवा ॥ १२ ॥ न तत्केवलदे
वेन सन्नाभावेन रेमिरे ॥ यद्दृष्ट्वा मनः कान्तं कर्माण्यस्य चकारतत् ॥ १३ ॥ नदृष्टकं न चाप्तस्यं
पं: नास्तत्वं न च नारिपं ॥ भाषितं चारुभाषा प्रत्युतं ते यथोष्ठपीमन ॥ १४ ॥ स हि सर्वस्य लोकस्य
हितमात्मन एव च ॥ विकीर्णे महानेनारे मेमयेन सततं म ॥ १५ ॥ तथा तम हिता सर्वे पौर
वा विगतज्वराः ॥ अवहन्तस्थिवीपालांस्तापनं तः स्वेन ते सा ॥ १६ ॥ ततः कतिपयाहस्तु वीम
त्वाः कृत्यमनवीत ॥ यशानिकृत्यवन्तं तेगच्छावो यमुनां प्रति ॥ १७ ॥ तह्र तत्रतेनावि द
सम प्रभसूदन ॥ श्यामाकृष्णरोचोचाचो रोचनं तेन नारदेन ॥ १८ ॥

360

प्रियंकरत्व मक्ता वाक्यन सा व्याप्तपितदाहृत्सांग्यं तहोति ॥ अत्रसहितं कुः स्वदं ग्रहितमिति पाठे सप-
र्याथः ॥ अत्रियं प्रीत्यनुत्पादकं भाषितं वचनं तत्र रोपाकृष्टं मद्व ॥ १५ ॥ उक्तमिति ॥ १६ ॥ १७ ॥

३६१

[illegible] नि श्री [illegible] ॥

[illegible] प्रकाशे अध्यायः ॥ इंद्रप्रस्थे इमा रि ॥२॥ [illegible] पानि लक्ष्मानि ऊर्ध्व रेखा दिनि [illegible] भी वो दी

नि चक्र [illegible] कारयेम [illegible] क्रियमाणानि च यस्य स्याने ॥३॥ समंपरस्य राधीइया ॥४॥ ते घा मि नि

[illegible] नक [illegible] नच [illegible] नयनानि च ॥ चकार [illegible] स्थानि [illegible] रत्नम ॥५॥

कन्या [illegible] नतनः [illegible] नाः ॥ [illegible] सर्वं मि [illegible] नादि समान्वं ॥६॥ दि

[illegible] ॥ [illegible] समा [illegible] ॥७॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ इंद्रप्रस्थे [illegible] स्याग्रराधिपान ॥१॥

[illegible] ॥ [illegible] ॥

[illegible] ॥२॥ [illegible] ॥ श्री

ति [illegible] ॥३॥ [illegible] ॥ वयो

[illegible] ॥४॥ [illegible] ॥ पदि

[illegible] ॥५॥ [illegible] मनि:

[illegible] ॥६॥

[illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥७॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] नेनि ॥ [illegible]

म०भा०
आ०प०
३४२

१ ॥ हरिपिंगलनीलपीताभिर्लांगूलैः ज्वलत्समप्रभः ज्वालावलयीतप्रभः ॥ १४ ॥ उपपन्नं समीपात्
न उपलक्ष्य उमेत्य वचनमब्रवीत् ॥ १५ ॥ पप्रच्छ ॥ सोऽब्रवीद्दिति ॥ १६ ॥ कामितेषु वोदानं समर्थोऽर्थये

२१७

न च गन्ता महात्मानो कृमलापभूतं नयो ॥ मत्कृते सनयोगजं न लन लौनिये दत ॥ १७ ॥ नत्र दृष्टे
वानीनानि विरुद्धानानीन यालिव ॥ वहूनि कश्यपि नामी मानते पार्थसपवौ ॥ १८ ॥ नत्रोपवि
ष्टो महितौ नाकपृष्ठे ऋषिनाविव ॥ अप्सरागण जटाविप्रो वाहदेवयथं नजयो ॥ १९ ॥ वहद्धालभ्रती
काशः प्रलम्ब कनक प्रभः ॥ हरिपिंगो ज्वलप्रभः प्रमाणाणामनः प्रभः ॥ २० ॥ नरत्तो दिव्यसंका
शः वीर्यवाज्जटाधरः ॥ पद्मपत्राननः पिंगस्तेजसा प्रज्वलन्निव ॥ २१ ॥ उपपन्नं हुतं ते तत्कसोऽभ्यगा
मानं द्विजोत्तमं ॥ अग्निर्वै नैषा मद्देवश्च न एषा मन्त्रपन स्थान ॥ २२ ॥ उवाच दिव्यं वैशिकांउ वगृहे ॥
वैशंपायन उवाच ॥ सोऽब्रवीदर्जुनं चैव वासुदेवं च मा मतं ॥ लोकप्रवीरौ तिष्ठन्तौ खांडवस्यस
मीपतः ॥ २३ ॥ ब्राह्मणो बहुभोक्ता स्मि भुंजे परिमितं सदा ॥ भिक्षे वार्ष्णेय पार्थौ वामेकां तृप्तिं प्रय
च्छतां ॥ २४ ॥ एवमुक्तौ तमब्रूतां ततस्तौ कृष्णपांडवौ ॥ केनान्नेन भवांस्तृप्येत्तस्यान्नस्य यतावहे ॥ २५ ॥
एवमुक्तः स भगवानब्रवीत्तावुभौ ततः ॥ भाषमाणौ तदा वीरौ किमन्नं क्रियतामिति ॥ २६ ॥ अग्नि
रुवाच ॥ नाहमन्नं बुभुक्षे वै पावकं मां निबोधतं ॥ यदन्नमनुरूपं मे तत्तद्युवां संप्रयच्छतं ॥ २७ ॥
इदमिंद्रः सदा दावं खांडवं परिरक्षति ॥ न च शक्नोम्यहं दग्धुं रक्ष्यमाणं महात्मना ॥ २८ ॥

२ ॥ तस्मान्नस्पृहदाने ॥ १ ॥ क्रियतामिति ॥ भाषमाणौ तौ मन्त्रमब्रवीदित्यन्वयः ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥

३४२

362

[illegible] ॥ [illegible] ॥

वासुदेव उवाच॥ [illegible] ॥२९॥ वैशंपायन उवाच॥ [illegible]

[illegible]

अतिथिः सहितो धीमानेव भीतेऽसमाधिपः ॥ ततस्तु असितस्यास्य पश्यतः कालवोचनाः ॥१७॥
कालेन महता चिन्ताहालस्य स स्नेनराधितं ॥ ततः प्रचोदयामास असितस्तां महीपतिः ॥१८॥
वैजैविकेशानां प्रापसान प्रतोडुम्भ तेक्रतं ॥१९॥ ततस्तेषां मन्नमतेनत्वविप्रेस्तु नराधिपः ॥२०॥
स्वं समापयामास असितो विधिवद्देवः सह ॥२१॥ तस्यैवं वर्तमानस्य कदाचित्कालपर्यये ॥ स जगा-
माहर्ते कामस्य संवत्सरगणान् विभो ॥२२॥ असितो नाभ्यपश्यत्स समाहर्तं महत्तमनः ॥ सवराजा
करोषत्तं महातेजस हूतनः ॥२३॥ प्रतिपाले न संतापेन दानेन च महायशाः ॥ असितेन
न थामाम भूयो भयस्यत्नं द्विजः ॥२४॥ तेचाप्यनस मिप्रायेन वक्कुरमिनीजनः ॥ सचाश्रम
स्याबाजर्षि सानवाचहषानिन ॥२५॥ पश्यद्वेपतितो विप्रः अशुभान्यानचक्षितः ॥ आ
श्रमान्सो स्थितं श्याभिर्धीप्रलोभ्यत्नवंस्थितः ॥२६॥ नमांहित्वक्रनअंशर्मा त्पातयितमथानो
अस्थाने वा पराक्रमं कर्तुमेक्षि जमनसः ॥२७॥ अथ पश्यत्वदेवो विप्रः प्रस्मार्द कनमहृत्व ॥
सोऽन्वगाना त्रिवीर्णां देवलं जनः कार्यवजया ॥ प्रस्तास्ये विनावस्यामि यननः कार्यं द्विजोत्तमः
अथवा हं प्राविंश कौ मवद्धि ईषकारणेन ॥२९॥ असितो न्यानामिष्यामि याजनाद्विजोत्तमः
एतावत् कारवचनं विशाम संपर्थिवः ॥३०॥

362

॥ भूतानि च हि निर्गतकामानि ॥ ५ ॥ १६ ॥ महायज्ञैः पंचभिर्ईश्वरस्याराधितैः स्थानैः फलमिः प्राप्नोति यो

यस्य यत्र स्थानस्य न त्वकः पन्नगः सदा ॥ सगरस्य तत्कर्नेहाद्वंपरिरक्षति वसन्मम तु ॥ ७ ॥
नत्र भूतान्यनेकानि रक्षन्ते स्वप्रसंगतः ॥ नेदि यचनं त्वत्कर्मो भिरूर्ध्वं पाककर्तृस्थानेन सा ॥ ८ ॥
समांपत्रत्वतिनं रक्षन्ते मेघाभ्योभिः प्रवर्तते ॥ ततो रक्षन्नभूतान्मौ विदियस्त हीवमीयितें ॥ ९ ॥ ॥ पुत्रवा
मपुत्रवाभ्यां महायाभ्यां महत्त्वचित्ताभ्यां समागतः ॥ इदं पंडेवोऽदवं तावमेतदं तं हुतनभया ॥ ३ ॥ १० ॥ जनमे
पृटकथाराभाभूतानिवसमेनतः ॥ जनमात्रवितरं नमस्करवं नोवा रविरस्य ॥ ११ ॥ जनमे
न ॥ य ॥ वाच ॥ किमर्थं भगवान् विप्रः लोऽदवं रक्षमिदति ॥ रक्षमाणं मनुष्टेदं लोनाना सन्नस
मानुतं ॥ १२ ॥ नहोतत्कारणं ज्ञातुं सम्यक् प्रतिभाति मे ॥ यदा देहस्मुकृद्धः लोऽदवं हृव्यवाह
नः ॥ १३ ॥ एतदिच्छामि यो ज्ञातुं भ्रेतं मित्राभिनन्दन ॥ लोऽदवस्य पुत्रदारादेशयाम समभवन्न
ने ॥ १४ ॥ वैशंपायन उवाच ॥ हन्तते कथयिष्यामि यो गतीभ्यष्टिसंसतो ॥ कथामिमां नरश्रे
ष्ठ लोऽदवस्य विना शिनी ॥ १५ ॥ योगात्मनः श्रुतानेतन्नजानाति हृदयोत्तम ॥ योन किं तम वे
लोनो वत्तविक्रमसंस्तुतः ॥ १६ ॥ यत्नात्मन्यतिधीमान्यथा नामो दिकमान ॥ नेसच मह
य तेः क्रतमिधायाप्रदस्तिः ॥ १७ ॥ तस्य नाम्ना भवनच हि दिवसे दिवसेन्यप ॥ सते क्रियासमा
रभेदानेषु विविधेषु च ॥ १८ ॥

ति होमादिभिर्महामहेतेति पाठे तत्र मंत्रेणं प्रतिष्ठे ॥ १० ॥ सर्वेयत्ते ॥ १९ ॥

यज्ञेनं प्रतियातनं उद्दिष्टानयाचप्रमहज्जपलं संप्रक्रुन्नमष्टाकं विषयेनवर्जनेनचयंतनय
ज्ञनेः पिकारिग्रस्तर्थीः ॥४४॥ स्नानंनान्यथाराभिः सहितन्यायास्यपारणेः ॥ वक्ष्ये नमवयचामि

नाष्टाकेमेनदिपथेवर्जनेयानंतंप्रति ॥ कथाचप्रमहज्जनंतयोरान्तवर्षिना ॥ ४३ ॥ या
ज्ञविध्यामिमिन्द्रजेश्चासमयेनपालय ॥ श्रीरुद्र उवाच ॥ समाहारं पराजेन्द्र ब्रह्मचारी समा
हितः ॥ स्नानंनान्यथारामिथेदिनंपंचमे ऽनघ ॥ ४४ ॥ कामंप्राश्यप्रसेयवं समर्जः प्रास्यहितं
नय ॥ एवमनकृत्ह्दे गुणेन कि मेवनाधिपः ॥ ४५ ॥ तथाच काराग्न्येयघोर्कं स्नानपा-
णिना ॥ पूर्णेन द्वादशोवर्षे पुनरायात्मद्वैश्यः ॥ ४६ ॥ इत्युक्तेच सरानान्नेपकं केलोकभाव
नः ॥ उवाचपरमप्रीतः श्वेतविन्नपसजनं ॥ ४७ ॥ नीषितोहं नपश्रेष्ठ नयेहायनंकर्मणा
यान्नतंत्राह्मणानंन विधिहष्टंपालय ॥ ४८ ॥ मनोहं नाम्यं नाथयात्मयामिपालय ॥ स
मांक्षात्त्वहितिनदेवमहाभागो द्विजोत्तम ॥ ४९ ॥ इवोमाइति विद्यानः सहितो यान्नविध्यति ॥ ५० ॥
मन्नियोगात्महतेजासंभारः संप्रियंतते ॥ ५१ ॥ एतच्छ्रुत्वात वचनं हृष्टेण समदाहृतं ॥ ५२ ॥
रवुठांपुनराणाप्यसंभारान्सुनराजेयत ॥ ततः संपन्नसंभारोभ्ययोह्रुद्र पारगमत ॥ ५३ ॥ कं
र्स्नातामसंभारः सर्वोपकरणानिच ॥ तमप्राह महादेवः प्रीतस्ते दीक्षामवेहिति ॥ ५२ ॥

मार्य ॥ ५५ ॥ प्राप्येन मुनाहिवेहवोपितेन विधिदृष्टंत्राह्मणानांमिदं ह्दित्रिति चवर्षाकरणसंत्र
लिंगानंमिनविधिदृष्टं ॥ ५६ ॥ स्वयं यत्न भोक्षाम्भनाकृतिष्ठानंमंगमयान्त्वं तंलयात्ययामीत्यर्थः ॥ २२

363

घे

१५॥ तु हि मां हृत्वा द्विवेकलं त्वनाद्यसंभावितः नरो वशः अस्मदीयस्य मातुलनादिनष्टो ॥२१॥४२॥

पद्मानश्चोक्तवान्नान्येयानन्नाश्रीं पदं नयं ॥ नन्नस्वेयाज्ञकाः कुतस्तन्मत्तुर्नरोपसन्नतं ॥४१॥
सर्वेक मा प्रत्तसर्वेवेनेनेयास्थिवानम ॥ ननावं यंपरिश्रांतानाः सन्ननंकर्मकालितः ॥४४॥
आमादृष्यानपरिश्रान्तानास्तंनेनदृष्टान्मर्हति ॥ द्विमोहंसमासाद्यपनरासंभाविनोनच ॥
गाहक्रतुसकापांतंसहितांयानशिवाधानि ॥ मामिदेवंवचः अन्नासंकुदः स्थेनकिंनपः ॥
केलासंपर्वतंगतानपरसंप्रसमाश्रितः ॥ श्रावाययमकृष्टदेवंनियतः संस्थितस्तः ॥३
पवासपयोरानन्दीशकावासनिधनः ॥४॥ कदाचित्तदपश्चात्सेकदाचिद्विश्रोदृश्ये
मातृमकरोद्गाजामृत्वानिपत्तानिच ॥५॥ देवाहृत्वानिमिवंनिपन्यापाद्विवाच
लः ॥ यत्तप्तमानमवद्गात्वाप्येनकिंःसमसमाहितः ॥ तेनवानपगाईतेनयामानमर्द
नपः ॥ कंकरःपरमश्रीमाद्रांयामासभावनः ॥ श्रीनो स्मिनरपतांईतनपसानेपांत
प ॥ वांतुत्तोहमईतेयन्नमिश्रुलिपार्थिवः ॥४॥ एतच्छ्रुत्वानवचनेनहृष्टस्यामित्रनेज
सः ॥ प्रत्तिपन्नमहात्मानेराजर्षिः प्रत्यभाषत ॥५॥ यदिमेभगवान्प्रीतःसर्वलोक
नमस्कृतः ॥ वरंयमोदेवदेवेशयाचनपदंहरेश्वरः ॥ एतच्छ्रुत्वातुवचनंरावणेन
प्रभाषितं ॥ उवाचभगवान्प्रीतः स्थितस्तंगिरिंवचः ॥४८॥

कृतं तल्लोउ वह्निमाकाशांगत्वा यत्र सत्यमंगति ॥ ९४ ॥ किल्बिषान् तानि हृष्यान् ॥ ९६ ॥ नानाय हराती

सं भा
गु प
३६९

शुगादेव नियोगेन यत्नयाभसस्कान्कृतं ॥ आलयं देव शत्रूणां सर्वोरं लोउं वंवनं ॥ ९४ ॥ तत्र
सर्वाणि समस्तानि निवसंति विभावसो ॥ तेषां तं मे दृष्मात्स्म: प्रकृतिस्थो भविष्यसि ॥ ९५ ॥
गरुडं श्रीकृष्ण दृष्ट्वा तं ततो मोक्ष्यसि किल्बिषात् ॥ एतच्छ्रुत्वा तु वचनं परमेष्ठिमखोद्भवं ॥ ९६ ॥
उत्तमं तत्र माहात्म्यं प्रज्ञाय बहु नाशनः ॥ आगम्य लोउं दावमत्तमं तत्र समाश्रितः ॥ सहस्रा
श्वानलज्वालाभिः क्रुद्धो वायुसमीरितः ॥ ९७ ॥ प्रदीप्तं लोउं वं दृष्ट्वा ये सत्त्वा निवासिनः ॥ पावमय
लं समानिष्क्रम्य पावकं प्रपश्यंतये ॥ ९८ ॥ करैर्ललकिरणैः श्रीकृष्णलमादायसमंततः ॥ त्रिषिद्भुः पा
वकं क्रुद्धाः पातश्रेष्ठस्य महत्त्वशः ॥ ९९ ॥ बहुशीर्षा महोनागाः शिरोभिर्जलसंततिं ॥ समरद्रः
पावकं भासेसमंततः क्रोधमूर्छिताः ॥ नश्यैवाथानि समस्तानि नानाप्रहरणोद्यमैः ॥ विर
यं पावकं श्रीकृष्णमनयन्न शमं ॥ १०० ॥ अनेनैव प्रकारेण भूयो भूयश्च प्रज्वलन् ॥ समस्कुनः
प्रणामितः लोउं वेदमवाहनः ॥ १०१ ॥ त्यादिपर्वणि लोउवदाहे ॥ वैशंपायन उवाच ॥ स
ततोगरुडमापन्नः सदा हानिसमन्वितः ॥ पितामहस्य पादानं संक्रुद्धो हव्यवाहनः ॥ १०२ ॥ त
त्र सर्वं यथान्यायं सर्वमावेदयत् ॥ उवाच चैनं भगवान् ब्रह्मा हव्यवाहनं सविचिंत्य तत् ॥ १०३ ॥

३६४

२१८

३६९

घोषैः नानाविधैः प्रहरणैः पावकप्रदीप्तं लोउवनानां तु नाहितं सुखं तस्मैत्रलं दीपितं ॥ ४ ॥ प्रथमा

दीक्षिताः कर्मसुनिष्णाताः ॥ ४ ॥ प्रकृतिं स्वभावं ॥ ६ ॥ वसोर्धारा कर्मविशेषः येन हूयमानेन पतनं स्रुवं सं
ततधारा ३ येषां तां तेन हूतं हविर्येषां तु तमेव वसोर्धारां तत्र होतारः पञ्च कर्मणः यत्र यत्र ह्येवाश

एतत् श्रुत्वा तु वचनं तस्य तेषां महात्मनः ॥ ३ ॥ ते समाहूय तत्र देवं वचनमब्रवीत् ॥ एष
यज्ञ महाभागाः येन किं हितं मम ॥ एतं यज्ञपतिं श्रेष्ठं मन्त्रियोगेन सम्प्रियं ॥ ४ ॥ वाद
यज्ञसमः ॥ ४ ॥ एवमाकण्र्य वचनं हरेः स्वपितृवाचं तु ॥ ततः सर्वे समागम्य तेजसा तेन हा त्मनः ॥ ५ ॥ प्रयाका
लिन्येव वचनं हरेः स्वपितृवाचं तु ॥ ततः सर्वे समागम्य लिखन्त तेन महात्मनः ॥ ५ ॥ ६ ॥ देवा सह
संयगोत्रं च सर्वं सर्वं हूतं दक्षिणं ॥ नक्षिन्नाविप्र सा भिन्न पातः सर्वे महात्मनः ॥ ७ ॥ सोपिया
मन्त्रानाविप्रलभ्यः सम्यालब्धाः ॥ येन न दीक्षिताः सर्वे हरिं पाप्मसु महौजसः ॥ ८ ॥ तेन सावि
ज्ञमहाभागाः स्वधर्म शाविधानतः ॥ ततो भगवतो वंशे विकारः समतायत ॥ ९ ॥ तेन साद्य
प्रहीनस्य ज्ञानि निर्श्लेनं समा विधानतः ॥ सत्यापिताचान्मानं तेजो हीनं हृताशनं ॥ १० ॥ तेज
मसदं तं पुण्यं ब्रह्मणो लोकसूनिनः ॥ तत्र ब्राह्मणा मासीन लिङ्गस्य च नमब्रवीत् ॥ ११ ॥ एत
सा विप्रहीनो सिबले न चलता मने ॥ इतो वै न तत्सादेन महात्मनः प्रकृतिं स्थिरां ॥ १२ ॥ तथाद
ध्रुता हूतनवयज्ञगवान् सर्वलोककृत् ॥ हव्याचारं स्थितं वाक्यमवादाय सत्रिय ॥ १३ ॥ तेनस
ह स्वर्गा लिङ्ग सोर्धारां हूतं हविः ॥ उपयुक्तं महाभागानेन तत्त्वा निराविधानतः ॥ तेन स
विप्रहीनमासहसा हूयवाहन ॥ मामाम ह्वेयं यावके प्रकृतिस्थो भविष्यसि ॥ १४ ॥

नमेधाधारे ति कथितो धाड पश्चं नं भार्के ॥ १५ ॥ मागमः ज्ञानि सिनिविधि शिरा मेनानपञ्चतेय
के नाए यथार्थं सिनर्थः ॥ १६ ॥

कारणानि त्वं हस्यायनानि यन्त्रयन्ति ॥ २ ॥ अध्यायः ॥ एवमिति ॥ ५ ॥ आदित्यमरुद्भिः प्रवृत्तं ॥ ५ ॥ प्रतिग्र

३२८

उपायं च कथितं मया वन्यं च मरिष्यसि ॥ निवत्स्यसि मया सार्धं द्वादशवर्षाणि महावने ॥ ५ ॥ पौरुषे
ण न यत्कार्यं न कर्तारो नयपालक ॥ कारणानि समर्थानि मया वन्यानि मरिष्यसि ॥ ६ ॥ इत्यादि
पर्वणि खांडवदाहे ॥ वैशंपायन उवाच ॥ एवमुक्तः समग्रा वाक्यं मकेन कृष्णाशनः ॥ चिंत
यामास वर्षाणि लोकपालं दिदृक्षया ॥ ५ ॥ आदित्यमरुदद्वैदैवं निवसंतं जलेश्वरं ॥ मचनं चि
तितं नानार्थयामास पावकं ॥ ५ ॥ नमस्त्रीकृत्य मकेनः प्रतिगृह्य जलेश्वरं ॥ चतुर्थं लोक
पालानां देवदेवं सनातनं ॥ ३ ॥ सोमेन राज्ञा यत्दत्तं धनुश्चैव इषुधी च ते ॥ तच्च यच्छोभमंपंशी
ध्रुं रथं च कपिध्वजं ॥ ४ ॥ कार्यं च सुमहत्पार्थो गांडीवेन करिष्यति ॥ चक्रेण वासुदेव
श्च तन्ममाद्य प्रदीयतां ॥ ५ ॥ ददानीत्येव वरुणः पावकं प्रत्यभाषत ॥ तदद्भुतं महावीर्यं य
शः कीर्तिविवर्धनं ॥ ६ ॥ सर्वशस्त्रैरनाधृष्यं सर्वशस्त्रप्रमाथि च ॥ सर्वायुधमहामात्रं परसै
न्यप्रधर्षणं ॥ ७ ॥ एकं शतसहस्रेण संमितं राष्ट्रवर्धनं ॥ चित्रमुच्चावचैर्वर्णैः शोभितं श्ल
क्ष्णमव्रणं ॥ ८ ॥ देवदानवगंधर्वैः पूजितं शाश्वतीः समाः ॥ प्रादाच्चैव धनूरत्नमक्षय्यौ च
महेषुधी ॥ ९ ॥ रथं च दिव्याश्वयुजं कपिप्रवरकेतनं ॥ उपेतं राजतैरश्वैर्गांधर्वैर्हेममालि
भिः ॥ १० ॥

365

शाद्वलादिनाप्यायन्नीकृत्य ॥ ५ ॥ महासागरमतिप्रमाणेन स्पृष्टं प्रयाणे च ॥ ४२ ॥ राजतैः रत्नवत्तैः

मियनः पप्रपनः ॥१॥४॥ ... ॥ प्रानक्रतोः संवधि ॥१८॥२४

दुणयः परिहृत्नोमे यथानैपदासेनच ॥ लोकं वंदावमथैव नियनो ह्यपाचीपने ॥३॥
नवनागणगचेनो हृषे देवो विभावसो ॥ संप्रान्पेमानपेलोकेकाधांधं हिदिवौकसां ॥४॥
मन्लेनवाग्हदेवं चयोनो लोकाभिमस्मने ॥ नावैनोसहिनाचेहिवां उवणासमीपनः ॥
नोनंयाचवसाहृगोदाहृकं लोकं वमप च ॥ ननोयस्वहिनेदावेरचिते निर्दौरपि ॥६॥
नोनसत्वानि सर्वाणि पञ्चनोवारपिपातः ॥ देवगनंचसहिनो नवमेनातिसंशयः ॥७॥
एतच्छुत्वा नवचनं नरेनो हव्यवाहनः ॥ कृत्वाप्यांच पागम्य पपमथैनमब्रवीत् ॥८॥ न
ते कौंतेय नवा न हि एवमेव नयोजन ॥ नच्छुत्वा वचनं तद्धे धीमतो जातवेदसः ॥९॥ अग्र
वीनप्पथाई लनकाल सहपंथवच ॥ दियर्ते लोकं वंदावमकामसपानकृतो ॥१०॥
अग्निरुवाच ॥ उनमाहात्मि मेसंति दिव्यानि च वहूनि च ॥ येरहं शक्नुयां योद्धुं मपि चन्न
पुरान्वहन ॥११॥ धनमेनास्ति भगवन्वाङ्कवीर्यं लोकहितिनं ॥ कृष्णेनः समरे यत्न देवंयदि
वहेनमम ॥१२॥ शरैस्म मे सर्वाणि वहूनि गिरवतैः ॥ विप्रमयतः ॥ नहिवीर्ये रथंशक्तः पुणनमम
यश्चेषिनानन ॥१३॥ यथाशदिव्यानि चयथाकुनान्यानरेह्यहः ॥ नथंचमेयनिर्वांधहृ थेप्र नि
मतेतसे ॥१४॥ तथाकुवकवीर्यं ... नाद्युंपविघनेसमं ॥ येननागोपिपावाच विहन्या
नायवोरणे ॥१५॥

वक्त्रं वरं त्वामानःश्रीयदानन्दन्तत्वदृष्टाकुलितवत्प्रानःप्रयोक्त ईलमायानीतर्थः॥ वचनं नयद्ववरत्वयोरि

म॰भा॰
आ॰पं॰
३६२

वक्त्रनाभं न नस्य कं दर्केकृत्स्नायया वकः॥ आमेय मसं ह्यि नं मच कल्पो भुवनंद॥२३॥ मत्र
वीणावक्त्रैव मेनेन मधुसूदन॥ अमानुषानपिरागे च सितमंशयं॥२४॥ अनेनन म
नष्याणां देवानामपिचारवे॥ रक्षःपिशाचदैत्यानां नागानां चाधिकल्पया॥२५॥ अविद्यासित
संदेहः प्रवरोपि निवर्हणे॥ विमं त्रिमंत्रणे वै वनयामाप वशत्रुषु॥ हत्वामानि हर्तुं संख्येपाणि
सेद्यानिलेषुनः॥२६॥ वरुणास्त्रदैत्यसैन्यादस्मपानि निरवना॥ दैत्यानांकर्णीनो नागानां कैम्ये
दर्कोप्रभः॥२७॥ ननःपावक संग्रह्ला ग्रहस्थान्नागम्ये॥ कृतनीलेशस्थ संपत्रोरथिनोधृति
नावधि॥२८॥ कल्पो भगवन्नाद्रु मपिसर्वैः सुरासुरैः॥ किं पुनर्वज्रिणेकेनपन्नगार्थं प्रयुक्त
ना॥२९॥ अर्जुन उवाच॥ चक्रपाणिर्हृषीकेशो विचरन्पृथिवीं यथा॥ चक्रेणाभ्यसात्सर्वं
विहितेनन्नवीर्यवान्॥३०॥ विष्णुलोकेषु न न्यूलिप यत्र कर्याजनार्दनः॥ गांडीवं धनुरादाय तथा
त्वयो महेषुधी॥ अहमप्युत्सहे लोकान्विजेतुं युधि पावक॥३२॥ सर्वतः परिवार्येदं दावमेतं
महत्तमो॥ कामं संप्रज्वलाद्येवक्लौतस्मस्त्र करमीति॥३३॥ एवमुक्तःसभगवान्दाशार्हेणा
र्जुनेन च॥ तेजसं रूपमास्थाय दावं दग्धुं प्रचक्रमे॥३४॥

366

१६२

तिमेरित्रीप्रनरवाग्रे यंमस्तभिवात्॥२२॥ नदेवाह॥ दिव्यं दिव्यमिति॥२४॥ स्पृस्पृन्महनायोद्ध मिछता॥२३॥

मानमेनं दीप्तिमंतं [illegible] कर्मा ॥ २३ ॥ [illegible] ॥ २४ ॥ [illegible]

[illegible] ॥ २५ ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ २६ ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ २७ ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ २८ ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ २९ ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ ३० ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ ३१ ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ ३२ ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ ३३ ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ ३४ ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ ३५ ॥ [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] ॥ ३६ ॥ [illegible]

[illegible] ॥ ३७ ॥ [illegible]

[illegible] ॥ ३८ ॥

[illegible] ॥ ३९ ॥ [illegible] ॥ ४० ॥ [illegible] ॥ ४१ ॥

म॰भा॰
भा॰प॰
१६९

शारीरे लोके प्रतिमा वदंतन्तनः ॥८॥ वसरोनसिवक्तौ ॥९॥ मध्यानः मध्यमानसा ॥१०॥ मध्वः रथवक्र

शारीरे रथौ दीर्घे मेर्दे हृदंतरसा यथयः ॥ अरुणेंतरवने नमग्रा तिनः प्राणा संस्थये ॥१॥ कां
क्षिउत्पतनः पार्श्वः शरीरे संक्लिष्ट लंडशः ॥ यानयामास विहगान्परीमेक सवर्मनि ॥२॥
नेशारचितमर्वीमानिलंदंतोमहाराजान ॥ ऊर्ध्वमन्यामवेगेन निपेतः खांडवेषु नः ॥३॥ पा
वेत्पाहृतानां च संवनाः स्पवनो कसां ॥ विमदः प्रणवे घोरः समं दृष्टेव मध्यान ॥४॥
वह्नेः स्थापि प्रदीमस्य तस्य वेनमहार्चिषः ॥ जनयामास हृष्टो गांसमहांतं दिवौकसां ॥५॥
तेनार्चिषा सुसंतप्ता देवाः सर्षि पुरोगमाः ॥ ततो जग्मुर्महात्मानं सर्व एव दिवौकसः ॥६॥
शतक्रतुं सहस्राक्षं देवेशं सुरमर्दनं ॥ देवा ऊचुः ॥ किं निमित्तमनवाः सर्वे दग्धा तेचिरमान
नाः ॥७॥ कच्चिन्न संक्षयः प्राप्तो लोकानाममरेश्वर ॥८॥ वैशंपायन उवाच ॥ तच्छ्रुत्वा वृत्र
हा तेषां स्वयमेवान्ववेक्षत च ॥ खांडवस्य विमोक्षार्थं प्रययौ हरिवाहनः ॥९॥ महता रथवृं
देन नानारूपेण वासवः ॥ आकाशं समवाकीर्य प्रववर्ष सुरेश्वरः ॥१०॥ ततो तमक्षधा
मात्रधाराः प्रावसहस्रशः ॥ चोदिता देवराजेन जलदाः खांडवं प्रति ॥११॥ असंप्राप्ता
नास्यधारास्तेजसा जातवेदसः ॥ खएव समशुष्यंत नकाश्चित्पावकं गताः ॥१२॥

इत्यसंभवकांडे नमस्तापमवमाः ॥२२९॥२०॥

१६९

367

समाधिः कालीकरालोग्रदंष्ट्रानिशमतिदुर्वावन॥२४॥ दहनः दहमानस्य॥२५॥ अग्न्याशयः॥ नैरात्म्या
मितिनि॥ आश्रितो नैरात्म्ये शमितिदृयोगे करस्थस्थलं ग्रामं नद्यो भासमाने भावग्रयोगस्तु च

सर्वेन्द्रियः परिवार्याथ समाधिं संवलनलक्षणा॥ दहात्मलोके वेदावं श्रुणोतिम्भिवृदर्थायन॥२४॥
प्रतिमन्त्रसमाविपणनहनेभवनर्जभ॥ मेचलनिननिर्दोषः सर्वभूतात्मकप्रयत्न॥२५॥
दपनलक्षणवचमोरूपंदावस्य भावन॥ मेरोरितननेद्रशकोलौ सम्यग्मनोज्ञाः॥२६॥
र्गमादिपवेलितवोद्भवदाहे॥ वेदाया॥ ना वा॥ नैरात्म्यभाव प्रश्रेयो दावस्थो भयनश्चि
नौ दिव्यसर्वोसभूतानां चक्रान्तेकरने मरुन॥ यवयनवरपूर्णनेप्रातिनः स्वाङ्गवालयाः
पलांपनः प्रवीरोनोननवनत्रामयावलां॥ ॥ छिन्नापप्रपपूर्णनिरस्ययोगाश्रवासितोः
प्राविष्टावेवरपणेनर्थिनोनो रूपेणनमो॥ ॥ वाहवेदसमानेनभूतानिष्ठानसंवृष॥३
स्नेनमैरवानादानिवनरनः सम्मनन॥ ॥ सप्तेकरेपावहवोनिशमायनया पदे॥ स्पष्टे
नानाविधीतिष्वविलनायानतापवे॥ ॥ समालिप्यसनानमेभिन्नभावनयापदे
स्पर्कनकोकः स्वेहनतवेवनिधनंगता॥ ॥ सरहस्यनामयान्येशमनेनलनेकपाः॥ न
नदेनौवचूर्णितः पुनराशैप्रपौरि॥ स्थपस्तादिवारणविचेहंनोमहीनहो॥ नवनव
नहेनोवचूर्णितःपुनराग्रेप्रपेदिरे॥ ॥ स्थपदादिचारणेविचेहंनोमहीनहो॥ गतसमाः
स्पष्टपणेविनष्टपनः पारीतिलेः॥ ॥ नलाप्यवृतनोवक्राणमानेपुवक्रिना॥ स्पष्टपणेहूर्ममस्याः

नार्थारहनमुख्यस्थास्यावेवेनितेयं॥ ॥ याविहावेवानानवक्र
वक्राविनावेव॥ ॥ निशमायतितमाः विप्रीतिः कर्कटीफलदिरीर्णाः विसताः मयादिक्रनाः

स॰ भा॰
आ॰ प॰
३६९

अथ निष्ठानिराश्रयः अश्रान्तनिर्वा ॥ १९ ॥ २० ॥ निःसनीकारं वलवदाश्रयान भाविग्लानिहीनं हृदंर

यथाश्रयं तं च संकुष्टो वीमन्त्रोलं लगामिनं ॥ पावकोवाह देवम्यायप्रतिष्ठो भविष्यसि ॥ १ ॥
ततो निस्पृः सहस्राक्षं वे चिन्तमानपृगोः पावैः ॥ यो यथा माय संकुष्टो वेचनं तामन्त्रमान
देवराज्ञो पितिं दृष्ट्वा संश्रुं यमरेः तेनं ॥ स्वमन्त्रमहत्तूनीबद्धा दधिनाविर्तनभः ॥ ३ ॥
ततो वायुर्महाशोषः द्रोमयन्सर्वमाणवान् ॥ विगन्धोज्ञ नयन्नेचाल्लनया यन्मारुताः
न ॥ ४ ॥ ततो तानिमचो यो यंस्तडिल्लनिन निस्वनान ॥ न हिवानार्थमस्त्रज्ञ्वरं ज्ञैनो पाप्त
मृतमं ॥ ५ ॥ वायव्यमभिमंत्राणयप्रतिपतिविषाद्रदः ॥ तेनैं रुप्राणि मेघानां वीर्यं तल
हिनाशितं ॥ ६ ॥ ततलपायप्पुनाः शोषं जगत्ने अपक्षुविधुतः ॥ तपोनवामवद्योमसंप्रयां
नस्तलम ॥ ७ ॥ महावेग्याना निलवहं पकृ निष्प्रार्कमंडलं ॥ निःशनीकारहृष्टपुत्रत भवि
वियाकृति ॥ ८ ॥ शिव्यमानोवसोहैहैः प्राणिलंदे हृनिः हृतैः ॥ तज्ज्वालायसोर्विशान्त
नादैः पूरयन्नगन ॥ ९ ॥ कृष्णमांशं दिनंदृष्ट्वातेन दावमहंकृताः ॥ स्वमस्येन महायान
सुपर्णोयाः यन विभाः ॥ १० ॥ महत्सालक्षसहस्रैः यहनं तुनविलक्ष्य ॥ महत्तं कामपयपून
दाकाशान्कृष्णपांडवौ ॥ ११ ॥ नष्टैवोरगसंघानाः पांडवस्य समीपतः ॥ उत्कृत्तौ विधयो
रं निष्ठोनर्तं विलिताननाः ॥ १२ ॥

वीयसः ॥ १८ ॥

368

३६९

प्रथमचरः ॥ नवेवनि ॥२५॥ निगोयेणंनेयावनाकालेवनांचेनेव निगोयमाणा अट्ठेनेनहजमाना स

२२१

इनेरेवमहामेवेरं भंसियस्सनहकु ॥२८॥
ननोनमचिहाकुडोस्सणमचिणानलहा ॥ इनेरेवमहामेवेरं भंतियस्सनहकु ॥ वमएनहनचोरेलनयिनुसमाकले ॥२९
गाविर्धवामिसंवदंथमविघनसमाकले ॥ वमएनहनचोरेलनयिनुसमाकले ॥ अत्थवाययतं
आयाणवेसिबोडवदाहे ॥ वेशेयापनउवीनस्सअवंधिनोवामियाडवः ग्रमवायतं
णवयंवणसीमनसहनमासम्माणिदणीयन ॥ ॥ लोडवंधचनेमवंधांतुवोवडुमि: पावे:
णवयंवणसीमनसहनमासम्माणिदणीयन ॥ ॥ लोडवंधचनेमवंधांतुवोवडुमि: पावे:
णहाहथदसेयाणनीहारेलोववंद्रमा ॥ ॥ नवकानकिंचिवहमेनिमनंनिमघिनेननः
संखाणमानेहेवाणरसणनासकमाचिनन ॥२॥ नवकलननवासीलागरतेमहाव
लः ॥ दरानानेवनेनसिकूहवेगनोहिस: ॥ ॥ गणजलेनोभवत्तनलकसहसनोव
लो ॥ सयनमकरोनीवेमोदायेतननवेरस ॥ ॥ नणणदेसिरोजनेणवमसनिगो
येने ॥ निगोयेमाणसाकासमसनेनाणिमनरया ॥ ॥ नवाःपारेणनीहेननहणयोरे
णयांडवः ॥ सिमसिहेदगहेणाहामपणहचोपनि: ॥ ॥ नेममोचयिवुवंनीवान
वर्वणयांडवं ॥ मोहयामासनकाहमपसेनसमयान ॥ ॥ मोचमाफननदाहमूचेमा
ज्ञायेनवंचिन: ॥ हियायियाचवणनामाणिन: यांडवोहिननः ॥३०॥

नमाशनकवेनिगैलुनिरुहेजुनेननिमि: मोदयामास
तेमाता निमीदीमुजगालजेंद्र ५५

नीयडकामनकोनवजीवसिनिगो

म॰ भा॰
स्त्रा॰ प॰
२०

१॥ गदा वेदेन ब्रह्मशिवृक्ष मिति निपाते कि विकारो देति प्रोक्तः किं विकेति सान स्या पाठे न नस्य द्वा
मीयाः कुक्ष मा त्रयमिति निस्त नांतन च पूर्विदके वेनेभ्र प्रसिद्धं दाहमयं लोहमयमपि च स्तवनस्य संभाष्य

वेगेनाथानि मा दायव त्नम संच सोऽहनन॥ हूताचेनाविनिमाहहरानमारहहनः॥३०॥
ननः श्मश्रून्तं हृष्ट्वा देवेंद्रोग महाथानि॥ नमह्रः सर्वे था सा गिरि प्रानिशानि हयस्तथा॥३१॥
कालं दृष्ट्वा यमोपमं ननागदं चैव यनेष्वरः॥ ताः ताश्च न नव हलागो विविचित्रांच नवाथानि॥३२॥
स्कंदः पाणिं समादाय नश्योमिहरिवाचवः॥ तेषु धी दीप्यमाना स्नगरहाते स्थिनाव पि॥३३॥
नागरेचु यनर्थी नाम्नस्र सलेन नयम्स्था॥ एवं तं वापि नयाहकुलहत्नाम हावलः॥३४॥ अंगु
लपाणिं न याहमम दैवः पार्थ्य॥ ममहपरि वं वो दे विवचापार्थेमा यपि॥३५॥ मित्रयहू
रथर्थं नं चक्रमायुयन स्थिवान॥ रूपा महूत्र संकुद्धः सविता च विशांपते॥३६॥ मानकार्मक
हिंशाः कृष्ण पार्थौ भ्रहदुवः॥ हद्वाश्च वमव श्रेवमहन ष्ठम हावला॥३७॥ विश्वेदेवाल्स्याता
थादीप्यमानाः सतेजसा॥ हने वा मे चवहवो देवा सोपुहधेन मो॥३८॥ कृष्णपार्थौ निवं
सनः प्रतीपुर्वि विधा पुधा॥३९॥ नया दृष्ट्वा तमहर्षयं निमित्तानि महाहवे॥ युगांत सम ह
पाणि भूत संमोहनानि च॥४०॥

न एव॥४२॥ एवं तं चापीतन वविवक्रंपरीतिपाठे विचक्रं विवुलं॥४४॥ अथेमा स्थपीतन वसंथिर
विवहिन॥४५॥४१॥ निमित्तानि स्ववका नि रक्तापानाहीनि॥४६॥

369

३०

ग्रयः कृतायः कृतान्तलोहतुल्लिकाः पिचनीतिलपाविपमाग्नेयोवयवलेनामेसंस्पृष्टाः सोऽ
ग्रयः कृतायः कृतान्तलोहतुल्लिकाः पिचनीतिलपाविपमार्गेयौवयवलेनामंसंस्पृष्टाः सो
गलिकाः नावकाशवविकौर्णलेयेननद्येनमयः कृतान्तलोहमयंनपाचक्रापमसंस्पृष्टमानि
कलेनमहंगोविपापाणाः अतिहरे दिव्यंननलकामृतमयंचंचेभवंदीचकरंतमयंचंद्रपापाण
लोपमपिवलेहयनाः चाहवोयेधानेप्रतापरथः ग्रयः कृतायचक्रापमसंस्पृष्टसायनवाहवः॥

नोष्ठकरनेपारेः पार्थः सुरोयाश्रिमसहितैः॥ निविष्ठ्याप्तिनंदीमंदेहाभावायपावकं॥
ननेहराः सगंधवीःपदरागस्वपलनामाः॥ उयेनमांदसनलमन्यंतंजोरस्नार्थिनः॥२४॥
ग्रयः कृतायचक्रापमसंस्पृष्टसायननवाहवः॥ कृष्णः पार्थौ लितेसिनः क्रोधयसमर्पितोनसः
नेषाममलिवाहरनंपुर्वधंचमचन्तां॥ प्रमयायोनमोगतिवीमत्तलिपितैः पार्थैः॥२५॥
कृष्णस्यसमहानेनाम्रकेगतिविनाशनः॥ देवदानवसंघानांचकारकदनंमहत्॥२६॥
श्रवापोरावैविद्युत्कवेगोविनानलपाः॥ चेतानिचलनाताप्यनिहतानिलोनसः॥२७॥
ननःशाकैलिनंकुरुहितेरलनामाहेश्वरः॥ पांडुरंगजंनमाख्यायनानुमोसमपाद्रुवन॥२८॥

ऊर्ध्वपदेमहिलोनसः क्रोधेनसंवर्हितनेनसः॥२९॥ अतिव्याहतांकष्टमानानां॥२१॥२२॥ य
ताचक्रवेगेननसार्वक्षप्रवाहेश्वरानाहराणांदयोवेलाग्रणविहितनवलचंप्राणानिहति
एवंचक्रवेगेनाहहलननवेनतिनाग्रहाणाः कृष्णानिनेसाप्याविनिहतिपार्थः॥ चक्रलो
केश्रमपक्रमकंभकातेपकरांगाः श्रयोः जलावनेनीतिमेदिनी॥ २९॥

तथानवशवः स्वल्पमात्राः कृशाः मलाः ॥१॥ प्रभिन्नाः मदच्युतः केसरिणः उन्मत्तकेसराः गुवानः ॥

म.भा
स्या.पं
३०२

नैशेषायनाराच ॥ तथाशीलनिपानेनमीयिताः लोदुवाह्नयाः ॥ हानवाराद्द्यानागा
स्यात्वृद्धवनोकस ॥१॥ हिपाः प्रभिन्नाः शार्दूलाः सिंहाः केसरिणस्तथा ॥ समस्तहिंस्रा विस्र
स्त्रस्तथा मामृजनाः तथा ॥ ॥ तस्यैव मस्तदेवनकसौवाम्रुयता युधौ ॥ इत्यानतादश
हेन संवारिनरवषिनाः ॥ ॥ तेवनं प्रममीस्त्वाथदस्मानमनेकधा ॥ कस्मस्तु यताहे
चनादमनतुकल्पानां ॥ ॥ तेननादेनयोईणनादेन च विभावसोः ॥ रावणामनं कृत्स्न
मानतलदीव ॥ ॥ ततः क्रमो महाबाहुः ससैनो भास्वरं मदैः ॥ चक्रं ... दत्तं ... तेषां
नाशाय केशव ॥ ॥ तेनानाना नद्यः स्रुताः सदानवनिशाचराः ॥ निकृताः शातशूलाः सर्वा
निधनानलेन ... ॥ ॥ तत्र ... ते दैत्याः कृतचक्रविदारिताः ॥ ... संवृताः
संख्यायामिव लोयसा ॥ ॥ पिशाचा ... ॥ निर्गताः ...
यः कालवलसमाश्रिताः ॥ ॥ ... ॥ हित्वा नैका लिसमा
निपातितेभेनिवृतः तथा ॥ ॥ तथा ... ॥ ...
ग्रसं ... नाम न तथा ॥ ॥ समेतानां न सर्वेषां ... ॥ विजेता नामभवकश्री
कृष्णपाण्डवयोस्तिये ॥२॥

र्थः ॥ ॥ दावेवनं ... ॥ निर्वाणाद्यः ... संवादि
तेवने इति शेषः ॥ संवादिने इति पाठे पि स एवार्थः ॥ १४ ॥ ... ॥५॥ २२ ॥

370

३०१

४९ ॥ गिरेः शिखिरशृंगस्य ॥ ५० ॥ शोभते न च लोमश हे अनक रणेन शृंगेन कृतं ॥ ५० ॥ इति श्रीमहाभारते

तथा दृष्टा मे संवृत्ता शक्रे देवैः महत्वाद्युतो ॥ अभीतो युधि दुर्धर्षो नस्मात् सत्यकार्मके ॥ ५१ ॥ अ
श्रावयन्नलनो देवान्भो युद्धविशारदो ॥ सनातदेवोत्तमं शक्रो पूर्वं तस्य मे तदा ॥ ५२ ॥
सहदध्वसंकल्पाः महारथवरूथाः कृतान् ॥ भयाद्रणान्पति तस्य शक्रं सेवाभिपिशित ॥ ५३ ॥
दृष्ट्वा निवातिनान्देवान् दानवेनाजेनेन च ॥ सोपमुखे समागमं स्तवमन्य योनमतिस्थिताः ॥ ५४ ॥
शक्रस्याविनयो वीर्यं सपर्यश्च सहसा कृतं ॥ अभवत्प्रसत्रीतो भूयश्चो नाच यो ययन्ना ॥ ५५ ॥
ततो ममवचोभिसमहूत सत्त्वाक्रमसतः ॥ भूयध्वनदानीर्घं निशात्ता हः हवाभाचिन ॥ ५६ ॥
नक्षत्रे रजौतो न वर्धितानिजन्मेनाः मर्षितः ॥ विष्कर्षे किंयमानां तत्समवे दण्ड पान क्रन्तः ॥ ५७ ॥
भूयः संवर्धयामास नद्धं पाकृष्णसतः ॥ ५८ ॥ सोपमवर्धमहाचे गौरिषुभिः काकृपासनिः ॥
विलयं गामयामास दृष्टियमिनां लघा ॥ ५९ ॥ तनत्सा समाणितियमाण्यरगहिता संमहत ॥
सह संयस्तज सूर्योनिवांतः पांडुनंदनं ॥ ६० ॥ ततो वृत्ते तोचेगावकिल्पेलिना पैरजिह्मगैः ॥
पाथेविंशं सयामासगिरेः शृंगं महद्यथा ॥ ६१ ॥ गिरेर्विष्णोर्धिमाणालयानस्पहं पंनदावभो ॥
पार्केत्वहत्य हस्ते वनमसः पतिषीर्यंतन ॥ ६२ ॥ नेवामिषपतिनासर्वे शोभे नमहंतास्पर्षं ॥ ६३ ॥
गोपानिहन्तासत्रप्रधितानःस्तोऽवालया ॥ ६४ ॥ इत्यादिपर्वणि कीर्तिवाठवग्रहे ॥

भारते वनपर्वणि ... अध्यायः ॥ ॥ राम
२३२

म॰ भा॰
आ॰ टी॰
३०२

२४ ॥ २५ ॥ रागोद्धिचापारुनि श्रुतिहूरक्षोपलक्षणं ॥ २५ ॥ एकायनगानाः सेवीमनाः ॥ २६ ॥ २७ ॥ कृतांतांतमथा

समाहृतरुवाग्राणिनाशयितार्जनः स्यात ॥ अथ समरुर संहाता तेई हिनः कोऽउचालयान ॥ २२ ॥ न
चलकिं विलक्षकोनिम्मनं निश्चरितं ननः ॥ संहिघमान सिध्रुमिरक्षनामसम्माचिना ॥ २३ ॥ नाशा
कृतं स्यन्नूलानिमहूसापयिरतोऽनंनं ॥ निरोहितमसोचालं योऽहूं चापिकृतो रणे ॥ २४ ॥ यानवेके
नविद्यापयानेनेक पवित्रितं ॥ अथ सवसोऽयनरुथो मालाकालहनारुव ॥ २५ ॥ नचालमंतनेपामेरे
यस्य विषमेषुच ॥ पितृदेवनिवासेषु संतापश्चाप्यजायत ॥ २६ ॥ भूतसंचारुवहूवोटीनाश्च कुमे
राहनं ॥ हरुहुर्वा रणेश्चेवनश्यामसगंतारुवच ॥ २७ ॥ तेनशाहेनविरेहगंगमोर्धिचरारुघाः ॥ वि
घायरणेश्चेवयेचनरुवनौकसः ॥ २८ ॥ ननर्दनेमहावाहो नापिकृष्णं जनार्दनं ॥ निरीहितं वे
पाक्रो निकश्चियोऽहं कृतः श्रुतः ॥ २९ ॥ एकायनगतायेपि निष्ठेन तत्र केचन ॥ एतत्सर्वहनवा
रागानत्रैवक्रेणानाम्हरिः ॥ ३० ॥ तेनभिन्नशिरोदेहाश्चक्रवेगाहूनाश्चवः ॥ येनरुपेमहाकायाः
प्रदीप्तेरुहोनसिः ॥ ३१ ॥ समांसरुधिरौघैश्च नरुमा भिश्चापिनर्दितः ॥ अथार्कायसोमप्रविप्रमः
समपद्यत ॥ ३२ ॥ हीमावोदीप्तजिह्वश्च संप्रदीप्तमहाननः ॥ दीर्घांके णःपितारुः क्षिप्रमार
स्ततांचसा ॥ ३३ ॥ तामकृष्णाञ्जनकृतांतस्यांसाध्यहूनाशनः ॥ वस्रवमहितनखमः परां निहंति
मासनः ॥ ३४ ॥

खमोहनं ॥ ३८ ॥

३०२

371

वो

नतेचैलान्यात्रिज्ञानंनेचद्रांयद्याकृतः॥ नैफकृवन्मामथिनंनरामवन्यताश्चता:॥२३॥
प्राननकृनलंसंप्रेत्वविमलोनमलंलया॥ वभूवमदिलोगजन्मशंस न्केशवार्नेनो॥२४॥
निद्रनेशघ्यदेवेपुवागजाचाघागीरिरली॥ प्रानकृनेसमाभाग्यमद्वागंभीरनिसला॥२५॥ नते
सत्वासन्निहिनलाद्कंभुतगोतम:॥ स्वाद्कालेलंइवसत्कृकदेजगनोद्रहो॥२६॥ नच
प्राचोगुधाज्ञेलवपंविद्विवामव॥ वाहदेवाज्ञेनावेनोनिवोयवचनान्मम॥२७॥ नरनारा
यज्ञणवेनोऽवर्दवोदिविष्णुनो॥ मचानप्यभिज्ञानानिपद्गीषोवन्धवकमो॥२८॥ नैनोप्र
वोइरापयौ विनेनमनिनोग्रधि॥ यपितदेंघ्रुलोकेगुगरागाद्दविशन्नमे॥२९॥ सूननीप
नमावेनावपिहवै:सगाहवे॥ यवएवस्मनांध्वैनाकिन्नाएन्नगे:॥३०॥ नस्मादिनःहवैःसा
धेगंनमर्हविवामव॥ विंइकपानयपेननलाइचस्पविनापूनं॥३१॥ इनिनाचान्मयश्च.स्मनपा
विनारमेश्वरः॥ क्रोधामर्षीनमनस्त्रमंप्रनष्टोविवेनदा॥३२॥ नेषूक्षितेनमह्रात्मानेसमवेव
दिग्गेकसः॥ सहिनाःसेनयाराजन्ननलमःवुद्दर॥३३॥ देवराजनरायानेसहदेवेस्वेसन्त
गाहदेवानेमोहिहनारेविनेदन:॥३४॥ देवराजेनानेरजन्महेलोकेपावानेनो॥ निविपांकं
वनेचौरोदाहयामासनलदा॥३५॥

वोऽसे

म॰ भा॰
वा॰ प॰
२०२

॥ भावुनाः प्रतिबिंबगोभाः॥ २१॥ २४॥ प्रलायवद्दवमजेक्रांकरह॥ २३॥ प्रयत्नस्वेनानेसंन नेरविद्रेदे
२५॥ २२॥

वैशंपायन उवाच॥ एवं संप्रश्नं कालत्रिनेत्र राहुनथागते॥ ततो देवं प्रवरस्या मियथाम न
सरिंदम॥ ४॥ यमिन्नानां सुमनेन मसल पत्नी संपिलवन॥ प्राप्तीत्सह विं कृ नवान्नरपाल र
निष्कृत॥ ५॥ समाधीमासिनो गान्नं हविलामर्धरेनसां॥ स्वाध्यायवान्यमेरलः नपसा विजिते
द्रिय॥ ६॥ सगानानपसः पारेदे हस्यन्तरभारत॥ नगामविन्नलोकायन नेमेनवननफलं॥ ७॥
सलोकानफलान्दृष्टान पसानिर्जिनानघ॥ पप्रच्छ धर्मराज स्वमसीपस्थान्दिवौकसः॥ ८॥
मं द्र उवाच॥ किं सुखं साहनन्लोकाग्रमसेतेनपसा जिताः॥ किं मयानकृ तं नन्न यसेनक
मणः फलं॥ ९॥ नत्राहं नकरिष्यामि यस्थेमि स्माहनं॥ फलमेनन्तपसः कथयत्विदिवौक
सः॥ १०॥ देवा ऊचुः॥ भ्रूहितो मानवाव्रह्मलक्ष्यंते ये ननच्छुताः॥ क्रियाभिश्चैव सर्वेषां नन्नपसा
चनसंशय॥ ११॥ नस्या क्रियतो सर्वं यः लेननपसा कृतैः॥ नपसौयन्नकृत्याम्मिन चरेतेविघ
नेत्रताः॥ नद्रमे प्रव्रवाणोत्रीन वलोकांसमाहृताः॥ प्रजायघननो लोकानपभोक्तहिवृष्क
तान॥ १२॥ वृत्तान्मोनरकाम्रवः प्रायते पिनरंष्कृतिः॥ नव्याः रघ्नमसंजानेयननवह्वसानम॥ १४॥
वैशंपायन उवाच॥ नच्छुत्वाम सृपालवच्नक्लेशं दिवौकसां॥ क्रव्यीश्रमपनंस्थाहङ्गं
वेष्वचिंनयत्॥ १५॥

२०२

नथाप्रसंगमयं नामननकस्य निवेशनात॥ विप्रर्षभोऽसहस्रादर्श मधुसूदनः॥४६॥ न
मयि: प्राप्य यामास दिव्यत्वं न सा शिव॥ पारीरवा नदीप्रसादनं निवचलाहकं॥४७॥
जितां स्वर्णं स देवसंचक्रमयम यि छिन:॥ स चक्रमयलं दुग्धादिय वं न च पावकं॥४८॥
ऋषि: पावानि नेत्रं मयवाही निचाग्रचीन॥ नस्मभीन स्वं नेप्र नामामैरितियं नेत्रय:॥
पुरस्वाचमयं पार्थोनीलयचिव भारत॥ नेनमे नव्रसिमाहमयंपार्थोरयाय:॥ नेपा
कोनामधेयेदनेन मचे धीनरमयं॥ नहंन मेस्वदापार्ङ्गः पावकोनदहाहच॥४९॥ वे शं पा
य न उ रा च॥ मारनं पावकोधीमान्दिनालिहयांचच॥ दहाहेकला पार्थभ्यां रविन: पा
कणास्वनानन॥५०॥ नस्वित्वनेदहमानेसउभ्रिनेदहाहच॥ अस्यसेनमयं वेवचन: पा
र्ङ्गःकालस्या॥५१॥ उवाच दिव्यं नामसंदृशदाहे॥ ननमेनयउवाच॥ किमर्थं शार्ङ्गःकालश्रिनेद
दाहनयामाले॥ नश्वित्वनेदहमानेस्रसाक्षेनस्यच स्वमे॥५२॥ अदाहे हस्यसेनस्यदानवस्य
मयस्यच॥ कारणं कीर्तिनं ब्रह्मन्शार्ङ्गःकालानां नकीर्तितं॥२॥ नदेनरकं नेत्रहनशार्ङ्गःका
लानमनामयं॥ कीर्तयस्वाद्य तं सर्वं कथं तेन न विनाशिता:॥३॥

म॰ भा॰
आ॰ प॰
२२४

कर्मिणां भवतां नित्यं प्रोवाच ह ॥ नस्यमिति ॥ २८ ॥ यावन्तं संहारं यन्न वैव कर्म शरीरमाह ॥ नामिति हेतवः
ज्ञानाः ॥ २९ ॥ नयान्य च्छिन्न ॥ नन एव माह ॥ ज्ञानवेदानि ॥ नवैवेति ॥ कर्मविपाककोविदोपि न वैवर्णाः

नमंत्र ज्ञानमोविप्राः स्वकर्मविहितं नाम तिं ॥ गृह्णन्ति मन्दमतीभिः सुनैरपि च पापत्मनी ॥ २५ ॥
नाम शेजलदनाङ्कः विविधकामविधुनः ॥ इहं निर्दंभ्यानानि नतो निःक्रम्य हेतवः ॥ २६ ॥
ज्ञानवेदत्त्वैर्वेदं विश्वं सर्वमस्यायस्ते ॥ नवैवकर्मविहितं नमूलं सर्वं चराचरं ॥ २८ ॥ नयापो
विहिताः सर्वं नयिसर्वमिदं जगत ॥ नयिहवं च कर्मयथायावत्संप्रतिष्ठितं ॥ २९ ॥ नमेवरहवो
देवतं यानानं सहस्याति ॥ नमस्थितो यमो मित्रः सोमस्त्वमसि चानिल ॥ ३० ॥ वैशंपायन उवा
च ॥ एवं स्तुत स्तदा तेन मंदपालेन पावकः ॥ तुतोष तस्य नृपते मुनेरमिततेजसः ॥ ३१ ॥ उवाच
चैनं प्रीतात्मा किमिष्टं करवाणि ते ॥ तमब्रवीन्मंदपालः प्रांजलिर्हव्यवाहनं ॥ ३२ ॥ प्रदहन् खा
ण्डवं दावं मम पुत्रान्विसर्जय ॥ तथेति तत्प्रतिश्रुत्य भगवान्हव्यवाहनः ॥ खाण्डवे तेन कालेन
प्रजज्वाल दिधक्षया ॥ ३३ ॥ इत्यादिपर्वणि खाण्डवदाहे ॥ वैशंपायन उवाच ॥ ततः प्रज्वलिते व
ह्नौ शार्ङ्गकास्ते सुदुःखिताः ॥ व्यथिताः परमोद्विग्ना नाधिजग्मुः परायणं ॥ १ ॥

अश्रितमेतन्दवेदरु
द्दिश्य ते ॥ २५ ॥ आपश्यन्ति भूतानि तेजोपवदाग्नि नयापि प्रामोरुतेनफलदातृत्वेन च एवमेव माह ॥ न
योनि ॥ २६ ॥ खाण्डवे वनेन तेन हेतवना कालेदाहवेलायां शार्ङ्गकाणां दिधक्षयानभ्रज्वाल ॥ २२ ॥ अध्यायः

३२४

373

नमितोनामभार्यः २९ लपितोनामपरोभार्यो ॥ २० ॥ नान्यानानयाख्येति संचेयः २१ नामस्मिति जो
वरूपेणमोन्कतेनरदरानिसस्वरूपेणगोचारतं ॥ २२ ॥ त्रिविधं दिवो मोनं उदयं चाप्यथापंचभूतात्म

संचिनयन्नभगाकल्मावहनप्रसवानरमान ॥ पार्थिवं कौशार्दिं कोभूतात्मनिर्तासमुपेयिवा
न ॥ २३ ॥ नमोपायमानन्तनयचनरोवसनकादिनः ॥ नानपास्यमनवेचनगामस्तपितोप्रति ॥ २४ ॥
चालान्सनानंउगतनान्सहसागाप्रनिर्वने ॥ नक्षितानेमहाभागोदेवोप्रति – भारत ॥ २५ ॥ श्री
पत्नहेहसंपुरुतात्मानीतिनावहृ विनयत ॥ तेननमल्कानमपापस्पानयीनेउगानान्वने ॥ २६ ॥ नम
हेपुत्रशोकात्मानिताविलाउवेसनान ॥ वभारचेतास्तनानान्सलसत्याहोहविकवान ॥ २७ ॥
ननोथिलोउवंदपमापांनेरहवानपि ॥ मेदपनाथिरेतक्षितनेनपितयामहर ॥ २८ ॥
नेपकलं विविलाग्रेतोनापझंमहवानर्चनं ॥ सोभिनमावविप्रार्थितोसलोनानवेदसं ॥
पुत्रान्मनिवर्दीनोवोकपानमहोत्तमं ॥ मंदपान उवाच ॥ नमग्रेसर्वलोकानांमवेन
मसिहयवाह ॥ नमतः सर्वभूतानांगरत्पुरंगिपावक ॥ २९ ॥ नामेकमाहुः कवयस्त्वामा
हुस्त्रिविधंपुनः ॥ नामसृपाकल्पयितायज्ञेवाहमकल्पयन ॥ ३० ॥ नवविश्वमिदंसृष्टंव
दंतिपरमर्षयः ॥ नदनेहिजगत्कल्पंसद्योनश्येतहुताशन ॥ ३१ ॥

नाहस्थंचनस्यज्ञमानरूपेणवयनवाहंयच्चनिर्वाहकं ॥ ३२ ॥ नवामहरूपेणविनानपश्येदर्शनं
गद्वेत्निरपिज्ञानकश्रमापोगादिमर्थः ॥ ३३ ॥

नो ह्यात्मकं सर्वं विना ज्ञानं यत् सर्वेषां विना ज्ञानात् यतस्तेन स्रुचोऽहं साक्षी इति च संश्रयः ॥ ९२ ॥ विदितं त्वं हृषीक
नैवादेव चनं ॥ ९४ ॥ ऊ आदाद्वु: मासाद: ३३२: प्रत्यमाना: प्रपञ्चन: ॥ ९५ ॥ मोच: निष्कलात्मेत्यपि

स-मा
आ-त
३०५

अन्नवेदेन तु मयं वन्दं यानं यन्तु तस्मन: ॥ न हि कर्मपथ: कालो मानतरे समवेतच ॥ ९६ ॥ मा
नमर्वं विना ज्ञानं यस्तेऽहं साक्षी: स्तनेषु न: ॥ न हीदं कर्मणो वस्यालोककामस्य न: पिन: ॥ ९७ ॥
नरिनोवाच ॥ इदमाबोधि विज्ञं मयोक्तं वयास्य समीपत: ॥ नदाविशायं न विनावदेरयनवोमयं
ननोऽहं यामननाहि इमपि यात्वामित्र नका: ॥ एवं प्रतिकृतं समस्येव वन: कृतवमेन: ॥ ९९ ॥ न
तपश्यामयतीते सोऽवि इदं न यांमह संवयं ॥ योचनामि प्रवोवाचे मोक्षार्थं च अनामानान ॥ १०० ॥ श्री
ऊ उवाच ॥ अवहीनां सम्भूतानां: ऊ आदाद्वु विना यायेन ॥ प्रत्यमानाम पूर्णिदं प्रवेद्धं नाश्च
कृत ॥ १ ॥ कथं समस्तं तेनो यदीक श्वमाद्वु नेनाज्ञायेन ॥ कथं न ज्ञापितं सर्वः कथं मानाधिये
नन: ॥ २ ॥ विलम्ब आवोविनाज्ञ: स्यादन्ने नकाशचारिणां ॥ अन्नवेदेन तु मयं स्यान दाहेन म
न्मता ॥ ३ ॥ नाहिं तम यतां न स्यादाद्वु नाम विदितेविते ॥ त्रिप्राद्विष्ट: पतिमाना: शरीरस्य तु नाश्च
नान ॥ ४ ॥ इत्या दिग्ध्वे लिङ्गे वो हु वदादि ॥ नरिनोवाच ॥ अस्माद्विलाक्षि प्यतिनमाद्वु पुण्येनोत
हारतं ॥ ५ ॥ तदिदं पश्यास्त्री नाचयानो नाम यं हि व ॥ ६ ॥ श्री ऊ उवाच ॥ नहृतं नेवयं विज्ञ: श्वे
नेनाद्वु कथं च न ॥ अन्योपिमविनायो वतेज्यो पिमयमेव न: ॥ ७ ॥

३७४

३०५

३३५
त्रियेन जीवनेन ॥ ८ ॥ त्रिष्टि दिष्ट: त्रिष्टादिष्ट ॥ ९ ॥ अप्याय: ॥ नहृतमिति ॥ १० ॥

निपाम्य मालोच्य ॥ ४ ॥ कृत्वेवनं ॥ ३ ॥ कथं यतिपोरुयंति स्वव हाः ग्रनालप त्काः प्रभप्राणः कानाग ॥ ५ ॥
सरयोगमने ॥ ६ ॥ तरिं नेचनं नेलेचिनं निःसारचिन मंननरितिपाठेग्रंननः निरमिदेशे ॥ ८ ॥ किं नकिं

निपामप्रविकानालामानाने षांनपद्मिनी ॥ तरिंताड़ःवशेकानं चिलसापसङ्गः लिना ॥ ९ ॥
तरितेवाच ॥ ग्रयमपिदेह नकलमिन पापानि भीपणाः ॥ जगानंदीपपग्नीमोममङ्गःव
विवर्धनः इमेचमांकथंपंति शिपावोमंरचेननः ॥ ग्रवहारगतोहीनाः एवंवानःपाप्रणः ॥ ४ ॥
ज्ञानंपंचामायमायानितेलिहानोमहीहस्रान् ॥ ग्रनाननपत्नामुसनानन शकाः सरणोमम ॥ ५ ॥
ग्रादायचनशाको मिपुत्रांतानितमाननना ॥ नचापकुमिहपानाहृदयं इपनीचमे ॥ ६ ॥ कंन
जगामहं पुनंक मादायप्रजाम्यहं ॥ किं नमेपापान्नकनंकमे किं वामन्तनशक्राः ॥ ७ ॥ चिंतयं
तीविमोदवोनाग्रिगाहमिकिंचन ॥ कूटग्रिपापाम्रितोगाजेःकरिद्रोमपाणांमम ॥ ८ ॥ तरिंता
येकलंहोनज्ञेयन्ननप्रतिष्ठिनं ॥ मामिहकृकः प्रजायेनविल्लगांकलचर्यंन ॥ ९ ॥ लंचमि
ज्ञलपःकथंनप्राणोत्रहाविकांम ॥ इवेवममंकः प्रयपोमिनाकांनिर्हणःपुरा ॥ १० ॥ कमया
दायपापोयंयांनेकलापकजमम ॥ किंनकनाहंनेकार्येभवेदितिचविहसा ॥ नापपरन
प्रिया मोदंहहतानानदाःनचानन ॥ वैशंपायन उवाच ॥ एवं गुप्ताणांपांनिलेप्रकलाच
मानने ॥ सेहमाहप्रमाननलपनयत्रनहकाचार ॥ ११ ॥ प्रजागिहविनहेप्रभविताःसमा
लव ॥ नविमानविनहायांननःपाकलसंततिः ॥ १२ ॥

कृत्वाहंकनकपापानितपीः ॥ ग्रंग्रजायेनप्रजाहहतेशोणयेन ॥ १ ॥ गांनेहंचिनं ॥ २ ॥ पन

गत ॥ २१ ॥

स॰ मा
मा॰ प
२२८

न चेति ॥ अस्मान्न शेवाऽयं कर्दनं न भाव्युपकारं स्मात्किमिति विमर्षे वर्णनवकेनके पीनर्थः ॥ नै
वास्तनी अस्मात्कापिनमान संवं यस्य भ्रान्तिकरिणि नारिन्यर्थः ॥ १८ ॥ आपाः आगच्छेन अस्मान ॥ १४ ॥
ननानि अग्नि दाहात्मा गोवनलक तुलना निपिनाना अनः दाहात ॥ घटे वमन्कारति पूर्वोक्तं न विद्रं ॥ १७ ॥
अध्याय ॥ पुरन्त्वनि ॥ अनंशमानाः स्वामस्तामो हान न वासा यामाना पिनन्नानं समर्थ्यं किं न संवे स्वार्थ

२२८

न चोपक्रन मस्त्राभिनेचात्मानोत्याथे वयं ॥ पीयुमानाविमर्षे स्मात्कामिनं के वयंनव ॥ १९ ॥
नहणीदृ र्षानीयामि समर्थ्याम नोरेपाणे ॥ अवना दूषलिमानः पुत्रानाप्यमि शोभनान ॥ १४ ॥
वयमग्नि समा विष्णु लोकानापाम शोभनानां ॥ अथास्मान्नदृदे दग्नि रायाहंतपुनरेवन ॥ १५ ॥
वैश्रो पाय नः वाच ॥ एवमुक्तानलः पार्थे पुत्रान नृस्पर्शातुवे ॥ नगामवविनारे पुरा ह्रेममयेरना
मयं ॥ १६ ॥ ननली तलार्चिरात्मानाव निनो हव्यवाहनः ॥ पुत्रपणाकृ वभवु लोमंदपालस्य पुत्रकाः
ननलेन त्वितंहप्यात्व तननेते विहंगमाः ॥ जरिता रिवन्नो वाचं यथावयामा सपावकं ॥ १७ ॥ त्या
दिपर्वणि   पा   ने   जरितारिवाच ॥ पुत्रानः कहकाल स्यपीमान्नाना निपूहघः ॥ स
कहुकालं संप्राप्य ग्रथांनेवेतिक हिंचित ॥ १८ ॥

कामाएवेनिषंस्तव्यनही पूर्वउ समीनत्राले मसर्थे इत्याह्मित्रव्यायेरजाने ॥ कथापदेनस्पहूएवार्थः
नत्रजरितारि लांश्रीनका याहि पुञ्चुगाएा आह्नत्रुरनइतिमराणान् सागोवन्तानार्थं पुनिनवंनस्थ
मराणाम्यर्थांस्नानीनस्नमीतिननस्यमाणाऽन्कामंनत्रैवसमनमवलीयंनइतिश्रुनेरितापश्रो
कनने कहुकालोमराणाकालः सर्वान्माणान्कमराणपीडं ॥ १ ॥

२०६

३७८

वाङ्मनसाद्यगोचरत्वेन यतो वायोः सकाशात् हृदि निवर्त्तनं रहं ॥ ४ ॥ दिव्यमात्मायनिरमितः श्वश्रुभव
श्रवणः सर्वांसले स्थितिभावः ॥ हिरण्मयः दिव्यदेहः ॥ ५ ॥ प्रत्यग्पायां प्रत्यगात्मनि लीनः सि ॥ २२ ॥ नमिति

संग्रयो वह्निगगनेनन रहं वायोर्निवर्त्तनं ॥ मत्सेनो विलवामिथ्यो विलेसाल्लाजसंस्पृशः ॥ ५ ॥
निःसंस्पृश्यात्संप पितोमसन्भानविविधाने ॥ चराचलेनयथा न्याय्यं तु जानासि शिमनान ॥ ४ ॥
नविनोवाच ॥ अहं वेगोनलं यां न मह्यं वपननांबरं ॥ विलासार्थं समादाय पञ्चेन तु ज्ञानसहवले ॥ ५ ॥ योनो
नपत्तं नमह्यं वेगानविनाशपलोन्वयां ॥ आशिषां सपशुं गानाहं नोमसकं वलान ॥ ६ ॥ योनो
हेमारमाद्यापञ्चेन राजन्नयथा वसि ॥ भवतो दिव्यमात्माय निरमितोऽहि पुण्यवर्चः ॥ ७ ॥ सत्यरामहि
नस्तेन पञ्चेनेनाहं यन्न त्रिलोः ॥ नदाहं नमनः स्वायत्तं प्रत्यगात्मनि रहे ॥ ८ ॥ प्रविशां विलं
पुत्रा विश्वधाना त्रिलोम ये पञ्चेनेनमम पञ्चरात्रहं नश्यानि सहानना ॥ ९ ॥ रक कृतेः न
विमहे हृन्नमातः पञ्चेनेनाहं कथं च न ॥ अविनाशन स्वयात्मनः प्रवेशं विवेकभवः ॥ १० ॥ नविनो
च ॥ अहं नसमि जानामि हनं पञ्चेनेनरक्षितं ॥ नाशितो नभये पुत्राः किं यतो वचनं मम ॥ ११ ॥
स्वर्गं अकृतः ॥ ननं मिथ्योपचारेण मोदयेथा भयाद्विन ॥ समाकृते षु जानेषु नवदिकृनमेव
नन ॥ १२ ॥

अस्यां स्वकायां नमिकंना स्वविमिथ्योपचार सपचारनवास्यादति भावः ॥ समाकृते षु संदिग्धेषु ज्ञा
नेषु जानत्स्वकार्येषु नहि स्वप्रवेशानं तु दिकृ नं तु कि मया सम्यावरिनेन वविलेषाचं सम्यावलानन्दप्रवे
शोनयुक्त इति भावः ॥ २२ ॥

म·भा
शां·प
३००

एवमधिकारिणमप्यमिश्रितत्वनिमित्तेन ननु पदिश्यन्ति ॥ तदेव स्पष्टयति तत्त्वेचयेत्य प्रसंहारेः श्रि
याणानमम प्रमेयं सविद्याधिकारतोः समम् अनुपासनान्तरितानि यह इहाम्पो ॥ वायोः तत्त्वात्मनः वायु
वेगोनमः तत्र वायुरेव प्राणहिर्वायुः समष्टिरितिश्रुतेः ॥ आत्मा प्राहू तृपस्मि ॥ शरीरमधिष्ठाय मे मधि
वितानमात्मनं ॥ बीजं पं योनिः एषोऽस्य पञ्चात्तेन तत्त्वं वीजेन ब्रह्म ॥ अग्नेराप अम्मः पृथि
वीति च श्रुतेः ॥ आपस्त्वेषु कुर्वित्यत्र आप्यो योनिर्हन् ममस्थितोभवति ॥ यद्यावायोरात्मांगत
रित्वमरीचिपाहितं वीर्यं योनिः पृथ्वी मयाहिता ॥ यत्र वर्त्माश्रय त्वाज्जादयः ॥ यदि वउप

जदिता शिरः वाच ॥ ब्रह्मात्मनि वाग्योन्वेलननयारीरमधिष्ठितं बीजं पां ॥ योनिरापस्तत्त्वेप्यत्र योनि
त्वमधिष्ठितामम ॥ ७ ॥ ऊर्ध्वं वायव्रम्भ पञ्चानित्युत्तरेण तेः पाप्मनत्वेषा ॥ अचिरात्तेमहावीर्यं यम
यः सविनर्थ्यव ॥ ८ ॥ साग्रिहेक् तु वाच ॥ मानाप्रनक्षापितांनविग्रः पदार्जातानि वनौषू
मकेतो ॥ नन्वश्राना विघतेवै नद्यः नस्माद्गं ब्रह्माहिवालोपमग्रे ॥ ९ ॥ यद्यग्ने शिवं रू
पंये च तेसमहेत्नय ॥ तेनतः परिपाहितमानीतः शारीरोविणः ॥ १० ॥

रिषालरं भ ॥ तथा च लोक इष्टि
कामावति ॥ अदोनः परेणपरेणादिवं द्यौः प्रतिष्ठानरित्वमरीचयः पृथिवी मरोपाप्रयत्वात्तत्रा
पस्त्वेन रेयक्ष्मालोक दृष्टिकामवति सहस्रांलोकानहस्त्रनोभोमरीचीभिरप्रापद्रतिउपक्र
म्याचलोकाः स्नावेन तत्वतितिलोकक ईवेनेत्यतः समम्भुपाख्यायामेव नमाम एव न तत्पर्थं ॥ १२
अत्र नयिकारोसारिणो हस्वे ॥ हस्किणोग गर्भो यस्य प्रथमाहिस्कुवायुमोपासकः यदिक
पमेवाग्निमार्थय तेमानेनिप्रनष्टा अदर्शनं गता ॥ १३ ॥ शिवं प्रमं लोकहितं हेत्नयोत्नालाः

376

शां·प·अ·
३००

एतदेवव्यतिरेकमुखेनाह ॥ यदेति ॥ विवेकानाश्रितचित्तः ... देहात्मनिश्चयात्मकमोहकलिलं ...
नोमहतःश्रेयसोमोक्षात् ॥२॥ ... व्यतिरेकाभावमाह ॥ ...
...नि ॥ ... भावः ॥५॥ ...
... ॥ ... ॥ ... नीतिहिरण्य ...

यत्रकृच्छ्रमनसांनिविवेकानावबुध्यते ॥ ... कालेतस्थितोनश्रेयोविंदतेमहत् ॥२॥
... उवाच ॥ ... ॥ ... तोनहिभवसे के
नसंशयः ॥१॥ ... उवाच ॥ ... ॥ ...
... ॥४॥ ... उवाच ॥ हिरण्यरेतानरितोनतन्त्राप्यतिनःस्वयं ॥
... ॥५॥ ... उवाच ॥ एवंसंभाष्यतेन्योन्यंमंद-
... ॥ ... ॥६॥

... मोहः ... कालिकः ... मनोज
... ॥ ... विभावसोः ॥ ...
... ॥ ... ॥ ...
... ॥ ... मिति भावः ॥५॥ एवमिति ॥६॥

श०भा
भा०प
२०९

यतस्तातः श्रुतिस्मृतिस्थितिप्रसिद्धं तदीयं तन्निर्विशेषं तत्तदेतन्नद्वैतं तद्ब्रह्म विदं वा इत्युपक्रमात् ॥ अ-
द्वैतस्य सद्रूपत्वमनेनोक्तं पिण्डेऽपि सदैव तन्नामरूपेण ब्रह्मणो विषयं निरूप्यते ॥ अत्र चात्मनः प्र-
त्यग्भावावस्थानं इत्युक्तेऽनन्तः कल्पितेन तत्त्वं निर्वचनीयं स्वप्रकाशं ॥ अत्र मन्त्रमिति ॥ हेतुमाह नेत्यादि ॥ तमत्रं
प्रयतेति च भूतानि तस्माद्वेदनं तदुत्पत्तेः श्रुतिस्मृतिविद्याः स्थिति किमसौ निष्ठ ॥ नेत्याह ॥ प्राणिभिर्लक्ष-
मिति प्राणाः सूक्ष्मात्मा सर्वप्राणेषु नाडीषु वायुना प्राणिनः सूक्ष्मा यात्मकाः तेभ्यो ऽयं उपलक्षितं ॥ एतेन
स्थूलसूक्ष्मस्थूलयज्ञः ॥ तथा अन्नमयो भूतानि स्थूलस्य भोगार्थं कारणं अप्रपञ्चीकृतविषयादीनि

॥ तमसं प्राणिभिर्लक्षं मन्त्रं तेन
गायते ॥ विश्वं प्रकृत्य यच्च हि सर्वं प्रतिष्ठितम् ॥ २९ ॥

377

यस्य सः अन्तर्भूतो विश्वतश्च यस्यानन्यस्य हि ॥ एतेन सूक्ष्मस्य कारणे विलापनमुक्तं ॥ अत एव त-
तः स्थूलसूक्ष्मकार्यस्यापि सूक्ष्मेहेतुः सोऽयं सर्वं विश्वं प्रकृतिमिति कार्यकारणस्वरूपो सो-
ऽपि कथं हृदयाधिष्ठितो मायाः विश्वावस्था विग्रहः स्थिति हृदयाधिकरणेन तन्निरपेक्षवत्तत्त्वमपि स्व-
प्रतिष्ठितं सर्वं कार्यकारणात्मकं यच्चास्मिन् वीरागादिकं मोक्षतन्तुं च सर्वं हृदयस्थि ॥ एवं च तस्मात् प्र
ज्ञानवृत्तिः सन्तोऽप्यतः श्रुतिस्मृतिस्थितेरर्थः ॥ स्थूलसूक्ष्मकारणरूपातीतं निविनिः कल्पितं

नोपसंविद्धिमप्रतिपत्तिमेवेत्यर्थः ॥ यो रागात्मात्म्यात्स्वरे ग्रे हि पीरोगो येन चं तं ॥ २० ॥ एवं स्म श्रुत्वा
सनातिस्म स्वसा वो नामो या सनो स्व चं ते स्वि द्र ग्रे सो न्या दि पाप्त प्रसिद्धं पुण्ड्रित्स्व विद्या दि हृ यां लवामि
ज्ञात्वा: सर्वे प्राणि न सम दा य स तो प्राह ॥ सर्वे मित्रत्वादिना स्वयीदं कुर्वन्कैर्कं दुष्कादिवन्न ॥ २१ ॥ वदु या का

न मे चैक स्तपसे ज्ञा न चे दो नान्य स म्मा विप ने गो गुदे व ॥ अधीन स्वा न्वा ल का न्या स य स्व पो रे
णा स्या चै हि वै हृ त्वा ना ह ॥ २१ ॥ [illegible] ॥ सर्वे म ग्रे न मे चैक स्त वि सर्वे मिदं जगत् ॥ त्वं
या त्व सि न्न ना नि भ व ने त्वं ति भ पि च ॥ २२ ॥ न म मि दे त्वा ना हृ न्ते न मे व पा मे हृ वि: ॥ मनी षि
णां ल्लो ज्ञाने ति व कृ त्वा चै क या पि च ॥ २३ ॥ स हु ल्ले कं मी नि मान्न त्वा ना हृ का ले ज्ञा ने य चा सि
पुन: प्रसिद्ध: ॥ त्वं सर्वे स्व भ व न स्व प्र स तिन्न मे वा ग्रे भ व सि पुन: प्रतिष्ठा ॥ २४ ॥

धृ त्वे णा प क स्व का र णा रूपे णा ॥ २५ ॥ जी न लो का नि ति ॥ ज्ञ हो डे प ल व णां प च सि सं ह र सि स मि द्धः
न मो ग त्ते न प्र ह ह: प्र ज्ञ हृ ने श्वो ये द पी य ति ॥ त्वं स वे स्वे ति ॥ प्र स नि कृ त्य नि स्वा नं प्र ति स्वा ल य स्य
नं ॥ एते न पर स यो नि: सर्वे स्य प्र भ वा प्य ये हि स ना ना मि नि श्र ते र्थो द र्शि तः ॥ २६ ॥

प्रतीतात्मा प्रहृष्टः॥ २०॥ मद्रीमम॥ २१॥ मयाप्यायः॥ मंदपालो पीति॥ उक्ताम मपुत्रान्मा दहेति प्रार्थयापि

वैशंपायन उवाच॥ एवमुक्तो जातवेदा द्रोणेन ब्रह्मवादिना॥ द्रोणमाह प्रतीतात्मा मंदपाल
प्रतिज्ञया॥ ९॥ अग्निरुवाच॥ ऋषिर्द्रोणः त्वमसि वै ब्रह्मैतद्व्याहृतं त्वया॥ ईप्सितं ते करिष्यामि
न च ते विद्यते भयं॥ १०॥ मंदपालेन वै पूर्वं ममैवं निवेदिताः॥ वर्जयेः पुत्रकान्मह्यं दहन्दाव
मिति स्म ह॥ ११॥ यच्च तद्वचनं द्रोण यच्चात्र व्याहृतं त्वया॥ उभयं मे गरीयस्तद्ब्रूहि किं करवाणि
ते॥ १२॥ भृशं प्रीतोस्मि भद्रं ते ब्रह्मन्स्तोत्रेण सत्तम॥ १३॥ द्रोण उवाच॥ इमे मार्जारकाः शुक्र नि
त्यमुद्वेजयन्ति नः॥ एतान्कुरुष्व दंष्ट्रांतं हुताशन सबांधवान्॥ १४॥ तथा तत्कृतवानग्नि
रभ्यनुज्ञाय शार्ङ्गकान्॥ ददाह खांडवं चापि समिद्धो जनमेजय॥ १५॥ इति श्रीमहाभारते आदिपर्वणि खांडवदाहपर्वणि
शार्ङ्गकोपाख्याने॥ वैशंपायन उवाच॥ मंदपालोपि कौरव्य चिंतयानः सुतांस्तदा॥ उक्त्वापि च स
तिग्मांशुं नैव स्म शर्म लेभे॥ १॥ स तप्यमानः पुत्रार्थं लपितामिदमब्रवीत्॥
कथं न्वशक्ताः प्लवने लपिते मम पुत्रकाः॥ २॥ वर्धमाने हुतवहे वाते चाशु प्रवाति॥ असम
र्था विमोक्षाय भविष्यंति मम पुत्रकाः॥ ३॥ कथं न्वशक्ता त्राणाय माता तेषां तपस्विनी॥ भवि
ष्यति हि शोकार्ता पुत्रत्राणमपश्यती॥ ४॥ कथं न्वडीयने चैव पतने च ममात्मजान्॥ संतप्य
माना बहुधा वाशमाना प्रधावति॥ ५॥

॥ ६॥ कथं नु जरिता पुत्रे कथं नु सारिसृक्व च॥ स्तंबमित्रः कथं द्रोणः कथं सा च तपस्विनी॥ ७॥

नपांवि ॥ इत्यत्र कृष्णत्वं सर्वोपाधिकालव्याप्तीनन्तत्वं सुखात्मा नारायण इत्युक्तं स्वरूपकाले भावप्रतीतिरिति स्वं
यः तं भूम्यादीनां स्थानि यादायसं हत्यसृष्टेः कारणात्मा भूत्वा बीजमात्ररूपेण स्थितः पुनः प्रबोधकाले च
स्थानि स्वरूपादीनां स्थानि यादायसं हत्यसृष्टेः कारणात्मा स्वप्नतनेन सृष्टिस्थितौ निजेन यस्ती सर्वः ॥ १ ॥
स्वतनं समतायामास्थानेन रूपमानः सनन्दितिप्रपञ्चविधुमन्तावीक्षयादयः स्वरूपादीनां प्रति
नलक्षणां नमाञ्जनः ॥ तेन प्रधानादेः कारणत्वं निरस्तं सम भद्रयेनपत्र सर्वत्रयेति पादे महोदयिपादे
नमस्कृतित्र संज्ञाहरिः स्थितानि सर्वकारणानि नियोगत्वेन स्थिति निर्गुणस्थानेक स्वसंज्ञा किं संपूर्ण

सुरोऽसि मन्ताऽसि मिमिक्षि नित्यं मोमं मोमु मिमिक्षामात्रसंज्ञा ॥ विष्णुर्नारायणन हत्स्वरूपकाले
तल्लक्षणाब्रह्म भावयसी हत्सु ॥ २६ ॥ तत्तत्त्वतः पुनः प्रवृत्तीकयो हरिनत्सदा ॥ तत्पंते पृथक्
गुणत्रयमहाभद्रमहेश्वरः ॥ २७ ॥ देवैर्मनमंत्रिमंत्रैर्नक्तं पञ्चदशयतः ॥ पितस्थानाभवास्था
के मामस्थान पतिनापयत ॥ २८ ॥ यत्र संबोधितश्रीवत्सरूपं तेन रूपनामान ॥ यो रूपं हिंसचा
स्थानस्थापारस्वरूपहानिच ॥ २९ ॥

अथ भूतेनलभ्रमणाह यः सम्यग्ज्ञेयाः नवाबरांपं मपशुपरवत्तां ॥ ३० ॥ एवं पयापपरव्रह्मस्वरूपे
णाधिंसनाउपस्थितिमयनिवर्तिकार्यवतो ॥ इस्मिनि ॥ हेतिमंतवोनी हण कः वन्हे नमेवप्रवीरं वहण
स्वारहने हृयायिपतेः पदपदं प्रसंतालवनेपविदेहेन हिसवेरस्वास्वारोलमने ॥ स्वनतंस्वपिवः मं
नयामाध्यासाकंचानाभव ॥ ३१ ॥ सामगस्पर हननन्दी प्रवाहानिवऽवनलिमिभावानहारां भावकं
स्वतानामेच ॥ ३२ ॥

२९ ॥ जविनानामतः जयसंजाताः ग्रस्थाः सातरिता सर्वेंद्रियस्याकला ॥ ७ ॥ २९ ॥ दीपगमन्त्रपालोके

एवं हि ग्रजलतन्त्र श्रीर्लेलिहानो महीहृतान ॥ भ्राविश्रेहृदि संतापं जनयत्पशिवंनमा ॥ ६ ॥
वैशंपायन उवाच ॥ नमोऽस्तु पाहनिक्रांते तव तेजसि तापनः ॥ जगामम...कालेव जहिताव
ज्रारक्षिनी ॥ ७ ॥ सातानलकपालिनः सर्वान् विमर्श्नीतानवेदृशः ॥ रोहृयमा एा दृष्टो वने पुत्र
त्रिशमयान ॥ ८ ॥ भूमृत्तिमम चेनेषांद्र्पीनास्तापुनः पुनः ॥ एकैकं चैव तानस्तवोक्तोपमा
नान्यपत्न ॥ ९ ॥ नतो मपगहृत्सहृसामंदपालोपिभारत ॥ अयतेसर्वं एवैते नाभनंदंस्तुते
सुता ॥ १० ॥ नालप्पमानमेकैकं तातिलांच पुनः पुनः ॥ नचैवोक्तु लयाकिंचित्तमस्विंसाय साधु
वा ॥ ११ ॥ मंदपालउवाच ॥ ज्येष्ठः स्तनलेकतमः कतमस्तस्य चानन्तः ॥ मध्यमः कतमश्चैव
कनीयान्कतमस्तते ॥ १२ ॥ एवं ब्रुवंतं दुःखार्तं किं मां न प्रतिभाषसे ॥ कृतवानपि हि त्यागं ते
व्यामिमितोलभे ॥ १३ ॥ हरिरुवाच ॥ किंनु ज्येष्ठेन ते कार्यं किमनंतरजेन ते ॥ किंवामध्यम
जातेन किं कनिष्ठेन वा पुनः ॥ १४ ॥ यांत्वंमासर्वतोहीनामुत्सृज्यासिगतः पुरा ॥ तामेव लपिता
गच्छतरुणीं चारुहासिनीं ॥ १५ ॥ मंदपाल उवाच ॥ नस्त्रीणां विद्यते किंचिदमत्र पुत्र दर्शना
त ॥ सापत्नकमृते लोके नान्यदर्थविनाशनं ॥ १६ ॥

पुत्रदर्शनदाहं नेसापत्नकं चस्त्रलेऽन्यत ॥ स्त्रीयं शुत्पन्नाश्चनं पुत्रदर्शनं के मा ॥ १७ ॥

च ॥ यशनाः तापिताः ॥ १७ ॥ १८ ॥ समदक्किनि हे त्वयाने न च मा न संनेन हे न नावं प्रकृमन व लह्य गोरह्य गोम
सह्यमिम तेन ॥ १९ ॥ किंन नामैवेतिं त्वरोऽथैः ॥ २० ॥ नहीति ॥ पद्वन्नामह्णमवनाम ह्णेनेति हे हे न नि

जरितारिः कथं पुत्रः सारिसृक्कः कथं च मे ॥ स्तम्बमित्रः कथं द्रोणः कथं सा च तपस्विनी ॥ २ ॥ ला
लप्यमानं तमृषिं मन्दपालं तथा वने ॥ लपिता प्रत्युवाचेदं सासूयमिव भारत ॥ ३ ॥ न ते पुत्रैरवे
क्षास्ति यानृषीनुक्तवानसि ॥ तेजस्विनो वीर्यवन्तो न ते तेभ्यो ज्वलनात्कुतः ॥ ४ ॥ तथाग्नौ ते परी
ताश्च त्वया हि मम संनिधौ ॥ प्रतिश्रुतं तथा चेति ज्वलनेन महात्मना ॥ ५ ॥ लोकपालोऽनृतां वा
चमुक्तवान्न कथंचन ॥ समर्थास्ते च वक्तारो न ते तेष्वस्ति मानसम् ॥ ६ ॥ तामेव तु ममामित्रीं
चिन्तयन्परितप्यसे ॥ ध्रुवं त्वयि न मे स्नेहो यथा तस्यां पुराभवत् ॥ ७ ॥ न हि पक्षवता न्याय्यं निः
स्नेहेन सुहृज्जने ॥ पीड्यमानमुपद्रष्टुं शक्तेनात्मा कथंचन ॥ ८ ॥ गच्छ त्वं जरितामेव यदर्थं प
रितप्यसे ॥ चरिष्याम्यहमप्येका यथा कापुरुषाश्रिता ॥ ९ ॥ मंदपाल उवाच ॥ नाहमेवं चरे
लोके यथा त्वमभिमन्यसे ॥ अपत्यहेतोर्विचरे तच्च कृच्छ्रगतं मम ॥ १० ॥ भूतं हित्वा च भाव्यर्थे
योऽवलम्बेत मन्दधीः ॥ अवमन्येत तं लोको यथेच्छसि तथा कुरु ॥ ११ ॥

तं हि प्रज्वलनात्तेन च पीड्यमानं च त्वमनाथवत्यर्थं कथं च नपद्रष्टुं द्वेषितं न हि न्याय्यं ॥ २४ ॥ भ
तत्रेत्य जरितामेवागच्छेत्यपि द्विषाम्यहं ॥ गच्छेति ॥ २५ ॥ एवं कामस्तेनाहं चरेन्न चरामि ॥ २५ ॥ भूतं जरिता
यामपत्यमात्यर्थं न विनश्यं प्रपन्ने ॥ २६ ॥

ब्रह्मणन ॥ वैशंनस्रसिद्धं ॥ ३ ॥ १५ ॥

सं॰ भा
आ॰ प
३८१

न संनायो हि वः कार्यः शुत्र कार्हृदि मां प्रति ॥ कथं नु वेदं कृतनायो पि ब्रह्मन्हि हितं वच ॥३॥
वैशंपायन उवाच ॥ एवमस्त्वाभिनन्द्य ब्रान्मार्गं सामात्यस्य हित ॥ संदष्टाहलनोदेष्टाश्वं
देशं जगाम ह ॥४॥ भगवानपि तिग्मांशु स सिद्धः स्वां स्वंतनन ॥ स्वाह्नसहकृष्णाभ्यां तत्र यन्त
गतो हितं ॥५॥ वृष्णामेदेव ह्याः कथ्याल ब्रपीनाचपाव कः ॥ जगाम परमो न्हिंरिष्टं पारमार्थ
चार्जुनं ॥६॥ ततो नरि दाङ्गनालवती छंक्रुरं द रः ॥ मरुत्पोर्वितः पार्थं केशवं चेद मब्रवीत ॥७॥
कलं स्नुवाभ्यां कर्मैदं समर्थो रथितुः कर्तुं ॥ वीरं हलीनं नद्योस्मि दुर्लभं शुहयेष्टिस ॥८॥ वैशंपा
यन उवाच ॥ पार्थं न वरयामास पाकृष्टस्तानि सर्वशः ॥ सहानं ततु पाकस्त कालं च ब्रेम
हायानि ॥९॥ पटासप्र ब्रो भगवान्महादेवो महिष्यति ॥ नहानभं प्रदास्यामि पं द्वा हालि
सर्वशः ॥१०॥ ब्रह्मैव चनकालं वेन्म्यामि कहन्नेदनः ॥ नपशामहृताचाषि दास्यामि भवतो
यद्दं ॥११॥ आग्रेयानि च मर्कं पिरा यशानि च सर्वशः ॥ महेषानि च सर्वाणि प्रहोळामिय
तेजय ॥१२॥ वाहदेवोपि तत्राह प्रीतिं पार्थेन शाश्वती ॥ ददौ हरय निष्ठेव वरं कृष्णाय धी
मते ॥१३॥ एवं दत्वा वरं ताभ्यां सहदेवैर्महात्मनिः ॥ हु[illegible] गामत्रि दिवं प्रभुः
॥१४॥

३८२

380

नरभयनिर्दानिवेराश्रीनि॥ एनचापरिरार्थसनोनामथीन्याह॥ सत्रनेति॥ २४॥ निमितमकर्मिवलण
मिवपश्यतिकपटेनप्रनएवनामिकूपाणुछन्नवेधानेनहेनमान्नत्यालिसा॥ २५॥ सप्रेशातेनघा:
हृयनीवणंकमानालमिवसापितछेवमयिश्रयमहेनोभाकुलेसनिसालयितापितछेववतीने॥ २६॥

वेराग्निरीयनेचेवरूपामहेतकाशि॥ सत्रनाचापिकस्यातोमरोभूनेगुविश्वनता॥ २७॥
सूर्हयनीमहास्मानवमिहेपर्यर्थकन॥ विप्रदृआचमर्यनेसदाप्रियहिनेवन॥ २८॥ मप
तिमयग्गंवीरमवमेनेचनंमनि॥ अपधानेनसानेनपूमाकृतासमप्रभा॥ २९॥ सस्थाल
स्थानाभिदूयानिमिनमिवणपूपनी॥ अपमहेनो: संप्रामेनथानमयिमामिह॥ ३०॥ सूमेव
गनेहिनंसालवेवाघवनंने॥ ३१॥ नहिभार्थेनिविप्रास: कार्थ: पुंसांकथंचन॥ ३२॥ नहिका
र्थमननुयानितनारीपुरवनीसनी॥ ३३॥ [illegible]वाच॥ ननसेमवंएवेनेपुत्रा: सम्यग्
पासने॥ सचनानामा ज्ञानसर्वानाश्यामहपितनमथान:॥ ३४॥ ३ [illegible] या [illegible] याने
संद्[illegible]उवाच॥ पुत्राकमयवर्गार्थेविनाशोमलनेमया॥ अग्निनाचनथेपेवंप्रतिज्ञा
नेमहात्मना॥ ३५॥ सर्वेर्थवनमानायमानर्थेनिलनवव:॥ भवनांचयवीर्धएवं नाहमि
ज्ञानान:॥ ३६॥

अन: सीतामासोनालोह॥ नहोनि॥ कार्थमर्थयस्यादियनयानिमनसिकरोति॥ ३७॥ अ:
याय:॥ पुत्राकमिति॥ ३८॥ मानर्थेमतनंवच:॥ मात:॥ व: पुत्रमन्तेवपितयायमेतनापुत्रमदेय
परथर्मज्ञानेमानरली नि विज्ञायेनार्थ:॥ २॥

म॰ भा॰
आ॰ टी॰
३८२

381

चरितं यच्च वाशिष्ठं तन्मित्रावरुणावसानि ह्यनगानिति ... योऽपि दृष्टं मया सर्वः ॥१०॥२९॥ इति श्रीमत्पदवाक्य
प्रमाणज्ञमर्यादाधुरंधर ... नीलकंठस्य कृतौ श्रीमहाभा

पावकस्य च नन्दनावंदेनाप्रमाणमगयहितं ॥ अष्टानि पंच वै कंच विरतमहनर्षितः ॥२५॥ जग्धा
मांसानि पीनानि च मेदोस्थिरुधिराणि च ॥ युक्तः परमया प्रीत्या तानब्रवीच्च पुनर्जनो ॥२६॥ यु
ष्माभिः दुष्करं कर्म कृतं नर्षि नो क्रियया सह ॥ अनया नाभि वांचौ चरतं यच्च वो हितं ॥२७॥ एवं
तो समनुज्ञातो पावकेन महात्मना ॥ अर्जुनो वासुदेवश्च दानवश्च मयस्तथा ॥२८॥ परि
क्रम्य ततः सर्वे त्रयोपि भरतर्षभ ॥ रमणीये नदी कूले सहिताः समुपाविशन् ॥२९॥ इति
श्रीमहाभारते शतसाहस्र्यां संहितायां वैयासिक्यामादिपर्वणि ... समाप्तः ॥

रतभावदीपे आदिपर्वणि ...ऽर्थप्रकाशः ॥ समाप्तश्चायमादिपर्वणि भारतभावदीपः ॥ यादृशं
पुस्तकं दृष्ट्वा तादृशं लिखितं मया ॥ यदि शुद्धमशुद्धं वा मम दोषो न दीयते ॥१॥ शुभं भवतु ॥२२९॥